अपने विद्यार्थियों को जिनके
स्नेहपूर्ण आग्रह ने पुस्तक
की रचना के लिए
प्रेरणा दी।

—लेखकगण

दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री बी. ए. तथा बी. एड कक्षाओं के छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान मे रखकर लिखी गई है। पुस्तक मे विभिन्न समस्याओं का समाधान बोलचाल की भाषा के द्वारा किया गया है। विश्वविद्यालयों मे पूछे गये प्रश्नों को पुस्तक मे सम्मिलित करने का हर प्रयास किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त मे अभ्यास के लिए अधिक से अधिक प्रश्न एवं उनके उत्तर दिए गये हैं। तक्नीकी शब्दों एव विद्वानों के विचारो को अधिक स्पष्ट करने हेतु आवश्यकतानुसार अंग्रेजी भाषा का प्रयोग भी किया गया है।

पुस्तक मे दी हुई सामग्री को केवल आठ अध्यायों मे बाँटा गया है। अनावश्यक विषय-सामग्री को पुस्तक मे न रखकर तथा वाद-विवाद मे न पड़ते हुए पुस्तक को उपयोगी बनाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। इस प्रयास मे कितनी सफलता मिली है इसका निर्णय पाठक ही करेंगे। सतर्कता के बाद भी पुस्तक में त्रुटियाँ रह सकती हैं। आशा है, साथी प्राध्यापक-बन्धु एवं पाठकगण क्षमा करेंगे तथा सुधार हेतु अपने सुझाव भेजने की कृपा करेंगे।

इस पुस्तक की रचना मे जिन विद्वान लेखकों की कृतियों से सहायता ली गयी है, उन सब के प्रति हम आभारी हैं।

—लेखकगण

अनुक्रमणिका

अध्याय 4

केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप
Measures of Central Tendency 45–81

अध्याय 5

प्रदत्तों का रेखाचित्रण
Graphic Representation of Data 82–109

अध्याय 6

विचलन के मापक
Measures of Variability 110–159

अध्याय 7

सहसम्बन्ध

Correlation

अध्याय 8

प्रतिदर्श-पद्धति

अध्याय 7

सहसम्बन्ध

Correlation

अध्याय 8

प्रतिदर्श-पद्धति

1

सांख्यिकी का अर्थ और महत्त्व
MEANING AND IMPORTANCE OF STATISTICS

अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Statistics' की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'Status', इटैलियन शब्द 'Statista' अथवा जर्मन भाषा के शब्द 'Statistik' से हुई। इन सभी शब्दो का शाब्दिक अर्थ राज्य (State) तथा राजनैतिक कार्य (Politics) है। प्राचीन काल में साख्यिकी का रूप अविकसित और इसका प्रयोग अत्यन्त सीमित था। इन दिनों इसका प्रयोग राजा-महाराजा लोग अपने राज्यो की आय-व्यय, पैदावार, जन्म-मरण दर अथवा सैनिक शक्ति का ब्यौरा तैयार करने मे किया करते थे। इस प्रकार का ब्यौरा या सर्वेक्षण शासन-प्रबन्ध मे सहायक था। यही कारण है कि इस काल मे सांख्यिकी को राजनैतिक अंकगणित (Political Arithmatic) कहा गया।

साख्यिकी का इतिहास ईसा से लगभग एक हजार वर्ष पहले प्रारम्भ होता है। सम्भवत: 'Statistics' शब्द का प्रयोग 1750 मे जर्मन विद्वान गोटफ्रइड एकॅनवौल (Gottfried Achenwall) ने किया। गिलफोर्ड (Guilford, J. P.) के अनुसार इसकी उत्पत्ति जुआरियो (Gamblers) के खेल से हुई। वास्तव मे इसका विकास बर्नौविली (Bernoulli, 1654-1705) के अध्ययनों से प्रारम्भ होता है। उसने सांख्यिकी पर एक पुस्तक भी लिखी है। बर्नौविली के बाद इसके विकास मे मुख्य योगदान डी मोवियर (De Moivre, 1667-1754), लैपलास (Laplace, 1749-1829), गॉस (Gauss, 1777-1855) तथा क्वैटलेट (Quetlet 1976-1874) के है। इसके अतिरिक्त म्यून्स्टर (Muenster), आब्रेच्ट (Obrecht), गाल्टन (Galton), फिशर (Fisher), टिपैट (Tippett) आदि सांख्य-शास्त्रियों के अध्ययन भी साख्यिकी के विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं।

सांख्यिकी का अर्थ (Meaning of Statistics)

सांख्यिकी की 180 परिभाषाओं की सूची क्वेटलेट (Quetlet) महोदय ने 1869 में तैयार की। प्राचीनकाल की अपेक्षा सांख्यिकी का अर्थ आधुनिक काल में बिलकुल भिन्न है, फिर भी आँकड़ों को एकत्र करने के अर्थों में इसका प्रयोग आज भी करते हैं। सांख्यिकी की कुछ वैज्ञानिक परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं—

1. टिपेट (Tippett) की परिभाषा — "सांख्यिकी साधारण व्यक्ति के लिए केवल संख्या या अंक मात्र है, उसके लिए यह व्यक्ति सांख्यिकी है जो वस्तुओं की संख्या की गणना करता है।"[1]

2. केण्डाल तथा बकलैण्ड (Kendall and Buckland) की परिभाषा—"सांख्यिकी प्रदत्तों के संग्रह, उनके विश्लेषण तथा निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।"[2]

3. बाउले (Bowley) की परिभाषा—"......किसी भी अनुसन्धान क्षेत्र में तथ्यों का उल्लेख करता है और उन्हें एक दूसरे के सम्बन्ध में रखता है।"[3]

4. इंगलिश तथा इंगलिश (English & English) की परिभाषा—"सांख्यिकी वह कला और विज्ञान है, जो किसी निर्धारित क्षेत्र में अनेक तथ्यों का एकत्रीकरण एवं संयोजन करती है, ताकि इनका आंकिक सम्बन्ध स्पष्टतया स्थापित किया जा सके और इन्हें अकस्मात होने वाले तथ्यों से मुक्त किया जा सके।"[4]

---

1. "To the man in street, statistics are just figures, and he is inclined to think of the statistician as being primarily one who counts the number of things" —*Tippett.*
2. "Statistics is the science of collecting, analysing and interpreting such (numerical) data" —*Kendall & Buckland*
3. "...... Numerical statements of facts in any department of enquiry placed in relation to each other" —*Bowley.*
4. "The science and art that gathers and coordinates numerous facts within a determined field, treats these mathematically so that the numerical relations between these facts may be displaced clearly & freed from anomalies and to chance factors" —*English & English.*

5. लाविट (Lovitt) की परिभाषा—"सांख्यिकी वह विज्ञान है जो किन्ही घटनाओं की व्याख्या, विवरण तथा तुलना के लिए आंकिक तथ्यो के संकलन, वर्गीकरण तथा सारणीयन का कार्य करता है।"[1]

6. सटक्लिफ (Sutcliff) की परिभाषा—"सांख्यिकी का तात्पर्य तथ्यों के सम्बन्ध मे प्रदत्तो का संकलन, सारणीयन, प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण से है। यह प्रदत्त व्यवस्थित रूप से तथा बिना किसी पक्षपात के संकलित किए जाते हैं और तथ्यों से सम्बन्धित आँकडो का संकलन पूर्व निर्धारित उद्देश्यों से सम्बन्धित होता है।"[2]

उपर्युक्त परिभाषाओ के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि साख्यिकी वह विज्ञान है, जिसमे तथ्यो के सम्बन्ध मे आँकडो का एकत्रीकरण, क्रमबद्ध तथा विश्लेषण किया जाता है। यह कार्य बिना पक्षपात के और पूर्व निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार किया जाता है। आँकडो के विश्लेषण का उद्देश्य तथ्यो के पारस्परिक सम्बन्ध को ज्ञात करना या उनके सम्बन्ध मे निष्कर्ष निकालना होता है।

ऊपर दी हुई परिभाषाओं के आधार पर साख्यिकी की निम्नलिखित मुख्य *विशेषताएँ* हैं—

1. मुख्य रूप से साख्यिकी का प्रयोग सामूहिक अध्ययनो मे होता है। इसके परिणाम औसत (Aggregate) पर निर्भर करते हैं न कि व्यक्तिगत इकाई पर।
2. साख्यिकी मे सख्यात्मक अध्ययन (Facts are numerically expressed) होता है। जिन तथ्यो को सख्या द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता, उनका अध्ययन साख्यिकी के द्वारा नहीं किया जा सकता।

---

1. "Statistics is the science which deals with the collection, classification and tabulation of numerical facts as the basis for explanation description and comparison of phenomena" —*Lovitt.*
2. "Statistics comprises of the collection, tabulation, presentation and analysis of an aggregate of facts, collected in a methodical manner, without bias and related to a predetermined purpose." —*Sutcliff*

३. तथ्यों के सम्बन्ध में आँकड़े एकत्रित करते समय शुद्धता (Accuracy) का ध्यान रखा जाता है, ताकि शुद्ध आँकड़ों से शुद्ध परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

४. आँकड़ों की शुद्धता के लिए आवश्यक है कि आँकड़ों को व्यवस्थित ढंग (Systematic collection) से एकत्रित किया जाय।

५. सांख्यिकी की यह भी एक प्रमुख विशेषता है कि अनावश्यक तथ्यों को एकत्रित करने से रोका जाय। इसके लिए आवश्यक है कि आँकड़ों को पूर्व निर्धारित उद्देश्य (Pre-determined purpose) के आधार पर एकत्रित किया जाय।

सांख्यिकी के प्रकार (Types of Statistics)

सांख्यिकी के मुख्य दो प्रकार माने जाते हैं—

(1) विवरणात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

(2) निष्कर्षात्मक सांख्यिकी (Inferential or Sample Statistics)

विवरणात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics) का प्रयोग किसी समूह अथवा वर्ग के अंकात्मक वर्णन के लिए किया जाता है। इस सांख्यिकी में केन्द्रीय प्रवृत्ति मापकों (Measures of Central Tendency), विचलन मापकों (Measures of Variability) तथा सहसम्बन्ध (Correlation) आदि का प्रयोग समूह अथवा वर्ग की प्रकृति (Nature) तथा स्थिति (Position) आदि को जानने के लिए किया जाता है।

निष्कर्षात्मक सांख्यिकी (Inferential Statistics) का प्रयोग अधिक बड़े समूहों से सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन के लिए किया जाता है। चूँकि यह समूह विस्तृत होते हैं तथा इनके सदस्यों की संख्या अधिक होती है, अतः अध्ययनकर्त्ता अध्ययन के लिए इन बड़े समूहों से प्रतिदर्श (Sample) चुन कर समस्या का अध्ययन करता है। इस प्रकार प्रतिदर्श के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष सम्पूर्ण समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं।

सांख्यिकी का महत्त्व (Importance of Statistics)

थूलेस (Thouless, R. H.) के अनुसार समाज विज्ञानवेत्ता सांख्यिकी का प्रयोग अपनी पसन्द और नापसन्द के आधार पर नहीं करता है, बल्कि आँकड़ों की प्रकृति के कारण अनिवार्य रूप से उसे करना पड़ता है। आधुनिक युग में सांख्यिकी का प्रयोग दिन प्रतिदिन अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में बढ़ता जा रहा है। सांख्यिकी ने मनोविज्ञान तथा शिक्षा के अध्ययनों में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। इसका महत्त्व इस प्रकार है :—

(1) मनोविज्ञान की समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त तथ्यों की व्याख्या अंकों के द्वारा की जाती है। सांख्यिकी के द्वारा उपयुक्त तथा संक्षिप्त व्याख्या भी सम्भव है।

(2) सांख्यिकी के प्रामाणिक पैमानों (Standard Scales) की सहायता से वस्तुगत प्रत्युत्तर या वस्तुगत परिणाम (Objective results) प्राप्त किए जा सकते हैं। सीखने पर अभ्यास के प्रभाव के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न लोगों के मत भिन्न हो सकते हैं, यदि इसी तथ्य की अंकों के द्वारा व्याख्या की जाय तो केवल एक व्याख्या होगी। अतः सांख्यिकी की सहायता से वस्तुगत (Objective) और शुद्ध (Accurate) परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

(3) सांख्यिकीय अध्ययनों के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों की सहायता से तथ्यों की व्याख्या वैज्ञानिक ढंग से की जा सकती है।

(4) सामान्य निष्कर्षों (General conlusions) के निर्धारण में भी सांख्यिकी सहायक है। यह निष्कर्ष सांख्यिकीय सूत्रों और नियमों के आधार पर निकाले जाते हैं।

(5) सांख्यिकी के द्वारा तुलनात्मक अध्ययन अधिक सरल हो जाते हैं। यह तुलना कई आधारों पर हो सकती है; जैसे—समय, स्थान और तथ्य आदि। दो या अधिक विद्यार्थियों की बुद्धि की तुलना I. Q. की सहायता से की जा सकती है। तुलनात्मक अध्ययनों में सांख्यिकी द्वारा शुद्ध एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

(6) सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर दो या दो से अधिक चल-राशियों (Variables) में सम्बन्ध भी ज्ञात किया जा सकता है। इसके लिए सह-सम्बन्ध गुणांक (Coefficient of Correlation) निकालना होता है। केवल दो या अधिक चलराशियों में सम्बन्ध ही नहीं मालूम होता है बल्कि उनमें कितना सम्बन्ध है यह भी ज्ञात किया जा सकता है।

(7) सांख्यिकीय अध्ययनों के आधार पर व्यवहार के सम्बन्ध में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर व्यवहार के सम्बन्ध में उचित भविष्यवाणी (Prediction) भी की जा सकती है। उदाहरण के लिए एक समूह के व्यवहार का सांख्यिकीय विधियों से अध्ययन करके यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि भविष्य में समूह के व्यवहार का स्वरूप क्या होगा।

सांख्यिकी की सीमाएं (Limitations of Statistics)

सांख्यिकी का मनोविज्ञान और शिक्षा से सम्बन्धित अध्ययनों में बहुत अधिक महत्त्व और उपयोग है। मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी के प्रयोग में कुछ सीमाएँ भी हैं, जो इस प्रकार हैं—

3. सांख्यिकी के अध्ययन में गिलफोर्ड के अनुसार एक विद्यार्थी का क्या लक्ष्य होना चाहिए।

4. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए—
   (अ) सांख्यिकी प्रदत्तों के संग्रह, उनके विश्लेषण तथा निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।
   (ब) विवरणात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)
   (स) निष्कर्षात्मक सांख्यिकी (Inferential or Sample Statistics)

२

गणनाओं के कुछ संकेत
SOME HINTS FOR CALCULATIONS

साधारण गुणा, भाग, जोड़ और घटाना अधिकतर विद्यार्थियो को आता है। लेकिन दशमलव (Decimal) का जोड़, घटाना, गुणा और भाग शिक्षा और मनोविज्ञान के विद्यार्थियो को कम आता है। इसका एकमात्र कारण गणितीय अनुभव और अभ्यास का अभाव है। अतः यहाँ पर कुछ आवश्यक दशमलव (Decimal) से सम्बन्धित गणनाओं को समझाया गया है।

(1) दशमलव का जोड़ (Addition)

दशमलव का जोड़ साधारण जोड़ की तरह होता है केवल अन्तर इतना होता है कि दशमलव के जोड़ में सभी दशमलव संख्याओ को इस प्रकार रखते हैं कि दशमलव का चिह्न एक सीध में रहे या दशमलव के नीचे दशमलव रहे। जोड़ के समय भी दशमलव के नीचे दशमलव होना चाहिए।

उदाहरण—1

नीचे दी हुई संख्याओ को जोड़िए—

10, 15·5, 9 2, 6·07 5·02

हल

सभी संख्याओं को इस प्रकार रखेंगे कि दशमलव के नीचे दशमलव रहे और फिर साधारण जोड़ की भाँति जोड़ लेंगे।

10·00
15·50
9·20
6·07
5·02

45·79

जोड़=45·79 उत्तर

उदाहरण—2

नीचे दी हुई संख्याओं को जोड़िए—

·052, 11·52, 2·003, ·007, 40·321

हल

·052
11·520
2·003
·007
40·321

53·903

जोड़=53·903
=53·90 उत्तर

(2) दशमलव का घटाव (Subtraction)

दशमलव को घटाते समय भी संख्याओं को इस प्रकार लिखते हैं कि दशमलव के नीचे दशमलव रहे। दशमलव का घटाना साधारण घटाने की भाँति ही होता है। अन्तर केवल इतना होता है कि जब घटाने वाली संख्या मूल संख्या से अधिक होती है तो ऋण का चिह्न (—) उत्तर से पहले रख देते हैं।

उदाहरण—3

35·45 को 79·632 में से घटाओ।

हल

पहले संख्याओं को इस प्रकार रखेंगे कि दशमलव के नीचे दशमलव हो, फिर घटा देंगे।

```
79'632
35'450
------
44'182
```

उत्तर=44 182=44'18

उदाहरण—4

45'05 में से 10'99 घटाइए।

हल

```
45 05
10'99
-----
34'06
```

उत्तर=34 06

उदाहरण—5

10'99 में से 15'96 घटाइए।

हल

```
—15'96
  10'99
-------
— 4'97
```

उत्तर=—4'97

(3) दशमलव का गुणा (Multiplication)

दशमलव का गुणा भी साधारण गुणा की ही भाँति होता है, अन्तर केवल दशमलव लगाने का होता है। जिन दो संख्याओं का गुणा किया जाता है, उन संख्याओं के दशमलव के बाद कितने अंक हैं, यह गिन लिया जाता है। अर्थात् दशमलव के दायीं ओर कितने अंक पहली संख्या में हैं और कितने अंक दूसरी संख्या में दशमलव के दायीं ओर हैं। इन अंकों की संख्या जोड़कर रख लेते हैं। फिर दोनों संख्याओं में साधारण तरीके से गुणा कर लेते हैं और प्राप्त उत्तर में दायीं तरफ से संख्याएँ गिन कर दशमलव लगा देते हैं।

यह ध्यान रखना चाहिए कि धन संख्या का धन संख्या से गुणा करने पर उत्तर धन में आता है। ऋण संख्या का ऋण संख्या से गुणा करने पर भी उत्तर धन में आता है। एक धन संख्या और एक ऋण संख्या का गुणा करने

यह उत्तर शून्य आता है। इन नियमों को संक्षेप में निम्न प्रकार से व्यक्त कर सकते हैं—

$$+ \times + = +$$
$$- \times - = +$$
$$\quad \times + = -$$
$$+ \times - = -$$

उदाहरण—6

18.5 को 15.04 से गुणा करिए।

हल

```
       18.5×15.04
           7 4 0
         0 0 0×
       9 2 5× ×
     1 8 5× × ×
     ───────────
     2 7 8.2 4 0
```

उत्तर = 278.240 = 278.24

ऊपर के उदाहरण में 18.5 को 15.04 से साधारण गुणा कर दिया। फिर यह गिन लिया कि दोनों संख्याओं में दशमलव के बाद कितने अंक हैं। 18.5 में दशमलव के बाद एक अंक है तथा दूसरी संख्या में दशमलव के बाद दो अंक हैं, अर्थात् उत्तर में दायीं ओर से दशमलव तीन अंकों के बाद लगाना है।

उदाहरण—7

0.82 को 2.81 से गुणा करिए।

हल—साधारण गुणा करने के बाद उत्तर में संख्या के दायीं ओर से पाँच अंक गिनकर दशमलव लगायेंगे।

```
     .082×2.81
     ─────────
         0 8 2
       6 5 6×
     1 6 4× ×
     ─────────
     .2 3 0 4 2
```

उत्तर = .23042 = .23

उदाहरण—8

—1·5 को—1·1 से गुणा करिए।

हल

$$\begin{array}{r} -1·5 \times -1·1 \\ \hline 1\ 5 \\ 1\ 5\times \\ \hline +1\ ·6\ 5 \end{array}$$

उत्तर=1 65

उदाहरण—9

—1·1 को 2 से गुणा करिए।

हल

$$\begin{array}{r} -1\ 1 \times +2 \\ \hline -2·2 \end{array}$$

उत्तर=—2·2

(4) दशमलव का भाग (Division)

दी हुई दशमलव संख्याओं के दशमलव हटाइए। दशमलव हटाने के लिए यह देख लेते हैं कि दशमलव के दायीं ओर संख्या में कितने अंक हैं। उदाहरण—10 में 1·1 और 1·52 संख्याओं का दशमलव हटाने के लिए दशमलव के बाद अंकों की संख्या समान करनी होगी, अर्थात् 1 52 का जब दशमलव हटा देंगे तो संख्या 1·1 का दशमलव हटाते समय एक शून्य (Zero) बढ़ा देंगे, क्योंकि दूसरी संख्या में दशमलव के बाद दो अंक और पहली संख्या में दशमलव के बाद एक अंक है।

दशमलव हटाने के बाद साधारण भाग की तरह भाग देना प्रारम्भ करते हैं। अन्त में जब भाजक संख्या से भाज्य संख्या में भाग नहीं जाता है तो भागफल में दशमलव लगाकर शेष संख्या में एक शून्य बढ़ा देते हैं और भाग दे लेते हैं। उदाहरण—10 में 110 के एक बार भाग देने पर शेष संख्या 42 बचता है। चूँकि 42 में 110 का भाग नहीं जाता है इसलिए भागफल 1 के बाद दशमलव लगाकर 42 के बाद एक शून्य बढ़ा लेते हैं और भाग दे लेते हैं। अब यदि शेष संख्या भाजक से कम पड़ती है तो शून्य बढ़ा लेते हैं और भाग दे देते हैं, इस शून्य बढ़ाने के लिए भागफल में शून्य बढ़ाना नहीं पड़ता है।

उदाहरण—10

1·52 में 1·1 का भाग दीजिए।

हल—

दशमलव हटाने पर संख्या 152, 110

```
110 ) 152 ( 1·381
      110
      ---
      420
      330
      ---
       900
       880
       ---
        200
        110
        ---
         90
```

उत्तर = 1·381 = 1·38

(5) वर्गमूल (Square Root)

किसी संख्या का वर्गमूल वह संख्या है जिसका वर्ग करने से मूल संख्या प्राप्त हो जाती है। उदाहरण के लिए 4 का वर्गमूल 2 है, क्योंकि 2 वह अंक है, जिसका यदि वर्ग करें तो मूल संख्या 4 प्राप्त हो जाती है ($2^2 = 2 \times 2 = 4$)। वर्गमूल का चिह्न $\sqrt{}$ है। $\sqrt{25}$ का अर्थ है, 25 का वर्गमूल—अर्थात् 5। नीचे दी हुई सारणी में कुछ संख्याओं के वर्गमूल दिए हुए हैं—

संख्या	64	169	289	400	1600	2025	2209	2500
वर्गमूल	8	13	17	20	40	45	47	50

वर्गमूल निकालने की मुख्य रूप से दो विधियाँ हैं—(अ) गुणनखण्ड विधि, (ब) भाग विधि। मनोविज्ञान में प्रयुक्त सांख्यिकी में प्रायः वर्गमूल निकालने में भाग विधि का ही प्रयोग किया जाता है, क्योंकि यह उपयुक्त और सरल है। इसी विधि का इस पुस्तक में प्रयोग किया गया है।

उदाहरण—11.

2209 का वर्गमूल निकालिए—

हल—

	47
4	2209
4	16
87	609
	609
	×

वर्गमूल=47 उत्तर

वर्गमूल निकालने की भाग विधि के मुख्य चरण

1. इकाई के अंक से प्रारम्भ करके दो-दो अंकों के जोड़े बना कर प्रश्न के अनुसार उन पर एक पड़ी रेखा खींचो। दशमलव वाली संख्याओं में जोड़ा बनाते समय दशमलव से दायीं ओर को जोड़े बनाए जाते हैं।
2. दी हुई संख्या के सबसे बाएँ अंक या अंक के जोड़े में ऐसी संख्या से भाग दो कि भाग संख्या के बराबर ही बार जाय। उपर्युक्त उदाहरण में 22 के लिए 4 ऐसी संख्या है कि 4 से 4 ही बार भाग चला जाता है। 4 को संख्या के ऊपर लाइन खींच कर प्रश्न के अनुसार रख दो। फिर 4 के वर्ग 16 को 22 में से घटाइए। शेष 6 बचता है।
3. 6 के साथ अंकों के दूसरे जोड़े 09 को उतार कर रखो तथा पहले वाले अंकों के जोड़े में जिस अंक से भाग दिया गया है, उस अंक को उसी अंक में जोड़ो। उदाहरण में 22 में 4 का भाग दिया गया है। इसलिए 4 में 4 जोड़कर प्रश्न के अनुसार 8 लिखो।
4. नया भाज्य 609 हुआ। नये भाज्य में जिस संख्या से भाग दिया जाएगा, उसे उदाहरण में 8 के साथ दाहिनी ओर रखा जायगा। 609 में ऐसी संख्या से भाग दीजिए कि 8 के दाहिनी ओर रखने पर भी संख्या के बराबर ही भाग चला जाय। प्रश्न में 7 से भाग जाता है। इसलिए 7 को 8 के दाहिनी ओर रख देते हैं तथा 7 को संख्या के ऊपर 4 के साथ, अर्थात् भागफल वाले स्थान पर

रखा। अब 87 में 7 से गुणाकर गुणनफल 609, भाज्य 609 के नीचे रखते हैं।

5. शेष कुछ नहीं रहा। अतः वर्गमूल 47 आया। 47 में 47 का गुणा करके उत्तर की जाँच करिए।

उदाहरण—12

4·6225 का वर्गमूल निकालो।

हल—

```
         2·15
     ___________
  2  | 4 6225
  2  | 4
 ____|______
 41  |  62
  1  |  41
 ____|______
 425 |  2125
     |  2125
 ____|______
     |   ×
```

वर्गमूल = 2·15 उत्तर

उदाहरण—13

·9 का वर्गमूल दशमलव के दो स्थान तक निकालो।

हल—

```
          ·948
      ___________
  9   | 900000
  9   | 81
 184  |  900
   4  |  736
 _____|_______
 1888 |  16400
    8 |  15104
      |   1296
```

वर्गमूल = ·948 = ·95 उत्तर

उदाहरण—14

31 का दशमलव के तीसरे स्थान तक शुद्ध वर्गमूल ज्ञात करो।

हल—

	5.5677
5	31·00000000
5	25
105	600
5	525
1106	7500
6	6636
11127	86400
7	77889
111347	851100
7	779429
	71671

वर्गमूल=5·5677=5·568 उत्तर

(6) राउन्डेड अंक (Rounded Number)

प्राय. सांख्यिकी मे गणना करते समय दशमलव के चार स्थान तक परिणाम निकालते हैं, लेकिन परिणाम लिखते समय दशमलव के केवल दो ही स्थान तक लिखते हैं, जैसे : 8 5793 संख्या को 8 58 लिखेंगे। दशमलव के बाद के अकों को निम्न नियमो द्वारा हटाया जाता है।

नियम—1. यदि दशमलव के बाद के अंकों मे अन्तिम अंक 5 या 5 से अधिक है तो उस अंक को हटा कर उससे पहले वाले अंक में एक (one) जोड़ देते हैं।

उदाहरण—15. 4·365 =4 37, 6·806=6·81,
9·1848=9·19, 3 277=3·28

नियम—2. यदि दशमलव के बाद के अंकों में अन्तिम अंक 5 से कम हैं तो उस अंक को हटा देते हैं लेकिन उससे पहले वाले अंक मे एक (one) नही जोड़ते हैं ?

उदाहरण—16. 4·653=4 65, 6·823=6·82
9·841=9.84, 3 711=3·71

(7) वास्तविक एवं लगभग अंक (Exact and Approximate Numbers)

वास्तविक अंक वह मान होता है जिसे हम गिन सकते हैं जैसे : एक विद्यालय मे 728 विद्यार्थी हैं। इस उदाहरण मे 728 वास्तविक अंक (Exact Number) है। इसी प्रकार लगभग अंक (Approximate Number) वह अंक होता है जिसे हम माप (Measure) तो सकते हैं पर गिन नही सकते हैं, जैसे—एक कक्षा के बालकों की औसत ऊँचाई 3.25 फुट है, इस उदाहरण मे 3.25 लगभग अंक (Approximate Number) है।

(8) सार्थक अंक (Significant Numbers)

किसी दी हुई संख्या के सभी अंक सार्थक हो सकते हैं या केवल कुछ अंक ही सार्थक हो सकते है। दी हुई संख्या में जो अंक सार्थक नही होते हैं वे अन्य अंको की स्थिति के द्योतक होते हैं। नीचे कुछ उदाहरण दिए हुए हैं जिनमे यह बताया गया है कि संख्या मे कितने अंक सार्थक हैं और कितने निरर्थक।

संख्या 645 मे तीन अंक हैं और सभी सार्थक हैं।

संख्या ·82950 मे पाँच अंक हैं और सभी अंक सार्थक हैं। पाँचवा अंक शून्य (0) पाँचवें स्थान के अंक को या स्थिति को स्पष्ट करता है।

संख्या 0514 मे चार अंक हैं और केवल तीन अंक (514) सार्थक हैं क्योंकि प्रथम अंक शून्य (0) दशमलव लगाने के लिए लगा दिया गया है।

संख्या 00024 मे पाँच अंक हैं और केवल दो अंक (24) सार्थक हैं क्योंकि प्रथम तीन शून्य दशमलव लगाने के लिए या अन्तिम दो अंको की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए लगा दिए गये है।

संख्या 583 0 मे चार अंक हैं और चारो अंक सार्थक हैं। यहाँ पर शून्य दशमलव के बाद की संख्या के मान को प्रदर्शित करता है।

संख्या 54300 मे पाँच अंक हैं और केवल पहले तीन अंक ही सार्थक हैं बाद के दो शून्य केवल पहले तीन अंकों की स्थिति को स्पष्ट करने के लिए रखे गये हैं।

संख्या 83205 मे पाँचो अंक सार्थक हैं।

संख्या 0·41 में तीन अंक हैं लेकिन दशमलव के बाद के दो अंक ही सार्थक हैं क्योंकि दशमलव के पहले शून्य किसी आंकिक मूल्य की सूचना नहीं देता है।

प्रश्न

(1) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए :

(अ) दशमलव का गुणा ।

(ब) वर्गमूल ।

(स) राउण्डेड अंक (Rounded Numbers) ।

(द) सार्थक अंक (Significant Numbers) ।

(2) नीचे दी हुई संख्याओं के वर्गमूल ज्ञात कीजिए :

(अ) 19 (ब) 31

(स) 42 (द) 48

(3) निम्नलिखित संख्याओं का वर्गमूल ज्ञात करो :

(क) 10 24 (ख) 9 9225

(ग) 410·0626 (घ) ·5929

(4) $\sqrt{\frac{6\ 25}{10 \cdot 24}}$ को सरल करो।

उत्तर

2 (अ) 4·359 (ब) 5·568 (स) 6·481 (द) 6·928

3. (क) 3·2 (ख) 3·15 (ग) 20 25 (घ) ·77

4. ·78

3

आवृत्ति वितरण
FREQUENCY DISTRIBUTIONS

(क) प्रदत्तों का अभिप्राय (Meaning of Data)

यदि किसी कक्षा के छात्रों की बुद्धि का मापन बुद्धि परीक्षा (Intelligence Test) से किया जाय तो इस बुद्धि परीक्षा में छात्रों के जो प्राप्तांक होंगे, उन्हें प्रदत्त (Data) कहा जाएगा अर्थात् किसी परीक्षा के प्राप्तांकों को प्रदत्तों की संज्ञा दी जाती है। यह परीक्षा उनके व्यवहार के किसी भी पहलू से सम्बन्धित हो सकती है। प्रयोगों, सर्वेक्षणों एवं अनुसन्धानों में जो आंकड़े या सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं उन्हें भी प्रदत्तों की संज्ञा दी जाती है।[1] Data शब्द बहुवचन है, इसके एक वचन को Datum कहते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में Data के लिए प्रदत्तों के स्थान पर प्रदत्त शब्द का प्रयोग किया गया है।

(ख) प्राप्तांक का अभिप्राय (Meaning of Score)

किसी मानसिक परीक्षा में प्राप्तांक का अभिप्राय उस इकाई से है, जो

---

1 Data are figures, ratings, checklists and other information collected in experiments, surveys & descriptive studies.

दो सीमान्तो के मध्य होती है ।[1] उदाहरण के लिए किसी बुद्धि परीक्षण मे 140 प्राप्तांक का अर्थ दो सीमान्तो 139 5—140 5 से है । 140 प्राप्तांक 139'5—140'5 का मध्य बिन्दु है जैसा कि नीचे दिखाया गया है—

Score 140

139'5 — 140 — 140'5
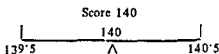
इसी प्रकार से अन्य प्राप्तांको की व्याख्या की जा सकती है ।

एक अन्य प्रकार से भी प्राप्तांक की व्याख्या की जा सकती है । इस दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार 140 प्राप्तांक का अर्थ है कि किसी व्यक्ति ने 140 प्रश्नो को किया है न कि 141 प्रश्नों को । इस प्राप्तांक 140–141 का मध्यबिन्दु 140'5 है, जैसा कि नीचे दिखाया गया है—
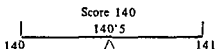
प्राप्तांक को परिभाषित करने के यह दोनों ही दृष्टिकोण वैध (Valid) एवं उपयोगी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में पहले वाले दृष्टिकोण को अपनाया गया है ।

(ग) आवृत्ति एवं आवृत्ति वितरण (Frequency & Frequency Distribution)

अर्थ (Meaning)

किसी प्राप्तांक के बार-बार आने की प्रवृत्ति को आवृत्ति (Frequency) कहते हैं । कोई प्राप्तांक, मान या संख्या चार बार आती हैं, तो उस प्राप्तांक की आवृत्ति 4 होगी । इसी प्रकार यदि कोई प्राप्तांक 10 बार आता है तो उस प्राप्तांक की आवृत्ति 10 होगी । किसी प्राप्तांक की 14 आवृत्ति का अर्थ है कि उस प्राप्तांक की पुनरावृत्ति 14 बार हुई है । इन आवृत्तियों (Frequencies) को सुविधा अनुसार भिन्न वर्गों में वितरित या प्रदर्शित करने की क्रिया को आवृत्ति वितरण (Frequency Distribution) कहते हैं ।

---

1. A score in a mental test is a unit distance between two limits.

महत्व (Importance)

आवृत्ति वितरण से निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति होती है—

1. एकत्रित किए गये सांख्यिकीय आंकड़ों को संक्षेप में आवृत्ति वितरण द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

2. *अव्यवस्थित आंकड़े प्रायः निरर्थक होते हैं, उनके गुणों एवं दोषों को* मस्तिष्क ग्रहण नहीं कर पाता है। अतः आवृत्ति वितरण तालिका बनाने से आंकड़े सार्थक बन जाते हैं और आंकड़ों को सरलता से समझा जा सकता है।

3. आवृत्ति वितरण तालिका बनाने के बाद तालिका (Table) को केवल देखने मात्र से ही आंकड़ों का अर्थ ज्ञात किया जा सकता है।

4. आकडो को सार्थक (Meaningful) बनाने का सरल उपाय आवृत्ति वितरण द्वारा आंकडो को प्रदर्शित करना है।

5. चूँकि आंकडो की प्रकृति समूह के गुणों की सूचक होती है इसलिए अव्यवस्थित आंकडो को व्यवस्थित (आवृत्ति वितरण तालिका) करने से हम उनके स्वरूप (Nature) को सरलता से समझ सकते हैं।

6 आवृत्ति वितरण तालिका बनाने से तुलनात्मक अध्ययन सरल हो *जाता है।*

आवृत्ति वितरण के महत्व को एक उदाहरण के द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि हमें किसी कक्षा के 60 विद्यार्थियों के परीक्षा के अंक प्राप्त हैं। इन अव्यवस्थित अंकों से परीक्षा के परिणाम के सम्बन्ध मे उपयुक्त निर्णय देने मे कठिनाई होगी। यदि इन्हीं अव्यवस्थित परीक्षा अकों को व्यवस्थित (या आवृत्ति वितरण बनाया जाय) किया जाय तो यही परीक्षा के अंक संक्षिप्त, स्पष्ट एवं बोधगम्य प्रतीत होने लगेंगे। इस व्यवस्थित अक सामग्री से परीक्षा के परिणामो के सम्बन्ध मे उपयुक्त और सरलता से निर्णय दिया जा सकता है अर्थात् यह सरलता से बताया जा सकता है कि कितने विद्यार्थियों ने प्रथम श्रेणी, द्वितीय श्रेणी एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त की है, *तथा कितने विद्यार्थी अनुत्तीर्ण हुए।*

आवृत्ति-वितरण तालिका बनाने की विधि
(Procedure of preparing a frequency distribution table)

निम्नलिखित प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण बनाइए—

उदाहरण—1

(अव्यवस्थित प्राप्तांक)

40	31	30[1]	35	36	45	42
41	39	38	70	75	60	65
69	72	79	80[2]	35	39	79
69	59	55	50	51	41	55
45	69	67	71	72	42	55
58	59	60	62			

हल

Table—1. (a) Preparation of frequency distribution table (Arranged in ascending order, Assuming class interval of 5)

Class Interval	Tally Marks	Frequency
80—85	|	1
75 - 80	|||	3
70—75	||||	4
65—70	卌	5
60 - 65	|||	3
55—60	卌 |	6
50—55	||	2
45—50	||	2
40—45	卌	5
35—40	卌 |	6
30—35	||	2
		N=39

1. न्यूनतम अंक। 2. अधिकतम अंक।

Table—1 (b) Preparation of frequency distribution table (Arranged in descending order, Assuming class interval of 5)

Class Interval	Tally Marks	Frequencies
30—35	॥	2
35—40	𝍸।	6
40—45	𝍸	5
45—50	॥	2
50—55	॥	2
55—60	𝍸।	6
60—65	।।।	3
65—70	𝍸	5
70—75	।।।।	4
75—80	।।।	3
80—85	।	1
		N=39

आवृत्ति वितरण तालिका (Frequency distribution Table) बनाने के लिए निम्नलिखित चार नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है :

1. प्रसार (Range)

आँकड़ों में, उच्चतम अंक (Highest Score) तथा न्यूनतम अंक (Lowest Score) के अन्तर को प्रसार (Range) कहते हैं। उदाहरण—1 में, उच्चतम अंक (Highest Score) 80 तथा न्यूनतम अंक (Lowest Score) 30 है। इन दोनों अंकों का अन्तर 50 है, अर्थात् प्रसार 50 है। अतः प्रसार ज्ञात करने के लिए उच्चतम अंक में न्यूनतम अंक घटा दिया जाता है। प्रसार को निम्न सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है :

Range = Highest Score − Lowest Score

उदाहरण—1 में,

Highest Score = 80

Lowest Score = 30

$\therefore$ Range $= 80-30$

$= 50$

2. वर्गान्तर (Class Interval=C. I.)

प्रसार ज्ञात करने के पश्चात् वर्गान्तरो की संख्या ज्ञात की जाती है। वर्गान्तरो की संख्या प्रायः 5 से लेकर 20 तक होती है। लेकिन परिणामो की शुद्धता को देखते हुए वर्गान्तरों की संख्या 10 रखना ही अनेक विद्वान उचित बताते हैं। उदाहरण—1 में वर्गान्तरों की संख्या 11 है।

वर्गान्तरो की संख्या ज्ञात करने के पश्चात् वर्गान्तर का आकार (Size of Class Interval) ज्ञात किया जाता है। वर्गान्तर का आकार निर्धारित करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

$$\text{वर्गान्तर का आकार (Size of Class Interval)} = \frac{\text{प्राप्तांको का विस्तार (Range of Scores)}}{\text{वर्गान्तरो की संख्या (No. of Class Intervals)}}$$

उदाहरण—1 मे,

Range of Scores = 50

No. of Class Intervals = 11

$$\therefore \text{Size of the Class Interval} = \frac{50}{11}$$

$$= 4{\cdot}54$$

$$= 5$$

अतः उदाहरण—1 में, वर्गान्तर का आकार = 5

इसी प्रकार मे यदि वर्गान्तर का आकार ज्ञात हो तो वर्गान्तरो की संख्या भी ज्ञात की जा सकती है जिसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

$$\text{वर्गान्तरों की संख्या (No. of Class Intervals)} = \frac{\text{प्राप्तांको का विस्तार (Range of Scores)}}{\text{वर्गान्तरो का आकार (Size of the Class Intervals)}} + 1$$

उदाहरण—1 में,

Range of Scores = 50

Size of the Class Intervals = 5

$$\text{f Class Intervals} = \frac{50}{5} + 1$$

$$= 10 + 1$$

$$= 11$$

हरण—1 में, वर्गान्तरों की संख्या = 11 है।

की संख्या (No. of Class Intervals) तथा वर्गान्तरों का आकार
Class Intervals) ज्ञात करने के पश्चात् सर्वप्रथम उदाहरण—1
न्तरों (Class Intervals) को बनाया जाता है। वर्गान्तर
निम्नतम अंक (Lowest Score) सबसे पहले (तालिका—1
हैं। फिर निम्नतम अंक में वर्गान्तर के आकार को जोड़कर
तर देते हैं। तालिका—1 में निम्नतम अंक 30 है तथा वर्गान्तर
है इसलिए पहले 30 लिखेंगे और फिर 30 के सामने 30 में 5
र्थात् 35 लिखेंगे। अतः पहला वर्गान्तर 30–35 बना। अब
कार 5 (तालिका—1 के अनुसार) 30 में तथा 35 में जोड़
वर्गान्तर के ऊपर लिखते हैं। पुनः वर्गान्तर का आकार 5, 35
ड़कर 35–40 वर्गान्तर के ऊपर लिखते हैं। इस प्रकार यह
दुहराते हैं जब तक कि उच्चतम अंक (Highest Score)
आ जाय। तालिका—1 (a) तथा 1 (b) में उच्चतम अंक 80
35 में आता है, क्योंकि अंक 80 दो वर्गान्तरों 75–80,
80 अंक को 80–85 वाले वर्गान्तर में ही सम्मिलित किया
प्रकार से 75 दो वर्गान्तरों 75–80 तथा 70–75 में है 75
0 वाले वर्गान्तर में सम्मिलित किया गया है, यही नियम 65,
45, 40 तथा 35 अंकों के लिए लागू होता है। वर्गान्तर
a) तथा 1 (b) के अनुसार दो क्रमों में बनाए जा सकते हैं।
a) में वर्गान्तर बढ़ते हुए क्रम (Ascending Order) में है तथा
b) में वर्गान्तर घटते हुए क्रम (Descending Order) में है।

(Class Interval) प्रारम्भ करने के सम्बन्ध में निम्न बातें
य हैं—(1) बहुधा प्राप्तांकों के न्यूनतम अंक (Lowest
वर्गान्तर बनाना प्रारम्भ करते हैं। उदाहरण—1 में न्यूनतम
न्तर बनाए गये हैं। (2) वर्गान्तर बनाने के लिए यह आव-
के वर्गान्तर न्यूनतम अंक से ही प्रारम्भ किया जाय, गणना
s) की सुविधा को देखते हुए वर्गान्तरों को न्यूनतम अंक से
कम अंक से प्रारम्भ किया जा सकता है। उदाहरण के

लिये यदि न्यूनतम अंक 16 है और वर्गान्तर का आकार 5 है तो 16–21 वर्गान्तर भी बन सकता है और 15–20 वर्गान्तर भी बन सकता है। दूसरा वर्गान्तर 15–20 गणना की दृष्टि से अधिक सरल है।

3. आवृत्तियों को चिह्नों द्वारा प्रदर्शित करना (Tallying the frequencies)

सभी प्राप्तांकों के वर्गान्तर (Class Inerval) बना लेने के बाद, वर्गान्तरों के सामने आवृत्तियों को चिह्नों (Tallies) द्वारा प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण–1 की सहायता से बनाई गई तालिका—1 (a) तथा 1 (b) में, 30—35 वर्गान्तर में 2 आवृत्तियाँ हैं अर्थात् उदाहरण—1 के प्राप्तांकों में 30 से 34 तक की दो संख्या है वे 30 एवं 31 है। चूँकि 30—35 वर्गान्तर में केवल 2 ही संख्याएं है अर्थात् दो आवृत्तियाँ हुईं इनके लिए दो अंकदन्ड (Tally mark) के चिन्ह (||) लगा देंगे (यह ध्यान रहे कि 30—35 वर्गान्तर में अंक 35 सम्मिलित नहीं है। अंक 35, 35—40 वाले वर्गान्तर में सम्मिलित है। इसी प्रकार से अंक 40, 35—40 वाले वर्गान्तर में सम्मिलित नहीं है बल्कि अंक 40, 40—45 वाले वर्गान्तर में सम्मिलित है)। इसी प्रकार से 35—40 वर्गान्तर में 6 आवृत्तियाँ हैं, इनके लिए 6 अंकदन्ड (Tally mark) (~~||||~~ |) लगायेंगे।

किसी वर्गान्तर के सामने यदि एक आवृत्ति है तो एक अंक दण्ड (Tally mark) (|) लगायेंगे, दो हैं तो (||), तीन हैं तो (|||), चार हैं तो (||||) अंक दण्ड लगायेंगे। लेकिन पाँच के लिए चार अंकदण्डों को काटकर पाँच अंकदण्ड का चिह्न (~~||||~~) लगाते हैं। काटने के लिए ~~||||~~ -|-|-|-|- ~~||||~~ ~~||||~~ आदि कोई भी विधि अपनाई जा सकती है।

आवृत्ति तालिका बनाने में, दिए हुए आंकड़ों के प्रथम प्राप्तांक को पढ़िए और यह देखिये कि यह किस वर्गान्तर में आता है, जिस वर्गान्तर में अंक आता हो उसके सामने एक अंकदण्ड (Tally mark) लगा दीजिए। फिर दूसरा प्राप्तांक पढ़िए, देखिए किस वर्गान्तर में यह अंक आता है, जिस वर्गान्तर में यह अंक आता हो उसके सामने एक अंक दण्ड लगा दीजिए। इसी प्रकार से सभी प्राप्तांकों को पढ़कर अंकदण्ड लगा देते हैं। उदाहरण—1 के अव्यवस्थित प्राप्तांकों में पहला प्राप्तांक 40 है। 40 प्राप्तांक के लिए 40—45 वर्गान्तर के सामने एक अंकदण्ड लगा देंगे। दूसरा प्राप्तांक 31 है। 31 प्राप्तांक के लिए 30—35 वर्गान्तर के सामने एक अंकदण्ड (Tally mark) लगा देंगे। इसी प्रकार से सभी प्राप्तांकों को पढ़कर अंक दण्ड लगा देते हैं।

4. आवृत्तियाँ (Frequencies)

वर्गान्तरों के सामने अंकरेखाओं (Tally marks) को लगाने के पश्चात् आवृत्ति वितरण के अन्तिम चरण में, एक वर्गान्तर के सामने के अंकरेखाओं को जोड़कर आवृत्ति (Frequencies) वाले खाने में, जोड़ने से प्राप्त संख्या को लिखते हैं। तालिका—1 (a) तथा (b) में, 30—35 वर्गान्तर के सामने के 2 अंकरेखाओं (||) के लिए आवृत्तियाँ (Frequencies) वाले खाने में 2 लिखते हैं तथा 35—40 वर्गान्तर के सामने के 6 अंकरेखाओं (卌|) के लिए आवृत्तियों (Frequencies) वाले खाने में 6 लिखते हैं। इसी प्रकार से सभी वर्गान्तरों के सामने के अंकरेखाओं को अंकों में परिवर्तित कर देते हैं। अन्त में आवृत्तियों का योग (N) लिखते हैं। आवृत्ति वितरण तालिका की कुल आवृत्तियों का योग (N) प्राप्तांकों के योग के बराबर होता है। उदाहरण—1 में 39 प्राप्तांक हैं तथा Table—1 (a) तथा 1 (b) में कुल आवृत्तियों का योग (N) 39 है।

(घ) प्राप्तांकों को समूहबद्ध करने की विधियाँ (Methods of Grouping Scores)

तालिका—2 (a), तथा 2 (b) में प्राप्तांकों को समूहबद्ध करने के तीन विधियाँ दी हुई हैं। विशिष्ट शृंखला (Exclusive Series) के वर्गान्तर 30–35

Table—2 (a) Methods of grouping scores into a frequency distribution table (Arranged in ascending order)

Exclusive Series		Pure Classification Series		Inclusive Series	
C I	F	C I.	F	C I	F
50–55	3	49 5–54 5	3	50–54	3
45–50	6	44 5–49 5	6	45–49	6
40–45	8	39 5–44 5	8	40–44	8
35–40	7	34 5–39 5	7	35–39	7
30–35	2	29 5–34 5	2	30–34	2
	N=26		N=26		N=26

Table—2 (b) Methods of grouping scores into a frequency distribution table (Arranged in descending order)

Exclusive Series		Pure Classification Series		Inclusive Series	
C. I	F	C. I	F	C. I.	F
30–35	2	29 5–34 5	2	30–34	2
35–40	7	34 5–39 5	7	35–39	7
40–45	8	39 9–44 5	8	40–44	8
45–50	6	44·5–49 5	6	45–49	6
50–55	3	49·5–54 5	3	50–54	3
	N=26		N=26		N=26

में अंक 35 को सम्मिलित नहीं किया गया है, इसी प्रकार वर्गान्तर 35-40 मे अंक 40 को सम्मिलित नहीं किया गया है इसीलिए इस शृङ्खला को निषेधक शृङ्खला (Exclusive Series) कहते हैं। इस शृङ्खला के 30-35 वर्गान्तर में 29 5—34·5 तक के सभी अंकों को सम्मिलित कर लिया गया है। दूसरी शृङ्खला, शुद्ध वर्गीकृत शृङ्खला (Pure Classification Series) है। यह शृङ्खला सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सर्व शुद्ध है क्योंकि इसमें वास्तविक सीमाएँ प्रदर्शित की गई हैं। तीसरी शृङ्खला, सामोगिक शृङ्खला (Inclusive Series) है। यह शृङ्खला सामोगिक शृङ्खला इसलिए कहलाती है क्योंकि इसमें वर्गान्तर का अन्तिम अंक वर्गान्तर में ही सम्मिलित है जैसे 30-34 में, 34 वर्गान्तर (Class Interval) मे सम्मिलित है। इसी प्रकार 35-39 वर्गान्तर में 39 सम्मिलित है।

H. E. Garrett तथा R. S. Woodworth[1] के अनुसार तीनों प्रकार की शृङ्खला (Series) समान रूप से शुद्ध है। आवृत्ति वितरण बनाते समय शीघ्रता के लिए सामोगिक शृङ्खला (Inclusive Series) का प्रयोग करना चाहिए। प्रस्तुत पुस्तक मे भी अधिकतर इसी शृङ्खला का प्रयोग किया गया है।

---

1. "Statistics in Psychology and Education" p. 7, Allied Pacific Private Ltd , Bombay, 1961.

(ग) वर्गान्तरों की शुद्ध सीमाएँ (Exact Limits of Class-Intervals)

J. P. Guilford[1] के अनुसार प्राप्तांक 10 का अर्थ वास्तव में 9·5 से 10·5 तक है इसी प्रकार से 14 प्राप्तांक का अर्थ वास्तव में 13·5 से 14·5 तक है अतः 10—14 वर्गान्तर (Class Interval) का अर्थ 9·5 से 14·5 तक है। अर्थात् 10-14 वर्गान्तर की शुद्ध सीमाएँ 9·5 तथा 14·5 है। 10-14 वर्गान्तर में 9·5 शुद्ध निम्नतम सीमा (Exact Lower Limit) तथा 14·5 शुद्ध उच्चतम सीमा (Exact Upper Limit) कहलाती है। इसी प्रकार से 30-34 वर्गान्तर की शुद्ध निम्नतम सीमा 29·5 तथा शुद्ध उच्चतम सीमा 34·5 होगी। निषेधक शृंखला (Exclusive Series) में, चूँकि वर्गान्तर का अन्तिम अंक वर्गान्तर में सम्मिलित नहीं होता है इसलिए निषेधक शृंखला में भी, वर्गान्तर 30-35 की शुद्धनिम्नतम सीमा 29·5 तथा शुद्धउच्चतम सीमा 34·5 होगी। यहाँ 35·5 शुद्धउच्चतम सीमा लिखना त्रुटि होगी क्योंकि वर्गान्तर 30-35 में (जो कि निषेधक शृंखला का है) अंक 35 वर्गान्तर में सम्मिलित नहीं है। अतः इस वर्गान्तर की शुद्ध उच्चतम सीमा 35·5 न लिख कर 34·5 ही लिखना उचित है।

(घ) वर्गान्तर का मध्य बिन्दु (The Midpoint of a Class-Interval)

वर्गान्तर का मध्य बिन्दु वर्गान्तर की उच्चतम सीमा तथा निम्नतम सीमा के मध्य में होता है। सारणी—3 के समावेशिक शृंखला में 40—44 वर्गान्तर की निम्नतम तथा उच्चतम सीमा क्रमशः 40—44 है (यहाँ यह ध्यान रहे कि शुद्ध सीमा (Exact Limit) तथा सीमा में अन्तर है। शुद्ध सीमा के लिए वर्गान्तरों की शुद्ध सीमाएँ शीर्षक इसी अध्याय में देखिए) इसलिए इस वर्गान्तर का मध्य बिन्दु 42 है। इसी प्रकार से शुद्ध वर्गीकृत शृंखला (Pure classification Series) में 39·5—44·5 वर्गान्तर की निम्नतम तथा उच्चतम सीमाएँ क्रमशः 39·5 तथा 44·5 है। अतः उस वर्गान्तर का मध्य बिन्दु 42 है। इसी प्रकार से निषेधक शृंखला (Exclusive Series) में, 40—45 वर्गान्तर (ध्यान रहे 45 अंक इस वर्गान्तर में सम्मिलित नहीं है) की निम्नतम तथा उच्चतम सीमा 40—44 है। अतः इस वर्गान्तर का मध्य बिन्दु भी 42 है। मध्य बिन्दु निकालने के सूत्र, तालिका—3 के नीचे दिए हुए हैं।

---

1. "Fundamental statistics in Psychology & Education" p. 37, McGraw-Hill Book Co, Tokyo, 1956.

Table—3. Calculation of Midpoints in different series

A—Series			B—Series			C—Series		
Exclusive Series			Pure classification Series			Inclusive Series		
C. I.	Mid points	F	C. I	Mid points	F	C. I.	Mid points	F
95–100	97	2	94 5–99 5	97	2	95–99	97	2
90– 95	92	3	89 5–94 5	92	3	90–94	92	3
85– 90	87	5	84 5–89 5	87	5	85–89	87	5
80– 85	82	9	79 5–84 5	82	9	80–84	82	9
75– 80	77	10	74 5–79 5	77	10	75–79	77	10
70– 75	72	12	69 5–74 5	72	12	70–74	72	12
65– 70	67	6	64 5–69 5	67	6	65–69	67	6
60– 65	62	4	59·5–64 5	62	4	60–64	62	4
55– 60	57	3	54 5–59 5	57	3	55–59	57	3
50– 55	52	2	49 5–54·5	52	2	50–54	52	2
45– 50	47	2	44 5–49 5	47	2	45–49	47	2
40– 45	42	2	39 5–44 5	42	2	40–44	42	2
		N=60			N=60			N=60

सूत्र : 1

$$\text{मध्य विन्दु} = \text{वर्गान्तर का निम्नतम अंक} + \frac{\text{उच्चतम अंक—निम्नतम अंक}}{2}$$

Table—3 के आँकड़ो के मध्य विन्दु इस प्रकार है—

A-Series

$$\text{मध्यविन्दु} = 40 + \frac{44-40}{2}$$

$$= 40 + \frac{4}{2} = 40 + 2 = 42$$

अतः 40-45, वर्गान्तर का मध्यविन्दु 42 है ।

B—Series

मध्यविन्दु $= 39.5 + \frac{44.5 - 39.5}{2}$

$= 39.5 + \frac{5}{2} = 39.5 + 2.5 = 42$

अतः 39·5—44·5 वर्गान्तर का मध्यविन्दु 42 है।

C—Series

मध्यविन्दु $= 40 + \frac{44 - 40}{2}$

$= 40 + \frac{4}{2} = 40 + 2 = 42$

अतः 40–44 वर्गान्तर का मध्यविन्दु 42 है।

सूत्र : २

इसका प्रयोग केवल *Table—3* की *A-Series* तथा *C-Series* पर किया जा सकता है।

मध्यविन्दु $= \frac{\text{उच्चतम अंक} + \text{निम्नतम अंक}}{2}$

मध्यविन्दु $= \frac{44 + 40}{2} = \frac{84}{2} = 42$

(छ) मध्यविन्दुओं की सहायता से आवृत्ति वितरण तालिका बनाना (Preparation of Frequeney Distribution Table with the help of Midpoints)

उदाहरण—२

निम्नलिखित मध्यविन्दुओं से आवृत्ति वितरण बनाइए।

मध्यविन्दु (Midpoints)
42
37
32
27
22
17
12

हल—

उपर्युक्त मध्यबिन्दुओ में प्रत्येक मे 5 का अन्तर है अतः वर्गान्तर का आकार (Size of the Class Interval) भी 5 हुआ। वर्गान्तर के आकार मे 2 से भाग कर दीजिए, जो सख्या प्राप्त हो उसे मध्यबिन्दु मे घटाने से वर्गान्तर का न्यूनतम अंक प्राप्त होगा तथा भाग द्वारा प्राप्त संख्या को मध्यबिन्दु में जोडने से वर्गान्तर का उच्चतम अक प्राप्त होगा। उदाहरण 2 मे दिए हुए मध्यबिन्दुओ मे अन्तर 5 का है। 5 में 2 का भाग देने से 2 5 सख्या प्राप्त होती है यदि 2·5 सख्या को मध्यबिन्दु 12 से घटायें तो 9 5 वर्गान्तर का न्यूनतम अंक प्राप्त होता है तथा 12 में 2·5 जोड़ने से 14·5 वर्गान्तर का उच्चतम अंक प्राप्त होता है। अतः वर्गान्तर 9·5—14·6 बना। इसी प्रकार

Table 4—Preparation of Frequency distribution table from midpoints.

Midpoints	Pure Classification Series	*Including Series*	Excluding Series
42	± 2 5 39 5—44 5	40—44	40–45
37	± 2·5 34 5—39 5	35—39	35–40
32	± 2 5 29 5—34 5	30—34	30–35
27	± 2 5 24·5—29·5	25—29	25–30
22	± 2 5 19·5—24·5	20—24	20–25
17	± 2·5 14·5—19·5	15—19	15–20
12	± 2 5 9·5—14 5	10—14	10–15

अन्य वर्गान्तरों के उच्चतम अंक एवं निम्नतम अंक Table—4 के अनुसार निकाल लेते हैं। इस प्रकार जो शृंखला प्राप्त होती है उसे शुद्ध वर्गीकृत शृंखला कहते हैं। इस शृंखला की सहायता से निवेषक एवं सामोगिक शृंखला भी बना सकते हैं।

कुछ अन्य उपयोगी उदाहरण
(Some Other Useful Examples)

उदाहरण—3

नीचे दिये गये प्रत्येक सेट के लिए आवृत्ति वितरण तालिका बनाने में आप

कितना बड़ा वर्गान्तर का आकार (Size of the Class Interval) तथा कितने वर्गान्तर (No. of Class Intervals) बनायेंगे। प्रत्येक सेट के लिए वर्गान्तरों को भी बनाइए :

Ques. (1) 30 to 100

Ques (2) 0 to 3

Ques. (3) 500 to 2000

Ques. (4) 61 to 85

Ques. (5) −24 to +28

Ques. (6) ·0001 to ·0013

हल—

Ans (1)

प्रसार (Range) = Highest Score − Lowest Score

$$= 100 - 30 = 70$$

वर्गान्तरों का आकार (Size of C. I) $= \frac{\text{Range of Scores}}{\text{No. of the C. I}}$

$= \frac{70}{7}$ (यहाँ वर्गान्तरों की संख्या 7 मान ली गई है)

$= 10$

वर्गान्तरों की संख्या (No. of C. I.) $= \frac{\text{Range of Scores}}{\text{Size of the C. I.}} + 1$

$= \frac{70}{10} + 1$

$= 7 + 1$

$= 8$

वर्गान्तर (Class Intervals)
100—109
90— 99
80— 89
70— 79
60— 69
50— 59
40— 49
30— 39

Ans. (2)

प्रसार (Range) $= \text{Highest Score} - \text{Lowest Score}$

$= 3 - 0 = 3.$

वर्गान्तरों का आकार (Size of C. I) $= \dfrac{\text{Range of Scores}}{\text{No. of the C. I.}}$

$= \dfrac{3}{6}$ (यहाँ वर्गान्तरों की संख्या 6 मान ली गई है)

$= 5$

वर्गान्तरों की संख्या (No. of C. I.) $= \dfrac{\text{Range of Scores}}{\text{Size of the C. I.}} + 1$

$= \dfrac{3}{\cdot 5} + 1$

$= 6 + 1 = 7$

वर्गान्तर (Class Intervals)
3·0—3·4
2·5—2·9
2·0—2·4
1·5—1·9
1·0—1·4
·5— ·9
0— ·4

Ans (4)

प्रसार (Range)=Highest Score—Lowest Score

$=85-61=24$

वर्गान्तरो का आकार (Size of C I) $= \frac{\text{Range of Scores}}{\text{No of the C. I}}$

$= \frac{24}{6}$ (यहाँ वर्गान्तरों की सख्या 6 मान ली गई है)

$=4$

वर्गान्तरों की संख्या (No. of C. I.) $= \frac{\text{Range}}{\text{Size of the C I.}} + 1$

$= \frac{24}{4} + 1$

$= 6 + 1$

$= 7$

वर्गान्तर
(Class Intervals)

84—87
80—83
76—89
72—75
68—71
64—67
60—63

Ans. (5)

प्रसार (Range)=Highest Score—Lowest Score

$=28-(-24)$

$=28+24$

$=52$

वर्गान्तरों का आकार (Size of C. I.) $= \frac{\text{Range of Scores}}{\text{No. of the C. I.}}$

$= \frac{\cdot 0012}{6}$ (यहाँ वर्गान्तरों की संख्या 6 मान ली गई है।)

$= \cdot 0002$

वर्गान्तरों की संख्या (No. of C. I.) $= \frac{\text{Range of Scores}}{\text{Size of the C. I.}} + 1$

$= \frac{0012}{0002} + 1$

$= 6 + 1$

$= 7$

वर्गान्तर
(Class Intervals)
·0013—·0014
·0011—·0012
·0009—·0010
·0007—·0008
·0005—·0006
·0003—·0004
·0001—·0002

उदाहरण—4

29	31	41	04*	36	26	22	29	31	38
22	43	08	27	31	29	42	14	35	36
25	47	16	33	23	28	39	27	48S	17
24	34	28	20	27	34	28	24	35	32
28	38	21	33	18	36	48	09	42	27

* न्यूनतम अंक। S उच्चतम अंक।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. आवृत्ति तथा आवृत्ति वितरण से आप क्या समझते हैं ? इसका क्या महत्त्व है ?

2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए :
   1. प्रदत्त (Data),
   2. प्राप्तांक (Score),
   3. प्रसार (Range) ।

3. निम्नलिखित प्राप्तांक विस्तारों में से प्रत्येक का वर्गान्तर का आकार (Size of the C. I.) तथा निम्नतम वर्गान्तर की सीमाओं (Score Limits of the Lowest Class Interval) को बताइए :

(अ)	17	से	32
(ब)	4	से	39
(स)	35	से	96
(द)	0	से	188
(क)	83	से	197
(ख)	141	से	·205

4. निम्नलिखित प्राप्तांको की आवृत्ति वितरण तालिका (Frequency distribution table) बनाइए :

38	20	25	26	28	32	33
29	33	28	29	25	24	23
29	31	30	32	33	27	26
29	33	32	34	33	21	28

5. निम्नलिखित प्राप्तांकों का 4 का वर्गान्तर का आकार लेकर आवृत्ति वितरण तालिका बनाइए :

6	7	8	12	14	15	3
15	14	13	12	11	10	12
11	10	10	9	8	7	8
9	12	11	15	17	19	18
4	32					

6. निम्नलिखित वर्गान्तरों का मध्यबिन्दु (Midpoint) ज्ञात कीजिए :

A	B
195—200	195—199
190—195	190—194
185—190	185—189
180—185	180—184
175—180	175—179
170—175	170—174
165—170	165—169

7. निम्नलिखित वर्गान्तरों को पूरा कीजिए :

Including Series	Excluding Series	Pure Classification Series
50—54	50—55	49.5—54.5
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
......	......	......
0—4	0—5	—.5—4.5

8. निम्नलिखित वर्गान्तरों को पूरा करके उनके मध्यबिन्दु ज्ञात कीजिए :

Including Series	Excluding Series	Pure Classification Series
130—139	130—140	129·5—139·5
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
....	....	....
20—29	20—30	19·5—29·5

9. निम्नलिखित प्राप्तांकों से उचित वर्गान्तर लेकर आवृत्ति वितरण तालिका बनाइए :

22	37	34	34	8	10	36
21	29	15	34	17	19	23
10	14	35	17	17	38	19
40	10	19	23	27	18	28
25	14	11	10	13	38	39
11	13	10	20	17	40	27
9	19	28	31	30	25	27
30	25	35	34	37	35	34

10. निम्नलिखित मध्यबिन्दुओं से वर्गान्तर (Class Intervals) बनाइए :

Midpoints	Midpoints
68 5	107
66·5	102
64·5	97
62 5	92
60 5	87
58·5	82
56·5	77
54 5	72
52·5	67
50·5	62

11. वर्गान्तर का आकार तथा वर्गान्तरों की संख्या पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

		Size of C. I.	Score Limits
3.	(अ)	1	17
	(ब)	3	3— 5
	(स)	5	35—39
	(द)	20	0—19
	(क)	10	80—89
	(ख)	005	·140—·144

4 केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप

MEASURES OF CENTRAL TENDENCY

अर्थ (Meaning)

केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापों से प्रायः हमारा तात्पर्य औसत (Average) से होता है। औसत कई प्रकार के होते हैं। मनोविज्ञान के अध्ययनों मे मुख्य रूप से तीन प्रकार के औसतों का प्रयोग किया जाता है—(1) मध्यमान (Mean), (2) मध्यांक (Median), तथा (3) बहुलांक (Mode)। गिलफोर्ड (J. P. Guilford) ने इन तीनो मापों के अतिरिक्त दो अन्य मापों—गुणोत्तर मध्यमान (Geometric Mean) तथा हरात्मक मध्यमान (Hormonic Mean)—का भी संक्षेप मे वर्णन किया है। प्रस्तुत अध्याय मे केवल मध्यमान, मध्यांक और बहुलांक का वर्णन किया गया है।

औसत (Average) वह अंक है जो निरीक्षणों या व्यक्तियों के मध्यमान का द्योतक है (An average is a number indicating the Central value of a group of observations or of individuals)[1]। दूसरे शब्दों में, औसत वह संख्या होती है जो निरीक्षणों या व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए, यदि यह प्रश्न पूछा जाय. के विद्यार्थी

---

1. Guilford, J. P. ... and
E.

अंकगणित में कितने अच्छे हैं तो साधारण उत्तर यह होगा कि कक्षा पाँच के स्तर का अंकगणित का कोई परीक्षण उन्हें दिया जाय और फिर परीक्षण द्वारा प्राप्त अंको का औसत निकाला जाय।

औसत से हमारा तात्पर्य केन्द्रीय प्रवृत्ति के केवल एक माप मध्यमान (Mean) से ही न होकर अन्य दो और मापकों—मध्यांक (Median) तथा बहुलांक (Mode) से भी है। इन तीनों मापों में अन्तर केवल समय और शुद्धता का है। *तीनों माप केन्द्रीय प्रवृत्ति (Central Tendency) के द्योतक* हैं। मध्यमान (Mean) केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों में सबसे शुद्ध मान है—इसकी गणना में समय अधिक लगता है। मध्यांक (Median), मध्यमान (Mean) की अपेक्षा कम शुद्ध है, इसकी गणना में मध्यमान की अपेक्षा समय कम लगता है। बहुलांक (Mode), मध्यमान और मध्यांक की अपेक्षा कम शुद्ध मान है, इसकी गणना में इन दोनों मापों की अपेक्षा समय कम लगता है।

महत्व (Importance)

मनोविज्ञान की विभिन्न समस्याओं के अध्ययन में, केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापों का प्रयोग प्रदत्तों का विश्लेषण करने में किया जाता है। समाज विज्ञानों के अनुसन्धानों में भी इनका अपना मौलिक महत्त्व है। यदि किसी समूह से सम्बन्धित सम्पूर्ण सूचनाएँ न भी हों तो केवल केन्द्रीय प्रवृत्ति के मानों द्वारा हम परिणाम तथा कुछ साधारण नियम ज्ञात कर सकते हैं। गैरेट (H E. Garrett) और वुडवर्थ (R. S Woodworth) ने केन्द्रीय प्रवृत्ति के निम्नलिखित महत्व बताए हैं[1]

1. केन्द्रीय प्रवृत्ति समूह के प्राप्तांकों (Scores) का प्रतिनिधित्व करती है।
2. केन्द्रीय प्रवृत्ति सम्पूर्ण वर्ग के गुणों को संक्षिप्त रूप से (Concise) प्रदर्शित करती है।
3. दो या दो से अधिक समूहों के कार्यों एवं गुणों की तुलना केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों के द्वारा सरलता से की जा सकती है।
4. गिलफोर्ड (J P. Guilford) के अनुसार किसी समूह के गुणों और कार्यों को केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापों के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

1 *Statistics in Psychology and Education*, (1961), p. 27.

उच्च सांख्यिकीय विश्लेषण में भी केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापों का महत्त्व है। उदाहरण के लिए, प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation), सह-सम्बन्ध (Correlation) आदि ज्ञात करते समय केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापों की आवश्यकता होती है।

सीमाएँ (Limitations)

1. केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापों की सबसे गम्भीर सीमा यह है कि ये व्यक्तिगत विशेषताओं पर प्रकाश नहीं डालते। इन मापों से केवल सामूहिक गुणों, कार्यों एवं विशेषताओं को ही समझा जा सकता है।
2. केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप कभी-कभी सामूहिक गुणों, कार्यों एवं विशेषताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। इस प्रकार के प्रतिनिधित्व न करने वाले केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों से यदि उच्च सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाय तो दूषित परिणाम प्राप्त होते हैं।
3. भिन्न-भिन्न प्रकार के सांख्यिकीय विश्लेषण में केन्द्रीय प्रवृत्ति के अलग-अलग मापकों से भिन्न-भिन्न परिणाम ज्ञात होते हैं।

1. समान्तर मध्यमान
(The Arithmetic Mean)

किसी अंक सामग्री के समस्त अंकों के योगफल को उन अंकों की संख्या से भाग देने से जो भजनफल प्राप्त होता है उसे समान्तर मध्यमान कहते हैं (The arithmetic mean is the sum of the separate scores or measures divided by their number)। उदाहरण के लिए, 5 और 7 का समान्तर मध्यमान $\frac{5+7}{2}$ अर्थात् 6 है। साधारणतः समान्तर मध्यमान (Arithmetic mean) को मध्यमान (Mean) कहते हैं। मध्यमान का संकेत चिन्ह 'M' है अर्थात् मध्यमान को 'M' अक्षर द्वारा प्रदर्शित करते हैं।

उदाहरण—1

हाई स्कूल की परीक्षा में एक विद्यालय के 10 विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में, 20 विद्यार्थी द्वितीय श्रेणी में, तथा 40 विद्यार्थी तृतीय श्रेणी [illegible] हुए, तो तीनों श्रेणियों में उत्तीर्ण विद्यार्थियों का मध्यमान क्या [illegible]

हल—

$$\text{मध्यमान} = \frac{\text{विद्यार्थियों का कुल योग}}{\text{विभिन्न श्रेणियों की संख्या}}$$

$$= \frac{10+20+40}{3}$$

$$= \frac{70}{3}$$

$= 23.33$ उत्तर

अव्यवस्थित आँकड़ों का मध्यमान (The Mean of Ungrouped Data)

अव्यवस्थित आँकड़ों का मध्यमान ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है :

सूत्र— $$M = \frac{\Sigma X}{N} \qquad \text{........(1)}$$

जबकि, M = Arithmetic Mean
Σ = The sum of
X = Score or other measure
N = No of measurements or scores

उदाहरण—2

किसी परीक्षण के प्राप्तांक 10, 12, 14, 16 हैं तो प्राप्तांकों का मध्यमान ज्ञात कीजिए।

हल—

$$\text{मध्यमान (Mean)} = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma X = 10+12+14+16 = 52$$
$$N = 4$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M = \frac{52}{4}$$

$= 13$ उत्तर

उदाहरण—3

बी० ए० प्रथम वर्ष के छात्रों को सामान्य मनोविज्ञान का एक परीक्षण दिया गया। छात्रों को निम्न प्राप्तांक प्राप्त हुए, मध्यमान की गणना कीजिए :

प्राप्तांक—

	35	40	34	36	30
	32	25	17	22	24
	26	20	25	26	27
हल—	133	85	76	84	81 = 459

$$\text{मध्यमान (Mean)} = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रश्न में,

ΣX = प्राप्तांकों का कुल योग
= 419
N = प्राप्तांकों की संख्या
= 12

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{124}{12}$$

= 34·916
= 34·92 उत्तर

उदाहरण—4

बी० ए० के छात्र ने भूल भुलैया (*Maze Learning*) के प्रयोग में 10 प्रयासों में निम्नलिखित समय (सैकिण्डों में) लिया। मध्यमान समय निकालिए :

समय (सैकिण्डों में)—

55·0	45·4	36·6	56·4	26·2
21·3	29·0	31·8	32·2	31·9

हल—

$$\text{मध्यमान (Mean)} = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रश्न मे,

$$\Sigma X = 365{\cdot}8$$
$$N = 10$$

इन मूल्यों को सूत्र मे रखने पर,

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{365\ 8}{10}$$

$$= 36\ 58$$ सैकिण्ड उत्तर

व्यवस्थित आंकड़ों का मध्यमान (The Mean of Grouped Data)

व्यवस्थित अंक सामग्री से मध्यमान ज्ञात करने की निम्नलिखित दं विधियाँ हैं .

(1) दीर्घ विधि (Long Method), और
(2) संक्षिप्त विधि (Short Method)।

(1) दीर्घ विधि ·

सूत्र—

$$M = \frac{\Sigma fX}{N} \qquad \cdots\cdots(2)$$

जबकि,

M = Mean
Σ = The sum of
f = Frequency
X = Midpoint
fX = Product of Frequency and Midpoints
N = Total Number of Frequencies

(2) संक्षिप्त विधि :

सूत्र— $$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I. \quad ......(3)$$

जबकि,

M = Mean
AM = Assumed Mean
f = Frequency
d = Deviation
fd = Product of Frequency & Deviation
N = Total Number of Frequencies
C. I. = Length of Class Interval

दीर्घ विधि (Long Method) द्वारा मध्यमान ज्ञात करना—

1. इस विधि द्वारा व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान ज्ञात किया जाता है। मध्यमान ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम वर्गान्तरों (Class Intervals) के मध्यबिन्दु (Midpoints) ज्ञात कीजिए। प्रत्येक वर्गान्तर के मध्यबिन्दु को वर्गान्तर के सामने 'X' वाले स्तम्भ मे लिखिए। उदाहरण के लिए, Table—I मे *10–14* वर्गान्तर के मध्यबिन्दु '12' को 'X' वाले स्तम्भ मे लिखा गया है।
2. 'fX' ज्ञात करने के लिए प्रत्येक वर्गान्तर (Class Interval) के सामने की आवृत्तियों (Frequencies) तथा मध्यबिन्दुओं (Midpoints) का गुणा कीजिए। उदाहरण के लिए, Table—I मे 10–14 वर्गान्तर के सामने की आवृत्ति '1' और मध्यबिन्दु 12 का गुणा कर fX स्तम्भ में '12' लिखा गया है।
3. ΣfX ज्ञात करने के लिए fX स्तम्भ की संख्याओं का योग कीजिए।
4. मध्यमान (Mean) निकालने के लिए प्राप्त 'ΣfX' को 'N' की संख्या से भाग दीजिए।

संक्षिप्त विधि (Short Method) द्वारा मध्यमान ज्ञात करना—

1. संक्षिप्त विधि द्वारा मध्यमान ज्ञात करते समय सबसे पहले कल्पित मध्यमान (Assumed mean) ज्ञात किया जाता है। इसके लिए यह देखिए कि किस वर्गान्तर (Class Interval) की आवृत्तियाँ

हल—

$$\text{मध्यमान (Mean)} = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma X = 365 \cdot 8$$
$$N = 10$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{365 \cdot 8}{10}$$

$= 36 \cdot 58$ संक्षिप्त उत्तर

व्यवस्थित आंकड़ों का मध्यमान (The Mean of Grouped Data)

व्यवस्थित अंक सामग्री से मध्यमान ज्ञात करने की निम्नलिखित दो विधियाँ हैं :

(1) दीर्घ विधि (Long Method), और

(2) संक्षिप्त विधि (Short Method)।

(1) दीर्घ विधि

सूत्र—

$$M = \frac{\Sigma fX}{N} \qquad \ldots\ldots(2)$$

जबकि,

M = Mean
Σ = The sum of
f = Frequency
X = Midpoint
fX = Product of Frequency and Midpoints.
N = Total Number of Frequencies

(2) संक्षिप्त विधि :

सूत्र— $$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I. \quad \ldots\ldots(3)$$

जबकि,

M = Mean
AM = Assumed Mean
f = Frequency
d = Deviation
fd = Product of Frequency & Deviation
N = *Total Number of Frequencies*
C. I. = Length of Class Interval

दीर्घ विधि (Long Method) द्वारा मध्यमान ज्ञात करना—

1. इस विधि द्वारा व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान ज्ञात किया जाता है। मध्यमान ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम वर्गान्तरों (Class Intervals) के मध्यबिन्दु (Midpoints) ज्ञात कीजिए। प्रत्येक वर्गान्तर के मध्यबिन्दु को वर्गान्तर के सामने 'X' वाले स्तम्भ में लिखिए। उदाहरण के लिए, Table—1 में 10–14 वर्गान्तर के मध्यबिन्दु '12' को 'X' वाले स्तम्भ में लिखा गया है।
2. 'fX' ज्ञात करने के लिए प्रत्येक वर्गान्तर (Class Interval) के सामने की आवृत्तियों (Frequencies) तथा मध्यबिन्दुओं (Midpoints) का गुणा कीजिए। उदाहरण के लिए, Table—1 में 10–14 वर्गान्तर के सामने की आवृत्ति '1' और मध्यबिन्दु 12 का गुणा कर fX स्तम्भ में '12' लिखा गया है।
3. Σ fX ज्ञात करने के लिए fX स्तम्भ की संख्याओं का योग कीजिए।
4. मध्यमान (Mean) निकालने के लिए प्राप्त 'ΣfX' को 'N' की संख्या से भाग दीजिए।

संक्षिप्त विधि (Short Method) द्वारा मध्यमान ज्ञात करना—

1. संक्षिप्त विधि द्वारा मध्यमान ज्ञात करते समय
मध्यमान (Assumed mean) ज्ञात किया
यह देखिए कि किस वर्गान्तर (C

(Frequencies) सबसे अधिक हैं। सर्वाधिक आवृत्तियो वाला वर्गान्तर प्रायः मध्यवर्ती वर्गान्तर हुआ करता है। इस वर्गान्तर का मध्यबिन्दु ही कल्पित मध्यमान होता है। उदाहरणार्थ, Table—2 मे 30–34 वर्गान्तर की आवृत्ति '5' है, जो सबसे अधिक है। यह वर्गान्तर मध्यवर्ती अर्थात् वर्गान्तरो के बीच का वर्गान्तर है। इस *वर्गान्तर '30–34' का मध्यबिन्दु '32' है जो कल्पित मध्यमान* (Assumed mean) है। यदि कई वर्गान्तरो की आवृत्तियाँ समान और सबसे अधिक हो तो मध्यवर्ती वर्गान्तर से कल्पित मध्यमान को लेना अच्छा होता है. यह बात भी ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि सर्वाधिक आवृत्ति वाला वर्गान्तर वर्गान्तरो के मध्य मे न हो तो वर्गान्तरो के मध्य वाले वर्गान्तर से कल्पित मध्यमान लेना चाहिए।

2. कल्पित मध्यमान ज्ञात करने के पश्चात् विचलन (Deviation) 'd' ज्ञात किया जाता है। इसके लिए जिस वर्गान्तर (Class Interval) मे कल्पित मध्यमान मानते हैं उसके सामने 'd' वाले *स्तम्भ मे 0 रख देते हैं। उदाहरण के लिए, Table—2 मे* 30–34 वर्गान्तर के सामने 'd' वाले स्तम्भ मे '0' रखा गया है। वितरण के जिस ओर मध्यबिन्दुओं का मान बढ़ता है उधर विचलन क्रमशः +1, +2, +3, +4,………आदि होता है और वितरण के जिस ओर मध्यबिन्दुओ का मान घटता है उधर विचलन क्रमशः −1, −2, −3, −4, ……होता है।
3. 'fd' ज्ञात करने के लिए प्रत्येक वर्गान्तर के सामने की आवृत्तियो का विचलन से गुणा करते हैं और गुणनफल को 'fd' स्तम्भ मे लिखते हैं। उदाहरण के लिए, Table—2 मे 10–14 वर्गान्तर के सामने की आवृत्ति 1 और विचलन (Deviation) 4 का गुणा कर गुणनफल 4 को 'fd' वाले स्तम्भ मे रखते हैं। इस प्रकार से प्रत्येक वर्गान्तर के सामने 'fd' का मान रख लेने के पश्चात् 'fd' स्तम्भ की धनात्मक (Positive) तथा ऋणात्मक (Negative) सख्याओ का अलग-अलग जोड करते हैं। (देखिए, Table—2)
4. 'Σ fd' का मान ज्ञात करने के लिए धनात्मक तथा ऋणात्मक संख्याओ के योग का अन्तर मालूम कर लेते हैं।
5. वर्गान्तर का आकार (Length of the Class Interval) तथा N का मान प्रश्न से देखकर लिख लेते हैं। अन्त मे सक्षिप्त विधि के सूत्र मे इन सभी ज्ञात किए हुए मूल्यो को रखते हैं और गणना

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.\ I.$$

$$= 32 + \left(\frac{3}{25}\right) \times 5$$

$$= 32 + \frac{3 \times 5}{25}$$

$$= 32 + \frac{3}{5}$$

$$= 32 + 6$$

$$= 32{\cdot}6$$

अतः अभीष्ट मध्यमान $= 32{\cdot}6$ उत्तर

उदाहरण—7

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का संक्षिप्त विधि द्वारा मध्य कीजिए :

Table 2—Calculation of Mean by Short Method

C I	f	d	fd
50—54	2	+4	+8
45—49	2	+3	+6
40—44	3	+2	+6
35—39	3	+1	+3
			=+23
30—34	5	0	0
25—29	4	−1	−4
20—24	3	−2	−6
15—19	2	−3	−6
10—14	1	−4	−4
			=−20
	N=25		Σ fd=3

संक्षिप्त विधि (Short Method) का सूत्र—

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C\ I$$

प्रश्न मे,

$$AM = 32$$
$$\Sigma fd = 3$$
$$N = 25$$
$$C.\ I. = 5$$

इन मूल्यों को सूत्र मे रखने पर,

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.\ I.$$

$$= 32 + \left(\frac{3}{25}\right) \times 5$$

$$= 32 + \frac{3 \times 5}{25}$$

$$= 32 + \frac{3}{5}$$

$$= 32 + 6$$
$$= 32{\cdot}6$$

अतः अभीष्ट मध्यमान $= 32{\cdot}6$ उत्तर

उदाहरण—7

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का संक्षिप्त विधि द्वारा मध्यमान ज्ञात कीजिए :

Table 3—Calculation of Mean by Short Method

C. I.	f	d	fd
140—149	3	+6	+18
130—139	4	+5	+20
120—129	5	+4	+20
110—119	2	+3	+ 6
100—109	6	+2	+12
90— 99	6	+1	+ 6
			= +82
80— 89	12	0	
70— 79	9	−1	− 9
60— 69	9	−2	−18
50— 59	12	−3	−36
40— 49	5	−4	−20
			= −83
	N = 73		Σfd = −1

संक्षिप्त विधि का सूत्र—

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I$$

प्रश्न में,

$$AM = 84.5$$
$$\Sigma fd = -1$$
$$N = 73$$
$$C.I = 10$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I.$$

$$= 84.5 + \left(\frac{-1}{73}\right) \times 10$$

$$=84{\cdot}5-\frac{10}{73}$$

$$=84\ 5-{\cdot}136$$

$$=84{\cdot}364$$

अत: अभीष्ट मध्यमान=84·36 उत्तर

उदाहरण—8

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का दीर्घ तथा संक्षिप्त विधि द्वारा मध्यमान ज्ञात कीजिए :

Table 4—Calculation of Mean by Long and Short Method.

C. I.	f	X	fX	d	fd
60—64	6	62	372	+4	+24
55—59	9	57	513	+3	+27
50—54	11	52	572	+2	+22
45—49	5	47	235	+1	+ 5
					= +78
40—44	12	42	504	0	0
35—39	8	37	296	−1	− 8
30—34	3	32	96	−2	− 6
25—29	5	27	135	−3	−15
20—24	7	22	154	−4	−28
15—19	4	17	68	−5	−20
					= −77
	N=70		ΣfX=2945		Σfd=1

दीर्घ विधि (Long Method) का सूत्र—

$$M=\frac{\Sigma fX}{N}$$

प्रश्न मे,

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M=\frac{2945}{70}$$

$$=\frac{589}{14}$$

$$=42.07$$

अतः अभीष्ट मध्यमान $=42.07$ उत्तर

संक्षिप्त विधि (Short Method) का सूत्र—

$$M=AM+\left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)\times C.I.$$

इसमें,

$$AM=42$$

$$\Sigma fd=1$$

$$N=70$$

$$C.I=5$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M=AM+\left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)\times C.I.$$

$$=42+\left(\frac{1}{70}\right)\times 5$$

$$=42+\frac{5}{70}$$

$$=42+\frac{1}{14}$$

$$=42+.071$$

$$=42.07$$

अतः अभीष्ट मध्यमान $=42.07$ उत्तर

उदाहरण—9

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान ज्ञात कीजिए :

Table 5—Calculation of Mean by Short Method

C. I.	f	d	fd
4—5	7	−3	−21
6—7	8	−2	−16
8—9	11	−1	−11
			= −48
10—11	15	0	0
12—13	13	+1	+13
14—15	8	+2	+16
			= +29
	N=62		fd = −19

संक्षिप्त विधि (*Short Method*) का सूत्र—

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I.$$

प्रश्न में,

$AM = 10\cdot5$
$\Sigma fd = -19$
$N = 62$
$C.I. = 2$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M = AM + \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times C.I.$$

$$= 10\cdot5 + \left(\frac{-19}{62}\right) \times 2$$

2. 'N' की संख्या ज्ञात करके उसमें एक जोड़ दीजिए और कुल जोड़ को दो से विभाजित कर भजनफल ज्ञात कर लीजिए।
3. भाग देने से प्राप्त संख्या वाला पद या स्थान (Term or number) मध्यांक होगा। प्राप्त संख्या वाला पद किसी ओर से गिन लीजिए।

उदाहरण—10

निम्न अव्यवस्थित आँकड़ों का मध्यांक ज्ञात कीजिए :

4, 9, 8, 6, 7, 9, 3, 5, 12

हल—

सूत्र—

$$Md=\left(\frac{N+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

प्रश्न में,

$$N=9$$

अंकों को आरोही क्रम (Ascending Order) में व्यवस्थित करने पर,

3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 9, 12

N के मूल्य को सूत्र में रखने पर,

$$Md=\left(\frac{N+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=\left(\frac{9+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=\left(\frac{10}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=5th \text{ term}$$

क्रम में व्यवस्थित अंकों में पाँचवाँ पद (term) 7 है (दोनों ओर से गिनने पर पाँचवाँ अंक 7 ही आता है)

अतः अभीष्ट मध्यांक $=7$ उत्तर

उदाहरण—11

निम्न अव्यवस्थित आँकड़ों का मध्यांक ज्ञात कीजिए :

17, 17, 18, 22, 21, 19, 20

$$=\left(\frac{8+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=\left(\frac{9}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=4\cdot5\text{th term}$$

प्रश्न में 4·5th term चौथी और पाँचवीं संख्या का मध्यमान होगा। चौथी संख्या 6 और पाँचवीं संख्या 7 का मध्यमान या 6 और 7 का मध्यमान $=\frac{6+7}{2}=6\cdot5$ है।

अतः अभीष्ट मध्यांक=6·5 उत्तर

उदाहरण—13

निम्न अव्यवस्थित आँकड़ों का मध्यांक ज्ञात कीजिए :

17, 13, 14, 15, 14, 18, 22, 18, 24, 22

हल—

सूत्र—

$$Md=\left(\frac{N+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

प्रश्न में,

$$N=10$$

अंकों को आरोही क्रम में व्यवस्थित करने पर,

13, 14, 14, 15, 17, 18, 18, 22, 22, 24

N के मूल्य को प्रश्न में रखने पर,

$$Md=\left(\frac{N+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=\left(\frac{10+1}{2}\right)^{th} \text{term}$$

$$=\left(\frac{11}{2}\right)^{th} \text{term}$$

=५

प्रश्न में 5·5th term पाँचवीं और छठी संख्या का मध्यमान होगा। पाँचवीं संख्या 17 और छठी संख्या 18 का मध्यमान या 17 और 18 का मध्यमान $= \frac{17+18}{2} = 17·5$ है।

अतः अभीष्ट मध्यांक $= 17·5$ उत्तर

व्यवस्थित आंकड़ों का मध्यांक (The Median of Grouped Data)

व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यांक ज्ञात करने का सूत्र निम्नलिखित है :

सूत्र— $$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i \quad \ldots\ldots(5)$$

जबकि,

Md = Median

L = Exact lower limit of the class interval upon which the median lies

fm = Frequency within the interval upon which the median lies

N/2 = One half the total number of frequencies or scores

F = Sum of all frequencies below L

or

Cumulative frequency below the class interval in which median falls

i = length of the class interval

व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यांक ज्ञात करना—

1. आवृत्ति-वितरण तालिका में दी हुई आवृत्तियों को संचयी आवृत्तियां (Cumulative Frequencies) में परिवर्तित कीजिए। इन संचयी आवृत्तियों से यह सरलता से ज्ञात किया जा सकता है कि मध्यांक (Median) किस वर्गान्तर (class interval) में है। साधारण आवृत्तियों को संचयी आवृत्तियां में परिवर्तित करने के लिए

यह आवृत्ति रखिए जो f वाले स्तम्भ (column) में है। 10–14 वर्गान्तर की संचयी आवृत्ति 1 तथा 15–19 वर्गान्तर की आवृत्ति 2 को जोड़कर 15–19 वर्गान्तर के सामने F वाले स्तम्भ में लिखिए। 15–19 वर्गान्तर की संचयी आवृत्ति 3 तथा 20–24 वर्गान्तर की आवृत्ति 3 को जोड़कर 20–24 वर्गान्तर के सामने F वाले स्तम्भ में लिखिए। 20–24 वर्गान्तर की संचयी आवृत्ति 6 को तथा 25–29 की आवृत्ति 4 को जोड़कर 25–29 वर्गान्तर के सामने F वाले स्तम्भ में लिखिए। इसी प्रकार F वाले स्तम्भ में सभी वर्गान्तरों की संचयी आवृत्तियों को लिखिए।

2. N/2 को कुल आवृत्तियों में 2 का भाग देकर ज्ञात कीजिए।
3. संचयी आवृत्ति वाले स्तम्भ को देखिए और यह निश्चित कीजिए कि किस वर्गान्तर में मध्यांक मान (N/2) है। उदाहरण—13 में मध्यांक मान 30–34 वाले वर्गान्तर में है क्योंकि N/2 = 12·5, 15 संचयी आवृत्ति में आता है।
4. यह निश्चित करने के बाद कि मध्यांक किस वर्गान्तर में है, F, fm तथा i संकेतों के मूल्य ज्ञात करके प्राप्त मूल्यों को सूत्र में रखिए और मध्यांक की गणना करिए।

उदाहरण—14

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यांक ज्ञात करिए :

Table 6—Calculation of Median from grouped data.

C. I.	f	F (Cumulative Frequencies)
50—54	2	25
45—49	2	23
40—44	3	21
35—39	3	18
30—34	5	15
25—29	4	10
20—24	3	6
15—19	2	3
10—14	1	1
	N=25	

मध्यांक का सूत्र—

$$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i$$

प्रश्न में,

$$L = 29.5$$
$$N/2 = 12.5$$
$$F = 10$$
$$fm = 5$$
$$i = 5$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i$$
$$= 29.5 + \left(\frac{12.5 - 10}{5}\right) \times 5$$
$$= 29.5 + \frac{2.5 \times 5}{5}$$
$$= 29.5 + 2.5$$

अत: अभीष्ट मध्यांक = 32 उत्तर

उदाहरण—15

निम्न अवर्गीकृत अंक सामग्री का मध्यांक ज्ञात कीजिए।

Table 7—Calculation of Median from grouped data

C. I	f	F
21—22	2	54
19—20	2	52
17—18	3	50
15—16	7	47
13—14	8	40
11—12	10	32
9—10	9	22
7—8	7	13
5—6	5	6
3—4	0	1
1—2	1	1
	N=54	

मध्यांक का सूत्र—

$$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i$$

प्रश्न में,

$$L = 10.5$$
$$N/2 = 27$$
$$F = 22$$
$$fm = 10$$
$$i = 5$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i$$

$$= 10.5 + \left(\frac{27 - 22}{10}\right) \times 5$$

$$= 10.5 + \frac{5 \times 5}{10}$$

$$= 10.5 + 2.5$$

अतः अभीष्ट मध्यांक = 13 उत्तर

उदाहरण—16

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यांक ज्ञात कीजिए :

Table 8—Calculation of Median from grouped data.

C. I.	f	F
40—42	2	10
37—39	1	8
34—36	0	7
31—33	0	7
28—30	2	7
25—27	0	5
22—24	0	5
19—21	2	5
16—18	1	3
13—15	1	2
10—12	1	1
	N=10	

मध्यांक का सूत्र—

$$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i$$

प्रश्न में,

$$L = 24.5$$
$$N/2 = 5$$
$$F = 5$$
$$fm = 0$$
$$i = 3$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Md = L + \left(\frac{N/2 - F}{fm}\right) \times i$$

$$= 24.5 + \left(\frac{5-5}{0}\right) \times 3$$

$$= 24.5 + \frac{0 \times 3}{0}$$

$$= 24\ 5 + 0$$

अत: अभीष्ट मध्याक = 24·5 उत्तर

3. बहुलांक
(The Mode)

अव्यवस्थित अक सामग्री (Ungrouped data) मे जिस प्राप्ताक की आवृत्ति सबसे अधिक होती है उसे प्राप्ताक की दी हुई अंक सामग्री का बहुलाक (Mode) कहते हैं। (The mode is that value which occurs most frequently in a series.) किसी वितरण मे वह बिन्दु जिसकी आवृत्ति सर्वाधिक हो, बहुलाक कहलाता है। (The Mode is strictly defined as the point on the scale of measurement with maximum frequency in a distribution.)[1] व्यवस्थित अक सामग्री (Grouped data) मे अपरिष्कृत बहुलाक (Crude mode) उस वर्गान्तर का मध्यबिन्दु होता है जिसकी आवृत्ति सबसे अधिक होती है। (In a distribution of

1. J. P. Guilford · *Fundamental Statistics in Psychology and Education*, 3rd Edition, p. 63.

grouped data, the crude mode is the midpoint of that class interval having the greatest frequency.)

इसका सकेत-चिन्ह (Symbol) Mo है।

अव्यवस्थित आंकड़ों का बहुलाक (The Mode of Ungrouped Data)

अव्यवस्थित अंक सामग्री का बहुलाक ज्ञात करने के लिए यह देखिए कि किस अक की आवृत्ति सर्वाधिक है। सर्वाधिक आवृत्ति वाला अंक ही बहुलाक होगा। उदाहरण के लिए 6, 7, 8, 9, 8, 11, 10, 8, 6, 10, 8 अकों मे अंक 8 की आवृत्ति सबसे अधिक बार हुई है, अतः इस अंक सामग्री का बहुलाक 8 है।

उदाहरण—17

सीखने मे स्थानान्तरण सम्बन्धी प्रयोग मे प्राप्त निम्नलिखित त्रुटियों का बहुलाक ज्ञात कीजिए :

18, 18, 13, 15, 13, 12, 13, 8, 5, 4, 2, 1, 0, 0

त्रुटियाँ	18	15	13	12	8	5	4	2	1	0
आवृत्तियाँ	2	1	3	1	1	1	1	1	1	2

इस तालिका से यह स्पष्ट है कि 13 अंक की आवृत्ति 3 बार या सबसे अधिक बार हुई है, अतः बहुलाक 13 हुआ।

अभीष्ट बहुलाक = 13 उत्तर

व्यवस्थित आंकड़ों का बहुलांक (The Mode of Grouped Data)

व्यवस्थित अंक सामग्री का बहुलांक ज्ञात करने के दो सूत्र प्रचलित हैं :

सूत्र (i)— $$Mo = 3\ Median - 2\ Mean \quad \ldots (6)$$

इस सूत्र द्वारा बहुलाक ज्ञात करने के लिए पहले मध्यमान ज्ञात करना होता है, फिर मध्यांक। मध्याक मे 3 का गुणा कर देते हैं तथा मध्यमान मे 2 का गुणा। पहली वाली सख्या से घटाकर बहुलाक प्राप्त करते हैं।

सूत्र (ii)— $$Mo = L + \frac{(f - f_1)}{(f - f_1) + (f - f_2)} \times C.I. \quad \ldots\ldots(7)$$

जबकि,

Mo = बहुलाक (Mode)

L = उस वर्गान्तर का निम्नतम सीमाक जिसमे आवृत्तियो की संख्या सबसे अधिक है। (Lower limit of that Class Interval having highest frequency)

f = उस वर्गान्तर की आवृत्ति जिसमे आवृत्तियो की संख्या सबसे अधिक है (Frequency of the Modal Class)

f_1 = सबसे अधिक आवृत्तियो वाले वर्गान्तर के ठीक नीचे वाले वर्गान्तर की आवृत्ति (Frequency of Pre-modal class)

f_2 = सबसे अधिक आवृत्तियो वाले वर्गान्तर के ठीक ऊपर वाले वर्गान्तर की आवृत्ति (Frequency of Post-modal class)

C I = वर्गान्तर विस्तार (Length of the Class Interval)

इस सूत्र द्वारा बहुलाक ज्ञात करने के लिए सबसे पहले वह वर्गान्तर ढूंढ़िए मे सबसे अधिक आवृत्ति हो फिर इसी वर्गान्तर का निम्नतम सीमांक ज्ञात ए। फिर f, f_1, f_2, तथा C I ज्ञात कीजिए। इन सभी मूल्यो को सूत्र कर बहुलाक की गणना कीजिए।

रण—18

म्न व्यवस्थित अंक सामग्री का बहुलाक ज्ञात कीजिए.

Table 9—Calculation of Mode from grouped data.

C. I	F
0—54	2
5—49	2
)—44	3
—39	3 → Post-modal Class
—34	5 → Modal Class
—29	4 → Pre-modal Class
—24	3
—19	2
—14	1
	N=25

प्रथम सूत्र के अनुसार बहुलाक—

$$Mo = 3\ Median - 2\ Mean$$

प्रश्न मे,

$Mean = 32\ 6$ (उदाहरण—6 देखिए)

$Median = 32$ (उदाहरण—14 देखिए)

इन मूल्यो को सूत्र मे रखने पर,

$$Mo = 3 \times 32 - 2 \times 32\ 6$$
$$= 96 - 65\ 2$$
$$= 30\ 80$$ उत्तर

दूसरे सूत्र के अनुसार बहुलाक—

$$Mo = L + \frac{(f - f_1)}{(f - f_1) + (f - f_2)} \times C\ I.$$

प्रश्न में,

$L = 29\ 5$

$f = 5$

$f_1 = 4$

$f_2 = 3$

$C\ I = 5$

इन मूल्यो को सूत्र मे रखने पर,

$$Mo = L + \frac{(f - f_1)}{(f - f_1) + (f - f_2)} \times C.\ I$$

$$= 29{\cdot}5 + \frac{5 - 4}{(5 - 4) + (5 - 3)} \times 5$$

$$= 29{\cdot}5 + \frac{1}{1 + 2} \times 5$$

$$= 29\ 5 + \frac{5}{3}$$

$$= 29{\cdot}5 + 1{\cdot}666$$
$$= 31{\cdot}166$$
$$= 31{\cdot}17$$ उत्तर

नोट—बहुलाक के दोनो सूत्रो द्वारा पृथक-पृथक बहुलांक निका उत्तर मे कुछ अन्तर रहता है, अतः विद्यार्थियों को भ्रम मे नही पड़ना चा किसी भी एक सूत्र से बहुलाक-मान निकाल सकते हैं।

उदाहरण—19

निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का बहुलाक ज्ञात कीजिए :

Table 10—Calculation of Mode from grouped data.

C I	F
70—71	2
68—69	2
66—67	3
64—65	4
62—63	6→Post-modal Class
60—61	7→Modal Class
58—59	5→Pre-modal Class
56—57	4
54—55	2 [Mean =60·76
52—53	3 Median=60 79]
50—51	1
	N=39

प्रथम सूत्र के अनुसार बहुलाक—

$$Mo = 3\ Median - 2\ Mean$$

प्रश्न में दिए हुए मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Mo = 3 \times 60\ 79 - 2 \times 60{\cdot}76$$
$$= 182\ 37 - 121\ 52$$
$$= 60\ 85 \text{ उत्तर}$$

दूसरे सूत्र के अनुसार बहुलाक—

$$Mo = L + \frac{(f-f_1)}{(f-f_1)+(f-f_2)} \times C.\ I.$$

प्रश्न मे,

$$L = 59 \cdot 5$$
$$f = 7$$
$$f_1 = 5$$
$$f_2 = 6$$
$$C.\ I. = 2$$

इन मूल्यों को सूत्र मे रखने पर,

$$Mo = L + \frac{(f-f_1)}{(f-f_1)+(f-f_2)} \times C.\ I$$

$$= 59 \cdot 5 + \frac{7-5}{(7-5)+(7-6)} \times 2$$

$$= 59 \cdot 5 + \frac{2 \times 2}{3}$$

$$= 59 \cdot 5 + 1 \cdot 33$$

$$= 60\ 83$$ उत्तर

केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों का प्रयोग कब करना चाहिए ?
(When to Use the Various Measures of Central Tendency ?)

1. मध्यमान (Mean) का प्रयोग

    1. जब सबसे अधिक विश्वसनीय केन्द्रीय प्रवृत्ति का पता लगाना हो।
    2. जब सबसे अधिक शुद्ध केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप की गणना करनी हो।
    3. जब वितरण सामान्य हो अर्थात् जब दी हुई अंक-श्रृङ्खला के समस्त अंक समान रूप से वितरित हो, तब मध्यमान का प्रयोग करना चाहिए।
    4. जब वितरण के प्रत्येक अंक को महत्व देना हो।
    5. जब बहुलाक (Mode) की गणना करनी हो।
    6. मध्यमान का प्रयोग उस समय भी किया जाता है जब प्रामाणिक विचलन (Standard deviation), सह-सम्बन्ध (Correlation) आदि की गणना करनी होती है।

2. मध्यांक (Median) का प्रयोग
    1. मध्यांक उस समय ज्ञात करना उचित होता है जब वितरण असामान्य होता है।
    2. जब अंक सामग्री का वास्तविक मध्यबिन्दु (Midpoint=the 50% Point) ज्ञात करना हो।
    3. जब कम शुद्ध केन्द्रीय प्रवृत्ति की आवश्यकता हो।
    4. जब बहुलांक ज्ञात करना हो।
    5. जब अपूर्ण वितरण दिया हुआ हो।
    6. जब शृङ्खला के प्रारम्भ के तथा अन्त मे अंक मध्यमान को प्रभा- करते हो तब मध्यांक निकालना चाहिए। उदाहरण के लिए, 3, 4, 5, 6, 7 शृङ्खला का मध्यमान (M) तथा मध्यांक (Md) 5 है। यदि 7 के स्थान पर 12 हो तो मध्यांक 5 ही होगा लेकिन मध्य- मान 6 हो जायगा। अत. शृङ्खला के प्रारम्भ के तथा शृङ्खला के अन्त के अंक मध्यमान को प्रभावित करते हैं।
3. बहुलांक (Mode) का प्रयोग
    1. जब सबसे कम शुद्ध केन्द्रीय प्रवृत्ति की गणना करनी हो।
    2. जब केवल निरीक्षण मात्र से ही केन्द्रीय प्रवृत्ति को ज्ञात करना हो।
    3. जब औसत स्त्रियों और पुरुषों की विभिन्न प्रकार के वस्त्रों की व्याख्या की गई हो अर्थात् जब अधिक लोकप्रिय फैशन को ज्ञात करना हो।

संयुक्त मध्यमान
(Combined Mean)

जब दो या दो से अधिक भिन्न-भिन्न न्यादर्श (Samples) के अलग-अलग मध्यमान ज्ञात हो तो संयुक्त मध्यमान (Combined Mean) की गणना निम्नलिखित सूत्र द्वारा की जाती है

सूत्र— $$M_{comb} = \frac{N_1M_1 + N_2M_2 + N_3M_3 \ldots N_nM_n}{N_1 + N_2 + N_3 \ldots N_n} \quad \ldots (8)$$

जबकि, M_{comb} = संयुक्त मध्यमान
N_1 = पहले न्यादर्श की कुल संख्या
N_2 = दूसरे न्यादर्श की कुल संख्या
N_3 = तीसरे न्यादर्श की कुल संख्या

M_1 = पहले न्यादर्श का मध्यमान
M_2 = दूसरे न्यादर्श का मध्यमान
M_3 = तीसरे न्यादर्श का मध्यमान

उदाहरण—20

तीन भिन्न कक्षाओं के छात्रों के मध्यमान तथा संख्या निम्न प्रकार से हो, तो संयुक्त मध्यमान की गणना कीजिए :

कक्षा	N	M
A	30	60
B	35	65
C	25	75

हल—

सूत्र—

$$M_{comb} = \frac{N_1M_1 + N_2M_2 + N_3M_3 .... N_nM_n}{N_1 + N_2 + N_3 ... N_2}$$

प्रश्न में दिए हुए मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M_{comb} = \frac{30 \times 60 + 35 \times 65 + 25 \times 75}{30 + 35 + 25}$$

$$= \frac{1800 + 2275 + 1875}{90}$$

$$= \frac{5950}{90}$$

$$= \frac{595}{9}$$

संयुक्त मध्यमान = 66·11 उत्तर

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों (Measures of Central Tendency) से आप क्या समझते हैं ? इसकी सीमाओं (Limitations) और महत्त्व (Importance) को समझाइए।

2. मध्यमान (Mean), मध्यांक (Median) तथा बहुलांक (Mode) की परिभाषा दीजिए तथा यह बताइए कि इनका कब उपयोग करना चाहिए।
3. सांख्यिकीय विश्लेषण में केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों के महत्व तथा सीमाओं का वर्णन करिए।
4. केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों में निम्न समस्याओं के अध्ययन में किस मापक का प्रयोग करेंगे :
   (क) कक्षा के विद्यार्थियों की औसत बुद्धि ज्ञात करने में ?
   (ख) एम०ए० के विद्यार्थियों के परीक्षाफल के अंकों के मध्य का अंक ज्ञात करने में ?
   (ग) लोकप्रिय जूते के फैशन का पता लगाने में।
5. निम्नलिखित दो समूहों का मध्यमान (Mean) तथा मध्यांक (Median) ज्ञात कीजिए :
   प्रथम समूह : 5, 6, 6, 4, 7, 9, 10, 15, 13, 22
   द्वितीय समूह 50, 48, 46, 41, 54, 45, 60, 57, 52, 62
6. नीचे दी हुई अव्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यांक (Median) ज्ञात कीजिए :
   (1) 9, 9, 7 8, 10, 11
   (2) 90, 83, 75, 78, 72, 73, 67, 70, 64, 54, 59
7. निम्नलिखित अव्यवस्थित अंक सामग्री का बहुलांक (Mode) ज्ञात कीजिए :
   (1) 5, 8, 9, 10, 11, 11, 12, 13, 15, 11, 9
   (2) 16, 26, 25, 24, 24, 25, 17, 18, 24, 23, 18, 24
8. केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापकों से आप क्या समझते हैं ? मध्यमान, मध्यांक तथा बहुलांक के गुण और दोषों की तुलना कीजिए।
9. नीचे दी हुई सामग्री से संयुक्त मध्यमान की गणना कीजिए :

कक्षा	N	M
कक्षा (अ)	75	55
कक्षा (ब)	50	45

10. निम्नलिखित व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान (M) तथा मध्यांक (Md) ज्ञात कीजिए :

Scores	f
310—319	1
300—309	2
290—299	4
280—289	1
270—279	6
260—269	12
250—259	11
240—249	8
230—239	2
220—229	0
210—219	3
	N=50

11. निम्नलिखित व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान (M), मध्यांक (Md) तथा बहुलांक (Mo) ज्ञात कीजिए :

Scores	f
120—122	2
117—119	2
114—116	2
111—113	4
108—110	5
105—107	9
102—104	6
99—101	3
96— 98	4
93— 95	2
90— 92	1
	N=40

12. निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
    (क) क्या N/2 मध्यांक है ?
    (ख) किन परिस्थितियों में मध्यांक (Md) मध्यमान (M) से अच्छा माप है ?
    (ग) मध्यमान (M), मध्यांक (Md) तथा बहुलांक की गणना किन परिस्थितियों में करनी चाहिए ?

13. निम्नलिखित व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यांक ज्ञात कीजिए :

C. I.	f
20—21	2
18—19	2
16—17	4
14—15	0
12—13	4
10—11	0
8— 9	4
	N=16

14. निम्नलिखित व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान (M) ज्ञात कीजिए

C. I.	f
24	1
23	0
22	2
21	6
20	10
19	12
18	8
17	5
16	3
15	4
14	1
13	2
	N=54

15 निम्नलिखित व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान (M), मध्यांक (Md) तथा बहुलांक (Mo) ज्ञात कीजिए :

C. I.	f
4	2
5	2
6	6
7	18
8	31
9	22
10	15
11	12
12	6
13	3
14	2
15	1
	N=120

16. पाँच भाइयों की औसत आमदनी प्रति सप्ताह 60 रु० है। आमदनी का मध्यांक (Md) 50 रु० है तो एक सप्ताह की पाँचों भाइयों की कुल आय ज्ञात कीजिए।

17 निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान (M) तथा मध्यांक (Md) ज्ञात कीजिए :

Scores	24	23	22	21	20	19	18	17	16	15	14	13
f	1	0	2	6	10	12	8	5	3	4	1	2

18. निम्न व्यवस्थित अंक सामग्री के मध्यमान, मध्यांक तथा बहुलांक ज्ञात कीजिए :

Scores	f
8·0—8·4	1
7·5—7·9	5
7·0—7·4	2
6·5—6 9	7
6·0—6·4	6
5 5—5 9	11
5 0—5·4	10
4·5—4·9	16
4·0—4·4	18
3 5—3 9	19
3·0—3·4	17
2·5—2·9	17
2·0—2·4	14
1 5—1·9	13
1·0—1·4	8
0·5—0·9	1
	N=165

19. निम्नलिखित व्यवस्थित अंक सामग्री से मध्यमान, मध्यांक तथा बहुलांक ज्ञात कीजिए :

C. I.	f
90—94	2
85—89	5
80—84	8
75—79	9
70—74	6
65—69	3
60—64	3
55—59	3
50—54	1
	N=40

उत्तर

4 (क) मध्यमान (Mean)
(ख) मध्यांक (Median)
(ग) बहुलांक (Mode)

5. प्रथम समूह : M=9'7, Md=8
द्वितीय समूह : M=51'6, Md=51

6. (1) Md=9'0 (2) Md=72'0

7. (1) Mo=11 (2) Mo=24

9. $M_{comb}=51$

10. Mean=261'50, Median=260'33

11. Mean=106'00, Median=105 83, Mode=105'49

13. Median=14'4

14. Mean=18'5

15. Mean=8'85, Median=8'55, Mode=7'95

16. Rs. 300/-

17. M=18'5, Md=18'8

18. Mean=3'91, Median=3'78, Mode=3'70

19. Mean=74'13, Median=76'70, Mode=81'74

5

प्रदत्तो का रेखाचित्रण
GRAPHIC REPRESENTATION OF DATA

अर्थ (Meaning)

सांख्यिकीय प्रदत्तों को स्पष्ट तथा सजीव बनाने के लिए अध्ययनकर्त्ता रेखाचित्रण (Graphic Representation) को अपनाता है क्योंकि सांख्यिकी मे जो तथ्य एकत्रित किए जाते है वे अंकों के रूप में होते हैं। अंक प्रायः जटिल एवं शुष्क होते हैं। एक साधारण व्यक्ति के लिए यह अंक महत्वपूर्ण नही हुआ करते हैं। क्योंकि साधारण व्यक्ति इन्हे समझ नहीं सकता है इसलिए यह इनका उपयोग नही कर सकता है। इन अंकों को उपयोगी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि इन्हे चित्रों के रूप में प्रदर्शन किया जाय। यह ग्राफ केवल आकडों के समझने मे ही सहायक नहीं होते हैं बल्कि उनकी सहायता से निष्कर्ष निकालने में भी सुविधा रहती है।

दो या दो से अधिक चलराशियों (Varibles) को ग्राफ पर प्रदर्शित करने को ही 'रेखाचित्रण' कहा जाता है। उदाहरण के लिए, मेज द्वारा सीखने (Maze Learning) के प्रयोग मे यदि प्रयास एवं त्रुटियो को ग्राफ पेपर पर प्रदर्शित किया जाय तो इस प्रकार बने ग्राफ को रेखाचित्र तथा इस प्रक्रिया को रेखाचित्रण कहेंगे।

महत्व (Importance)

1. साधारण व्यक्ति आकडों को सरलता से नही समझ सकता है। यदि

इन्हीं आंकडो को ग्राफ द्वारा प्रदर्शित किया जाता है तो आकडो की प्रकृति (Nature) को सरलता से समझा जा सकता है।

2. ग्राफ द्वारा चलराशियो (Variables) की तुलना सरल हो जाती है। चलराशियाँ चाहे दो हो या अधिक, उनका तुलनात्मक अध्ययन अन्य विधि की अपेक्षा ग्राफ द्वारा सरलता से किया जा सकता है।
3. साख्यिकी के प्रदत्त (Data) प्राय: अंको के रूप मे हुआ करते हैं। अंको को देखकर उनकी प्रकृति (Nature) का पता लगाना कठिन होता है तथा अधिक समय लगता है। यदि प्रदत्तो को ग्राफ द्वारा प्रदर्शित किया जाता है तो आकड़ों की प्रकृति को शीघ्रता से समझा जा सकता है, अर्थात् आकड़ो को ग्राफ द्वारा समझने में समय की बचत होती है।
4. आकडे प्राय: नीरस तथा अरुचिकर होते हैं। ग्राफ द्वारा उन्हे सरस तथा रुचिपूर्ण (Interesting) बनाया जा सकता है।
5. ग्राफ को रगो के उपयोग से आकर्षक (Attractive) बनाया जा सकता है तथा इनका उपयोग विज्ञापन (Advertisement) और प्रचार (Propaganda) मे किया जा सकता है।
6. प्रदत्तो के रेखाचित्रण द्वारा प्रदत्तो के सम्बन्ध मे निष्कर्ष सरलता से ज्ञात किए जा सकते हैं।
7. प्रदत्तो को स्मरणीय बनाने का कार्य भी ग्राफ द्वारा ही किया जा सकता है।

रेखाचित्रों के प्रकार (Types of Graph)

रेखाचित्रो के कितने प्रकार हैं? इस प्रश्न का उत्तर विवादपूर्ण है। रेखाचित्रो के कुछ प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं:

(1) स्तम्भ रेखाचित्र (Bar Diagram)
(2) वृत्त चित्र (Circle or Pie Diagram)
(3) स्तम्भाकृति (Histogram)
(4) आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon)
(5) सचित आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve)
(6) सचित प्रतिशत वक्र (Ogive)

रेखाचित्रों की सामान्य विशेषताएँ (General Characteristics)

निम्नलिखित विशेषताओं को ध्यान में रखकर रेखाचित्र बनाना चाहिए:

1. स्वतन्त्र चलराशि (Independent Variable) को 'X-अक्ष' पर तथा परतन्त्र चलराशि को 'Y-अक्ष' पर प्रदर्शित करना चाहिए।

2. 'X-अक्ष' 'Y-अक्ष' की अपेक्षा बड़ी होनी चाहिए ।
3. एक विशेष प्रदत्त सामग्री के लिए वही रेखाचित्र बनाना चाहिए जो उसके सही अर्थ को स्पष्ट कर दे ।
4. रेखाचित्र नामांकित होना चाहिए तथा उस पर उसका सही-सही पैमाना (Scale) बना होना चाहिए ।
5. रेखाचित्र आकर्षक (Attractive) होना चाहिए ।
6. रेखाचित्र पैमाने (Scale) के अनुसार बना हुआ होना चाहिए अर्थात् रेखाचित्र की माप सही होनी चाहिए ।

रेखाचित्र बनाने के सिद्धान्त (Principles)

रेखाचित्रण प्रायः दो रेखाओं के बीच किया जाता है । इन रेखाओं को Co-ordinate axis कहा जाता है । इन दो रेखाओं में एक रेखा क्षैतिज रेखा (Horizontal line) या 'X-axis' कहलाती है तथा दूसरी रेखा को उदग्र रेखा (Vertical line) या 'Y-axis' कहते हैं । यह 'X-axis' तथा 'Y-axis' एक-दूसरे पर लम्बवत् (Perpendicular) होती हैं। जिस बिन्दु पर यह रेखाएँ एक-दूसरे से मिलती हैं उस बिन्दु को 'O' अक्षर द्वारा प्रदर्शित करते हैं, इस बिन्दु को उद्गम-बिन्दु (Point of Origin) कहते हैं । इस बिन्दु को उद्गम-बिन्दु इसलिए कहते हैं क्योंकि जितने भी रेखाचित्र बनाए जाते हैं वह इसी 'O' बिन्दु से प्रारम्भ होते हैं ।
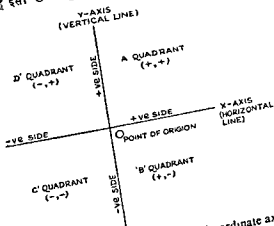
Fig. 1—Showing the System of Co-ordinate axes.

Fig. 1 में ग्राफ के चार भाग या क्षेत्र प्रदर्शित किए गये हैं, इन क्षेत्रों को Quadrants कहते हैं। Fig 1 में इन क्षेत्रों को A–Quadrant, B–Quadrant, C–Quadrant तथा D–Quadrant के नाम से प्रदर्शित किया गया है। चित्र को देखने से स्पष्ट है कि A–Quadrant में X-axis तथा Y-axis दोनों का मूल्य धनात्मक होता है। B–Quadrant में X-axis का मूल्य धनात्मक तथा Y-axis का मूल्य ऋणात्मक होता है। C–Quadrant में X-axis तथा Y-axis दोनों के मूल्य ऋणात्मक होते हैं। D–Quadrant में X-axis का मूल्य ऋणात्मक तथा Y-axis का मूल्य धनात्मक होता है।

मनोविज्ञान और शिक्षा में प्रयुक्त सांख्यिकी में प्राय. A–Quadrant का ही प्रयोग किया जाता है अर्थात् धनात्मक मूल्य वाले क्षेत्र का ही प्रयोग किया जाता है। ग्राफ का पैमाना मानते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि Y-axis की अपेक्षा X-axis अवश्य बड़ी होनी चाहिए। अब प्रश्न उठता है कि कितनी बड़ी होनी चाहिए ? इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं क्योंकि इस सम्बन्ध में विद्वानों के मत भिन्न-भिन्न हैं। विद्वानों के अनुसार X-axis तथा Y-axis में अनुपात 4 : 3, 5 : 4 या 6 . 4 का हो सकता है।

1. स्तम्भ रेखाचित्र
(Bar Diagram)

स्तम्भ रेखाचित्रों में आँकड़ों को स्तम्भों (Bar) के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। इस प्रकार के रेखाचित्रों में स्तम्भ X-axis से प्रारम्भ होकर Y-axis के समान्तर जाते हैं, जैसा उदाहरण—1 में दिखाया गया है। स्तम्भ रेखाचित्र बनाते समय प्रत्येक स्तम्भ की चौड़ाई समान रखनी चाहिए तथा स्तम्भों के मध्य में रिक्त स्थान भी समान दूरी के रखने चाहिए। उदाहरण—1 तथा 2 में X-axis तथा Y-axis में 5 : 4 का अनुपात रखा गया है।

उदाहरण—1

बी० ए० पार्ट 1 के विद्यार्थियों को मुक्त साहचर्य परीक्षण दिया गया। विश्लेषण के बाद साहचर्य के नियमों का प्रतिशत निम्नलिखित प्रकार से प्राप्त हुआ। प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर स्तम्भ रेखाचित्र बनाइए ·

साहचर्य के नियम	*प्रतिशत*
1. समीपता (समयगत)	25
2. समीपता (स्थानगत)	15
3. विरोध	20
4. समानता	40

हल

साहचर्य के नियमों को X axis पर तथा प्रतिशत को Y-axis पर प्रदर्शित किया गया है। X axis तथा Y axis में 5 : 4 का अनुपात रखा गया है। Y-axis पर सभी स्तम्भों को एक दूसरे से समान दूरी पर बनाया गया है। चित्र को देखने मात्र से पैमाना 2 खाने बराबर 1% के माना गया है। ही पता चल जाता है कि स्थानगत समीपता का नियम सबसे कम और समानता के नियम का प्रतिशत सबसे अधिक है।

Fig 2—Bar Diagram Showing Percentage of Laws of Association.

उदाहरण—2

एक कालेज के वार्षिक उत्सव के समय पारितोषकों (Prizes) का वितरण किया गया। विभिन्न कार्यों के लिए जो पारितोषक दिए गए उनका विवरण नीचे दिया गया है। प्राप्त प्रदत्तों से स्तम्भ रेखाचित्र बनाइए।

पारितोषक	पारितोषक पाने वाले छात्रों का प्रतिशत
1 अनुशासन	40
2. खेलकूद	30
3. वाद-विवाद प्रतियोगिता	10
4 सास्कृतिक कार्यक्रम	15
5. एन० सी० सी०	5

हल—

परितोषक को X-axis पर तथा प्रतिशत को Y-axis पर प्रदर्शित किया गया है। X-axis तथा Y-axis में 5 4 का अनुपात रखा गया है। इस उदाहरण में भी सभी स्तम्भों को एक-दूसरे से समान दूरी पर बनाया गया है। Y-axis पर पैमाना 2 छोटे खाने बराबर 1 प्रतिशत माना गया है। स्तम्भ रेखाचित्र देखने से पता चलता है कि अनुशासन पर सबसे अधिक पारितोषक तथा एन० सी० सी० में सबसे कम पारितोषक दिए गए हैं।
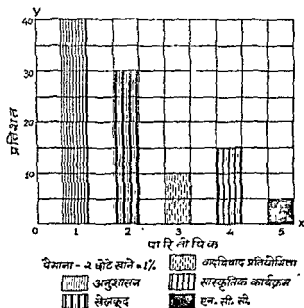
Fig. 3—Bar Diagram Showing Percentage of Prizes

उदाहरण—3

नीचे दी हुई व्यवस्थित अङ्क सामग्री का स्तम्भ रेखाचित्र बनाइए :

C. I.	f	Midpoints
50—54	2	52
45—49	2	47
40—44	3	42
35—39	3	37
30—34	5	32
25—29	4	27
20—24	3	22
15—19	2	17
10—14	1	12
	N=25	

हल—

व्यवस्थित अङ्क सामग्री का स्तम्भ रेखाचित्र बनाते समय सबसे पहले वर्गान्तरों (C. I.) के मध्यबिन्दु (Midpoints) ज्ञात करने पड़ते हैं। मध्य बिन्दु वर्गान्तरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मध्यबिन्दुओं को X-axis पर
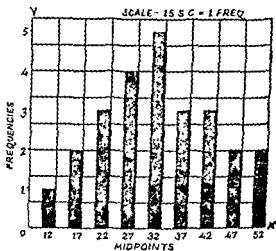
Fig. 4—Bar Diagram Showing Frequencies of Class Intervals.

प्रदर्शित किया जाता है और आवृत्तियों (Frequencies) को Y-axis पर प्रदर्शित किया जाता है। इस स्तम्भ रेखाचित्र में भी X-axis तथा Y-axis में 5 : 4 का अनुपात रखा गया है।

2. वृत्तचित्र
(Circle or Pie Diagram)

जब सूचना या प्राप्तांक प्रतिशत में दिए हुए होते हैं तब हम उन प्रतिशत अङ्कों को प्रदर्शित करने के लिए वृत्त चित्र (Circle Diagram) बनाते हैं। चूँकि यह चित्र वृत्ताकार होता है इसलिए इसे वृत्त चित्र कहते हैं। एक वृत्त (Circle) में कुल 360 अंश (Degree) होते हैं। यदि इन 360° को 100% के बराबर मान लें तो सरलता से वृत्त चित्र द्वारा प्रतिशत अङ्कों को दिखाया जा सकता है। वृत्त चित्र बनाने से पहले प्रतिशत को अंशों (Degrees) में परिवर्तित करना पड़ता है।

उदाहरण—4

कलकत्ता विश्वविद्यालय की बी० एड० परीक्षा का परिणाम निम्नलिखित है। परिणामों को वृत्त चित्र द्वारा प्रदर्शित करिए .

श्रेणी	प्रतिशत
प्रथम श्रेणी	20
द्वितीय श्रेणी	40
तृतीय श्रेणी	30
फेल	10

हल—

सबसे पहले प्रतिशत को अंशों में परिवर्तित कीजिए।

[प्रतिशत को अंशों में बदलने का सूत्र . $= \frac{360}{100} \times$ प्रतिशत]

$\because \quad 100\% = 360°$

$\therefore \quad 20\% = \frac{360}{100} \times 20 = 72°$

$40\% = \frac{360}{100} \times 40 = 144°$

हल—सबसे पहले प्रतिशत को अंशों में परिवर्तित कीजिए।

$$25\% = \frac{360}{100} \times 25 = 90^\circ$$

$$15\% = \frac{360}{100} \times 15 = 54^\circ$$

$$20\% = \frac{360}{100} \times 20 = 72^\circ$$

$$40\% = \frac{360}{100} \times 40 = 144^\circ$$
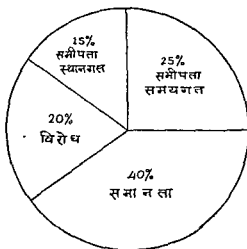
Fig. 6—Pie Diagram Showing Percentage of Laws of Association.

3. स्तम्भाकृति

(Histogram or Column Diagram)

सांख्यिकी में स्तम्भाकृति (Histogram) का तात्पर्य उस ग्राफ से है

जिसमें आवृत्तियों को खड़े हुए आयतों (Vertical Rectangles) के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।[1]

स्तम्भाकृति बनाते समय X-axis पर वर्गान्तरों (Class Intervals) को प्रदर्शित करते हैं तथा Y-axis पर आवृत्तियों (Frequencies) को प्रदर्शित करते हैं। ग्राफ पेपर पर स्थान तथा वर्गान्तरों (C. I.) के अनुसार पैमाना मानकर सर्वप्रथम वर्गान्तरों को प्रदर्शित कर देते हैं। उदाहरण—6 में X-axis पर वर्गान्तरों को प्रदर्शित करने के लिए पैमाना 10 छोटे खाने = 1 वर्गान्तर माना गया है।

प्रायः स्तम्भाकृति बनाते समय X-axis और Y-axis में 4 : 3 का अनुपात रखा जाता है। इस अनुपात को रखने के लिए पहले X-axis पर पैमाना मानकर वर्गान्तरों को प्रदर्शित कर दिया जाता है फिर छोटे खाने गिन लिये जाते हैं। कुल छोटे खानों को ¾ से गुणा कर देते हैं। गुणा करने से जो संख्या प्राप्त होती है उतने ही छोटे खानों में आवृत्तियों को Y-axis पर प्रदर्शित करने का प्रयास करते हैं। यह कोई नियम नहीं है कि X-axis और Y-axis में 4 : 3 का अनुपात ठीक-ठीक हो हो, Y-axis पर पैमाना मानते समय थोड़ा बहुत कभी-कभी अन्तर हो जाता है। उदाहरण—6 में X-axis पर 0 से 55 तक 100 छोटे खाने हैं और यदि 100 में 3/4 का गुणा किया जाता है तो 75 आता है अर्थात् Y-axis पर 75 छोटे खानों में आवृत्तियों को प्रदर्शित करना है। उदाहरण—6 में कुल 5 आवृत्तियां को प्रदर्शित करना है। यदि 15 छोटे खाने = 1 आवृत्ति मान लें तो X-axis और Y-axis में 4 : 3 का अनुपात सही बैठ जाता है। लेकिन उदाहरण—7 में 0 से 52 तक 150 छोटे खाने हैं। 150 को 3/4 से गुणा करने से 112.5 आता है अर्थात् Y-axis पर 112.5 छोटे खानों में 11 आवृत्तियाँ प्रदर्शित करनी हैं। यह तभी सम्भव है जब पैमाना दशमलव में माना जाय। इस कठिनाई को दूर करने के लिए 10 छोटे खाने बराबर 1 आवृत्ति मान लिया गया है। इस प्रकार कुल आवृत्तियाँ 110 खानों में प्रदर्शित हो गई हैं। चूँकि 110 और 112.5 में अधिक अन्तर नहीं है इसलिए कहा जा सकता है कि X-axis और Y-axis में लगभग 4 : 3 का अनुपात है।

X-axis और Y-axis पर क्रमशः वर्गान्तरों (C. I.) और आवृत्तियों (Frequencies) को पैमाना मानकर प्रदर्शित करने के पश्चात् वर्गान्तरों की आवृत्तियों का ग्राफ पर प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण—6 में 10—15

---

1 "In Statistics, a histogram is a graph that represents the class frequencies in a frequency distribution by vertical rectangles."
—Simpson & Kafka

वर्गान्तर की आवृत्ति 1 है, 10—15 वर्गान्तर पर 1 आवृत्ति तक खड़ा आयत (Vertical Rectangle) बना देंगे। इसी प्रकार 15—20 वर्गान्तर की आवृत्ति 2 के लिए 2 आवृत्ति तक खड़ा आयत बनाएँगे। अन्य वर्गान्तरों के लिए इसी प्रकार आवृत्तियों को प्रदर्शित कर देते हैं।

अन्त में ग्राफ पर पैमाना आदि उदाहरण—6 के अनुसार प्रदर्शित करके स्तम्भाकृति (Histogram) को पूरा कर देते हैं।

उदाहरण—6

नीचे दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री से स्तम्भाकृति (Histogram) बनाइए :

C. I.	f
50—54	2
45—49	2
40—44	3
35—39	3
30—34	5
25—29	4
20—24	3
15—19	2
10—14	1

हल—स्तम्भाकृति बनाने की विधि में इस उदाहरण की समस्या को हल किया गया है।
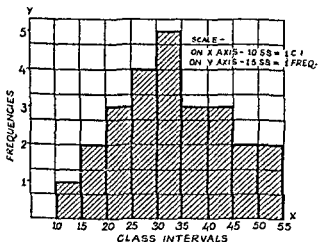
Fig. 7—Histogram Showing Frequencies of Class Intervals
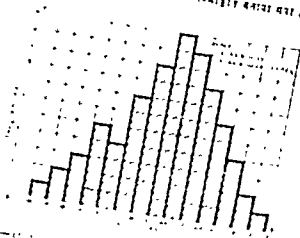
4. आवृत्ति बहुभुज
(Frequency Polygon)

बहुभुज (Polygon) का अर्थ उस रेखाचित्र से है जिसमे अनेक भुजाएँ होती हैं। आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) का अर्थ उस रेखाचित्र से है जिसमे आवृत्तियों को अनेक भुजाओं द्वारा प्रदर्शित किया जाता है।[1]

आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) तथा स्तम्भाकृति (Histogram) मे अन्तर होता है। प्रथम यह कि आवृत्ति बहुभुज के द्वारा अनेक चलराशियो (Variables) को प्रदर्शित किया जा सकता है लेकिन स्तम्भाकृति के द्वारा यह सम्भव नही है। दूसरा अन्तर यह है कि आवृत्ति बहुभुज वर्गान्तरो (C. I.) के मध्यबिन्दु (Midpoints) पर बनाया जाता है जबकि स्तम्भाकृति मे सम्पूर्ण वर्गान्तर पर खडे आयत (rectangles) का निर्माण किया जाता है। चूँकि आवृत्ति बहुभुज मे दो या दो से अधिक चलराशियो को प्रदर्शित किया जा सकता है इसलिए जहाँ तुलनात्मक वर्णन उपस्थित करना होता है वहाँ आवृत्ति बहुभुज ही बनाते हैं, स्तम्भाकृति (Histogram) नहीं बनाते हैं।

आवृत्ति बहुभुज बनाते समय X-axis पर वर्गान्तरो (C I) को प्रदर्शित करते हैं तथा Y-axis पर आवृत्तियों (Frequencies) को। जिस प्रकार से स्तम्भाकृति मे X-axis पर पहले पैमाना मानकर वर्गान्तरो को प्रदर्शित करते हैं या X-axis और Y-axis मे 4 3 का अनुपात ध्यान मे रखकर Y-axis पर पैमाना मानते हैं उसी प्रकार से आवृत्ति बहुभुज मे भी X-axis और Y-axis पर पैमाना मानते हैं और क्रमशः 4 : 3 का अनुपात रखते हैं।

X-axis और Y-axis पर क्रमश वर्गान्तरो (C. I.) और आवृत्तियो (Frequencies) को पैमाना मानकर प्रदर्शित करने के पश्चात् वर्गान्तरों की आवृत्तियो को ग्राफ पर प्रदर्शित करते हैं। उदाहरण—8 मे 10—15 वर्गान्तर की आवृत्ति 1 है। इस आवृत्ति को प्रदर्शित करने के लिए 10—15 वर्गान्तर के मध्यबिन्दु से ऊपर की ओर चलेंगे। जब आवृत्ति 1 के बराबर पहुँचेगी तो एक क्रॉस का चिन्ह बना देंगे। इसी प्रकार 15—20 वर्गान्तर की आवृत्ति 2 है। 15—20 वर्गान्तर के मध्यबिन्दु से ऊपर की ओर चलेंगे, जब 2 आवृत्ति पर पहुँचेंगे तो एक क्रॉस का चिन्ह बना देंगे। सक्षेप मे वर्गान्तरो की

---

1. Frequency Polygon is a figure bounded by a number of straight lines representing the frequencies.

आवृत्तियों को उनके मध्यबिन्दुओं पर अंकित किया जाता है। इसी प्रकार सम्पूर्ण आवृत्ति वितरण को ग्राफ पर प्रदर्शित कर देते हैं।

सम्पूर्ण आवृत्तियों को प्रदर्शित करने के पश्चात् भी हमारा बहुभुज हवा में लटकता दिखाई देता है। इसके लिए हम 50—55 के बाद एक और C. I. 55—60 बढ़ा लेते हैं। इस बढ़े हुए वर्गान्तर की आवृत्ति शून्य मानकर इसके मध्यबिन्दु से हवा में लटकते आवृत्ति बहुभुज की अन्तिम भुजा को मिला देते हैं। इसी प्रकार 10—15 वर्गान्तर से पहले वाले स्थान के मध्यबिन्दु से हवा मे लटकते बहुभुज को जोड़ देते हैं। इसके लिए यह भी किया जा सकता है कि दिए हुए आवृत्ति वितरण से आवृत्ति बहुभुज बनाने से पहले आवृत्ति वितरण के प्रारम्भ तथा अन्त में एक-एक वर्गान्तर बढ़ाकर उसकी आवृत्ति शून्य मान लें, फिर ऊपर दी हुई विधि के अनुसार आवृत्ति बहुभुज बना लेते हैं। उदाहरण—9 में दिए हुए व्यवस्थित अंकों में ऊपर तथा नीचे एक-एक वर्गान्तर बढाया गया है तथा उनकी आवृत्ति शून्य मानी गई है।

अन्त में ग्राफ पर पैमाना आदि उदाहरण के अनुसार प्रदर्शित करके आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) को पूरा कर लेते हैं।

उदाहरण—8

उदाहरण—6 मे दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) बनाइए।

हल—

उपर्युक्त वर्णन में उदाहरण—8 की समस्या का हल बताया गया है।
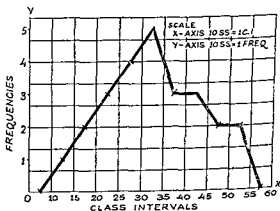
Fig. 9—Frequency Polygon Showing Frequencies of Class Intervals.

उदाहरण—9

नीचे दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री से आवृत्ति बहुभुज तथा स्तम्भाकृति एक ही ग्राफ पर बनाइए :

C. I	f.
45—50 (बढ़ा हुआ C. I.)	0
40—45	6
35—40	10
30—35	11
25—30	12
20—25	10
15—20	9
10—15	8
5—10	7
0— 5 (बढ़ा हुआ C.I.)	0

हल—

उदाहरण—8 के विवरण के अनुसार आवृत्ति बहुभुज और स्तम्भाकृति बनाया गया है।
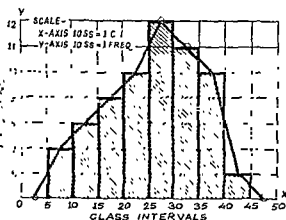
Fig. 10—Frequency Polygon and Histogram Showing Frequencies of Class Intervals.

उदाहरण—10

नीचे दिए हुए प्रदत्तों का आवृत्ति बहुभुज (Frequency Pol... बनाइए :

C. I.	f.
23—25 (बढ़ा हुआ C. I.)	0
21—23	8
19—21	10
17—19	13
15—17	14
13—15	16
11—13	14
9—11	13
7— 9	10
5— 7	8
3— 5 (बढ़ा हुआ C. I.)	0

हल—
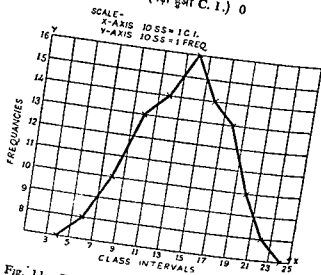
Fig. 11—Frequency Polygon Showing Frequencies of Class Intervals

सरलित आवृत्ति बहुभुज (*Smoothed Frequency Polygon*)

सरलित आवृत्ति बहुभुज बनाने से पहले दी हुई आवृत्तियो को पहले सरलित (Smooth) कर लेते हैं। सरलित आवृत्तियो (Smoothed Frequencies) *तथा वर्गान्तरो से सरलित आवृत्ति बहुभुज (Smoothed Frequency Polygon)* उसी प्रकार बनाते हैं जैसे आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) बनाते हैं। यह संगतिपूर्ण (Symmetrical) होता है। यह आवृत्ति बहुभुज की अपेक्षा अधिक शुद्ध (Accurate) होता है इसलिए इसका प्रयोग विभिन्न समूहों की तुलना करने के लिए किया जाता है।

उदाहरण—11

नीचे दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री से आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) तथा सरलित आवृत्ति बहुभुज (Smoothed Frequency Polygon) बनाइए :

C. I.	f	Smoothed Frequencies
100—110 (बढ़ा हुआ C. I)	0	—
90—100	1	1·7
80— 90	4	3·3
70— 80	6	4·3
60— 70	7	5·7
50— 60	5	6·0
40— 50	5	5·7
30— 40	3	3·7
20— 30	2	1·7
10— 20 (बढ़ा हुआ C. I.)	0	—

हल—

सरलित आवृत्ति बहुभुज (Smoothed Frequency Polygon) बनाने से पहले दी हुई आवृत्तियों को सरलित (Smoothed) करना पड़ता है। आवृत्तियों को सरलित करने से पहले दिए हुए प्रदत्तों मे एक वर्गान्तर ऊपर तथा एक वर्गान्तर नीचे बढ़ा लेते हैं, और इन बढ़े हुए वर्गान्तरो की आवृत्ति

शून्य मान लेते हैं। ध्यान रहे कि बढ़ाए हुए वर्गान्तरों की आवृत्तियों को सरलित नहीं करना है। यह तो प्रश्न को हल करने के लिए बढ़ाई गई हैं।

जिस वर्गान्तर (C. I) की सरलित आवृत्ति ज्ञात करनी होती है उसकी आवृत्ति को नोट कर लेते हैं तथा उसके ऊपर और नीचे के वर्गान्तरों की आवृत्ति भी नोट करके तीनों आवृत्तियों को जोड़कर तीन से भाग देने से जो संख्या प्राप्त होती है वह उस वर्गान्तर की सरलित आवृत्ति (Smoothed Frequency) कहलाती है।

उदाहरण—11 में वर्गान्तर 20–30 से वर्गान्तर 99–100 तक की आवृत्तियों को सरलित करेंगे। वर्गान्तर 10–20 तथा 100–110 बढ़े हुए वर्गान्तर हैं।

वर्गान्तर 20–30 की सरलित आवृत्ति $=\frac{2+3+0}{3}=\frac{5}{3}=1{\cdot}7$

" 30–40 की सरलित आवृत्ति $=\frac{3+5+2}{3}=\frac{10}{3}=3{\cdot}3$

" 40–50 की सरलित आवृत्ति $=\frac{5+5+3}{3}=\frac{13}{3}=4{\cdot}3$

" 50–60 की सरलित आवृत्ति $=\frac{5+7+5}{3}=\frac{17}{3}=5{\cdot}7$

" 60–70 की सरलित आवृत्ति $=\frac{7+6+5}{3}=\frac{18}{3}=6{\cdot}0$

" 70–80 की सरलित आवृत्ति $=\frac{6+4+7}{3}=\frac{17}{3}=5{\cdot}7$

" 80–90 की सरलित आवृत्ति $=\frac{4+1+6}{3}=\frac{11}{3}=3{\cdot}7$

" 90–100 की सरलित आवृत्ति $=\frac{1+0+4}{3}=\frac{5}{3}=1{\cdot}7$
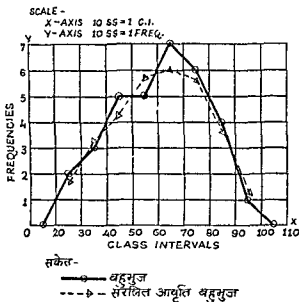
Fig. 12—Frequency Polygon & Smoothed Frequency Polygon Showing Frequencies of Class Intervals.

5. संचित आवृत्ति वक्र

(Cumulative Frequency Curve)

यदि संचित आवृत्तियाँ (Cumulative Frequencies) को वर्गान्तरो (C. I.) के उच्चतम सीमाको (Upper limits) पर प्रदर्शित करके रेखाचित्र बनाया जाय तो जो भी रेखाचित्र बनेगा वह संचित आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve) कहलाएगा।

संचित आवृत्ति वक्र बनाते समय सबसे पहले दिए हुए व्यवस्थित अंको के वर्गान्तरों (C. I.) को शुद्ध वर्गान्तरों (Pure Classification Series) में परिवर्तित कर लेते हैं। इन बदले हुए वर्गान्तरो की आवृत्तियाँ (Frequencies) परिवर्तित नहीं होती हैं। फिर आवृत्तियो से संचित आवृत्तियाँ (Cumulative Frequencies) ज्ञात कर लेते हैं। संचित आवृत्तियो को निकालने की विधि 'केन्द्रीय प्रवृत्ति के मापक' अध्याय मे मध्याक (Median) के वर्णन में है।

वर्गान्तरों और आवृत्तियों को परिवर्तित करने के पश्चात् कोई पैमाना मानकर वर्गान्तरों को X-axis पर तथा संचित आवृत्तियों को Y-axis पर प्रदर्शित कर देते हैं। यह ध्यान रखते हैं कि X-axis और Y-axis में लगभग 4 : 3 का अनुपात रहे। फिर वर्गान्तरों के उच्चतम सीमांक (Upper limits) पर आवृत्तियों को अंकित कर देते हैं। उदाहरण—12 में 44·5–49·5 वर्गान्तर की संचित आवृत्ति 1 है, इसे अंकित करने के लिए 49·5 के ऊपर जहाँ 1 आवृत्ति है वहाँ एक निशान या बिन्दु बना देते हैं। इसी प्रकार 49·5–54·5 वर्गान्तर की आवृत्ति 3 है, इस आवृत्ति को अंकित करने के लिए 54·5 वर्गान्तर के ऊपर 3 आवृत्ति तक चलते हैं। 3 आवृत्ति आते ही निशान बना देते हैं। इसी प्रकार अन्य आवृत्तियों को अंकित कर रेखाचित्र पर पैमाना आदि लिखकर उदाहरण—12 के अनुसार संचित आवृत्ति वक्र पूरा कर लेते हैं।

उदाहरण—12

नीचे दिए हुए व्यवस्थित अंकों से संचित आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve) बनाइए :

C. I.	f	Pure Classification Series	Cumulative Frequencies F
85—89	1	84·5—89·5	32
80—84	2	79 5—84·5	31
75—79	3	74 5—79·5	29
70—74	5	69·5—74·5	26
65—69	8	64·5—69·5	21
60—64	6	59·5—64·5	13
55—59	4	54·5—59·5	7
50—54	2	49·5—54 5	3
45—49	I	44·5—49·5	I
	N=32		

हल—

संचित आवृत्ति वक्र के उपर्युक्त विवरण के आधार पर संचित आवृत्ति वक्र बनाया गया है।
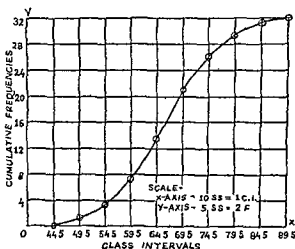
Fig. 13—Cumulative Frequency Curve.

6. संचित प्रतिशत वक्र

(Cumulative Percentage Curve or Ogive)

जब संचित आवृत्तियो (Cumulative Frequencies) को प्रतिशत मे बदलकर वर्गान्तरो (C. I.) के उच्चतम सीमाओं (Upper limits) पर प्रदर्शित करके रेखाचित्र बनाया जाता है तो जो भी रेखाचित्र बनता है उसे संचित प्रतिशत वक्र (Cumulative Percentage Curve) कहते हैं। इस रेखाचित्र के द्वारा शतांशीय मान (Percentiles) तथा शतांशीय बिन्दु (Percentile Ranks) ज्ञात किए जा सकते हैं, जबकि यह संचित आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve) के द्वारा नहीं ज्ञात किए जा सकते हैं। संचित प्रतिशत वक्र और संचित आवृत्ति वक्र मे यही मुख्य अन्तर होता है।

संचित प्रतिशत वक्र बनाते समय पहले वर्गान्तरो को शुद्ध वर्गान्तरो (Pure classification series) में परिवर्तित करते हैं तथा दी हुई आवृत्तियों को संचित आवृत्तियों (Cumulative frequencies) में परिवर्तित कर लेते हैं। फिर संचित आवृत्तियों को संचित प्रतिशत आवृत्तियो (Cumulative percentage frequencies) में परिवर्तित करते हैं।

वर्गान्तरो को X-axis पर तथा संचित प्रतिशत आवृत्तियो को Y-axis पर उचित पैमाना मानकर इस प्रकार प्रदर्शित करते हैं कि X-axis तथा Y-axis मे 4 : 3 का अनुपात रहे। फिर वर्गान्तरों के उच्चतम सीमाओं

(Upper limits) पर वर्गान्तरों से सम्बन्धित संचित प्रतिशत आवृत्तियों (CPF) को अंकित करते हैं। उदाहरण—13 में 9.5–14.5 वर्गान्तर की संचित प्रतिशत आवृत्ति (CPF) 4 है। 14.5 से ऊपर की ओर चलेंगे, 4 पर पहुँचकर बिन्दु बना देंगे। 14.5–19.5 वर्गान्तर की CPF 16 है। 19.5 से ऊपर की ओर चलेंगे, 16 पर पहुँचकर बिन्दु बना देंगे। 19.5–24.5 वर्गान्तर की CPF 32 है, 24.5 से ऊपर की ओर चलेंगे, 32 पर पहुँचकर बिन्दु बना देंगे।

उदाहरण—13

नीचे दी हुई प्रदत्त सामग्री से संचित प्रतिशत आवृत्ति वक्र (Cumulative Percentage Curve) बनाइए

C. I	Pure Classification Series	f	Cumulative Frequencies F	Cumulative Percentage Frequencies CPF
40—44	39.5—44.5	1	25	100
35—39	34.5—39.5	3	24	96
30—34	29.5—34.5	5	21	84
25—29	24.5—29.5	8	16	64
20—24	19.5—24.5	4	8	32
15—19	14.5—19.5	3	4	16
10—14	9.5—14.5	1	1	4
		N=25		

हल—

ऊपर दिए हुए वर्गान्तरों को शुद्ध वर्गान्तरों (Pure Classification Series) में परिवर्तित करते हैं [illegible] (Cumulative Percentage Frequencies, CPF) में परिवर्तित करते हैं [illegible] CPF [illegible]

$$CPF = \frac{100}{N} \times F$$

Where,

N = Number of Cases

F = Cumulative Frequency

CPF = Cumulative Percentage Frequency

9·5—14·5 की CPF $= \frac{100}{25} \times 1 = 4$

14·5—19·5 " " $= \frac{100}{25} \times 4 = 16$

19·5—24 5 " " $= \frac{100}{25} \times 8 = 32$

24·5—29·5 " " $= \frac{100}{25} \times 16 = 64$

29 5—34·5 " " $= \frac{100}{25} \times 21 = 84$

34 5—39·5 " " $= \frac{100}{25} \times 24 = 96$

39·5—44·5 " " $= \frac{100}{25} \times 25 = 100$
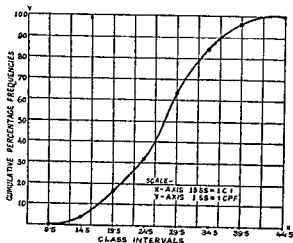
Fig. 14—Cumulative Percentage Curve.

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. प्रदत्तों के रेखाचित्रण से आप क्या समझते हैं ? इनके महत्व को समझाइए ।
2. रेखाचित्र कितने प्रकार के होते हैं ? इन्हें बनाते समय किन विशेषताओं को ध्यान में रखना चाहिए ?
3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लीजिए :
   1. रेखाचित्र बनाने के सिद्धान्त
   2. स्तम्भ रेखाचित्र (Bar Diagram)
   3. स्तम्भाकृति (Histogram)
   4. संचित प्रतिशत वक्र (Ogive)
4. स्तम्भाकृति (Histogram) की परिभाषा दीजिए तथा नीचे दिए हुए प्रदत्तों से स्तम्भाकृति बनाइए :

C. I.	f
45—49	2
40—44	3
35—39	6
30—34	8
25—29	10
20—24	7
15—19	5
10—14	5
5— 9	3

5. आवृत्ति बहुभुज से आप क्या समझते हैं ? दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) बनाइए :

C. I.	f
140—144	10
135—139	15
130—134	18
125—129	22
120—124	25
115—119	20
110—114	18
105—109	13
100—104	9

6. संचित आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve) से आप क्या समझते हैं ? नीचे दी हुई प्रदत्त-सामग्री से संचित आवृत्ति वक्र बनाइए :

C. I.	f
90—94	2
85—89	3
80—84	5
75—79	8
70—74	12
65—69	16
60—64	13
55—59	10
50—54	9
45—49	6
40—44	1

7. नीचे दिए हुए प्रदत्तों से स्तम्भाकृति (Histogram) तथा आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) एक ही ग्राफ पर बनाइए :

C. I.	f
2—3	5
4—5	7
6—7	9
8—9	12
10—11	15
12—13	11
14—15	8
16—17	5
18—19	3

8. संचित प्रतिशत वक्र (Cumulative Percentage Curve) से आप क्या समझते हैं ? प्रश्न 6 के प्रदत्तों से संचित प्रतिशत वक्र बनाइए ।

9. नीचे दिए हुए वर्गों से मसृणित आवृत्ति बहुभुज (Smoothed Frequency Polygon) तथा आवृत्ति बहुभुज एक ही कागज पर बनाइए

C. I.	f
90—94	2
85—89	5
80—84	8
75—79	9
70—74	6
65—69	3
60—64	3
55—59	3
50—54	1

10. नीचे दिए हुए वर्गों से स्तम्भाकृति (Histogram) तथा आवृत्ति बहुभुज (Frequency Polygon) बनाइए :

C. I.	f
21—22	2
19—20	2
17—18	4
15—16	6
13—14	8
11—12	5
9—10	6
7—8	3
5—6	2

11. वृत्त चित्रों से आप क्या समझते हैं, यह क्यों और कैसे बनाए जाते हैं ?

12. नीचे दिए हुए प्रदत्तों से सरलित आवृत्ति बहुभुज (Smoothed Frequency Polygon) तथा संचित आवृत्ति वक्र (Cumulative Frequency Curve) बनाइए :

C. I.	f
34—36	5
31—33	8
28—30	9
25—27	12
22—24	15
19—21	11
16—18	9
13—15	6
10—12	4

)

विचलन के मापक
MEASURES OF VARIABILITY

Meaning)

भी व्यक्तियों मे बुद्धि, योग्यता तथा संवेदनशीलता आदि एक मात्रा मे ती हैं। अतः गुणों की दृष्टि से व्यक्ति एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। समूह यों से मिलकर बनते हैं। मापन द्वारा व्यक्तियों के गुणों या व्यक्तिगत (Individual Differences) का मूल्यांकन किया जाता है। एक मे सजातीय (Homogenous) लोग अधिक हैं या विषमजातीय ogeneous) लोग, इस बात का पता विचलन के मापकों द्वारा लगाया कता है। 'Measures of Variability' के समान अन्य कई शब्द हैं, जैसे sures of Dispersion', 'Measures of Spread', 'Measures of er' तथा 'Measures of Deviation' आदि।

वचलन (Deviation or Variability) का अर्थ किसी अंक सामग्री ध्यमान (Mean) से विभिन्न अंकों की दूरी से है। (Variability s the scatter or spread of the separate scores around central tendency.)[1] किसी अंक सामग्री का विचलन अंक उस अंक

Garrett, H. E. : *Statistics in Psychology and Education*, 1961, p 42.

सामग्री के मध्यमान के दोनो ओर उसके विभिन्न अंकों के विचलन या फैलाव को प्रदर्शित करता है। दूसरे शब्दो मे, उस अंक सामग्री की समजातीय अथवा विषमजातीय प्रकृति को भी प्रदर्शित करता है।

विचलन मानों की सहायता से विभिन्न समूहों का शुद्ध वर्णन तथा तुलना की जाती है। इनके द्वारा किसी समूह की समजातीयता (Homogeniety) तथा विषमजातीयता (Hetrogeniety) ज्ञात की जाती है। एक समूह का विचलन (Variability) जितना ही कम होता है समूह उतना ही अधिक समजातीय होता है तथा विचलन जितना ही अधिक होता है समूह उतना ही अधिक विषमजातीय होता है। शिक्षा के क्षेत्र मे समजातीयता तथा विषमजातीयता का ज्ञान आवश्यक है तथा महत्वपूर्ण है। समजातीय समूह के बच्चो को सिखाना और पढ़ाना अधिक सरल होता है क्योंकि सभी बच्चों की बुद्धि तथा रुचियो आदि मे अन्तर या विचलन कम से कम होता है। विषमजातीय समूह के बच्चो को शिक्षा देना उतना सरल नहीं होता है क्योंकि सभी बच्चो मे बुद्धि, रुचियों तथा आयु आदि की दृष्टि से अधिक अन्तर होता है। यदि शिक्षक अधिक बुद्धि वाले छात्रो को ध्यान मे रखकर उच्च विषय-सामग्री को सिखाता-पढ़ाता है तो कम बुद्धि वाले छात्र उसे समझने मे असमर्थ रहते हैं, उनका कक्षा मे मन नहीं लगता है। दूसरी ओर, यदि वह कम बुद्धि वाले बच्चो को ध्यान मे रखकर सरल विषय-सामग्री को प्रस्तुत करता है या उसे सिखाता है तो अधिक बुद्धि वाले बच्चो का कक्षा मे मन नहीं लगता है।

विचलन मापों के प्रकार (Types of Measures of Variability)

विचलन मान को ज्ञात करने की निम्नलिखित चार विधियाँ या माप (Measures) अधिक प्रचलित हैं :

1. प्रसार (The Range)
2. मध्यमान विचलन (The Average or Mean Deviation)
3. चतुर्थांश विचलन (The Semi-inter quartile Range or Quartile Deviation)
4. मानक विचलन (The Standard Deviation)

1. प्रसार
(The Range)

विचलन के मापकों में प्रसार (Range) अपेक्षाकृत सरल माप है। इसका उपयोग आवृत्ति वितरण तालिका (Frequency Distribution Table) बनाते समय किया जाता है। अधिकतम अंक या मान (Highest

Score) तथा न्यूनतम अंक (Lowest Score) के अन्तर को प्रसार कहते हैं। इसका संकेत-चिन्ह (Symbol) R है।

सूत्र—

$$R = \text{Highest Score} - \text{Lowest Score}$$

उदाहरण—1

निम्नलिखित प्राप्तांकों का प्रसार ज्ञात करिए :

21, 35, 38, 26, 27, 28, 30, 32, 24, 19, 22, 30

हल—

प्रश्न मे,

Highest Score = 38

Lowest Score = 19

अतः R = Highest Score — Lowest Score

= 38 — 19

प्रसार = 19 उत्तर

उदाहरण—2

बी० ए० प्रथम वर्ष के 50 छात्रों तथा 50 छात्राओं के दो समूहों की
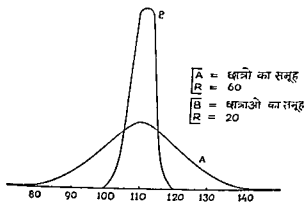
[Figure shows two distributions of the same area (N) and mean 110'5 but of very different variability. Group A is three times as variable as Group B.]

बुद्धि को मापा गया। छात्रों की बुद्धि का मध्यमान (Mean) 110·5 तथा छात्राओं की बुद्धि का मध्यमान भी 110·5 गणना द्वारा प्राप्त हुआ। मध्यमान को देखते हुए दोनों समूहों के विद्यार्थियों की बुद्धि मे कोई अन्तर नहीं है। लेकिन यदि छात्रों की बुद्धि का प्रसार 80 से 140 तथा छात्राओं की बुद्धि का प्रसार 100 से 120 है तो इससे यह स्पष्ट है छात्रों की बुद्धि का प्रसार (140—80=60) छात्राओं की बुद्धि के प्रसार (120—100=20) से अधिक है। अतः छात्रों की बुद्धि का विचलन (Variability) छात्राओं की बुद्धि के विचलन की अपेक्षा अधिक है। दूसरे शब्दों में, छात्रों का समूह बुद्धि की दृष्टि से विषमजातीय (Hetrogenous) है अपेक्षाकृत छात्राओं के समूह के, या छात्राओं का समूह बुद्धि की दृष्टि से छात्रों के समूह की अपेक्षा अधिक समजातीय (Homogenous) है। इस स्थिति को पृष्ठ ११२ के चित्र द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है।

प्रसार का प्रयोग कब करना चाहिए ? (When to Use Range ?)

1. जब अधिक शुद्ध विचलन-मान की आवश्यकता न हो।
2. जब सफलतापूर्वक तथा शीघ्रता से विचलन-मान ज्ञात करना हो।
3. जब प्राप्तांकों मे अन्तर कम हो।
4. जब प्रारम्भ के तथा अन्त के प्राप्तांकों का ज्ञान प्राप्त करना हो।

प्रसार की सीमाएँ (Limitations of Range)

प्रसार की सीमाएँ अधिक हैं। चूँकि प्रसार मे किनारों की संख्याओं (Extreme Scores) को ही महत्व दिया जाता है इसलिए प्रसार कम विश्वसनीय विचलन माप है। प्रसार की विश्वसनीयता उस समय और अधिक कम हो जाती है जबकि N का मान अधिक या कम होता है। यदि प्रदत्त (Data) के अंकों मे अन्तर अधिक होता है और प्रसार की गणना की जाती है तब भी प्रसार की विश्वसनीयता कम होती है। अतः जब N की संख्या कम हो या प्रदत्त के अंकों मे अन्तर अधिक हो तब प्रसार (Range) की गणना नहीं करनी चाहिए क्योंकि इस स्थिति मे प्रसार विचलन (Variability) की माप शुद्ध या सत्यपूर्ण नहीं होती है।

जब दो न्यादर्श (Samples) की संख्या भिन्न-भिन्न हो या दो समूहों के N का मान भिन्न-भिन्न हो तब प्रसार की गणना नहीं करनी चाहिए।

प्रसार से दो समूहों की तुलना का केवल अपूर्ण (Rough) ज्ञान प्राप्त होता है।

2. मध्यमान विचलन

(The Average or Mean Deviation)

प्राप्तांकों के मध्यमान से भिन्न-भिन्न प्राप्तांकों का विचलन (Deviation) ज्ञात किया जाय फिर धन (+) तथा ऋण (—) चिन्हों को बिना ध्यान दिए मध्यमान ज्ञात किया जाय तो प्राप्त संख्या मध्यमान विचलन (Average Deviation) कहलाएगी [The average deviation or A D (mean deviation or MD) is the mean of the deviations of all the separate scores in a Series taken from their mean (occasionally from the median or mode). In averaging deviations to find AD, no account is taken of signs, and all deviations whether plus or minus are treated as positive.][1] गिलफोर्ड ने मध्यमान विचलन की संक्षिप्त परिभाषा दी है। उनके अनुसार, मध्यमान विचलन, मध्यमान से भिन्न-भिन्न प्राप्तांकों के विचलनों का मध्यमान है जबकि धन तथा ऋण चिन्हों को ध्यान में न रखा गया हो। (The average deviation, or A D, is the arithmetic mean of all the deviations when we disregard the algebraic signs.)[2]

मध्यमान विचलन का संकेत-चिन्ह (Symbol) AD या MD है।

अव्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान विचलन

अव्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान विचलन ज्ञात करने का निम्नलिखित सूत्र है :

$$MD = \frac{\Sigma \mid x' \mid}{N}$$

जबकि,

x' = Deviation of a score from the mean.

$|x'|$ = Bars embracing the x indicate that signs are disregarded in arriving at the sum.

N = Number of scores.

अव्यवस्थित सामग्री से मध्यमान विचलन ज्ञात करते समय सर्वप्रथम दिए हुए प्राप्तांकों का मध्यमान (M) ज्ञात कीजिए। प्राप्तांकों का मध्यमान से

---

1. Garrett H. E. *Statistics in Psychology & Education*, (1961), p. 48.
2. Guilford, J. P. : *Fundamental Statistics in Psychology & Education*, Third Edn., p. 82.

विचलन ज्ञात करने के लिए प्राप्तांकों में से मध्यमान को घटाइए अर्थात् (x'=X—M)। यहाँ यह आवश्यक नहीं है कि प्राप्तांक में से ही मध्यमान को घटाया जाय। प्रायः विद्यार्थी यह भूल भी जाते हैं कि मध्यमान से प्राप्तांक को घटाना है अथवा प्राप्तांक से मध्यमान को। चूँकि धन एवं ऋण चिन्हों को कोई महत्व नहीं दिया जाता है इसलिए प्राप्तांक और मध्यमान का अन्तर निकालना अधिक सरल लगता है।

सभी प्राप्तांकों का मध्यमान से विचलन ज्ञात करने के पश्चात् इन विचलनों को जोड़िए अर्थात् $\Sigma|x'|$ का मूल्य ज्ञात कीजिए। अन्त में $\Sigma|x'|$ के मान को N के मान से भाग देकर मध्यमान विचलन का गणना द्वारा मान प्राप्त करिए।

उदाहरण—2

दी हुई अव्यवस्थित सामग्री का मध्यमान विचलन (A D) ज्ञात कीजिए.

20, 25, 20, 18, 21, 23, 24, 22, 23, 26.

Table—1. Calculation of Average Deviation from ungrouped data.

X (Scores)	$|x'|$ (X—M)
20	20—22=2
25	25—22=3
20	20—22=2
18	18—22=4
21	21—22=1
23	23—22=1
24	24—22=2
22	22—22=0
23	23—22=1
24	26—22=4
ΣX=220	$\Sigma|x'|$=20

हल—

मध्यमान (M) की गणना

प्रश्न में,

$\Sigma X = 220$

$N = 10$

$$\therefore M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{220}{10}$$

$$= 22$$

मध्यमान विचलन (MD) की गणना करना

प्रश्न में,

$\Sigma|x'| = 20$ (प्राप्तांकों का मध्यमान से अन्तर ज्ञात करते समय +, — चिन्हों का ध्यान नहीं देते हैं।)

$N = 10$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$MD = \frac{\Sigma|x'|}{N}$$

$$= \frac{20}{10}$$

मध्यमान विचलन = 2 उत्तर

उदाहरण—3

नीचे दिए हुए समूह—क तथा समूह—ख के लिए विस्तार (R) तथा मध्यमान विचलन (MD) में से किस विधि का प्रयोग करना उचित होगा ?

समूह—क : 5, 6, 9, 10, 12, 3, 5, 8, 10, 10.

समूह—ख : 9, 8, 7, 5, 4, 3, 12, 8, 8, 6

हल—

विस्तार (Range) तथा मध्यमान विचलन में से कौनसी विधि द्वारा विचलन अंक निकालना होगा, यह तभी बताया जा सकता है जबकि इन दो विचलन मापों द्वारा विचलन अंक ज्ञात कर लिये जायें।

विस्तार (R) की गणना

समूह—क का विस्तार (R) = Highest Score—Lowest Score

= 12—3

= 9

समूह—ख का विस्तार (R) = Highest Score — Lowest Score

$$= 12 - 3$$

$$= 9$$

मध्यमान विचलन की गणना :

Table 2—Calculation of Average Deviation from Ungrouped Data

Group—A		Group—B	
X (Scores)	| x' | (X—M)	X (Scores)	| x' | (X—M)
5	5—8=3	9	9—7=2
8	8—8=0	8	8—7=1
9	9—8=1	7	7—7=0
10	10—8=2	5	5—7=2
12	12—8=4	4	4—7=3
3	3—8=5	3	3—7=4
5	5—8=3	12	12—7=5
8	8—8=0	8	8—7=1
10	10—8=2	8	8—7=1
10	10—8=2	6	6—7=1
$\Sigma X = 80$	$\Sigma \lvert x' \rvert = 22$	$\Sigma X = 70$	$\Sigma \lvert x' \rvert = 20$
Mean = 8		Mean = 7	

समूह—क का मध्यमान विचलन (MD)

$$MD = \frac{\Sigma \lvert x' \rvert}{N}$$

$$= \frac{22}{10}$$

$$= 2 \cdot 2$$

व्यवस्थित अंक सामग्री (Grouped Data) से मध्यमान विचलन ज्ञात करते समय सर्वप्रथम व्यवस्थित अंक सामग्री का दीर्घ विधि (Long Method) या संक्षिप्त विधि द्वारा मध्यमान (M) ज्ञात करते हैं। फिर प्रत्येक वर्गान्तर (C. I.) का मध्यबिन्दु (Midpoint) ज्ञात करते हैं।

मध्यबिन्दु का मध्यमान से विचलन ज्ञात करने के लिए मध्यबिन्दु मे से मध्यमान को घटाइए अर्थात् $(x'=X-M)$। यहाँ यह आवश्यक नही है कि मध्यबिन्दु मे से ही मध्यमान को घटाया जाय। चूँकि धन और ऋण चिन्हो को कोई महत्व नहीं दिया जाता है इसलिए मध्यबिन्दु और मध्यमान का अन्तर ज्ञात कर लेते हैं। सूत्र मे खड़ी लाइनो | | का अर्थ है कि जोड़ते समय धन एवं ऋण चिन्हों को महत्व नहीं दिया गया है।

सभी मध्यबिन्दुओं का मध्यमान से विचलन ज्ञात करने के पश्चात् उन विचलनों को उनसे सम्बन्धित (Corresponding) आवृत्तियों से गुणा कीजिए अर्थात् $|fx'|$ की गणना करिए।

अन्त मे $\Sigma|fx'|$ का तथा N का मान ज्ञात करके सूत्र द्वारा मध्यमान विचलन की गणना करिए।

उदाहरण—4

दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का AD ज्ञात कीजिए :

Scores	f	X (Mid-points)	fX	x' (X—M)	fx'
50—54	2	52	104	19·4	38 8
45—49	2	47	94	14 4	28·8
40—44	3	42	126	9·4	28·2
35—39	3	37	111	4·4	13·2
30—34	5	32	160	·6	3·0
25—29	4	27	108	5·6	22 4
20—24	3	22	66	10·6	31·8
15—19	2	17	34	15 6	31·2
10—14	1	12	12	20·6	20·6
	N=25		Σfx=815		Σ|fx'|218

उदाहरण—5

दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का MD ज्ञात कीजिए :

Scores	f	d	fd	X (Mid-points)	|x'| (X—M)	fx'
50—54	2	+4	+8	52	19·4	38 8
45—49	2	+3	+6	47	14·4	28·8
40—44	3	+2	+6	42	9·4	28 2
35—39	3	+1	+3/=+23	37	4·4	13·2
30—34	5	0	0	32	·6	3·0
20—29	4	—1	—4	27	5·6	22·4
25—24	3	—2	—6	22	10·6	31·8
15—19	2	—3	—6	17	15 6	31·2
10—14	1	—4	—4/=—20	12	20 6	20 6
	N=25		Σfd=3			Σ|fx'|=218·0

हल—

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, व्यवस्थित अंक सामग्री का मध्यमान विचलन ज्ञात करते समय यह आवश्यक है कि पहले मध्यमान ज्ञात किया जाय। उदाहरण—5 में मध्यमान संक्षिप्त विधि (Short Method) द्वारा ज्ञात किया गया है।

$$M=AM\pm\left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)\times i$$

प्रश्न में,

$$AM=32$$
$$\Sigma fd=3$$
$$N=25$$
$$i=5$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M = AM \pm \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right) \times i$$

$$= 32 + \frac{3}{25} \times 5$$

$$= 32 + \frac{3}{5}$$

$$= 32 + \cdot 6 = 32 \cdot 6$$

मध्यमान विचलन का सूत्र—

$$MD = \frac{\Sigma |fx'|}{N}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma |fx'| = 218$$

$$N = 25$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$MD = \frac{\Sigma |fx'|}{N}$$

$$= \frac{218}{25}$$

मध्यमान विचलन $= 8 \cdot 72$ उत्तर

3. चतुर्थांश विचलन
(Quartile Deviation)

चतुर्थांश विचलन प्रथम और तृतीय चतुर्थांशों के अन्तर का आधा है।[1] दूसरे शब्दों में, किसी आवृत्ति-वितरण में 75वें शतांशीयमान (Perc tile) और 25वें शतांशीयमान के बीच की आधी दूरी होती है।[2] प्र

---

1. "Quartile Deviation : the semi-inter quartile range interval, half of the distance between quartile one an three." —*English & English*
2. "The quartile deviation or Q is one-half the scale distance between the 75th and 25th percentiles in a frequency distribution." —*Garrett, II.*

चतुर्थांश का अर्थ है 25वां शतांशीयमान या Q_1। इसी प्रकार तृतीय चतुर्थांश का अर्थ है 75वां शतांशीयमान या Q_3।

चतुर्थांश विचलन को अर्द्ध-मध्यांक-चतुर्थांश प्रसार (Semi-Inter Quartile Range) भी कहा जाता है। इसका संकेत-चिन्ह (Symbol) Q अथवा QD होता है।[1]

अव्यवस्थित अंक सामग्री का चतुर्थांश विचलन

अव्यस्थित अङ्क सामग्री का चतुर्थांश विचलन ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करते हैं :

$$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

जबकि
$$Q_1 = \left(\frac{N+1}{4}\right)^{th} \text{term}$$

$$Q_3 = \left\{\frac{3(N+1)}{4}\right\}^{th} \text{term}$$

जिसमें, N = No. of Scores

अव्यवस्थित अंक सामग्री का चतुर्थांश विचलन ज्ञात करने के लिए पहले Q_1 की गणना करते हैं, फिर Q_3 की। अन्त में Q_3 से Q_1 को घटा कर 2 से भाग देकर Q का मान प्राप्त कर लेते हैं। ऊपर दिए हुए सूत्रों से स्पष्ट है कि Q_1 तथा Q_3 की गणना करने के लिए केवल N का मूल्य मालूम होना आवश्यक है।

Q_1 तथा Q_3 का मूल्य ज्ञात करने से पहले दी हुई अव्यवस्थित अंक सामग्री को क्रम में व्यवस्थित करना अनिवार्य है अन्यथा Q_1 और Q_3 के मान सही प्राप्त नहीं होंगे।

---

1. "Q. D. is one half the distance between the first and third quartile, and so it is called semi-inter quartile range." —*Lindquist.*

   "The semi-inter quartile range, Q, is one-half the range of the middle 50 per cent of the cases." —*Guilford, J. P.*

उदाहरण—6

दिए हुए अव्यवस्थित अंकों का चतुर्थांश विचलन ज्ञात कीजिए :

Item No.	Scores
1	17
2	19 }
3	23 }
4	24
5	25
6	28
7	30 }
8	30 }
9	32

हल—

उदाहरण—6 में दिए हुए अंक क्रम के अनुसार हैं। Q निकालने के लिए पहले Q_1 तथा Q_3 ज्ञात करना होगा।

$$Q_1=\left(\frac{N+1}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

प्रश्न में,

$$N=9$$

$$\therefore \quad Q_1=\left(\frac{N+1}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

$$=\left(\frac{9+1}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

$$=\left(\frac{10}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

$$=2\cdot5 \text{ th term}=21$$

$$Q_3=\left\{\frac{3(N+1)}{4}\right\}^{th} \text{ term}$$

प्रश्न में,

$$N=9$$

$$\therefore \quad Q_3=\left\{\frac{3(N+1)}{4}\right\}^{th} \text{term}$$

$$=\left\{\frac{3(9+1)}{4}\right\}^{th} \text{term}$$

$$=\left\{\frac{30}{4}\right\}^{th} \text{term}$$

$$=7 \cdot 5 \text{ th term}=30$$

अतः

$$Q=\frac{Q_3-Q_1}{2}$$

$$=\frac{30-21}{2}$$

$$=\frac{9}{2}=4 \cdot 5 \quad \text{उत्तर}$$

उदाहरण—7

नीचे दिए हुए अव्यवस्थित अंकों का Q ज्ञात कीजिए :

Items	Scores
1	5
2	10
3	12
4	19
5	27
6	38
7	35
8	36
9	36
10	38
11	38

हल—

ऊपर के उदाहरण में अंक क्रम में व्यवस्थित हैं।

$$Q_1=\left(\frac{N+1}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

प्रश्न में,

$$N=11$$

$$\therefore \quad Q_1=\left(\frac{N+1}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

$$=\left(\frac{11+1}{4}\right)^{th} \text{ term}$$

$$=\frac{12}{4} \text{ th term}$$

$$=3\text{rd term}=12$$

$$Q_3=\left\{\frac{3(N+1)}{4}\right\}^{th} \text{ term}$$

$$=\left\{\frac{3(11+1)}{4}\right\}^{th} \text{ term}$$

$$=\left\{\frac{36}{4}\right\}^{th} \text{ term}$$

$$=9 \text{ th term}=36$$

अतः

$$Q=\frac{Q_3-Q_1}{2}$$

$$=\frac{36-12}{2}$$

$$=\frac{24}{2}$$

$Q=12$ उत्तर

व्यवस्थित अङ्क सामग्री का चतुर्थांश विचलन

व्यवस्थित अंक सामग्री का चतुर्थांश विचलन (Q or QD) ज्ञात करने का निम्नलिखित सूत्र है :

$$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

जबकि,

Q = Quartile Deviation

Q_3 = Third Quartile or 75th Percentile [वह शतांशीय मान जिसके नीचे 75 प्रतिशत (3N/4) आवृत्तियाँ होती हैं]

Q_1 = First Quartile or 25th Percentile [वह शतांशीय मान जिसके नीचे 25 प्रतिशत (N/4) आवृत्तियाँ होती हैं]

इसी प्रकार,

Q_2 = Second Quartile, 50th Percentile [वह शतांशीय मान जिसके नीचे 50 प्रतिशत (N/2) आवृत्तियाँ होती हैं। Q_2 मध्यांक (Median) भी कहलाता है]

Q_1 तथा Q_3 को निकालने के सूत्र—

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

$$Q_3 = L + \left(\frac{3N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

जबकि,

L = Exact lower limit of the class interval in which first quartile (Q_1) or third quartile (Q_3) lies

N = Total no. of Frequencies

F = Cumulative Frequency up to the class interval which contains the first quartile (Q_1) or third quartile (Q_3)

fq = Frequency of the class interval containing the first quartile (Q_1) or third quartile (Q_3)

i = Length of the class interval.

व्यवस्थित अंक सामग्री से चतुर्थांश विचलन (Q) ज्ञात करने के लिए सबसे पहले Q_1 तथा Q_3 की गणना करते हैं। Q_1 या Q_3 की गणना करते समय सबसे पहले दी हुई आवृत्तियों को संचयी आवृत्तियों (Cumulative Frequencies) में परिवर्तित करना होता है। साधारण आवृत्तियों को संचयी आवृत्तियों में परिवर्तित करने के लिए उदाहरण—8 देखिए। संचयी आवृत्तियाँ बना लेने के बाद संचयी आवृत्तियाँ देखिए और यह निश्चित कीजिए कि किस वर्गान्तर में Q_1 और Q_3 हैं। N/4 के मान की सहायता से Q_1 को निश्चित करिए और 3N/4 के मान की सहायता से Q_3 को निश्चित करिए।

उदाहरण—8 को देखिए। सबसे पहले Q_1 की गणना की गई है। Q_1 की गणना में N/4 का मान ज्ञात किया गया है। N/4 के मान 7 को देखते हैं कि संचयी आवृत्तियों में कहाँ पर है। यह मान 4 और 8 संचयी आवृत्तियों के बीच में कहीं पर है। अतः F=4 होगा और इसके ऊपर वाले वर्ग विस्तार से आवृत्ति (Frequency) और वर्ग विस्तार से निम्न सीमा (Lower limit) ले लेते हैं। उदाहरण—8 में f =4 तथा L=19 5 है। फिर वर्ग विस्तार की दूरी ज्ञात कर लेते हैं। उदाहरण—8 में यह 5 है। इस प्रकार प्राप्त सभी मूल्यों को Q_1 के सूत्र में रखकर Q_1 का मान ज्ञात कर लेते हैं।

इसी प्रकार से Q_3 के सूत्र के विभिन्न संकेतों के मान ज्ञात करने के पश्चात् Q_3 की गणना करते हैं। अन्त में Q_3 के मान से Q_1 के मान को घटाकर प्राप्त संख्या को दो से भाग देकर Q का मान प्राप्त करते हैं।

उदाहरण—8

दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का चतुर्थांश विचलन ज्ञात कीजिए।

C. I.	f	F
50—54	2	28
45—49	3	26
40—44	3	23
35—39	3	20
30—34	5	17
25—29	4	12
20—24	4	8
15—19	2	4
10—14	2	2
	N=28	

हल—

Q निकालने के लिए पहले हमें Q_1 तथा Q_3 की गणना करनी होती है।

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

प्रश्न में,

$$N/4 = 7$$
$$F = 4$$
$$fq = 4$$
$$L = 19{\cdot}5$$
$$i = 5$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) \times i$$
$$= 19{\cdot}5 + \left(\frac{7 - 4}{4}\right) \times 5$$
$$= 19{\cdot}5 + \frac{3 \times 5}{4}$$
$$= 19{\cdot}5 + 3{\cdot}75$$
$$= 23{\cdot}25$$

$$Q_3 = L + \left(\frac{3N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

प्रश्न में,

$$3N/4 = 21$$
$$F = 20$$
$$fq = 3$$
$$L = 39{\cdot}5$$
$$i = 5$$

हल—

Q निकालने के लिए पहले हमें Q_1 तथा Q_3 की गणना करनी होती है।

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq} \right) \times i$$

प्रश्न में,

$N/4 = 13·5$
$F = 13$
$fq = 9$
$L = 8·5$
$i = 2$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq} \right) \times i$$

$$= 8·5 + \left(\frac{13·5 - 13}{9} \right) \times 2$$

$$= 8·5 + \frac{·5}{9} \times 2$$

$$= 8·5 + ·111$$

$$= 8·611$$

$$Q_3 = L + \left(\frac{3N/4 - F}{fq} \right) \times i$$

प्रश्न में,

$3N/4 = 40·5$
$F = 40$
$fq = 7$
$L = 14·5$
$i = 2$

...सूत्र में रखने पर,

$$Q_3 = L + \left(\frac{3N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

$$= 14{\cdot}5 + \left(\frac{40{\cdot}5 - 40}{7}\right) \times 2$$

$$= 14{\cdot}5 + \frac{{\cdot}5 \times 2}{7}$$

$$= 14{\cdot}5 + {\cdot}142$$

$$= 14{\cdot}642$$

...अब $$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

$$= \frac{14{\cdot}642 - 8{\cdot}611}{2}$$

$$= \frac{6{\cdot}031}{2}$$

$$Q = 3{\cdot}015 = 3{\cdot}02 \text{ उत्तर}$$

...न—10

...ई हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का Q ज्ञात कीजिए :

C. I	f	F
70—71	2	39
68—69	2	37
66—67	3	35
64—65	4	32
62—63	6	28
60—61	7	22
58—59	5	15
56—57	4	10
54—55	2	6
52—53	3	4
50—51	1	1
	N=39	

हल—

Q निकालने के लिए पहले हमे Q_1 तथा O_3 की गणना करनी होती है।

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

प्रश्न मे,

$$N/4 = 9\ 7$$
$$F = 6$$
$$fq = 4$$
$$L = 55\ 5$$
$$i = 2$$

इन मूल्यो को सूत्र मे रखने पर,

$$Q_1 = L + \left(\frac{N/4 - F}{fq}\right) \times i$$

$$= 55{\cdot}5 + \left(\frac{9\ 7 - 6}{4}\right) \times 2$$

$$= 55{\cdot}5 + \frac{3{\cdot}7}{4} \times 2$$

$$= 55{\cdot}5 + 1{\cdot}85$$

$$= 57{\cdot}35$$

$$Q_3 = L + \left(\frac{3/4 - F}{fq}\right) \times i$$

प्रश्न में,

$$3N/4 = 29{\cdot}1$$
$$F = 28$$
$$fq = 4$$
$$L = 63{\cdot}5$$
$$i = 2$$

...मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$Q_3 = L + \left(\frac{3N/4 - F}{fq} \right) \times i$$

$$= 63.5 + \left(\frac{29.1 - 28}{4} \right) \times 2$$

$$= 63.5 + \frac{1.1 \times 2}{4}$$

$$= 63.5 + .55$$

$$= 64.05$$

अत.

$$Q = \frac{Q_3 - Q_1}{2}$$

$$= \frac{64.05 - 57.35}{2}$$

$$= \frac{6.70}{2}$$

$$Q = 3.35 \quad \text{उत्तर}$$

4 प्रामाणिक विचलन
(Standard Deviation)

दिए हुए प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनों के व... मध्यमान का वर्गमूल ही प्रामाणिक विचलन है।[1] दूसरे शब्दों में, यदि... हुए प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों का विचलन ज्ञात किया जाय (f... ज्ञात करते समय धन और ऋण चिन्हों का ध्यान नहीं दिया जाता है)... विचलन का वर्ग किया जाय, फिर इन वर्गों को जोड़कर उनकी संख्या...

---

1. Standard Deviation : The square root of the mean... squares of individual deviations from the me... series. —*James*...

देकर प्राप्त संख्या का वर्गमूल निकालने से जो संख्या प्राप्त होती है वह प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) कहलाता है।[1]

इंगलिश और इंगलिश के अनुसार प्रामाणिक विचलन एक ऐसा माप है जो सम्पूर्ण वितरण की विचलनशीलता (Variability) बताता है। इसका प्रयोग अधिकतर प्रयोगात्मक कार्यों और अनुसन्धान से सम्बन्धित अध्ययनों मे किया जाता है। विचलनशीलता का यह स्थायी (Stable) और शुद्ध (Accurate) सूचक (Index) है।

प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) का संकेत-चिन्ह SD अथवा ग्रीक अक्षर सिगमा (σ) है।

I अव्यवस्थित अङ्क सामग्री का प्रामाणिक विचलन

अव्यवस्थित अङ्क सामग्री का प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का निम्नलिखित सूत्र है :

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

जबकि, d = Deviation from the mean

Σd^2 = Sum of the squared deviations taken from the mean.

N = No. of scores.

इस विधि द्वारा जब S.D. ज्ञात करते समय सर्वप्रथम दिए हुए प्राप्तांकों का मध्यमान (Mean) ज्ञात किया जाता है। फिर मध्यमान से प्राप्तांकों का विचलन (Deviation) ज्ञात किया जाता है। विचलन ज्ञात करने के लिए प्राप्तांकों में से मध्यमान (Mean) को घटा देते हैं जैसा उदाहरण—11 में दिया हुआ है या प्राप्तांकों और मध्यमान का अन्तर मालूम कर लेते हैं। विचलनों का वर्ग करके योग प्राप्त कर लेते हैं। यह योग Σd^2 के बराबर होता है। फिर N का मान ज्ञात करके Σd^2 के मान और N के मान को सूत्र में रखकर S.D. की गणना कर लेते हैं।

---

1. In the case of Standard Deviation, the deviations from the mean are squared up to eliminate the plus and minus signs. The sum of squares of deviations is then divided by the total number and the square root of the obtained value is the standard deviation.

उदाहरण—11

किसी मनोवैज्ञानिक परीक्षण में 5 छात्रों के प्राप्तांक निम्न प्रकार हैं। इनका प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) ज्ञात कीजिए :

छात्र	A	B	C	D	E
प्राप्तांक	8	2	5	9	6

हल—

सर्वप्रथम मध्यमान (Mean) निकालिए।

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रश्न में, $\Sigma X = 30$

$N = 5$

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{30}{5} = 6$$

नीचे दी हुई तालिका में मध्यमान से विचलन और विचलनों के व
हुए हैं

Students	Scores	d (X—M)	
A	8	8 — 6 = 2	
B	2	2 — 6 = — 4	
C	5	5 — 6 = — 1	
D	9	9 — 6 = 3	
E	6	6 — 6 = 0	

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

प्रश्न मे, $\Sigma d^2 = 30$

$N = 5$

इन मूल्यो को सूत्र मे रखने पर,

$$S.D = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{30}{5}}$$

$$= \sqrt{6}$$

$$= 2 \cdot 449$$

$S.D. = 2 \cdot 45$ उत्तर

उदाहरण—12

दी हुई अव्यवस्थित अंक सामग्री का प्रामाणिक विचलन ज्ञात कीजिए·

10, 14, 15, 18, 18, 25, 25, 35

Scores X	d=(X—M)	d^2
10	10−20=−10	100
14	14−20=− 6	36
15	15−20=− 5	25
18	18−20=− 2	4
18	18−20= 2	4
25	25−20= 5	25
25	25−20= 5	25
35	35−20= 15	225
$\Sigma X = 160$		$\Sigma d^2 = 444$

हल—

सर्वप्रथम मध्यमान निकालिए

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma X = 160$$
$$N = 8$$

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{160}{8}$$

$$= 20$$

अब इस मध्यमान (Mean) की सहायता से विचलन (deviation) निकाले गए हैं जो उदाहरण—12 की तालिका में दिए हुए हैं

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma d^2 = 444$$
$$N = 8$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$SD = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{444}{8}}$$

$$= \sqrt{[illegible]}$$

II. व्यवस्थित अंक सामग्री का प्रामाणिक विचलन

A. संक्षिप्त विधि (Short Method) द्वारा—व्यवस्थित अंक सामग्री से संक्षिप्त विधि द्वारा प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का निम्नलिखित सूत्र है .

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

जबकि

i	=	Length of the class interval
S.D.	=	Standard Deviation
Σfd^2	=	Sum of the product of the frequencies and square of deviations *i. e* frequeney × deviation^2
Σfd	=	Sum of the product of frequencies and deviations *i. e.* frequency × deviation
N	=	No. of scores.

इस विधि द्वारा S.D. ज्ञात करते समय, सबसे पहले वितरण को देख कर यह अनुमान लगाया जाता है कि मध्यमान (Mean) वितरण के किस वर्ग मे पड़ता है। वितरण के जिस वर्ग में मध्यमान का अनुमान किया जाता है उसी वर्ग से कल्पित मध्यमान (Assumed Mean) लेते हैं। कल्पित मध्यमान वाले वर्ग (C. I.) के सामने शून्य (०) रख देते हैं और d और fd की गणना उसी प्रकार करते हैं जैसे मध्यमान (संक्षिप्त विधि द्वारा) ज्ञात करते समय करते हैं।

d और fd की गणना करने के बाद fd^2 की गणना करते हैं। fd कालम मे दी हुई सख्याओं को d कालम मे दी हुई सख्याओं से गुणा करने से fd^2 का मान प्राप्त होता है क्योंकि $fd \times d = fd^2$। फिर Σfd तथा Σfd^2 का मान ज्ञात करते हैं और अन्त मे N और C. I. का मान ज्ञात करने के पश्चात् सभी मूल्यों को सूत्र मे रखकर S.D. की गणना कर लेते हैं।

इस विधि द्वारा परिणामो की जाँच सरलतापूर्वक की जा सकती है क्योंकि गणनाएँ (Calculations) कम करनी पड़ती हैं। अतः त्रुटियों की संभावना भी कम होती है।

उदाहरण—13

दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का संक्षिप्त विधि (Short Method) द्वारा S.D. ज्ञात कीजिए।

C. I	f	d	fd	fd^2
70—71	2	+5	+10	50
68—69	2	+4	+ 8	32
66—67	3	+3	+ 9	27
64—65	4	+2	+ 8	16
62—63	6	+1	+ 6	6
			41	
60—61	7	0	0	0
58—59	5	−1	−5	5
56—57	4	−2	−8	16
54—55	2	−3	−6	18
52—53	3	−4	−12	48
50—51	1	−5	−5	25
			−36	
	N=39		$\Sigma fd=5$	$\Sigma fd^2=243$

हल—

$$S.D.=i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}-\left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

प्रश्न मे,

$$i=2$$

$$\Sigma fd^2=243$$

$$N=39$$

$$\Sigma fd=5$$

इन मूल्यों को सूत्र मे रखने पर,

$$S.D.=\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}-\left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

$$=2\sqrt{\frac{243}{39}-\left(\frac{5}{39}\right)^2}$$

$$=2\sqrt{\frac{243}{39}-\frac{5\times5}{39\times39}}$$

$$=2\sqrt{6{\cdot}23-{\cdot}016}$$

$$=2\sqrt{6{\cdot}214}$$

$$=2\times2{\cdot}49$$

S.D. $=4{\cdot}98$ उत्तर

उदाहरण—14

दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का प्रामाणिक विचलन (S.D. or σ) संक्षिप्त विधि द्वारा ज्ञात कीजिए :

C. I.	f	d	fd	fd²
4	2	−5	−10	50
5	2	−4	− 8	32
6	6	−3	−18	54
7	18	−2	−36	72
8	31	−1	−31	31
			−103	
9	22	0	0	0
10	15	+1	+15	15
11	12	+2	+24	48
12	6	+3	+18	54
13	3	+4	+12	48
14	2	+5	+10	50
15	1	+6	+ 6	36
			85	
	N=120		Σfd=−18	Σfd²=490

सूत्र—

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

प्रश्न में,

$$i = 1$$
$$\Sigma fd^2 = 490$$
$$\Sigma fd = -18$$
$$N = 120$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$S.D. = i\sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2}$$

$$= 1\sqrt{\frac{490}{120} - \left(\frac{-18}{120}\right)^2}$$

$$= 1\sqrt{\frac{490}{120} - \frac{18 \times 18}{120 \times 120}}$$

$$= 1\sqrt{4{\cdot}083 - {\cdot}0225}$$

$$= 1\sqrt{4{\cdot}0605}$$

$$= 1 \times 2{\cdot}015$$
$$= 2{\cdot}015$$

$S.D. = 2{\cdot}02$ उत्तर

B दीर्घ विधि (Long Method) द्वारा—व्यवस्थित अंक सामग्री का दीर्घ विधि द्वारा प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का निम्नलिखित सूत्र है :

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$$

जबकि,

d = Deviation from the mean

fd^2 = Square of deviations multiplied by their respective frequencies.

N = No. of scores

इस विधि द्वारा प्रामाणिक विचलन (S.D.) ज्ञात करते समय पहले दीर्घ विधि (Long Method) द्वारा मध्यमान (Mean) ज्ञात किया जाता है। मध्यमान ज्ञात करते समय $M = \Sigma fX/N$ सूत्र का प्रयोग किया जाता है।

मध्यमान ज्ञात करने के पश्चात् विचलन (Deviation or d) की गणना करते हैं। मध्यमान (Mean) और मध्यबिन्दु (Midpoint) का अन्तर d के बराबर होता है। d में f का गुणा करके fd कालम के मान प्राप्त करते हैं। फिर fd में d का गुणा कर fd^2 कालम के मान प्राप्त करते हैं।

अन्त में Σfd^2 और N का मान ज्ञात कर मूल्यों को S.D के सूत्र में रखकर गणना करते हैं और S.D. का मान ज्ञात कर लेते हैं।

प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने की इस विधि में संक्षिप्त विधि की अपेक्षा अधिक गुणा-भाग करने पड़ते हैं। इसलिए यह दीर्घ विधि कहलाती है। इस विधि द्वारा परिणामों की जाँच में कठिनाई होती है।

उदाहरण—15

दी हुई व्यवस्थित अंक सामग्री का प्रामाणिक विचलन (S.D.) दीर्घ विधि (Long Method) द्वारा ज्ञात कीजिए।

C. I.	f	X Mid point	fX	d	fd	fd^2
25—29	1	27	27	14·1	14·1	198·81
20—24	3	22	66	9·1	27 3	248·43
15—19	4	17	68	4·1	16·4	67·24
10—14	6	12	72	9	5·4	4 86
5—9	5	7	·5	5 9	29·5	174 05
0—4	2	2	4	10 9	21·8	237·62
	N=21		$\Sigma fx = 272$			$\Sigma fd^2 = 1006\ 01$

हल—

दीर्घ विधि (Long Method) द्वारा S. D. ज्ञात करते समय पहले दीर्घ विधि द्वारा मध्यमान (Mean) ज्ञात कीजिए।

$$M = \frac{\Sigma fX}{N}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma fX = 272$$
$$N = 21$$

$$\therefore M = \frac{\Sigma fX}{N}$$

$$= \frac{272}{21} = 12{\cdot}9$$

अब d की गणना करिए। मध्यमान (Mean) और मध्य-बिन्दु (Midpoint) का अन्तर d के बराबर होगा।

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$$

प्रश्न मे,

$$\Sigma fd^2 = 1006{\cdot}01$$
$$N = 21$$

इन मूल्यों को सूत्र मे रखने पर,

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{1006{\cdot}01}{21}}$$

$$= \sqrt{47{\cdot}9}$$

$$S.D = 6{\cdot}92$$ उत्तर

III. अव्यवस्थित अंक सामग्री का प्रामाणिक विचलन जबकि कल्पित मध्यमान शून्य लिया गया हो (Standard deviation of un-grouped data when the assumed mean is taken at zero)

इस विधि द्वारा प्रामाणिक विचलन ज्ञात करते समय निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करते हैं :

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma x'^2}{N} - M^2}$$

जबकि,

x' = Deviation from the assumed mean

$\Sigma x'^2$ = Sum of the squared deviations taken from the assumed mean when the assumed mean is zero

M^2 = Square of Mean

N = No. of scores

इस विधि द्वारा प्रामाणिक विचलन निकालते समय सर्वप्रथम दिए हुए प्रदत्तों का योग (ΣX) ज्ञात कर लेते हैं और फिर $M = \frac{\Sigma X}{N}$ सूत्र द्वारा मध्यमान ज्ञात कर लेते हैं। फिर कल्पित मध्यमान (Assumed Mean) शून्य मानकर कल्पित मध्यमान शून्य से प्राप्तांकों का विचलन ज्ञात कर लेते हैं। यह विचलन x' कालम में रखते हैं।

स्पष्ट है कि प्रत्येक प्राप्तांक का विचलन का मान उतना ही होगा जितना प्राप्तांक है। उदाहरण के लिए, प्राप्तांक 30, 38 का विचलन क्रमशः 30, 38 ही है। अन्त में x' का वर्ग कर लेते हैं और सूत्र में प्रदत्त से प्राप्त मूल्यों को रखकर उदाहरण—16 में दिए गये विवरण के अनुसार प्रामाणिक विचलन ज्ञात कर लेते हैं।

इस विधि का उपयोग उस समय किया जाता है जबकि समय और गणनाओं (Calculations) की बचत करनी हो। इस विधि का उपयोग उस समय भी कर सकते हैं जबकि अव्यवस्थित अंक सामग्री को व्यवस्थित न करना चाहते हों।

उदाहरण—16

दिए हुए अव्यवस्थित अंकों का कल्पित मध्यमान (Assumed Mean) शून्य (Zero) मानकर प्रामाणिक विचलन ज्ञात कीजिए :

Scores X	Deviation from the Assumed Mean x'	x'^2
30	30	900
38	38	1444
27	27	729
25	25	625
24	24	576
22	22	484
19	19	361
20	20	400
18	18	324
15	15	225
$\Sigma X = 238$	$\Sigma x' = 238$	$\Sigma x'^2 = 6068$

S D निकालने से पहले मध्यमान (M) की गणना करनी पड़ेगी।

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

$$= \frac{238}{10}$$

$$= 23\ 8 \text{ तथा } M^2 = 566{\cdot}44$$

अत $$S\ D. = \sqrt{\frac{\Sigma x'^2}{N} - M^2}$$

प्रश्न में,

$$\Sigma x'^2 = 6068$$

$$N = 10$$

$$M^2 = 566{\cdot}44$$

इन मूल्यों को सूत्र मे रखने पर,

$$S.D = \sqrt{\frac{\Sigma x'^2}{N} - M^2}$$

$$= \sqrt{\frac{6068}{10} - 566{\cdot}44}$$

$$= \sqrt{606{\cdot}8 - 566{\cdot}44}$$

$$= \sqrt{40{\cdot}36}$$

$$S.D = 6{\cdot}35 \quad \text{उत्तर}$$

IV. संयुक्त प्रामाणिक विचलन (Combined S.D.)

सयुक्त प्रामाणिक विचलन ज्ञात करने का निम्नलिखित सूत्र है :

$$S.D._{comb} = \sqrt{\frac{N_1(\sigma_1^2 + d_1^2) + N_2(\sigma_2^2 + d_2^2)}{N_1 + N_2}}$$

जबकि,

σ_1 = S.D of first distribution

σ_2 = S.D of second distribution

$d_1 = (M_1 - M_{comb})$

$d_2 = (M_2 - M_{comb})$

सूत्र से स्पष्ट है कि इस विधि द्वारा S.D. ज्ञात करते समय N, M तथा विभिन्न समूहो का प्रामाणिक विचलन ज्ञात हो। ऊपर दिए हुए सूत्र के द्वारा केवल दो समूहो का संयुक्त प्रामाणिक विचलन ज्ञात कर सकते हैं। यदि दो समूहों से अधिक का प्रमाणिक विचलन ज्ञात करना हो तो सूत्र मे दिए हुए संकेतो को उसी अनुपात मे बढ़ा दीजिए।

उदाहरण—17

भिन्न सख्या के छात्रो वाली दो कक्षाओं का N, M तथा S.D दिया गया है जो कि एक उपलब्धि-परीक्षण (Acvievement Test) के द्वारा प्राप्त किए गये हैं : S.D comb ज्ञात कीजिए।

Class	N	M	S.D.
Class A	20	90	5
Class B	30	80	10

हल —

S.D.comb निकालने हेतु सबसे पहले संयुक्त मध्यमान (Combin
Mean Or M_{comb}) ज्ञात करते हैं।

$$M_{comb} = \frac{N_1M_1 + N_2M_2}{N_1 + N_2}$$

प्रश्न में,

$$N_1 = 20$$

$$N_2 \quad 30$$

$$M_1 = 90$$

$$M_2 = 80$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$M_{comb} = \frac{N_1M_1 + N_2M_2}{N_1 + N_2}$$

$$= \frac{20 \times 90 + 30 \times 80}{20 + 30}$$

$$= \frac{1800 + 2400}{50}$$

$$= \frac{4200}{50}$$

$$M_{comb} = 84$$

$$S.D. = \sqrt{\frac{N_1(\sigma_1^2 + d_1^2) + N_1(\sigma_2^2 + d_2^2)}{N_1 + N_2}}$$

B. एक निश्चित संख्या को प्रत्येक अङ्क में से घटाने पर S.D. पर प्रभाव (Effect upon S.D. of subtracting a constant to each score)—

उदाहरण—19

X Original Scores	x	x^2
5	−1	1
8	2	4
6	0	0
5	−1	1
6	0	0
$\Sigma X=30$ M=6		$\Sigma x^2=6$

X—2	x	x^2
3	−1	1
6	2	4
4	0	0
3	−1	1
4	0	0
$\Sigma X=20$ M= 4		$\Sigma x^2=6$

$$S.D.=\sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}} \qquad S.D.=\sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

$$=\sqrt{\frac{6}{5}} \qquad =\sqrt{\frac{6}{5}}$$

$$=\sqrt{1\cdot2} \qquad =\sqrt{1\cdot2}$$

$$=1\cdot09 \qquad =1\cdot09$$

ऊपर दिए हुए उदाहरण—19 की मूल संख्याओं (Original Scores) का S.D.=1·09 है। प्रत्येक मूल संख्या में 2 घटाकर पुनः S.D. की गणना की गई है। दूसरी अवस्था में भी S.D.=1·09 है। अतः यह कहा जा सकता है कि एक निश्चित संख्या को मूल संख्याओं की प्रत्येक संख्या में से घटाने पर S.D. पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उत्तर

A एक निश्चित संख्या को प्रत्येक अङ्क में जोड़ने से S.D. पर प्रभाव (Effect upon S. D. of adding a constant to each score)—

उदाहरण—18

X Original Scores	x	x^2
5	−1	1
8	2	4
6	0	0
5	−1	1
6	0	0
$\Sigma X = 30$ $M = 6$		$\Sigma X^2 = 6$

X+2	x	x^2
7	−1	1
10	2	4
8	0	0
7	−1	1
8	0	0
$\Sigma X = 40$ $M = 8$		$\Sigma x^2 = 6$

$$S.D = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}} \qquad S\,D = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{6}{5}} \qquad = \sqrt{\frac{6}{5}}$$

$$= 1{\cdot}09 \qquad = 1{\cdot}09$$

उत्तर—ऊपर दिए हुए उदाहरण की मूल संख्याओ (Original Scores) का S.D. = 1·09 है। प्रत्येक मूल संख्या में 2 जोड़कर पुनः S.D. की गणना की गई है। दूसरी अवस्था में भी S D = 1·09 है। अतः यह कहा जा सकता है कि एक निश्चित संख्या को प्रत्येक अङ्क में जोडने से S.D. पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

VI. शेपर्ड के सूत्र द्वारा प्रामाणिक विचलन का शुद्धीकरण (Sheppard's Correction)

शेपर्ड के सूत्र के प्रयोग द्वारा प्रामाणिक विचलन को शुद्ध किया जाता है। शेपर्ड के सूत्र द्वारा प्रामाणिक विचलन का शुद्धीकरण उस समय करते हैं जबकि वर्ग विस्तार (Class Interval) का मान (size) अधिक हो और वर्गों की संख्या कम हो। जब वर्गों की संख्या अधिक होती है और वर्ग विस्तार का मान कम होता है तो इस सूत्र के प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं होती है क्योंकि त्रुटि की सम्भावना स्वतः ही समाप्त हो जाती है।

$$S.D_c = \sqrt{\sigma^2 - \frac{i^2}{12}}$$

जबकि,

σ = S.D. Computed from the frequency distribution

σ^2 = Squre of S D (Uncorrected)

i^2 = Square of the size of the class interval

उदाहरण—21

किसी व्यवस्थित अङ्क सामग्री का प्रामाणिक विचलन (SD) = 8·7 तथा वर्ग विस्तार (C. I.) = 5 है तो शुद्ध प्रामाणिक विचलन ज्ञात कीजिए।

हल—

$$S.D._c = \sqrt{\sigma^2 - \frac{i^2}{12}}$$

प्रश्न में,

$\sigma^2 = 75·69$

$i^2 = 25$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$S.D._c = \sqrt{\sigma^2 - \frac{i^2}{12}}$$

$$= \sqrt{75·69 - \frac{25}{12}}$$

C. प्राप्तांकों के प्रत्येक अंक को एक निश्चित संख्या से गुणा करने प
S.D. पर प्रभाव (Effect upon S.D. of multiplying each score b
a constant)

उदाहरण—20

X Original Scores	x	x^2
5	−1	1
8	2	4
6	0	0
5	−1	1
6	0	0
$\Sigma X = 30$ $M = 6$		$\Sigma x^2 = 6$

X×2	x	x^2
10	−2	4
16	4	16
12	0	0
10	−2	4
12	0	0
$\Sigma X = 60$ $M = 12$		$\Sigma x^2 = 24$

$$S D = \sqrt{\frac{d^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{6}{5}}$$

$$= \sqrt{1 2}$$

$$= 1.09$$

$$S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$$

$$= \sqrt{\frac{4}{5}}$$

$$= \sqrt{4.4}$$

$$= 2 097$$

ऊपर दिए हुए उदाहरण—20 की मूल संख्याओं का S D.=1·09 है। प्रत्येक मूल संख्या को 2 से गुणा करके पुनः S.D. की गणना की गई है। दूसरी अवस्था में S.D.=2·097 है जो कि 1·09 का दो गुना है अतः यह कहा जा सकता है कि एक निश्चित संख्या से यदि मूल संख्याओं को गुणा किया जाय तो मूल S.D. इतने ही गुना अधिक बढ़ जाता है जितने गुना संख्याओं को बढ़ाया जाता है।

उत्तर

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. विचलन मापकों (Measures of Variability) से आप क्या समझते हैं ? उनके विभिन्न प्रकारों का वर्णन करिए।
2. प्रसार (Range) का उदाहरण सहित वर्णन करिए और बताइए कि इसे कब निकालना चाहिए।
3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (1) प्रसार की सीमाएँ (Limitations of Range)
   (2) मध्यमान विचलन (Mean Deviation)
   (3) चतुर्थांश विचलन (Quartile Deviation)
4. प्रामाणिक विचलन से आप क्या समझते हैं ? इसकी गणना कब करनी चाहिए ? यह भी बताइए कि शुद्ध प्रामाणिक विचलन कैसे ज्ञात किया जाता है।
5. शेपर्ड का प्रामाणिक विचलन के सम्बन्ध में क्या सूत्र है ? इसका किस प्रकार प्रयोग किया जाता है ?
6. किसी एक निश्चित अंक को प्राप्तांको में जोड़ने, घटाने तथा एक निश्चित अंक से प्राप्तांकों में भाग देने से प्रामाणिक विचलन पर क्या प्रभाव पड़ता है ? उदाहरण सहित समझाइए।
7. निम्नलिखित को परिभाषित कीजिए :
   (1) विस्तार (Range)
   (2) प्रामाणिक विचलन (S.D.)
   (3) चतुर्थांश विचलन (Q)
8. नीचे दिए हुए प्रदत्तों का प्रामाणिक विचलन ज्ञात कीजिए :

Scores	f
45—49	1
40—44	2
35—39	3
30—34	6
25—29	8
20—24	10
15—19	7
10—14	5
5— 9	5
0— 4	3
	N=50

$$= \sqrt{75.69 - 2.08}$$
$$= \sqrt{73.61}$$

Corrected S D. = 8·57 उत्तर

VII. विचलन मापकों का प्रयोग कब करना चाहिए ? (When to use the various measures of variability)

1 प्रसार (Range) का प्रयोग—

(1) प्रसार का प्रयोग उस समय करना चाहिए जब प्रदत्त इतने बिखरे हुए हो कि अन्य विचलन मापको का प्रयोग न किया जा सके।

(2) जब विचलन का अति शीघ्र एव सरलता से पता लगाना हो।

(3) जब प्रारम्भ के और अन्त के अंको (Extreme Scores) को महत्व देना हो अथवा कुल फैलाव (Total Spread) ज्ञात करना हो।

2. मध्यमान विचलन (Mean or Average Deviation) का प्रयोग—

(1) जब प्रदत्त इतने बिखरे हुए हो कि प्रामाणिक विचलन (S D.) के प्रभावित होने की सम्भावना हो।

(2) जब साधारण शुद्धता की आवश्यकता हो।

(3) जब प्राप्तांको का वितरण लगभग सामान्य हो।

3. चतुर्थांश विचलन (Quartile Deviation) का प्रयोग—

(1) जब प्राप्तांको का वितरण (Distribution) सामान्य न हो।

(2) जब केन्द्रीय मापको (Measures of Central Tendency) मे मध्यांक (Md) की गणना की गई हो।

(3) जब मध्य के 50% लोगो की वास्तविक प्राप्तांक सीमाएँ (Actual score limits) ज्ञात करनी हो।

(4) प्रतिदर्श (Sample) छोटा हो।

4. प्रामाणिक विचलन (Standard Deviation) का प्रयोग—

(1) जब प्राप्तांको का वितरण सामान्य हो।

(2) जब अधिक शुद्धता और विश्वसनीयता की आवश्यकता हो।

(3) जब केन्द्रीय मापको (Measures of Central Tendency) मे मध्यमान (Mean) की गणना की गई हो।

(4) जब सहसम्बन्ध (Correlation) आदि सांख्यिकी की गणना करनी हो।

11. नीचे दिए हुए प्रदत्तो का प्रामाणिक विचलन (S D) तथा चतुर्थांश विचलन (Q) ज्ञात कीजिए ·

Scores	f
2— 3	1
4— 5	7
6— 7	16
8— 9	28
10—11	41
12—13	45
14—15	12
16—17	4
18—19	1
	N=155

12. नीचे दिए हुए प्राप्तांकों का मध्यमान विचलन (Mean deviation) ज्ञात कीजिए :

Scores	f
25—30	4
20—25	6
15—20	7
10—15	10
5—10	8
0— 5	5
	N=40

9 नीचे दिए हुए प्रदत्तों का चतुर्थांश विचलन (Quartile deviation) ज्ञात कीजिए।

Scores	f
135—139	1
130—134	2
125—129	2
120—124	10
115—119	13
110—114	15
105—109	17
100—104	17
95—99	6
90—94	8
85—89	6
80—84	2
75—79	1
	N=100

10 नीचे दिए हुए प्रदत्तों का प्रामाणिक विचलन (Standard deviation) ज्ञात कीजिए।

Scores	f
90—94	2
85—89	5
80—84	8
75—79	9
70—74	6
65—69	3
60—64	3
55—59	3
50—54	1

उत्तर

8. SD = 10·70
9. Q = 7 79
10. SD = 2·10
11. SD = 2·80, Q = 2 02
12. MD = 6 28
13. Q = 4 68
14 (अ) SD = 7 6 , AD = 6 2
   (ब) SD = 3·2 , AD = 2 7
15 SD = 1 41 , 14·14

13. अर्द्ध-मध्यांश-चतुर्थांश प्रसार (Semi-Inter-quartile Range) से आप क्या समझते हैं ? नीचे दिए हुए प्राप्तांकों का चतुर्थांश विचलन ज्ञात कीजिए .

Scores	f
41—45	2
46—50	1
51—55	5
56—60	11
61—65	15
66—70	13
71—75	7
76—80	3
81—85	2
86—90	1
	N=60

14. नीचे दी हुई अव्यवस्थित अंक सामग्री (Ungrouped data) का प्रामाणिक विचलन (S D.) तथा मध्यमान विचलन ज्ञात कीजिए .
    (अ) 14, 35, 15, 15, 15, 12, 28, 19
    (ब) 6, 7, 8, 9, 10, 11, 12, 13, 14, 15, 16

15. नीचे दिये हुए अव्यवस्थित अंकों का प्रामाणिक विचलन (S D) ज्ञात कीजिए तथा बताइए कि यदि दी हुई संख्याओं में 10 से गुणा किया जाय तो प्रामाणिक विचलन कितना अधिक हो जाता है।
    5, 6, 7, 8, 9

16. विभिन्न विचलन मापकों की तुलनात्मक विवेचना कीजिए।

17. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए .
    (1) प्रामाणिक विचलन (S D.)
    (2) संयुक्त प्रामाणिक विचलन (Combined Standard Deviation)।
    (3) प्रामाणिक विचलन की संक्षिप्त विधि।

बढ़े या घटे अथवा दूसरी चलराशि के घटने से पहली चलराशि बढ़े या घटे) तो उन दो चलराशियों मे सहसम्बन्ध पाया जाता है।"[1]

दैनिक जीवन मे सहसम्बन्ध के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। प्रायः यह कहते आपने सुना होगा कि जो छात्र गणित (Maths.) मे अच्छा होता है वह भौतिकी (Physics) में भी अच्छा होता है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि गणित और भौतिकी मे सहसम्बन्ध है क्योंकि आपस मे एक का प्रभाव दूसरे पर तथा दूसरे का प्रभाव पहले पर पडता है। दूसरे शब्दो में, जो विद्यार्थी गणित मे अच्छे अङ्क प्राप्त करेगा वह भौतिकी मे भी अच्छे अङ्क प्राप्त करेगा। यदि उसके गणित में अंक अच्छे नहीं हैं तो भौतिकी मे भी अंक अच्छे नहीं होंगे। भौतिकी के अंको को भी लेकर इसी प्रकार की बात कही जा सकती है। इसी प्रकार से शारीरिक वृद्धि और मानसिक वृद्धि के सहसम्बन्ध का वर्णन किया जा सकता है।

दो या दो से अधिक चलराशियों के सहसम्बन्ध की मात्रा (Degree) को सहसम्बन्ध-गुणांक (Coefficient of Correlation) द्वारा प्रदर्शित करते हैं। सहसम्बन्ध गुणांक को ग्रीक भाषा के शब्द (Rho) (ρ) या 'r' संकेत से प्रदर्शित करते हैं।

सहसम्बन्ध के प्रकार (Kinds of Correlation)

सहसम्बन्ध के मुख्य प्रकारों को निम्न प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं :
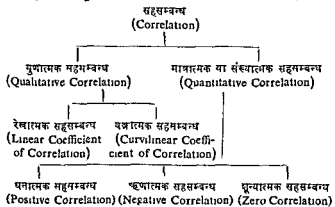
1. Whenever two variables are so related that the increase in one variable corresponds to the increase or decrease in other variable, or decrease in one variable corresponds to the increase or decrease in other variable, or vice versa, the variables are said to be correlated."

11

सहसम्बन्ध
CORRELATION

दो या दो से अधिक चलराशियों (Variables), घटनाओ या वस्तु के पारस्परिक सम्बन्ध को सहसम्बन्ध (Correlation) कहते हैं। बाँडिंग के अनुसार, जब दो प्रदत्त समूहो या वर्गों मे निश्चित सम्बन्ध होता है तो य कहा जाता है कि दो प्रदत्त समूहों मे सहसम्बन्ध है।[1] प्रोफेसर किंग के अनुसार, ज दो प्रदत्त श्रृङ्खलाओ या समूहों मे आकस्मिक सम्बन्ध (Casual connection होता है तो उन प्रदत्त समूहों मे सहसम्बन्ध होता है।[2] सहसम्बन्ध की उपर्यु परिभाषाएँ अधिक उपयुक्त नही हैं क्योंकि यह सहसम्बन्ध के अर्थ को पूर्णत स्पष्ट नही करती हैं। सरल शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि "जब दं चलराशियाँ इस प्रकार सम्बन्धित हों कि एक चलराशि के बढ़ने से दूसरी चलराशि बढ़े या घटे अथवा एक चलराशि के घटने से दूसरी चलराशि घटे य बढ़े या इसके विपरीत हो (अर्थात् दूसरी चलराशि के बढ़ने से पहली चलराशि

---

1 "Whenever some definite connection exists between two or more groups, classes or series of data there is said to be correlation" —*Boddington*

2 "Correlation means that, between two series or groups of data, there exists casual connection" —*King.*

Personality) और परीक्षा मे उत्तीर्ण प्रतिशत (Pass Percentage) में ऋणात्मक सहसम्बन्ध है। इसे निम्न प्रकार समझाया जा सकता है :

—	←——	+	3
+	←——	—	4
Extrovert Personality		Pass Percentage	
1. +	——→	—	
2. —	——→	+	

अर्थात् जितना ही अधिक बहिर्मुखी व्यक्तित्व होता है उत्तीर्ण प्रतिशत उतना ही कम होता है तथा जितना ही कम बहिर्मुखी व्यक्तित्व होता है उत्तीर्ण प्रतिशत उतना ही अधिक होता है, या इसके विपरीत। गति (Speed) तथा शुद्धता (Accuracy) के उदाहरण द्वारा भी ऋणात्मक सहसम्बन्ध को समझाया जा सकता है।

3 शून्य सहसम्बन्ध (Zero Correlation)

जब पहली चलराशि के बढ़ने से दूसरी चलराशि न बढे और न घटे अथवा पहली चलराशि के घटने से दूसरी चलराशि न बढ़े और न घटे, दूसरे शब्दों मे, पहली चलराशि के बढ़ने-घटने का दूसरी चलराशि पर जब कोई प्रभाव नहीं पड़ता है अथवा इसके विपरीत, तो दो चलराशियों मे शून्य सहसम्बन्ध होता है। इसे निम्न प्रकार से समझाया जा सकता है :

×	←——	±
Economic Status		Pass Percentage
±	——→	×

अर्थात् आर्थिक स्तर के बढ़ने-घटने का उत्तीर्ण प्रतिशत पर कोई प्रभाव नही पड़ता है और न ही उत्तीर्ण प्रतिशत के बढ़ने-घटने का आर्थिक स्तर पर कोई प्रभाव पड़ता है। यहाँ इन दो चलराशियो मे शून्य सहसम्बन्ध है।

सहसम्बन्ध की मात्रा (Quantity of Correlation)

सहसम्बन्ध की मात्रा $+1$ से -1 तक होती है अर्थात् सहसम्बन्ध कभी भी 1 से अधिक नहीं होता है चाहे यह धनात्मक हो या ऋणात्मक। जब सहसम्बन्ध की मात्रा $+1$ आती है तो पूर्ण धनात्मक सहसम्बन्ध (Perfect Positive Correlation) होता है और जब सहसम्बन्ध की मात्रा -1 होती है तो इसे पूर्ण ऋणात्मक सहसम्बन्ध (Perfect Nagative Correlation) कहते हैं। लेकिन समाज विज्ञानों (Social Sciences) से

यहाँ केवल मात्रात्मक सहसम्बन्ध के तीन प्रकारों का ही वर्णन किया जाएगा।

1. धनात्मक सहसम्बन्ध (Positive Correlation)

जब पहली चलराशि के बढ़ने से दूसरी चलराशि भी बढ़ती है या पहली चलराशि के घटने से दूसरी चलराशि भी घटती है या इसके विपरीत हो (अर्थात् दूसरी चलराशि के बढ़ने से पहली चलराशि बढ़े या दूसरी चलराशि के घटने से पहली चलराशि घटे) तो दो चलराशियों में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। संक्षेप में, जब दो चलराशियों में एक ही दिशा में परिवर्तन हो तो उनमें धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।[1] उदाहरण के लिए, यदि शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी अच्छा हो तो इन दो चलराशियों में धनात्मक सहसम्बन्ध होगा। इसे निम्न प्रकार समझाया जा सकता है।

	+	←———	+	3.
	−	←———	−	4.
Physical Development			Mental Development	
1	+	———→	+	
2	−	———→	−	

अर्थात् जब शारीरिक वृद्धि अच्छी होती है तो मानसिक भी अच्छी होती है, जब शारीरिक वृद्धि कम अच्छी होती है तो मानसिक भी कम अच्छी होती है या इसके विपरीत जब मानसिक वृद्धि अच्छी होती है तो शारीरिक वृद्धि भी अच्छी होती है और जब मानसिक वृद्धि कम अच्छी होती है तो शारीरिक वृद्धि भी कम अच्छी होती है अतः मानसिक वृद्धि और शारीरिक वृद्धि में धनात्मक सहसम्बन्ध है। धनात्मक सहसम्बन्ध को बुद्धि (I. Q.) और परीक्षा में उत्तीर्ण प्रतिशत (Pass Percentage) के आधार पर भी समझाया जा सकता है।

2. ऋणात्मक सहसम्बन्ध (Negative Correlation)

जब पहली चलराशि के बढ़ने से दूसरी चलराशि घटे या पहली चलराशि के घटने से दूसरी चलराशि बढ़े या इसके विपरीत अर्थात् दूसरी चलराशि के बढ़ने से पहली चलराशि घटे या दूसरी चलराशि के घटने से पहली चलराशि बढ़े तो दो चलराशियों में ऋणात्मक सहसम्बन्ध होता है। संक्षेप में, जब दो चलराशियों में विपरीत दिशा में परिवर्तन हो तो उनमें ऋणात्मक सहसम्बन्ध होता है।[2] उदाहरण के लिए, [illegible] (Thermomet

1. When two variables change in the same direction it is said to be a positive correlation.
2. When two variables change in the opposite direction it is said to be a negative correlation.

सहसम्बन्ध-गुणाक तब अधिक होगा, जबकि प्राप्तांकों में विचलन की मात्रा कम होगी। तीसरा कारक वर्गान्तरों का आकार (Size of the Class Interval) है जो सहसम्बन्ध-गुणाक को प्रभावित करता है।

सहसम्बन्ध का मापन (Measurement of Correlation)

सहसम्बन्ध-गुणाक ज्ञात करने की प्रमुख प्रचलित विधियाँ निम्न हैं :

I. Mathematical Methods

1. Spearman's Rank-Difference Method.
2. Method of Gains
3. Pearson's Product Moment Method—
   (a) *Real Mean Method,*
   (b) Assumed Mean Method

II. Graphical Methods

1. Simple Graph Method.
2. Scatter Diagram Method.

यहाँ पर केवल गणतीय विधियाँ (Mathematical Methods) का ही वर्णन किया गया है।

1. स्थान-क्रम विधि

(Rank-Difference Method)

सहसम्बन्ध-गुणाक ज्ञात करने की यह विधि स्पीयरमैन विधि (*Spearman's Method*) भी कहलाती है क्योंकि इस विधि की खोज प्रो० स्पीयरमैन ने की है। इस विधि के द्वारा दो भिन्न-भिन्न गुणों (Traits), विषयों (Subjects), परीक्षणों के परिणामों आदि में सहसम्बन्ध ज्ञात किया जा सकता है। इस विधि द्वारा प्राप्त सहसम्बन्ध-गुणांक को Rho (ρ) संकेत द्वारा प्रदर्शित करते हैं। इस विधि का सूत्र निम्नलिखित है :

सूत्र—

$$\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

जबकि

ρ = Coefficient of Correlation calculated from Rank-difference method (स्थान-क्रम विधि द्वारा ज्ञात किया गया सहसम्बन्ध-गुणाक)

ΣD^2 = *Sum of the squares of differences* in rank (पदों के अन्तरों के वर्गों का कुल योग)

N = Number of pairs (कुल युग्म (pairs) आवृत्तियों की संख्या)

अन्त मे D^2 कालम के सभी मूल्यों को जोड़कर ΣD^2 का मान प्राप्त करते है, N का मान ज्ञात करते हैं, और मूल्यों को सूत्र मे रखकर ρ का मान ज्ञात कर लेते हैं।

उदाहरण—1

नीचे दिए हुए प्रदत्तो का स्थान-क्रम विधि (Rank Difference Method) द्वारा सहसम्बन्ध ज्ञात कीजिए :

Students	Test A	Test B	Test A Rank (R_1)	Test B Rank (R_2)	Difference in Ranks $D(R_1-R_2)$	Difference Square D^2
A	8	4	3	6·5	−3·5	12·25
B	7	2	5	9	−4	16·00
C	6	6	7	4·5	2·5	6·25
D	7	9	5	1·5	3·5	12·25
E	3	2	9·5	9	·5	·25
F	9	8	2	3	−1	1·00
G	12	9	1	1·5	·5	·25
H	7	6	5	4·5	1·5	2·25
I	3	2	9·5	9	·5	·25
J	5	4	8	6·5	−1·5	2·25
						$\Sigma D^2 = 53·00$

हल—

सूत्र $\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2-1)}$

प्रश्न मे,

$$\Sigma D^2 = 53·00$$

$$N = 10$$

इन मूल्यो को सूत्र मे रखने पर,

$$\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

जब समूहों की संख्या 30 या 30 से कम हो तभी स्थान-क्रम विधि द्वारा सहसम्बन्ध-गुणांक ज्ञात करते हैं क्योंकि इस विधि का प्रयोग जब बड़े समूहों पर किया जाता है तो विश्वसनीय परिणाम प्राप्त होने की सम्भावना घट जाती है। अर्थात् समूह जितना ही छोटा होता है परिणाम उतने ही अधिक विश्वसनीय प्राप्त होते हैं।

इस विधि द्वारा सहसम्बन्ध निकालते समय यदि पद (Ranks) नहीं दिए हुए हैं तो सबसे पहले उदाहरण—1 के अनुसार पद देते हैं। पद प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति की तुलना में दिए जाते हैं। जिस व्यक्ति का प्राप्तांक अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा सबसे अधिक होता है उसे पहला पद (First Rank) दिया जाता है। जिसके प्राप्तांक पहला पद पाने वाले व्यक्ति से कम होते हैं उसे दूसरा पद (Second Rank), जिसके प्राप्तांक दूसरे पद वाले वाले व्यक्ति से कम होते हैं उसे तीसरा पद। इसी प्रकार सभी व्यक्तियों के प्राप्तांकों को पद (Rank) देकर R_1 कालम को पूरा करते हैं। R_1 कालम को पूरा करने के बाद R_2 कालम को R_1 कालम की ही भाँति पूरा करते हैं। उदाहरण—1 में परीक्षण—A में G विद्यार्थी के सबसे अधिक प्राप्तांक, 12 हैं। उसे पहला पद दिया गया है। यह पहला पद R_1 कालम में अंकित किया गया है। इसी परीक्षण में F विद्यार्थी के G विद्यार्थी की अपेक्षा कम, 9 प्राप्तांक हैं इसलिए इसे दूसरा पद दिया गया है। A विद्यार्थी के प्राप्तांक 8 हैं इसलिए इसे तीसरा पद दिया गया है। B, D, H विद्यार्थियों के प्राप्तांक 7, 7, 7 हैं। तीसरा पद दिया जा चुका है। इन्हें 4, 5, 6 पद देने हैं। चूँकि B, D, H विद्यार्थियों के प्राप्तांक समान हैं इसलिए तीनों को मध्यमान पद (Mean Rank) देंगे। 4, 5, 6 का मध्यमान 5 है इसलिए B, D, H तीनों विद्यार्थियों को पाँचवाँ पद दिया गया है। J को आठवाँ पद मिला है। E तथा I विद्यार्थियों के प्राप्तांक समान हैं तथा आठ तक पद दिए जा चुके हैं, इसलिए इन दोनों को भी मध्यमान पद देना है। 9, 10 पद का मध्यमान 9·5 पद है इसलिए E तथा I दोनों विद्यार्थियों को 9·5 पद मिला है। इसी प्रकार परीक्षण B में पद देकर पदों को R_2 कालम में अंकित किया गया है।

R_1 तथा R_2 कालम पूरा करने के बाद D कालम को पूरा करते हैं। $D = R_1 - R_2$ सूत्र को ध्यान में रखकर D की गणना करते हैं। A विद्यार्थी का $R_1 = 3$ तथा $R_2 = 6·5$ है, अन्तर −3·5 है जो कि D कालम में रखा हुआ है। इसी प्रकार अन्य विद्यार्थियों के पदों (Ranks) का अन्तर ज्ञात कर D कालम को पूरा करते हैं। फिर D कालम के मानों (Values) का वर्ग करके D^2 की गणना करते हैं, जैसे उदाहरण—1 में −3·5 का वर्ग 12·25, −4 का वर्ग 16। इन मूल्यों को D^2 कालम में रखा गया है।

हल—

सूत्र : $\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2 - 1)}$

प्रश्न में,

$\Sigma D^2 = 2.50$

$N = 10$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$\rho = 1 - \frac{6 \times 2.5}{10(10^2 - 1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 2.5}{10 \times 99}$$

$$= 1 - \frac{2.5}{5 \times 33}$$

$$= 1 - .015$$

$$= .985$$

$$= .99$$

उत्तर—इतिहास और नागरिक शास्त्र का सहसम्बन्ध गुणांक +.99 है अर्थात् दोनों में बहुत उच्च (Very high) धनात्मक सहसम्बन्ध है।

उदाहरण—3

दो परीक्षकों ने छः विद्यार्थियों को अलग-अलग निम्नलिखित प्रकार से पद (Rank) दिए, दोनों परीक्षकों द्वारा दिए गए पदों में सहसम्बन्ध ज्ञात कीजिए :

Students	First Examiners Rank R_1	Second Examiners Rank R^2	Difference in Ranks $(R_1 - R_2)$	Difference Square D^2
A	1	3	−2	4
B	2	2	0	0
C	3	4	−1	1
D	4	1	3	9
E	5	6	−1	1
F	6	5	1	1
				$\Sigma D^2 = 16$

$$= 1 - \frac{6 \times 53}{10\,(10^2 - 1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 53}{10\,(100 - 1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 53}{10 \times 99}$$

$$= 1 - \frac{53}{5 \times 33}$$

$$= 1 - \cdot 321$$

$$= \cdot 679$$

$$= \cdot 68$$

उत्तर—Test A तथा Test B का सहसम्बन्ध-गुणांक $+\cdot 68$ है अर्थात् दोनों परीक्षणों में उच्च (High) धनात्मक सहसम्बन्ध है।

उदाहरण—2

सात विद्यार्थियों के इतिहास और नागरिकशास्त्र के प्राप्तांक नीचे दिए हुए हैं। सहसम्बन्ध-गुणांक ज्ञात कीजिए और उसकी व्याख्या कीजिए।

Students	History Scores	Civics Scores	History Rank (R_1)	Civics Rank (R_2)	Difference in Ranks D ($R_1 - R_2$)	Difference Square D^2
A	35	35	1·5	2	−·5	·25
B	24	24	8	7·5	·5	·25
C	26	28	6	[illegible]	0	0
D	30	32	4	3·5	·5	·25
E	19	20	10	10	0	0
F	20	23	9	9	0	0
G	25	24	7	7·5	·5	·25
H	30	30	4	5	−1	1·00
I	35	37	1·5	1	·5	·25
J	30	32	4	3·5	·5	·25

Students	Speed	Accu-racy	Speed R_1	Accu-racy R_2	D $(R_1 - R_2)$	D^2
A	20	17	7	4	3	9
B	25	12	4	7	−3	9
C	30	14	2 5	6	−3 5	12 25
D	35	15	1	5	−4	16
E	30	19	2·5	3	5	25
F	23	20	5	2	3	9
G	21	23	6	1	5	25
						$\Sigma D^2 = 80\ 50$

हल—

सूत्र : $\rho = 1 - \frac{5 \times \Sigma D^2}{N(N^2 - 1)}$

प्रश्न में,

$\Sigma D^2 = 80{\cdot}50$

$N = 7$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2 - 1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 80{\cdot}50}{7(7^2 - 1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 80{\cdot}50}{7 \times 48}$$

$$= 1 - \frac{80{\cdot}50}{7 \times 8}$$

$$= 1 - 1{\cdot}43$$

$$= -{\cdot}43$$

उत्तर—गति और परिशुद्धता में साधारण (Moderate) ऋणात्मक सहसम्बन्ध है।

हल

सूत्र $\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2-1)}$

प्रश्न में,

$$\Sigma D^2 = 16$$

$$N = 6$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$\rho = 1 - \frac{6 \times \Sigma D^2}{N(N^2-1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 16}{6(6^2-1)}$$

$$= 1 - \frac{16}{35}$$

$$= 1 - .458$$

$$= .542$$

$$= .54$$

उत्तर—दोनों परीक्षकों द्वारा दिये गये पदों (Ranks) का सहसम्बन्ध-गुणांक + .54 है अर्थात् साधारण (Moderate) धनात्मक सहसम्बन्ध है।

उदाहरण—4

सात विद्यार्थियों को गति और परिशुद्धता (Speed & Accuracy) का परीक्षण (Test) दिया गया और निम्नलिखित प्राप्तांक प्राप्त हुए, सहसम्बन्ध-गुणांक की गणना कीजिए :

उदाहरण—5

नीचे दिए हुए दो परीक्षणों के प्रदत्तों का लाभ-विधि द्वारा सहसम्बन्ध-गुणांक ज्ञात कीजिए .

Students	Test A	Test B	Test A Rank R_1	Test B Rank R_2	$(R_2 - R\ )$ G_1	$(R_1 - R_2)$ G_2
A	8	4	3	6·5	3 5	—
B	7	2	5	9	4	—
C	6	6	7	4 5	—	2 5
D	7	9	5	1·5	—	3·5
E	3	2	9 5	9	—	·5
F	9	8	2	3	1	—
G	12	9	1	1 5	5	—
H	7	6	5	4·5	—	·5
I	3	2	9 5	9	—	5
J	5	4	8	6 5	—	1 5
					$\Sigma G_1 = 9$	$\Sigma G_2 = 9$

हल—

ध्यान रहे, G_1 और G_2 का मान हमेशा बराबर आता है।

सूत्र ·

$$R = 1 - \frac{6 \times \Sigma G}{(N^2 - 1)}$$

प्रश्न में, $\Sigma G = 9$

$N = 10$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$R = 1 - \frac{6 \times 9}{(10^2 - 1)}$$

$$= 1 - \frac{6 \times 9}{99}$$

$$= 1 - 545$$

$$= 455$$

$$= 46$$

उत्तर—यह सहसम्बन्ध-गुणांक दोनों परीक्षणों में धनात्मक तथा साधारण (Moderate) सहसम्बन्ध व्यक्त करता है।

2. लाभ-विधि
(Method of Gains)

सहसम्बन्ध ज्ञात करने की यह विधि स्थान-क्रम विधि (Rank-Difference Method) की अपेक्षा कम शुद्ध (Less Accurate) है। इस विधि और स्थान-क्रम विधि में बहुत कम अन्तर है। इस विधि द्वारा प्राप्त सहसम्बन्ध-गुणांक को 'G' संकेत द्वारा प्रदर्शित करते हैं। इस विधि का सूत्र निम्नलिखित है :

सूत्र— $$R = 1 - \frac{6 \times \Sigma G}{(N^2 - 1)}$$

जबकि

R = Coefficient of Correlation Calculated from Method of Gains (लाभ-विधि द्वारा ज्ञात किया गया सहसम्बन्ध-गुणांक)

ΣG = Total Gain (कुल प्राप्ति)

N = Number of Scores (प्राप्तांकों की संख्या)

इस विधि द्वारा सहसम्बन्ध-गुणांक ज्ञात करते समय पहले पद (Ranks) देते हैं। पद देने की विधि वही है जिसका वर्णन स्थान-क्रम विधि में किया जा चुका है। उदाहरण—5 में R_1 तथा R_2 कालम को पूरा करने के बाद G_1 और G_2 की गणना करते हैं। G का अर्थ है एक पद (Rank) ने दूसरे पद (Rank) पर क्या लाभ प्राप्त (Gain) किया। $G_1 = R_2 - R_1$ तथा $G_2 = R_1 - R_2$ सूत्रों की सहायता से G_1 और G_2 की गणना करते हैं। उदाहरण—5 में G_1 की गणना करते समय R_2 में से R_1 के मान तभी घटाए गये हैं जबकि R_2 का मान बड़ा है। इसी प्रकार, G_2 की गणना करते समय R_1 में से R_2 तब घटाया गया है जबकि R_1 का मान अधिक है। उदाहरण के लिए, G_1 की गणना करते समय 4 5, 1·5 तथा 9 में से क्रमशः 7, 5, 9·5 नहीं घटाए गये हैं क्योंकि G_1 के मान कम और G_2 के अधिक हैं इसलिए यहाँ कोई भी लाभ (Gain) नहीं हुआ है। इसी प्रकार G_2 की गणना करते समय R_1 के मान 3 और 5 में से R_2 के मान क्रमशः 6·5 तथा 6 नहीं घटाए गये हैं क्योंकि यहाँ R_1 के मान कम हैं इसलिए कोई लाभ (Gain) नहीं है। ध्यान रहे, G_1 और G_2 का मान हमेशा बराबर आता है, तथा $G_1 = G_2 = G$।

अन्त में G, तथा Σ N का मान ज्ञात करके मूल्यों को सूत्र में रखकर सहसम्बन्ध-गुणाक की गणना कर लेते हैं।

मध्यमान निकालने के पश्चात् X—scores के मध्यमान से X—scores का विचलन (x) और Y—scores के मध्यमान से Y—scores का विचलन (y) ज्ञात करके क्रमशः x और y कालम मे रखते हैं। $x = X - M_x$, $y = Y - M_y$ सूत्रो के द्वारा विचलन ज्ञात करते हैं। फिर अलग-अलग विचलनों का वर्ग (Square) करते हैं अर्थात् x—कालम तथा y—कालम के अंकों का अलग-अलग वर्ग करके क्रमश: x^2—कालम तथा y^2—कालम मे रखते है और Σx^2 तथा Σy^2 का मान प्राप्त कर लेते हैं। अन्त में x—कालम और y—कालम के अंकों का अलग-अलग गुणनफल प्राप्त करके xy—कालम में रखते हैं और Σxy का मान प्राप्त कर लेते हैं।

सूत्र में प्रयुक्त सभी संकेतों अर्थात् Σxy, Σx^2 तथा Σy^2 के मूल्यो की गणना करने के बाद मूल्यो को सूत्र मे रखकर 'r' की गणना कर लेते हैं।

उदाहरण—6

नीचे दिए हुए प्रदत्तों का वास्तविक मध्यमान (Real Mean Method) मे सहसम्बन्ध-गुणांक ज्ञात कीजिए :

Students	Test 'A'	Test 'B'	Deviation From the Mean		x^2	y^2	xy
	X	Y	x	y			
A	8	6	−1·7	−1·4	2 89	1·96	− 2 38
B	7	8	·7	·6	49	·36	·42
C	6	9	− 3	1 6	·09	2·56	− 48
D	5	12	−1 3	4·6	1·69	21 16	− 5 98
E	3	11	−3 3	3·6	10 89	12·96	−11 88
F	4	6	−2 3	−1·4	5 29	1 96	3 22
G	6	5	− 3	−2·4	·09	5·76	·72
H	7	4	·7	−3 4	49	11 56	− 2 38
I	8	6	1 7	−1·4	2 89	1·96	− 2 38
J	9	7	2 7	− ·4	7 29	16	− 1 08

$\Sigma X = 63$ $\Sigma Y = 74$ $\Sigma x^2 =$ 32 10 $\Sigma y^2 =$ 60 40 $\Sigma xy = -22·2$

N = 10 N = 10

M = 6·3 M = 7·4

सूत्र—

$$r = \frac{\frac{\Sigma xy}{N} - C_x C_y}{\sigma_x \sigma_y}$$

जबकि

x & y = Deviations from the assumed mean
(कल्पित मध्यमान से विचलन)
Σxy = Sum of the product of x—deviations & y—deviations
(x—विचलन और y—विचलन के गुणनफल का योग)
N = No of subjects (प्राप्तांको की सख्या)
C_x = Correction Value of X—Scores
(X—प्राप्तांकों का शुद्धीकरण मूल्य)
[सूत्र, $C_x = M_x - AM_x$]
C_y = Correction Value of Y—scores
(y—प्राप्तांको का शुद्धीकरण मूल्य)
[सूत्र, $C_y = M_y - AM_y$]
σ_x = Standard deviation of X—Scores
(X—प्राप्तांकों का प्रामाणिक विचलन)

[सूत्र, $\sigma_x = \sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N} - (C_x)^2}$]

σ_y = Standard deviation of Y—Scores.
(Y—प्राप्तांकों का प्रामाणिक विचलन)

[सूत्र, $\sigma_y = \sqrt{\frac{\Sigma y^2}{N} - (C_y)^2}$]

इस विधि द्वारा 'r' की गणना करते समय सबसे पहले दिए हुए प्राप्तांको का मध्यमान (Mean) निकालते हैं। मध्यमान निकालते समय $M = \frac{\Sigma X}{N}$ सूत्र का प्रयोग करते हैं। मध्यमान निकालने के बाद कल्पित मध्यमान निश्चित करते हैं। उदाहरण—7 में X—scores तथा Y—scores का मध्यमान क्रमश: 6·7 और 5 2 निकाला गया तथा कल्पित मध्यमान (Assumed Mean) क्रमश: 7 और 6 निश्चित किया गया है।

कल्पित मध्यमान निश्चित करने के पश्चात् X—scores के कल्पित मध्यमान से X—scores का विचलन (x) तथा Y—scores के कल्पित

सूत्र—

$$r = \frac{\frac{\Sigma xy}{N} - C_x C_y}{\sigma x \sigma y}$$

जबकि

x & y = Deviations from the assumed mean
(कल्पित मध्यमान से विचलन)

Σxy = Sum of the product of x—deviations & y—deviations
(x—विचलन और y—विचलन के गुणनफल का योग)

N = No of subjects (प्राप्तांकों की संख्या)

C_x = Correction Value of X—Scores
(X—प्राप्तांकों का शुद्धीकरण मूल्य)
[सूत्र, $C_x = M_x - AM_x$]

C_y = Correction Value of Y—scores
(y—प्राप्तांकों का शुद्धीकरण मूल्य)
[सूत्र, $C_y = M_y - AM_y$]

σ_x = Standard deviation of X—Scores
(X—प्राप्तांकों का प्रामाणिक विचलन)

[सूत्र, $\sigma_x = \sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N} - (C_x)^2}$]

σ_y = Standard deviation of Y—Scores.
(Y—प्राप्तांकों का प्रामाणिक विचलन)

[सूत्र, $\sigma_y = \sqrt{\frac{\Sigma y^2}{N} - (C_y)^2}$]

इस विधि द्वारा 'r' की गणना करते समय सबसे पहले दिए हुए प्राप्तांकों का मध्यमान (Mean) निकालते हैं। मध्यमान निकालते समय $M = \frac{\Sigma X}{N}$ सूत्र का प्रयोग करते हैं। मध्यमान निकालने के बाद कल्पित मध्यमान निश्चित करते हैं। उदाहरण—7 में X—scores तथा Y—scores का मध्यमान क्रमशः 6·7 और 5·2 निकाला गया तथा कल्पित मध्यमान (Assumed Mean) क्रमशः 7 और 6 निश्चित किया गया है।

कल्पित मध्यमान निश्चित करने के पश्चात् X—scores के कल्पित मध्यमान से X—scores का विचलन (x) तथा Y—scores के कल्पित

मध्यमान से Y—scores का विचलन (y) ज्ञात करके क्रमशः x और y कालम मे रखते हैं। $x = X - M_x$; $y = Y - M_y$ सूत्रों के द्वारा विचलन ज्ञात करते हैं। फिर अलग-अलग विचलनो का वर्ग (Square) करते हैं अर्थात् x—कालम तथा y—कालम के अंको का अलग-अलग वर्ग करके क्रमशः x^2—कालम तथा y^2—कालम मे रखते हैं और Σx^2 तथा Σy^2 का मूल्य प्राप्त कर लेते हैं। अन्त मे x—कालम और y—कालम के अंको का अलग-अलग गुणनफल प्राप्त करके xy कालम मे रखते हैं और Σxy का मान प्राप्त कर लेते हैं।

'r' की गणना करने से पहले σx σy का मूल्य उदाहरण—7 मे दिए सूत्र तथा विधि के अनुसार प्राप्त कर लेते हैं।

इस प्रकार सूत्र मे प्रयुक्त सभी सकेतो अर्थात् Σxy, N, C_x, C_y, σy के मूल्यो को ज्ञात करने के बाद मूल्यो को सूत्र मे रखकर 'r' की गणना कर लेते हैं।

उदाहरण—7

नीचे दिए हुए प्रदत्तो का कल्पित मध्यमान विधि (Assumed Mean Method) द्वारा सहसम्बन्ध-गुणाक ज्ञात कीजिए

Students	Test A X	Test B Y	Deviation from the assumed mean		x^2	y^2	xy
			x	y			
A	8	4	1	−2	1	4	−2
B	7	2	0	−4	0	16	0
C	6	6	−1	0	1	0	
D	7	9	0	3	0	9	
E	3	2	−4	−4	16	16	
F	9	8	2	2	4	4	
G	12	9	5	3	25	9	
H	7	6	0	0	0	0	
I	3	2	−4	−4	16	16	
J	5	4	−2	−2	4	4	
$\Sigma X = 67$	$\Sigma y = 52$				$\Sigma x^2 = 67$	$\Sigma y^2 = 78$	Σxy 53
N = 10	N = 10						
M = 6·7	M = 5 2						
AM = 7	AM = 6						

हल—उपर्युक्त सूत्र से सहसम्बन्ध-गुणाक ज्ञात करते समय परीक्षण—A तथा परीक्षण—B का प्रामाणिक विचलन भी ज्ञात करना पड़ेगा।

प्रामाणिक विचलन का सूत्र

$$\sigma = \sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N} - C^2}$$

परीक्षण—A का प्रामाणिक विचलन (σ_x)

प्रश्न में,

$$\Sigma x^2 = 67$$
$$N = 10$$
$$(C_x)^2 = (M_x - AM_x)^2 = (6{\cdot}7 - 7)^2$$
$$= ({\cdot}3)^2 = 09$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$\sigma_x = \sqrt{\frac{\Sigma x^2}{N} - (C_x)^2}$$

$$= \sqrt{\frac{67}{10} - {\cdot}09}$$

$$= \sqrt{6{\cdot}7 - {\cdot}09}$$

$$= \sqrt{5\ 8}$$

$$\sigma_x = 2\ 5$$

परीक्षण—B का प्रामाणिक विचलन (σ_y)

प्रश्न में,

$$\Sigma y^2 = 78$$
$$N = 10$$
$$(C_y)^2 = (M_y - AM_y)^2 = (5{\cdot}2 - 6)^2$$
$$= ({\cdot}8)^2 = {\cdot}64$$

इन मूल्यों को सूत्र में रखने पर,

$$\sigma y = \sqrt{\frac{\Sigma y^2}{N} - (C_y)^2}$$

$$= \sqrt{\frac{78}{10} - \cdot 64}$$

$$= \sqrt{7 \cdot 8 - \cdot 64}$$

$$= \sqrt{7 \cdot 16}$$

$$\sigma y = 2 \cdot 68$$

कल्पित मध्यमान विधि (Assumed Mean Method) द्वारा सहसम्बन्ध-गुणाक ज्ञात करने का सूत्र—

$$r = \frac{\frac{\Sigma xy}{N} - C_x C_y}{\sigma x \ \sigma y}$$

प्रश्न मे,

$$\Sigma xy = 53$$

$$N = 10$$

$$C_x = M - AM = 6 \ 7 - 7 = - \cdot 3$$

$$C_y = M - AM = 5 \cdot 2 - 6 = - \cdot 8$$

$$\sigma x = 2 \cdot 5$$

$$\sigma y = 2 \ 68$$

इन मूल्यो को सूत्र मे रखने पर,

$$r = \frac{\frac{\Sigma xy}{N} - C_x C_y}{\sigma x \ \sigma y}$$

$$= \frac{\frac{53}{10} - (- \cdot 3 \times - \cdot 8)}{2 \cdot 5 \times 2 \cdot 68}$$

$$= \frac{5{\cdot}3 - {\cdot}24}{6{\cdot}7}$$

$$= \frac{5{\cdot}06}{6{\cdot}7}$$

$$= {\cdot}75$$

उत्तर—परीक्षण A तथा परीक्षण B में प्राप्त सहसम्बन्ध-गुणांक $+{\cdot}75$ है अतः दोनों में धनात्मक (Positive) उच्च सहसम्बन्ध है।

अभ्यास के लिए प्रश्न

1. सहसम्बन्ध (Correlation) की परिभाषा का उदाहरण सहित वर्णन करिए।
2. सहसम्बन्ध के विभिन्न प्रकारों का उदाहरण सहित वर्णन करिए और बताइए कि सहसम्बन्ध को मापने (Measurement) की प्रमुख विधियाँ कौनसी हैं।
3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :
   (अ) सहसम्बन्ध की व्याख्या
   (ब) सहसम्बन्ध-गुणांक (Coefficient of Correlation)
   (स) सहसम्बन्ध की मात्रा (Quantity of Correlation)
4. स्थान-क्रम विधि (Rank-Difference Method) और प्रोडेक्ट मोमेन्ट विधि की तुलनात्मक व्याख्या कीजिए।
5. सहसम्बन्ध की प्रकृति समझाइए तथा निम्नलिखित प्राप्तांकों का सहसम्बन्ध-गुणांक स्थान-क्रम विधि द्वारा ज्ञात कीजिए

Subjects	Scores on X-Test	Scores on Y-Test
A	2	4
B	4	6
C	5	7
D	6	8
E	7	9
F	8	10
G	9	11
H	10	12
I	12	14
J	13	15

8. पहले परीक्षक और दूसरे परीक्षक के किसी परीक्षा के पद (Rank) नीचे दिए गये हैं। ρ की गणना कीजिए।

Exam. I	2	4	9	7	8	3	10	5	6	1
Exam. II	2	3	10	5	7	1	8	9	4	6

9. नीचे दिए हुए प्रदत्तो मे सहसम्बन्ध-गुणाक वास्तविक मध्यमान विधि (Real Mean Method) तथा कल्पित मध्यमान विधि (Assumed Mean Method) द्वारा ज्ञात कीजिए और अपने परिणामो की व्याख्या कीजिए :

Subjects	Scores on Test—A	Scores on Test—B
A	5	7
B	2	1
C	10	7
D	3	6
E	13	11
F	6	11
G	12	14
H	6	3
I	8	9
J	10	7

10. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

1. धनात्मक सहसम्बन्ध (Positive Correlation)
2. ऋणात्मक सहसम्बन्ध (Negative Correlation)
3. सहसम्बन्ध को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Effecting Correlation)।
4. लाभ-विधि (Method of Gains)।

3. "एक सांख्यकीय प्रतिदर्श सम्पूर्ण समूह अथवा योग का ही एक अति छोटे आकार का चित्र है।"[1]
4. "प्रतिदर्श व्यक्तियों या वस्तुओं का वह समूह है जो सम्पूर्ण जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है तथा जिसके आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए निष्कर्ष निकाले जाते हैं।"[2]
5. "प्रतिदर्श जनसंख्या का एक भाग है जो दिए हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधि होता है इसलिए प्रतिदर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध होते हैं।"[3]

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि एक सांख्यिकीय प्रतिदर्श व्यक्तियों या वस्तुओं के विस्तृत समूह का एक छोटे आकार का प्रतिनिधि है जिसके आधार पर सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए निष्कर्ष निकाले जाते हैं। यह निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध और प्रतिनिधित्वपूर्ण होते हैं। इस सांख्यिकीय प्रतिदर्श की पूर्व-निर्धारित योजना भी होती है।

प्रतिदर्श की प्रमुख विशेषता प्रतिनिधित्व (Representation) है। जब तक प्रतिदर्श सम्पूर्ण जाति (Total Population) का प्रतिनिधित्व नहीं करता है तब तक प्रतिदर्श के अध्ययन से सम्पूर्ण जाति के सम्बन्ध में विश्वसनीय परिणाम नहीं ज्ञात किए जा सकते हैं। जिस प्रकार से एक बाल्टी पानी से यदि एक गिलास पानी निकाला जाय तो गिलास का पानी बाल्टी के पानी का प्रतिनिधि (Representative) होगा क्योंकि दोनों पानी की एकसी विशेषताएँ हैं और गिलास का पानी बाल्टी के पानी का ही एक भाग है। प्रतिदर्श चुनते समय भी यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रतिदर्श प्रतिनिधित्वपूर्ण है या नहीं।

---

1 "A statistical sample is a miniature picture or cross section of the entire group or aggregate from which the sample is taken" —*Young, P V.*

2 "A collection consisting of a particular sub-test of the objects or the individuals which represents the population, and is a basis for making references of certain population facts." —*Lindquist.*

3 "Sample a part of a population, which for the purpose in hand, is taken as representative of the whole population, so that certain conclusion based on the sample will be valid for the whole population." —*English & English.*

अध्ययनकर्त्ता को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि प्रतिदर्श का उचित आकार (Adequate size of the sample) है या नहीं तथा प्रतिदर्श में किसी प्रकार की अभिनति (Bias) तो नहीं है। अध्ययनकर्त्ता को सम्पूर्ण जाति का उचित ज्ञान प्राप्त करने के बाद निष्पक्ष होकर प्रतिदर्श चुनना चाहिए।

प्रतिदर्श पद्धति से लाभ (Advantages of Sampling)

1 समय की बचत (Saving of Time)—इस विधि द्वारा अध्ययन करते समय चूंकि सम्पूर्ण जनसंख्या (Total Population) से केवल कुछ ही व्यक्ति अध्ययन के लिए चुने जाते हैं, अतः स्पष्ट है कि थोड़े व्यक्तियों का अध्ययन करने में कम समय लगेगा। कुछ अध्ययनों को एक निश्चित और कम समय में पूरा करना होता है। ऐसे अध्ययनों के लिए प्रतिदर्श पद्धति अच्छी होती है।

2. धन की बचत (Saving of Money)—थोड़े व्यक्तियों के अध्ययन के लिए परीक्षण सामग्री कम चाहिए, कम सामग्री में कम धन व्यय होता है। प्रदत्तों के संकलन (Data Collection) और प्रदत्तों के विश्लेषण में भी धन की बचत होती है।

3 अध्ययन का विस्तृत क्षेत्र (Greater Scope of Study)—जब अध्ययन समूह में इकाइयों (Units) की संख्या अधिक होती है तो उनका विस्तृत अध्ययन कठिन होता है। यदि अध्ययन समूह छोटा होता है तो निश्चित रूप से उनका विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

4. परिणामों की शुद्धता (Greater Accuracy)—थोड़े व्यक्तियों के अध्ययन में त्रुटियों की सम्भावना कम होती है इसलिए इस विधि द्वारा अध्ययन में शुद्ध परिणाम प्राप्त होते हैं। दूसरे, यदि प्रतिदर्श प्रतिनिधित्वपूर्ण है तो प्रतिदर्श के अध्ययन से वही परिणाम प्राप्त होते हैं जो सम्पूर्ण जाति के अध्ययन से। अतः परिणामों की शुद्धता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रतिदर्श व्यवस्थित ढंग से चुना गया है या नहीं।

5. प्रशासकीय सुविधा (*Administrative Convenience*)—मनोविज्ञान, शिक्षा और सम्बन्धित विज्ञानों में हम किसी न किसी रूप में व्यवहार का अध्ययन करते हैं। जब व्यवहार का नियन्त्रित दशाओं में अध्ययन करना हो और अध्ययन की इकाइयाँ अधिक हों तो व्यवहार को नियन्त्रित करने और विभिन्न परीक्षणों को देने में कठिनाई होती है। साथ ही साथ उनके व्यवहार का सही निरीक्षण असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है।

6. जब 'गणना पद्धति' द्वारा अध्ययन में कठिनाई हो (Difficulty in the use of Census Method)—जब भौगोलिक (Geographical) दृष्टिकोण से सम्पूर्ण जाति (Total Population) अधिक विस्तृत होती है तो

संगणना पद्धति द्वारा अध्ययन करने मे कठिनाई होती है। ऐसी परिस्थिति मे प्रतिदर्श पद्धति अधिक उपयोगी होती है।

प्रतिदर्श पद्धति से हानियाँ (Limitations of Sampling)

1. **अभिनति की सम्भावना** (*Chances of Bias*)—यदि प्रतिदर्श चुनते समय अध्ययनकर्ता की व्यक्तिगत विचारधारा, पूर्व-धारणा (Prejudices) व पक्षपात का प्रभाव प्रतिदर्श पर पड़ता है तो प्रतिदर्श अभिनतिपूर्ण हो जाता है और प्रतिदर्श के अध्ययन से सही परिणाम नहीं प्राप्त होते।

2. **प्रतिनिधि प्रतिदर्श चुनने में कठिनाई** (Difficulties in Selecting Representative Sample)—प्रतिदर्श विधि द्वारा तभी सही परिणाम ज्ञात किए जा सकते हैं जबकि प्रतिदर्श प्रतिनिधित्वपूर्ण हो। जटिल पूर्ण जाति (*Complex Total Population*) से प्रतिनिधि प्रतिदर्श चुनने मे कठिनाई होती है।

3. **विशेष योग्यता की आवश्यकता** (Need of Specialization)—प्रतिदर्श विधि द्वारा केवल *अनुभवी व्यक्ति* ही अध्ययन कर सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि अध्ययनकर्ता को प्रतिदर्श विधि तथा सांख्यिकी का पूर्ण ज्ञान हो अन्यथा *विश्वसनीय* परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं।

4. **प्रतिदर्श की इकाइयों की अस्थिरता** (Unstability of the Units *of Sample*)—प्रतिदर्श की इकाइयाँ स्थिर नहीं होती है। उदाहरण के लिए, यदि प्रतिदर्श में 100 व्यक्ति (इकाइयाँ) हैं तो प्रदत्तो के सकलन के समय कुछ का पता बदल जाता है, कुछ सूचना देने से मना कर देते हैं तथा कुछ उस समय उपस्थित नहीं होते हैं, आदि। इसमे किसी भी इकाई को छोड़ा नहीं जा सकता है क्योंकि प्रतिदर्श की प्रत्येक इकाई महत्वपूर्ण होती है।

5. **प्रतिदर्श के चयन की असम्भावना** (Impossibility of Sampling)—जब पूर्ण जाति विषमजातीय (Heterogenous) होती है तब प्रतिदर्श नहीं चुनना चाहिए क्योंकि प्रतिनिधि प्रतिदर्श नही चुना जा सकता है। प्रतिनिधि प्रतिदर्श तभी चुना जा सकता है जबकि *गुणो (Traits)* का पूर्ण जाति मे वितरण समान रूप से हो अर्थात् जब पूर्ण जाति समजातीय (Homogenous) हो।

अच्छे प्रतिदर्श की विशेषताएँ (Characteristics of a Good Sample)

1. प्रतिदर्श सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व (Representation) करता है।
2. प्रतिदर्श मे उचित संख्या की इकाइयाँ (Adequate Number of Units) होती हैं।
3. प्रतिदर्श अभिनति (Bias) रहित होता है।

4. प्रतिदर्श की इकाइयों में वही गुण होते हैं जो सम्पूर्ण जाति की इकाइयों में।
5. प्रतिदर्श विश्वसनीय (Reliable) होता है।
6. प्रतिदर्श की इकाइयों को चुनते समय प्रत्येक इकाई को चुनने की बराबर सम्भावना (Equal Chance of Selection) होती है।

प्रतिदर्श पद्धति की विश्वसनीयता (Reliability of Sampling Method)

प्रतिदर्श विधि द्वारा अध्ययन करने के पूर्व अध्ययनकर्त्ता को अपने प्रतिदर्श की विश्वसनीयता ज्ञात कर लेनी चाहिए अन्यथा प्रतिदर्श के अध्ययन के परिणामों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। प्रतिदर्श की विश्वसनीयता ज्ञात करने की प्रमुख विधियाँ निम्नलिखित हैं :

1. समान्तर प्रतिदर्श चुनकर (By Drawing a Parallel Sample)—इस विधि द्वारा विश्वसनीयता ज्ञात करते समय दिए हुए प्रतिदर्श के समान सम्पूर्ण जाति (Total Population) से एक और प्रतिदर्श चुन लेते हैं। फिर इन दोनों प्रतिदर्शों के मध्यमान (Mean) तथा विचलन (Deviations) की तुलना करते हैं। इन दोनों प्रतिदर्शों में जितनी अधिक समानता होती है, दिया *हुआ प्रतिदर्श उतना ही अधिक विश्वसनीय होता है। यह ध्यान रहे कि मानव* विषयी लोगों (Human Subjects) के प्रतिदर्श कभी भी पूर्णतः समान (Identical) नहीं होते हैं। उनमें सार्थक (Significant) समानता हो सकती है। सार्थकता प्रतिदर्श-त्रुटियों (Sampling Errors) के द्वारा ज्ञात करते हैं। प्रतिदर्श-त्रुटियाँ जितनी ही कम होती हैं, विश्वसनीयता उतनी ही अधिक होती है।

2. प्रतिदर्श और पूर्ण जाति के मापों की तुलना द्वारा (By Comparing the Measurement of the Sample with those of the Universe)—यदि पूर्ण जाति (Universl) के गुणों (Traits) के माप ज्ञात हैं तो हम प्रतिदर्श के भी गुणों के माप ज्ञात कर लेते हैं। फिर दोनों मापों (Measurements) में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करते हैं। यदि अन्तर सार्थक है तो प्रतिदर्श को दोषपूर्ण समझना चाहिए और प्रतिदर्श का चुनाव पुनः करना चाहिए।

3. मुख्य प्रतिदर्श से उप-प्रतिदर्श चुनकर (By Drawing Sub-sample from the Main Sample)—मुख्य प्रतिदर्श से उप-प्रतिदर्श चुनकर विश्वसनीयता ज्ञात करते हैं। उप-प्रतिदर्श के गुणों के मापों की तुलना मुख्य प्रतिदर्श से की जाती है। प्रायः इसी विधि का प्रयोग सामाजिक अनुसंधानों में किया जाता है।

प्रतिदर्श के प्रकार
(Types of Sampling)

प्रतिदर्श चुनने की अनेक विधियाँ हैं। जहोदा और उनके साथियों (Jahoda & others) ने प्रतिदर्श चुनने की दो मुख्य विधियाँ बताई हैं। इन दो विधियों के भी प्रकार बताए हैं। इन प्रकारों को निम्नलिखित रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है

प्रतिदर्श (Sampling)
- असम्भाव्य प्रतिदर्श (Non-Probability Sampling)
  - आकस्मिक प्रतिदर्श (Accidental Sampling)
  - कोटा प्रतिदर्श (Quota Sampling)
  - उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श (Purposive Sampling)
- सम्भाव्य प्रतिदर्श (Probability Sampling)
  - अनियत प्रतिदर्श (Random Sampling)
  - वर्गबद्ध प्रतिदर्श (Stratified Sampling)
  - क्लस्टर प्रतिदर्श (Cluster Sampling)
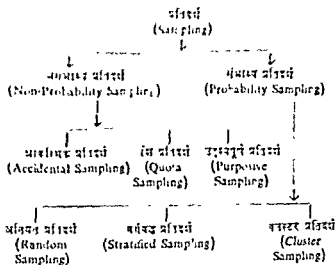
असम्भाव्य प्रतिदर्श
(Non-Probability Sampling)

1 आकस्मिक प्रतिदर्श (Accidental or Incidental Sampling)

इस विधि में जैसा कि नाम से स्पष्ट है, सम्पूर्ण जाति (Total Population) से जो व्यक्ति समय पर मिल जाते हैं या जो स्वयं सूचना देना चाहते हैं उन्हें हम अपने प्रतिदर्श की इकाई (Unit) मानकर उनसे सूचना एकत्र कर लेते हैं। इस विधि में पहले से कोई योजना नहीं बनानी होती है। सामाजिक सर्वेक्षणों एवं अनुसन्धानों में प्रायः इस विधि का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी समस्या के सम्बन्ध में 100 छात्रों से सूचना एकत्र करनी है तो अध्ययनकर्त्ता कालेज जायेगा, वहाँ सुविधा अनुसार उसे

जो भी छात्र मिल जाएँगे या जो छात्र स्वयं समस्या के सम्बन्ध मे विचार व्यक्त करना चाहेंगे उनसे समस्या के सम्बन्ध मे सूचना एकत्र कर लेगा। इसे सुविधा प्रतिदर्श (Convenience Sampling) भी कहते हैं।

2 अंश प्रतिदर्श (Quota Sampling)

इसे प्रतिनिधि प्रतिदर्श (Representative Sampling) भी कहते हैं। इस विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनते समय पूर्ण जाति (Total Population) को गुणो के आधार पर विभिन्न भागो या अंशों (Quota) मे विभाजित कर देते हैं। फिर गुणो के आधार पर विभाजित विभिन्न भागो से आकस्मिक प्रतिदर्श (Accidental Sampling) विधि द्वारा प्रतिदर्श (Sample) का चुनाव कर लेते हैं। इस प्रकार चुना हुआ प्रतिदर्श अंश प्रतिदर्श (Quota Sample) कहलाता है। अंश प्रतिदर्श चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाना है कि प्रतिदर्श के विभिन्न अंशो (Quota) मे इकाइयो (Units) का अनुपात वही हो जो पूर्ण जाति (Total Population) मे इकाइयों का अनुपात है। उदाहरण के लिए, यदि विद्यालय के प्रधानाचार्य के प्रशासन (Administration) के सम्बन्ध मे विद्यार्थियो के विचारो का अध्ययन करना है और विद्यालय मे छात्र और छात्राएँ क्रमशः 70 और 30 प्रतिशत हैं तो पूर्ण जाति को लिंग (Sex) के आधार पर दो अंशों (Quota) मे विभाजित करके आकस्मिक प्रतिदर्श चुनेंगे। चुने गये प्रतिदर्श मे छात्र और छात्राओं का प्रतिशत क्रमश. 70 और 30 होगा।

3 उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श (Purposive Sampling)

गुडे तथा हाट उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श और अंश प्रतिदर्श मे अन्तर नही मानते है क्योंकि यह विद्वान् इस प्रकार की पद्धतियो के पक्ष मे नहीं हैं। पक्ष मे न होने का कारण केवल यही है कि उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श सम्भावना सिद्धान्त (Probability Theory) की आवश्यकताओ की पूर्ति नही करता है।

जब अध्ययनकर्त्ता अपने अध्ययन के उद्देश्य के अनुसार पूर्ण जाति से इकाइयो का चुनाव करता है तो प्राप्त प्रतिदर्श को उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श कहा जाता है। अध्ययनकर्त्ता को उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श तभी लेना चाहिए जबकि वह पूर्ण जाति (Total Population) की विशेषताओ से पूर्णत. परिचित हो। अतः यदि वह अपने व्यक्तिगत ज्ञान के आधार पर उद्देश्य की प्राप्ति हेतु प्रतिदर्श का चुनाव करता है तो प्रतिदर्श उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श कहलाता है। इस विधि की दो मुख्य सीमाएँ हैं। प्रथम यह कि अध्ययनकर्त्ता को सम्पूर्ण जाति का सदैव पूर्ण ज्ञान नही होता है तथा दूसरे यह कि प्रतिदर्श चुनते समय अध्ययनकर्त्ता की व्यक्तिगत विचारधारा का प्रभाव पड़ता है।

संभाव्य प्रतिदर्श
(Probability Sampling)

1. अनियत प्रतिदर्श (Random Sampling)

इस पद्धति मे प्रतिदर्श चुनते समय सबसे पहले सम्पूर्ण जाति (Total Population) की इकाइयों (Units) का एक सूत्र बना लेते हैं फिर प्रत्येक इकाई को समान मात्रा मे महत्व देते हुए आवश्यक इकाइयों को बिना किसी पक्षपात व उद्देश्य के चुन लिया जाता है। यह चुनी हुई इकाइयाँ सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व करती हैं। चुनी हुई इकाइयों को न छोड़ा जाता है और न बदले मे दूसरी इकाई को सम्मिलित किया जाता है। ध्यान रहे कि इस विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनते समय सम्पूर्ण जाति की सभी इकाइयों को चुने जाने की सम्भावना (Probability) समान होती है क्योंकि सभी इकाइयों को समान महत्व दिया जाता है। डा० जे० सी० चतुर्वेदी[1] के अनुसार अनियत प्रतिदर्श में किसी भी इकाई विशेष को ही महत्व नही दिया जाता है बल्कि सभी इकाइयों को चुने जाने का वही अवसर होता है जो अन्य किसी को। किसी अन्य विद्वान् के अनुसार अनियत प्रतिदर्श चुनाव उस विधि को कहते हैं जबकि सम्पूर्ण जाति मे से प्रत्येक व्यक्ति को चुने जाने का समान अवसर हो तथा चुनाव, अवसर या दैवयोग (Chance) से हुआ माना जाय। अनियत प्रतिदर्श (Random Sample) चुनने की निम्न चार विधियाँ अधिक प्रचलित हैं

(A) लॉटरी विधि (Lottery Method)

(B) निश्चित क्रम विधि (Sequential List Method)

(C) ग्रिड विधि (Grid Method)

(D) टिपिट की अंक विधि (Tippett's Number Method)

A. लॉटरी विधि (Lottery Method)—यह विधि सरल है। इसमें सम्पूर्ण जाति को समस्त इकाइयों का नाम अथवा नम्बर अलग कागज के टुकडो पर लिखकर कागजो को एक डिब्बे मे रखकर इस प्रकार हिलाते हैं कि कागज के टुकडे क्रम के अनुसार न रहें। फिर जितनी इकाइयों को चुनना होता है उतने ही कागज के टुकड़ो को आँख बन्द करके उठाते हैं। हर इकाई चुनने के बाद या कुछ इकाइयों को चुनने के बाद डिब्बे को पुनः हिलाते हैं ताकि प्रत्येक इकाई को चुनने की सम्भावना बढ़ जाय।

---

1 "... ... . no item is given preference. The chance of the selection of any of item is the same as that of any other" —J. C. Chaturvedi : *Mathematical Statistics.*

B. निश्चित क्रम विधि (Sequential Method)—इस विधि में सम्पूर्ण जाति की एक सूची (List) तैयार करते हैं और फिर किसी क्रम के अनुसार इकाइयों का चुनाव करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि 500 इकाइयों की सम्पूर्ण जाति से हमें 25 इकाइयाँ चुननी हैं तो हर 20 वाँ व्यक्ति चुनना उपयुक्त होगा। सूची तैयार करने की प्रायः दो विधियों को अपनाया जाता है, प्रथम—क्रमानुसार अंकन (Serial Marking Method), द्वितीय—वर्णक्रमानुसार अंकन (Alphabetical Marking Method)।

C. ग्रिड विधि (Grid Method)—इस विधि का प्रयोग अन्य विधियों की अपेक्षा बहुत कम किया जाता है। इसमें सर्वप्रथम सम्पूर्ण जाति का भौगोलिक मानचित्र तैयार किया जाता है फिर एक कागज या दफ्ती (Cardboard) को (जो कि मानचित्र के ही आकार की होती है) लेकर उसमें उतने ही वर्गाकार खाने या छेद बना देते हैं जितनी कि प्रतिदर्श में इकाइयाँ होती हैं। यह वर्गाकार खाने अनियत ढंग से बनाए जाते हैं। अन्त में इन कागज की प्लेट को मानचित्र पर रखते हैं। जितने वर्गाकार खाने मानचित्र के एक भाग विशेष में पड़ते हैं उतनी ही इकाइयाँ उस भौगोलिक क्षेत्र से चुनते हैं।

D टिपिट की अंक विधि (Tippetts Number Method)—प्रोफेसर टिपिट (Prof. L. H C. Tippett) ने 10,400 संख्याओं की (जोकि चार अंकों की है) तालिकाएँ या सूचियाँ तैयार की हैं। टिपिट की यह तालिका प्रामाणिक भी है। यह तालिका अनियत प्रतिदर्श चुनने के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

टिपिट द्वारा दिए गये अंकों की तालिकाओं का एक नमूना

2952	6641	3992	9792	7979	5911	3170	5624
4167	9524	1545	1396	7203	5356	1300	2693
2370	7483	3408	2762	3563	1089	6913	7691
0560	5246	1112	6107	6008	8126	4433	8776
2754	9143	1405	9025	7002	6111	8816	6446

उदाहरण के लिए, यदि टिपिट की तालिकाओं द्वारा सम्पूर्ण जाति की 100 इकाइयों से 25 इकाइयाँ चुननी हैं तो सर्वप्रथम 100 इकाइयों को क्रमानुसार अंकन विधि (Serial Marking Method) द्वारा एक सूची तैयार करेंगे। फिर टिपिट की तालिकाओं का कोई भी पृष्ठ खोलकर प्रथम 25 नम्बरों के अनुसार इकाइयों का चुनाव कर लेंगे। जैसा कि ऊपर तालिका में पहला नम्बर 2952 है तो 52 की इकाई चुनेंगे। इसी प्रकार दूसरा, तीसरा और चौथा अंक 4167, 2370, 0560 तथा 2754 है अतः 67, 70, 60 तथा 54 नम्बर की इकाइयाँ चुन लेंगे। अध्ययनकर्त्ता को इस बात

का ध्यान रखना चाहिए कि जिस नम्बर की इकाई चुनी जा चुकी है वह नम्बर यदि तालिका में दुबारा आता है तो उस नम्बर की इकाई को न चुनकर अगले नम्बर की इकाई चुनते हैं। इकाई चुनने का कार्य तब तक तालिका की सहायता से करते रहते हैं जब तक कि प्रतिदर्श की सभी इकाइयों का चुनाव नही हो जाता है। अनियत प्रतिदर्श चुनने की यह एक श्रेष्ठ विधि है।

अनियत प्रतिदर्श विधि के कई लाभ हैं. (1) यह मानवीय पक्षपात (Prejudice) तथा अभिरुचि (Attitudes) से रहित होती है, दूसरे शब्दों में, प्रतिदर्श इकाइयों का चुनाव अभिनति (Bias) मुक्त होता है। (2) प्रायः प्रतिदर्श प्रतिनिधित्वपूर्ण होता है क्योंकि इकाइयों के चुनाव पर अध्ययनकर्त्ता की विचारधारा का प्रभाव नही पड़ता है। (3) प्राप्त प्रतिदर्श की त्रुटियों की गणना सरलतापूर्वक की जा सकती हैं। (4) सम्पूर्ण जाति (Total Population) के सम्बन्ध में पूर्वज्ञान की आवश्यकता नही होती है। (5) यह एक सरल विधि है।

इस विधि की उपयोगिताओं के साथ कुछ दोष भी है जो इस प्रकार हैं: (1) सम्पूर्ण जाति की सभी इकाइयों की सूची बनाना आवश्यक है, जहाँ सूची नही बन सकती वहाँ इस विधि का प्रयोग नही किया जा सकता है। (2) यदि सम्पूर्ण जाति का क्षेत्र अधिक बड़ा है तो इकाइयों से सम्पर्क करना कठिन हो जाता है। (3) इकाइयों का चुनाव केवल संयोग (Chance) पर निर्भर रहता है। (4) यदि सम्पूर्ण जाति विषमजातीय (Heterogenous) हो तो इस विधि का प्रयोग नही करना चाहिए क्योंकि प्रतिदर्श के प्रतिनिधि होने की सम्भावना घट जाती है।

2. वर्गबद्ध प्रतिदर्श (Stratified Sampling)

यह प्रतिदर्श विधि अंश प्रतिदर्श विधि (Quota Sampling) तथा अनियत प्रतिदर्श विधि (Randon Sampling) का संयुक्त या मिला हुआ रूप है। इस विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनते समय सर्वप्रथम सम्पूर्ण जाति को गुणों (Traits) के आधार पर विभिन्न वर्गों (Strata) में विभाजित किया जाता है। फिर किसी अनियत (Randon) विधि द्वारा विभिन्न वर्गों से आवश्यक इकाइयों (Units) का चुनाव कर लिया जाता है। इस विधि का प्रयोग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—(1) विभिन्न वर्ग (Strata) एक दूसरे से स्पष्ट होने चाहिए। पूर्ण जाति की प्रत्येक इकाई किसी न किसी वर्ग में अवश्य होनी चाहिए। कोई भी इकाई किन्हीं दो वर्गों में नही होनी चाहिए। (2) प्रत्येक वर्ग (Strata) से इकाइयों का चुनाव उसी अनुपात में करना चाहिए जिस अनुपात में वे पूर्ण जाति में विद्यमान हैं। (3) अध्ययनकर्त्ता को वर्ग बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक वर्ग समजातीय (Homogenous) है या नहीं।

उदाहरण के लिए, एक कालेज की पूर्ण जाति (Total Population) 3700 है। विभिन्न कक्षाओं और लिंग (Sex) के आधार पर 5% प्रतिदर्श चुनना है, तो हम निम्न वर्गीकरण के अनुसार वर्ग (Strata) बनाकर किसी अनियत (Random) विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनेंगे :

Classification of Population

Classes	Male	Female	Total
B A.	600	400	1000
B Sc	800	700	1000
M. A	300	200	500
M Sc.	100	100	200
L. L. B.	900	100	1000
Total	2700	1000	3700

Stratified Sampling

Classes	Male	Female	Total
B. A.	30	20	50
B. Sc.	40	10	50
M A.	15	10	25
M. Sc.	5	5	10
L. L. B.	45	5	50
	135	50	185

इस विधि के कई लाभ हैं, जो इस प्रकार हैं : (1) इस विधि द्वारा चुना गया प्रतिदर्श अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण होता है इसलिए परिणाम अधिक विश्वसनीय होते हैं, (2) उचित वर्गीकरण करके कम से कम इकाइयों को प्रतिदर्श मे सम्मिलित कर सही परिणाम ज्ञात किए जा सकते हैं; (3) इस विधि में किसी भी इकाई को छोड़ा या लिया जा सकता है, (4) अध्ययनकर्ता के पक्षपात का प्रभाव नहीं पड़ता है क्योंकि अनियत (Randon) विधि का भी प्रयोग किया जाता है, (5) अनियत विधि के प्रयोग के कारण लगभग सभी इकाइयों को चुने जाने की सम्भावना (Probability) समान होती है।

उपर्युक्त लाभों के अतिरिक्त कई हानियाँ भी हैं जो निम्नलिखित हैं : (1) यदि उचित वर्गीकरण नहीं होता है तो इकाइयों के चुनाव के समय अध्ययनकर्ता के पक्षपात की भावना का प्रभाव पड़ता है; (2) जब विभिन्न वर्ग (Strata) की इकाइयों और सम्पूर्ण जाति की इकाइयों में एकसा अनुपात नहीं होता है तो चुना गया प्रतिदर्श प्रतिनिधि नहीं होता है, (3) कभी-कभी गुणों (Traits) के आधार पर इकाइयों को वर्गबद्ध करते समय यह समझना कठिन होता है कि किस इकाई को किस वर्ग में रखें, वर्गों को समजातीय (Homogenous) बनाना भी कठिन काम है।

3. क्लस्टर प्रतिदर्श (Cluster Sampling)

जब सम्पूर्ण जाति (Total Population) अत्यधिक विस्तृत होती है तो उपर्युक्त विधियों द्वारा प्रतिनिधित्वपूर्ण प्रतिदर्श चुनना कठिन होता है। ऐसी परिस्थिति में क्लस्टर प्रतिदर्श विधि का प्रयोग करते हैं। इस विधि द्वारा प्रतिदर्श चुनते समय सबसे पहले सम्पूर्ण जाति को बड़े समूहों (Clusters) में विभाजित कर लिया जाता है। यह बड़े समूह अनियत प्रतिदर्श विधि (Random Sampling) या वर्गबद्ध प्रतिदर्श (Stratified Sampling) विधि द्वारा बनाए जाते हैं। यदि इन बड़े समूहों में इकाइयों की संख्या अधिक होती है तो फिर अनियत प्रतिदर्श विधि या वर्गबद्ध प्रतिदर्श विधि द्वारा प्रतिदर्श की इकाइयों को चुना जाता है।[1] उदाहरण के लिए, यदि उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल के विद्यार्थियों का अध्ययन करना है तो हम पहले समस्त स्कूलों की एक सूची (List) बना लेंगे। फिर इस सूची में अनियत प्रतिदर्श या वर्गबद्ध प्रतिदर्श विधि द्वारा बड़े समूह बना लेंगे। इन बड़े समूहों में यदि इकाइयाँ अधिक हैं तो फिर इकाइयों का चुनाव अनियत प्रतिदर्श या वर्गबद्ध प्रतिदर्श विधि द्वारा करके आवश्यकतानुसार इकाइयों को चुन लेंगे।

इस विधि द्वारा प्राप्त प्रतिदर्श प्रतिनिधित्वपूर्ण होता है। इस विधि का प्रयोग करने से समय और धन की बचत के साथ-साथ विशाल समूह या

---

1. "In cluster sampling, one arrives at the ultimate set of elements (units) to be included in the sample by first sampling in terms of larger groupings (clusters). The clusters are selecled by simple or stratified random sampling methods; and, if not all the elements (units) in these clusters are to be included in the sample, the ultimate selection within the clusters is also carried out on a simple or stratified random sampling basis."

—*Jahoda & others*

Number	Square	S. R.
567	321489	23·8118
568	322624	23·8328
569	323761	23·8537
570	324900	23·8747
571	326041	23·8956
572	327184	23·9165
573	328329	23·9374
574	329476	23·9583
575	330625	23·9792
576	331776	24·0000
577	332929	24·0208
578	334084	24·0416
579	335241	24·0624
580	336400	24·0832
581	337561	24·1039
582	338724	24·1247
583	339889	24·1454
584	341056	24·1661
585	342225	24·1868
586	343396	24·2074
587	344569	24·2281
588	345844	24·2487
589	346921	24·2693
590	348100	24·2899
591	349281	24·3105
592	350464	24·3311
593	351649	24·3516
594	352836	24·3721
595	354025	24·3926
596	355216	24·4131
597	366409	24·4336
598	357604	24·4540
599	358890	24·4745
600	360000	24·4649
601	361201	24·5153
602	362404	24·5357
603	363609	24·5561
604	364816	24·5764
605	366025	24·5967
606	367236	24·6171
607	368449	24·6374
608	369664	24·6577
609	370881	24·6779
610	372100	24·6982
611	373321	24·7184
612	374544	24·7385
613	375769	24·7588
614	376996	24·7790
615	378225	24·7992
616	379456	24·8193
617	380689	24·8395
618	381924	24·8596
619	384400	24·8997
620	383161	24·8998
621	385641	24·9199
622	386884	24·9399
623	388129	24·9600
624	389376	24·9800
625	390625	25·0000
626	391876	25·0200
627	393129	25·0400
628	394384	25·0599
629	395641	25·0796
630	396900	25·0998
631	398161	25·1197
632	399424	25·1396
633	400689	25·1595
634	401956	25·1794
635	403225	25·1992
636	404496	25·2190
637	405769	25·2389
638	407044	25·2587
639	408321	25·2784
640	409600	25·2982
541	410881	25·3180
642	412164	25·3377
643	413449	25·3574
644	414736	25·3772
645	416025	25·3969
646	417316	25·4165
647	418609	25·4362
648	419904	25·4558
649	421201	25·4755
650	422500	25·4951
651	423801	25·5147
652	425104	25·5343
653	426409	25·5539
654	427716	25·5734
655	429025	25·5930
656	430336	25·6125
657	431649	25·6320
658	432964	25·6515
659	434282	25·6710
660	435630	25·9905
661	436921	25·7099
662	438244	25·7294

Number	Square	S. R.	Number	Square	S. R.
663	439569	25·7488	711	505521	26·6646
664	440896	25·7682	712	506944	26·6833
665	442225	25·7876	713	508369	26·7021
666	443556	25·8070	714	509796	26·7208
667	444889	25·8263	715	511225	26·7395
668	446224	25·8457	716	512656	26·7582
669	447561	25·8650	717	514089	26·7769
670	448900	25·8844	718	515524	26·7955
671	450241	25·9037	719	516961	26·8142
672	451584	25·9230	720	518400	26·8328
673	452929	25·9422	721	519841	26·8514
674	454276	25·9615	722	521284	26·8701
675	455625	25·9808	723	522729	26·8887
676	456976	26·0000	724	524176	26·9072
677	458329	26·0192	725	525625	26·9258
678	459684	26·0384	726	527076	26·9444
679	461041	26·0576	727	528529	26·9629
680	462400	26·0768	728	529984	26·9815
681	463761	26·0960	729	531441	27·0000
682	465124	26·1151	730	532900	27·0185
683	466489	26·1343	731	534361	27·0370
684	467856	26·1534	732	535824	27·0555
685	469225	26·1725	733	537289	27·0740
686	470596	26·1916	734	538756	27·0924
687	471969	26·2107	735	540225	27·1109
688	473344	26·2298	736	541696	27·1293
689	474721	26·2488	737	543169	27·1477
690	476100	26·2679	738	544644	27·1662
691	477481	26·2869	739	546127	27·1846
692	478864	26·3059	740	547600	27·2029
693	480249	26·3249	741	549081	27·2213
694	481636	26·3439	742	550564	27·2397
695	483025	26·3629	743	552049	27·2550
696	484416	26·3318	744	553536	27·2764
697	485809	26·4008	745	555025	27·2947
698	487204	26·4197	746	556516	27·3130
699	488601	26·4386	747	558009	27·3313
700	490000	26·4575	748	559504	27·3476
701	491401	26·4764	749	561001	27·3675
702	492804	26·4953	750	562500	27·3361
703	4942[illegible]9	26·5141	751	564001	27·4044
704	495616	26·5330	752	565504	27·4226
705	497025	26·5518	753	567009	27·44[illegible]4
706	498436	26·5707	754	568516	27·4591
707	4998[illegible]9	26·5895	755	570025	27·4773
708	501264	26·6083	756	571536	27·4955
709	502681	26·6271	757	573049	27·5136
710	504100	26·6458	758	574564	27·5311

Number	Square	S. R.	Number	Square	S. R.
759	576081	27 5500	807	651249	28 4077
760	577600	27 5681	808	652864	28 4253
761	579121	27·5862	809	654481	28 4429
762	580644	27 6043	810	656100	28 4605
763	582169	27 6225	811	657721	28 4781
764	583696	27·6405	812	659344	28·4956
765	585225	27 6586	813	660969	28 5132
766	586756	27·6767	814	662596	28 5307
767	588289	27 6948	815	664225	28 5482
768	589824	27·7128	816	665856	28 5657
769	591361	27 7308	817	667489	28 5832
770	592900	27 7489	818	669124	28 6007
771	594441	27·7669	819	670761	28 6082
772	595984	27 7849	820	672400	28 6356
773	597529	27 8029	821	674041	28 6531
774	599076	27 8209	822	675684	28 6705
775	600625	27 8388	823	677329	28 6880
776	602176	27 8568	824	678976	28·7054
777	603729	27 8747	825	680625	28 7228
778	605284	27 8927	826	682276	28·7402
779	606841	27 9106	827	683929	28 7576
780	608400	27 9285	828	685584	28 7750
781	609961	27 9464	829	687241	28 7924
782	611524	27 9643	830	688900	28 8097
783	613089	27 9821	831	690561	28 8271
784	614656	28 0000	832	692224	28 8444
785	616225	28 0179	833	693889	28 8617
786	617796	28 0353	834	695556	28 8791
787	619369	28 0535	835	697225	28 8964
788	620944	28 0713	836	698896	28 9137
789	622521	28 0891	837	700569	28 9310
790	624100	28 1069	838	702244	28 9482
791	625681	28 1247	839	703921	28 9655
792	627264	28 1425	840	705600	28 9828
793	628849	28 1603	841	707281	29 0000
794	630436	28 1780	842	708964	29 0172
795	632025	28 1957	843	710649	29 0345
796	633616	28 2135	844	712336	29 0517
797	635209	28 2312	845	714025	29 0689
798	636804	28 2489	846	715716	29 0861
799	638401	28 2666	847	717409	29 1033
800	640000	28 2843	848	719104	29·1204
801	641601	28 3019	849	720801	29 1376
802	643204	28 3196	850	722500	29 1548
803	644809	28 3373	851	724201	29 1719
804	646416	28·3549	852	725904	29·1890
805	648025	28 3725	853	727609	29 2062
806	649636	28·3901	854	729316	29 2233

Number	Square	S. R.	Number	Square	S. R.
855	731025	29·2404	903	815409	30 0500
856	732736	29·2575	904	817216	30 0666
857	734449	29·2746	905	819025	30 0832
858	736164	29 2916	906	820836	30 0998
859	737881	29 3087	907	822649	30·1164
860	739600	29·3258	908	824464	30 1330
861	741321	29 3428	909	826281	30·1496
862	743044	29 3598	910	828100	30 1662
863	744769	29 3769	911	829921	30 1828
864	746496	29 3939	912	831744	30 1993
865	748225	29·4109	913	833569	30 2159
866	749956	29 4279	914	835396	30 2324
867	751689	29 4449	915	837225	30 2490
868	753424	29 4618	916	839056	30 2655
869	755161	29 4788	917	840889	30 2820
870	756900	29 4958	918	842724	30 2985
871	758641	29 5127	919	844561	30 3150
872	760384	29 5296	920	846400	30 3315
873	762129	29·5466	921	848241	30 3480
874	763876	29 5635	922	850084	30 3645
875	765625	29 5804	923	851929	30·3809
876	767376	29 5973	924	853776	30 3974
877	769129	29 6142	925	855625	30 4138
878	770884	29 6311	926	857476	30 4302
879	772641	29 6479	927	859329	30 4467
880	774400	29 6648	928	861184	30 4631
881	776161	29·6816	929	863041	30 4795
882	777924	29 6985	930	864900	30 4959
883	779689	29 7153	931	866761	30 5123
884	781456	29 7321	932	868624	30 5287
885	783225	29 7489	933	870489	30 5450
886	784996	29 7658	934	872356	30 5614
887	786769	29 7825	935	874225	30 5778
888	788544	29 7993	936	876096	30 5941
889	790321	29 8161	937	877969	30 6105
890	792100	29 8329	938	879844	30 6268
891	793881	29 8496	939	881721	30 6431
892	795664	29·8664	940	883600	30 6594
893	797449	29 8831	941	885481	30 6757
894	799236	29 8998	942	887364	30 6920
895	801025	29 9166	943	889249	30 7083
896	802816	29 9333	944	891136	30 7246
897	804609	29 9500	945	893025	30 7409
898	806404	29 9666	946	894916	30 7571
899	808201	29 9833	947	896809	30 7734
900	810000	30 0000	948	898704	30 7896
901	811801	30 0167	949	900601	30 8058
902	813604	30 0333	950	902500	30 8221

Number	Square	S R.
951	904401	30·8383
952	906304	30 8585
953	908209	30·8707
954	910116	30·8869
955	912025	30 9031
956	913936	30·9192
957	915849	30 9354
958	917764	30 9516
959	919681	30 9677
960	921600	30·9839
961	923521	31 0000
962	925444	31 0161
963	927369	31 0322
964	929296	31 0483
965	931225	31 0644
966	933156	31 0805
967	935089	31·0966
968	637024	31 1127
969	938961	31·1288
970	940900	31 1448
971	942841	31 1609
972	944784	31 1769
973	946729	31 1929
974	948676	31 2090
975	950625	31 2250
976	952576	31 2410
977	954529	31 2570
978	956484	31 2730
979	958441	31 2890
980	960400	31·3050
981	962361	31 3209
982	964324	31 3369
983	966289	31 3528
984	968256	31 3688
985	970225	31 3847
986	972196	31 4006
987	974169	81 4166
988	976144	31·4325
989	978121	31 4484
990	980100	31 4643
991	981081	31 4802
992	984064	31·4960
993	986049	31 5119
994	988036	31 5278
995	990025	31·5436
996	992016	31 5595
997	994009	31 5753
998	996004	31 5911
999	998001	31 6070
1000	1000000	31 6228

प्रकाशक
विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-२

प्रथम संस्करण : १९६६
मूल्य : ६·००

प्रेस, आगरा-२
६६]

5629

भूमिका

पुस्तक की रचना प्रशिक्षण महाविद्यालयों के नये पाठ्य-क्रम के
है। इस बात का पूर्ण प्रयास किया गया है कि पुस्तक छात्राध्यापकों
कताओं को पूर्ण करे। इसमें शिक्षा-सिद्धान्तों के अन्तर्गत आने वाली
को सरल और सुबोध ढंग से प्रस्तुत करने का पूरा-पूरा प्रयास किया
हो इस बात का भी प्रयास किया गया है कि विषय-सामग्री
की रुचियों और दृष्टिकोणों के अनुकूल हो। विषय-वस्तु की प्रस्तुति और
भारतीय समाज के सन्दर्भ में है। इसके अतिरिक्त पुस्तक को तार्किक
के लिये विभिन्न विचारकों, शिक्षा-शास्त्रियों और सुप्रसिद्ध लेखकों
उद्धरण दिये गये हैं।

को इस रूप में प्रस्तुत करने में हमें "भारती भवन के सचालक"
अग्रवाल, एम० ए० से समय-समय पर अमूल्य सहायता प्राप्त हुई,
र उनके आभारी हैं। हम श्री बाबूराम शर्मा के भी कृतज्ञ हैं, जिन्होंने
आद्योपान्त पढ़कर परिमार्जित किया है।

पी० डी० पाठक
जी० एस० डी० त्यागी

६६६

YOUR COURSE ACCORDING TO THE SYLLABUS

Paper I—Principles of Education

ducation—Its meaning, and its fuction in human and ... fe.

gencies of Education—(a) Formal, (b) Informal.

ims of Education (a) Relations of aims to life & ideal ciety, (b Various educational aims—formulation, interde nce, limitation and their contributions to development ncept of education, (c) Importance of synthesizing the s o an inclusive aim—formulation of suitable aims for the tic national education and emotional integration. relop understanding—Inter-cultural & international.

losophical Basis of Education—Naturalism, Idealism, Pra tism & their impact on curriculum and methods of teach h reference to Indian educators and their philosophies.

iological Basis of Education—(a) The nature of Indian iety—division into occupational castes and religious groups social classes, etc, (b) The impact of such society on the elopment of the child, (c) Factors leading in the socializ- of the child and the role of the teacher in the process.

riculum—meaning, principles of construction, importance ubjects, integrated approach.

c Principles and Techniques of Teaching—Questioning trations, Description, Narration and Exposition.

विषय-सूची

खण्ड एक

शिक्षा का अर्थ, प्रक्रिया और परिभाषा

Meaning, Process & Definition of Education

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य

Individual & Social Aims of Education

शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

General Aims of Education

शिक्षा के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य

Important Aims of Education

शिक्षा के वांछनीय उद्देश्य

Desirable Aims of Education

खंड तीन

राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा
Education For National Integration

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा
Education For International Understanding

स्वतन्त्रता और अनुशासन
Freedom & Discipline

खंड चार

शिक्षा के साधन

Agencies of Education

विद्यालय

The School

घर या परिवार

The Home or The Family

चर्च या धर्म

The Church or the Religion

समुदाय

The Community

राज्य

The State

खण्ड पाँच

दर्शन और शिक्षा में सम्बन्ध

Relation between Philosophy & Education

१

अर्थ, प्रक्रिया, स्वरूप और परिभाषा

, PROCESS, FORM & DEFINITION OF EDUCATION

ा नहीं है, वरन् मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास और विकास ...रियों से शिक्षा प्राप्त होती है, वे हैं—ज्ञान के केन्द्र और जीवन

... is not learning ; it is the exercise and development ...rs of the mind , and the two great methods by ...y be accomplished are in the halls of learning, or ...fe."—*Princeton Review.*

...शब्द का प्रयोग

...कम व्यक्ति हैं, जिन्हे शिक्षा में रुचि न हो। शिक्षक, ... शिक्षा-मन्त्री, राजनीतिज्ञ, आदि सभी के मुख से यह ...आजकल ही नहीं, वरन् अति प्राचीन काल से, 'शिक्षा' ...अर्थ में होता चला आया है। इसकी पुष्टि में हम कुछ ... हैं .—

... अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है, जो अच्छी ... विकास करती है।"

... training which is given by suitable ... in children."—*Plato.*

... में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करती

... of a sound mind in a sound

9

ाक्षा का अर्थ, प्रक्रिया, स्वरूप और परिभाषा

IEANING, PROCESS, FORM & DEFINITION OF EDUCATION

'शिक्षा सीखना नहीं है, वरन् मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास और विकास दो श्रेष्ठ विधियों से शिक्षा प्राप्त होती है, वे हैं—ज्ञान के केन्द्र और जीवन ।"

'Education is not learning ; it is the exercise and develop-' the powers of the mind ; and the two great methods by his end may be accomplished are in the halls of learning, or onflicts of life."—*Princeton Review.*

वेश : 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग

संसार में ऐसे बहुत कम व्यक्ति हैं, जिन्हें शिक्षा में रुचि न हो। शिक्षक, क, विद्यालय-प्रबन्धक, शिक्षा-मन्त्री, राजनीतिज्ञ, आदि सभी के मुख से यह : सुना जाता है। आजकल ही नहीं, वरन् अति प्राचीन काल से, 'शिक्षा' प्रयोग किसी न किसी अर्थ में होता चला आया है। इसकी पुष्टि में हम कुछ के विचारों को नीचे दे रहे हैं —

१. प्लेटो—"शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है, जो अच्छी के द्वारा बच्चों में अच्छी नैतिकता का विकास करती है।"

"I mean by education that training which is given by suitable to the first instincts of virtue in children."—*Plato.*

२. अरस्तू—"शिक्षा स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण करती

"Education is the creation of a sound mind in a sound '—*Aristotle.*

३. काण्ट—"शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिस पर वह पहुँच सकता है।"

"Education is the development in the individual of all the perfection of which he is capable."—*Kant*

४. भर्तृहरि—"शिक्षा के अभाव में हम सब पशु हैं।

"Devoid of education we are all beasts."—*Bhartri Hari.*

५. स्वामी विवेकानन्द—"हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

"We want that education by which character is formed strength of mind is increased, intellect is expanded and by which one can stand on one's own feet."

—*Swami Vivekananda* . Our Women, p. 41.

शिक्षा के सम्बन्ध में जो विचार ऊपर व्यक्त किए गए हैं, उनसे शिक्षा के प्रभाव और महत्व को भली प्रकार समझा जा सकता है। शिक्षा ही सभ्यता और संस्कृति की जननी है। जब तक पृथ्वी पर मनुष्य रहेगा, तब तक शिक्षा की प्रक्रिया चलती रहेगी। अब प्रश्न यह उठता है कि आखिर शिक्षा है क्या? इस बात को जानने के लिए हमें 'शिक्षा' के अर्थ पर विचार करना आवश्यक हो जाता है।

शिक्षा का अर्थ
Meaning of Education

१. 'शिक्षा' का शाब्दिक अर्थ
Etymological Meaning of Education

'Education' शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के तीन शब्दों से मानी है :—

'Educatum'—इसका अर्थ है—'Act of teaching or training.'

'Educare'—इसका अर्थ है—'To educate', 'To bring up', 'To raise.'

'Educere'—इसका अर्थ है—'To bring forth', 'To lead out.'

उपरोक्त के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि 'Education' शब्द का है—'The act of training, bringing up, and leading out.' इस प्रकार ' शब्द का अर्थ है—प्रशिक्षण, संवर्द्धन और पथ-प्रदर्शन करने का कार्य। सरल में हम कह सकते हैं कि शिक्षा का अर्थ है—बालक की जन्मजात शक्तियों का

गुणों को विकसित करके उसका सर्वांगीण विकास करना, न कि उसके मस्तिष्क में ज्ञान को ठूँसना।

एडम्स (Adams) का कथन है कि 'Education' शब्द का जो अर्थ लेटिन शब्दों से निकाला गया है, अपूर्ण है। रॉस (Ross) का भी यही मत है। उसके अनुसार 'Education' शब्द का यह अर्थ शिक्षा की सम्पूर्ण जटिल प्रक्रिया की व्याख्या नहीं करता है।

२. प्राचीन समय में 'शिक्षा' का अर्थ

Meaning of 'Education' in the Past

प्राचीन समय में विभिन्न देशों में समाज के आदर्शों और उद्देश्यों के अनुसार 'शिक्षा' को विभिन्न अर्थ दिया गया। उदाहरणार्थ—प्राचीन भारत में 'शिक्षा' को आत्म-ज्ञान और आत्म-प्रकाश का साधन माना गया, जिसके द्वारा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को विकसित करके उसका सर्वांगीण विकास किया जाता था।

प्राचीन चीन में शिक्षा द्वारा व्यक्तियों को सामाजिक व्यवस्था का आदर करना, जीवन में उचित सम्बन्ध स्थापित करना, उत्तम आचरण करना, और जीवन भर उपयोगी कार्यों को करने का प्रशिक्षण दिया जाता था।

प्राचीन यूनान में व्यक्ति को राजनैतिक, मानसिक, नैतिक और सौंदर्य-ज्ञान के लिए शिक्षा दी जाती थी। प्राचीन रोम में शिक्षा व्यक्ति को जीवन के व्यावहारिक कार्यों के लिए तैयार करती थी।

इस प्रकार प्राचीन समय के सभी सभ्य देशों में शिक्षा का अर्थ भिन्न था। *इसके बावजूद भी सभी देश इस बात को मानते थे कि—मस्तिष्क एक भंडार है,* जिसको ज्ञान से धीरे-धीरे भरा जाता है। निस्सन्देह शिक्षा में ज्ञान का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

३. शिक्षा का व्यापक अर्थ

Wider Meaning of Education

शिक्षा के व्यापक अर्थ के अनुसार 'शिक्षा' आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में, व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सीखता और अनुभव करता है, वह सब शिक्षा के व्यापक अर्थ के अन्तर्गत माना जाता है। उसके सीखने और अनुभव करने का परिणाम यह होता है कि वह धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण से अपना सामंजस्य स्थापित करता है। इस सम्बन्ध में डॉ० रेमाण्ट का यह कथन उल्लेखनीय है—"शिक्षा, विकास का वह क्रम है, जिससे व्यक्ति अपने को धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। जीवन ही वास्तव

में शिक्षा देता है। एक व्यक्ति अपने व्यवसाय, पारिवारिक जीवन, मित्रता, विवा
पितृत्व, मनोरञ्जन, यात्रा आदि के द्वारा शिक्षित किया जाता है।'

"Education is defined as a process of development by which an individual adapts himself gradually in various ways to his physi-cal, social and spiritual environment. It is really life that educates. One is educated by one's vocation, by home life, by friendships, by marriage, by parenthood, by recreations, by travels and so forth."

—*T. Raymont.*

व्यापक अर्थ में शिक्षा का कार्य जीवन भर चलता रहता है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ-न-कुछ सीखता रहता है। वास्तव में उसका सम्पूर्ण जीवन ही शिक्षा का काल है। बालक अपने माता-पिता, भाई-बहनों, मित्रो और अध्यापकों से हर समय और हर जगह कुछ-न-कुछ सीखता है। बड़ा होने पर वह जीवन में प्रवेश करता है और विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। जिस प्रकार बालक घर में, स्कूल में, और खेल के मैदान में दूसरों से सदैव कोई-न-कोई बात सीखता रहता है, उसी प्रकार वयस्क के रूप में वह दुकान, दफ्तर, पार्क आदि में हर समय किसी-न-किसी प्रकार की शिक्षा अवश्य प्राप्त करता है। इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्र अति विस्तृत है। अतः शिक्षा उस विकास का नाम है, जो बचपन से लेकर जीव[न के] अन्तिम क्षण तक चलता रहता है। इसी विकास के कारण व्यक्ति अपनी परिस्थिति[यों] पर विजय प्राप्त करता है, जीवन की विभिन्न समस्याओं को सुलझाता है और अ[पने] कर्त्तव्यों का पालन करता है। इस विकास के बिना उसका जीवन सफल नहीं हो[ता] है। 'शिक्षा' शब्द का व्यापक अर्थ यही है।

शिक्षा के व्यापक अर्थ को स्पष्ट करने के लिये हम कुछ विद्वानों के विचारों को नीचे अंकित कर रहे हैं :—

१ लाज— 'व्यापक अर्थ में अनुभव शिक्षा-प्रद कहा जाता है। मच्छर का [का]टना, तरबूज का स्वाद, प्रेम करने का अनुभव, हवाई जहाज में उड़ना, छोटी नाव [में] बैठे हुए तूफान में फँसना—ऐसे सभी अनुभव हम पर प्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक प्रभाव [डाल]ते हैं। बच्चा अपने माता-पिता को, और छात्र अपने शिक्षकों को शिक्षित करता [है।] प्रत्येक बात, जो हम सुनते या करते हैं, हमें किसी प्रकार भी दूसरे व्यक्तियों के [...] [...], चाहे वह कितनी ही कम शिक्षित नहीं करती है। इस व्यापक अर्थ [में जी]वन—शिक्षा है, और शिक्षा—जीवन है। जो कुछ भी हमारे दृष्टिकोणों को [...], अन्तर्दृष्टि को गहरा, कठिनाइयों को दूर, और विचार तथा भावना को [...] करता है, हमें शिक्षित करता है।

"In the wider sense, experience is said to be educative. The [bite o]f a mosquito, the taste of a water-melon, the experi

falling in love, of flying in an aeroplane, of being caught in a storm in a small boat—all such experiences have a directly educative effect on us The child educates his parents, the pupil educates his teachers. Everything we say, think or do, educates us no less than what is said or done to us by other beings, animate or inanimate. In this wider sense, life is education, and education is life. Whatever broadens our horizons, deepens our insight, refines our reactions, stimulates thought and feeling, educates us"—*Lodge.*

२. जे० एस० मेकेंज़ी—"व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो आजीवन चलती रहती है और जीवन के प्रायः प्रत्येक अनुभव से उसके भण्डार में वृद्धि होती है। शिक्षा को जीवन का मुख्य साध्य भी कहा जा सकता है।"

"In the wider sense, education is a process that goes on throughout life, and is promoted by almost every experience in life. It may even be said to be the chief end of life."

—*J. S. Mackenzie.*

३. प्रोफ़ेसर डम्विल—"शिक्षा के व्यापक अर्थ में वे सभी प्रभाव आते हैं, जो व्यक्ति को उसके जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रभावित करते हैं।"

"Education in its wider sense includes all the influences which act upon an individual during his passage from the cradle to the grave."—*Prof. Dumville.*

४. मार्क हॉपकिन्स—"अपने अति व्यापक अर्थ में शिक्षा में वे सभी बातें आ जाती हैं, जो निर्माणकारी प्रभाव डालती हैं।"

"Education in its widest sense includes everything that exerts a formative influence."—*Mark Hopkins.*

४. शिक्षा का संकुचित अर्थ

Narrower Meaning of Education

शिक्षा के संकुचित या सीमित अर्थ के अनुसार शिक्षा का अभिप्राय बालक को स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा से है। दूसरे शब्दों में, बालक को एक निश्चित योजना के अनुसार, एक निश्चित समय तक और निश्चित विधियों से निश्चित प्रकार का ज्ञान दिया जाता है। उसकी शिक्षा कुछ विशेष प्रभावों और कुछ विशेष विषयों तक ही सीमित रहती है। उसको वही शिक्षा दी जाती है, जिसे समाज के वयस्क व्यक्ति उसके जीवन के लिए लाभप्रद समझते हैं। बालक इस शिक्षा को केवल कुछ ही वर्षों तक प्राप्त कर सकता है। उसको प्राप्त करने का मुख्य स्थान विद्यालय होता है।

विद्यालय में एक विशेष प्रकार का व्यक्ति शिक्षा देने का कार्य करता है, जिसे शिक्षक कहते हैं। उस पर बालक की शिक्षा का उत्तरदायित्व होता है। बालक विद्यालय में कई विषयों की शिक्षा प्राप्त कर सकता है। अतः साधारणतः शिक्षा का अर्थ—विशेष प्रकार की पुस्तकें पढ़ना समझा जाता है। 'शिक्षा' शब्द का संकुचित अर्थ यही है।

इस शिक्षा से बालक को किसी प्रकार का लाभ नहीं होता है। वह तोते के समान विषयों को रट तो लेता है, पर उसे उनका व्यावहारिक ज्ञान नहीं प्राप्त होता है। उसे पुस्तकीय ज्ञान तो प्राप्त हो जाता है, पर उसके मस्तिष्क और चरित्र का विकास नहीं होता है। अतः इस प्रकार की शिक्षा को शिक्षा न कहकर 'अध्यापन' या 'निर्देश' (Instruction) के नाम से पुकारा जाता है।

शिक्षा के संकुचित अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कुछ विद्वानों के विचारों को नीचे अंकित कर रहे हैं —

१. जे० एस० मेकेन्जी— 'संकुचित अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय हमारी शक्तियों के विकास और उन्नति के लिए चेतनापूर्वक किये गए किसी भी प्रयास से हो सकता है।"

"In narrow sense, education may be taken to mean any consciously directed effort to develop and cultivate our powers."

—*J. S. Mackenzie.*

२. टी० रेमण्ट— संकुचित अर्थ में शिक्षा का प्रयोग बोल-चाल की भाषा और कानून में किया जाता है। इस अर्थ में शिक्षा व्यक्ति के आत्म-विकास और उसके वातावरण के सामान्य प्रभावों को अपने में कोई स्थान नहीं देती है। इसके विपरीत, यह केवल उन विशेष प्रभावों को अपने में स्थान देती है, जो समाज के अधिक आयु के व्यक्ति जान-बूझकर और विचारपूर्वक रूप में अपने से छोटों पर डालते हैं, भले ही वे प्रभाव परिवार, धर्म या राज्य द्वारा डाले जायें।"

आलोचना—इस अर्थ का मुख्य उद्देश्य—बच्चे के व्यवहार का इस प्रकार [illegible] करना है, जिससे कि वह [illegible] जाय, जिससे कि वह [illegible] कि बच्चा वातावरण से [illegible] और वातावरण का [illegible] मानव-प्रकृति [illegible]।

"In the narrowest sense in which the term is used in common talk and in legal enactments, education does not include self-education or the general influences of one's surroundings, but only those special influences which are consciously and designedly brought to bear upon the younger by the adult portion of the community, whether through the family, the Church or the State."

—*T. Raymont.*

३. जॉन स्टुअर्ट मिल—"शिक्षा मे केवल वे ही बातें नहीं आती हैं, जिन्हें हम अपनी प्रकृति की श्रेष्ठता के समीप पहुँचने के लिये स्वयं करते हैं, और जो हमारे लिए दूसरों के द्वारा की जाती हैं। अपने अति व्यापक रूप में, शिक्षा में वे अप्रत्यक्ष प्रभाव भी आ जाते हैं, जो उन बातों द्वारा, जिनका प्रत्यक्ष उद्देश्य कुछ और है, मानव-चरित्र और शक्तियों पर पड़ता है। ये अप्रत्यक्ष प्रभाव हमारे ऊपर क़ानूनो, सरकार के रूपों, औद्योगिक कलाओं और सामाजिक जीवन की विधियो से पड़ते हैं। जलवायु, भूमि और स्थानीय स्थिति भी हमें प्रभावित करती है। जो कोई बात मनुष्य के निर्माण में सहायता देती है या रुकावट डालती है, वह उसकी शिक्षा का भाग है।"

"Not only does it (education) include whatever we do for ourselves, and whatever is done for us by others, for the express purpose of bringing us somewhat nearer to the perfection of our nature ; it does more in its largest acceptation, it comprehends even the indirect effects produced on character and on the human faculties, by things of which the direct purposes are quite different ; by laws, by forms of government, by the industrial arts, by modes of social life ; nay even by physical facts not dependent on human will · by climate , soil, and local position Whatever helps to shape the human being , to make the individual what he is, or hinder him from being what he is not—is part of his education."

—*John Stuart Mill.*

नोट—इस परिभाषा द्वारा मिल ने शिक्षा के सकुचित और व्यापक अर्थों को भली प्रकार स्पष्ट किया है। पहले भाग में उसने सकुचित अर्थ को स्पष्ट किया है और दूसरे मे व्यापक अर्थ को।

५. शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ

Analytical Meaning of Education.

हमने ऊपर की पंक्तियों मे शिक्षा के विभिन्न अर्थों का वर्णन किया है। यहाँ हम उसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए उसके अर्थ-सम्बन्धी विभिन्न तत्वो पर प्रकाश डाल रहे हैं। यथा.—

(i) शिक्षा का अर्थ केवल विद्यालयों मे दिए जाने वाले ज्ञान तक सीमित नहीं :
Meaning of Education not Limited to Knowledge Imparted in Schools.

शिक्षा का अर्थ इतना सकुचित नहीं है, जितना कि लोग समझते हैं। शिक्षा विद्यालय तक ही सीमित नहीं रहती है। इसके विपरीत, शिक्षा का कार्यक्रम जन्म से

करना होता है। अत शिक्षा द्वारा उसका सामाजिक विकास (Social Development) किया जाना अति आवश्यक है। यह तभी सम्भव है, जब उसे उचित प्रकार की शिक्षा दी जाय। इसीलिए ड्यूवी (Dewey) ने शिक्षा को 'द्विमुखी प्रक्रिया' न मानकर 'त्रिमुखी प्रक्रिया' (Tri-Polar Process) माना है। उसका कहना है कि शिक्षक, विद्यार्थी और समाज—शिक्षा की तीन भुजाएँ हैं। उसने समाज की जगह पाठ्य-क्रम को रखा है, क्योंकि पाठ्य-क्रम ही शिक्षक और छात्र को समाज सम्बन्धी सामग्री देता है।

६. शिक्षा का वास्तविक अर्थ

True Meaning of Education

हमने ऊपर की पंक्तियों में शिक्षा के शाब्दिक, प्राचीन, व्यापक और संकुचित अर्थों पर प्रकाश डाला है। इनसे पाठक के मन में भ्रम उत्पन्न हो सकता है और वह पूछ सकता है कि आखिर, शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है? उपरोक्त किसी भी अर्थ को शिक्षा का वास्तविक अर्थ नहीं कहा जा सकता है। जहाँ तक शिक्षा के शाब्दिक अर्थ की बात है, उसे बिल्कुल ठीक मान लेना उचित नहीं है। क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि जो किसी बात का शाब्दिक अर्थ हो, वही उसका वास्तविक अर्थ भी हो। रही प्राचीन काल में शिक्षा के अर्थ की बात, उसे आधुनिक विचारक पूर्ण रूप में मानने को तैयार नहीं है। अब बचते हैं—शिक्षा के व्यापक और संकुचित अर्थ। ये दोनों अर्थ शिक्षा के प्रति अपनाये जाने वाले दो दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। शिक्षा का *वास्तविक अर्थ इन्हीं दोनों के बीच में कहीं-न-कहीं है। अत हम शिक्षा के वास्तविक* अर्थ को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं —

"शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक और सामञ्जस्यपूर्ण उन्नति में योग देती है, उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है, उसे अपने वातावरण से सामञ्जस्य स्थापित करने में सहायता देती है, उसे जीवन और नागरिकता के कर्त्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है, और उसके व्यवहार, विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है, जो समाज, देश और विश्व के लिए हितकर होता है।"

Education is a process which contributes to the natural and harmonious development of man's innate powers, brings about the complete development of his individuality, helps him to adjust himself to his environment, prepares him for the duties and responsibilities of life and citizenship, and charges his behaviour, thought and attitude in such a way that is beneficial for society, country and world.

शिक्षा की विभिन्न धारणाएँ
Different Conceptions of Education

शिक्षा के अर्थ को समझने के बाद उसके बारे में प्रचलित विभिन्न धारणाओं को जान लेना अच्छा होगा। इसी विचार से हम निम्नलिखित पंक्तियों में उनका वर्णन कर रहे हैं। यथा :—

१. शिक्षा मनुष्य का विकास करने का प्रयत्न है
Education is an Attempt to Develop the Man

शिक्षा के इस पहलू पर बहुत अधिक बल दिया गया है। इस सम्बन्ध में जॉन ड्यूवी ने लिखा —"शिक्षा व्यक्ति की उन सब शक्तियों का विकास है, जिनसे वह अपने वातावरण पर अधिकार प्राप्त कर सके और अपनी भावी आशाओं को पूरा कर सके।"

"Education is the development of all those qualities which will enable the individual to control his environment and fulfil his possibility."—*John Dewey.*

जिस व्यक्ति में सोचने-समझने की शक्ति होती है, उसी को विकसित कहा जा सकता है। जो व्यक्ति अपने चारों ओर होने वाली घटनाओं की आलोचना कर सकता है, वही व्यक्ति समाज को कुछ योगदान दे सकता है। ऐसे व्यक्ति को सदैव बदलने वाले समाज से अपना सामजस्य स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं होती है। उसे इस स्थिति में शिक्षा द्वारा ही पहुँचाया जाता है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा द्वारा ही उसका विकास किया जाता है।

यूनानी दार्शनिक प्लेटो (Plato) ने इस बात पर बल दिया है कि शिक्षा व्यक्ति का विकसित करने का प्रयत्न है। उसने लिखा है —"शिक्षा छात्र के शरीर और आत्मा में उस सब सौंदर्य और पूर्णता का विकास करती है, जिसके योग्य वह है।"

"Education develops in the body and in the soul of the pupil all the beauty and all the perfection of which he is capable."
—*Plato.*

अरस्तु (Aristotle) ने भी करीब-करीब इसी विचार को इन शब्दों में व्यक्त किया है—"शिक्षा मनुष्य की शक्ति का—विशेष रूप से मानसिक शक्ति का विकास करती है, जिससे कि वह परम सत्य, शिव और सुन्दरम् का चिन्तन करने के योग्य बन सके।"

"Education develops man's faculty, especially

that he may be able to enjoy the contemplation of supreme truth, goodness, and beauty."—*Aristotle*.

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि शिक्षा व्यक्ति का विकास करने में सहायता देती है। यह उसकी जन्मजात शक्तियों का शैशव से प्रौढ़ता तक इस प्रकार विकास करती है कि वह अपने वातावरण से अपना सामंजस्य स्थापित कर सकता है और उस पर अधिकार प्राप्त करके उसे उत्तम भी बना सकता है।

२. शिक्षा : प्रशिक्षण-कार्य है

Education is an Act of Training

कुछ विचारकों का मत है कि शिक्षा—प्रशिक्षण का कार्य है, जिसके द्वारा व्यक्ति को सामाजिक जीवन में अपना उचित स्थान ग्रहण करने के योग्य बनाया जाता है। मनुष्य मूलतः पशु होता है; अर्थात् वह पशु-प्रवृत्ति रखता है। अतः उसे प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जिससे कि वह अपनी भावनाओं, अभिलाषाओं और व्यवहारों पर अधिकार करना सीख जाए। ऐसा प्रशिक्षण प्राप्त करके ही वह समाज का उत्तरदायी सदस्य बन सकता है। उसे यह प्रशिक्षण शिक्षा द्वारा ही दिया जाता है। इस प्रशिक्षण के बिना वह नैतिक और व्यवस्थित जीवन व्यतीत करने में कठिनाई का अनुभव कर सकता है।

यह कहा गया है कि शिक्षा नेत्रों और मस्तिष्क को प्रशिक्षित करती है। पर किस प्रकार? यदि एक व्यक्ति अपने से बड़ों को अपने सामने देखकर नमस्कार करता है, तो हम उसे प्रशिक्षित व्यक्ति कहते हैं। पर यदि वह सम्मान से नतमस्तक हो जाता है, तो हम उसको शिक्षित व्यक्ति कहते हैं। व्यक्ति के पहले कार्य का सम्बन्ध उसके शरीर से और दूसरे का उसके मस्तिष्क से है। दूसरे शब्दों में, प्रशिक्षण का सम्बन्ध शरीर से और शिक्षा का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। पर क्योंकि शिक्षा प्रशिक्षण का कार्य है, इसलिए सच्ची शिक्षा का अर्थ है—वह प्रशिक्षण जो मनुष्य को शारीरिक और मानसिक प्रतिक्रियाओं (Responses) के स्तरों पर अच्छे और बुरे के अन्तर को समझने के योग्य बनाता है। यह प्रशिक्षण शरीर और मस्तिष्क को इस प्रकार अनुशासित करता है कि व्यक्ति ठीक काम को, ठीक अवसर पर, ठीक प्रकार से करते हैं। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि शिक्षा—शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का प्रशिक्षण है।

३. शिक्षा : मार्ग-प्रदर्शन है

Education is Direction

बालकों को शिक्षा देने का अर्थ है—उनका उचित मार्ग-प्रदर्शन करना। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—बच्चों की अविकसित योग्यताओं, क्षमताओं, शक्तियों और रुचियों को इस प्रकार निर्देशित करना है कि वे अधिक से अधिक लाभप्रद बन सकें। ऐसी

दशा में ही सब कुछ को ठेस पहुँचाये और स्वयं अपमानित हुए बिना अपनी इच्छाओं को पूर्ण कर सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि बच्चों का कुशलता से मार्ग-प्रदर्शन किया जाए। इसके लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक हैं —

१. निर्देशन (Instruction) बच्चे के स्वभाव के विरुद्ध नहीं होना चाहिए।
२. उसके ऊपर कोई अनावश्यक विचार नहीं लादा जाना चाहिए।
३. निर्देशन से पहले उसकी आवश्यकताओं, योग्यताओं, क्षमताओं और रुचियों का अध्ययन कर लेना चाहिए।
४. निर्देशन के समय भय, दबाव और डाँट-डपट का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।
५. जिस लक्ष्य पर बालक पहुँचना चाहता है, उसका ठीक ज्ञान होना चाहिए।
६. निर्देशन करने वाले, अर्थात् शिक्षक को साध्य और साधन (End and Means) का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।
७. शिक्षक को उस समाज की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिसका सदस्य बालक है।
८. शिक्षक को उस मार्ग का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिसमें समाज बालक को ढालना चाहता है।

४. शिक्षा : अभिवृद्धि है
Education is Growth

अभिवृद्धि क्या है ? अभिवृद्धि का अर्थ है—शारीरिक अंगों और मानसिक शक्तियों का विस्तार। अभिवृद्धि के दो महत्त्वपूर्ण तत्त्व हैं—

(१) प्रशिक्षण (Training), और
(२) वातावरण (Environment)

प्रत्येक व्यक्ति अपने प्रशिक्षण और वातावरण के अनुसार क्रिया और प्रतिक्रिया करता है। फलतः वह अपने प्रारम्भिक रूप और स्वभाव से परिवर्तित होकर एक नई सूरत में आ जाता है। परिवर्तन की ये सब प्रक्रियायें (Processes), अभिवृद्धि की प्रक्रियायें हैं, और इसलिए शिक्षा की प्रक्रियायें कहलाती हैं। अतः शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक (Emotional) ढाँचे की अभिवृद्धि—शिक्षा है। शिक्षा प्राप्त करना—अभिवृद्धि करना है।

अब प्रश्न यह उठता है—'अभिवृद्धि कौन कर सकता है ?' इसका केवल एक ही उत्तर है—"केवल वही शक्ति जो अन्तर्निहित (In nature) है।" पर इसको किस प्रकार जा सकता है ? इसको जानने के लिए दो बातें हैं

(१) निर्भरता (Dependence), और
(२) लचीलापन (*Elasticity*)

प्रत्येक अपरिपक्व व्यक्ति में इन दोनों बातों का पाया जाना आवश्यक है। पक्व व्यक्ति परिपक्व व्यक्ति पर निर्भर रहता है, क्योंकि उसे जीवन का अनुभव होता है। इसके साथ ही वह परिपक्व व्यक्ति के अनुभव से कुछ-न-कुछ सीखने के सदैव तैयार रहता है। इसी को 'लचीलापन' कहते हैं। व्यक्ति में जितना अधिक लापन होता है, उतना ही अधिक ज्ञान वह प्राप्त कर सकता है। उसमें जितने क समय तक लचीलापन रहता है, उतने ही अधिक परिवर्तन उसमें होते हैं। वरूप उसका व्यक्तित्व उतना ही अधिक 'संतुलित और संगठित' (Balanced & grated) हो सकता है।

वयस्क की अपेक्षा बच्चे में लचीलापन अधिक होता है। लचीलापन ही उसे तों का निर्माण करने में सहायता देता है। आदतें ही उसकी कुशलता को बढ़ाती , उसकी अभिवृद्धि में योग देती हैं। अतः बच्चे और वयस्क—दोनों की अभिवृद्धि लिए यह आवश्यक है कि वे आदतों का निर्माण करें। पर ये आदतें अच्छी होनी हुये। ये आदतें नैतिक, मानसिक और संवेगात्मक (Moral, Mental & Emo- nal) हो सकती हैं। नैतिक आदतों को मानसिक आदतों से बल प्राप्त होता है। का जितना ही अधिक प्रयोग किया जायगा, कार्य-कुशलता उतनी ही अधिक । परिणामतः उतनी ही अधिक अभिवृद्धि होगी। अतः हम कह सकते हैं कि क से अधिक बुद्धि के प्रयोग से अधिक से अधिक अभिवृद्धि होती है।

अब प्रश्न यह उठता है—"अभिवृद्धि किस प्रकार की होनी चाहिए ?" इसका र केवल यह है कि अभिवृद्धि उचित प्रकार की होनी चाहिए। बच्चों का निर्देशन प्रकार किया जाना चाहिये कि उनके व्यक्तिगत गुणों और सामाजिक सम्बन्धों विकास हो। उनकी अभिवृद्धि जीवन के उचित लक्ष्यों, उच्चतम मूल्यों, आकांक्षाओं र महानताओं की दिशा में होनी चाहिए। उन्हें श्रेष्ठतम मानव-चरित्र की दिशा में भिवृद्धि करनी चाहिए।

प्रशंसनीय अभिवृद्धि से कहीं अधिक आवश्यक संतुलित, सामंजस्यपूर्ण और संगठित अभिवृद्धि (Balanced, harmonious, and integrated growth) है। ी अभिवृद्धि तभी सम्भव है, जब बालक के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं—शारीरिक, नसिक, नैतिक, आध्यात्मिक, सौंदर्यात्मक, और सामाजिक—का समान रूप से कास किया जाय। 'माध्यमिक शिक्षा-आयोग' के अनुसार ऐसा विकास निम्नलिखित तों को अपनाकर किया जा सकता है—

१. चरित्र का प्रशिक्षण (Training of Character)
२. व्यावहारिक और व्यावहारिक कुशलता में उन्नति (Improvement of Practical and Vocational Efficiency)

३. साहित्यिक, कलात्मक और सांस्कृतिक रुचियों का विकास (Development of Literary, Artistic and Cultural Interests).

अन्त में, हम कह सकते हैं कि सम्पूर्ण विकास का अर्थ है—बालक के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का समान रूप से अधिकतम विकास। इसमें उसकी शक्तियाँ—जन्मजात, प्रकट और अप्रकट आ जाती हैं। उसे स्वयं यह अनुभव करना चाहिये कि वह अपने भाग्य का निर्माता है, और वह जिस प्रकार का व्यक्ति बनना चाहे, बन सकता है।

४. शिक्षा : सामाजिक कार्य है

Education is a Social Function

शिक्षा सामाजिक कार्य है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा की सामाजिक है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि व्यक्ति को सामाजिक वात मे ही अत्यधिक लाभप्रद ढंग से शिक्षा दी जा सकती है। जॉन ड्यूवी का कथन "सामाजिक वातावरण में उसके किसी भी सदस्य की सभी क्रियाएँ आ जातं इसका प्रभाव उतनी ही मात्रा में वास्तविक रूप से शिक्षाप्रद होता है, जितनी में एक व्यक्ति समाज की सहयोगी क्रियाओं मे भाग लेता है।"

"The social environment consists of all the activities of a one of its members. It is truly educative in its effect in the degr in which an individual shares or participates in some conjou activity."—*John Dewey.*

इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक वातावरण ही व्यक्ति को वास्तव मे शिक्षित करता है। ऐसा प्राचीन समाज में भी था और आज भी है। प्राचीन काल मे बालक अपने माता-पिता के कार्यों को देखते थे और अपने खेल या कार्य मे उनका अनुकरण करते थे। माता-पिता उनके खेल या कार्य में सुधार करते थे और कुछ कार्यों को स्वय करके दिखाते थे। इस प्रकार बालक उनसे शिक्षा ग्रहण करते थे।

आज का समाज बहुत जटिल हो गया है। फिर भी इस विचारधारा में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है कि 'शिक्षा सामाजिक कार्य' है। बच्चे अब भी अपने माता-पिता का अनुकरण करते हैं। उन्हें अब भी अपने माता-पिता के द्वारा शिक्षा दी जाती है। वास्तव में माता-पिता ही उनके प्रथम शिक्षक होते हैं। पर आज की सांस्कृतिक विरासत में इतने कुशल कार्य आ गये हैं कि सभी माता-पिता कुशलतापूर्वक उन कार्यों की शिक्षा अपने बच्चो को नही दे सकते हैं। यही कारण है कि शिक्षा की विधि में परिवर्तन हो गया है।

शिक्षा की सत्य धारणा
True Conception of Education

हमने जो कुछ ऊपर लिखा है, उससे यह भ्रम उत्पन्न हो सकता है कि शिक्षा का कार्य सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी को पहुँचाना और उसमें उन्नति करना है। ऐसा समझना शिक्षा की गलत धारणा पर पहुँचना है। हैंडरसन का कथन है—"यदि शिक्षा केवल सामाजिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करती है, तो वह केवल अतीत की पुनरावृत्ति करती है। यदि शिक्षा केवल बच्चों की अभिवृद्धि और विकास करती है, तो वह सामाजिक विरासत की अवहेलना करती है। पर यदि शिक्षा अभिवृद्धि और विकास की प्रक्रिया; अर्थात् एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें सामाजिक वातावरण के अंग के रूप में सामाजिक विरासत को उत्तम और बुद्धिमान पुरुषों एवं स्त्रियों के विकास के लिये प्रयोग किया जा सकता है, तो यह शिक्षा की वही प्रक्रिया है, जिसका समर्थन दार्शनिकों और शिक्षा-सुधारकों ने किया है। यही शिक्षा की सत्य धारणा है।"

"To concentrate merely upon passing on the social heritage is to make education serve only as a recapitulation of the past To concentrate merely on the growth and development of children is to make the mistake to neglect the social heritage But to see education as a process of growth and development, a process in which social heritage as a part of the social environment becomes a tool to be used toward the development of the best and most intelligent persons possible, men and women who will promote human welfare, that is to see the educative process as philosophers and educational reformers conceived it. And that is the true conception of education."—*Petten Henderson.*

शिक्षा की प्रक्रिया
The Process of Education

शिक्षा की दो प्रक्रियाएं हैं—(१) द्विमुखी प्रक्रिया (Bi-Polar Process) और (२) त्रिमुखी प्रक्रिया (Tri-Polar Process)।

१. द्विमुखी प्रक्रिया : Bi-Polar Process

एडम्स पहिला व्यक्ति था, जिसने बताया कि "शिक्षा द्विमुखी प्रक्रिया है।"
"Education is a bi-polar process."—*Adams.*

एडम्स ने बताया कि शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करके उसके व्यवहार का निर्माण और परिवर्तन करता है।

आधुनिक काल में रॉस ने भी शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना है। उसने लिखा है—"चुम्बक के समान शिक्षा में भी दो ध्रुवों का होना आवश्यक है, इसलिए यह द्विध्रुवीय (द्विमुखी) प्रक्रिया है।"

"Like a magnet, education must have two poles, it is a bi-polar process."—*Ross*

द्विमुखी प्रक्रिया में दो व्यक्ति होते हैं। एक ध्रुव पर शिक्षक होता है, दूसरे पर शिष्य। दोनों के कार्य का समान महत्त्व होता है। एक बोलता है, दू सुनता है। एक पढ़ाता है, दूसरा पढ़ता है। एक पथ-प्रदर्शन करता है, दूसरा अनुग करता है। उनके कार्यों का एक-दूसरे से सम्बन्ध होता है। सहयोग के बिना वे अप लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। उनके व्यक्तित्व एक-दूसरे पर ,क्रय और प्रतिक्रिया करते हैं। इसका परिणाम होता है—शिक्षा।

इस प्रक्रिया को चलाने के लिए शिक्षक और शिष्य को एक-दूसरे का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। शिक्षक को शिष्य के स्तर पर, और शिष्य को शिक्षक के स्तर पर पहुँचना आवश्यक है। ऐसा किये बिना शिक्षा देने और शिक्षा लेने का कार्य नहीं चल सकता है। इस प्रकार शिक्षा एक चेतन और विचारपूर्ण प्रक्रिया (Conscious and deliberate process) है। इस प्रक्रिया में कर्त्ता और कर्म का सम्बन्ध (Subject-Object Relationship) होता है।

२. त्रिमुखी प्रक्रिया : Tri-Polar Process

जॉन ड्यूवी (John Dewey) शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया न मानकर त्रि प्रक्रिया मानता है। उसका कथन है कि शिक्षा में शिक्षक और शिष्य के अति एक तीसरा तत्त्व भी है। यह तत्त्व सामाजिक शक्तियाँ हैं। शिक्षा में इन तीनों त की पारस्परिक क्रिया निहित है। सामाजिक शक्तियाँ समाज या सामाजिक वाताव के माध्यम से शिक्षक और शिष्य को विषय-सामग्री देती हैं। इसी विषय-सामग्री हम विस्तृत अर्थ में 'पाठ्य-क्रम' (Curriculum) कहते हैं।

सामाजिक तत्त्व पर बल देते हुए ड्यूवी (Dewey) ने लिखा है कि बालक को उस समाज में और उस समाज के लिए रहना है, जिसका कि वह सदस्य है। अतः उसका विकास समाज में और समाज के द्वारा हो सकता है। ड्यूवी (Dewey) ने शिक्षा के सामाजिक तत्त्व को महत्त्व दिया है, क्योंकि समाज के द्वारा ही बच्चों में कुशलता और समाज-स्वीकृत आचरण का विकास होता है। इसी के फल-स्वरूप वे सामाजिक प्राणी बनते हैं। उन्हें ऐसा बनाना ही सच्ची शिक्षा है। अतः 'सामाजिक तत्त्व' शिक्षा की प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है।

शिक्षा के आवश्यक अंग
Essential Parts of Education

अमरीकी शिक्षाविद हैंडरसन (Henderson) के अनुसार—शिक्षा के तीन आवश्यक अंग हैं—(१) प्रशिक्षण (Training), (२) निर्देश (Instruction), और (३) प्रेरणा (Inspiration)।

१. प्रशिक्षण : Training

प्रशिक्षण का मुख्य ध्येय—आदतों का निर्माण करना है। हम बालकों को अच्छी आदतें डालने मे जितनी अधिक सहायता देंगे, उतने ही अधिक अच्छे ढङ्ग से वे जीवन के लिए तैयार होंगे। पर केवल प्रशिक्षण ही काफी नहीं है। यह पशुओं के लिए काफी हो सकता है, पर मनुष्यों के लिए नहीं। प्रशिक्षण के द्वारा हम बालक में अच्छे कार्यों को करने की आदत डाल सकते हैं, पर उसे यह जानना भी आवश्यक है कि वह अपने कार्यों को इस ढग से क्यों करे, जिससे समाज उनको स्वीकार करे। अतः केवल प्रशिक्षण ही काफी नहीं है।

२. निर्देश : Instruction

निर्देश बालक को ज्ञान प्राप्त करने और अपनी बुद्धि का विकास करने में सहायता देता है। बालक शिक्षक से बहुत-कुछ सुनता है, और उसके निर्देश के अनुसार पुस्तकों और विभिन्न विषयों को पढ़ता है। फलतः उसके ज्ञान की वृद्धि होती है। उसमें थोड़ा-बहुत विवेक भी उत्पन्न हो जाता है। इसलिए वह अच्छे और बुरे कार्यों में अन्तर करने लगता है। समय-समय पर वह अपनी तर्क-शक्ति का भी प्रयोग करता है। पर यह आवश्यक नहीं है कि सभी बालक ऐसा करें। दूसरे शब्दों में, यह आवश्यक नहीं है कि सभी बालक निर्देश प्राप्त करके अपने और समाज के हित के लिए अच्छे कार्य करें। अत. केवल निर्देश ही काफ़ी नही है।

३. प्रेरणा : Inspiration

बालक में प्रशिक्षण द्वारा अच्छी आदतों का निर्माण हो जाता है। निर्देश द्वारा उसकी बुद्धि का विकास हो जाता है। पर अच्छी आदतों और ज्ञान पर आधारित अच्छे कार्यों को करने के लिए उसे प्रेरणा की आवश्यकता है। इसीलिए प्रेरणा को शिक्षा का सबसे आवश्यक और महत्वपूर्ण अंग माना गया है। प्रेरणा द्वारा ही बालक के संवेगों (Emotions) को उचित दिशा दी जा सकती है, और तभी वह अपने और दूसरों के हित के लिए अच्छे कार्य कर सकता है।

शिक्षा और निर्देश में अन्तर
Distinction Between Education & Instruction

शिक्षा और निर्देश या अध्यापन में अग्रलिखित अन्तर हैं—

साधारणत. जब बालक वयस्क हो जाता है, तब इसका अन्त हो जाता है। इस शिक्षा का प्रमुख स्थान स्कूल है। स्कूल के अतिरिक्त चर्च, पुस्तकालय, अजायबघर, चित्र-भवन और पुस्तकें भी नियमित शिक्षा के साधन (Agencies) हैं।

(ब) अनियमित शिक्षा (Informal Education)—हिन्दू संस्कृति के अनुसार यह शिक्षा बालक के जन्म से कुछ मास पहले ही प्रारम्भ हो जाती है। इसीलिए होने वाली माताओं से यह आशा की जाती है कि अपने आचरण को अच्छा बनायें। अभिमन्यु ने अपनी माता के गर्भ में ही चक्र-व्यूह को तोड़ना सीख लिया था।

अनियमित शिक्षा बालक को अनायास और आकस्मिक रूप में प्राप्त होती है। यह शिक्षा जीवन भर चलती रहती है। इसे बालक घर में, घर से बाहर, खेल के मैदान में, अपने मित्रों के साथ बात-चीत करने में, उठते-बैठते, खेलते-कूदते हर समय किसी-न-किसी रूप में प्राप्त करता है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहिनों, मित्रों, शिक्षकों आदि को कुछ करते हुए देखता है और उनका अनुकरण करता है। इस शिक्षा की कोई निश्चित योजना, कोई निश्चित स्थान, कोई निश्चित समय और कोई निश्चित नियम नहीं होता है। इसके विपरीत, यह शिक्षा हर समय और हर स्थान पर किसी-न-किसी रूप में चलती है। इस शिक्षा के साधन हैं—परिवार, धर्म, समाज, राज्य, रेडियो, समाचार-पत्र, खेल के मैदान, दल, गुट, युवक-समूह आदि।

२. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष शिक्षा
Direct & Indirect Education

(अ) प्रत्यक्ष शिक्षा (Direct Education)—इस शिक्षा को 'वैयक्तिक-शिक्षा' (Personal Education) भी कहा जाता है। यह शिक्षा अध्यापक और छात्र के बीच होती रहती है। अध्यापक अपने ज्ञान, आदर्शों और उद्देश्यों से छात्र के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

(ब) अप्रत्यक्ष शिक्षा (Indirect Education)—इस शिक्षा को 'अवैयक्तिक-शिक्षा' (Impersonal Education) भी कहा जाता है। जब छात्र पर अध्यापक के व्यक्तित्व का प्रभाव नहीं पड़ता है, तब वह विभिन्न प्रकार के अप्रत्यक्ष साधनों को अपना कर छात्र के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है। इसी शिक्षा को अप्रत्यक्ष शिक्षा कहते हैं।

हम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष विधियों के अन्तर को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मान लीजिए, शिक्षक बालकों में समय-तत्परता और नियमबद्धता (Punctuality and Regularity) की आदतों का विकास करना चाहता है। वह इस कार्य को दो प्रकार से कर सकता है—

१. वह समय-तत्परता और नियम-बद्धता पर उपदेश दे सकता है।
२. वह अपने कार्यों में समय-तत्पर और नियम-बद्ध हो सकता है।

इन दोनों विधियों में पहली 'प्रत्यक्ष' और दूसरी 'अप्रत्यक्ष' है। इनमें दूसरी र पहली से अच्छी है, क्योंकि उदाहरण उपदेश से अच्छा होता है (Example is ter than precept)। उदाहरण का प्रभाव स्थायी होता है, जबकि उपदेश का व क्षणिक होता है।

कुछ दशाओं में प्रत्यक्ष विधि को भी अपनाया जा सकता है। उदाहरणार्थ— के से कहना चाहिए कि यदि वह गर्मी के मौसम में धूप में खेलेगा, तो बीमार हो ता है। उससे यह भी कहा जा सकता है कि जाड़े के मौसम में पानी में भीगने सर्दी लग सकती है। फिर भी बालक को इन बातों का स्वयं अनुभव करने ा चाहिए, क्योंकि तभी वह उपदेश के महत्त्व को समझ सकेगा। अतः शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह बच्चों में कार्य करने की आन्तरिक इच्छा उत्पन्न करे और उन उसे करने के लिए किसी प्रकार का बल-प्रयोग न करे। ऐसी दशा में ही मार्ग-र्शन को सफल माना जाता है। यही वास्तव में सच्ची शिक्षा है। अतः हम कह ते हैं कि शिक्षा—विवेकपूर्ण और ज्ञानपूर्ण पथ-प्रदर्शन है।

वैयक्तिक और सामूहिक शिक्षा
Individual & Collective Education

(अ) वैयक्तिक शिक्षा (Individual Education)—वैयक्तिक शिक्षा का म्बन्ध केवल एक बालक से होता है। यह शिक्षा उसको व्यक्तिगत रूप से और केले दी जाती है। शिक्षा देते समय उसकी रुचि, प्रकृति, योग्यता और व्यक्तिगत भिन्नता का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। शिक्षा देते समय इन बातों के अनुकूल शिक्षा विधियों का प्रयोग किया जाता है। आधुनिक समय में वैयक्तिक शिक्षा पर ल दिया जा रहा है। परिणामतः अनेकों वैयक्तिक शिक्षण-पद्धतियों की खोज ी गई है।

(ब) सामूहिक शिक्षा (Collective Education)—सामूहिक शिक्षा का म्बन्ध एक बालक से न होकर, बालकों के समूह से होता है। बहुत से बालकों के क समूह को एक कक्षा में एक साथ शिक्षा दी जाती है। इस शिक्षा में बालकों की यक्तिगत रुचियों, प्रवृत्तियों, योग्यताओं और विभिन्नताओं की ओर कोई ध्यान नहीं या जाता है। आजकल सभी देशों के, सभी प्रकार के स्कूलों में शिक्षा का यही वरूप है।

. सामान्य और विशिष्ट शिक्षा
General & Specific Education

(अ) सामान्य शिक्षा (General Education)—इस शिक्षा को उदार शिक्षा ी कहते हैं। आज-कल के भारतीय हाई और हायर सेकेंडरी स्कूलों में इसी कार की शिक्षा दी जाती है। इस शिक्षा का कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता है। ह बालकों को केवल सामान्य जीवन के लिए तैयार करती है। इसका उद्देश्य केवल
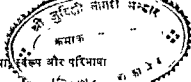
उनकी सामान्य बुद्धि को तीव्र करना है। यह उनको किसी विशेष व्यवसाय के लिये तैयार नहीं करती है।

(ब) विशिष्ट शिक्षा (Specific Education)—यह शिक्षा किसी विशेष लक्ष्य को ध्यान में रखकर दी जाती है। इसका उद्देश्य—बालकों को किसी विशेष व्यवसाय या निश्चित कार्य के लिए तैयार करना होता है। इस शिक्षा को प्राप्त करने के बाद बालक जीवन के एक विशेष या निश्चित क्षेत्र में कार्य करने के लिए कुशल समझा जाने लगता है। बालक को इञ्जीनियर, डाक्टर, वकील या एकाउन्टेन्ट बनाना विशिष्ट शिक्षा का उदाहरण है।

शिक्षा की परिभाषाएँ
Definitions of Education

शिक्षा के बारे में इतना सब-कुछ लिखने के बाद, हम शिक्षा के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये कुछ परिभाषायें दे रहे हैं। इनसे स्पष्ट हो जायगा कि विभिन्न शिक्षा-शास्त्रियों के अनुसार शिक्षा का अर्थ क्या है।

१. शिक्षा : जन्मजात शक्तियों को व्यक्त करने की प्रक्रिया के अर्थ में
Education as the Process of Drawing Out the Innate Powers

(i) सुकरात "शिक्षा का अर्थ है—प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में अदृश्य रूप से विद्यमान संसार के सर्वमान्य विचारों को प्रकाश में लाना।"

"Education means the bringing out of the ideas of universal validity which are latent in the mind of every man."—*Socrates*

(ii) एडीसन—"जब शिक्षा मानव-मस्तिष्क को प्रभावित करती है, तब वह उसके प्रत्येक अदृश्य गुण और पूर्णता को बाहर लाकर व्यक्त करती है।"

"When education works on noble mind, it draws out to view every latent virtue and perfection."—*Addison*

(iii) फ्रॉबेल—"शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक की जन्मजात शक्तियाँ बाहर प्रकट होती हैं।"

"Education is a process by which the child makes its internal external."—*Froebel.*

(iv) महात्मा गांधी—"शिक्षा से मेरा अभिप्राय उन सर्वश्रेष्ठ गुणों का प्रदर्शन है, जो बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में विद्यमान हैं।"

"By education, I mean, an all-round drawing out of the best in child and man—body, mind and spirit." —*Mahatma Gandhi.*

२. शिक्षा : वैयक्तिकता के पूर्ण विकास के अर्थ में
Education as the Complete Development of Individuality

(i) टी० पी० नन — 'शिक्षा वैयक्तिकता का पूर्ण विकास है, जिससे कि व्यक्ति अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार मानव जीवन को योग दे सके।'

'Education is the complete development of individuality so that he can make an original contribution to human life according to his best capacity —*T. P. Nunn*

(ii) पेस्टालॉजी — 'शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास है।'

"Education is the natural, harmonious and progressive development of man's innate powers.' —*Pestalozzi*

(iii) कान्ट — "शिक्षा व्यक्ति की उस पूर्णता का विकास है, जिसकी उसमें क्षमता है।"

"Education is the development in the individual of all the perfection of which he is capable."—*Kant*

(vi) रवीन्द्रनाथ टैगोर — "शिक्षा का अर्थ है — मस्तिष्क को इस योग्य बनाना कि वह अन्तिम सत्य की खोज कर सके, उसे अपना बना सके और व्यक्त कर सके।"

"Education means enabling the mind to find out the ultimate truth, make truth its own, and give expression to it."

—*Rabindranath Tagore.*

३. शिक्षा : समूह में परिवर्तन करने के अर्थ में
Education as Producing Change in the Group

(i) ब्राउन — "शिक्षा चैतन्य रूप में एक नियन्त्रित प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन किये जाते हैं और व्यक्ति के द्वारा समूह में।'

"Education is the consciously controlled process whereby changes in behaviour are produced in the person, and through the person within the group."—*Brown.*

(ii) रिआर्गेनिजेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल-रिपोर्ट — "शिक्षा का उद्देश्य हर व्यक्ति के ज्ञान, रुचियों, आदर्शों, आदतों और शक्तियों का विकास करना है, जिससे कि उसे अपना उचित स्थान मिल सके और वह उस स्थान का प्रयोग स्वयं और समाज को उच्च उद्देश्यों की ओर ले जाने को कर सके।"

'The purpose of education is to develop in each individual the knowledge, interests, ideals, habits, and powers whereby he will

find his place and use that place to shape both himself and societ toward even nobler ends" —*Report of the Commission on th Reorganization of the Secondary Schools, U. S. A*

४. शिक्षा : वातावरण से सामंजस्य करने के अर्थ में
Education as Adjustment to Environment

(i) हार्न—"शिक्षा शारीरिक और मानसिक रूप से विकसित सचेत मानव का अपने मानसिक, उद्वेगात्मक और इच्छात्मक वातावरण से श्रेष्ठ सामंजस स्थापित करना है।"

"Education is the superior adjustment of a physically developed conscious human being to his intellectual, emotional an volitional environment"—*Horne*

(ii) बॉसिंग—"शिक्षा का कार्य व्यक्ति का वातावरण से उस सीमा त सामंजस्य स्थापित करना है, जिससे व्यक्ति और समाज—दोनों को स्थायी सन्तो प्राप्त हो सके।"

"The function of education is conceived to be the adjustmen of man to his environment to the end that the most endurin satisfaction may accrue to the individual and to the society."

—*Bosing*

(iii) जेम्स—"शिक्षा कार्य-सम्बन्धी अर्जित आदतों का संगठन है, जो व्यक्ति को उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण में उचित स्थान देती है।"

"Education is the organization of acquired habits of suc action as will fit the individual to his physical and social environ ment."—*James*

(iv) बटलर—"शिक्षा प्रजाति की आध्यात्मिक सम्पत्ति के साथ व्यक्ति क्रमिक सामंजस्य है।"

"Education is gradual adjustment of the individual to th spiritual possessions of the race"—*Butler*

(v) रेमांट—"शिक्षा विकास का वह क्रम है, जिसके द्वारा व्यक्ति विभि प्रकार से अपने भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण से धीरे-धीरे अपन सामंजस्य स्थापित करता है।"

"Education is defined as a process of the development b which a human being adapts himself gradually in various ways t his physical, social and spiritual environment."—*Raymont.*

उपरोक्त परिभाषाओं की आलोचना
Criticism of the Above Definitions

शिक्षा की जो परिभाषायें ऊपर दी गई है, उनमे से किसी को भी पूर्ण नहीं कहा जा सकता है। सभी परिभाषाये शिक्षा के एक विशेष पहलू पर बल देती हैं। शिक्षा केवल बालक की जन्मजात शक्तियों को बाहर लाने की प्रक्रिया नही है। शिक्षा का सम्बन्ध केवल बालक के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास से भी नही है। शिक्षा का कार्य केवल यही नही है कि वह समूह मे परिवर्तन उत्पन्न करे। शिक्षा का कार्य केवल यही नही माना जा सकता है कि वह व्यक्ति का वातावरण से सामजस्य स्थापित करे। शिक्षा का अर्थ और कार्य इससे कहीं अधिक व्यापक हैं। इसीलिए शिक्षा की उपरोक्त सभी परिभाषायें अधूरी है। शिक्षा के अन्तर्गत व्यक्ति, समाज, वातावरण, सामजिक विरासत आदि सभी कुछ आ जाते हे। इन्ही बातो को ध्यान मे रखकर हम शिक्षा की आधुनिक परिभाषा को नीचे दे रहे हैं।

शिक्षा की आधुनिक परिभाषा
Modern Definition of Education

राष्ट्रपति राधाकृष्णनन् "अब यह बात अधिक ही अधिक स्वीकार की जाने लगी है कि शिक्षा के प्रति सन्तुलित दृष्टिकोण का विकास किया जाना चाहिये। मानसिक प्रशिक्षण के साथ-साथ कल्पना-शक्ति और मनोभावो को निर्मल बनाया जाना चाहिये। जिज्ञासु मस्तिष्क, अन्तर्ज्ञानी हृदय, चेतनाशील आत्मा और छान-बीन करने वाले विवेक का विकास किया जाना चाहिये। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग मे हमें यह याद रखना चाहिए कि जीवन का वृक्ष लोहे के ढाँचे से बिल्कुल भिन्न है। यदि हम विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके निर्धनता को दूर करना चाहते हैं तो ललितकलाओ द्वारा मस्तिष्क की हीनता को भी दूर किया जाना चाहिए। केवल भौतिक दरिद्रता ही दुःख का कारण नहीं है। हमे समाज के शक्तिशाली हितो को ही नहीं वरन् मनाव-हितो को भी सन्तुष्ट करना चाहिये। सौन्दर्यात्मक और आध्यात्मिक उत्कर्ष पूर्ण मानव के निर्माण मे योग देना है। मानव के निर्माणकारी पहलू का विकास कला के द्वारा होना है। सारांश मे, शिक्षा को मनुष्य और समाज का निर्माण करना चाहिए।"

"It is now increasingly recognized that a balanced view of education should be developed In addition to intellectual train- imagination should be fostered and the emotions refined. The ve mind, the intuitive heart, the sensitive spirit and the ing conscience should be developed In this age of science technology, we should remember that the tree of life is some- quite distinct from a grid of steel. Even as we try to remove

poverty by the application of science and technology, poverty of mind requires to be removed by fine arts. Materal poverty is not the only source of unhappiness We should serve not the power interests of the community but its human interests Aesthetic and spiritual values contribute to the making of a full man, man's creative side is nourished by art In a word education should be man-making and society-making" —S. Radhakrishnan *Occasional Speeches and Writings, Third Series*, p. 191.

UNIVESITY QUESTIONS

1. What is the derivation and the present meaning of the word, "Education."?
2. What do you understand by narrower and wider meanings of education ?
3. Institute a brief comparison between the ancient and modern conceptions of education
4. Discuss the place and importance of social environment in the education of the child.
5. Comment on the following—
   (a) "Education is a natural, harmonious and progressive development of man's innate powers."
   (b) "Education means the act of training."
   (c) "The process of education is a social process."
   (d) "Education is not a bi-polar, but a tri-polar process,"
   (e) "Integrated growth should be an all round growth."
   (f) "Education is direction. In the process of direction the direct as well as the indirect way is useful."
6. Write notes on :—
   (a) True conception of education
   (b Forms of education, and
   (c) Parts of education.

"The function of education is to help the growing of a helpless young animal into a happy, moral and efficient human being."
– *John Dewey.*

शिक्षा के कार्यों के बारे मे इस प्रकार के अनेकों विचार दिए जा सकते हैं। यहाँ पर हम भारतीय दशाओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के सामान्य कार्यों का अध्ययन करेंगे।

शिक्षा के सामान्य कार्य
General Functions of Education

१. जन्मजात शक्तियों का प्रगतिशील विकास
Progressive Development of Innate Powers

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान को महत्त्वपूर्ण स्थान देने वाले शिक्षा-शास्त्रियो का कहना है कि शिक्षा का मुख्य कार्य—बालक की जन्मजात शक्तियो का विकास करना है। मनोवैज्ञानिको का कहना है कि बालक प्रेम, जिज्ञासा, तर्क, कल्पना, आत्म-सम्मान आदि शक्तियों को लेकर जन्म लेता है। अतः शिक्षा द्वारा इन शक्तियो का विकास किया जाना आवश्यक है। पेस्टॉलाजी (Pestalozzi) ने इसका बलपूर्वक समर्थन किया है। इसके बारे में उसने लिखा है—"शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास है।"

"Education is the natural, harmonious, and progressive development of man's innate powers."—*Pestalozzi.*

२. संतुलित व्यक्तित्व का विकास
Development of Balanced Personality

शिक्षा का एक मुख्य कार्य है—बालक के व्यक्तित्व का विकास करना। व्यक्तित्व के अन्तर्गत व्यक्ति के सभी पहलू आ जाते हैं; जैसे—शारीरिक, मानसिक नैतिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक, आदि। शिक्षा द्वारा इन सभी पहलुओं का संतुलित विकास किया जाना चाहिए। इनमें से एक भी पहलू के विकृत होने से व्यक्तित्व का संतुलित विकास नहीं हो सकेगा। उदाहरण के लिये—यदि व्यक्ति का शरीर या मस्तिष्क स्वस्थ नहीं है, यदि वह सत्य और असत्य के अन्तर को नहीं समझता है, यदि वह अपनी भावनाओं पर अधिकार नहीं रख सकता है, तो हम उसके व्यक्तित्व को संतुलित नहीं कहेंगे। ऐसी दशा में वह उन्नति के पथ पर आगे नहीं बढ़ सकेगा।

अमेरिका में शिक्षा द्वारा संतुलित व्यक्तित्व का विकास न किये जाने पर असंतोष प्रकट करते हुए विलियम पी० फ्रॉम्म ने लिखा है—"हमारे यहाँ अमेरिका में संसार में सबसे विशाल पब्लिक-स्कूल प्रणाली, सबसे महँगी कॉलिजों की इमारतें और

सबसे अधिक विस्तृत पाठ्यक्रम है पर कहीं भी शिक्षा संतुलित व्यक्तित्व के विकास के प्रति इतनी उदासीन नहीं है, जितनी कि अमरीका में।"

"We have in America the largest public school system on earth, the most expensive college buildings, the most extensive curriculum, but nowhere else is education so blind to the development of balanced personality as in America" —*William P. Faunce*

३ मूल प्रवृत्तियों का नियंत्रण, पुनर्निर्देशन और शोधन

Control, Redirection & Sublimation of Instincts

बालक में कुछ मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं, जैसे—जिज्ञासा (Curiosity), आत्म-प्रदर्शन (Self-Assertion) और सामूहिक जीवन (Gregariousness)। ये और अन्य सभी मूलप्रवृत्तियाँ जन्मजात होती हैं। इनको सीखा नहीं जाता है। इनमें स्थिरता होती है। ये मनुष्य के जीवन में सदैव बनी रहती हैं। प्रत्येक मूल-प्रवृत्ति का कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता, और उसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए मनुष्य कार्य करता है। अब क्योंकि मनुष्य सामाजिक प्राणी है और उसे समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ रहना है, इसलिए यह आवश्यक है कि उसके द्वारा किए गए कार्य अच्छे हैं। इन कार्यों को यह रूप शिक्षा के द्वारा ही दिया जा सकता है। अतः यह आवश्यक है कि व्यक्ति को उन पर नियन्त्रण करना सिखाए, उनका पुनर्निर्देशन करे अथवा उनकी शक्ति को अच्छी दिशा में मोड़े और उनका शोधन करे अथवा उनकी शक्ति को अच्छे कार्यों में लगाए। ऐसा करके ही शिक्षा बालक और समाज का हित कर सकेगी।

शिक्षा के इस कार्य पर बल देते हुए डेनियल वेबस्टर ने लिखा है—"शिक्षा के द्वारा भावनाओं को अनुशासित, आवेगों को नियंत्रित और अच्छी प्रेरणाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।"

"Through education the feelings are to be disciplined, the passions are to be restrained, true and worthy motives are to be inspired"—*Daniel Webster*

४. वयस्क जीवन की तैयारी

Prepartion for Adult Life

शिक्षा बालक को वयस्क जीवन के लिए तैयार करती है। "आज का बालक कल का नागरिक है।" (The child of today is the citizen of tomorrow) ... शब्दों में, बालक बड़ा होकर नागरिक बनेगा। इस स्थिति में उसके कुछ ..., कुछ दायित्व और कुछ अधिकार होंगे। शिक्षा के द्वारा उसे इस प्रकार ... किया जाना चाहिए कि वह इनका निर्वाह कर सके। शिक्षा के इस पहलू पर ... देते हुए मिल्टन ने लिखा है—"मैं उसी को पूर्ण शिक्षा कहता हूँ, जो मनुष्य को

शान्ति और युद्ध के समय व्यक्तिगत और सार्वजनिक—दोनों प्रकार के सब कार्यों को उचित रूप से करने के योग्य बनाती है।"

"I call a complete education that which fits a man to perform justly all the offices, both private and public, of peace and war."—*Milton*

५. राजनैतिक और राष्ट्रीय सुरक्षा
Political & National Security

शिक्षा का कार्य—राजनैतिक और राष्ट्रीय सुरक्षा को बनाये रखना है। शिक्षा के अभाव में इस सुरक्षा की प्राप्ति या इसका अन्त होना स्वाभाविक है। भारत पर अंग्रेजों के लम्बे शासन काल में शिक्षा ने यह कार्य नहीं किया। यही कारण था कि हमारे देश को इस बात का बड़ी कठिनता से आभास हुआ कि इस प्रकार की भी कोई सुरक्षा होती है। आज जब भारत स्वतन्त्र है, इस सुरक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। देश पर चीन और पाकिस्तान के आक्रमण हो चुके हैं और भारत की राजनैतिक तथा राष्ट्रीय सुरक्षा संकट में पड़ चुकी है। अतः शिक्षा का प्रमुख कार्य है कि व्यक्तियों को इस सुरक्षा को बनाये रखने के लिए तैयार करना।

एच० मैन का कथन है—"केवल शिक्षा से ही हमारी सुरक्षा सम्भव है।"

"Education is our only political safety."—*H. Mann.*

कासथ के अनुसार—"प्रत्येक राष्ट्र की सुरक्षा और भाग्य का मुख्य आधार व्यक्तियों की उचित शिक्षा ही है।"

"It is on the sound education of the people that the security and destiny of every nation chiefly rest."—*Kossuth*

६. संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण
Preservation of Culture & Civilization

शिक्षा का एक सामान्य कार्य—संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण है। प्रत्येक समाज के अपने रीति-रिवाज, परम्परायें, नैतिकता, धर्म, विश्वास, आदि होते हैं, जिनको उस समाज ने अति प्राचीन समय से लेकर आज तक अर्जित किया है। प्रत्येक समाज को अपनी संस्कृति और सभ्यता पर गर्व होता है और वह उन्हें किसी प्रकार भी नष्ट नहीं होने देना चाहता है। अतः शिक्षा का कार्य न केवल इनका संरक्षण करना है, वरन् इनकी प्रगति भी करना है। शिक्षा के इस कार्य पर अपने विचारों को व्यक्त करते हुए ओटावे ने लिखा है—"शिक्षा का एक कार्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को अपने तरुण और कार्यशील सदस्यों को प्रदान करता है।"

"One of the tasks of education is to hand on the cultural

९. उत्तम नागरिक का निर्माण

Creation of Good Citizens

उत्तम नागरिक उत्तम राज्य का स्तम्भ है। यही कारण है कि प्रत्येक राज्य इस दिशा में प्रयत्नशील रहता है कि उसके नागरिक अच्छे हों। वह आशा करता है कि उसके नागरिक ईमानदार, परिश्रमी, देशभक्त और अपने कर्त्तव्यों तथा दायित्वों को भली प्रकार समझने वाले हों। इन गुणों का विकास शिक्षा द्वारा किया जाना ही सम्भव है। इसीलिये शिक्षा का यह अनिवार्य कार्य समझा जाता है कि वह व्यक्तियों में इन गुणों का विकास करके उनको उत्तम नागरिक बनाये। 'न्यूयार्क की वैधानिक समिति' ने अपनी एक रिपोर्ट में लिखा है —"सार्वजनिक शिक्षा-व्यवस्था का मुख्य कार्य छात्रों को राज्य में नागरिकता के दायित्वों और कर्त्तव्यों को निभाने के लिये तैयार करना है।"

"The prime purpose of public educational system is to prepare students to assume obligations and duties of citizenship in the State."—*Revolutionary Radicalism*, Vol. III, p 2343.

१०. सामाजिक सुधार और उन्नति

Social Reform & Progress

समाज द्वारा बालक की शिक्षा का आयोजन इसलिये किया जाता है जिससे कि बालक न केवल अपने को समाज का अनुकूल बनाए वरन् समाज के नियमों और सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त करके उसका सुधार करे और उसे उचित दिशा में आगे बढ़ाये। शिक्षा के इस कार्य को महत्त्वपूर्ण बताते हुए ओटावे ने लिखा है :—"यह निस्सन्देह सत्य है कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है।"

"This is certainty true that education has to perform an important task in the direction of social change."—*Ottaway.*

ड्यूवी ने भी शिक्षा के इस कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा है—"शिक्षा में अति निश्चित और अल्पतम साधनों द्वारा सामाजिक और संस्थागत उद्देश्य के साथ-साथ समाज के कल्याण, प्रगति और सुधार में रुचि का पुष्पित होना पाया जाता है।"

"In education is found the flowering of social and institutional motive, interest in the welfare of society and its progress and reform by surest and shortest means"—*John Dewey*.

values and behaviour patterns of the society to its young and potential members."—*Ottaway*

७. चरित्र-निर्माण और नैतिक विकास
Character Formation & Moral Development

शिक्षा का एक अति महत्वपूर्ण कार्य बालक के चरित्र का निर्माण और उसका नैतिक विकास करना है। शिक्षा के इस कार्य पर राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने सबसे अधिक बल दिया है। उनका कहना है—"चरित्र भाग्य है। चरित्र वह वस्तु है, जिस पर राष्ट्र के भाग्य का निर्माण होता है। तुच्छ चरित्र वाले मनुष्य श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण नहीं कर सकते हैं। यदि हमारे पैरों के नीचे की जमीन खिसक रही है, तो हम पहाड़ पर नहीं चढ़ सकते हैं। जबकि हमारे भवन की नींव ही हिल रही है, तब हम उस ऊँचाई पर किस प्रकार पहुँच सकते हैं जिस पर हम पहुँचना चाहते हैं?

"Character is destiny Character is that on which the destiny of a nation is built One cannot have a great nation with men of small character We cannot climb the mountain when the very ground at our feet is crumbling. When the very basis of our structure is shaky, how can we reach the heights which we have set before ourselves?" —President Radhakrishnan *Occasional Speeches & Writings*, pp. 54-55.

हरबर्ट का कथन है—"अच्छे नैतिक चरित्र का विकास ही शिक्षा है।"

"Education is the development of good moral character."

—*Herbart.*

८. सामाजिक भावना का समावेश
Inculcation of Social Feeling

व्यक्ति और समाज का एक-दूसरे से अटूट सम्बन्ध है। व्यक्ति अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक समाज में रहता है। समाज में रहकर ही वह उन्नति कर सकता है, यश प्राप्त कर सकता है और दूसरों की भलाई कर सकता है। यह सब वह तभी कर सकता है जब उसमें प्रेम, दया, परोपकार, सहानुभूति आदि के सामाजिक गुण हों। इन गुणों का विकास शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। एच० गार्डन के अनुसार—"शिक्षक को यह जानना आवश्यक है कि वह सामाजिक प्रक्रिया को उन व्यक्तियों को समझाने की दिशा में कार्य करे, जो इसे समझने में असमर्थ हैं।"

"The educator needs to recognise that he may move in the direction of bringing the social process to individuals, who are not capable of dealing with it"—*H. Gordon.*

९. उत्तम नागरिक का निर्माण
Creation of Good Citizens

उत्तम नागरिक उत्तम राज्य का स्तम्भ है । यही कारण है कि प्रत्येक राज्य इस दिशा मे प्रयत्नशील रहता है कि उसके नागरिक अच्छे हो। वह आशा करता है कि उसके नागरिक ईमानदार, परिश्रमी, देशभक्त और अपने कर्त्तव्यों तथा दायित्वो को भली प्रकार समझने वाले हो । इन गुणो का विकास शिक्षा द्वारा किया जाना ही सम्भव है। इसीलिये शिक्षा का यह अनिवार्य कार्य समझा जाता है कि वह व्यक्तियों मे इन गुणो का विकास करके उनको उत्तम नागरिक बनाये । 'न्यूयार्क की वैधानिक समिति' ने अपनी एक रिपोर्ट मे लिखा है —"सार्वजनिक शिक्षा-व्यवस्था का मुख्य कार्य छात्रों को राज्य में नागरिकता के दायित्वों और कर्त्तव्यों को निभाने के लिये तैयार करना है।"

"The prime purpose of public educational system is to prepare students to assume obligations and duties of citizenship in the State."—*Revolutionary Radicalism*, Vol. III. p. 2343.

१०. सामाजिक सुधार और उन्नति
Social Reform & Progress

समाज द्वारा बालक की शिक्षा का आयोजन इसलिये किया जाता है जिससे कि बालक न केवल अपने को समाज को अनुकूल बनाए वरन् समाज के नियमों और सिद्धान्तो का ज्ञान प्राप्त करके उसका सुधार करे और उसे उचित दिशा मे आगे बढाये । शिक्षा के इस कार्य को महत्त्वपूर्ण बताते हुए ओटावे ने लिखा है —"यह निस्सन्देह सत्य है कि सामाजिक परिवर्तन की दिशा मे शिक्षा को महत्त्वपूर्ण कार्य करना पड़ता है।"

"This is certainty true that education has to perform an important task in the direction of social change."—*Ottaway.*

ड्यूवी ने भी शिक्षा के इस कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा है—"शिक्षा मे अति निश्चित और अल्पतम साधनों द्वारा सामाजिक और संस्थागत उद्देश्य के साथ-साथ समाज के कल्याण, प्रगति और सुधार में रुचि का पुष्पित होना पाया जाता है।"

"In education is found the flowering of social and institutional motive, interest in the welfare of society and its progress and reform by surest and shortest means"—*John Dewey.*

३

मानव-जीवन में शिक्षा के कार्य

FUNCTIONS OF EDUCATION IN HUMAN LIFE

"और किसी बात के बजाय शिक्षा से कहीं अधिक परिवर्तन किए जाते हैं। सच्ची शिक्षा वही है, जो व्यक्तियों की योग्यता और उससे अधिक विशाल सम्पूर्णता अर्थात् देश की आवश्यकताओं के अनुकूल हो। लोगों के मनोविज्ञान और सामाजिक तथा निजी आदतों को बदलने के लिए और उनको प्रजातंत्र तथा स्वतंत्रता के नये कार्यों को करने के लिए तैयार करने का उपाय केवल यही है कि उनको शिक्षित किया जाय।"

"More changes are brought about by education than by anything else. Education, to be true, must fit in with the capacity of the individuals, quite in keeping with the needs of the larger whole, namely the country. The only way of changing the psychology, and social and personal habits of the people and to prepare them for the new tasks of democracy and freedom; is to educate them."—*Dr, R. S. Mani*.

विषय-प्रवेश

परतन्त्र भारत में अंग्रेजों ने हमारे सामने शिक्षा का जो रूप रखा, वह हमारे लिए नया था, यद्यपि हम अशिक्षित नहीं थे। उन्होंने स्कूलों और कॉलिजों में अंग्रेजी के अध्ययन पर बल देकर एक नये भारतीय वर्ग का निर्माण किया। इस वर्ग के व्यक्तियों को अंग्रेज-भारतीय कहना अनुचित न होगा। इन्होंने अपने को सामान्य भारतीयों से दूर रखा। इस प्रकार इस देश के निवासी दो भागों में बँट गये। एक ओर तो मुट्ठी भर वे लोग थे जो अंग्रेजी पढ़ जाने के कारण अपने को अंग्रेजों से कम नहीं समझते थे। दूसरी ओर जन-साधारण का वह विशाल समूह था, जिसे अंग्रेजी से कोई प्रयोजन नहीं था।

इसके प्रकार की परिभाषा से शिक्षा के कुछ कार्यों का वर्णन किया है, [illegible] के कार्य [illegible] अति व्यापक है। [illegible] कार्य क्षेत्र [illegible] कभी समाप्त नहीं होती है और [illegible] जीवन तथा समाज [illegible] गया है। [illegible] विशिष्ट स्थान। और विशिष्ट स्थान पर कोई कभी पहुँचता नहीं है। [illegible] की प्रत्येक मंजिल की अपनी विशेषता और महत्व होता है।"

"The process of education is a continuing process in which the journey is as important as the destination For, indeed, one never arrives? Every stage in it has its importance and significance."
—**Dr. Zakir Husain** : *Educational Reconstruction in India*, p. 27.

डा० ज़ाकिर हुसैन ने भी पुनः लिखा है, उनका ध्यान में रख कर हम उन्हीं के शब्दों में यह कह सकते हैं कि शिक्षा का प्रमुख कार्य यह है —"शिक्षा का कार्य बालक के मस्तिष्क को पूर्ण नैतिक और बौद्धिक मूल्यों का अनुभव करने में इस प्रकार सहायता देना है कि वह इन मूल्यों से प्रेरित होकर उनको सर्वोत्तम प्रकार से अपने कार्य और अपने जीवन में प्राप्त करे।" शिक्षा के इसी कार्य के अन्दर प्रायः सभी कार्यों का समावेश हो जाता है।

"The function of education is to help the mind of the educand to experience the absolute moral and intellectual values, so that they in turn urge him to realize them, as best as he may, in his work and in his life."—*Dr. Zakir Husain* · op. cit., p. 15.

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Discuss briefly the functions of education. Which of them, in your opinion are more important ?
2. "Indian education," says Dr. Zakir Husain, "has been like a stagnant pond for quite a while." Keeping in view this remark, point out some of the important general functions of education.

३

मानव-जीवन में शिक्षा के कार्य

FUNCTIONS OF EDUCATION IN HUMAN LIFE

"और किसी बात के बजाय शिक्षा से कहीं अधिक परिवर्तन किए जाते हैं। सच्ची शिक्षा वही है, *जो व्यक्तियों की योग्यता और उससे अधिक विशाल सम्पूर्णता* अर्थात् देश की आवश्यकताओं के अनुकूल हो। लोगों के मनोविज्ञान और सामाजिक तथा निजी आदतों को बदलने के लिए और उनको प्रजातंत्र तथा स्वतंत्रता के नये कार्यों को करने के लिए तैयार करने का उपाय केवल यही है कि उनको शिक्षित किया जाय।"

"More changes are brought about by education than by anything else. Education, to be true, must fit in with the capacity of the individuals, quite in keeping with the needs of the larger whole, namely the country. The only way of changing the psychology, and social and personal habits of the people and to prepare them for the new tasks of democracy and freedom; is to educate them."—*Dr. R. S. Mani.*

विषय-प्रवेश

परतन्त्र भारत मे अंग्रेजों ने हमारे सामने शिक्षा का जो रूप रखा, वह हमारे लिए नया था, यद्यपि हम अशिक्षित नहीं थे। उन्होंने स्कूलों और कॉलिजों में अंग्रेजी के अध्ययन पर बल देकर एक नये भारतीय वर्ग का निर्माण किया। इस वर्ग के *व्यक्तियों को अंग्रेज-भारतीय कहना अनुचित न होगा।* इन्होंने अपने को सामान्य भारतीयों से दूर रखा। इस प्रकार इस देश के निवासी दो भागों में बँट गये। एक ओर तो मुट्ठी भर वे लोग थे जो अंग्रेजी पढ़ जाने के कारण अपने को अंग्रेजों से कम नहीं समझते थे। दूसरी ओर जन-साधारण का वह विशाल समूह था, जिसे अंग्रेजी से कोई प्रयोजन नहीं था।

अंग्रेज़ों के भारत छोड़ने के बाद अंग्रेज़ी गई और किन्तु अंग्रेज़ी गई व्यवस्था में सामाजिक असर को मानव और राष्ट्र के हित किसकर नहीं समझा गया। इसीलिए सामाजिक क्षेत्र के साथ-साथ राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी राष्ट्रीय सरकार ने परिवर्तन करने प्रारम्भ किए। परिवर्तन के इस कार्य को सफल बनाने के लिए उन्होंने शिक्षा का सहारा लिया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय से शिक्षा के रूप को इस प्रकार बदला जा रहा है, जिससे कि वह मानव और राष्ट्र—दोनों का हित करे। यह शिक्षा को कुछ निश्चित कार्यों को पूरा करने का निश्चय किया जा रहा है। ये कार्य क्या हैं, इन्हीं पर हम यहाँ विचार करेंगे—

मानव-जीवन में शिक्षा के कार्य
Functions of Education in Human Life

मानव-जीवन में शिक्षा के कार्य—देश, समय और समाज की आवश्यकताओं के अनुसार सदैव भिन्न रहे हैं और आज भी हैं। यहाँ हम भारतीय समाज के ढांचे, मूल्यों, आवश्यकताओं और उद्देश्यों को ध्यान में रखकर इन कार्यों का वर्णन कर रहे हैं। यथा—

१. आवश्यकताओं की पूर्ति
Satisfaction of Needs

आज के भारतीय समाज में शिक्षा का सर्वप्रथम कार्य—व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। जीवधारी होने के कारण उसे भोजन, मकान और वस्त्र की जैविक आवश्यकताएँ हैं। सामाजिक प्राणी होने के कारण उसे समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता है। उसे कार्य की आवश्यकता है, जिससे कि वह अपने को लाभप्रद समझ सके। उसे अवकाश की आवश्यकता है, जिससे कि वह मनोरंजन कर सके। उसे संघर्ष की आवश्यकता है, जिससे कि वह उन्नति कर सके। उसे उस अवसर की आवश्यकता है, जिससे वह अपनी विशेष योग्यता को विकसित कर सके। उसे धर्म और जीवन-दर्शन की आवश्यकता है, जिससे कि उसके जीवन का पथ-प्रदर्शन हो सके। इन सब आवश्यकताओं को पूर्ण करना—शिक्षा का आवश्यक कार्य है।

मानव-जीवन में शिक्षा के इस कार्य का महत्व बताते हुए स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—"शिक्षा का काम यह पता लगाना है कि जीवन की समस्याओं को किस प्रकार हल किया जाय, और आधुनिक सभ्य समाज का गम्भीर ध्यान इसी बात में लगा हुआ है।"

"The use of education is to find out how to solve the problems of life, and this is what is engaging the profound thought of the modern civilized world."

—*Swami Vivekananda's Works*, Vol. V., p. 284.

२. आत्म-निर्भरता की प्राप्ति

Achievement of Self-Sufficiency

मानव-जीवन में शिक्षा का दूसरा कार्य—व्यक्ति को आत्म-निर्भर बनाना है। ऐसा व्यक्ति समाज के लिए भार नहीं होता है। वह अपना भार स्वयं अपने ऊपर लेता है। इसमें न केवल उसका वरन् समाज का भी हित होता है। वह अपने कार्यों को सफलतापूर्वक करता है। परिणाम यह होता है कि वह जीवन में उन्नति करता है। साथ ही अपने कार्यों को सफलतापूर्वक करने के कारण वह समाज की उन्नति में भी योग देता है। आज भारतीय समाज कठिन समय में से होकर गुजर रहा है। अतः उसे आत्म-निर्भर मनुष्यों की ही आवश्यकता है, न कि ऐसे निकम्मे मनुष्यों की जो दूसरों का सहारा ढूँढते हैं। आज से कई वर्ष पहिले स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा के इसी कार्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा था—"केवल पुस्तकीय ज्ञान से काम नहीं चलेगा। हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे कि व्यक्ति अपने स्वयं के पैरों पर खड़ा हो सकता है।"

"Mere book-learning won't do. We want that education by which one can stand on one's own feet."

—**Swami Vivekananda** . *Our Women*, p. 41.

३. व्यावसायिक कुशलता की प्राप्ति

Achievement of Vocational Efficiency

मानव-जीवन में शिक्षा का तीसरा कार्य—छात्रों को व्यावसायिक कुशलता की प्राप्ति में सहायता देना है। इस समय हमारे देश का बड़ी तेजी से औद्योगीकरण हो रहा है। इसलिए वैज्ञानिकों, शिल्पियों (Technicians) और इञ्जीनियरों की बहुत बड़ी संख्या में आवश्यकता है। यदि शिक्षा छात्रों को किसी व्यवसाय में कुशल बना देगी, तो इससे दो लाभ होंगे। छात्र देश के उत्पादन में वृद्धि करेंगे। इसके अतिरिक्त उन्हें नौकरी मिलने में कोई कठिनाई नहीं होगी। फलस्वरूप उनकी जीविका की समस्या हल हो जायगी। डा० राधाकृष्णनन् का कथन है—"प्रयोगात्मक विषयों में प्रशिक्षित व्यक्ति कृषि और उद्योग के उत्पादन को बढ़ाने में सहायता देते हैं। ये विषय सरलतापूर्वक रोजगार पाने में भी सहायता देते हैं। छात्रों को जीविका-उपार्जन करने में सहायता देना शिक्षा का एक कार्य है—'अर्थकारिका विद्या।"

"Men trained in the practical courses help to increase productivity, agricultural and industrial They also help to find employment easily. To help the students to earn a living is one of the functions of education, arthakari ka vidya."—**Dr S. Radhakrishnan** *Occasional Speeches and Writings*, Vol. I, p. 58.

शिक्षा के इस कार्य पर प्रायः सभी शिक्षाविदों द्वारा बल दिया गया है। फ्रेडरिक ट्रेसी के अनुसार--"समस्त शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य--व्यक्तित्व के आदर्श की पूर्ण प्राप्ति है। यह आदर्श संतुलित व्यक्तित्व है।"

"The true end of all education is the complete realization of the ideal of personality The ideal product of the educational process is a balanced personality."—*Frederick Tracy.*

ट्रेसी के कथन का आशय यह है कि व्यक्ति का शरीर और मस्तिष्क स्वस्थ हो, वह सत्य-असत्य में अन्तर समझ सके, अपनी भावनाओं पर अधिकार रख सके, और उत्तम मार्ग का अनुसरण कर सके। शिक्षा का कार्य है—व्यक्तित्व के इस आदर्श की ओर ले जाना।

७ चरित्र का विकास

Development of Character

यह कहना गलत न होगा कि आज के संसार में नैतिकता का प्रायः अभाव हो गया है। झूठ, छल, धोखेबाजी, स्वार्थ और घृणा का साम्राज्य दिखाई देने लगा है। इन सब बातों से मानव प्रगति भले ही करे, पर वह स्थायी कदापि नहीं हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा—व्यक्ति, समाज और संसार की बुराइयों को दूर करके उनमें नैतिकता का समावेश करे। शिक्षा के इस कार्य की ओर संकेत करते हुए हरबर्ट ने लिखा है—"शिक्षा का कार्य उत्तम नैतिक चरित्र का विकास करना है।"

"Education is the development of good moral character."
—*Herbart.*

८. जीवन के लिए तैयारी

Preparation for Life

विलमाट का कथन है—"शिक्षा जीवन की तैयारी है।"

"Education is the apprenticeship of life."—*Willmott*

अब यदि शिक्षा—जीवन की तैयारी है, तो शिक्षा का कार्य है—बच्चों को जीवन के लिए तैयार करना। यदि शिक्षा यह कार्य नहीं करती है, तो बच्चे बड़े होकर जीवन की कठिनाइयों का सामना नहीं कर सकेंगे, उन संघर्षों से लोहा न ले सकेंगे, जो उनके सामने आयेंगे। शिक्षा के इस कार्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने लिखा है—"यदि कोई मनुष्य केवल कुछ परीक्षायें पास कर सकता है और अच्छे व्याख्यान दे सकता है, तो आप उसको शिक्षित समझते हैं। क्या वह शिक्षा—शिक्षा कहलाने के योग्य है जो सामान्य जन-समूह को जीवन के

संघर्ष के लिए अपने आप को तैयार करने में सहायता नहीं देती है, और उनमें शेर का सा साहस उत्पन्न नहीं करती है ?"

'Well, you consider a man educated if only he can pass some examinations and deliver good lectures The education which does not help the common mass of people to equip themselves for the struggle for life, which does not bring out the courage of a lion—is it worth the name ?—Swmi Vivekananda *The Complete Wo[rks] of Swami Vivekananda*, Part VII, p. 146

९. अनुभवों का पुनर्गठन व पुनर्रचना
Reorganization & Reconstruction of Experiences

व्यक्ति अपने जीवन में अनेक अनुभव प्राप्त करता है। शिक्षा का कार्य है—इन अनुभवों का पुनर्गठन और पुनर्रचना करना। यदि शिक्षा यह कार्य करती है, तो व्यक्ति अपनी भावी प्रगति के लिए अतीत का उपयोग कर सकता है, अन्यथा नहीं। ड्यूवी ने सत्य ही लिखा है- 'जीवन का मुख्य कार्य है—प्रत्येक पग पर अपने अनुभव द्वारा जीवन को समृद्ध बनाना है।"

"It is the chief business of life at every point to make living contribute to an enrichment of its own perceptible meaning."

—*John Dewey.*

१०. वातावरण से अनुकूलन
Adaptation to Environment

वातावरण जड़ और चेतन—दोनों को शिक्षा देने वाला है। वातावरण से अनुकूलन न कर सकने के कारण निम्न वर्ग के पशु नष्ट हो जाते है। इसी प्रकार वातावरण व्यक्ति के केवल उन्हीं कार्यों को प्रोत्साहित करता है, जो उसके अनुकूल होते हैं। अतः शिक्षा का यह कार्य है कि वह व्यक्ति को वातावरण के अनुकूल बनाये। इस सम्बन्ध मे टामसन (Thomson) ने लिखा है—"वातावरण शिक्षक है, और शिक्षा का कार्य है—छात्र को उस वातावरण के अनुकूल बनाना, जिससे कि व[ह] जीवित रह सके और अपनी मूल प्रवृत्तियों को सतुष्ट करने के लिए अधिक [से] अधिक सम्भव अवसर प्राप्त कर सके।"

"The educator is the environment and the function of education is to fit the pupil to that environment, so that he may survive and have as many opportunities as possible of experiencing the pleasure of satisfying his instincts."—*Thomson*

११. वातावरण का रूप परिवर्तन
Modification of Environment

शिक्षा का कार्य—व्यक्ति को वातावरण का रूप परिवर्तन करने या उसमें सुधार करने के योग्य बनाना है। यदि शिक्षा द्वारा व्यक्ति में अच्छी आदतों का निर्माण कर दिया जाय, तो वह अपने वातावरण में परिवर्तन कर सकता है। बिल्ली चटकनी को दबाकर दरवाजा खोलना और अपने लिये नये वातावरण का निर्माण करना सीख लेती है। इसी प्रकार व्यक्ति भी नई और अच्छी आदतों का निर्माण करके अपने सामाजिक वातावरण को बदल सकता है और उसे अच्छा बना सकता है। इस प्रकार शिक्षा का कार्य केवल यही नहीं है कि वह व्यक्ति को वातावरण से अनुकूलन करना सिखाये वरन् उसे वातावरण का अपने अनुकूल बदलने के लिए भी प्रशिक्षित करे।

आज के संघर्षपूर्ण संसार में यह बहुत आवश्यक हो गया है। भारत में भी इस आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। विभिन्न जातियों, प्रजातियों, धर्मों और भाषाओं ने हमारे देश में जिस वातावरण का निर्माण कर दिया है, वह देश के लिए बिल्कुल भी हितकर नहीं है। भाषा या धर्म के आधार पर नये राज्यों के निर्माण की माँग, देश को ऐसे खण्डों में बाँटना है, जो शायद कभी मिल नहीं सकेंगे। इस प्रकार के दूषित वातावरण में सुधार तभी हो सकता है, जब देश के बालक-बालक को शिक्षा देकर इस प्रकार तैयार कर दिया जाय कि वह इस वातावरण को परिवर्तित करने के लिए कमर कस ले।

वातावरण का रूप-परिवर्तन करके उस पर अधिकार रखने की आवश्यकता की ओर संकेत करते हुए जान ड्यूवी ने लिखा है—"वातावरण से पूर्ण अनुकूलन करने का अर्थ है—मृत्यु। आवश्यकता इस बात की है कि वातावरण पर नियन्त्रण रखा जाय।"

"*Complete adaptation to environment means death. The essential point is to control the environment.*"—*John Dewey.*

१२. कार्य-क्षेत्रों का व्यावहारिक ज्ञान
Practical Knowledge of Spheres of Work

शिक्षा का अन्तिम और महत्त्वपूर्ण कार्य है—बालकों को विभिन्न कार्य-क्षेत्रों का व्यावहारिक ज्ञान देना। सभी प्रगतिशील देशों में शिक्षा के इस कार्य पर बल दिया जा रहा है। रूस में तो स्कूल के हर बालक के लिए *किसी-न-किसी फैक्ट्री या* वर्कशाप में कार्य करना आवश्यक है। वहाँ उसको विभिन्न कार्यों का व्यावहारिक ज्ञान सरलता से प्राप्त हो जाता है। हमारे देश में शिक्षा इस कार्य को न करके मानव का बहुत अहित कर रही है। सिद्धान्त पर आवश्यकता से अधिक बल दिया

जाता है। फलतः बालक को जीवन के किसी भी कार्य-क्षेत्र का व्यावहारिक ज्ञान नही प्राप्त होता है। स्वामी विवेकानन्द ने इस ज्ञान की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है—"तुमको कार्य के सब क्षेत्रों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। सिद्धान्तों के ढेरो से सारे देश का नाश हो गया है।"

"You have to be practical in all *spheres of work*. The whole country has been ruined by masses of theories."—**Swami Viveka-nanda** . *The Camplete Works of Swami Vivekananda*, Part VII; p. 145

उपसंहार

अन्त मे, हम कह सकते हैं कि मानव-जीवन मे शिक्षा का कार्य—समाज के सदस्यो की उन सब शक्तियो, क्षमताओ और गुणों का विकास करना है, जो उनमे हैं, जिससे कि वे निर्दिष्ट लक्ष्य की ओर बढ़ सकें। एमरसन ने उचित ही लिखा है—शिक्षा इतनी विशद् होनी चाहिए, जितना कि मनुष्य। उसमें जो भी शक्तियाँ हैं, शिक्षा को उन्हे पोषित और प्रदर्शित करना चाहिए।"

"Education should be as broad as man. Whatever elements are in him, it should foster and demonstrate."—*Emerson*.

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What, in your opinion, should be the functions of education in human life ?
2. Keeping in view the life of the common man in India, discuss in detail some of the essential functions of education.

४

राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य

FUNCTIONS OF EDUCATION IN NATIONAL LIFE

"भाषा-सम्बन्धी विभिन्नताओं, सांस्कृतिक कठोरताओं और रीति-रिवाजों तथा व्यवहारों के कारण अलगावों को दूर करना बहुत कठिन है। जब तक शिक्षा के द्वारा यह नहीं किया जायगा, तब तक पूर्णतम लाभ और निर्दिष्ट ध्येय को प्राप्त करना कठिन है।"

"It is very hard to shake off linguistic differences, cultural angularities, and estrangement due to customs and manners. Unless it is done by education, it is difficult to derive the fullest benefit and achieve the goal in view."

—N. B. Sen . *Wit and Wisdom of Swami Dayanand*, p. 180.

विषय-प्रवेश

'भू-भाग' राष्ट्र का शरीर और 'व्यक्ति' उसके प्राण होते हैं। व्यक्तियों की श्रेष्ठता और हीनता राष्ट्र के उत्थान और पतन का कारण होती है। मेकाइवर ने ठीक ही लिखा है—"राष्ट्र का गुण उसकी सामाजिक इकाइयों का गुण है; अर्थात् सामाजिक इकाइयों का सामूहिक जीवन ही राष्ट्रीय जीवन । यदि ईंधन ही खराब है, तो ज्योति कैसे तेज हो सकती है—अर्थात् यदि निर्बल हैं, तो राष्ट्र कैसे देदीप्यमान हो सकता है ?"

"The qua social units
wh the flame be

निवासियों का एक-
जब उसके नागरिक

श्रेष्ठ हों। उनको ऐसा बनाना ही राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का कार्य है। हम भारतीय समाज के लोकतंत्रीय समाजवादी आदर्शों को ध्यान में रखकर ही शिक्षा के इस कार्य की समीक्षा कर रहे हैं।

राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य
Functions of Education in National Life

१. नेतृत्व के लिये प्रशिक्षण
Training for Leadership

लोकतन्त्र तब तक सफल नहीं हो सकता है जब तक कि उसके नागरिक अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए प्रशिक्षित न किए गए हों। इसका अर्थ यह है कि उनको अनुशासन और नेतृत्व में प्रशिक्षण मिलना चाहिए। राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का मुख्य कार्य है नागरिकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना कि वे सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में नेतृत्व का कार्य कर सकें।

भारत में अति प्राचीन काल से लेकर आज तक नेतृत्व का अभाव नहीं रहा है। आधुनिक भारत में जिस नेतृत्व की आवश्यकता है, उसके बारे में डा० आर० एस० मणि ने लिखा है—"विशेष रूप से इस समय जबकि देश में लोकतंत्र जीवन का ढंग हो गया है और मतदान की पेटी राजनैतिक लोकतंत्र की प्रतीक हो गई है, सच्चे नेतृत्व की आवश्यकता है। लोगों को उन स्वार्थी और बेईमान नेताओं से रक्षा की जानी है, जो अपने हितों को पूरा करने के लिये सब कुछ कर सकते हैं। अतः सच्चे नेतृत्व के लिए सेवा की भावना के साथ-साथ, अच्छे प्रशिक्षण की आवश्यकता है।"

"What is needed is good leadership, especially at a time when democracy has become the way of life in the country, and the 'ballot-box has become the symbol of political democracy. The people have to be protected from self-seeking, unscrupulous leaders, who go all out of the way, to achieve their own selfish ends. Real leadership, therefore, requires apart from a spirit of service, good training too." — *Dr R S Mani*

२. कुशल श्रमिकों की पूर्ति
Supply of Skilled Workers

राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का दूसरा कार्य—कुशल श्रमिकों की पूर्ति करना है। ऐसे श्रमिक व्यापार और उद्योग के उत्पादन को बढ़ायेंगे। फलतः राष्ट्रीय सम्पत्ति में वृद्धि होगी। शिक्षा के इस कार्य से जो सुन्दर परिणाम निकलेंगे, उनको अंकित

करते हुए हुमायूं कबीर ने लिखा है—'शिक्षित श्रमिक अधिक उत्पादन में जोर देंगे और इस प्रकार उद्योग तथा व्यवसाय—दोनों की अधिक उन्नति होगी। यह उन्नति केवल व्यवसाय तक ही सीमित नहीं रहेगी। अधिक शिक्षा के फलस्वरूप राष्ट्रीय सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आवश्यक समाज-सेवाओं का विस्तार होगा। केवल शिक्षा ही हमारे देशवासियों के जीवन के स्तर में उन्नति करने के लिए वास्तविक आधार का निर्माण कर सकती है।"

"Educated workers would make for increased production and thus make for increased prosperity for both industry and trade. The benefits would not, however, be confined to business alone. Increased education would lead to an addition in the national wealth and create the basis for an expansion of necessary social services. Education alone can create the material basis for an improvement in the standard of life of our people'—Humayun Kabir. *Education in New India*, p. 96.

३. व्यक्तिगत हित की सार्वजनिक हित से निम्नता

Subordination of Private Welfare to General Welfare

राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि वह लोगों को ऐसा प्रशिक्षण दे कि वे अपने हितों को अपने समूह, समाज, देश और राष्ट्र के हितों से निम्न समझें। आज का भारतीय समाज अनेक जातियों, वर्गों, धर्मों और राजनैतिक दलों में बंटा हुआ है। फलतः भारतीयों में पारस्परिक द्वेष, कटुता, शत्रुता, इत्यादि अनेक बुराइयां आ गई हैं। ऐसी परिस्थिति में शिक्षा का सर्वप्रथम कार्य है—इन बुराइयों को समूल नष्ट करना। पर इससे भी बड़ी महत्त्वपूर्ण कार्य है—मनुष्य को इस प्रकार का प्रशिक्षण देना कि वह अपनी स्वयं की इच्छा से अनुशासन में रहे और हर प्रकार का बलिदान करने के लिये तैयार रहे। तभी वह सार्वजनिक हित में योग देकर देश का कल्याण कर सकेगा।

राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने ठीक ही लिखा है—"एशिया में प्रजातन्त्र की सफलता हमारी अनुशासन में रहने की इच्छा और ... आधारित है। यदि भारत, संयुक्त और ... को एकता के लिए न ... के लिए प्रशिक्षित ...

... illing-

dictatorship" —President Radhakrishnan : *Occasional Speeches and Writings*, Vol. V, p 159

४. नागरिक और सामाजिक कर्त्तव्यों की भावना का समावेश
Inculcation of Civic and Social Duties

नागरिक और सामाजिक—कर्त्तव्य लोकतन्त्र की आधारशिला हैं। इनके अभाव मे भारत जैसे धर्म-निरपेक्ष राज्य की सफलता के बारे में सोचना केवल स्वप्न देखना होगा। अत. शिक्षा का कार्य है कि वह लोगो को इस प्रकार प्रशिक्षित करे कि वे नागरिक के रूप मे अपने देश के प्रति और व्यक्ति के रूप मे अपने समाज के अपने कर्त्तव्यो को समझें और करें। इस विषय मे डा० जाकिर हुसैन का कथन—"प्रजातन्त्रीय समाज में यह आवश्यक है कि व्यक्ति, जो अपने शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के पोषण के लिए अपने साथी नागरिको के सहयोग पर आश्रित है, नैतिक और भौतिक दोनों प्रकार से समाज के जीवन को उत्तम बनाने के सम्मिलित उत्तरदायित्व को सहर्ष स्वीकार करे।"

"In a democratic society it is essential that the individual who is obliged, for his nourishment in body, mind and soul, to the cooperation of his fellow-citizens should cheerfully share the responsibility of making the life of society a better life, both morally and materially"

—Dr Zakir Husain *Educational Reconstruction in India*, p. 56.

५. सामाजिक कुशलता की उन्नति
Promotion of Social Efficiency

आधुनिक विचारधारा के अनुसार कुशल सामाजिक व्यक्ति वह है, जो अपने समाज या राष्ट्र के लिए भार न हो, दूसरो के कार्यो मे हस्तक्षेप न करे, और समाज की उन्नति मे योग दे। अत आधुनिक भारत मे शिक्षा का कार्य यह है कि वह छात्रो को उन व्यवसायो और उद्योगो मे कुशल बनाये, जो न केवल उनके लिये वरन् समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी सिद्ध हों। डा० एल्फ्रेड एडलर का कथन है—"मनुष्य के उचित कार्य केवल वही हैं, जो समाज के लिये उपयोगी हैं।"

"The only worthwhile achievements of man are those which are socially useful."—*Dr Alfred Adler.*

६. राष्ट्रीय विकास
National Development

शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीय विकास सम्भव है। इसलिये यदि भारत राष्ट्रीय विकास चाहता है, तो शिक्षा को योजनाओं को [illegible]

ाजनाओं मे शिक्षा का कार्य होना चाहिए—एक निश्चित स्तर तक सभी व्यक्तियों ो शिक्षा देना। यदि शिक्षा इस कार्य को कर सकेगी, तो नागरिक गुप्त मतदान रा योग्य नेताओं को चुन सकेंगे और सरकार के कार्यों को सफल बना सकेंगे। ब शिक्षा इस कार्य को पूर्ण कर देगी, तब राष्ट्र का विकास होना एक स्वाभाविक ात हो जायगी।

राष्ट्रीय विकास मे शिक्षा का स्थान कितना महत्वपूर्ण है, इस पर प्रकाश ालते हुए उत्तर प्रदेश के शिक्षा-मन्त्री, कमलापति त्रिपाठी ने कहा है—"आज का मय हमारे देश के लिए पुनर्नियोजन एव पुनर्निर्माण का, उत्थान एव विकास का मय है। हमने अपने देश मे धर्म-निरपेक्ष कल्याणकारी लोकतन्त्र की स्थापना की ै। *हमे उसे सुदृढ़ एव शक्तिशाली बनाना है, किन्तु यह सब तब तक सम्भव नही* ो सकता, जब तक कि उसकी आधारशिला ही सुदृढ़ एव शक्तिशाली न हो। और ह आधारशिला है—इस देश की वह समस्त जनता जिसके ऊपर कि आज राज्य-सरकारों का सुयोग्य निर्वाचन निर्भर है तथा समूचे राष्ट्र के मगलमय स्वरूप का निर्धारण अवलम्बित है। इस उद्देश्य के लिए आवश्यक है—उस दिशा की ओर अग्रसर करने वाली जन-जन की उपयुक्त शिक्षा एव उपयुक्त साहित्य।"

७. राष्ट्रीय एकता

National Integration

शिक्षा को राष्ट्रीय एकता का आधार कहा गया है। पर प्रश्न यह उठता है कि 'शिक्षा राष्ट्रीय एकता के कार्य को किस प्रकार कर सकती है?' यदि हम अपने देश की वर्तमान स्थिति पर ध्यान दें, तो हम दु:ख से सराबोर हो जाते हैं। आज हम प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता, जातीयता और क्षेत्रीयता (Regionalism) मे विश्वास करते हैं। हम भाषा के प्रश्न पर लड़ते हैं। इन सब बातों ने हमारे दृष्टिकोण को सकीर्ण कर दिया है और हमे विभाजित करके हम मे शत्रुता की भावना उत्पन्न कर दी है। यदि हम इन बुराइयों से अपने को मुक्त करना चाहते हैं, तो हमे शिक्षा का सहारा लेना पड़ेगा। शिक्षा ही हमे दोषमुक्त करके राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बाँध सकती है। अत. शिक्षा के इस महत्वपूर्ण कार्य की ओर हमे शीघ्र से शीघ्र ध्यान देना चाहिए। ऐसा करते समय हमे जवाहरलाल नेहरू के इस कथन को ध्यान मे रखना चाहिये :—"राष्ट्रीय एकता के प्रश्न मे जीवन की प्रत्येक वस्तु आ जाती है। शिक्षा का स्थान इन सबसे ऊपर है और यही आधारशिला है।"

"The question of integration covers in a sense almost everything in life. Above all, covers education. This is basic."

—*Jawaharlal Nehru.*

८. भावात्मक एकता

Emotional Integration

भारत मे अनेको विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। इसमे बहुत से धर्म, परम्पराएँ, भाषायें, रीति-रिवाज और रहन-सहन के ढग हैं। हम अपने धर्म, परम्परा, भाषा आदि को अपना समझते हैं और इन पर गर्व भी करते हैं। इनके प्रति हमारे हृदय मे भक्ति का भाव निश्चित है। पर हमे यह स्वीकार करना पडेगा कि इनसे भी ऊपर हमारी राष्ट्रीय विरासत और राष्ट्रीय महत्वाकाक्षाएँ हैं, जो हमे एकता के सूत्र मे बाँधती हैं और जो किसी समाज या समुदाय की एकमात्र सम्पत्ति नहीं हैं। यही भावात्मक एकता का आदर्श और राष्ट्रीय उन्नति का सोपान है।

इस आदर्श को प्राप्त करने मे शिक्षा बहुत सहायता प्रदान कर सकती है। शिक्षा द्वारा ही भावात्मक वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। शिक्षा उचित प्रकार के दृष्टिकोणो को विकसित कर सकती है। इसके साथ ही उचित प्रकार के सवेगो (Emotions) का निर्माण करके उनको उचित प्रकार के कार्यों से सम्बन्धित कर सकती है। अत यह आवश्यक है कि हम अपने छात्रो के लिए ऐसे पा[illegible] का निर्माण करें, जिनसे उनके दृष्टिकोणो और सवेगो का उचित दिशा मे [illegible] हो। केवल तभी वे देश के प्रति अपने कर्त्तव्यो को समझ सकेंगे और लोक[illegible] शक्तिशाली बना सकेंगे।

शिक्षा द्वारा भावात्मक एकता का कार्य किया जाना कितना आवश्[illegible] इसके बारे मे जवाहरलाल नेहरू १९५७ मे अपने एक भाषण मे त्रिवूर (Tri[illegible] मे कह चुके थे। उनका कहना था—"जहाँ कहीं मैं जाता हूँ, वहीं मैं एक ऐसी [illegible] पर बल देता हूँ जो प्रत्यक्ष है और जिससे हर व्यक्ति को सहमत होना चाहिए [illegible] भारत को एकता पर बल देता हूँ न केवल राजनैतिक एकता पर जिसको हमने [illegible] किया है, पर इससे भी अधिक महत्वपूर्ण भावात्मक एकता पर, अपने मनों और [illegible] को एकता पर और पृथकता की भावनाओं के दमन पर।"

"Wherever I go I lay stress on something that is obvious with which everyone should agree. I lay stress on the unity of India, not merely the political unity which we have achieved, but something far deeper, the emotional unity, the integration of our minds and hearts, the suppression of feelings of separatism."

— Jawaharlal Nehru : *Speeches*, Vol III, p. [illegible]

९. मानव-प्रकृति और चरित्र का प्रशिक्षण

Training of Human Nature & Character

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है—मानव-प्रकृति और चरित्र का [illegible] पर क्यों? क्योंकि आज सभ्य कहलाने वाले मानव की प्रकृति और चरित्र का [illegible]

हो चुका है। पिछले दोनों विश्व-युद्ध इसके ज्वलन्त प्रमाण हैं। इन युद्धों में मानव ने जितने अमानवीय और पाशविक कार्य किए हैं, उनके उदाहरण इतिहास में मिलने कठिन हैं। यदि मानव-सभ्यता को भावी विनाश से बचाया जाना है, तो मानव की प्रकृति और चरित्र में सुधार किया जाना अनिवार्य है। यह सुधार शिक्षा द्वारा ही किया जा सकता है। शिक्षा की ऐसी व्यवस्था की जाय, जिससे व्यक्ति के शरीर, इच्छा और बुद्धि को प्रशिक्षित किया जा सके। प्लेटो का कथन है—"शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य और कार्य—मानव-प्रकृति और चरित्र को प्रशिक्षित करना है।"

"The ultimate aim and function of education is the training of human nature and character."—*Plato*

१०. नैतिकता का प्रशिक्षण
Training in Morality

सभी युगों और देशों में नैतिकता को बहुत महत्त्व दिया गया है। चार्ल्स ब्रुक्स (*Charles Brooks*) *के अनुसार नैतिकता में वे सभी सिद्धान्त आ जाते हैं, जो* मनुष्यों के आचरण को नियमित करते हैं; जैसे—न्याय, संयम, परिश्रम, पवित्रता, मितव्ययता, परोपकार, सत्य से प्रेम, आज्ञा-पालन और ज्ञान, स्वतन्त्रता तथा राज्य के प्रति कर्त्तव्य। इन गुणों से युक्त व्यक्ति राष्ट्र की बहुमूल्य सम्पत्ति बन जाता है। अतः शिक्षा का मुख्य कार्य—लोगों को नैतिकता में प्रशिक्षित करना होना चाहिए। इस प्रशिक्षण के बिना हमारे देशवासियों का किसी भी कार्य में सफल होना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। बीचर ने ठीक ही कहा है—"प्रत्येक युवक को यह याद रखना चाहिए कि सभी सफल कार्यों का आधार नैतिकता है।"

"Every young man would do well to remember that all successful business stands on the foundation of morality."

—*H W. Beecher.*

११. राष्ट्रीय अनुशासन
National Discipline

शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय अनुशासन के कार्य पर बहुत ... गया है। हमने अपनी स्वतन्त्रता कुछ ही वर्षों ... लिए बहुत परिश्रम ... हममें से प्रत्येक ... । इन गुणों की ... ही ... हैं। इन गुणों के ... अनुशासन ... सत्य ...

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What, in your opinion; should be the functions of education in national life ?
2. Discuss some of the important functions of education in national life and assign reasons for their being so.

खण्ड दो

५

शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण

और

जीवन तथा समाज के आदर्शों से उनका सम्बन्ध

FORMULATION OF EDUCATIONAL AIMS AND THEIR RELATION TO LIFE & IDEALS OF SOCIETY

'शिक्षा अर्थपूर्ण और नैतिक क्रिया है। अतः यह कल्पना ही नहीं की जा सकती है कि यह उद्देश्यहीन है।"

"Education is a purposeful and ethical activity. Hence it is unthinkable without aims" —Rivlin *Encyclopaedia of Modern Education.*

विषय-प्रवेश

'शिक्षा' समाज की आधार-शिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। अतः इस बात का सदैव प्रयत्न किया गया है कि शिक्षा के उद्देश्य, समाज के उद्देश्यों के अनुकूल हों। इसी बात को ध्यान में रखकर विभिन्न देशों के विभिन्न विचारकों ने विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों पर बल दिया है। उदाहरणार्थ—प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य—मनुष्य का सर्वाङ्गीण विकास करना था। बौद्ध-शिक्षा का उद्देश्य—व्यक्ति का धार्मिक विकास था। मुस्लिम शिक्षा का उद्देश्य—मुस्लिम सिद्धान्तों, क़ानूनों और मुस्लिम सामाजिक परम्पराओं को फैलाना था। अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य—इस देश के निवासियों को अंग्रेजी जानने वाले और न जानने वाले—दो ऐसे वर्गों में विभाजित करना था, जो सदैव एक-दूसरे से घृणा करते रहें।

इसी प्रकार अन्य देशों में भी समय-समय पर शिक्षा के भिन्न उद्देश्य रहे हैं। उदाहरणार्थ—यूनानी दार्शनिकों ने शिक्षा के नैतिक, सामाजिक और बौद्धिक उद्देश्यों पर बल दिया। प्राचीन रोम में शिक्षा का उद्देश्य—राज्य का कल्याण बताया गया।

(i) जीवन-दर्शन (Philosophy of Life)
(ii) राजनैतिक विचारधारायें (Political Ideologies)
(iii) प्रौद्योगिक प्रगति (Technological Progress), और
(iv) सामाजिक और आर्थिक दशायें (Social and Economic Conditions)

(i) जीवन-दर्शन . Philosophy of Life

जिस जीवन-दर्शन मे किसी समाज या समय के लोग विश्वास करते हैं, उसका प्रभाव शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण पर बहुत अधिक पड़ता है। उदाहरणार्थ—

जिस समय यूनान शान्ति और वैभव के युग मे से गुज़र रहा था, उस समय प्लेटो ने बताया कि—"राज्य के सरक्षक, दार्शनिक, उत्साही, तीव्रगामी और बलवान् होने चाहिये।"

"The guardians of the State should be philosophical, high-spirited, swift-footed, and strong."—*Plato*.

१७ वीं शताब्दी मे जब इंगलैंड मे गृह-युद्ध (Civil-War) चल रहा था, तब तब प्यूरिटन धर्म के समर्थक मिल्टन ने बताया कि "शिक्षा का उद्देश्य—शान्ति और युद्ध के समय निजी और सावजनिक कार्यों को उचित प्रकार से करने के लिए व्यक्ति को तैयार करना है।"

'I call a complete and generous education that which fits a man to perform justly all the offices, both private and public, of peace and war."—*Milton*.

नैपोलियन के समय मे फ्रांस मे शिक्षा के उद्देश्य—ईसाई धर्म के सिद्धान्तों को पढ़ाना, राज्य के शासक मे भक्ति उत्पन्न कराना और विश्वविद्यालय के नियमों का पालन कराना था।

"During the ascendancy of Napoleon Buonaparte, the aims of education in France were to teach the ethical principles of Christianity, loyalty to the Head of the State, and obedience to the statutes of the university."—*Grant and Temperley*.

प्रथम विश्व-युद्ध के समय थ्योडोर रूजवेल्ट के अनुसार अमरीकी शिक्षा के उद्देश्य थे—शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक और नैतिक प्रशिक्षण देना।

"Of all the work that is done or can be done for our country, the greatest is that of educating the body, mind, and above all the character, giving spiritual and moral training."

—*Theodore Roosevelt*.

आजकल अमरीकी शिक्षा के उद्देश्य हैं—व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करना, उसे अवकाश का सदुपयोग करने के लिए तैयार करना और उसे भावी नागरिक और उत्पादक बनाना।

"The aims of the American education to-day are three. First, the prepration of the individual as a prospective citizen and co operating member of society second, the preparation of the individual as a prospective worker and producer, third, the preparation of the individual for the proper use of leisure time and the developmen. of his personality."—*Henderson.*

इस प्रकार हम देखते है कि जीवन के विभिन्न दर्शन शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यो पर बल देते है।

(ii) राजनैतिक विचारधारायें Political Ideologies

जे० एफ० ब्राउन का कथन है— "किसी भी देश की और सभी युगों शिक्षा शासक वर्ग की विशेषताओं को व्यक्त करती है।"

"Education in any country and at all periods reflects valu of the ruling class"—*J F Brown.*

ससार का इतिहास ब्राउन के कथन का साक्षी है। स्वेच्छाचारी, लोकतान्त्रि फासिस्टवादी और कम्यूनिस्ट—सभी प्रकार की सरकारें अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिये शिक्षा के उद्देश्यो का निर्माण करती हैं।

स्वेच्छाचारी राज्य मे चाहे वह राजतन्त्र हो या तानाशाही, शिक्षा के वैयक्तिक पक्षो (Individualistic Phases) की अपेक्षा राजनैतिक पक्ष को प्रधानता दी जाती है। बालक को राज्य के हित के लिये विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। आज रूस मे ऐसा ही है।

इसके विपरीत, प्रजातन्त्र मे शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्यो (Individualistic Aims) पर बल दिया जाता है। राजनैतिक और सामाजिक उद्देश्यो पर केवल उतना ही बल दिया जाता है, जितना सामाजिक एकता के लिये आवश्यक समझा जाता है। अमरीका की शिक्षा-प्रणाली इसका प्रमाण है।

इस प्रकार हम देखते है कि स्वेच्छाचारी और प्रजातन्त्र राज्यो मे शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण बिलकुल भिन्न प्रकार से किया जाता है।

(iii) प्रौद्योगिक प्रगति Technological Progress

शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण मे प्रौद्योगिक प्रगति का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उदाहरणार्थ—प्रौद्योगिक रूप से पिछड़े हुए देश मे शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य—विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा देना हो सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो

देश प्रौद्योगिक प्रगति कर चुके हैं, वे ऐसा न करें। वस्तुत वे ऐसा अधिक प्रौद्योगिक प्रगति के लिए करते हैं। आज अमरीका, इंगलैंड रूस, जापान—सभी ऐसा कर रहे हैं।

हमारा देश प्रौद्योगिक और प्राविधिक प्रगति में पीछे होने के कारण पश्चिम के देशों के पदचिह्नों पर चल रहा है और ऐसी प्रगति करने का पूरा-पूरा प्रयत्न कर रहा है। इस को ध्यान में रखकर ही माध्यमिक शिक्षा-आयोग ने सिफारिश की है—"शिक्षा का उद्देश्य–तकनीकी प्रशिक्षण के लिए विस्तृत सुविधायें देना होना चाहिए।"

"The aim of education should be to spread widely the facilities for technical training."—*Secondary Education Commission.*

(iv) सामाजिक व आर्थिक दशायें . Social & Economic Conditions

किसी भी देश की सामाजिक और आर्थिक दशाएँ वहाँ की शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भाग लेती हैं। उदाहरण के लिए—भारत को ले लीजिये। ... की सामाजिक दशा जितनी शोचनीय है, उससे अधिक शोचनीय उसकी आर्थिक दशा को बदलने के लिये ही भारत ने अपने को समाजवादी राज्य ... में विकसित करने का निर्णय किया है। यह तभी सम्भव हो ... श्यों का निर्माण किया जाय।

... शिक्षा-आयोग ने ...
[illegible]

आजकल अमरीकी शिक्षा के उद्देश्य हैं—व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करना, उसे अवकाश का सदुपयोग करने के लिए तैयार करना और उसे भावी नागरिक और उत्पादक बनाना।

"The aims of the American education to-day are three. First, the prepration of the individual as a prospective citizen and co operating member of society, second, the preparation of the individual as a prospective worker and producer, third, the preparation of the individual for the proper use of leisure time and the development of his personality"—*Henderson*

इस प्रकार हम देखते है कि जीवन के विभिन्न दर्शन शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यो पर बल देते है।

(ii) राजनैतिक विचारधारायें Political Ideologies

जे० एफ० ब्राउन का कथन है—"किसी भी देश की और सभी युगों की शिक्षा शासक वर्ग की विशेषताओ को व्यक्त करती है।"

"Education in any country and at all periods reflects values of the ruling class."—*J. F Brown.*

ससार का इतिहास ब्राउन के कथन का साक्षी है। स्वेच्छाचारी, लोकतान्त्रिक फासिस्टवादी और कम्यूनिस्ट—सभी प्रकार की सरकारें अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिये शिक्षा के उद्देश्यो का निर्माण करती हैं।

स्वेच्छाचारी राज्य मे चाहे वह राजतन्त्र हो या तानाशाही, शिक्षा के वैयक्तिक, पक्षो (Individualistic Phases) की अपेक्षा राजनैतिक पक्ष को प्रधानता दी जाती है। बालक को राज्य के हित के लिये विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। आज रूस मे ऐसा ही है।

इसके विपरीत, प्रजातन्त्र मे शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्यो (Individualistic Aims) पर बल दिया जाता है। राजनैतिक और सामाजिक उद्देश्यों पर केवल उतना ही बल दिया जाता है, जितना सामाजिक एकता के लिये आवश्यक समझा जाता है। अमरीका की शिक्षा-प्रणाली इसका प्रमाण है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वेच्छाचारी और प्रजातन्त्र राज्यों मे शिक्षा के ... का निर्माण बिल्कुल भिन्न प्रकार से किया जाता है।

... प्रगति . Technological Progress

... के उद्देश्या के निर्माण मे प्रौद्योगिक प्रगति का स्थान महत्वपूर्ण है। —प्रौद्योगिक रूप से पिछड़े हुए देश मे शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य— प्रौद्योगिकी की शिक्षा देना हो सकता है। इसका अर्थ यह नही है कि जो

देश प्रौद्योगिक प्रगति कर चुके हैं, वे ऐसा न करें। वस्तुतः वे ऐसा अधिक प्रौद्योगिक प्रगति के लिए करते हैं। आज अमरीका, इंगलैंड रूस, जापान—सभी ऐसा कर रहे हैं।

हमारा देश प्रौद्योगिक और प्राविधिक प्रगति में पीछे होने के कारण पश्चिम के देशों के पदचिह्नों पर चल रहा है और ऐसी प्रगति करने का पूरा-पूरा प्रयत्न कर रहा है। इस को ध्यान में रखकर ही माध्यमिक शिक्षा-आयोग ने सिफारिश की है—"शिक्षा का उद्देश्य-तकनीकी प्रशिक्षण के लिए विस्तृत सुविधायें देना होना चाहिए।"

"The aim of education should be to spread widely the facilities for technical training"—*Secondary Education Commissions.*

(iv) सामाजिक व आर्थिक दशायें Social & Economic Conditions

किसी भी देश की सामाजिक और आर्थिक दशाएँ वहाँ की शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण में महत्वपूर्ण भाग लेती हैं। उदाहरण के लिए—भारत को ले लीजिये। यहाँ की सामाजिक दशा जितनी शोचनीय है, उससे अधिक शोचनीय उसकी आर्थिक दशा है। इस दशा को बदलने के लिये ही भारत ने अपने को समाजवादी राज्य (Socialistic State) में विकसित करने का निर्णय किया है। यह तभी सम्भव हो सकेगा, जब शिक्षा के नये उद्देश्यों का निर्माण किया जाय।

ये नये उद्देश्य क्या हों—इनके बारे में माध्यमिक शिक्षा-आयोग ने अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त किया है—"**छात्रों को इस प्रकार का चारित्रिक प्रशिक्षण दिया जाय कि वे नागरिकों के रूप में भावी प्रजातान्त्रिक सामाजिक व्यवस्था में रचनात्मक ढङ्ग से भाग ले सकें और उनकी व्यावहारिक तथा व्यावसायिक कुशलता में उन्नति की जाय, जिससे कि वे अपने देश की आर्थिक प्रगति करने में अपना योग दे सकें।**"

"The training of character to fit the students to participate creatively as citizens in the emerging democratic social order," and "the improvement of their practical and vocational efficiency so that they may play their part in building up the economic prosperity of their country."—*Secondary Education Commission.*

शिक्षा के उद्देश्यों का जीवन और समाज के आदर्शों से सम्बन्ध

Relation of Educational Aims to Life and Ideals of Society

शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण व्यक्ति और समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थ—पिछड़े हुए देशों में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—लोगों को ऐसा व्यावसायिक प्रशिक्षण देना है, जिससे वे अपनी और अपने देश की आर्थिक उन्नति कर सकें।

कभी-कभी शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करते समय केवल समाज के हित का ध्यान रखा जाता है। राजतन्त्र (Monarchy) और अधिनायकतन्त्र (Dictatorship) में ऐसा ही किया जाता है। उदाहरणार्थ - हिटलर के समय में जर्मनी की जनता में देश-प्रेम की भावना को कूट-कूट कर भरना—शिक्षा का उद्देश्य था। जनता को यह भी शिक्षा दी जाती थी कि राज्य के हित के लिए अपने सब कुछ का बलिदान करना, उसका सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य है।

ऊपर जो कुछ लिखा है उससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा के उद्देश्यों का व्यक्ति के जीवन और समाज के आदर्शों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध होता है। अब हम इस सम्बन्ध के स्वरूप पर विचार करेंगे।

शिक्षा के उद्देश्यों का व्यक्ति के जीवन से सम्बन्ध
Relation of Educational Aims to the Life of the Individual

शिक्षा के उद्देश्यों का निम्नांकित प्रकार से व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है—

१. सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास . Development of Balanced Personality

शिक्षा के उद्देश्यों का व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। यदि वे उद्देश्य उपयुक्त हैं, तो उसके व्यक्तित्व का सन्तुलित विकास होता है। ऐसा न होने पर, उसका व्यक्तित्व विकृत हो जाता है।

२. मानसिक और आध्यात्मिक विकास Intellectual and Spiritual Growth

शिक्षा के उचित उद्देश्य व्यक्ति का मानसिक और आध्यात्मिक विकास करते हैं। मानव-जीवन आत्म-प्रदर्शन, क्षमता और अनुभव की निरन्तर वृद्धि से पूर्णता प्राप्त करता है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा के उद्देश्य जीवन की आवश्यकताओं के अनुसार बदलते रहने चाहिए। यदि ऐसा है तो जीवन से उनका सम्बन्ध सामञ्जस्यपूर्ण होगा, अन्यथा नहीं।

३. उचित निर्णय और मूल्यांकन की प्राप्ति Attainment of Right Judgment & Appreciation

शिक्षा के उत्तम उद्देश्य मनुष्य को उचित निर्णय और मूल्यांकन करने की क्षमता देते हैं। यदि शिक्षा के उद्देश्य उत्तम नहीं हैं, तो मनुष्य अच्छे-बुरे, सत्य-असत्य, नैतिक-अनैतिक, हितकर-अहितकर कार्यों और विचारों में अन्तर नहीं कर सकता है।

जीवन-मूल्यों पर नियन्त्रण . Control on the Values of Life

शिक्षा के अच्छे उद्देश्य व्यक्ति को जीवन-मूल्यों पर नियन्त्रण प्राप्त करने

करने में सहायता देते हैं। यदि शिक्षा के उद्देश्य अच्छे नहीं हैं, तो वह इन मूल्यों पर नियन्त्रण प्राप्त करने में असफल रहता है।

५. मानव-पूर्णता की प्राप्ति Achievement of Human Perfection

शिक्षा के श्रेष्ठ उद्देश्य व्यक्ति को मानव-जीवन की पूर्णता की प्राप्ति की ओर बढ़ाते हैं। पर इसकी प्राप्ति तभी हो सकती है, जब शिक्षा के उद्देश्य व्यक्ति को ज्ञान, अनुशासन, सत्यम्-शिवम् और सुन्दरम् की प्राप्ति के योग्य बनायें।

६. आत्म सुरक्षा की तैयारी Preparation for Self-Preservation

शिक्षा के उच्च उद्देश्य व्यक्ति को आत्म-सुरक्षा के लिए तैयार करते हैं। वे व्यक्ति के जीवन की आकस्मिक विनाश से रक्षा करते हैं और अनुचित सम्बन्ध द्वारा की गई क्षति को दूर करते हैं।

७. मानव-आत्मा का पोषण Nurture of Human Spirit

शिक्षा के अच्छे उद्देश्य मानव-आत्मा का पोषण करते हैं। इनके अभाव मे मानव-आत्मा का विकास सम्भव नहीं है। हरबार्ट (Herbart) और फ्रोबेल (Froebel) ने इस बात पर बहुत बल दिया है।

८. सामाजिक संगठन का निर्माण . Building a Social Organization

इस संसार में व्यक्ति का मुख्य कार्य ऐसे समाज का संगठन करना है, जिसमे वह अपनी श्रेष्ठतम योग्यताओं को पूर्ण रूप से प्राप्त कर सकें। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब शिक्षा के उद्देश्यो और व्यक्ति के जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध हो।

९. जनहित की वृद्धि : Promotion of Common Welfare

शिक्षा के वांछित उद्देश्य बालक और बालिकाओं में सामाजिक भावना का विकास करके; उन्हें सामूहिक जीवन मे भाग लेने योग्य बनाते हैं। फलतः सामान्य हित की वृद्धि होती है।

१०. आचरण और नैतिक चरित्र की उन्नति : Development of Conduct & Moral Character

यदि शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण धर्म और दर्शन के सिद्धान्तो के अनुरूप किया जाता है, तो जीवन से उनका सम्बन्ध प्रशंसनीय होता है। ऐसे उद्देश्य बच्चो मे श्रेष्ठ आचरण और उत्तम नैतिक चरित्र प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न करते हैं।

शिक्षा के उद्देश्यो का समाज के आदर्शों से सम्बन्ध
Relation of Educational Aims to Ideals of Society

मानव-सभ्यता का इतिहास समाज और व्यक्तियो के हितो के संघर्ष की लम्बी

सकती है। अधिकांश समाजों ने अपने आदर्शों को व्यक्ति के आदर्शों से श्रेष्ठ माना है। फलतः व्यक्तियों को कुचला गया है, और कुचला जा रहा है। जब कभी भी कोई समाज शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करता है, तब वह अपने आदर्शों को अपने सामने रखता है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा के उद्देश्यों का सामाजिक आदर्शों से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। यह सम्बन्ध विभिन्न समाजों में विभिन्न रूपों में दिखाई देता है, जैसा कि निम्नलिखित वर्णन से स्पष्ट हो जायगा —

१. भौतिकवादी समाज में सम्बन्ध : Relationship in Materialistic Society

भौतिकवादी समाज में शिक्षा के उद्देश्यों और समाज के आदर्शों का आधार—दोनों का भौतिकवादी दृष्टिकोण होता है। इस सम्बन्ध में नैतिक आदर्शों, आध्यात्मिक मूल्यों, रचनात्मक कार्यों और विवेक के लिए कोई स्थान नहीं होता है।

२. प्रयोजनवादी समाज में सम्बन्ध : Relationship in Pragmatic Society

"इस समाज में राज्य को विभिन्न सामाजिक संगठनों के समान एक संगठन माना जाता है। अतः राज्य का शिक्षा पर एकमात्र अधिकार नहीं होता है। कोई भी संगठन शिक्षा देने का कार्य कर सकता है और इसके लिए वह किसी भी विधि या पाठ्य-क्रम को अपना सकता है। इस प्रकार समाज व्यक्तियों को विभिन्न शिक्षण-विधियों और पाठ्य-क्रमों में से किसी को चुनने की स्वतन्त्रता देता है। व्यक्ति से सम्बन्धित समाज का यही मुख्य आदर्श है। अतः यह आदर्श शिक्षा के उद्देश्यों और समाज के आदर्शों के बीच सम्बन्ध स्थापित करता है।

३. आदर्शवादी समाज में सम्बन्ध : Relationship in Idealistic Society

आदर्शवादी विचारधारा के अनुसार प्राकृतिक मनुष्य (Natural Man) को आदर्श मनुष्य (Ideal Man) में विकसित किया जाना चाहिए और आध्यात्मिक मूल्यों पर बल दिया जाना चाहिए। इसी आदर्श को ध्यान में रखकर आदर्शवादी समाज में शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। इन उद्देश्यों में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है—व्यक्ति को धार्मिक और नैतिक शिक्षा, जिससे उसका आध्यात्मिक विकास हो सके।

४. फासिस्ट समाज में सम्बन्ध : Relationship in Fascist Society

फासिस्ट समाज के आदर्श हैं—

१. राज्य का हित सर्वोपरि होता है।
२. राज्य के हित के लिए व्यक्ति को अपना बलिदान देना पड़ता है।
३. स्वतन्त्रता व्यक्ति का मौलिक अधिकार नहीं होता है।
४. उसे स्वतन्त्रता का अधिकार राज्य द्वारा दिया जाता है और इसका स्थान कर्त्तव्य से नीचे है, और

५. फासिस्ट समाज या राज्य पर श्रेष्ठ व्यक्तियों द्वारा शासन किया जाता है। इन व्यक्तियों का स्थान जनसाधारण से बहुत ऊँचा होता है।

उपरोक्त आदर्शों को ध्यान में रखकर शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। ये उद्देश्य असाधारण गुणों वाले व्यक्तियों को प्राथमिकता देते हैं और जनसाधारण तथा प्रतिभाशाली व्यक्तियों के बीच के अन्तर को अधिक करते है। इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए सब को शिक्षा के समान अवसर नहीं दिये जाते हैं।

४. साम्यवादी समाज में सम्बन्ध : Relationship in Communist Society

साम्यवादी समाज में आदर्श हैं—

१. सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं का स्वरूप भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के ढङ्ग के अनुसार निश्चित किया जाता है।
२. वस्तुओं का मूल्य उनके बनाने में किये गए परिश्रम के अनुसार रखा जाता है, और
३. शारीरिक तथा मानसिक कार्य करने वालों में कोई भेद-भाव नहीं किया जाता है।

साम्यवादी समाज में उपरोक्त आदर्शों से सम्बन्धित शिक्षा के उद्देश्य इस प्रकार होते हैं—शिक्षा में श्रम को अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। छात्रों को अपने को परिश्रम करने वाले समाज का श्रमिक समझना पड़ता है। यही कारण है कि साम्यवादी समाज में विद्यालय का स्थानीय फैक्ट्री या पोस्ट-आफिस और समीप के सहकारी फार्म से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा पर शासक वर्ग का पूर्ण अधिकार होता है। अतः छात्रों को दल की नीति के विषयों में पूर्ण जानकारी कराई जाती है। उन्हें आलोचना करने की स्वतन्त्रता नहीं दी जाती है।

साम्यवादी आदर्शों पर आधारित शिक्षा के उद्देश्य सौंदर्यात्मक दृष्टिकोण (Aesthetic Outlook) की उपेक्षा नहीं करते हैं। इसके साथ ही वे नैतिक शिक्षा पर बल देते हैं। पर इस शिक्षा का आधार होता है—सामाजिक हित, न कि दैवी आदेशों का पालन। साम्यवादी आदर्शों की विजय के लिए शिक्षा के उद्देश्य—वीरता, भक्ति, दृढ़ता और अनुशासन पर बल देते हैं।

५. लोकतन्त्रीय समाज में सम्बन्ध : Relationship in Democratic Society

लोकतन्त्रीय समाज में मानव के व्यक्तित्व को महत्त्व दिया जाता है और यह विश्वास किया जाता है कि मनुष्य अपने कार्यों को इस प्रकार कर सकते हैं, जिससे सबका हित हो। ऐसे समाज में सब व्यक्तियों के समान अधिकार और उनसे सम्बन्धित कार्य होते हैं। इस समाज में बल के स्थान पर विवेक का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार लोकतन्त्र के आदर्श मनुष्य के लिए सबसे उत्तम हैं। पर इसके साथ ही, वे कठिन भी हैं क्योंकि उनको तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब व्यक्ति सभी गुणों से सम्पन्न हों।

पूर्वोल्लिखित गुणों को विकसित करने के लिए शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है :—

१. छात्रों को मानव-व्यक्तित्व का आदर करना सिखाना।
२. उनको ज्ञान देकर सामाजिक विरासत को ग्रहण करने के लिए तैयार करना।
३. उनको आत्म-अनुशासन (Self-discipline) और जन-कल्याण को समझने में सहायता देना।
४. उनको सत्य की सीमा के अन्दर अपने बारे में सोचने की शक्ति देना।
५. उनको लोकतन्त्र का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देना- और
६. उनको यह शिक्षा देना कि समाज को उन्नत करना—उनके जीवन का ध्येय है।

उपसंहार

उपरोक्त के आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षा के उद्देश्यों का व्यक्ति के जीवन और समाज के आदर्शों से घनिष्ठ सम्बन्ध है। प्रत्येक व्यक्ति और समाज पर एक विशेष प्रकार की छाप होती है। दोनों ही शिक्षा के उद्देश्यों को व्यक्त करते हैं, चाहे उनका निर्माण व्यक्ति के हित के लिए या समाज के लाभ के लिये किया गया हो। शिक्षा के उद्देश्यों का व्यक्ति पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, और उनका समाज से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वे व्यक्ति को एक विशेष साँचे में ढालते है और स्वयं सामाजिक आदर्शों के द्वारा ढाले जाते हैं।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. *Discuss briefly the basis of the formulation of educational aims.*
2. *Can the realistic way of the formulation of educational aims be held superior to the idealistic way ? Give reasons in support of your answer.*
3. *How do political, social and economic conditions prevailing in a society help in the formulation of the aims of education ? Should they be the sole criteria for determining educational aims ? Express your views for or against it*
4. *What, in your opinion, is the relation of educational aims to life and social ideals ? With which of the two should the relation be deeper and why ?*
5. *Give a critical estimate of the relation of educational aims to the ideals of society.*

५८२९

६

शिक्षा के उद्देश्य का वर्गीकरण

CLASSIFICATION OF AIMS OF EDUCATION

"शिक्षा के अपने कोई उद्देश्य नहीं हैं।"

"Education as such has no aims."—*John Dewey.*

विषय-प्रवेश

जैसा कि ड्यूवी (Dewey) ने कहा है—शिक्षा के अपने कोई उद्देश्य नहीं होते हैं। फिर भी व्यक्ति या समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर उनका निर्माण किया जाता है। वे या तो लोगों की उन्नति के लिए या समाज के आदर्शों की प्राप्ति के लिए या इन दोनों के लिए निश्चित किये जाते हैं। इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों के विभिन्न प्रयोजन होते हैं और इन्हीं प्रयोजनों के आधार पर उनका निर्माण किया जाता है, इसीलिए उनके स्वरूप भिन्न होते हैं। हम शिक्षा के सब उद्देश्यों को निम्नलिखित शीर्षकों में बाँट सकते हैं—

१. सार्वभौमिक उद्देश्य (Universal Aims)
२. विशिष्ट उद्देश्य (Particular Aims)
३. वैयक्तिक उद्देश्य (Individual Aim)
४. सामाजिक उद्देश्य (Social Aim)

१. सार्वभौमिक उद्देश्य : Universal Aims

शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्य वे हैं, जो सामान्य रूप से सारी मानव-जाति पर लागू होते हैं। इस प्रकार के कुछ महत्त्वपूर्ण उद्देश्य वे हैं, जिनसे मानव-गुणों का विकास होता है, जैसे—प्रेम, अहिंसा, मानव के व्यक्तित्व का संगठन, उचित शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और समाज की प्रगति आदि। सभी शिक्षा-दर्शन और सिद्धान्त इनके बारे में एकमत हैं। यदि इनमें कोई अन्तर पाया जाता है, तो वह केवल भाषा का है। विभिन्न भाषाओं द्वारा इनको विभिन्न प्रकार से व्यक्त किया

जाता है, पर इनका सार एक ही है। इनका महत्त्व सार्वभौमिक है। ये शिक्षा को सार्वभौमिक रूप देते हैं।

२ विशिष्ट उद्देश्य Particular Aims

विशिष्ट उद्देश्यों को 'असामान्य उद्देश्य' (Specific Aims) भी कहते हैं। सार्वभौमिक उद्देश्यों की तुलना में इनका क्षेत्र सीमित होता है। इसी प्रकार इनकी प्रकृति (Nature) भी सीमित होती है। इन उद्देश्यों पर समय और परिस्थितियों का विशेष प्रभाव पड़ता है। इनका निर्माण किसी विशेष कारण से होता है। उदाहरणार्थ - एक पिछड़ा हुआ देश विज्ञान और तकनीकी विषयों के अध्ययन पर बल देता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि इन विषयों को आधारभूत मानवीय मूल्यों (Basic Human Values) से अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। इसका अर्थ केवल यह है कि मानवीय मूल्यों को उन्नत बनाने के लिए विज्ञान और तकनीकी विषयों के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाय, जिससे देश की भौतिक उन्नति हो सके। य कोई देश या समाज मानवीय मूल्यों की चिन्ता न करके केवल भौतिक प्रगति प ध्यान देता है, तो इसका परिणाम भयंकर हो सकता है।

सार्वभौमिक और विशिष्ट उद्देश्यों में संतुलन
Balance between the Universal & Particular Aims

शिक्षा के सार्वभौमिक और विशिष्ट उद्देश्यों में संतुलन और सामंजस्य रखा जाना बहुत आवश्यक है। ऐसा न करने से उनमें से किसी को भी क्षति हो सकती है। साधारणतः ऐसा होता है कि विशेष परिस्थितियों में भी सार्वभौमिक उद्देश्यों पर बल दिया जाता है, जबकि इन परिस्थितियों में विशिष्ट उद्देश्यों की ओर ध्यान देकर विशेष [illegible] की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, कभी कभी सार्व-भौमिक उद्देश्यों की चिन्ता न करके विशिष्ट उद्देश्यों पर ही ध्यान केन्द्रित रखा जाता है। ऐसा करना व्यक्ति और समाज—दोनों के लिए हानिकारक हो सकता है। उदाहरणार्थ—यदि भारत पूर्ण रूप से अपना ध्यान आर्थिक और औद्योगिक प्रगति पर [illegible] है, तो वह आध्यात्मिक दृष्टि से दिवालिया हो सकता है। इसी प्रकार यदि आध्यात्मिक प्रगति पर अधिक बल दे तो वह आर्थिक और औद्योगिक उन्नति न कर सकता है। इसका परिणाम यह हो सकता है कि इसके [illegible] निवासी गरीब और अभाव में जीवन व्यतीत करें।

अतः शिक्षा के सार्वभौमिक और विशिष्ट [illegible] में [illegible] संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए। यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि विशिष्ट उद्देश्यों का महत्त्व [illegible] है। इनका मुख्य कार्य [illegible] के [illegible] पूरा [illegible] प्राप्त करने में [illegible] होता है। अतः शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य इन [illegible] के [illegible] नहीं होने चाहिए। इनका शिक्षा के सार्वभौमिक उद्देश्यों से सामंजस्य होना बहुत आवश्यक है।

३. वैयक्तिक उद्देश्य : Individual Aim

वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए सामग्री जुटाता है। यह उसकी वैयक्तिकता (Individuality) को सफल, समर्थ और शक्तिशाली बनाने का प्रयास करता है। इस उद्देश्य के महत्त्व को बताते हुए ब्रिटिश बोर्ड आफ़ ऐजुकेशन ने लिखा है—"हर प्रकार के स्कूल तब तक अपना उचित कार्य करते हैं, जब तक वे वैयक्तिकता के स्वतन्त्र विकास का अवसर देते हैं और प्रत्येक बालक तथा बालिका को अधिक से अधिक मात्रा में वैयक्तिक विकास करने में सहायता देते हैं।"

"Schools of every type fulfil their proper purpose in so far as they foster the free growth of individuality, helping every boy and girl to achieve the highest degree of individual development."

—*British Board of Education Report on Secondary Education*

शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य का सर पर्सी नन (Sir Percy Nunn) द्वारा बहुत समर्थन किया गया है। उसका कथन है—शिक्षा को ऐसी दशायें उत्पन्न करनी चाहिए, जिनसे वैयक्तिकता का पूर्ण विकास हो सके और व्यक्ति मानव-जीवन को अपना मौलिक योग दे सके। *यहाँ यह बताना आवश्यक है कि नन (Nunn) की* वैयक्तिकता की धारणा दार्शनिक है। यह एक आदर्श है, जो अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है, पर जिसे प्राप्त किया जा सकता है।

४. सामाजिक उद्देश्य : Social Aim

इस उद्देश्य के समर्थकों का विश्वास है कि इसके द्वारा सामाजिक एकता और सहयोग उत्पन्न होते हैं। वे यह नहीं मानते हैं कि व्यक्ति समाज से दूर रहकर अपना विकास कर सकता है। रेमॉण्ट के अनुसार—"समाज-विहीन व्यक्ति कोरी कल्पना है।"

"The isolated individual is a figment of the imagination."

—*Raymont.*

जब तक व्यक्ति सामाजिक प्राणी है ... तब तक उसे अपनी ... पड़ेगा। इस ...

से कुशल बनाता है, जिससे कि वह अपनी जीविका की समस्या को हल कर सके और समाज पर भार न बने।

वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय

Synthesis between Individual & Social Aims

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों का विषय बहुत विवादपूर्ण है। शिक्षा-शास्त्री और राजनीतिज्ञ उनके बारे में एक मत के नहीं हैं। कुछ का कहना है कि शिक्षा पर प्रथम अधिकार व्यक्ति का है। अतः शिक्षा को व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी करनी चाहिए। इसके विपरीत, दूसरों का कहना है कि समाज व्यक्ति से श्रेष्ठ है। इसलिए शिक्षा को व्यक्ति की ओर ध्यान देने से पहले समाज की ओर ध्यान देना चाहिए।

आधुनिक विचारधारा व्यक्ति और समाज—दोनों को बराबर महत्व देती है। व्यक्ति समाज का और समाज व्यक्ति का निर्माण करता है। एक की प्रगति के लि दूसरे की प्रगति आवश्यक है। इस दृष्टिकोण से देखने पर शिक्षा के वैयक्तिक औ सामाजिक उद्देश्यों में कोई विरोध नहीं रह जाता है। इसकी पुष्टि रस्क के इस कथ से हो जाती है- "आत्म-विकास केवल समाज (सेवा) द्वारा ही प्राप्त किया जा सक है और वास्तविक महत्त्व का सामाजिक आदर्श केवल उन स्वतन्त्र व्यक्तियों द्वा स्थापित किया जा सकता है, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण वैयक्तिकता का विकास किया है।"

"Self-realization can be achieved only through social servic and social ideal of real value can come into being only throug free individuals who have developed valuable individuality."—*Rusk*

उपरोक्त कथन के आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षा के वैयक्तिक औ सामाजिक उद्देश्यों में कोई विरोध नहीं है। व्यक्ति और समाज—दोनों का शिक्ष पर समान अधिकार है। अतः दोनों उद्देश्यों में समन्वय आवश्यक है। केवल ऐस करने पर ही वे आदर्श दशायें उत्पन्न होंगी, जो व्यक्ति और समाज—दोनों की प्रगति के लिए उपयुक्त होंगी।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Can the aims of education be classified ? If so, give a classification which you consider suitable
2. Write short notes on :—
   (a) Universal and Particular Aims of Education, and
   (b) Individual and Social Aims of Education.

७

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य

INDIVIDUAL & SOCIAL AIMS OF EDUCATION

"सामाजिक वातावरण से अलग वैयक्तिकता का कोई मूल्य नहीं है और व्यक्तित्व अर्थहीन शब्द है, क्योंकि इसी में इनको विकसित और कुशल बनाया जाता है।"

"Individuality is of no value, and personality is a meaningless term apart from the social environment in which they are developed and made efficient "—*James S. Ross.*

विषय-प्रवेश

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यो ने तीव्र विवाद को जन्म दिया है जो अभी तक पूरी तरह से शान्त नहीं हो पाया है। यह विवाद निम्नांकित तीन मुख्य बातो पर है :—

१. शिक्षा को अच्छे व्यक्तियो का निर्माण करना चाहिए या नागरिको का ?
२. शिक्षा को व्यक्ति की आवश्यकतायें पूरी करनी चाहिये या समाज की ?
३. शिक्षा पर व्यक्ति का प्रथम अधिकार होना चाहिए या समाज का ?

उपरोक्त प्रश्नो के बाह्य रूप को देखकर यह कहना कठिन है कि व्यक्ति और समाज या शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों मे विरोध है या समन्वय। किसी भी एक निष्कर्ष पर हम तभी पहुँच सकते है, जब हम इन उद्देश्यो का अध्ययन कर लें। अतः हम इसकी ओर ध्यान दे रहे हैं —

शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य
Individual Aim of Education

वैयक्तिक उद्देश्य का अर्थ : Meaning of Individual Aim

संसार के विभिन्न समाजों मे प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षा के

यूकेन (Eucken) ने वैयक्तिकता को जैवकीय (Biological) अर्थ न देकर, आध्यात्मिक (Spiritual) अर्थ दिया है। उसका कथन है—"वैयक्तिकता का अर्थ है। आध्यात्मिक वैयक्तिकता, जो व्यक्ति अपने अन्दर मौजूद संसार की सहायता से अपनी आन्तरिक शक्तियों को बलवान बना कर प्राप्त करता है।"

"Individuality means rather the spiritual individuality which an individual acquires through his inner strengthening by an inner world present to him."—*Eucken.*

इसके साथ-साथ हम यूकेन (Eucken) की व्यक्तित्व (Personality) की धारणा को भी स्वीकार कर सकते हैं। उसका कथन है—"व्यक्तित्व को प्रकृति के जीवन के विपरीत एक नये जीवन का प्रतीक माना जाना चाहिए। न तो हम आध्यात्मिक वैयक्तिकता के साथ जन्म लेते हैं, और न हम प्रारम्भ से ही व्यक्तित्व वाले मनुष्य होते हैं। हममें केवल व्यक्तित्व का निर्माण करने की शक्ति होती है।"

"Personality must be regarded as the bearer of a new life in contrast to that of nature, and not simply as something added to Nature. Neither do we bring spiritual individuality with us into life, nor are we men personalities from the beginning We have within us simply the potentiality of becoming a personality."—*Eucken.*

इस प्रकार यूकेन (Eucken) के मतानुसार आध्यात्मिक वैयक्तिकता और व्यक्तित्व जन्मजात नहीं होते हैं, वरन् उन्हें प्राप्त किया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य का अर्थ है—उत्तम व्यक्तित्व और आध्यात्मिक वैयक्तिकता का विकास। हमारे इस कथन की पुष्टि रास के इन शब्दों में हो जाती है—"शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य का अर्थ जो हमारे स्वीकार करने के योग्य है, वह केवल यह है—महत्वपूर्ण व्यक्तित्व और आध्यात्मिक वैयक्तिकता का विकास।"

"The only meaning of the individual aim in education that is worthy of our acceptation is the development of valuable personality and spiritual individuality."—*J. S. Ross*

वैयक्तिक उद्देश्य के रूप : Forms of Individual Aim

शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य के दो रूप हैं—(१) आत्माभिव्यक्ति (Self-Expression), और (२) आत्मानुभूति (Self-Realization)।

१. आत्माभिव्यक्ति का उद्देश्य : Aim of Self-E

जो शिक्षा-शास्त्री वैयक्तिक विकास ... में मानते हैं, उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य— ... यह है कि वे

आत्म-प्रकाशन (Self-Assertion) पर विशेष बल देते हैं। उनका कहना है कि व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार चाहे जैसा भी कार्य या व्यवहार कर सकता है, भले ही उससे दूसरों को हानि हो। मनोविश्लेषणवादियों (Psycho-Analysts) का कहना है कि आत्म-प्रकाशन से व्यक्ति का मस्तिष्क रोग से मुक्त हो जाता है और उसे स्वतंत्र रूप से विकसित होने का अवसर मिलता है। इस दृष्टिकोण से आत्म-प्रकाशन का उद्देश्य भले ही ठीक मान लिया जाय, पर इससे पाशविक प्रवृत्तियों का विकास होता है। अतः यदि सब व्यक्तियों को आत्म-प्रकाशन की स्वतन्त्रता दे दी जाय, तो समाज उस प्राचीन अवस्था में पहुँच जायगा, जब उसका विशेष लक्षण संघर्ष था। ऐसी दशा में समाज की प्रगति होना तो असम्भव हो ही जायगा, पर इससे भी अधिक खराब बात यह होगी कि वह धूल में मिल जायगा।

२. आत्मानुभूति का उद्देश्य Aim of Self-Realization

आत्मानुभूति का आदर्श आत्माभिव्यक्ति से भिन्न है। आत्माभिव्यक्ति में 'स्व' (Self) का अभिप्राय है—'जैसा मैं उसे जानता हूँ' (Self as I know it)। आत्मानुभूति में 'स्व' का अभिप्राय है—'जैसा मैं उसका होना चाहता हूँ' (Self as I would have it to be.)। आत्माभिव्यक्ति में 'स्व' व्यक्ति का 'मूर्त स्व' (Concrete Self) है। आत्मानुभूति में 'स्व' वह 'आदर्श स्व' (Ideal Self) है, जिसके बारे में हम कल्पना कर सकते हैं। आत्माभिव्यक्ति में समाज के लाभ या हानि का कोई ध्यान नहीं रखा जाता है। आत्मानुभूति के आदर्श में 'स्व' समाज-विरोधी व्यवहार करके अपनी अनुभूति नहीं कर सकता है। ("The self in the ideal of self-realization cannot realize itself against society" —*Adams*) इस प्रकार आत्मानुभूति के उद्देश्य में समाज और सामाजिक वातावरण के महत्त्व को स्वीकार किया जाता है।

वैयक्तिक उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for Individual Aim

(१) प्रजातन्त्र व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बल देता है। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य—व्यक्ति का विकास होना चाहिए।

(२) संसार में जितनी भी अच्छी बातें हैं, उनकी उत्पत्ति मनुष्य के स्वतन्त्र प्रयत्नों के कारण हुई है, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य—मनुष्य का हित और विकास होना चाहिए।

(३) हर समाज की सभ्यता और संस्कृति को उन्नत रूप देकर व्यक्ति ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बढ़ाते हैं। इसलिए शिक्षा में वैयक्तिक विकास को महत्त्व दिया जाना चाहिए।

(४) जीव-विज्ञान के अनुसार संसार का हर-एक प्राणी अपने पूर्ण विकास करने के लिए स्वतन्त्र और प्रयत्नशील है। अतः व्यक्ति को भी अपने विकास का अवसर मिलना चाहिए।

(५) समाज का निर्माण व्यक्ति अपने हित के लिए करते हैं। अत शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का विकास होना चाहिए।

(६) मनोविज्ञान के अनुसार यदि किसी व्यक्ति पर समाज के आदर्शों को बलपूर्वक लादा जाता है, तो वह विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है। अत यह आवश्यक है कि व्यक्ति की मूल-प्रवृत्तियों (Instincts) को ध्यान में रखकर ऐसी दशाओं का निर्माण किया जाय, जिनमें उसका विकास हो।

(७) इतिहास हमें बताता है कि जब-जब व्यक्ति की स्वतन्त्रता का दमन किया गया है, तब-तब उसके परिणाम अच्छे नहीं निकले हैं। जर्मनी में यही किया गया, जिसके परिणामस्वरूप प्रथम और द्वितीय विश्व-युद्ध हुए। इसलिये व्यक्ति की स्वतन्त्रता का दमन नहीं किया जाना चाहिए और उसे अपना विकास करने का पूरा अवसर दिया जाना चाहिये।

(८) नन के अनुसार—"वैयक्तिकता जीवन का आदर्श है। शिक्षा की किसी भी योजना का महत्त्व उसकी उच्चतम वैयक्तिक श्रेष्ठता का विकास करने की सफलता से आँका जाना चाहिए।"

"Individuality is the ideal of life. A scheme of education is to be valued by its success fostering the highest degree of individual excellence."—*T. P. Nunn.*

वैयक्तिक उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against Individual Aim

आत्मानुभूति के रूप में शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य को उचित माना जा सकता है। पर आत्माभिव्यक्ति के रूप में इसमें निम्नलिखित दोष मिलते हैं :—

(१) व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन Encouragement to Individualism—इस बारे में दो मत नहीं हो सकते हैं कि शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्तिवाद को प्रोत्साहन देता है। ऐसी दशा में समाज को व्यक्तिवाद के भयंकर परिणामों का सामना करना पड़ता है।

(२) समाजवाद का शत्रु : Enemy of Socialism—समाजवाद और व्यक्तिवाद—दो विरोधी विचारधाराएँ हैं। अत वैयक्तिक उद्देश्य को समाजवाद का शत्रु कहना अनुचित नहीं होगा। इस दृष्टि से कम-से-कम भारत में तो शिक्षा के इस उद्देश्य को कोई जगह नहीं है। कारण यह है कि हमारा ध्येय—समाजवादी समाज (Socialistic State) की स्थापना करना है।

(३) सामाजिक विघटन Social Disorganization वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्ति के विकास के लिए सब तरह की स्वतन्त्रता देने के पक्ष में है। इस स्वतन्त्रता का परिणाम समाज के लिये हानिकारक हो सकता है। कारण यह है कि हर व्यक्ति अपनी मनमानी कर सकता है। फलत न केवल व्यक्ति का, वरन् समाज का भी विकास रुक सकता है और सामाजिक विघटन की प्रक्रिया प्रारम्भ हो सकती है।

(४) वातावरण में अनुचित परिवर्तन Undesirable Change in Environment—शिक्षा के अनेकों कार्यों में से एक कार्य यह है कि वह व्यक्ति को वातावरण से सामंजस्य करना सिखाये। इससे अधिक अच्छा कार्य यह है कि वह व्यक्ति को वातावरण में अच्छा परिवर्तन करने के लिए प्रशिक्षित करे। शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य इस कार्य में सहायता नहीं कर सकता है, क्योंकि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के कारण वातावरण पर बुरा प्रभाव पड़ता है। दूसरे शब्दों में, उसका रूप परिवर्तित होकर अनुचित या अवांछनीय हो जाता है।

(५) तर्क-शक्ति के विकास में बाधा Hindrance in the Development of Reasoning Power—शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में तर्क-शक्ति का विकास करना है, जिससे वह भले-बुरे और उचित-अनुचित में अन्तर कर सके। शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्ति की निरंकुश स्वतन्त्रता का समर्थन करने के कारण उसकी तर्क-शक्ति का उचित दिशा में विकास नहीं होने देता है।

(६) वास्तविक जीवन के लिए अव्यावहारिक Inapplicable to Real Life—शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य को सिद्धान्त रूप में भले ही ठीक मान लिया जाय, पर वास्तविक जीवन में इसको व्यावहारिक रूप देना असम्भव है। यह सम्भव नहीं है कि प्रत्येक छात्र के वैयक्तिक विकास के लिये विशेष प्रकार के पाठ्यक्रम और विशेष प्रकार के स्कूल की व्यवस्था की जाय। इस समस्या का हल बताते हुए नन (Nunn) ने कहा है कि अध्यापक को शिक्षण का कार्य कुछ आवश्यक सीमाओं में करना पड़ेगा, पर इससे छात्रों की वैयक्तिकता का विकास भी कुछ सीमाओं में ही होगा।

(७) नैतिक गुणों की उपेक्षा Disregard of Moral Virtues—शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य आत्म-प्रदर्शन की गलत धारणा पर आधारित है। नित्शे (Nietzche) व्यक्तिवादी दर्शन का प्रमुख समर्थक है। उसका कहना है कि व्यक्ति को अपनी इच्छा-शक्ति के अलावा और किसी भी नैतिकता को स्वीकार किये बिना अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करना चाहिए। ऐसी दशा में प्रेम, दया, सहानुभूति, बलिदान आदि नैतिक गुणों की उपेक्षा होना आवश्यक है।

(८) मनुष्य के सामाजिक स्वरूप की उपेक्षा Disregard of Man' Social Nature—हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि मनुष्य सामाजिक प्राणी (Man is a social animal)। वह समाज में रहकर अपनी पाशविक प्रवृत्ति ऊँचा उठता है। केयर्ड का कथन है —"मनुष्य सामाजिक जीवन को अपना सम करके ही अपनी पाशविक प्रवृत्ति से ऊँचा उठता है।"

"It is through the surrender of himself to social life man is first lifted above his animal individuality." —*Caird.*

इस कथन के अनुसार व्यक्ति को समाज से श्रेष्ठ नहीं समझा जा सकत फिर जैसा कि इकर्सियस ने कहा है — 'मानव-प्रकृति उतनी ही सामाजिक है,

कि स्वाभिमानी।" ("Man's nature is social as truly as it is self regarding"—*Ephasius*)। ऐसी स्थिति मे मनुष्य और समाज का महत्त्व बराबर है। अतः वैयक्तिक उद्देश्य के नारे लगाना व्यर्थ है।

(९) दार्शनिक विचारो के प्रतिकूल : **Contrary to Philosophical Views**—अन्तिम सत्ता के आधार पर दर्शन मे तीन वाद हैं—अद्वैतवाद (Monism), द्वैतवाद (Dualism), और बहुवाद (Pluralism)। आज के युग मे ये सभी वाद स्वीकार करते हैं कि "ज्ञान के विकास की दिशा सम्पूर्णता की ओर है।" ("The direction of the development in knowledge is towards totality."—*W M Urban*) इसके अतिरिक्त दर्शन का मुख्य सिद्धान्त है 'विभिन्नता मे एकता' (Unity in Diversity)। इस प्रकार शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य दार्शनिक विचारो के प्रतिकूल है। सच तो यह है कि ससार की सभी वस्तुएँ एक ही पूर्णता की अग है। इस आदर्श पर अपने विचार व्यक्त करते हुए टैनीसन ने लिखा है :—

"Flower in the crannied wall
If I know you, what you are, all in all
I should know what man is and what God is"

—***Lord Tennyson.***

(१०) पर्यावरण की उपेक्षा : **Disregard of Environment**—वैयक्तिक उद्देश्य के समर्थक वशानुक्रम (Heredity) से प्राप्त पाशविक प्रवृत्तियो के विकास पर बहुत बल देते हैं। ऐसा करते समय वे पर्यावरण (Environment) को बिल्कुल भूल जाते हैं। सत्य यह है कि मनुष्य के निर्माण मे पर्यावरण का हाथ अधिक है। लैंडिस और लैंडिस ने ठीक ही लिखा है :—**"वशानुक्रम मनुष्य के पशु रूप की व्याख्या करता है, पर्यावरण मनुष्य के मानव रूप की।"**

"Heredity explains man the animal, environment man the human being."—*Landis & Landis.*

जब मनुष्य के निर्माण मे पर्यावरण का इतना अधिक हाथ है तब सामाजिक पर्यावरण की उपेक्षा करके मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास की बात सोचना कोरी कल्पना है। रॉस का यह कथन सत्य है :—"सामाजिक पर्यावरण से अलग वैयक्तिकता का कोई मूल्य नहीं है और व्यक्तित्व अर्थहीन शब्द है, क्योकि इसी मे इनको विकसित और कुशल बनाया जाता है।"

"Individuality is of no value, and personality is a meaningless term apart from the social environment in which they are developed and made efficient."—*J. S. Ross.*

निष्कर्ष

हमने शिक्षा के वैयक्तिक उद्देश्य के पक्ष और विपक्ष मे जो तर्क दिये हैं,

उक्त आधार पर यह कह सकते हैं कि वैयक्तिकता का विकास एक उत्तम उद्देश्य है। पर हमें यह स्वीकार करना पड़ता कि समाज की उपेक्षा करके वैयक्तिकता का विकास नहीं किया जा सकता है। जहाँ तक वैयक्तिक उद्देश्य के आत्माभिव्यक्ति (Self-Expression) रूप का प्रश्न है, उसे किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं किया जा सकता है। हाँ, उसके आत्मानुभूति (Self Realization) रूप को स्वीकार किया जा सकता है, क्योंकि इसका सम्बन्ध वैयक्तिक और सामाजिक—दोनों प्रकार के विकास से है। इस प्रकार वैयक्तिक उद्देश्य अपने पूर्ण रूप में मान्य नहीं है।

शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य
Social Aim of Education

सामाजिक उद्देश्य का अर्थ : Meaning of Social Aim

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य को 'शिक्षा का सामाजिक और नागरिकता का उद्देश्य' (Social and Citizenship Aim of Education) भी कहा जाता है।

इस उद्देश्य के अनुसार समाज या राज्य का स्थान व्यक्ति से बहुत ऊँचा है। समाज के हित में ही व्यक्ति का हित है। समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है। समाज में रहकर ही वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है, अपना विकास कर सकता है और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकता है। जो बात व्यक्ति के बारे में सत्य है, वही समाज के बारे में भी सत्य है। समाज का निर्माण व्यक्ति करते हैं। अतः व्यक्तियों के अभाव में समाज अर्थहीन है। समाज अपनी एकता और उन्नति के लिये व्यक्तियों पर ही निर्भर है। उनके सहयोग के बिना उसकी प्रगति असम्भव है। इस प्रकार व्यक्ति और समाज का सम्बन्ध अटूट है। पर शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य के अनुसार इस सम्बन्ध में समाज का स्थान व्यक्ति के स्थान से ऊँचा है। व्यक्ति को अपने हित का ध्यान न रखकर समाज के हित का ध्यान रखना चाहिये। उसे आवश्यकता पड़ने पर समाज के लिये हर प्रकार का बलिदान देने के लिये तैयार रहना चाहिये।

अमरीका के प्रोफेसर बेगल (Bagley) और डाक्टर ड्यूवी (Dewey) ने इस उद्देश्य की व्याख्या दूसरे ढंग से की है। उनका कथन है कि शिक्षा में सामाजिक उद्देश्य का अर्थ है—सामाजिक कुशलता (Social Efficiency) की प्राप्ति। अतः शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सामाजिक रूप से कुशल बनाना है। ऐसा व्यक्ति अपनी जीविका की समस्या को हल कर सकने के कारण समाज पर भार नहीं रहता है। साथ ही अच्छा नागरिक होने के कारण वह अपने देश और समाज की समस्याओं को समझता है। इसके अतिरिक्त वह इस प्रकार प्रशिक्षित होता है कि वह अन्य नागरिकों और राज्य की इच्छाओं तथा आवश्यकताओं को सम्मान देता है।

सामाजिक उद्देश्य के रूप : Forms of Social Aim

शिक्षा मे सामाजिक उद्देश्य के तीन रूप मिलते हैं —(१) सामान्य रूप (Simple Form), (२) उग्र रूप (Extreme Form) और (३) उदार रूप (Liberal Form)

१. सामाजिक उद्देश्य का सामान्य रूप Simple Form of Social Aim

सामान्य रूप मे शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य की सर्वमान्य और साधारण व्याख्या की जाती है। इस रूप के समर्थकों का विश्वास है कि इसके द्वारा सामाजिकता और सहयोग उत्पन्न होते हैं, जो जीवन की सुख-सुविधाओं को भोगने के लिये बहुत आवश्यक हैं। वे यह नहीं मानते हैं कि व्यक्ति समाज से दूर किसी निर्जन स्थान मे रहकर अपने जीवन का निर्वाह और विकास कर सकता है। रेमाण्ट ने ठीक ही लिखा है—"समाजविहीन व्यक्ति कोरी कल्पना है।" ("The isolated individual is a figment of the imagination."—*Raymont*.)

जब तक मानव सामाजिक प्राणी है और समाज म सामाजिक सम्बन्धो के द्वारा जीवित रहता और विकसित होता है, तब तक उसे अपनी वैयक्तिकता को कुछ सीमा तक सामाजिक या सार्वजनिक आवश्यकताओं के अधीन रखना पड़ेगा। इसके अलावा वह समाज की आवश्यकताओं के अनुसार अपने मे परिवर्तन करेगा। फलस्वरूप चेतन और अचेतन रूप म उसकी वैयक्तिकता का दमन होता रहेगा। यह शिक्षा में सामाजिक उद्देश्य का साधारण रूप है।

२. सामाजिक उद्देश्य का उग्र रूप Extreme Form of Social Aim

उग्र रूप मे शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य की सकीर्ण और असाधारण व्याख्या की जाती है। इसके समर्थकों का कथन है कि राज्य व्यक्ति और उसकी आकांक्षाओ से बहुत श्रेष्ठ है। अत राज्य को व्यक्ति से सम्बन्धित सब बातो पर अधिकार होना चाहिए। शिक्षा भी इन्हीं बातो मे से एक है। यह निश्चय करना केवल राज्य का ही कार्य होना चाहिए कि व्यक्ति के लिए शिक्षा के विषय और विधियाँ क्या हों। ऐसा करते समय व्यक्ति के हित का ध्यान न रखकर केवल राज्य की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। हमे इस विचारधारा का व्यावहारिक रूप प्राचीन स्पार्टा (Sparta) और आधुनिक नाजी जर्मनी मे मिलता है। दोनो मे सम्पूर्ण शिक्षा आज्ञापालन पर आधारित थी। दोनों मे ही व्यक्ति और उसके विकास के प्रति कोई ध्यान नहीं दिया जाता था।

प्राचीन स्पार्टा मे राज्य अपनी सुरक्षा और शक्ति को बनाये रखने के लिये अपने सभी नागरिकों को सैनिक प्रशिक्षण देता था। इतना ही नहीं, निर्बल बालको को मार डाला जाता था और उन्हे वीर बनाने के लिये होमर (Homer) की कविताएँ सुनाई जाती थी। वहाँ के प्रथम विधान-निर्माता लाइकरगस (Lycurgus)

की नागरिकों को यह शिक्षा थी कि उनके लिये इससे बुरी बात कोई नहीं है कि वे अपने लिये जीवित रहे। उनमें अपने देश के लिए सब कुछ करने की इच्छा के अलावा और कोई इच्छा नहीं होनी चाहिए।

"Lycurgus taught his citizens to think nothing more disagreeable than to live by or for themselves, they had not a wish but for their country"—*J S Ross*

इसी प्रकार हिटलर (Hitler) के समय में नाज़ी जर्मनी में लोगों को यह शिक्षा दी जाती थी कि राज्य ही सर्वोच्च सत्ता है और उसको बनाये रखने के लिए जीवन का बलिदान करने में भी सकोच नहीं करना चाहिए।

३. सामाजिक उद्देश्य का उदार रूप Liberal Form of Social Aim

उदार रूप में शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य इङ्गलैंड और अमरीका जैसे प्रजातन्त्रीय देशों में दिखाई देता है। वहाँ 'शिक्षा समाज-सेवा के लिये' (Education for Social Service) और 'शिक्षा नागरिकता के लिये' (Education for Citizenship) मानी जाती है। यह शिक्षा सामाजिक हित का विचार करती है और इस बात पर बल देती है कि स्कूलों में विभिन्न विषयों और सामाजिक कार्यों के द्वारा छात्रों को नागरिकता की शिक्षा दी जाय। लिस्टर स्मिथ का कथन है —"स्कूल को व्यापक कार्य करने चाहिये। उसे निश्चित रूप से सामाजिक दायित्व और समाज के प्रति भक्ति का निर्माण और विकास का कार्य करना चाहिए।"

'School should assume wider functions and definitely set itself to the task of creating and fostering the sense of social obligation and loyalty to the community"—*W O Lister-Smith.*

सामाजिक उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for Social Aim

(१) मनुष्य का जन्म, विकास और पोषण समाज में होता है। अतः उसे समाज के लिए बलिदान करने में सकोच नहीं करना चाहिए।

(२) मनुष्य के जीवन के लिए समाज अनिवार्य है। समाज ही उसकी सब आवश्यकताओं को पूरा करता है। समाज से अलग उसका जीवन असम्भव है। अतः उसे समाज के लिए सब कुछ न्यौछावर करने के लिये तैयार रहना चाहिए।

(३) समाज सभ्यता और संस्कृति को जन्म देता है और पोषण करता है। अतः मनुष्य को समाज के हितों की रक्षा करने के लिए हर तरह से तैयार रहना चाहिये।

(४) मनुष्य वंशानुक्रम (Heredity) से केवल पाशविक प्रवृत्तियों को प्राप्त करता है। सामाजिक पर्यावरण ही उसे मानव बनाता है। इसलिए शिक्षा में सामाजिक हित पर बल दिया जाना आवश्यक है।

(५) सामाजिक शान्ति और संगठन के लिये बालकों में नागरिकता के गुणों का विकास किया जाना आवश्यक है। ऐसा किये जाने पर ही वे निःस्वार्थ रूप में समाज का कल्याण कर सकते हैं।

(६) समाज में रहकर मनुष्य दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। वह उनसे विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करता है। फलस्वरूप उसकी विभिन्न शक्तियों का विकास होता है। इसलिये समाज की रक्षा करना—मनुष्य का परम कर्त्तव्य है।

(७) समाज ही मनुष्य को अपने एकाकी जीवन को सामूहिक जीवन में बदलने का अवसर देता है। सामूहिक जीवन ही उसे नई खोजों और नये आविष्कारों का अवसर देता है, जिनके फलस्वरूप उसका जीवन अधिक उत्तम बनता है। अतः उसे समाज के कल्याण की भावना से सराबोर होना चाहिये।

(८) जिन देशों में समाजवादी विचारधारा का प्रचलन है, वे हर प्रकार से सुखी और समृद्धशाली हैं।

(९) बाल्डविन के अनुसार—"व्यक्तित्व को सामाजिक शब्दों के अतिरिक्त और किसी प्रकार व्यक्त नहीं किया जा सकता है।" अतः सामाजिक शिक्षा पर बल दिया जाना आवश्यक है।

—"Personality cannot be expressed in any but social terms"

—*J. M. Baldwin.*

(१०) रॉस के अनुसार—"सामाजिक पर्यावरण से अलग वैयक्तिकता का कोई मूल्य नहीं है और व्यक्तित्व अर्थहीन शब्द है।"

"Individuality is of no value, and personality is a meaningless term apart from the social environment."—*Ross*

सामाजिक उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Social Aim

सामान्य और उदार रूप में शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य महत्त्वपूर्ण और लाभप्रद—दोनों हैं। पर उग्र रूप (Extreme Form) में इसमें निम्नलिखित दोष मिलते हैं:—

[illegible] sis—शिक्षा के [illegible] इस उद्देश्य में [illegible] स्थान नहीं है। [illegible] का परिणाम यह [illegible] है और वे जीवन में किसी प्रकार की प्रगति नहीं कर पाते हैं।

(२) मनुष्य साध्य को प्राप्त करने का साधन : Man only a Means to an End)—शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य के अनुसार मनुष्य केवल साधन मात्र है, जिसका प्रयोग करके समाज के साध्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। उदाहरणार्थ नाजी जर्मनी का साध्य था—राज्य को सर्वशक्तिमान बनाना। इस साध्य को प्राप्त करने के लिये द्वितीय महायुद्ध मे १८ वर्ष तक के नवयुवकों का भी रणदेवी को बलिदान दे दिया गया। इस विचार या विश्वास की जितनी ही बुराई की जाय, कम है।

(३) कला और साहित्य के विकास में बाधा Hindrance in the Development of Art and Literature—कला और साहित्य का विकास तभी सम्भव है, जब व्यक्ति को हर प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त हो। ऐसी परिस्थिति मे ही वह विभिन्न कलाओ और साहित्य की उन्नति की बात सोच सकता है और इस दिशा म कुछ कर सकता है। शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य म व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कोई स्थान नहीं है। *अत. किसी भी कला या साहित्य के विकास की बात सोचना ही मूर्खता है।*

(४) शिक्षा के साधनो का अनुचित प्रयोग Wrong Use of the Agencies of Education—जिस देश मे राज्य या समाज के हित को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है, वहाँ शिक्षा के साधनो का अनुचित प्रयोग किया जाता है। उदाहरणार्थ—साम्यवादी देशो (Communist Countries) मे श्रम को विशेष महत्त्व दिया जाता है। इसलिये शिक्षा के विभिन्न साधनो का प्रयोग बालको को यह बताने के लिये किया जाता है कि वे अपने को समाज का श्रमिक समझें। इन साधनो का प्रयोग यह बताने के लिये भी किया जाता है कि स्वतन्त्रता का अर्थ है—नियमो और आदेशो का पालन करने की स्वतन्त्रता, न कि उनकी आलोचना करने की स्वतन्त्रता। शिक्षा के साधनो के ये प्रयोग उचित नही है।

(५) ऐतिहासिक दुष्परिणाम Historical Evils—सामाजिक उद्देश्य के कितने ही ऐतिहासिक दुष्परिणामो की चर्चा की जा सकती है। इतिहास हमे बताता है कि राज्य के कितने ही कर्णधारो ने अपने देशों को धूल मे मिला दिया। आधुनिक युग मे हिटलर और मुसोलिनी ऐसे ही कर्णधार थे। इनके कारण ससार मे युद्ध की लपटे दहक उठी, जिनके कारण जन और सम्पत्ति की विशाल हानि हुई और उनके देश चौपट हो गये।

(६) समाज मनुष्य से श्रेष्ठ नहीं : Society not above Man—सामाजिक उद्देश्य के अनुसार समाज को मनुष्य से श्रेष्ठ समझा जाता है, पर यह धारणा गलत है। समाज का निर्माण मनुष्यों ने अपने हित के लिये किया था, न कि अपना बलिदान करके समाज के कल्याण के लिये। समाज का अस्तित्व व्यक्तियों की आवश्यकताओ को पूर्ण करने के लिये और उनको सब प्रकार की सुख-सुविधायें देने के लिए है, जिससे कि वे इस ससार म आनन्द का जीवन व्यतीत कर सकें। समाज या

राज्य की श्रेष्ठता का सिद्धान्त शक्तिलोलुप मनुष्यों के द्वारा प्रतिपादित किया गया है, जो इस बहाने से लोगों के जीवन से खेल करना चाहते हैं। हिटलर ऐसा ही मनुष्य था। सत्य यह है कि व्यक्ति का स्थान समाज से ऊपर है। अत शिक्षा का उद्देश्य—व्यक्ति का विकास करना होना चाहिये, न कि समाज का। व्यक्ति का विकास होने से समाज का विकास स्वय ही हो जायगा।

(७) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का दमन Suppression of Individual Freedom—शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का कोई स्थान नहीं है। इसके विपरीत, इस स्वतन्त्रता का दमन करने के लिये हर प्रकार के उचित और अनुचित साधनों का प्रयोग किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि मनुष्य एक ऐसी मशीन बन जाता है, जो अपने देश के शासकों के इशारे पर सब कुछ करने के लिये तैयार रहता है। दूसरे शब्दों में, वह हर प्रकार का कार्य, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, करने के लिये बाध्य होता है। इन कार्यों के लिये न तो उसको उत्तरदायी ठहराया जा सकता है और न इनसे उसकी प्रगति ही हो सकती है।

(८) एकांगी शिक्षा *One Sided Education*—सामाजिक उद्देश्य जिस शिक्षा का समर्थन करता है, वह एकांगी है। इस शिक्षा में नागरिकता और समाज-सेवा की शिक्षा के लिये कोई स्थान नहीं है। यह उनको केवल आज्ञाकारी व्यक्तियों के रूप में राजनैतिक क्षेत्र के लिये तैयार करती है। अतः उनका अन्य क्षेत्रों से बहुत कम सम्बन्ध रह जाता है। परिणाम यह होता है कि उनका मानसिक, सौन्दर्यात्मक, चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास नहीं हो पाता है। इस विकास से विहीन व्यक्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। इस प्रकार शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य में एकांगीपन का दोष पाया जाता है।

(९) सकुचित राष्ट्रीयता का विकास : Development of Narrow Nationalism—सामाजिक उद्देश्य पर आधारित शिक्षा सकुचित राष्ट्रीयता का विकास करती है। उदाहरणार्थ—नाजी जर्मनी की शिक्षा का मूलमन्त्र था कि जर्मन प्रजाति ससार की सब प्रजातियों से श्रेष्ठ है, अतः उसे दूसरों पर शासन करने का अधिकार है। इस शिक्षा का प्रभाव जर्मनी के व्यक्तियों पर यह पड़ा कि वे अपने को सर्वश्रेष्ठ समझने लगे और दूसरे देशों के लोगों को तुच्छ समझ कर उनसे घृणा करने लगे। द्वितीय विश्व-युद्ध के प्रारम्भ होने का एक कारण यह भी था। पर इस कारण से ससार को कितनी क्षति हुई, यह किसी भी शिक्षित व्यक्ति से छिपी नहीं है।

(१०) व्यावसायियों का निर्माण Production of Vocationists—शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य सामाजिक हितों का ध्यान रखकर व्यक्तियों को विभिन्न व्यवसायों की शिक्षा देना है। इससे समाज की आवश्यकताएँ तो पूरी हो जाती हैं, पर मनुष्य के व्यक्तित्व का धार्मिक, आध्यात्मिक, कलात्मक और सौन्दर्यात्मक विकास

नहीं हो पाता है। हार्न का यह कथन ठीक ही है—"ऐसी शिक्षा अन्त में कुशल व्यावसायिक का निर्माण करती है। यह शिक्षा धार्मिक और आध्यात्मिक अनुभव को कोई महत्त्व नहीं देती है।"

"Such an education will produce cultivated vocationist in the end ; it underestimates the importance of religious and spiritual experience."—*H. H. Horne*

निष्कर्ष

शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य के बारे में हमने ऊपर जो कुछ लिखा है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि इस उद्देश्य को उग्र रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसमें इतने अधिक दोष हैं कि इसके आधार पर शिक्षा की व्यवस्था करना मनुष्य के व्यक्तित्व का दमन और उसकी आत्मा का हनन करना है। व्यक्ति का जीवन केवल समाज, देश या राष्ट्र के लिये ही नहीं है, वरन् अपने लिये भी है। समाज को सर्वोच्च सत्ता मानकर व्यक्ति को उसके जन्म से ही ऐसी बेड़ियाँ पहिना दी जाती हैं, जो केवल उसकी मृत्यु के बाद उतरती हैं। हाँ, हम सामाजिक शिक्षा के उदार रूप का समर्थन करते हैं, जिस पर आज के प्रगतिशील प्रजातान्त्रिक देशों में बल दिया जा रहा है।

वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय
Synthesis between Individual & Social Aims

वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय की आवश्यकता
Need of Synthesis between Individual & Social Aims

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों के बारे में समय-समय पर विवाद हुआ है। इसका प्रमुख कारण वह विचारधारा है, जिसके अनुसार व्यक्ति और समाज को एक-दूसरे का विरोधी माना गया है। कुछ शिक्षा-शास्त्री वैयक्तिक उद्देश्य का समर्थन करते हुए कहते हैं कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का विकास किया जाना चाहिये। इनके विपरीत वे विचारक हैं, जो शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य पर बल देते हैं और कहते हैं कि व्यक्ति को समाज के हित के लिये अपना बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए। वास्तव में दोनों ने व्यक्ति और समाज को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया है। इसी कारण व्यक्ति और समाज—दोनों को समय-समय पर बहुत हानि उठानी पड़ी है।

इस हानि को रोकने का उपाय केवल यही है कि वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय किया जाय। वास्तव में इसकी आवश्यकता भी है क्योंकि समन्वय करने से ही व्यक्ति और समाज—दोनों का हित होगा। अगर हम ठंडे दिमाग से सोचें, तो शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय की कोई आवश्यकता ही

नहीं है। इन दोनों में या यों कहिए कि व्यक्ति और समाज में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक को दूसरे से अलग करना असम्भव है। सच तो यह है कि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य : एक-दूसरे के पूरक
Individual & Social Aims : Complementary to Each Other

शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य एक-दूसरे के पूरक हैं। पर क्यों? क्योंकि व्यक्ति और समाज—दोनों अपनी प्रगति के लिये एक-दूसरे का सहारा चाहते हैं। न हम समाज विहीन व्यक्ति की कल्पना ही कर सकते हैं और न व्यक्ति विहीन समाज की। एक के अभाव में दूसरे का जीवन असम्भव है। व्यक्ति के लिये समाज का महत्त्व बताते हुए रॉस ने लिखा है—"वैयक्तिकता का विकास केवल सामाजिक वातावरण में होता है, जहाँ सामान्य रुचियों और सामान्य क्रियाओं से उसका पोषण हो सकता है।"

"Individuality develops only in social atmosphere where it can feed on common interests and common activities."—*Ross*.

रॉस के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य की वैयक्तिकता और व्यक्तित्व का विकास केवल समाज में ही हो सकता है, उससे अलग रहकर नहीं। जिस प्रकार व्यक्ति के लिए समाज आवश्यक है, उसी प्रकार समाज के लिये व्यक्ति आवश्यक है। व्यक्ति और समाज की सत्ता अलग नहीं है। व्यक्ति से समाज का निर्माण होता है और समाज व्यक्ति का निर्माण करता है। ये दोनों मिलकर एक बनते हैं। हमें समाज का जो कुछ ज्ञान है, वह व्यक्तियों के रूप में है। व्यक्तियों के अतिरिक्त समाज की सत्ता कहाँ हो सकती है? परन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं है कि समाज की सत्ता कुछ नहीं है। व्यक्ति जो कुछ है, समाज के कारण ही है, अपनी सामाजिक विरासत (Social Heritage) के कारण ही है। यदि सामाजिक विरासत और सामाजिक परम्परा न हों, तो व्यक्ति जंगली ही रहेगा। भारतीय अपनी परम्परा के कारण भारतीय है और फ्रांसीसी अपनी परम्परा के कारण फ्रांसीसी है। व्यक्ति और समाज का समन्वय ही वास्तविक सत्य है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। अतः शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य भी एक-दूसरे के पूरक हैं।

जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, कुछ लोगों का कहना है कि व्यक्ति और समाज का पारस्परिक विरोध है। टामस हाब्स (Thomas Hobbes) का कथन था कि समाज सदैव व्यक्ति की स्वतन्त्रता को नियन्त्रित करने का प्रयास करता है। यही कारण है कि आजकल विधान परिषदों में व्यक्ति की स्वतन्त्रता को रखने के लिये आवाज उठाई जाती है। इसके विरुद्ध जो लोग समाज को महत्त्व देते हैं, उनका कहना है कि व्यक्ति को किसी प्रकार का अधिकार नहीं है। वास्तव में ये दोनों तर्क एकांगी हैं। इन दोनों का आधार व्यक्ति और समाज की स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार करने

का विचार है। बीज और भूमि तो अलग-अलग हैं, पर व्यक्ति और समाज अलग नहीं हैं। व्यक्तियों के मिलने से समाज का निर्माण होता है और सामाजिक परम्परा व्यक्ति का निर्माण करती है। दोनों का विरोध नहीं, अपितु समन्वय है। दोनों एक दूसरे को पूर्ण करने वाली धारणायें हैं। इसी प्रकार शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में विरोध नहीं, वरन् समन्वय है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इसकी पुष्टि करते हुए मैकाइवर ने लिखा है — 'समाजीकरण और वैयक्तीकरण एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं।'

"Socialization and individualization are two sides of a single process." - *R. M. MacIver*

वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों के समन्वय के अनुसार शिक्षा का रूप

Nature of Education According to Synthesis Between Individual & Social Aims

हम ऊपर यह स्पष्ट कर चुके हैं कि शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में विरोध नहीं, वरन् समन्वय है। अब प्रश्न यह उठता है कि इस समन्वय के अनुसार शिक्षा का रूप कैसा होना चाहिये? शिक्षा के इस रूप को निश्चित करने के लिये हमें बीच का रास्ता अपनाना चाहिये। हमें ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिये, जिसमें न तो समाज व्यक्ति को अपना दास बना सके और न व्यक्ति इतना स्वतन्त्र हो जाय कि वह सामाजिक नियमों को ठुकरा कर अपनी मनमानी कर सके। इस शिक्षा-व्यवस्था में व्यक्ति और समाज की स्वतन्त्रता ऐसी सीमाओं में रहनी चाहिये, जिससे दोनों का विकास और कल्याण हो सके। शिक्षा का उद्देश्य, जैसा कि रेमाण्ट ने लिखा है, दोहरा होना चाहिए — 'व्यक्ति की पूर्णता और समाज का कल्याण' ("The perfection of the individual and the good of the community" - *Raymont*)। हुमायूँ कबीर का कथन है — "यदि व्यक्ति को समाज का रचनात्मक सदस्य बनना है, तो उसे केवल अपना ही विकास नहीं करना चाहिए वरन् समाज के विकास में भी योग देना चाहिये।"

"If one is to be a creative member of the society, one must *not only sustain one's own growth, but contribute to the growth* of society."—*Humayun Kabir.*

इसी प्रकार रस्क का कथन है - "आत्म-विकास केवल समाज-सेवा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है और वास्तविक महत्त्व का सामाजिक आदर्श केवल उन व्यक्तियों द्वारा स्थापित किया जा सकता है, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण वैयक्तिकता का विकास किया है।"

"Self-realization can be achieved only through social service, and social ideal of real value can come into being only

rough free individuals who have developed valuable individuality."—*Rusk*.

संहार

हमने ऊपर की पंक्तियो मे शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों को र्चा की है। इससे स्पष्ट हो गया है कि हम इनमे से किसी के भी उग्र रूप को वीकार नहीं कर सकते हैं। दोनो उद्देश्यो को उदार रूप अपनाना पड़ेगा, तभी दोनो समन्वय हो सकेगा और शिक्षा की ऐसी योजना बनाई जा सकेगी, जो मानव और माज—दोनो के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो। इस योजना मे बालकों को अपने यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करने का अवसर दिया जाय। साथ ही उन्हें भावी गरिकों के रूप में इस प्रकार प्रशिक्षित किया जाय कि वे अपने समाज, देश और ष्ट्र का उत्थान कर सकें। अन्त मे हम रॉस के शब्दो मे केवल यही कह सकते :—"वास्तव में जीवन और शिक्षा के उद्देश्यो के रूप में आत्म-विकास और समाज-वा मे कोई विरोध नहीं है, क्योंकि दोनों एक ही हैं।"

"Indeed there is no conflict between self-realization and ocial service as aims of life and education, for they are one."

—*J. S. Ross.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Differentiate between the Individual and Social Aims of education. What are their respective values and limitations ?
2. Is it possible to strike a balance between the Individual and Social Aims of Education ? If so, how ?
3. "*Individual* and *Social Aims* are complementary to each other." Elucidate.
4. Discuss the need of synthesis between the Individual and Social Aims of Education.
5. "*Indeed there is no conflict* between the *Individual* and Social Aims of Education." Comment

८

शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

(GENERAL AIMS OF EDUCATION

"ऐसा समझा जाता है कि शिक्षा को सन्तुलित मानव का विकास करना चाहिए और युवकों को समाज के लिये लाभप्रद कार्यों को करने तथा सामूहिक जीवन में भाग लेने के लिये तैयार करना चाहिये। पर जब समाज प्रतिदिन बदल रहा हो, तो यह जानना कठिन है कि युवकों को किस प्रकार तैयार किया जाय और शिक्षा के क्या उद्देश्य हों।"

"Education is supposed to develop an integrated human being and to prepare young people to perform useful functions for society and to take part in collective life. But when that society is changing from day to day; it is difficult to know how to prepare and what to aim at."—Jawaharlal Nehru : *Azad Memorial Lectures*, p. 23.

विषय-प्रवेश : शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता

हर समझदार मनुष्य अपने कार्यों को एक निश्चित योजना के अनुसार करता है। उनको करने से पहले वह उनके उद्देश्यों पर भली प्रकार विचार कर लेता है, वह उन्हें निश्चित भी कर लेता है। ऐसा न करना 'अँधेरे में छलांग मारने के समान' (A leap in the dark) है। कारण यह है कि उसके कार्यों का परिणाम अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी। यही बात शिक्षा के बारे में कही जा सकती है। यदि शिक्षा के उद्देश्य अच्छे और निश्चित हैं और यदि शिक्षक उनको जानता है, तो वह अपने छात्रों को उनकी प्राप्ति में सहायता देकर उनके जीवन को सफल बना सकता है। यदि ऐसा नहीं है, तो वह उनको किसी भी दिशा में ले जा सकता है। इससे उनका और उनके समाज—दोनों का भयङ्कर अहित हो सकता है। अतः यह अति आवश्यक है कि बालकों को किसी भी प्रकार की शिक्षा देने से पहले उसके उद्देश्यों

को निश्चित कर लिया जाय । प्रो० डॉ० भाटिया ने ठीक ही लिखा है—"उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है, जो अपने लक्ष्य या मंजिल को नहीं जानता है, और बालक उस पतवार-विहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी किनारे पर जा लगेगी ।"

"Without the knowledge of aims, the educator is like a sailor who does not know his goal or his destination, and the child is like a ruderless vessel which will be drifted along somewhere ashore."

—*B. D. Bhatia.*

शिक्षा के विभिन्न प्रकार के उद्देश्य
Various Kinds of Educational Aims

संसार में शिक्षा के विभिन्न प्रकार के उद्देश्य दिखाई देते हैं। शिक्षा के जो उद्देश्य लोकतन्त्र मे मिलेंगे, वे साम्यवादी देश मे नहीं मिलेंगे। उदाहरणार्थ—अमरीकी शिक्षा और रूसी शिक्षा के उद्देश्यों में बहुत अधिक अन्तर है। इसके अतिरिक्त हर देश मे समय और जीवन की आवश्यकताओ के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य बदलते रहते हैं। उदाहरण के लिए—प्राचीन भारत मे शिक्षा का उद्देश्य—जीविका का उपार्जन नहीं था। पर आज के भारत मे इसे शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य समझा जाता है। स्पष्ट यह है कि शिक्षा के उद्देश्यो के बारे मे विचारको का एक मत नहीं है। अरस्तू का कथन है—"इस विषय में मत की एकता नहीं है कि बालक को क्या सीखना चाहिये।"

"There is no agreement as what the child should learn."

—*Aristotle.*

एक मत न होने के कारण ही शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का निर्माण किया गया है। इनके निर्माण का मुख्य आधार—देश की राजनैतिक व्यवस्था है। राजनीतिज्ञ ही देश पर शासन करते हैं। अतः वे बहुत-कुछ अपनी इच्छा के अनुसार ही शिक्षा के उद्देश्यो का निर्माण करते हैं। 'राजतन्त्र' (Monarchy) और 'अधिनायकतन्त्र' (Dictatorship) मे ऐसा ही होता है। हाँ, जिन देशो का वातावरण प्रजातान्त्रिक है, वहाँ शिक्षा के उद्देश्यो का निर्माण करते समय सार्वजनिक हित की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इन सब बातों को लिखने का हमारा अभिप्राय केवल यह बताना है कि विभिन्न देशो मे शिक्षा के उद्देश्य विभिन्न थे, विभिन्न हैं और विभिन्न रहेंगे।

शिक्षा के सामान्य उद्देश्य
General Aims of Education

जब हम विभिन्न समाजों के शिक्षा के उद्देश्यो पर दृष्टि डालते हैं, तब हमको उनमे बहुत-कुछ विभिन्नता मिलती है। उनमे एकरूपता का अभाव है। ऐसा होते हुए

भी शिक्षा के कुछ ऐसे सामान्य उद्देश्य हैं, जिनको सामान्य रूप से सभी देश और समाज स्वीकार करते हैं, भले ही उनके सामाजिक और राजनैतिक आधार विभिन्न हों। शिक्षा के ये सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

१. ज्ञान का उद्देश्य (Knowledge Aim)
२. शारीरिक विकास का उद्देश्य (Physical Development Aim)
३ चरित्र विकास का उद्देश्य (Character Development Aim)
४ सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य (Cultural Development Aim)
५ अनुकूलन का उद्देश्य (Adjustment Aim)

१. ज्ञान का उद्देश्य
Knowledge Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of the Aim

कुछ विद्वानों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—ज्ञान का अर्जन करना है। इनका कहना है—'विद्या के लिए विद्या' (Knowledge for the sake of knowledge)। इन विद्वानों में सुकरात (Socrates), प्लेटो (Plato), अरस्तू (Aristotle), दान्ते (Dante), कॉमेनियस (Comenius), बेकन (Bacon) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। कॉमेनियस का कथन है कि शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह बालक को विभिन्न विषयों का अधिक से अधिक ज्ञान दे, तभी शिक्षक अपने कर्त्तव्य का पूरी तरह से पालन करता है। कॉमेनियस ने तो यहाँ तक कहा है कि वह शिक्षा व्यर्थ है, जिसके द्वारा बालक ज्ञान का सचय नहीं करता है। प्राचीन भारत में ज्ञान के सचय पर इतना बल दिया जाता था कि गुरु लोग शिष्यों को हजारों श्लोक रटा देते थे। आज भी प्राचीन ढग की पाठशालाओं और मकतबों में रट कर ज्ञान की प्राप्ति पर बल दिया जाता है। यह वास्तव में ज्ञान के अर्जन का सकुचित अर्थ है। वह ज्ञान बिल्कुल व्यर्थ है, जिसका वास्तविक जीवन में उपयोग न किया जा सके।

उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

१. ज्ञान मनुष्य की प्रगति का आधार है।
२ ज्ञान मनुष्य को साधन-सम्पन्न बनाता है, उसकी शक्ति और आनन्द के द्वार खोलता है तथा उसे अपने भौतिक और सामाजिक वातावरण से अनुकूलन करने के लिए तैयार करता है।
३ ज्ञान मनुष्य को अपने व्यवसाय में सफलता देता है और उसे संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति करने में सहायता देता है।
४. ज्ञान के अभाव में मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता है।
५. ज्ञान मनुष्य को अपने विचारों और भावनाओं को अनुशासन में रखने और सगठित करने में सहायता देता है।

६. जी० डब्लू० करटिस (G. W Curtis) के अनुसार—"ज्ञान ही राज्य का दृढ़ आधार है।" ("The sure foundations of the state are laid in knowledge.")
७. शेक्सपियर (Shakespeare) के अनुसार—"ज्ञान की सहायता से ही हम स्वर्ग प्राप्त कर सकते हैं।" ("Knowledge is the wing wherewith we fly to heaven.")
८. लार्ड बेकन (Lord Bacon) के अनुसार—"ज्ञान शक्ति है।" (Knowledge is power.")
९. सुकरात (Socrates) के अनुसार—"जिस व्यक्ति को सच्चा ज्ञान है, वह सद्गुणी के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।" ("One who had true knowledge could not be other than virtuous.")
१०. हुमायूं कबीर (Humayun Kabir) के अनुसार—"शिक्षा का उद्देश्य भौतिक संसार और समाज के विचारों तथा आदर्शों का ज्ञान प्राप्त करना है। इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना निजी उन्नति और समाज-सेवा के लिए आवश्यक है।" ("The aim of education is to secure knowledge of the physical world as well as of the ideas and ideals of society. Possession of such knowledge is a condition of both personal development and service to society")

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. केवल ज्ञान प्राप्त करना ही मनुष्य के जीवन का ध्येय नहीं है।
२. ज्ञान मनुष्य के मस्तिष्क का अवश्य विकास करता है, पर उसके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं की उपेक्षा करता है।
३. ज्ञान की प्राप्ति पर बल देने से छात्रों में रटने और निश्चेष्ट अभ्यास (Passive Drill-work) आदि की बुराइयाँ आ जाती हैं।
४. ज्ञान उद्देश्य अमनोवैज्ञानिक होने के कारण दोषयुक्त है।
५. यह उद्देश्य विषय-वस्तु के अध्ययन पर बल देता है, न कि बालक के अध्ययन पर।
६. यह उद्देश्य बालक को निश्चेष्ट सीखने वाला बना देता है और शिक्षक को अति उच्च स्थान देता है।
७. ज्ञान को साधन (Means) तो माना जा सकता है, पर साध्य (End) नहीं। इसको चरित्र या नागरिकता के उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन स्वीकार किया जा सकता है, पर इसको मानव-जीवन का साध्य मान लेना किसी भी तरह कल्याणकारी नहीं है।

ा के कुछ ऐसे सामान्य उद्देश्य हैं जिनको सामान्य रूप से सभी देश स्वीकार करते हैं, भले ही उनके सामाजिक और राजनैतिक आधार विभि क्षा के ये सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

१. ज्ञान का उद्देश्य (Knowledge Aim)
२. शारीरिक विकास का उद्देश्य (Physical Development Aim)
३. चरित्र विकास का उद्देश्य (Character Development Aim)
४. सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य (Cultural Development Aim)
५. अनुकूलन का उद्देश्य (Adjustment Aim)

१ ज्ञान का उद्देश्य
Knowledge Aim

का अर्थ Meaning of the Aim

कुछ विद्वानों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—ज्ञान का अर्जन करता है। इनका —'विद्या के लिए विद्या' (Knowledge for the sake of knowledge)। नों में सुकरात (Socrates), प्लेटो (Plato), अरस्तू (Aristotle), दान्ते), कॉमेनियस (Comenius), बेकन (Bacon) आदि के नाम विशेष रूप से य हैं। कॉमेनियस का कथन है कि शिक्षक का कर्तव्य है कि वह बालक को विषयों का अधिक से अधिक ज्ञान दे, तभी शिक्षक अपने कर्तव्य का पूरी पालन करता है। कॉमेनियस ने तो यहाँ तक कहा है कि वह शिक्षा व्यर्थ है, ारा बालक ज्ञान का संचय नहीं करता है। प्राचीन भारत में ज्ञान के संचय बल दिया जाता था कि गुरु लोग शिष्यों को हजारों श्लोक रटा देते थे। प्राचीन ढंग की पाठशालाओं और मकतबों में रट कर ज्ञान की प्राप्ति पर जाता है। यह वास्तव में ज्ञान के अर्जन का संकुचित अर्थ है। वह ज्ञान व्यर्थ है, जिसका वास्तविक जीवन में उपयोग न किया जा सके।

के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

ज्ञान मनुष्य की प्रगति का आधार है।

: ज्ञान मनुष्य को साधन-सम्पन्न बनाता है, उसकी शक्ति और आनन्द के द्वार खोलता है तथा उसे अपने भौतिक और सामाजिक वातावरण से अनुकूलन करने के लिए तैयार करता है।

ज्ञान मनुष्य को अपने व्यवसाय में सफ[illegible] [illegible]र उसे संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति करने में स[illegible]

. ज्ञान के [illegible] [illegible] ही हो सकता है।

. ज्ञान म[illegible] [illegible] में रखने

और

६. जी० डब्लू० करटिस (G W Curtis) के अनुसार—"ज्ञान ही राज्य का दृढ़ आधार है।" ("The sure foundations of the state are laid in knowledge.")
७. शेक्सपियर (Shakespeare) के अनुसार—"ज्ञान की सहायता से ही हम स्वर्ग प्राप्त कर सकते हैं।" ("Knowledge is the wing wherewith we fly to heaven ")
८. लार्ड बेकन (Lord Bacon) के अनुसार—"ज्ञान शक्ति है।" (Knowledge is power.")
९. सुकरात (Socrates) के अनुसार—"जिस व्यक्ति को सच्चा ज्ञान है, वह सद्‌गुणों के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।" ("One who had true knowledge could not be other than virtuous.")
१०. हुमायूँ कबीर (Humayun Kabir) के अनुसार—"शिक्षा का उद्देश्य भौतिक संसार और समाज के विचारों तथा आदर्शों का ज्ञान प्राप्त करना है। इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त करना निजी उन्नति और समाज-सेवा के लिए आवश्यक है।" ("The aim of education is to secure knowledge of the physical world as well as of the ideas and ideals of society. Possession of such knowledge is a condition of both personal development and service to society ")

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. केवल ज्ञान प्राप्त करना ही मनुष्य के जीवन का ध्येय नहीं है।
२. ज्ञान मनुष्य के मस्तिष्क का अवश्य विकास करता है, पर उसके व्यक्तित्व के अन्य पहलुओं की उपेक्षा करता है।
३ ज्ञान की प्राप्ति पर बल देने से छात्रों में रटने और निश्चेष्ट अभ्यास (Passive Drill-work) आदि की बुराइयाँ आ जाती हैं।
४. ज्ञान उद्देश्य अमनोवैज्ञानिक होने के कारण दोषयुक्त है।
५. यह उद्देश्य विषय-वस्तु के अध्ययन पर बल देता है, न कि बालक के अध्ययन पर।
६. यह उद्देश्य बालक को निश्चेष्ट सीखने वाला बना देता है और शिक्षक को अति उच्च स्थान देता है।
७. ज्ञान को साधन (Means) तो माना जा सकता है, पर साध्य (End) नहीं। इसको चरित्र या नागरिकता के उद्देश्य को प्राप्त करने का साधन स्वीकार किया जा सकता है, पर इसको मानव-जीवन का साध्य मान लेना किसी भी तरह कल्याणकारी नहीं है।

८. एडम्स (Adams) के अनुसार—"ज्ञान पर बल देने से विद्यालय [illegible] की दुकान और शिक्षक सूचना-विक्रेता बन जाते हैं।" ("Stress o[illegible] knowledge makes schools knowledge shops and teacher[illegible] information-mongers.")

९. ली (Lee) के अनुसार—"ज्ञान समझदारी के बिना मूर्खता है, व्यवस्था के बिना व्यर्थ है, दया के बिना दोषारोपण है, धर्म के बिना मृत्यु है।" ("Knowledge without common sense is folly, without method, it is waste, without kindness, it is fanaticism; without religion, it is death.")

१०. फ़ॅरार (Farrar) के अनुसार "ज्ञान समझदारी के साथ विवेक है, व्यवस्था के साथ शक्ति है, दया के साथ भलाई है, धर्म के साथ गुण, जीवन और शान्ति है।" ("With common sense, knowledge is wisdom, with method, it is power, with charity, it is beneficence, with religion, it is virtue and life and peace.")

निष्कर्ष

हमने ज्ञान-उद्देश्य के गुणों और दोषों पर ऊपर की पंक्तियों में प्रकाश डाला है। इनके आधार पर हम कह सकते हैं कि ज्ञान की प्राप्ति साध्य नहीं हो सकती है, वरन् साध्य को प्राप्त करने का साधन (A means to an end) हो सकती है। ज्ञान की प्राप्ति मानव-सुख और सामाजिक कल्याण के लिए की जा सकती है, न कि आदर्शवादी बनने के लिए। हम बालकों को ऐसा ज्ञान देना चाहिए जो उनके लिए लाभप्रद सिद्ध हो, न कि ऐसा जो उन्हें आदर्शवादी बनाय। रूसो ने उचित ही लिखा है—"सब प्रकार के ज्ञान में से कुछ झूठा है, कुछ व्यर्थ और कुछ अभिमान उत्पन्न करता है। इनमें से केवल वही थोड़ा-सा ज्ञान बुद्धिमान मनुष्य के अध्ययन के योग्य है, जो हमारे कल्याण के लिए उपयोगी है।"

"Of all kinds of knowledge, some are false, some useless, some serve only to foster pride. Only the few that conduce to our well-being are worthy of the study of a wise man." —*Rousseau.*

२—शारीरिक विकास का उद्देश्य
Physical Development Aim

उद्देश्य का अर्थ Meaning of the Aim

सामान्य रूप से प्राय सभी देशो और कालो मे 'शारीरिक विकास' को शिक्षा [illegible]का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है। इस उद्देश्य के समर्थकों का कहना है कि [illegible]शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिससे बालक का शरीर स्वस्थ, सुन्दर और बलवान् बने। [illegible]शिक्षा का इतिहास हमे बताता है कि प्राचीन काल मे कुछ देशो मे शारीरिक-

विकास पर बहुत बल दिया जाता था। यूनान के स्पार्टा राज्य मे शरीर का विकास, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था। इसीलिये वहाँ के वीर पुरुषों की कहानियाँ आज भी अति चाव से पढ़ी जाती हैं। प्लेटो (Plato) ने अपनी शिक्षा-योजना मे शारीरिक विकास को मुख्य स्थान दिया। रूसो (Rousseau) ने भी शारीरिक विकास पर बहुत बल दिया। उसका कहना था कि बालकों के लिए खेल-कूद और व्यायाम का प्रबन्ध होना चाहिए, तभी उनकी शारीरिक शक्तियों का विकास होगा और वे स्वस्थ बनेंगे। रूसो के अनुसार शारीरिक शक्ति से ही व्यक्ति स्फूर्तिमान और क्रियाशील बनता है। रेबेले का कथन है—"स्वास्थ्य के बिना जीवन—जीवन नहीं है। यह केवल स्फूर्तिहीनता और वेदना की दशा है, मृत्यु का प्रतिरूप है।"

"Without health life is not life; it is only a state of languor and suffering—an image of death."—*Rabelais.*

उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

१. स्वस्थ व्यक्ति मे शक्ति और उत्साह होता है, जो उसे अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता देते हैं।
२. बलवान नागरिक अपने देश और राष्ट्र को बलवान बनाते हैं।
३. अरस्तू (Aristotle) के अनुसार—"स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।" ("Sound mind in a sound body.")। यदि शरीर स्वस्थ नहीं है, तो मस्तिष्क अनेक व्याधियों का घर बन जाता है।
४. डाक्टर जानसन (Johnson) के अनुसार—"स्वास्थ्य को बनाये रखना नैतिक और धार्मिक कर्त्तव्य है, क्योंकि स्वास्थ्य ही सब सामाजिक गुणों का आधार है।" ("To preserve health is a moral and religious duty, for health is the basis of all social virtues.")
५. डब्लू० हॉल (W. Hall) के अनुसार—"अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखिए। उसकी अवहेलना करने का आपको कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि ऐसा करके आप अपने और दूसरों के लिए भार बन जाते हैं।" ("Take care of your health; you have no right to neglect it and thus become a burden to yourself and to others.")

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. शारीरिक विकास को शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नहीं बनाया जा सकता है, क्योंकि इससे शिक्षा एकांगी हो जायगी।
२. बालक की सभी शक्तियों का विकास किया जाना चाहिए, न कि सिर्फ शरीर की शक्ति का।
३. जीवन का उद्देश्य—केवल बल, शक्ति और पौरुष प्राप्त करना ही नहीं है।

२. चरित्रवान् मनुष्य का सभी आदर करते हैं और अपने अच्छे चरित्र के कारण उसे जीवन में सफलता मिलती है।
३. चरित्रवान् मनुष्य वही कार्य करता है जो उसके और समाज के लिए हितकर होता है।
४. सुदृढ़ चरित्र दृढ़ इच्छा-शक्ति (Will-Power) का आधार है, और इच्छा-शक्ति मनुष्य को बड़ी से बड़ी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने में सहायता देती है।
५. हरबर्ट (Herbart) ने चरित्र-निर्माण और नैतिकता के लिए शिक्षा पर बहुत अधिक बल दिया है। उसने लिखा है—"नैतिकता को मानव-जाति और फलतः शिक्षा का सामान्य रूप से सबसे श्रेष्ठ उद्देश्य माना गया है।" ("Morality is universally acknowledged as the highest aim of humanity and consequently of education.") उसका कथन है कि शिक्षा ही व्यक्ति को पशु से मानव बनाती है। इसलिए उसने पाठ्य-क्रम में उन विषयों को प्राथमिकता दी है, जिनसे नैतिक और धार्मिक विचार उत्पन्न होने में सहायता मिलती है।
६. भारतीय आदर्शवादियों ने शिक्षा के चरित्र-निर्माण के उद्देश्य पर बहुत बल दिया है। एक बार गांधी जी से पूछा गया कि—"जब भारत स्वतंत्र हो जायगा तब आपका शिक्षा में क्या उद्देश्य होगा?" उनका उत्तर था—"चरित्र-निर्माण।" ("What will be your aim in education when India becomes independent?" His reply was—"character formation.")
७. स्पेंसर (Spencer) के अनुसार—"मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता और सबसे बड़ा रक्षक चरित्र है, शिक्षा नहीं।" ("Not education, but character is man's greatest need and man's greatest safeguard.")

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. चरित्र-निर्माण के उद्देश्य पर अनावश्यक बल देने से अन्य उद्देश्य अपना महत्त्व खो देते हैं।
२. बालक के चारित्रिक और नैतिक विकास के साथ-साथ, उसका शारीरिक और मानसिक विकास भी आवश्यक है।
३. यह निश्चित रूप से नहीं बताया जा सकता है कि चरित्र क्या है। शुद्ध या अशुद्ध, उचित या अनुचित, अच्छे या बुरे इत्यादि के बारे में नीति शास्त्र (Ethics) के दृष्टिकोण से अनेकों विवादास्पद कठिनाइयाँ हैं।
४. चरित्र-निर्माण पर आवश्यकता से अधिक बल देने से बालक की मूल-

प्रवृत्तियों का दमन होता है, जिससे उसमें विभिन्न प्रकार के मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

५. जो मनुष्य अपने को चरित्रवान समझते हैं, वे दूसरो को प्राय. घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

६. चरित्र-विकास का उद्देश्य एक पक्षीय है। यदि एक छात्र के नैतिक आचरण को ही एक-मात्र महत्त्व दिया जाय, तो उसके अन्य गुणों की ओर ध्यान नहीं दिया जा सकता है।

७. प्रयोजनवादियों (*Pragmatists*) ने नैतिकता के लिए शिक्षा के उद्देश्य पर अनेकों आपत्तियाँ की हैं। उनका कहना है कि नैतिकता निश्चित, [illegible] समय और [illegible] के महत्त्वपूर्ण [illegible] ऐसी स्थिति [illegible]

चारित्रिक शिक्षा के पक्ष : Phases of Character Education

चरित्र-निर्माण की शिक्षा के तीन पक्ष होने चाहिये। ये पक्ष हैं :—

१. सत्य का ज्ञान, (Knowlegde of the Right)
२. *सत्य से प्रेम और असत्य से घृणा* (*Love of Right and Hatred of Worng*)
३. सत्य आचरण की आदतें, (Habits of Right Conduct.)

हैंडरसन (Henderson) ने उचित ही कहा है—"यदि हम चरित्र-निर्माण के कार्य को सफल बनाना चाहते हैं, तो चारित्रिक शिक्षा के इन तीनों पक्षों की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।" ("These three phases of character education must be taken care of if the work of character formation is to be successful.")

इन तीनों पक्षों में सत्य आचरण की आदतें बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं, क्योंकि आचरण ही चरित्र को बाह्य अभिव्यक्ति (Outer Expression) है। मनुष्य जो-कुछ करता है, उससे हमें पता चलता है कि वह क्या है। आचरण (Conduct) और चरित्र (Character) एक ही वस्तु के बाह्य और आन्तरिक पहलू हैं। कारण यह है कि चरित्र आचरण को निश्चित करता है। इसलिए लड़कों और लड़कियों में इसका विकास बहुत आवश्यक है।

निष्कर्ष

हमने शिक्षा के चरित्र विकास के उद्देश्य के बारे में ऊपर जो कुछ लिखा है, इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि केवल चरित्र निर्माण और नैतिक विकास ही शिक्षा का उद्देश्य नहीं हो सकता है। केवल नैतिक गुण ही मनुष्य और समाज के

लिए आवश्यक नही है, वरन् बुद्धि, स्वास्थ्य, शक्ति आदि भी आवश्यक हैं। मनुष्य को केवल बुद्धिमान ही नही होना चाहिए बल्कि उसको अपनी बुद्धि का प्रयोग अपने स्वयं के स्वार्थों की अपेक्षा समाज के हित के लिए करना चाहिए। अतः चरित्र-निर्माण शिक्षा का केवल एक आदर्श हो सकता है, उसका परम उद्देश्य नही।

४. सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य
Cultural Development Aim

संस्कृति का अर्थ : Meaning of Culture

शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य की बहुत से व्यक्तियों द्वारा प्रशंसा की गई है। पर इस उद्देश्य का अध्ययन करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि संस्कृति का अर्थ क्या है। ई० बी० टायलर ने लिखा है—"संस्कृति वह जटिल समग्रता है, जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, प्रथा तथा अन्य योग्यतायें और आदतें सम्मिलित होती हैं, जिनको मनुष्य समाज के सदस्य के रूप में प्राप्त करता है।"

"Culture is that complex whole which includes knowledge, belief, art, morals, custom and any other capabilities and habits acquired by man as a member of society."—*E. B. Tylor*

प्रायः इसी बात को सदरलैण्ड और वुडवर्थ ने इन शब्दों में कहा है—"संस्कृति में वह प्रत्येक वस्तु सम्मिलित है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जा सकती है। किसी जन-समूह की संस्कृति उसका ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, क़ानून और आदान-प्रदान के ढंग ही हैं।"

"Culture includes anything that can be communicated from one generation to another The culture of a people is their knowledge, belief, art, moral, law, modes of communication."

—*Sutherland & Woodworth.*

इन परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि संस्कृति का अर्थ बहुत व्यापक है। इसका सम्बन्ध मानव-जीवन के दोनों पक्षों से है—भौतिक और आध्यात्मिक (Material and Spiritual)। इसका तात्पर्य उस सम्पूर्ण सामाजिक विरासत से है, जो एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित करती है।

सांस्कृतिक उद्देश्य का अर्थ : Meaning of Cultural Aim

शिक्षा में सांस्कृतिक उद्देश्य का अर्थ है—संस्कृति का प्रसार। दूसरे शब्दों में, शिक्षा का उद्देश्य है—मनुष्य को सुसंस्कृत और परिष्कृत बनाना। शिक्षा का सांस्कृतिक उद्देश्य व्यक्ति को सभ्य और शिष्ट बनाता है। वह उच्च विचारों, कला की वस्तुओं और विशाल मानवीय रुचियों को समझने लगता है। वह साधारण व्यक्ति न रहकर

होती है, तो अपने कार्य को प्रशंसनीय ढंग से करती है। शिक्षा के इस कार्य पर बल देते हुए ओटावे ने लिखा है —"शिक्षा का एक कार्य समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को अपने तरुण और शक्तिशाली सदस्यों को प्रदान करना है।"

"One of the tasks of education is to hand on cultural values and behaviour patterns of society to its young and potential members."—*Ottaway*.

उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

१. संस्कृति में वे सब अनुभव सम्मिलित हैं, जो मानव ने आदिकाल से लेकर आज तक प्राप्त किये हैं। इनकी सुरक्षा और उपयोग करना शिक्षा का कर्त्तव्य है।
२. मनुष्य में जन्म के समय पाशविक प्रवृत्तियाँ होती हैं। संस्कृति ही उसे पशु से मानव बनाती है।
३. ज्ञान केवल मस्तिष्क को शिक्षित करता है, हृदय को नहीं। संस्कृति मस्तिष्क और हृदय—दोनों को शिक्षित करती है।
४. ज्ञान मानवता की वास्तविक सेवा उस समय करता है, जब वह हर प्रकार की संस्कृति को स्वीकृति देता है।
५. सुसंस्कृत (Cultured) मनुष्य अपनी व्यक्तिगत रुचियों को उच्च आदर्शों के प्रति बलिदान करता है।
६. प्रकृति में जो कुछ अच्छा है, उसे संस्कृति में अपना लिया जाता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति के लिए संस्कृति का ज्ञान आवश्यक है।
७. जिस प्रकार संस्कृति के दो स्वरूप हैं, उसी प्रकार इस उद्देश्य के भी दो स्वरूप हैं—'भौतिक' और 'अभौतिक'। भौतिक रूप में यह व्यक्ति की रुचियों को उत्तम बनाती है, उसे अपने अवकाश का सदुपयोग करने में सहायता देती है, उसमें कला, संगीत और चित्रकारी के लिए प्रेम उत्पन्न करती है तथा उसे समाज में सम्मान देती है। आध्यात्मिक रूप में यह व्यक्ति का आन्तरिक विकास करती है।
८. गांधी जी (Gandhiji) ने इस उद्देश्य को बहुत महत्त्व दिया है। उनका कहना है :—"संस्कृति ही मानव-जीवन की आधारशिला और मुख्य वस्तु है। यह आपके आचरण और व्यक्तिगत व्यवहार की छोटी से छोटी बातों में व्यक्त होनी चाहिए।" ("Culture is the foundation, the primary thing. It should show itself in the smallest detail of your conduct and personal behaviour.")

उद्देश्य के विरोध में तर्क : Arguments against the Aim

१ संकीर्ण विचारों वाले मनुष्य के हाथ में संस्कृति शिक्षा का बहुत ही खतरनाक उद्देश्य बन जाता है।

२. संस्कृति को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देने वाले लोग सही या गलत का निर्णय उन व्यक्तियों के आधार पर करते हैं, जो पूर्वकाल में थे।

३. संस्कृति के इतने अर्थ हैं कि यह निश्चय करना कठिन है कि बालक को संस्कृति की किन बातों की शिक्षा दी जाय।

४ केवल सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त करके बालक अपनी जीविका के प्रश्न को हल नहीं कर सकता है। साथ ही वह जीवन के संघर्षों से लोहा भी नहीं ले सकता है।

५ भारत में संस्कृति के कुछ विशेष प्रतिमान हैं, जैसे—बाल-विवाह, बहु-विवाह, जाति-व्यवस्था। ये समाज के लिए इतने हानिकारक हैं कि इनको सांस्कृतिक शिक्षा में स्थान नहीं दिया जा सकता है।

६. संस्कृति में विश्वास करने वाले मनुष्य वर्तमान की ओर ध्यान न देकर अतीत की ओर देते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि समाज की प्रगति रुक जाती है।

७. इतिहास हमें बताता है कि संस्कृति ने अनेकों बुराइयों को जन्म दिया है। एक संस्कृति के लोगों ने दूसरी संस्कृति के लोगों को तुच्छ समझा है और उन पर मनमाने अत्याचार किए हैं।

८ आज संस्कृति इतनी जटिल हो गई है कि मनुष्य संदेहों, शंकाओं और चिन्ताओं का शिकार बन गया है।

९. सांस्कृतिक शिक्षा अमनोवैज्ञानिक है क्योंकि यह बालक की रुचियों, भावनाओं और प्रवृत्तियों का दमन करके उसे केवल सांस्कृतिक प्रतिमानों के अनुसार कार्य करने के लिये बाध्य करती है। नन (Nunn) ने उचित ही लिखा है —"राष्ट्रीय परम्परायें और संस्थायें का स्थायीपन व्यक्ति के जीवन को महत्त्वहीन बना देता है।" ("National traditions and institutions have a permanence which makes the individual life a trivial thing.")

निष्कर्ष

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर हम केवल संस्कृति को शिक्षा का उद्देश्य नहीं मान सकते हैं। अतः अच्छी बात यह हो सकती है कि शिक्षा—संस्कृति और ज्ञान दोनों के लिए हो। इस सम्बन्ध में ह्वाइटहैड ने ठीक ही लिखा है—'शिक्षा को एक मनुष्य का निर्माण करना चाहिए जिसमें संस्कृति और विशेष ज्ञान—दोनों हों।'

उनका विशेष ज्ञान बालकों को शिक्षा प्रारम्भ करने का आधार देगा और संस्कृति उन्हें दर्शन के समान गम्भीर तथा कला के समान उच्च बनायेगी।"

"Education must produce men who possess both culture and expert knowledge. Their expert knowledge will give the children the ground to start from, and culture will lead them as deep as philosophy and as high as art."—"*Whitehead*

५. अनुकूलन का उद्देश्य
Adjustment Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of the Aim

कुछ विद्वानो का कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य—व्यक्ति को उसकी परिस्थितियो या वातावरण से अनुकूलन करना सिखाना है। इन विद्वानो मे प्राणिशास्त्रियो का स्थान प्रमुख है। प्राणिशास्त्र के विद्वानो का कथन है कि प्रत्येक प्राणी को अपनी परिस्थितियो या पर्यावरण से निरन्तर सघर्ष करना पडता है और जो प्राणी इस सघर्ष मे सफल होते हैं, वे ही जीवित बचते हैं। अतः शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह बालक को इस प्रकार प्रशिक्षित करे, जिससे उसे अपने वातावरण से अनुकूलन करने मे कोई कठिनाई न हो। यह वातावरण प्राकृतिक और सामाजिक; दोनो हो सकता है।

उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

१. प्राकृतिक वातावरण से अनुकूलन करना—एक प्राकृतिक नियम है। अत बालकों को इससे परिचित कराया जाना आवश्यक है।
२. ससार के सभी देशो के व्यक्तियों को चाहे वे कितने ही प्रगतिशील क्यों न हो, प्राकृतिक वातावरण से अनुकूलन करना आवश्यक है। ऐसा न करने से उनकी शक्ति और कार्य-क्षमता मे कमी आ जाती है।
३. बालक को जिस सामाजिक वातावरण में रहना है, उसे उसके अनुकूल बनाया जाना आवश्यक है। तभी वह उस समाज का अच्छा सदस्य बन सकेगा।
४. सामाजिक वातावरण से अनुकूलन करके ही जीवन में प्रगति और सफलता प्राप्त हो सकती है।
५. सामाजिक वातावरण शिक्षक है। इस शिक्षक से बालक शिक्षा तभी प्राप्त कर सकता है, जब वह अपने को इसके अनुकूल बना ले।

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. शिक्षा के इस उद्देश्य के अनुसार मनुष्य और पशु मे कोई अन्तर नहीं

रह जाता है। पशुओं के लिए तो जीवित रहने के लिए प्र
वातावरण से अनुकूलन आवश्यक है, पर बुद्धि-सम्पन्न मनुष्य
ऐसा करना आवश्यक नहीं है।

२ मनुष्य अपने ज्ञान और विवेक की शक्ति के कारण वातावरण
न होकर, उसका स्वामी है।

३. मनुष्य के जीवन का उद्देश्य केवल यही नहीं है कि वह अ
परिस्थितियों के अनुकूल बनाये।

४. यह उद्देश्य इतना सीमित और सकुचित है कि कोई भी मनु
अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

५ "प्रकृति का नियम केवल योग्यतम को बनाये रखना ही नहीं है,
अयोग्यों को भी शक्तिशाली बनाना है।" ("There is not onl
survival of the fittest but also the revival of the u

निष्कर्ष

हमने जो कुछ ऊपर लिखा है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वाताव
अनुकूलन करना—शिक्षा का सर्वमान्य उद्देश्य नहीं हो सकता है। मनुष्य नि
नहीं है। उसे ईश्वर ने सोचने-समझने की शक्ति दी है, बुद्धि को प्रयोग क
क्षमता दी है। उसे ईश्वर से इच्छा-शक्ति और अध्यात्मक-शक्ति के वरदान मि
फिर वह वातावरण से अनुकूलन करके अपने को पशु के स्तर पर क्यों पहुँचाये
वातावरण का दास न बनकर, उसका स्वामी क्यों न बने? अत. शिक्षा का
होना चाहिये—बालक को वातावरण पर अधिकार प्राप्त करने, और उसे
आवश्यकताओं के अनुसार बदलने की क्षमता प्रदान करना। ड्यूवी के इस क
पूर्ण सत्य है—"वातावरण से पूर्ण अनुकूलन करने का अर्थ है—मृत्यु। आव
इस बात की है कि वातावरण पर नियन्त्रण रखा जाय।"

"Complete adaptation to environment means death.
essential point is to control the environment."—*John Dewey.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1 Why, in your opinion, can the acquisition of knowledg
be the sole aim of education?

2. "Education should be for culture as well as knowle
Comment and elucidate

3. Should character-building be the aim of education? I
why?

4. Advance views for and against the physical development

९

शिक्षा के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य

IMPORTANT AIMS OF EDUCATION

"शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण जीवन के लिए तैयार करना है। पूर्ण जीवन व्यतीत करने का अर्थ है—यथासम्भव उपयोगी और सुखी होना। उपयोगिता का अर्थ है—सेवा; अर्थात् कोई भी कार्य जो मानव-जाति के भौतिक या आध्यात्मिक हितों की वृद्धि करता है।"

"The aim of education is to prepare for complete living. To live completely means to be as useful as possible and to be happy. By usefulness is meant service, *i. e.* any activity which promotes the material or spiritual interests of mankind"—*Paul H. Hanus.*

विषय-प्रवेश

'शिक्षा' समाज की उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। जो लोग शिक्षा का प्रबन्ध करते हैं, उनके हाथो मे भावी पुरुषो और स्त्रियो का निर्माण करने की शक्ति होती है। पर वे ऐसा करने मे तभी सफल हो सकते हैं जब उन्हें शिक्षा के उद्देश्यों का स्पष्ट ज्ञान हो। उद्देश्यों की स्पष्ट जानकारी के अभाव मे शिक्षक अपनी विषय-वस्तु और शिक्षण-विधियों का ठीक प्रकार से प्रयोग नहीं कर सकता है। उद्देश्यो की जानकारी के अभाव मे शिक्षा एक बन्द गली के समान हो जाती है। यही कारण है कि सभी युगों और सभी देशो मे शिक्षा-शास्त्रियों, दार्शनिको, राजनीतिज्ञो, समाज-सुधारकों और क़ानून-निर्माताओं ने इस समस्या पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया है। वे शिक्षा के उद्देश्यो को निश्चित करने के लिए सदैव प्रयत्न करते रहे हैं। ये उद्देश्य विभिन्न देशों के विभिन्न विचारकों द्वारा विभिन्न कालो मे विभिन्न रूप मे प्रतिपादित किये हैं। यहाँ हमारा प्रयोजन केवल उन्ही उद्देश्यो पर विचार करना है, जिनको सभी ने महत्त्वपूर्ण माना है, भले ही उनको सब देशों मे शिक्षा के उद्देश्यों के रूप में स्थान न मिल पाया हो।

उन्हें सामाजिक कुशलता (Social Efficiency) के लिए तैयार करती है।

३. जिस देश मे विभिन्न व्यवसायो में कुशल व्यक्ति होते हैं, वह देश शीघ्र ही सम्पन्न और समृद्धिशाली बन जाता है।
४. आज के युग मे आर्थिक उन्नति को विशेष महत्त्व दिया जाता है। इस उन्नति का आधार व्यावसायिक कुशलता है।
५. व्यावसायिक शिक्षा की उचित व्यवस्था होने से देश मे बेकारी की समस्या उत्पन्न नही हो पाती है।
६. व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करके व्यक्ति अपने पैरो पर खडा हो जाता है और दूसरो का आश्रित नही रहता है।
७. ड्यूवी (*Dewey*) के अनुसार :—"यदि एक व्यक्ति अपनी जीविका प्राप्त करने में असमर्थ है, तो इस बात की आशंका है कि वह स्वयं चरित्र भ्रष्ट हो जाय और दूसरो को हानि पहुँचाये।" ("If an individual is not able to earn his own living, there is grave danger that he may deprave himself and injure others.")
८. गाँधी जी (M. K. Gandhi) के अनुसार —सच्ची शिक्षा को बच्चों को बेरोजगारी से एक प्रकार की सुरक्षा देनी चाहिये।" ("True education ought to be for children a kind of insurance against unemployment.")

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. यह उद्देश्य संकीर्ण और अपूर्ण है, क्योकि यह मनुष्यो की शारीरिक आवश्यकताओ की तो पूर्ति करता है, पर उनकी मानसिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओ की अवहेलना करता है।
२. शारीरिक विकास के साथ-साथ व्यक्ति का मानसिक और आध्यात्मिक विकास भी आवश्यक है, क्योकि इनके बिना वह अच्छा, नैतिक और सामाजिक प्राणी नहीं बन सकता है।
३. व्यावसायिक शिक्षा व्यक्ति को प्राकृतिक वातावरण से दूर करके कृत्रिम वातावरण मे रहने के लिये बाध्य करती है, जिससे उसका जीवन नीरस हो जाता है।
४. मनुष्य को वास्तविक सुख आत्मा की शान्ति से प्राप्त होता है, न कि व्यवसाय-दक्ष होकर धन कमाने से।
५. यदि मनुष्य धन-उपार्जन को अपना एकमात्र उद्देश्य बना लेता है, तो वह धन कमाने के लिये उचित-अनुचित का विचार छोड़ देता है।

६. किसी भी दर्शन में खाना, पीना और मौज उड़ाना (Eat, Drink and be Merry) जीवन का उद्देश्य नहीं माना गया है।
७. बी० डी० भाटिया (B. D. Bhatia) के अनुसार :—कोरा व्यावसायिक प्रशिक्षण जीवन के प्रति व्यक्ति के दृष्टिकोण को आवश्यक रूप से संकुचित बना देता है। यह प्रशिक्षण अच्छा यन्त्र-चालक, अच्छा डाक्टर, अच्छा वकील, अच्छा राज, और अच्छा बिजली का कारीगर बना सकता है, पर यह आवश्यक नहीं है कि अच्छा आदमी भी बना दे।" ("A purely vocational training cannot but narrow one's outlook on life. It can make a good mechanic, a good doctor, a good lawyer, a good mason, a good electricians, but not necessarily a good man.")
८. प्लेटो (Plato) के अनुसार —वह शिक्षा अनुदार है, जिसका उद्देश्य बुद्धि और न्याय की ओर ध्यान न देकर केवल धन या शारीरिक बल की प्राप्ति है।" ("That education is illiberal which aims at acquisition of wealth or bodily strength apart from intelligence and justice.")

निष्कर्ष

जीविका-उपार्जन के उद्देश्य के पक्ष और विपक्ष मे हमने जो तर्क दिये हैं वे हमे इस निष्कर्ष पर ले जाते हैं कि शिक्षा के व्यावसायिक उद्देश्य का दृष्टिकोण व्यापक नहीं है। यह व्यक्ति को भौतिक सम्पन्नता तो देता है, पर उसे जीवन के उच्च आदर्शों को प्राप्त करने और पूर्ण जीवन के लिये तैयार नहीं करता है। यदि शिक्षा जीवन के लिये है, तो व्यक्ति को किसी व्यावसाय के लिए तैयार करना शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नहीं हो सकता है। हम स्पेंस रिपोर्ट के शब्दो मे केवल यह कह सकते हैं कि—"जीविका-उपार्जन की तैयारी हमारी शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है।"

"Preparation for vocation is an important part of our education."—*Spens Report.*

२. समविकास का उद्देश्य

Harmonious Development Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of the Aim

इस उद्देश्य का अर्थ है—मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, नैतिक, भावात्मक और कलात्मक शक्तियो का समविकास। इस उद्देश्य का आधार मनोवैज्ञानिक है। इसके समर्थकों मे पेस्टालॉजी (Pestalozzi) और रूसो (Rousseau) के नाम विशेष

रूप से उल्लेखनीय हैं। इनका कहना है कि मनुष्य कुछ मूलप्रवृत्तियों को लेक
जन्म लेता है। इन मूलप्रवृत्तियों का समविकास किया जाना चाहिये, क्योंकि त
मनुष्य का व्यक्तित्व अपने सन्तुलित रूप में प्रकट हो सकता है। यदि इन प्रवृत्तियों
जन्मजात शक्तियों के समविकास पर ध्यान नहीं दिया जाता है, तो कुछ प्रवृत्ति
का विकास दूसरों की अपेक्षा अधिक हो जाता है। परिणामस्वरूप व्यक्तित्व
सन्तुलन गड़बड़ हो जाता है। ऐसा होने से मनुष्य का व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं ब
पाता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये—इन शक्तियों का समविकास करना
दूसरे शब्दों में, मनुष्य की शारीरिक शक्ति या मानसिक शक्ति या सौन्दर्यानुभूति
ही शक्ति का विकास नहीं किया जाना चाहिये, वरन् उसकी सभी जन्मजात शक्ति
का समान रूप से विकास किया जाना चाहिये। शिक्षा के इस उद्देश्य पर प्रका
डालते हुए पेस्टॉलॉजी ने लिखा है —"शिक्षा मनुष्य की जन्म-जात शक्तियों
स्वाभाविक सामंजस्यपूर्ण और प्रगतिशील विकास है।"

"Education is the natural, harmonious and progressi
development of man's innate powers."—*Pestalozzi*

उद्देश्य के पक्ष में तर्क ; Arguments for the Aim

१. समविकास का उद्देश्य मनोवैज्ञानिक है।

२. यह उद्देश्य बालक की सभी शक्तियों के समान विकास के पक्ष में है
फलतः बालक के व्यक्तित्व का संतुलन बिगड़ नहीं पाता है।

३ यह उद्देश्य हर दृष्टि से पूर्ण और व्यापक है।

४. बालक की सब शक्तियों का समान विकास होने के कारण उ
विभिन्न परिस्थितियों से सामंजस्य करने की क्षमता आ जाती है।

५. इस उद्देश्य पर आधारित पाठ्य-क्रम व्यापक होता है, जिससे बाल
को सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता है।

६ समविकास होने के कारण स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क (Heat
mind in a healthy body) का वास होता है।

७. पेन्टर (Painter) के अनुसार :—"शिक्षा का उद्देश्य—पूर्ण मानव
विकास है।" ("The end of education is complete hum
developm ent.")

८. माध्यमिक शिक्षा-आयोग (Secondary Education Commissio
के अनुसार—"वह शिक्षा—शिक्षा कहलाने के योग्य नहीं है जो मनु
में अपने साथी मनुष्यों के साथ सुन्दरता, सामंजस्य और कुशलता से र
के आवश्यक गुणों का विकास नहीं करती है।" ("No education
worth the name which does not inculcate the qualit

necessary for living graciously, harmoniously and efficiently with one's fellow men."

६. गांधी जी (*Gandhiji*) के अनुसार—"शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का उचित और सामञ्जस्यपूर्ण मिलन, पूर्ण मनुष्य के निर्माण के लिए आवश्यक है और शिक्षा की सच्ची व्यवस्था का आधार है।" (*"A proper and harmonious combination of all the three—body, mind and spirit—is required for making the whole man and constitutes the true economics of education."*)

के विपक्ष में तर्क . Arguments against the Aim

१ समविकास का उद्देश्य व्यावहारिक नहीं है, क्योंकि यह बात असम्भव है कि सभी व्यक्ति स्वस्थ, ज्ञानपूर्ण और नैतिक हों।

२. समविकास को आँकने के लिए किसी प्रकार का मापदण्ड निश्चित नहीं किया जा सकता है। अतः यह जानना कठिन है कि किस बालक का समविकास हो रहा है।

३. 'समविकास' शब्द का कोई निश्चित अर्थ नहीं है। इसका अर्थ—समस्त शक्तियों का समान और अधिकतम विकास—दोनों हो सकता है।

४. सभी व्यक्तियों की सभी शक्तियों का न तो समान विकास सम्भव है और न अधिकतम विकास, क्योंकि व्यक्ति अपनी अभिरुचियों और क्षमताओं में एक-दूसरे से भिन्न होते हैं।

५. समविकास के लिये पाठ्य-क्रम के विषयों का चुनाव एक जटिल समस्या उपस्थित करता है। बालकों को ऐसे कौन-से विषय पढ़ाये जायें, जिनसे उनका समविकास हो।

६ आधुनिक संसार में विशेषीकरण (Specialization) को महत्त्व दिया जा रहा है। ऐसी स्थिति में समविकास के आदर्श को अपनाना उचित नहीं जान पड़ता है।

७. यदि किसी प्रकार समविकास सम्भव भी हो जाय, तो इससे व्यक्तिगत विभिन्नताएँ दूर हो जायेंगी। ऐसा होना प्रकृति के नियम के विरुद्ध है, क्योंकि प्रकृति ने सब व्यक्तियों को किसी-न-किसी रूप में एक-दूसरे से भिन्न बनाया है।

८. रेमॉण्ट (Raymont) के अनुसार—"इस योजना की कमजोरी यह थी कि इसने वैयक्तिकता की अवहेलना की और सर्वोच्च प्रकार के विकास का विरोध किया।" ("The weakness of the system was that it ignored individuality and was prejudicial to the best kind of development.")

निष्कर्ष

समविकास का उद्देश्य बाहरी रूप से तो बहुत अच्छा जान पड़ता है, पर वास्तव मे ऐसा है नही। इससे शिक्षा के किसी निश्चित लक्ष्य का ज्ञान नही होता है। सब व्यक्तियो की सब शक्तियो का सतुलित विकास कोरी कल्पना है। आदिकाल से आज तक कभी भी सब व्यक्ति एक से नहीं हुए हैं। अपनी मूलप्रवृत्तियो के कारण उनमे जन्म से ही कोई-न-कोई अन्तर होता है। उसमें यह अन्तर होना स्वाभाविक है, प्राकृतिक है। विभिन्न व्यक्तियो की जन्मजात शक्तियो को किसी प्रकार भी समान नही बनाया जा सकता है। एक व्यक्ति का पूर्ण या अधिकतम विकास एक ही दिशा में किया जा सकता है, सब दिशाओ मे नहीं। आज तक ससार मे जितने भी महान् व्यक्ति हुए हैं उनके उदाहरण हमारे सामने हैं। न तो कोई महान् वैज्ञानिक महान् कलाकार बन सका है और न कोई महान् योद्धा महान् शिल्पकार। अत हम कह सकते हैं कि शिक्षा का यह उद्देश्य अप्राकृतिक, अव्यावहारिक और अमनोवैज्ञानिक है।

३. पूर्ण जीवन का उद्देश्य
Complete Living Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of the Aim

पूर्ण जीवन के उद्देश्य का अर्थ यह है कि शिक्षा के द्वारा जीवन के सभी अगों का विकास किया जाना चाहिये, जिससे व्यक्ति का जीवन पूर्णता की ओर बढे। दूसरे शब्दों मे, हम कह सकते हैं कि व्यक्ति का विकास एक क्षेत्र मे न हो, वरन् उसका सर्वाङ्गीण विकास हो। इस प्रकार का विकास उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र और परिस्थिति के लिये तैयार कर देता है। उसे इस बात का पूर्ण ज्ञान हो जाता है कि उसे अपने लिये, अपने साथी-मानवो के लिये और अपने समाज तथा देश के लिए क्या कार्य करने हैं। इस प्रकार उसकी शिक्षा उसे जीवन के सभी कार्यों को सुचारु रूप से करने के लिए तैयार कर देती है।

इस उद्देश्य का प्रतिपादक हरबर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) है। उसका कहना है—"हमे केवल भौतिक अर्थ में नहीं, वरन् विस्तृत रूप मे जीवन व्यतीत करना है। सामान्य समस्या है—सब परिस्थितियों और सब दिशाओं मे आचरण पर उचित नियन्त्रण।"

"Not to live in the more material sense only, but in the wide sense, the general problem is the right ruling of conduct in all directions under all circumstances"—*Herbert Spencer*

अत. शिक्षा का उद्देश्य बताते हुए स्पेन्सर ने लिखा—"शिक्षा को हमे पूर्ण जीवन के नियमों और ढगों से परिचित कराना चाहिये। शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण

२. पूर्ण जीवन के विकास में मनुष्य के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का विकास आ जाता है।

३. इस उद्देश्य में सामाजिकता, सहकारिता, उपयोगिता आदि पर विशेष बल दिया जाता है, जो समाज की प्रगति के आधार हैं।

४. शेरवुड एंडरसन (Sherwood Anderson) के अनुसार—"व्यक्ति को जीवन की विभिन्न समस्याओं के लिए तैयार करना—शिक्षा का पूर्ण उद्देश्य है या होना चाहिए।" ("The whole object of education is, or should be, to prepare the individual to face the various problems of life.")

५. मनुष्य को जीवन में अनेकों और विभिन्न प्रकार के कार्य करने पड़ते हैं। पूर्ण जीवन का उद्देश्य उसे इन कार्यों के लिए तैयार करना है। स्पेंसर (Spencer) ने ठीक ही लिखा है—"जिस प्रकार एक घोड़ा अपनी आदतों, माँग, शक्ति और गति के अनुसार कभी गाड़ी खींचने के लिए और कभी दौड़ में दौड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार मानव शक्तियों को समाज के लिए पूर्ण रूप से उपयोगी बनाया जाना चाहिए।" ("As surely as the same creature assumes different forms of cart-horse and race-horse, according to its habits, demand, strength and need, so surely must human faculties be moulded into complete fitness for the state.")

६. इस उद्देश्य में जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने पर बल दिया गया है। इस सम्बन्ध में ग्रेव्ज (Graves) ने लिखा है—"हरबर्ट स्पेंसर विज्ञानों और जीवन की एक नई योजना की सिफारिश करता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति सम्बन्धित मूल्यों के अनुसार सब प्रकार के लाभों का आनन्द लेगा।" ("Herbert Spencer recommends the sciences and a new scheme of life where every one shall enjoy all advantages in order of the relative values."

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. यह निश्चय करना बहुत कठिन है कि जीवन की पूर्णता क्या है। विभिन्न व्यक्तियों द्वारा 'जीवन की पूर्णता' का विभिन्न अर्थ लगाया जाता है।

२. स्पेंसर (Spencer) ने इस उद्देश्य को सीमित और निश्चित दायरे में रखा है, जबकि वास्तव में यह असीमित और अनिश्चित है।

३. यह उद्देश्य पूर्णतः लौकिक है, क्योंकि स्पेंसर ने इसमें धर्म, नैतिकता और आध्यात्मिकता को कोई स्थान नहीं दिया है।

४. यदि बालक का नैतिक और आध्यात्मिक विकास नहीं होगा, तो स्वार्थी बन जायगा और उसे दूसरों के सुख-दुख की लेश-मात्र चिन्ता न होगी।

५. स्पेंसर ने अपनी शिक्षा-योजना में कला, संगीत और साहित्य अवकाश-सम्बन्धी क्रियाओं के अन्तर्गत रखा है। इस प्रकार उसने विषयों को गौण स्थान दिया है, जो शिक्षा के आदर्शों के प्रतिकूल है।

६. स्पेंसर ने बालकों की रुचियों और प्रवृत्तियों की ओर ध्यान न देकर सबके लिये एक ही पाठ्यक्रम निश्चित किया है।

७. स्पेंसर ने पाठ्य-विषयों का जो क्रम दिया है वह अमनोवैज्ञानिक है, क्योंकि बालकों से यह आशा करना व्यर्थ है कि वे प्रारम्भ में ही शरीर-विज्ञान और पदार्थ-विज्ञान—ऐसे कठिन विषयों समझ लेंगे।

८. भौतिकवादियों का मत है कि स्पेंसर ने अपनी शिक्षा-योजना में भौतिक तत्त्वों के अलावा दूसरे तत्त्वों को स्थान देकर वैज्ञानिक प्रवृत्ति के प्रतिकूल कार्य किया है।

९. स्पेंसर अपना ध्यान केवल वर्तमान पर रखा है और भविष्य की चिन्ता नहीं की है। मानव-जीवन का उद्देश्य—इस संसार में आनन्द करना नहीं है, वरन् दूसरे संसार के लिए तैयारी भी करना है। टाइक (Tieck) ने ठीक ही लिखा है —"जीवन का मूल्य इस संसार की आशाओं और आनन्दों से नहीं, वरन् उस तैयारी से आंकिये, जो यह दूसरे संसार के लिये करता है।" ("Measure not life by the hopes and enjoyments of this world, but by the prepration it makes for another ")

निष्कर्ष

स्पेंसर (Spencer) द्वारा प्रतिपादित पूर्ण जीवन के उद्देश्य की कड़ी आलोचना की गई है। शिक्षा-शास्त्रियों ने इसे संकीर्ण और सीमित बताया है। इसका मुख्य कारण यह है कि इसमें नैतिकता और आध्यात्मिकता को स्थान नहीं दिया गया है। यह हमने माना कि ये दोनों चीजें व्यक्ति की प्रगति और उसे पशु के स्तर से उठा कर मनुष्य के स्तर पर लाने के लिये आवश्यक हैं, पर हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि इन दोनों का आधार भौतिक प्रगति है। यदि आधार ही नहीं है, तो फिर नैतिकता और आध्यात्मिकता के भवन के निर्माण की बात सोचना ही गलत है। ध्यान देने की एक बात यह है कि स्पेंसर ने अपनी शिक्षा-योजना में इस बात का कहीं विरोध नहीं किया है कि बालक के चारित्रिक या आध्यात्मिक पहलुओं का विकास न किया जाय। इस बात से सभी सहमत हैं कि इन दोनों पहलुओं का विकास आवश्यक है। जब ऐसा है तो इनको स्पेंसर की शिक्षा-योजना में स्थान देकर उसको व्यापक क्यों नहीं बना दिया जाता है। ऐसा होने पर उसके द्वारा

प्रतिपादित शिक्षा का उद्देश्य सर्वश्रेष्ठ हो जायगा। पर यदि ऐसा नहीं किया गया, तो पूर्ण जीवन के उद्देश्य मे एकागीपन का दोष बना रहेगा।

४. नागरिकता का उद्देश्य
Citizenship Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of Aim

नागरिक के रूप मे प्रत्येक व्यक्ति के कुछ अधिकार और कुछ कर्त्तव्य होते हैं। उसमे कुछ विशेष गुणो के होने की आशा की जाती है। यह भी आशा की जाती है कि उसे राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातो का ज्ञान हो। उसे अपने अधिकारों और कर्त्तव्यो से परिचित कराना, उसमे उन विशेष गुणों का विकास करना और उसे राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातों की जानकारी कराना—नागरिकता की शिक्षा के अन्तर्गत आते हैं। आज के जनतन्त्रीय देशो मे नागरिक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः उसे नागरिकता का प्रशिक्षण देना अति आवश्यक है। कुछ विद्वानो का तो यह मत है कि लोकतन्त्रीय देशो मे नागरिकता का प्रशिक्षण देना—शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

एच० एच० हार्न ने नागरिकता के अर्थ और उसकी शिक्षा के महत्त्व को बताते हुए लिखा है—"नागरिकता राज्य में मनुष्य का स्थान है। क्योंकि राज्य समाज की स्थायी संस्था है, और क्योंकि मनुष्य को अपने साथियों के साथ सदैव सुसंगठित सम्बन्धो के साथ रहना चाहिये, इसलिये नागरिकता को शिक्षा के आदर्श के क्षेत्र से बाहर नहीं निकाला जा सकता है।" अतः नागरिकता के लिये शिक्षा अनिवार्य है।

Citizenship is man s place in the State. As the State is one of the permanent institutions of society and as man must ever live in organized relations with his fellows, citizenship cannot be omitted from the constituency of the educational ideal."

—*H. H. Horne.*

उद्देश्य के पक्ष मे तर्क : Arguments for the Aim

१. सरकार के सब भेदों मे लोकतन्त्र सबसे कठिन है। यह विशेष रूप से जीवन का एक ढग है। अत प्रत्येक व्यक्ति को इस ढग से परिचित कराया जाना आवश्यक है।
२. लोकतन्त्र में जीवन के कुछ प्रमुख मूल्यो और गुणो को अपनाया जाता है। नागरिक शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति मे इन मूल्यो और गुणो का विकास किया जा सकता है।

कार्यों के लिए उसे प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। इस प्रशिक्षण के या नागरिकता के निम्नलिखित रूप हैं :—

१. नागरिकता की शिक्षा आर्थिक, राजनैतिक, सास्कृतिक और नैतिक पहलुओं को ध्यान मे रखकर दी जानी चाहिए। उदाहरणार्थ :— नागरिक को व्यावसायिक शिक्षा द्वारा आर्थिक जीवन के लिये, राजनैतिक शिक्षा द्वारा राजनैतिक जीवन के लिये, सास्कृतिक शिक्षा द्वारा अच्छे कार्य और उनका आनन्द लेने के लिए, और नैतिक शिक्षा द्वारा सामाजिक जीवन के सद्गुणो से सम्पन्न करने के लिए तैयार किया जाना चाहिए।
२. नागरिकता की शिक्षा का उद्देश्य—मानव का उचित और सन्तुलित विकास करना होना चाहिए।
३. इस शिक्षा को नागरिक के चरित्र का निर्माण और स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का विकास करना चाहिए।
४. इस शिक्षा को नागरिक को मानव-मूल्यो का ज्ञान और अभ्यास कराना चाहिए।
५. इस शिक्षा को नागरिक को स्वतत्र विचारक और क्रियाशील व्यक्ति बनाना चाहिये।

प्रशिक्षण की विधियाँ : Methods of Training

नागरिकता मे प्रशिक्षण देने के लिए निम्नलिखित विधियो को अपनाया जा सकता है :—

१. बालको की जमन्जात योग्यताओ को मान्यता दी जाए।
२. अभिभावक और शिक्षक इन योग्यताओं को ध्यान मे रखकर नागरिकता की शिक्षा का कार्य-क्रम बनायें।
३. घर के वातावरण को ठीक बनाने के लिये माता-पिता को शिक्षित किया जाय, क्योकि घर मे ही बालक को नागरिकता के सब गुणो की शिक्षा मिलती है।
४. शिक्षा का कार्य-क्रम ऐसा हो, जिससे बालको मे नागरिकता के गुणों का विकास हो और साथ ही उन्हे नागरिकता का व्यावहारिक प्रशिक्षण मिले।

निष्कर्ष

नागरिकता की शिक्षा के बारे मे ऊपर बहुत काफी लिखा जा चुका है। प्रजातन्त्रीय देशों में इसके महत्त्व को अस्वीकार नही किया जा सकता है। प्रजातन्त्र की सफलता उसके नागरिको पर ही निर्भर है। यदि उसके निवासी अच्छे नागरिक है,

तो वे उसके आदर्शों की प्राप्ति मे सहायता दे सकते हैं ; फलस्वरूप प्रजातन्त्र अपने लक्ष्य की ओर बढ़ सकता है। अत. यह आवश्यक है कि लोकतन्त्र देशो मे नागरिकता का प्रशिक्षण देना, शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य होना चाहिए। अपनी पुष्टि मे हम प्लेटो के इन शब्दो को उद्धृत कर सकते है —"केवल नागरिकता की शिक्षा ही वह शिक्षा है, जो अपना नाम चरितार्थ करती है। इसके अतिरिक्त दूसरे प्रकार की शिक्षा जिसका उद्देश्य धन, शारीरिक शक्ति या बुद्धि और न्याय से पृथक् दक्षता की प्राप्ति करना है, तुच्छ और अनुदार है तथा किसी भी प्रकार शिक्षा कहलाने के योग्य नहीं है।"

"Education for citizenship is the only education which deserves the name, that other sort of training, which aims at the acquisition of wealth or bodily strength, or mere cleverness apart from intelligence and justice, is mean and illiberal, and is not worthy to be called education at all."—*Plato.*

५. अवकाश-उपयोग का उद्देश्य
Leisure Utilization Aim

उद्देश्य का अर्थ और महत्त्व : Meaning & Importance of the Aim

अवकाश के अर्थ की विस्तृत व्याख्या करने की आवश्यकता नही है। केवल इतना कह देना काफी है कि व्यक्ति को अपने जीवन-सम्बन्धी कार्यों को करने के बाद जो फुरसत का समय मिलता है, वही अवकाश है। आधुनिक युग मे व्यक्ति का जीवन अधिक व्यस्त हो गया है, पर उसे अवकाश भी अधिक मिल गया है। इसका कारण यह है कि विज्ञान ने मानव-जीवन मे अति महान् परिवर्तन कर दिये हैं। इसने हमको ऐसी मशीनें दी हैं, जिनके प्रयोग से हम कम से कम समय मे अधिक-से-अधिक कार्य कर सकते हैं। इस प्रकार ये हमे पर्याप्त अवकाश देती हैं। अवकाश के महत्त्व को बताते हुए एडिय ह्वार्टन ने लिखा है—"अवकाश सदैव सम्पत्ति को सौन्दर्य मे परिवर्तित करने के लिये लगा रहता है। यह सौन्दर्य श्रेष्ठ स्थापत्य-कला, श्रेष्ठ चित्रकला और श्रेष्ठ साहित्य द्वारा व्यक्त होता है।"

"Leisure is incessantly engaged in transmuting wealth into beauty by secreting the surplus energy which flowers in great architecture, great painting, and great literature."

उपरोक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मानव-जीवन मे अवकाश का कितना महत्त्व है। अतः शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए—व्यक्तियों को अवकाश का सदुपयोग करना सिखाना।

उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

१. अवकाश के लिए शिक्षा बालको के अदृश्य गुणो को व्यक्त करती है।

२. यह शिक्षा उनको रचनात्मक कार्यों का प्रशिक्षण देती है, जिससे उनकी और समाज की प्रगति होती है।
३. यह शिक्षा उनके जीवन को अधिक पूर्ण, उनकी रुचियों को अधिक श्रेष्ठ, और उनके मस्तिष्क को अधिक सक्रिय बनाती है।
४. यह शिक्षा उनको अपने खाली समय का उचित प्रकार से प्रयोग करना बताती है। अतः वे व्यर्थ की बातें नहीं सोचते हैं। इस कहावत मे सममुच बहुत सत्य है—"खाली मस्तिष्क शैतान का घर होता है।" ("An idle mind is a devil's workshop.")
५. अवकाश के सदुपयोग के लिये बालको को संगीत, चित्रकला, नृत्य आदि की शिक्षा देनी चाहिए। इनमें प्राय. सभी बालको को रुचि होती है।

द्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

१. यह सम्भव है कि अवकाश के लिये शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बालक उसका सदुपयोग न करें।
२. उनके परिवार और समाज का वातावरण ऐसा हो सकता है कि वे अपने अवकाश का सदुपयोग न कर पाएँ।
३. आज के भौतिक ससार मे लोग इतने व्यस्त हैं कि वे अवकाश के बारे मे सोच ही नहीं पाते हैं।
४. इस उद्देश्य को मान लेने से उन व्यक्तियो को अवकाश की शिक्षा को कोई आवश्यकता नही है, जो सदैव कार्य मे जुटे रहते हैं।
५. शिक्षा का उद्देश्य—मनुष्य का जीवन के सभी कार्यों के लिये तैयार करना है, न केवल अवकाश का सदुपयोग करने के लिये।

निष्कर्ष

हमने अवकाश के पक्ष और विपक्ष में जो तर्क दिये हैं, उनसे स्पष्ट हो जाता है कि अवकाश के सदुपयोग के लिये सब व्यक्तियो को शिक्षा नहीं दी जा सकती है। यह शिक्षा केवल उन्ही व्यक्तियों को दी जा सकती है, जो धनी हैं और जिन्हे काम से अवकाश है। शेष सभी व्यक्ति सुबह से शाम तक कार्य मे लगे रहते हैं। उन्हें अवकाश ही नहीं मिलता है कि वे उसके उचित उपयोग की बातें सोचें। अवकाश तो पुराने समय की बात है, जब मानव की आवश्यकतायें कम थीं और जब उसे जीवन से कम संघर्ष करना पड़ता था। आज के विश्व मे तो किसी भी क्षेत्र मे साँस लेने के लिए समय नही प्राप्त होता है। अतः अवकाश और अवकाश की बातें करना केवल सुनहले स्वप्न देखना है। तो फिर अवकाश के लिये शिक्षा की आवश्यकता ही क्या है? हाँ, यदि पहले व्यक्ति को अवकाश दे दिया जाय, तो उसे अवकाश के सदुपयोग की शिक्षा भी दी जा सकती है।

६. वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्य
Individual & Social Aims

हम वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों के बारे मे अध्याय ७ मे
मे लिख चुके हैं। पर क्रम को बनाये रखने के लिये यहाँ इनका वर्णन आव
इस बात का ध्यान मे रखकर हम इनके बारे मे कही हुई बातों का सार
पंक्तियो मे दे रहे हैं :—

वैयक्तिक उद्देश्य. Individual Aim

वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सामग्री
है। यह उसकी वैयक्तिकता (Individuality) को शक्तिशाली, समर्थ और
बनाने का प्रयास करता है। इस उद्देश्य का नन द्वारा बहुत समर्थन किया गया
उसने लिखा है—मानव-जगत मे प्रत्येक अच्छाई पुरुषो और स्त्रियों के व्यक्ति
स्वतन्त्र कार्यों द्वारा आती है। इसलिए शिक्षा-पद्धति को इस सत्य के अनुरूप बन
चाहिए।'

"Nothing good enters into the human world except in an
through the free activities of individual men and women, and
educational practice must be shaped to accord with that truth'

—*T. P. Nunn*

नन (Nunn) व्यक्ति के महत्त्व पर बल देता है। उसका कथन है कि—
शिक्षा की ऐसी दशायें उत्पन्न करनी चाहिए, जिनमे वैयक्तिकता का पूर्ण विकास हो
सके और व्यक्ति मानव-जीवन का अपना मौलिक योग दे सके। यहाँ यह बताना
आवश्यक हो जाता है कि नन (Nunn) की वैयक्तिकता की धारणा दार्शनिक है।
यह एक आदर्श है जो अभी तक प्राप्त नही हुआ है, पर जिसे प्रत्येक व्यक्ति
कर सकता है।

सामाजिक उद्देश्य Social Aim

इस उद्देश्य के समर्थकों का विश्वास है कि इसके द्वारा सामाजिक एकता
सहयोग उत्पन्न होते है। वे यह नहीं मानते हैं कि व्यक्ति समाज से दूर रहकर अ
विकास कर सकता है। रेमॉण्ट (Raymont) के अनुसार "समाज-विहीन व्यक्ति
एक कोरी कल्पना है। (The isolated individual is a figment of th
imagination.) जब तक व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है और जब तक वह समाज
रहता है तब तक उसे अपनी वैयक्तिकता को सामाजिक आवश्यकताओं के अधीन
बना पड़ेगा। इस प्रकार नियन्त्रित समाज की आवश्यकताओं के अनुसार उसका निर्माण
गा। फलस्वरूप उसकी वैयक्तिकता का दमन होता रहेगा। यह शिक्षा मे सामाजिक
देश्य का साधारण रूप है।

क्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में समन्वय

thesis between Individual and Social Aims

'शिक्षा' और 'समाज' में समय-समय पर वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों बारे में विवाद हुआ है। इसका प्रमुख कारण वह विचारधारा है, जिसके अनुसार क्ति और समाज का एक-दूसरे का विरोधी माना गया है। आधुनिक विचारधारा ों को समान महत्त्व देती है और एक की प्रगति के लिए दूसरे को आवश्यक ाती है। इस दृष्टिकोण से देखने पर शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में ई विरोध नहीं रह जाता है। इसका समर्थन अनेक शिक्षाविदों द्वारा किया गया रेमॉन्ट (Raymont) के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य दोहरा है --"व्यक्ति की पूर्णता र समाज का हित।" ("The perfection of the individual and the good the community."), रॉस का कथन है--"सामाजिक वातावरण से अलग ्तिकता का कोई मूल्य नहीं है और व्यक्तित्व एक अर्थहीन शब्द है, क्योंकि इसी इनको विकसित और कुशल बनाया जाता है।"

"Individuality is of no value, and personality is a meaningss term apart from the social environment in which they are eveloped and made efficient."—*Ross.*

ष्कर्ष

उपरोक्त शिक्षा-शास्त्रियों के मतों के आधार पर हम यह निष्कर्ष निकाल कते है कि वास्तव में शिक्षा के वैयक्तिक और सामाजिक उद्देश्यों में कोई विरोध ही है। व्यक्ति और समाज --दोनों का शिक्षा पर समान अधिकार है। अतः दोनों द्देश्यों में समन्वय आवश्यक है। केवल ऐसा करने पर ही वे आदर्श दशाएँ उत्पन्न होंगी, जो व्यक्ति और समाज—दोनों की प्रगति के लिये उपयुक्त होंगी।

सब उद्देश्यों का एक उद्देश्य में समन्वय

Synthesis of Aims into an Inclusive Aim

कुछ शिक्षा-शास्त्री इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा का एक सर्वव्यापक उद्देश्य (All Comprehensive Aim) होना चाहिए, जिसके अन्दर शिक्षा के सभी उद्देश्य आ जाएँ। इस दृष्टिकोण से 'पूर्ण जीवन के उद्देश्य' का अति दृढ़तापूर्वक समर्थन किया गया है।

पूर्ण जीवन का उद्देश्य : Complete Living Aim

इस उद्देश्य का प्रतिपादक हरबर्ट स्पेंसर (Herbert Spencer) है। उसका कहना है—"शिक्षा को हमें पूर्ण जीवन के नियमों और ढंगों से परिचित कराना चाहिए। शिक्षा का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य—हमें जीवन के लिए इस प्रकार तैयार

करना है कि हम उचित प्रकार का व्यवहार कर सकें और शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा का सदुपयोग कर सकें।"

"The most important task of education is to prepare us for life in such a way that we may be able to order the right rulings of conduct, to treat the body, the mind, and the soul properly."

—*Herbert Spencer.*

इस प्रकार शिक्षा के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए स्पेंसर ने लिखा है—"शिक्षा को हमें बताना चाहिए कि हम अपने शरीर, मस्तिष्क और आत्मा के साथ कैसा व्यवहार करें, अपने कार्यों का प्रबन्ध किस प्रकार व्यवहार करें, अपने परिवार का किस प्रकार पालन-पोषण करें, नागरिक के रूप में किस प्रकार व्यवहार करें, और प्रकृति द्वारा दिये जाने वाले सुख के साधनों का किस प्रकार उपयोग करें, अपने और दूसरों के अधिकतम लाभ के लिए सब शक्तियों का प्रयोग किस प्रकार करें।"

"Education must tell us in what way to treat the body, the mind, the soul, in what way to manage our affairs, in what way to bring up our family, in what way to behave as a citizen, in what way to utilize those sources of happiness which nature supplies, how to use all faculties to the greatest advantage to ourselves and others."—*Herbert Spencer*

इस प्रकार स्पेंसर (Spencer) के मतानुसार शिक्षा का कोई एक उद्देश्य नहीं हो सकता है। शिक्षा के सब उद्देश्यों का एक उद्देश्य में समावेश हो जाना चाहिए। यह एक उद्देश्य है—"पूर्ण जीवन या जीवन को पूर्ण बनाने का उद्देश्य।" (Aim of Complete Living or Making Life Complete)। आधुनिक युग में जीवन की जटिलता को देखते हुए यह आवश्यक है कि शिक्षा का केवल एक उद्देश्य हो। कारण यह है कि हम ज्ञान, आत्म-विकास, व्यावसायिक या सामाजिक प्रशिक्षण में से किसी ...रे भी एक-दूसरे की सहायता के बिना नहीं प्राप्त कर सकते हैं। वास्तव में शिक्षा ...किसी की भी अवहेलना नहीं कर सकती है। उसे समय और स्थान की ...नमें सतुलन करना पड़ेगा। आज के युग में हमारी प्रमुख ... रहने की इच्छा और उसका ज्ञान, जिससे हम ... सर्क और सामान्य हित के लिए व्यक्तियां और ...सकें। इसका अर्थ निश्चित रूप से यह है कि मानव- ...शिक्षण दिया जाय। परन्तु यह एक मामूली बात है। ...त्याग तो नहीं वरन् विचार परिवर्तन की है, जिससे ... ज्ञान और योग्यताएँ ईश्वर द्वारा दी गई धरोहर हैं, ... सेवा करने के लिए उदारता पूर्वक करें।

में
रखना–
होगा।
उद्देश्य का

UNIVERSITY QUESTIONS

1. "Individuality develops only in a social atmosphere where it can feed on common interests and common activities." Do you agree with this statement ? Advance reasons in support of your answer.
2. On what grounds can the vocational aim of education be justified or unjustified ?
3. Why, in your opinion, can the acquisition of knowledge not be the sole aim of education ?
4. "Education for leisure will be futile as people have no leisure." Do you vote for or against the statement ? Support your answer with reasons.
5. On what grounds can education for citizenship be defended ?
6. Should all the aims of education synthesize into one aim ? If so, what should that aim be and why ?
7. Discuss in some detail the harmonious development aim of education.

१०

शिक्षा के वांछनीय उद्देश्य

DESIRABLE AIMS OF EDUCATION

व्यक्ति के दृष्टिकोण से शिक्षा के कुछ उद्देश्य वांछनीय हैं, पर फिर भी उनको शिक्षा की योजनाओं में सदैव स्थान नहीं दिया जाता है।

Some aims of education are desirable from the point of view of the individual and yet they are not always given a pl--- the schemes of education

विषय-प्रवेश

शिक्षा के कितने ही उद्देश्य हैं। इनमे से कुछ को महत्त्वपूर्ण समझ कर। शिक्षा की सभी योजनाओ मे स्थान दिया जाता है। इन उद्देश्यो को मामान्य, स भौमिक या विशेष रूप से व्यक्ति और समाज की उन्नति के लिए आवश्यक सम जाता है, उदाहरणार्थ—आज के भौतिक और वैज्ञानिक युग मे शिक्षा के ज्ञा व्यवसाय और नागरिकता के उद्देश्यों को सबसे प्रमुख माना जाता है। इनके अतिरिक्त भी कुछ उद्देश्य और हैं, जैसे—वैयक्तिक, सामाजिक और पूर्ण जीवन के उद्देश्य। इस प्रकार के उद्देश्यो पर सिद्धान्त रूप से ही अधिक बल दिया जाता है। इनका व्यावहारिक रूप बहुत कम देखने को मिलता है। इसी प्रकार शिक्षा के कुछ उद्देश्य और हैं, जिनको वांछनीय समझा जाता है। दूसरे शब्दो मे, यह अनुभव किया जाता है कि इनको भी शिक्षा की व्यवस्था मे स्थान दिया जाना चाहिए। यहाँ हमारा प्रयोजन इन्ही उद्देश्यो पर प्रकाश डालना है।

शिक्षा के वांछनीय उद्देश्य
Desirable Aims of Education

१. आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य (Spiritual Development as Aim)

२. आत्माभिव्यक्ति का उद्देश्य (Self-Expression as Aim)
३. आत्मानुभूति का उद्देश्य (Self-Realization as Aim)
४. सौन्दर्यानुभूति-प्रशिक्षण का उद्देश्य (Aesthethic Training as Aim)
५. सामाजिक व्यवस्था की सुरक्षा का उद्देश्य (Preservation of Social Order as Aim)
६ उचित आदतों के निर्माण का उद्देश्य (Inculcation of Right Habits as Aim)
७ अन्य कालो व स्थानों के ज्ञान का उद्देश्य (Knowledge of Other Times & Places as Aim)

१ आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य
Spiritual Development as Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of the Aim

आदर्शवादी विचारकों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—बालक का आध्यात्मिक विकास होना चाहिए, जिससे कि वह ससार के माया-मोह मे न फँसकर असीम आनन्द का प्राप्त करने का प्रयत्न करे। इस उद्देश्य पर हमारे देश के सत्रमहान् दार्शनिक डाक्टर राधाकृष्णनन् ने अपने विचारो को इन शब्दो मे व्यक्त किया है—"शिक्षा का उद्देश्य—न तो राष्ट्रीय कुशलता है और न अन्तर्राष्ट्रीय एकता, वरन् व्यक्ति को यह अनुभव कराना है कि उसमें बुद्धि से भी अधिक महत्त्वपूर्ण कोई चीज है, जिसे यदि आप चाहें, तो आत्मा कह सकते हैं।"

"The aim of education is neither national efficiency nor world solidarity, but making the individual feel that he has within himself something deeper than intellect, call it spirit if you like"

—*Dr S Radhakrishnan.*

उद्देश्य के पक्ष मे तर्क : Arguments for the Aim

(१) जीवन का वास्तविक उद्देश्य—भौतिक उन्नति नही, वरन् आध्यात्मिक उन्नति करना है, जिससे व्यक्ति आवागमन के बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष प्राप्त करे।

(२) भौतिक प्रगति द्वेष, ईर्ष्या, सघर्ष और प्रतिस्पर्द्धा को जन्म देती है, जिनके फलस्वरूप शत्रुता और वैमनस्य का विष फैल जाता है। आधुनिक ससार मे रूस और अमेरिका के कटु सम्बन्ध इसी प्रगति के परिणाम है।

(३) भौतिक प्रगति हमारी इच्छाओ को बलवान् बनाती है। इच्छायें बलवान् होकर हमारे दु:ख का कारण बनती हैं। महात्मा बुद्ध (Lord Buddha) का कथन है—"सभी दु:खो का कारण इच्छा है। इच्छा को दूर कर दो, तो तुम्हारा दु:ख दूर

हो जायगा।" ("Desire is the root of all unhappiness. Banish desire and you banish unhappiness.")

(४) शिक्षा पूर्ण तभी हो सकती है, जब मानसिक प्रशिक्षण के साथ आत्मा की भी उन्नति की जाय। डा॰ राधाकृष्णनन् का मत है—"यदि शिक्षा हृदय और आत्मा की अवहेलना करती है, तो उसको पूर्ण नहीं माना जा सकता है।" ("No education can be regarded as complete if it neglects the heart and the spirit.")

(५) हमने ज्ञान के क्षेत्र मे आश्चर्यजनक उन्नति की है। फिर भी हम दुखी और भयभीत है। इसका मुख्य कारण यह है कि हमने आध्यात्मिक विकास की ओर तनिक भी ध्यान नही दिया है। डा॰ राधाकृष्णनन् का कथन है—"यद्यपि हमने अति विशाल ज्ञान का सचय किया है, फिर भी हम भय की दशा और दुखद परिस्थिति मे है। इसका कारण यह है कि हम इस सृष्टि के उच्चतर नियमो के प्रति उदासीन हैं।" ("Inspite of the great knowledge we have accumulated, we are still in a perilous state, in an unhappy predicament, it is because we are indifferent to the higher laws of this Universe.")

उद्देश्य के विपक्ष मे तर्क : Arguments against the Aim

(१) आध्यात्मिक विकास की शिक्षा कुछ सीमाओ मे ही दी जा सकती है। इस पर अत्यधिक बल देने से बालको मे ससार और जीवन के प्रति घृणा उत्पन्न हो सकती है।

(२) आध्यात्मिक शिक्षा इतनी कठिन है कि छोटी आयु के बालको को न तो इसमे रुचि ही आ सकती है, और न वे इसे समझ ही सकते हैं।

(३) अध्यात्मवाद इच्छाओ के दमन पर बल देता है। बालको की इच्छाओ का दमन करना मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से अनुचित है क्योकि ऐसा करने से बालको का विकास रुक जाता है।

(४) अध्यात्मवाद से योग, तप, मनन आदि का घनिष्ठ सम्बन्ध है। ये बातें बालको द्वारा की जानी सम्भव नही हैं।

(५) आध्यात्मिक शिक्षा की बातो को अल्प ज्ञान वाले बालक केवल रट सकते हैं। वे वास्तविक जीवन मे उन बातो का व्यावहारिक प्रयोग नही कर सकते हैं। अत उनके लिए ऐसी शिक्षा व्यर्थ सिद्ध होगी। स्वामी विवेकानन्द (Swami Vivekananda) का कथन है—"महान् सिद्धान्तो को केवल सुनने से काम नहीं चलेगा। आपको उन्हें व्यावहारिक क्षेत्र मे लागू करना पड़ेगा, उनका निरन्तर अभ्यास करना पड़ेगा। शास्त्रो की गौरवपूर्ण उक्तियो को रटने से क्या लाभ होगा? पहले आपको शास्त्रो की शिक्षाओ को समझना पड़ेगा और फिर व्यावहारिक जीवन

में उन पर अमल करना पड़ेगा।" ("It will not do merely to listen to great principles. You must apply them in the practical field, turn *them into constant practice. What will be the good of cramming* the high sounding dicta of the scriptures ? You have first to grasp the teachings of the Shastras, and then to work them out in practical life.")

निष्कर्ष

मनुष्य की आध्यात्मिक प्रगति आवश्यक है। पर इस प्रगति को शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य नहीं बनाया जा सकता है। छोटी आयु के बालकों के लिए तो इतना ही काफी है कि उन्हें अच्छे कार्यों, अच्छी आदतों और अच्छे व्यवहार की शिक्षा दी जाय। दूसरे शब्दों में उन्हें मन, वचन और कर्म में सत्य का अनुसरण करने की शिक्षा दी जाय, क्योंकि सत्य शक्ति देता है, सत्य ही पवित्रता है और सत्य में ही सब ज्ञान निहित है। ("Truth is strengthening. Truth is purity, truth is all knowledge."—*Swami Vivekananda*)। आध्यात्मिक शिक्षा का उद्देश्य इससे अधिक नहीं होना चाहिए और न इसकी बालकों को आवश्यकता ही है। इस सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का कथन है –"किसी बात को कहना और उसे न करना हमारी आदत हो गई है। इसका कारण क्या है ? शारीरिक दुर्बलता। अतः हमारे युवकों को सबसे पहले शक्तिशाली बनना चाहिए। धर्म का स्थान इसके बाद आयेगा।" ("Speaking and not doing has become a habit with us. What is the cause ? Physical weakness First of all our young men must be strong Religion will come afterwards."

—Swami Vivekananda . *Education*, p. 44)

२ आत्माभिव्यक्ति का उद्देश्य
Self-Expression as Aim

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of the Aim

इस उद्देश्य के समर्थक व्यक्तिवादी हैं। उनका कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य—बालकों को आत्माभिव्यक्ति या आत्म-प्रदर्शन का प्रशिक्षण देना है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा द्वारा बालकों की मूल प्रवृत्तियों का इस प्रकार विकास किया जाना चाहिए कि वे उनको स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सकें। यह तभी सम्भव है—जब समाज में ऐसी स्वतन्त्रता, रीति-रिवाज, परिस्थितियाँ आदि हों, जिनकी सहायता से बालक अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों को सरलता से व्यक्त करना सीख सकें। इन प्रवृत्तियों में 'जिज्ञासा' और 'आत्म-गौरव' को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए।

उद्देश्य के पक्ष में तर्क : Arguments for the Aim

(१) बालक कुछ मूल प्रवृत्तियों को लेकर जन्म लेता है। अतः उसे इनको स्वतन्त्र रूप से व्यक्त करने का अधिकार है।

(२) मनोविज्ञान मूल प्रवृत्तियों के विकास पर बल देता है।

(३) इन प्रवृत्तियों का दमन अनेकों मानसिक रोगों का कारण बनता है। अतः बालक को इनको व्यक्त करने का पूर्ण अवसर मिलना चाहिए।

(४) शिक्षा-विशारदों की खोज के अनुसार मूल प्रवृत्तियों का दमन करने से बालक अपराध की ओर अग्रसर होता है, जिससे उसका जीवन नष्ट हो जाता है।

(५) मूल प्रवृत्तियों के दमन से कभी-कभी बालक का मस्तिष्क संघर्ष बन जाता है। ये मानसिक संघर्ष (Mental Conflicts) मानसिक [illegible] (Complexes) का कारण बनते हैं। फलस्वरूप बालक का व्यक्तित्व [illegible] जाता है।

उद्देश्य के विपक्ष में तर्क : Arguments against the Aim

(१) बालक में जो मूल प्रवृत्तियाँ जन्म के समय से होती हैं, वे पाशविक हैं। यदि उसे इन प्रवृत्तियों को व्यक्त करने की स्वतन्त्रता दे दी जायगी, तो वह पशु ही रहेगा, मनुष्य नहीं बन सकता।

(२) सोरोकिन (Sorokin) की खोजों से ज्ञात हुआ है कि जिन देशों में प्रवृत्ति की स्वतन्त्रता है, वहाँ के निवासियों में ११ % व्यक्ति मानसिक [illegible] हैं।

(३) सच्ची स्वतन्त्रता का अर्थ 'निरंकुश स्वतन्त्रता' न होकर, '[illegible] स्वतन्त्रता' है। सब व्यक्ति स्वतन्त्रता का उपभोग तभी कर सकते हैं, जब [illegible] स्वतन्त्रता एक सीमा के अन्दर हो।

(४) मॉण्टेसरी (Montessori) ने अनियन्त्रित स्वतन्त्रता का [illegible] किया है और लिखा है— इस प्रकार की स्वतन्त्रता का उपभोग तभी किया जा सकता है, जब दूसरे व्यक्तियों को भी उतनी ही मात्रा में स्वतन्त्रता प्राप्त हो। ("Such freedom could be exercised only in so far as it is [illegible] with an equal degree of freedom for other people.")

(५) सच्ची स्वतन्त्रता क्या है? इस पर प्रकाश डालते हुए [illegible] ने लिखा है— "सच्ची स्वतन्त्रता का अर्थ है अपने स्वयं के अधिकारों का उपभोग करना, न कि दूसरों के अधिकारों को नष्ट करना।" ("True liberty [illegible] in the privilege of enjoying our own rights, not in [illegible] of the rights of others.")

(६) [illegible] (Raymont) ने आत्माभिव्यक्ति के उद्देश्य की [illegible] है— [illegible]

अन्त में अपने स्वयं के उद्देश्य को नष्ट कर देगा।" ("The resort to free self-expression as remedy is bound in the long run to defeat its own purpose.")

निष्कर्ष

उपरोक्त तर्कों के आधार पर हम कह सकते हैं कि आत्माभिव्यक्ति को शिक्षा का उद्देश्य नहीं माना जा सकता है। यदि सब व्यक्तियों को अपनी मूल-प्रवृत्तियों को व्यक्त करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ दिया जाय, तो समाज में अराजकता फैल जायगी। एक ऐसी अव्यवस्था दिखाई देने लगेगी जिसकी कल्पना करना भी कठिन है। समाज और देश—दोनों की प्रगति के लिये व्यक्तियों का अनुशासन में रहना आवश्यक है। ऐसा न होने से समाज की रचना, जिसे इस रूप में आने में शताब्दियाँ लगी हैं, तहस-नहस हो जायगी और सब जगह बर्बरता का साम्राज्य दिखाई देने लगेगा। अतः यह आवश्यक है कि बालकों को आत्म-अनुशासन की शिक्षा दी जाय। उनको ऐसा प्रशिक्षण दिया जाय कि वे अपनी बुरी प्रवृत्तियों को अपने अधिकार में रख सकें। डेनियल वेब्स्टर ने ठीक ही लिखा है—"अपने बच्चों को आत्म-अनुशासन की शिक्षा दीजिये। उनमें ऐसी आदत डालिये कि वे अपने आवेगों अरुचियों और बुरी प्रवृत्तियों को सच्ची और तर्कपूर्ण इच्छा के अधीन रख सकें। यदि आप इतना कर लेंगे, तो आप उनके भावी जीवन से दुःख का और समाज से अपराधों का अन्त करने के लिये सब कुछ कर देंगे।"

"Educate your children to self-control, to the habit of holding passion and prejudice and evil tendencies subject to an upright and reasoning will, and you have done much to abolish misery from their future lives and crimes from society."—*Daniel Webster.*

३. आत्मानुभूति का उद्देश्य
Self-Realization as Aim

आत्मानुभूति का उद्देश्य आत्माभिव्यक्ति के उद्देश्य का बिल्कुल उल्टा है। आत्मानुभूति के उद्देश्य के अनुसार शिक्षा का ध्येय यह है कि बालकों के गुणों का पता लगाया जाय और उनको वह मार्ग बताया जाय, जिस पर चलकर वे अपने सबसे उच्च गुण की अनुभूति कर सकें।

शिक्षा में आत्मानुभूति के उद्देश्य को महत्वपूर्ण माना गया है और उसके पक्ष में अनेकों तर्क दिये गये हैं, यथा—

१. यह उद्देश्य बालक और समाज—दोनों के लिये हितकर है, क्योंकि इससे दोनों का विकास होता है।

२. यह उद्देश्य समाज का विरोधी नही है, क्योंकि यह व्यक्ति को समाज का अभिन्न अङ्ग मानता है। समाज मे रहकर ही व्यक्ति अपने गुणो की अनुभूति कर सकता है।
३ यह उद्देश्य बालक को अपने चरित्र का विकास करने मे सहायता देता है।
४. यह उद्देश्य बालक की पाशविक प्रवृत्तियो का शोधन (Sublimation) करके उसमे मानवीय गुणो का विकास करता है।
५. यह उद्देश्य बालक की बुरी प्रवृत्तियो को अच्छी दिशा मे मोडने का प्रयास करता है।
६. यह उद्देश्य बालक के सर्वोत्तम गुणो का विकास करके उसे पूर्णता की ओर ले जाता है।

४. सौन्दर्यानुभूति-प्रशिक्षण का उद्देश्य

Aesthetic Training as Aim

कुछ विचारकों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—बालको को सौन्दयानुभूति का प्रशिक्षण देना है। उनका कहना है कि इस प्रशिक्षण के बिना शिक्षा अधूरी रहती है। 'सौन्दर्य एक मूलभूत मूल्य है'—(Beauty is a fundamental value)। इसलिए शिक्षा को बालको को सुन्दर और असुन्दर मे अन्तर जानने के योग्य बनाना चाहिये। ऐसा किये जाने पर ही वे प्रकृति की सुन्दर वस्तुओ का आनन्द ले सकेंगे। यह आनन्द जीवन के लिए उतना ही आवश्यक है, जितनी कि और कोई वस्तु। इसके अतिरिक्त प्रकृति मनुष्य को ईश्वर का आभास कराती है और मानव का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट करती है। इतना ही नही, प्रकृति की हर एक वस्तु व्यक्ति के ज्ञान मे वृद्धि करती है। यह ज्ञान व्यक्ति तभी प्राप्त कर सकेगा, जब उसे सौन्दर्यानुभूति का प्रशिक्षण दिया जाय और इसके फलस्वरूप वह प्रकृति के सौन्दर्य का रसास्वादन करे।

५. सामाजिक व्यवस्था को सुरक्षा का उद्देश्य

Preservation of Social Order as Aim

शिक्षा का एक उद्देश्य—सामाजिक व्यवस्था की सुरक्षा है। इस विषय मे टामसन (Thomson) का कथन है—'शिक्षा का एक उद्देश्य—सामाजिक परिवर्तन को बिना रोके उसकी व्यवस्था की सुरक्षा करना है।" ("An aim of education is to preserve social order without hindering change.")

बालको मे सामाजिक सुरक्षा की भावना का विकास उनके रीति-रिवाजों, धार्मिक कार्यों, परम्पराओं, सभ्यता और संस्कृति के प्रति सम्मान और आज्ञापालन की भावना को उत्पन्न करके किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश, वर्तमान समय में हम

इन सब बातो को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। इसका कारण यह है कि हम न्याय और तर्क को अपने अधिकारो का कारण मानते हैं। ऐसा हम लोकतान्त्रिक होने के नाते करते हैं।

६. उचित आदतों के निर्माण का उद्देश्य

Formation of Right Habits as Aim

शिक्षा का एक उद्देश्य—बालको मे अच्छी आदतो का निर्माण करना है। इस उद्देश्य के विरुद्ध जो तर्क दिया जाता है, वह यह है—"अच्छी आदतें क्या हैं ?" इसका उत्तर देते हुए विलियम जेम्स ने लिखा है—**"शिक्षक का सर्वप्रथम कार्य—उन आदतों को छाँटना और सिखाना है जो बालक के लिए सारे जीवन, सबसे अधिक लाभप्रद रहें। शिक्षा सदाचार के लिए है, और आदतें ही आचरण का निर्माण करती हैं।"**

"The teacher's prime concern should be to ingrain into the pupil that assortment of habits that shall be most useful to him throughout life. Education is for behaviour, and the habits are the stuff of which behaviour consists"—*William James.*

७. अन्य कालों व स्थानो के ज्ञान का उद्देश्य

Knowledge of Other Times & Places as Aim

शिक्षा का एक उद्देश्य—अन्य कालो और स्थानो का ज्ञान देना है। टामसन ने इस उद्देश्य पर बल देते हुए लिखा है—**"शिक्षा का एक उद्देश्य—अन्य कालों, अन्य स्थानों, अन्य समुदायों और अन्य सामाजिक वर्गों का कुछ ज्ञान देना है।"**

"An aim of education is to give some knowledge of other times, other places, other communities and other social classes."

—*Thomson.*

स्विटजरलैंड की एक कहावत है—"दूसरी घाटियो मे दूसरे मनुष्य रहते हैं।" (There are other men in other valleys.) इस कहावत को हमें कभी भी नहीं भूलना चाहिये। हमे सदैव यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए कि अन्य स्थानो, समाजो और देशो के मनुष्य कैसे हैं, और कैसे थे ? यह ज्ञान हमको एक-दूसरे के निकट लावेगा और इसके फलस्वरूप बहुत-सी समस्यायें हल हो जायेंगी। यह कहना अनुचित न होगा कि इस प्रकार का पारस्परिक ज्ञान अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना के विकास मे योग देगा। इस ज्ञान के अन्य पहलुओ के महत्व को बताते हुए टामसन ने लिखा है—**"ऐसे ज्ञान का महान् लाभ—सहनशीलता की वृद्धि और संकुचित दृष्टिकोण तथा संकीर्ण दम्भ की कमी है। इसके अतिरिक्त इसका बौद्धिक महत्व भी है।"**

"The great advantage of such knowledge is the increased tolerance, the decrease in narrow-mindedness and parochial conceit, and it has, of course, also an intellectual value."—*Thomson.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Can self-expression and self-realization be the aims of education ? If so, why ? Give reasons in support of your answer.
2. What, in your opinion, are the desirable aims of education ? Throw light on any two of them

११
लोकतंत्र, शिक्षा और शिक्षा के उद्देश्य
DEMOCRACY, EDUCATION & AIMS OF EDUCATION

"लोकतन्त्र में शिक्षा का उचित आदर्श रचनात्मक आदर्श है। यह नये प्रकार के ऐसे मनुष्यो का निर्माण करने का प्रयास करता है, जो गणतन्त्र और मानव-जाति के लिये अधिक ही अधिक उपयोगी सिद्ध हों।"

"The right ideal of education in a democracy is the creative ideal. It seeks to create new kinds of men, who shall be of ever increasing worth to the republic and to mankind"

—*Henry Van Dyke.*

विषय-प्रवेश

आधुनिक युग प्रजातन्त्र का युग है। प्रजातन्त्र को सब शासनो मे उच्चतम स्थान दिया गया है। प्राचीन यूनानी भी सब शासनो से इसे श्रेष्ठ मानते थे। शासन के रूप मे प्रजातन्त्र का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। ऐसी सम्भावना है और आशा भी की जाती है कि धीरे-धीरे प्रजातन्त्र ससार के कोने-कोने मे फैल जायगा। शासन के रूप मे प्रजातन्त्र मे जनता ही शासक होती है।

प्रजातन्त्र एक प्रकार का सामाजिक सगठन भी है। यदि राज्य मे प्रजातान्त्रिक सामाजिक सगठन नहीं है, तो हम उसको वास्तविक रूप मे प्रजातन्त्र का नाम नहीं दे सकते हैं। सामाज की रचना लोकतान्त्रिक आधार पर तभी हो सकती है, जब उसमें समानता और बन्धुत्व की भावनाओ का समावेश हो। मुस्लिम समाज प्रजातान्त्रिक है, क्योंकि उसमे ऊँच-नीच का भेद-भाव नही है और सब के साथ समानता का व्यवहार होता है। हिन्दुओ मे प्रजातन्त्र की भावना नही है, क्योकि हिन्दू समाज मे जातियों के बन्धन बहुत कठोर हैं और जातियाँ अपने को समान न समझ कर ऊँचा और नीचा समझती हैं।

शासन का भेद और सामाजिक सगठन होने के साथ-साथ, प्रजातन्त्र मस्तिष्क की एक प्रवृत्ति भी है। इसमे एक नैतिक आदर्श होता है। इसके अनुसार मनुष्य का

अस्तित्व स्वयं के लिए है, न कि दूसरों को सुख और आनन्द पहुँचाने के लिये। उदाहरणार्थ—इङ्गलैण्ड का निर्धन मनुष्य भी अपने जीवन को धनी से धनी मनुष्य के समान व्यतीत कर सकता है। इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य के रूप में निर्धन व्यक्ति का वही मूल्य है, जो धनी व्यक्ति का है। मनुष्य के रूप में निर्धन, धनी से निम्न नही है। इसलिए दोनों के द्वारा समानता का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। मस्तिष्क की प्रवृत्ति के रूप मे प्रजातन्त्र साधारण मनुष्य मे अपना विश्वास व्यक्त करता है। इसका आशय यह है कि सब मनुष्यो मे गुणो का समावेश है और वे उनसे रहित नही हैं।

लोकतन्त्र की परिभाषा

Definition of Democracy

लोकतन्त्र की परिभाषा इस प्रकार की गई है—"लोकतन्त्र की स्थापना उस समय होती है, जब उसके सब वयस्क पुरुष और स्त्री राज्य के कार्यों में भाग लेते हैं, उसके समस्त प्रश्नो पर विचार करते हैं और वोट देकर उनका निर्णय करते हैं। इस प्रकार वे अब्राहम लिंकन के आदर्श—जनता की, जनता के द्वारा और जनता के लिए सरकार को प्राप्त करते हैं।"

"Democracy is established when all its adult men and women participate in the affairs of the State, determine and decide all questions and projects by their votes and thus realize Abraham Lincoln's ideal of 'government of the people, by the people, for the people'"

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि लोकतन्त्र का आधार—जनता की सामान्य इच्छा (General Will) है, न कि बल। इसीलिये इसको व्यक्ति के गुणो के विकास के लिए सर्वोत्तम सरकार माना गया है। पर शिक्षा के अभाव मे लोकतन्त्र का सफल होना असम्भव है।

लोकतन्त्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता

Need of Education for Democracy

लोकतन्त्र की सफलता के लिए सबसे आवश्यक बातें शिक्षा और उच्च कोटि की राजनैतिक चेतना है। यदि लोगो को राज्य के कार्यों में रुचि नही है, और यदि वे समाज की समस्याओ को नही समझते हैं, तो लोकतन्त्र केवल नाम के लिए होता है। लोकतन्त्र मे जितने भी दोष बताये जाते हैं, उन सबका प्रमुख कारण—शिक्षा का अभाव है। शिक्षा ही लोकतन्त्र के नागरिकों को जागरूक बनाती है और राज्य के [illegible] मे उनकी रुचि उत्पन्न करती है। अत: लोकतन्त्र मे शिक्षा की आवश्यकता [illegible] ए जितना ही बड़ा जाय, थोड़ा है।

लोकतन्त्र का आदर्श यह है कि व्यक्ति और समाज एक-दूसरे की सहायता से पूर्णता को प्राप्त हों। लोकतन्त्र न तो समाज द्वारा व्यक्ति के शोषण और न व्यक्ति द्वारा समाज के हितों की अवहेलना की आज्ञा देता है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि लोकतन्त्र का कार्य समाज को इस प्रकार संगठित करना है जिससे व्यक्ति अपने साथियों और समाज के लिए हितप्रद कार्यों के द्वारा अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके। अतः लोकतन्त्र में शिक्षा की उपेक्षा नहीं की जा सकती है, क्योंकि शिक्षा ही व्यक्ति में—ज्ञान, रुचियों, आदर्शों, आदतों और शक्तियों का विकास करती है। इनके विकास से ही व्यक्ति लोकतन्त्र में अपना स्थान प्राप्त करता है और उस स्थान का प्रयोग अपने को और अपने समाज को उच्च आदर्शों की ओर ले जाने के लिए करता है।

लोकतन्त्र के लिए शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए, जे० डब्लू० एच० हेदरिंगटन ने लिखा है—"लोकतन्त्रीय सरकार की माँग शिक्षित जनता है।"

"Democratic government demands an educated people."
—*J. W. H. Hetherington*

ड्यूवी ने लोकतन्त्र के लिये शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है —"लोकतन्त्र में इस प्रकार की शिक्षा होनी चाहिये, जिससे व्यक्तियों को सामाजिक सम्बन्ध और नियन्त्रण में व्यक्तिगत रुचि उत्पन्न हो और उनमें ऐसी मानसिक आदतों का निर्माण हो, जिनसे अव्यवस्था उत्पन्न हुए बिना सामाजिक परिवर्तनों का होना सम्भव हो।"

"A democracy must have a type of education which gives individuals a personal interest in social relationship and control, and habits of mind which secure social changes without introducing disorder."—*John Dewey*.

लोकतन्त्रीय शिक्षा के उद्देश्य

Aims of Democratic Education

ड्यूवी ने लिखा है—"लोकतन्त्र केवल सरकार का रूप न होकर, उससे भी अधिक कुछ है। यह मुख्यतः सहयोगी जीवन और सम्मिलित रूप से किये गए अनुभव की विधि है।"

"A democracy is more than a form of government; it is primarily a node of associated living, of conjoint communicated experience."—*John Dewey*

ड्यूवी ने जिस विधि के बारे में लिखा है, उसके अनुसार लोगों को तैयार करना शिक्षा का कार्य है। अतः यह प्रश्न उठता है कि—"लोकतन्त्र के लोगों को किस

प्रकार की शिक्षा दी जाय ?" इसका उत्तर यह है कि यदि इस दिशा मे हमारे प्रया सफल हैं, तो बालक योग्य नागरिक बनेगा। वह अपने कार्यों को इस प्रकार करेगा जिससे उसका और दूसरो का हित होगा। वह ऐसे कार्यों को करने पर बल देगा जिनसे विश्व-कल्याण को योग मिलेगा। उसमे 'सह-जीवन और सह-अस्तित्व (Co-operative Life & Co-existence) की भावना का विकास होगा। इस प्रका के व्यक्ति का निर्माण करने के लिए लोकतन्त्रीय शिक्षा के कुछ उद्देश्य होने आवश्यक हैं। ये उद्देश्य दो प्रकार के हैं :—

(क) सामान्य उद्देश्य (General Aims)

(ख) अनिवार्य उद्देश्य (Fundamental Aims)

(क) लोकतन्त्रीय शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

General Aims of Democratic Eduation

लोकतन्त्रीय शिक्षा के सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

१. प्रेम और सहयोग के आधार पर परिवार और समाज की उपयुक्त सदस्यता का विकास।
२. व्यावसायिक कुशलता (Professional Efficiency) और व्यावसायिक नैतिकता (Professional Ethics) का विकास।
३. अवकाश (Leisure) प्राप्त करने की क्षमता, और उसे मनोरंजन तथा आत्म-उन्नति के लिए लाभप्रद ढग से प्रयोग करने का प्रशिक्षण।
४. शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की उन्नति।
५. मस्तिष्क और बुद्धि का प्रशिक्षण।
६ चरित्र और अनुशासन का विकास।
७ विभिन्न क्षेत्रो मे नेतृत्व का प्रशिक्षण।

(ख) लोकतन्त्रीय शिक्षा के अनिवार्य उद्देश्य

Fundamental Aims of Democratic Education

लोकतन्त्रीय शिक्षा के अनिवार्य उद्देश्य निम्नलिखित होने चाहिए :—

१. समविकसित व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का विकास

Development of Individuals with Harmonious Personalties

आज का ससार सघर्षों और कटुताओ से भरा हुआ है। ये दोनो लोकतन्त्र और मानव के लिए सकट का कारण बन गये हैं। अत. शिक्षा को सामजस्यपूर्ण व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का विकास करना चाहिए। हुमायूं कबीर के अनुसार— "शिक्षा को मानव-प्रकृति के सब पहलुओ के लिए सामग्री जुटानी चाहिए और मानव-

शास्त्र, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी को समान महत्व देना चाहिए, जिससे कि वह मनुष्य को सब कार्यों को निष्पक्षता, कुशलता और उदारता से करने के योग्य बना सके।"

"Education should cater to all aspects of man's nature and give equal importance to the humanities, the sciences, and technology, so that it can fit a man to perform justly, skilfully, and magnanimously all the offices."—*Humayun Kabir.*

२. व्यक्ति की आर्थिक सम्पन्नता

Economic Well-Being of the Individual

लोकतन्त्र की सफलता व्यक्तियों की आर्थिक सम्पन्नता पर निर्भर है। कारण यह है कि आर्थिक सम्पन्नता न होने पर वे अपने कार्य से विमुख हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त वे धन-सम्पन्न व्यक्तियों के इशारे पर अपने वोट किसी को भी दे सकते हैं। अतः लोकतन्त्र में शिक्षा का यह उद्देश्य होना चाहिये कि वह लोगों को किसी व्यवसाय के लिए तैयार करके उनको धन-सम्पन्न बनाये।

३. व्यक्ति की रुचियों का विकास

Development of Individual's Interests

लोकतन्त्र में शिक्षा को व्यक्ति की रुचियों के विकास के लिए कार्य करना चाहिए। हरबार्ट (Herbart) ने बहुमुखी रुचियों के विकास पर बल दिया है। बालक में जितनी ही अधिक उपयुक्त और श्रेष्ठ रुचियाँ होंगी, उसे उतने ही अधिक अवसर, शिक्षा-काल में और उसके बाद—सुखी, कुशल और संतुलित जीवन व्यतीत करने के लिए मिलेंगे।

४. अच्छी आदतों का निर्माण . Formation of Good Habits

लोकतन्त्रीय समाज के नागरिक में अच्छी आदतों का निर्माण किया जाना आवश्यक है, क्योंकि आदतें ही गरीबी या अमीरी, परिश्रम या आलस्य, अच्छे या बुरे कार्यों की नींव डालती हैं। अतः बालकों को आरम्भ से अच्छी आदतें सिखायी जानी चाहिए, जिससे कि उनका और उनके समाज का भावी जीवन सुखी हो सके।

५. सामाजिक दृष्टिकोण का विकास . Development of Social Outlook

लोकतन्त्र में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है—व्यक्ति में सामाजिक दृष्टिकोण का विकास करना। इस उद्देश्य में सामाजिक समझदारी, सामाजिक रुचियाँ, सामाजिक प्राणी बनने की भावना, सहयोग और सामाजिक तथा आर्थिक प्रश्नों का निर्णय करने की योग्यता आती हैं। इस प्रकार इस उद्देश्य में सामाजिक भावना और सामाजिक क्षमता की भावना सम्मिलित हैं।

६. कुशलता की प्राप्ति : Achievement of Efficiency

प्रजातन्त्र के लिए शिक्षा देने के समय कुशलता की प्राप्ति को ध्येय बनाया जाना चाहिए। कुशलता के अर्थ को स्पष्ट करते हुए इलियट ने लिखा है—"कुशलता से मेरा अभिप्राय है—स्वस्थ और सक्रिय जीवन में कार्य तथा सेवा की सार्थक शक्ति। इस शक्ति के प्रशिक्षण और विकास के लिए हर एक व्यक्ति को शिक्षा दी जानी चाहिए।"

"By efficiency I mean effective power for work and service during a healthy and active life To the training and development of this power the education of each and every person should be directed."—*Eliot*

७. नागरिकता का प्रशिक्षण : Training for Citizenship

लोकतन्त्र में शिक्षा मुख्य उद्देश्य—लोगों को नागरिकता का प्रशिक्षण देना है। इस प्रशिक्षण का आदर्श हमको अग्रलिखित शपथ में मिलता है, जो प्राचीन यूनान में व्यक्तियों को नागरिकता प्राप्त करते समय लेनी पड़ती थी—"हम अपने इस नगर को बेईमानी या कायरता के किसी कार्य से या अपने दुखी साथियों को अकेला छोड़कर कलंकित नहीं करेंगे। हम नागरिकता के आदर्शों और सामाजिक वस्तुओं के लिये अकेले और मिलकर युद्ध करेंगे। हम नगर के क़ानूनों का पालन करेंगे। हम जनता में नागरिकता की भावना को प्रबल बनाने के लिए सदैव प्रयत्न करेंगे। हम इस नगर को अधिक बड़ा, अधिक अच्छा और अधिक सुन्दर बनाकर भावी पीढ़ी को सौंपेंगे।"

"We will never bring disgrace to this our city by any act of dishonesty or cowardice, nor desert our suffering comrades. We will fight for the ideals of social things of the city, alone and with many. We will strive unceasingly to quicken the public's sense of civic thought. We will transmit this city greater, better, and more beautiful."—*Ancient Greek Oath.*

८ उच्च लक्ष्यों के लिए व्यक्ति और समाज का निर्माण

Shaping the Individual & Society towards Nobler Ends

लोकतन्त्र में शिक्षा के इस उद्देश्य के महत्व को अमरीकी शिक्षा के ३५वें बुलेटिन में इस प्रकार व्यक्त किया गया है—'लोकतन्त्र में शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति में ज्ञान, रुचियों, आदर्शों, आदतों और शक्तियों का विकास करना चाहिए, जिससे वह अपना उचित स्थान प्राप्त करे और उस स्थान का प्रयोग स्वयं और समाज को उच्च लक्ष्यों की ओर ले जाने के लिए करे।'

"Education in a democracy should develop in each individual the knowledge, interests, ideals, habits, and powers whereby he will find his place and use that place to shape both himself and society towards nobler ends." —*American Education Bulletin*, No. 35

उपसंहार

हमने ऊपर की पंक्तियों में लोकतन्त्र में शिक्षा के 'सामान्य' और 'अनिवार्य' उद्देश्यों का विवेचन किया है। इन उद्देश्यों को अपनाये बिना लोकतन्त्र की शिक्षा निरर्थक रहती है। कारण यह है कि इन उद्देश्यों की सहायता से ही ऐसे नागरिकों का निर्माण हो सकता है जो प्रजातन्त्र को सफल बना सकते हैं। यदि इन उद्देश्यों को शिक्षा-व्यवस्था में स्थान नहीं मिलता है, तो या तो लोकतन्त्र नाम-मात्र के लिए लोकतन्त्र रह जाता है या उसका अन्त हो जाता है। एशिया के कितने ही देशों में लोकतन्त्र असफल हो चुके हैं। इसके विभिन्न कारण बताये जाते हैं। पर इनमें सर्व प्रमुख कारण यह है कि वहाँ शिक्षा को लोकतन्त्रीय उद्देश्यों पर आधारित नहीं किया गया।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What should be the aims of education in a democratic society? Discuss any one of them in detail.
2. What do you understand by the democratic conception of education? How does it differ from the totalitarian conception?

"Democracy seeks to replace brute force by persuasion as the means of both social cohesion and social advance. The substitution of reason for authority as the guiding principle of society implies that education must prepare individuals to be creative members of the community."—*Humayun Kabir.*

भारत की शैक्षिक आवश्यकताएँ
Educational Needs of India

इस बात को ध्यान मे रखते हुए कि भारत एक ऐसा गणराज्य है, जो समाजवादी समाज की स्थापना की ओर धीरे-धीरे बढ़ रहा है, देश की शैक्षिक आवश्यकताओ को निम्नलिखित शब्दो मे व्यक्त किया जा सकता है :—

(१) शिक्षा द्वारा नागरिको मे ऐसी आदतो, अभिरुचियो और चारित्रिक गुणो का विकास किया जाय—जिससे वे अपने उत्तरदायित्वो को भली प्रकार निभा सकें और उन प्रवृत्तियों को रोक सकें—जो राष्ट्रीयता और धर्म-निरपेक्षता के लिए बाधक हैं।

(२) भारत साधन-सम्पन्न है, पर इस समय वह अति निर्धन है। उसकी अधिकाश जनसख्या दरिद्रता की स्थिति मे है। अत. यह आवश्यक है कि शिक्षा द्वारा लोगो की उत्पादन-शक्ति का विकास किया जाए, राष्ट्रीय सम्पत्ति मे वृद्धि की जाय और इस प्रकार लोगो के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाया जाए।

(३) भारत मे शैक्षिक सुविधाओ का अत्यधिक अभाव है। लोग जीविका-उपार्जन की समस्या मे इतनी बुरी तरह उलझे हुए हैं कि उनके पास सास्कृतिक कार्यों की ओर ध्यान देने के लिए समय नही है। अत यह आवश्यक है कि शिक्षा-पद्धति मे इस प्रकार सुधार किया जाय कि वे सास्कृतिक पुनरुत्थान मे योग दे सकें।

शिक्षा-आयोगों के अनुसार जनतंत्रीय भारत में शिक्षा के उद्देश्य
Aims of Education of Democratic India According to Commissions

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत मे दो शिक्षा-आयोगो की नियुक्ति हो चुकी है। इन्होने जनतन्त्रीय भारत के लिए शिक्षा के कुछ उद्देश्य बनाये हैं। हम उन पर नीचे प्रकाश डाल रहे हैं :—

१. विश्वविद्यालय-शिक्षा-आयोग के अनुसार

"स्वयं प्रजातंत्र का जीवन सामान्य, व्यावसायिक और जीविकोपार्जन सम्बन्धी शिक्षा के सर्वोच्च स्तर पर निर्भर है। अतः हमारे समाज की आवश्यकताओ को पूरा करने के लिये विश्वविद्यालयों का कार्य होना चाहिये—विवेक का विस्तार, नये

ज्ञान के लिये अधिक इच्छा, जीवन के अर्थ को जानने के लिये अधिक प्रयास और व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था।"

"Democracy depends for its very life on the highest standard of general, vocational and professional education. Therefore, the task of education should be dissemination of learning, increased thirst for new knowledge, increased efforts to plumb the meaning of life, and provision for professional education to satisfy the need of the country." *University Education Commission* (1948).

२. माध्यमिक शिक्षा-आयोग के अनुसार

"शिक्षा व्यवस्था को आदतों, दृष्टिकोणों और चरित्र के गुणों के विकास में योग देना पड़ेगा, जिससे कि नागरिक जनतंत्रीय नागरिकता के दायित्वों का योग्यता से निर्वाह कर सकें और उन ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों का विरोध कर सकें, जो व्यापक राष्ट्रीय और धर्म निरपेक्ष दृष्टिकोण के विकास में बाधक हैं।"

"Educational system must make contribution to the development of habits, attitudes and qualities of character which will enable its citizen to wear worthily the responsibilities of democratic citizenship and to counteract all those fissiparous tendencies which hinder the emergency of broad national and secular outlook."

—*Secondary Education Commission*

आधुनिक लोकतन्त्रीय भारत के शैक्षिक उद्देश्य

Educational Aims of Modern Democratic India

आधुनिक लोकतन्त्रीय भारत की आकांक्षाओं, आवश्यकताओं और मान्यताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के उद्देश्यों को मोटे तौर पर अधोलिखित दो समूहों में बाँटा जा सकता है —

(क) व्यक्ति-सम्बन्धी उद्देश्य (Aims Relating to Individual)

(ख) समाज-सम्बन्धी उद्देश्य (Aims Relating to Society)

(क) व्यक्ति-सम्बन्धी उद्देश्य

Educational Aims Relating to the Individual

वर्तमान जनतन्त्रीय भारत में व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाले शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं :—

१. शारीरिक विकास (Physical Development)
२. मानसिक विकास (Mental Development)

३. चारित्रिक विकास (Character Development)
४. आध्यात्मिक विकास (Spiritual Development)
५. सांस्कृतिक विकास (Cultural Development)
६. व्यक्तित्व का विकास (Development of Personality)
७. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific Attitude)
८. अवकाश का उचित उपयोग (Proper use of Leisure)
९. व्यावसायिक कुशलता की उन्नति (Improvement of Vocational Efficiency)
१०. जीवन-यापन की कला में दीक्षा (Initiation into the Art of Living)

१ शारीरिक विकास : Physical Development

लोकतन्त्रीय भारत में शिक्षा का उद्देश्य छात्रों के स्वास्थ्य को अच्छा बनाना है, क्योंकि स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ मस्तिष्क का सूचक है (A sound mind in a sound boby)। इसके अतिरिक्त स्वस्थ व्यक्ति अपने जीवन का आनन्द ले सकता है, अपने व्यवसाय में सफल हो सकता है, दूसरों की सेवा कर सकता है और देश की रक्षा कर सकता है। अतः शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए—बालकों के शरीर का विकास करना। इस उद्देश्य पर 'विश्वविद्यालय आयोग' और माध्यमिक शिक्षा आयोग दोनों ने बल दिया है। देश के लिये व्यक्तियों का शारीरिक स्वास्थ्य कितना आवश्यक है, इस पर प्रकाश डालते हुए जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है—"मैं चाहता हूँ कि *युवक और वृद्ध—दोनों स्वस्थ, बलवान और चुस्त हों। मैं चाहता हूँ कि वे शारीरिक रूप में सर्वोत्तम राष्ट्र का निर्माण करें। मेरा विचार है कि जब तक हमारा शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा, तब तक हम वास्तव में अधिक मानसिक प्रगति नहीं कर सकेंगे।*"

"I want young people and old to be healthy and strong and agile, and I want them to be physically an A-1 Nation I do not think we can really make much intellectual progress unless we have a good physical background."- **Jawaharlal Nehru :** *Speeches*, **Vol. III, p. 404.**

२. मानसिक विकास : Mental Development

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—मस्तिष्क का विकास करना माना जाता है। भारतीय शिक्षा में इस उद्देश्य को प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसका विशेष कारण यह है कि शताब्दियों की दासता ने हमारे मस्तिष्क को संकुचित कर दिया है। परिणामतः

इसमें स्वतन्त्र विचार, तर्क और निर्णय शक्तियाँ नहीं रह गई है। इन शक्तियों के
अभाव म न तो हम अपना हित कर सकते है और न दूसरों का, देश की बात तो
दूर रही है। प्रजातन्त्र के सच्चे नागरिकों के रूप म हममें इन शक्तियों का होना
आवश्यक है। अत यह जरूरी है कि शिक्षा हमारे मस्तिष्क को विकसित करके हम
इन शक्तियों को प्राप्त करने की क्षमता दे। 'विश्वविद्यालय शिक्षा-आयोग' ने बौद्धिक
विकास को शिक्षा का उद्देश्य बताया है। मानसिक विकास व्यक्ति के लिए कितना
आवश्यक है—इस पर प्रकाश डालते हुए स्पेंसर ने लिखा है—"मस्तिष्क ही अच्छा
या बुरा, दुखी या सुखी, धनी या निर्धन बनाता है।'

"It is the mind that maketh good or ill that maketh wretch or happy, rich or poor" —*Spencer*

३. चारित्रिक विकास Character Development

यह कहना अनुचित नहीं होगा कि भारतीय चरित्र का स्तर काफी नीचा है।
इसका परिणाम यह है कि हम अपने कर्तव्यों और दायित्वों को निभाने म सफल नहीं
होते हैं। युद्ध के समय देश के विरुद्ध शत्रु को सहायता देना, उच्च राजनैतिक शक्ति
प्राप्त करके अपना और दूसरों का आर्थिक लाभ करना, छोटे-छोटे कामों को करने
के लिए रिश्वत लेना—ये और ऐसी ही अनेकों अन्य बातें हैं जो आये दिन
पड़ती है और प्राय सभी को मालूम है। ऐसी बातो मे मनुष्य को वास्तविक
और सन्तोष नही मिलता है। इससे भी बड़ा अहित यह है कि इन बातों से देश
उत्थान सम्भव नही है। अत शिक्षा का उद्देश्य—अच्छे चरित्र का निर्माण करना हो
चाहिए। भारत सरकार इस ओर पूर्णत उदासीन है। यद्यपि 'विश्वविद्यालय शिक्ष
आयोग' और 'माध्यमिक शिक्षा-आयोग' दोनो ने चरित्र-निर्माण पर बल दिया है, प
अभी तक इस दिशा म कोई महत्त्वपूर्ण क़दम नहीं उठाया गया है। अत. यह
आवश्यक है कि भारतीय शिक्षा बालकों के चारित्रिक विकास के उद्देश्य को सर्वप्रथम
स्थान दे। डाक्टर जाकिर हुसैन ने ठीक ही लिखा है—"हमारे शिक्षा-कार्य का
पुनर्संगठन और व्यक्तियों का नैतिक पुनरुत्थान एक-दूसरे से अविच्छिन्न रूप से गुथे
हुए हैं। अत हम साहस से दोनो कार्यों को प्रारम्भ करना चाहिए।"

"The reconstruction of our educational work and the moral regeneration of the people are inextricably interlinked Let us set our hand courageously to both" —Dr Zakir Husain : *The Patel Memorial Lectures*, p. 98

४. आध्यात्मिक विकास . Spiritual Development

पाश्चात्य सभ्यता की चमक-दमक की चकाचौंध मे हम अपने पुराने आदर्शों
को भूल चुके हैं। धन हमारा ईश्वर और सांसारिक बल की प्राप्ति हमारे जीवन का

नष्ट हो गया है। लौकिकता के नशे में चूर—हम यह भूल चुके हैं कि इससे भी श्रेष्ठ कोई चीज है। हम आध्यात्मिक विकास की बात को भूल चुके हैं। हम भूल चुके हैं कि हमारे अन्दर आत्मा की दैवी शक्ति है जो हमें पूर्णता और वास्तविक शक्ति दे सकती है। शिक्षा का उद्देश्य है—हमें इसका ज्ञान प्राप्त करने, इसको विकसित करने और इसका प्रयोग करने की क्षमता देना। इस पर बल देते हुए श्री अरविन्द ने लिखा है—"हम में से हर-एक में कुछ दैवीय है, कुछ अपना स्वयं का है, जो हमें पूर्णता और शक्ति प्राप्त करने का अवसर देता है। हमारा कार्य है—इसका पता लगाना, इसको विकसित करना और इसको प्रयोग करना। शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये-विकसित होने वाली आत्मा को सर्वोत्तम प्रकार से विकास करने में सहायता देना और श्रेष्ठ कार्य के लिये पूर्ण बनाना।"

"Every one has in him something divine, something his own, a chance of perfection and strength The task is to find it, develop it and use it. The chief aim of education should be to help the growing soul to draw out that in itself which is best and make it perfect for a noble cause." —Sri Aurobindo : *Sri Aurobindo and the Mother on Education*, p. 16

५. सांस्कृतिक विकास : Cultural Development

हमारी अपनी परम्पराएँ और आदर्श हैं, जिनके आधार पर निर्मित हमारा समाज सैकड़ों-हजारों थपेड़े खाकर भी अभी तक पूर्ववत् बना हुआ है। दूसरे शब्दों में, हमारी अपनी संस्कृति है, जिसने हमको अतीत में संसार का पथ-प्रदर्शक बनाया था। पर आज पाश्चात्य संस्कृति ने हमारे ऊपर ऐसा मुलम्मा चढ़ा दिया है कि हम अपनी संस्कृति को तुच्छ समझने लगे हैं, उससे घृणा करने लगे हैं। यह हमारे पतन का एक कारण है। यदि हम एक बार फिर ऊँचा उठना चाहते हैं और विश्व के राष्ट्रों में सम्मानित स्थान प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें अपनी संस्कृति के आदर्शों को फिर अपनाना पड़ेगा। हमें इस योग्य बनाना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये। ओटावे का कथन है :—"शिक्षा का एक कार्य-समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को अपने तरुण और कार्यशील सदस्यों को प्रदान करना है।"

"One of the tasks of education is to hand on the cultural values and behaviour patterns of the society to its young and potential members."—*Ottaway*.

६. व्यक्तित्व का विकास : Development of Personality

लोकतन्त्रीय शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य—मनुष्य के व्यक्तित्व का चतुर्मुखी विकास करना है। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा उसकी मनोवैज्ञानिक,

सामाजिक, भावानात्मक और व्यावहारिक आवश्यकताओं पर ध्यान दे और
पूर्ण करे। शिक्षा को उसकी रचनात्मक शक्तियों का विकास करना चाहिए,
कि वह सांस्कृतिक विरासत के महत्त्व को समझ सके और अच्छी रुचियों का
कर सके। अपने अवकाश में वह इन रुचियों का सदुपयोग कर सकेगा और इ
अपनी सांस्कृतिक विरासत में वृद्धि कर सकेगा। प्राचीन काल में हमारी
छात्रों की भावनाओं, सामाजिक आवेगों, रचनात्मक शक्तियों और कलात्मक
की ओर ध्यान न देकर उनके व्यक्तित्व के अनेकों क्षेत्रों को अछूता छोड़ दिया
पाठ्य-क्रम का संगठन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि उसमें कला, हस्त
संगीत, नृत्य और प्रिय रुचियों (Hobbies) को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त हो।

७ वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास : Development of Scientific At

प्रत्येक प्रगतिशील देश के लिए वैज्ञानिकों और प्राविधिक मनुष्यों की
श्यकता होती है। इस आवश्यकता की पूर्ति करना शिक्षा का उद्देश्य होना च
जब तक भारतीय शिक्षा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास को अपना उद्देश्य
बनायेगी तब तक व्यक्ति और देश की प्रगति होना सम्भव नहीं है। कारण
कि तर्क पर आधारित विज्ञान की शिक्षा ही भारतवासियों को अंधविश्वासों,
विचारों और आधारहीन मान्यताओं से मुक्ति दे सकती है, उनकी कूप-मंडूकत
अवैज्ञानिक दृष्टिकोणों का अन्त कर सकती है। 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विक
विज्ञान की शिक्षा और क्या कर सकती है?' इस पर प्रकाश डालते हुए
विवेकानन्द ने लिखा है —"हमारे लिए पश्चिमी विज्ञान का अध्ययन आवश्य
हमें तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता है, जिससे हमारे देश के उद्योगों का
होगा।"

"What we need is to study Western science, we need te
cal education that will *develop* our industries"

—**Swami Vivekananda** : *Education*,

८ अवकाश का उचित उपयोग : Proper Use of Leisure

अवकाश का दुरुपयोग जितना भारतवासी करते हैं, इतना सम्भवत:
देश के व्यक्ति नहीं करते। यही बात छात्रों के बारे में भी कही जा सकती है
अवकाश को इधर-उधर घूमने, गप्प मारने, ताश खेलने, सिनेमा देखने और ऐ
अन्य कार्यों में नष्ट करते हैं। वे यह सोचने का कष्ट नहीं करते हैं कि गया
समय फिर वापिस नहीं आता है। अत शिक्षा को अपना यह उद्देश्य बनाना च
कि वह बालकों को अवकाश के उचित उपयोग का प्रशिक्षण दे। ऐसा करके ही
उनको लाभान्वित कर सकेगी। एक बार जब नैपोलियन फ्रांस के एक स्कूल में
तब उसने वहाँ के छात्रों से कहा —"अपने अवसरों से लाभ उठाओ। प्रत्येक
जो तुम अब नष्ट करते हो, वह तुम्हारे भावी दुर्भाग्य को मौका देता है।"

"Improve your opportunities Every hour lost now is a chance of future misfortune " —*Napoleon Bonaparte.*

९. व्यावसायिक कुशलता की उन्नति

Improvement of Vocational Efficiency

शिक्षा को छात्रों की व्यावसायिक कुशलता की उन्नति पर ध्यान देना चाहिए। इसमें दो बातें आती हैं —(१) छात्रों को इस बात का ज्ञान कराया जाना चाहिए कि उनकी और राष्ट्र की उन्नति केवल कार्य द्वारा ही हो सकती है, (२) शिक्षा समाप्त करने के बाद जब वे किसी व्यवसाय को चुनें, तब वे उसे कुशलता से पूर्ण करें। इस प्रकार का दृष्टिकोण विकसित करना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

इसके साथ-साथ सब प्रकार के छात्रों में व्यावसायिक कुशलता की उन्नति करना भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इसके फलस्वरूप हमें अपनी औद्योगिक प्रगति की योजनाओं के लिए प्रशिक्षित व्यक्ति मिल सकेंगे। अतीत में हमारी शिक्षा सैद्धान्तिक थी। इसके फलस्वरूप शिक्षित व्यक्ति देश के साधनों का विकास करके राष्ट्रीय सम्पत्ति में वृद्धि न कर सके। यह उद्देश्य अब बदल दिया जाना चाहिए और उत्पादन के कार्यों पर अधिक बल दिया जाना चाहिए।

१०. जीवन-यापन की कला में दीक्षा

Initiation into the Art of Living

शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य—छात्रों को समाज में जीवन यापन की कला में दीक्षित करना है। यह बात स्पष्ट है कि व्यक्ति न तो अकेला रह सकता है, और न अकेला रहकर अपना विकास कर सकता है। अपने उत्तम विकास और समाज के हित के लिए यह आवश्यक है कि वह दूसरों के साथ रहने और सहयोग के महत्व को समझे। यदि शिक्षा यह प्रशिक्षण नहीं देती है, तो वह 'शिक्षा' कहलाने की अधिकारिणी नहीं है। इस सम्बन्ध में डाक्टर राधाकृष्णनन् ने लिखा है—"हमें युवकों को यथासम्भव सर्वोत्तम प्रकार के सर्वकार्यकुशल व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। उन्हें शिष्टाचार और सम्मान के अलिखित नियमों को अपनी खुशी से मानना सीखना चाहिए।"

"We must train the young to the best possible all round living, individual and social They must learn to observe spontaneously the unwritten laws of decency and honour "

—Dr S. Radhakrishnan *Occasional Speeches and Writings,* (First Series), p. 91.

(ख) समाज-सम्बन्धी शैक्षिक उद्देश्य
Educational Aims Relating to the Society

इस समय भारत का आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक वातावरण ...ाचार, अविश्वास, असहिष्णुता, भ्रष्टाचार और अनेकों अन्य कुप्रवृत्तियों का ...ाकार है। इतना सब-कुछ होते हुए भी हमारा देश समाजवादी समाज की स्थापना ...रने का निर्णय कर चुका है। यह स्वप्न तभी साकार हो सकता है, जब शिक्षा के ...ारा समाज के रूप में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया जाय। इसके लिए शिक्षा को कुछ विशिष्ट उद्देश्य निश्चित करने पड़ेंगे। ये उद्देश्य निम्नलिखित हो सकते हैं :—

१. समाजवादी समाज की स्थापना (Establishment of Socialistic Society)
२. सामाजिक बुराइयों का अन्त (Abolition of Social Evils)
३. सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का समावेश (Inculcation of the Spirit of Social Responsibility).
४. निःस्वार्थ कार्य की भावना का समावेश (Inculcation of the Spirit of Selfless Work).
५. जन-शिक्षा की व्यवस्था (Provision for the Education of Masses)
६. नेतृत्व के गुणों का विकास (Development of the Qualities of Leadership)
७. लोकतन्त्रीय नागरिकता का विकास (Development of Democratic Citizenship)
८. भावात्मक एकता की प्राप्ति (Realization of Emotional Integration)
९. अन्तर्सांस्कृतिक भावना का विकास (Development of Inter-cultural Understanding).
१०. अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान की वृद्धि (Promotion of International Understanding)

१. समाजवादी समाज की स्थापना :
Establishment of Socialistic Society

भारत ने घोषित किया है कि उसका अन्तिम लक्ष्य देश में समाजवादी समाज (Socialistic Society) की स्थापना करना है। ऐसे समाज की विशेषताएँ हैं— असमानता की भावना का अभाव, स्वस्थ और सुखी जीवन व्यतीत करने के समान अवसर, शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सुरक्षा आदि। इसका अर्थ है—हमारे

समाज का एक नई दिशा में रूप परिवर्तन। यह परिवर्तन शिक्षा द्वारा ही किया जाता है। अत. यह आवश्यक है कि शिक्षा व्यक्तियों मे समाजवाद की भावना को विकसित करके उसे स्थायी रूप प्रदान करे। इस उद्देश्य को पूर्ण करके ही शिक्षा आधुनिक समाज को समाजवादी समाज की ओर ले जा सकती है। इस सम्बन्ध में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए जवाहरलाल नेहरू ने लिखा :—"मैं समाजवादी राज्य में विश्वास करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि शिक्षा का इस उद्देश्य की ओर विकास किया जाय।"

"I believe in socialistic state and I would wish education to shape itself towards this goal." —*Jawaharlal Nehru*

२. सामाजिक बुराइयों का अन्त : Abolition of Social Evils

आज का भारतीय समाज बहुरंगी सामाजिक बुराइयों का घर बना हुआ है। इनमे से प्रमुख हैं—जाति-प्रथा, पर्दा-प्रथा, छूआछूत, बाल-विवाह, विधवा पुनर्विवाह निषेध। इन बुराइयों का अन्त किए बिना यह आशा करना व्यर्थ है कि समाज किसी प्रकार की प्रगति कर सकता है। अत. शिक्षा का उद्देश्य इन सामाजिक कुप्रथाओं का अन्त करना होना चाहिए। इस बात पर बल देते हुए जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है—"मैं चाहता हूँ कि धर्म या जाति, भाषा या प्रान्त के नाम में जो संकीर्ण संघर्ष आजकल चल रहे हैं, समाप्त हो जायें और वर्गविहीन तथा जातिविहीन समाज का निर्माण हो, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने गुण और योग्यता के अनुसार उन्नति करने का पूरा अवसर मिले। विशेष रूप से मुझे आशा है कि जाति-प्रथा का अभिशाप समाप्त हो जायगा, क्योंकि जाति न तो प्रजातन्त्र का आधार हो सकती है और न समाजवाद का।"

"I want the narrow conflicts of to-day in the name of religion or caste, language or province, to cease, and a classless and casteless society to be built up where every individual has full opportunity to grow according to his worth and ability. In particular, I hope that the curse of caste will be ended for there cannot be either democracy or socilalism on the basis of caste."

—Jawaharlal Nehru : *Azad Memorial Lectures*, p 41

३. सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का समावेश
Inculcation of the Spirit of Social Responsibility

हर व्यक्ति की अनेकों आवश्यकतायें होती है, जिनको वह स्वयं पूरा नहीं कर पाता है। उनकी पूर्ति के लिए उसे समाज के दूसरे व्यक्तियों पर निर्भर होना पड़ता है। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि व्यक्ति के शरीर, मस्तिष्क और

आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली आवश्यकताओं की पूर्ति समाज के अन्य सदस्यों के द्वारा की जाती है। अतः यह आवश्यक है कि व्यक्ति सब के साथ मिलकर समाज के जीवन को नैतिक और भौतिक दृष्टिकोण से अधिक अच्छा बनाने का उत्तरदायित्व ले। यह तभी सम्भव हो सकता है जब व्यक्ति में इस प्रकार की भावना का समावेश करना, शिक्षा अपना उद्देश्य बनाए। इस भावना का समावेश स्कूलों को सामुदायिक जीवन की इकाइयाँ बनाकर किया जा सकता है। डा० जाकिर हुसैन का कथन है—"सामुदायिक उत्तरदायित्व की शिक्षा देने के लिए स्वयं शिक्षा-संस्थाओं को सामुदायिक जीवन की इकाइयों के रूप में संगठित किया जाना चाहिए। समाज में सेवा करके ही व्यक्ति सेवा करना सीखता है। जब तक यह सिद्धान्त हमारी शिक्षा-संस्थाओं का प्राण नहीं बनेगा, तब तक शिक्षा के अन्य सभी सुधार जोड़-गाँठ के काम होंगे।"

"In order to educate for social responsibility, the institutions should themselves be organised as units of community living. One learns to serve by serving in society. Unless this principle becomes the life-breath of our educational institutions, all other reforms will be just patchwork." —**Dr Zakir Hussain** : *Sardar Vallabhbhai Patel Memorial Lectures*, (Fourth Series), pp. 46–47.

४. निःस्वार्थ कार्य की भावना का समावेश
Inculcation of the Spirit of Selfless Work

आज के भौतिकवादी युग मे स्वार्थ की भावना बहुत प्रबल हो गई है। हमारे मिलने-जुलने मे, हमारे हर कार्य मे, हमारी हर बात मे कोई-न-कोई स्वार्थ अवश्य होता है। हम स्वार्थ की तराजू मे अपने को और दूसरो को तोलते हैं। यदि किसी व्यक्ति से हमारे स्वार्थ की सिद्धि होती है, तो हम उसे अपना सब-कुछ बना लेते हैं, उसके लिये कुछ कर सकते हैं। पर जब उससे हमारा स्वार्थ पूर्ण हो जाता है और भविष्य मे हमे उससे कोई आशा नहीं रहती है, तो हम उसे पहिचानना भी बन्द कर देते हैं। इसी स्वार्थ के वशीभूत होकर कितने ही भारतीयो ने चीन और पाकिस्तान से युद्ध के समय अपने देश का ध्यान न रखकर उनकी गुप्त रूप से सहायता की। ऐसे भारतीय देश के लिए कलक हैं, अभिशाप हैं। साराश मे, छोटी और बडी सभी बातो मे हम पहले अपने स्वार्थ की ओर देखते हैं। हमारी यह मनोवृत्ति हमारे समाज, देश और राष्ट्र के लिए घातक विष है। इस मनोवृत्ति को बदलना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इस समय देश को स्वार्थी और धन-लोलुप व्यक्तियो की नही, वरन् ं भाव से कार्य करने वालो की आवश्यकता है। डा० राधाकृष्णनन् ने ठीक लिखा है :—"भारत माता आपसे आशा करती है कि आपका जीवन शुद्ध, श्रेष्ठ नि.स्वार्थ कार्य के लिये अर्पित हो।"

'Mother India expects of you that your lives should be clear, noble and dedicated to selfless work'—**Dr. S. Radhakrishnan** : *Occasional Speeches & Writings*, Vol I, p 55.

५. जन-शिक्षा की व्यवस्था

Provision for the Education of the Masses

'शिक्षा' जनतंत्र का आधार है। शिक्षित व्यक्ति ही अपने कर्त्तव्यों और अधिकारों को समझ सकता है उचित प्रकार के प्रतिनिधियों को चुनकर व्यवस्थापिकाओं मे भेज सकता है, समाज की समस्याओं का समाधान कर सकता है और देश की प्रगति में योग दे सकता है। आज भारत को स्वतन्त्र हुए लगभग २० वर्ष हो चुके हैं, पर जनता को शिक्षित करने की व्यवस्था नहीं की जा सकी है। इसका सबूत जैसा कि हमें हाल की जन-गणना की रिपोर्ट से मालूम होता है, यह है कि आज भी हमारे देश में ७६ ३ प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं। क्या जिस देश मे व्यक्ति इतनी विशाल संख्या मे बे पढ़े-लिखे हैं, उसका भविष्य उज्ज्वल है ? क्या उसमे जनतन्त्र सफलता पूर्वक कार्य कर सकता है ? क्या उसमे समाजवादी समाज की स्थापना हो सकती है ? हमे इन प्रश्नों का उत्तर केवल 'न' मे मिलता है। अत. शिक्षा का परम उद्देश्य यह है कि घर-घर और जन-जन मे ज्ञान का प्रकाश फैलाये। स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही लिखा है :—"मेरे विचार से जनता की अवहेलना महान् राष्ट्रीय पाप है। कोई भी राजनीति उस समय तक सफल नहीं होगी, जब तक कि भारत की जनता एक बार फिर अच्छी प्रकार से शिक्षित न हो जायगी। यदि हम भारत का पुनः-उत्थान करना चाहते हैं, तो हमे जनता के लिये कार्य करना होगा।"

"I consider that the great national sin is the neglect of the masses. No amount of politics would be of any avail until the masses in India are once more well-educated. If we want to regenerate India, we must work for them."—**Swami Vivekananda**. *Works*, Vol. V, p. 152.

६. नेतृत्व के गुणों का विकास

Development of the Qualities of Leadership

लोकतन्त्र का अर्थ है—"सब से बुद्धिमान निर्वाचित नागरिकों के नेतृत्व में सब की प्रगति।" (The progress of all under the leadership of the wisest elected citizens.) अतः शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य—व्यक्तियों मे नेतृत्व के गुणों का विकास करना है। क्योंकि आज के युवक भावी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व करेंगे, इसलिए शिक्षा का विशेष उद्देश्य उनको सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक या सांस्कृतिक क्षेत्रों मे नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित करना होना चाहिए। इस कार्य में सफलता पाने के लिए भारत के प्रत्येक व्यक्ति में न्याय, साहस, अनुशासन

आत्मा से सम्बन्ध रखने वाली आवश्यकताओं की पूर्ति समाज के अन्य सदस्यों के की जाती है। अत यह आवश्यक है कि व्यक्ति सब के साथ मिलकर समाज के जी को नैतिक और भौतिक दृष्टिकोण से अधिक अच्छा बनाने का उत्तरदायित्व ले। तभी सम्भव हो सकता है जब व्यक्ति मे इस प्रकार की भावना का समावेश कर शिक्षा अपना उद्देश्य बनाये। इस भावना का समावेश स्कूलो को सामुदायिक जीव की इकाइयाँ बनाकर किया जा सकता है। डा० जाकिर हुसेन का कथन है— "सामुदायिक उत्तरदायित्व को शिक्षा देने के लिए स्वय शिक्षा-सस्थाओं को सामुदायिक जीवन की इकाइयो के रूप मे संगठित किया जाना चाहिए। समाज में सेवा करके ही व्यक्ति सेवा करना सीखता है। जब तक यह सिद्धान्त हमारी शिक्षा-संस्थाओं का प्राण नहीं बनेगा, तब तक शिक्षा के अन्य सभी सुधार जोड़-गाँठ के काम होंगे।"

"In order to educate for social responsibility, the institutions should themselves be organised as units of community living One learns to serve by serving in society Unless this principle becomes the life-breath of our educational institutions, all other reforms will be just patchwork." —**Dr. Zakir Husain :** *Sardar Vallabhbhai Patel Memorial Lectures*, (Fourth Series), pp. 46–47

४. नि स्वार्थ कार्य की भावना का समावेश

Inculcation of the Spirit of Selfless Work

आज के भौतिकवादी युग मे स्वार्थ की भावना बहुत प्रबल हो गई है। हमारे मिलने-जुलने मे, हमारे हर कार्य मे, हमारी हर बात मे कोई-न-कोई स्वार्थ अवश्य होता है। हम स्वार्थ की तराजू मे अपने को और दूसरो को तोलते हैं। यदि किसी व्यक्ति से हमारे स्वार्थ की सिद्धि होती है, तो हम उसे अपना सब-कुछ बना लेते हैं, उसके लिये कुछ कर सकते हैं। पर जब उससे हमारा स्वार्थ पूर्ण हो जाता है और भविष्य मे हमे उससे कोई आशा नहीं रहती है, तो हम उसे पहिचानना भी बन्द कर देते हैं। इसी स्वार्थ के वशीभूत होकर कितने ही भारतीयो ने चीन और पाकिस्तान से युद्ध के समय अपने देश का ध्यान न रखकर उनकी गुप्त रूप से सहायता की। ऐसे भारतीय देश के लिए कलक हैं, अभिशाप हैं। सारांश मे, छोटी और बड़ी सभी बातो मे हम पहले अपने स्वार्थ की ओर देखते हैं। हमारी यह मनोवृत्ति हमारे समाज, देश और राष्ट्र के लिए घातक विष है। इस मनोवृत्ति को बदलना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। इस समय देश को स्वार्थी और धन-लोलुप व्यक्तियो की नहीं, वरन नि.स्वार्थ भाव से कार्य करने वालों की आवश्यकता है। डा० राधाकृष्णनन् ने ठीक ही लिखा है.—"भारत माता आपसे आशा करती है कि आपका जीवन शुद्ध, श्रेष्ठ और नि:स्वार्थ कार्य के लिये अर्पित हो।"

'Mother India expects of you that your lives should be clean, noble and dedicated to selfless work.—Dr. S. Radhakrishnan : *Occasional Speeches & Writings*, Vol I, p 55.

५ जन-शिक्षा की व्यवस्था

Provision for the Education of the Masses

'शिक्षा' जनतन्त्र का आधार है। शिक्षित व्यक्ति ही अपने कर्त्तव्यों और अधिकारों को समझ सकता है उचित प्रकार के प्रतिनिधियों को चुनकर व्यवस्थापिकाओं में भेज सकता है, समाज की समस्याओं का समाधान कर सकता है और देश की प्रगति में योग दे सकता है। आज भारत को स्वतन्त्र हुए लगभग २० वर्ष हो चुके हैं, पर जनता को शिक्षित करने की व्यवस्था नहीं की जा सकी है। इसका सबूत जैसा कि हमें *हाल की जन-गणना की रिपोर्ट से मालूम होता है, यह है कि आज भी हमारे* देश में ७६ ३ प्रतिशत व्यक्ति निरक्षर हैं। क्या जिस देश में व्यक्ति इतनी विशाल सख्या में बे पढ़े-लिखे हैं, उसका भविष्य उज्ज्वल है ? क्या उसमें जनतन्त्र सफलता पूर्वक कार्य कर सकता है ? क्या उसमें समाजवादी समाज की स्थापना हो सकती है ? हमें इन प्रश्नों का उत्तर केवल 'न' में मिलता है। अत शिक्षा का परम उद्देश्य यह है कि घर-घर और जन-जन में ज्ञान का प्रकाश फैलाये। स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही लिखा है — "मेरे विचार से जनता की अवहेलना महान् राष्ट्रीय पाप है। कोई भी राजनीति उस समय तक सफल नहीं होगी, जब तक कि भारत की जनता एक बार फिर अच्छी प्रकार से शिक्षित न हो जायगी। यदि हम भारत का पुनः-उत्थान करना चाहते हैं, तो हमें जनता के लिये कार्य करना होगा।"

"I consider that the great national sin is the neglect of the masses. No amount of politics would be of any avail until the masses in India are once more well-educated. If we want to regenerate India, we must work for them."—Swami Vivekananda : *Works*, Vol. V, p. 152.

६ नेतृत्व के गुणों का विकास

Development of the Qualities of Leadership

लोकतन्त्र का अर्थ है—"सब से बुद्धिमान निर्वाचित नागरिकों के नेतृत्व में सब की प्रगति।" (The progress of all under the leadership of the wisest elected citizens.) अत. शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य—व्यक्तियों में नेतृत्व के गुणों का विकास करना है। क्योंकि आज के युवक भावी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व करेंगे, इसलिए शिक्षा का विशेष उद्देश्य उनको सामाजिक, राजनैतिक, औद्योगिक या सांस्कृतिक क्षेत्रों में नेतृत्व के लिए प्रशिक्षित करना होना चाहिए। इस कार्य में सफलता पाने के लिए भारत के प्रत्येक व्यक्ति में न्याय, साहस, अनुशासन

Emotional integration means bringing together the bits and parts of the nation into a whole emotionally.

भावात्मक एकता उन सब मूल्यों की भावात्मक चेतना है, जिन्हें हम राष्ट्र के रूप में सामान्य मानते हैं। यह उन मूल्यों के प्रति भावनाओं का विकास है। यह उस परिवर्तन की ओर संकेत करती है, जो व्यक्तियों के रूप में हम अपने अन्दर होने का अनुभव करते हैं।

अपने पूर्ण रूप में भावात्मक एकता समान रूप से सोचने, समझने और कार्य करने, समान जीवन के ढंग को स्वीकार करने, विभिन्न उद्दीपकों (Stimuli) के प्रति समान रुचि या अरुचि से प्रतिक्रिया करने, विभिन्न धर्मों में समान आधार खोजने, समान सार्वजनिक परम्पराओं को अपनाने और एकता के चिह्न के रूप में समान भाषा को स्वीकार करने की प्रशिक्षित आदत है।

आज के भारत में आन्तरिक संघर्ष को समाप्त करने के लिए भावात्मक एकता की अत्यधिक आवश्यकता है। इस दिशा में शिक्षा अति महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। शिक्षा के द्वारा ही समाज भावी पीढ़ियों को उन कुशलताओं, अभिरुचियों और दृष्टिकोणों को हस्तान्तरित करता है, जिनसे समाज की रक्षा होती है। ड्यूवी का कथन है—"जो कार्य शरीर के लिए भोजन और प्रजनन करते हैं, वही कार्य सामाजिक जीवन के लिए शिक्षा करती है।"

"What nutrition and reproduction are to physiological life, education is to social life."—*John Dewey.*

'समाज' शिक्षा और विद्यालयों की व्यवस्था करता है। इनके द्वारा वह अपने सदस्यों में उन कुशलताओं, विश्वासों, अभिरुचियों आदि का प्रसार करता है, जो उसके जीवन की रक्षा के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार शिक्षा समाज की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। भारतीय समाज के अपने रीति-रिवाज और परम्परायें हैं। इन्हीं ने उसकी संस्कृति का निर्माण किया है और उसे अब तक बनाये रखा है। इनके लिए शिक्षा द्वारा ही आदर की भावना उत्पन्न की जा सकती है, जिसके फलस्वरूप भावात्मक एकता का कार्य बड़ी सरलता से पूर्ण किया जा सकता है।

अतः शिक्षा के सभी स्तरों पर भारतीय समाज की परम्पराओं और संस्कृति का ज्ञान दिया जाना चाहिए। तभी हमारे छात्रों में समान रूप से विचार करने की आदत का निर्माण होगा और वे शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

९. अन्तरसांस्कृतिक भावना का विकास
Development of Inter-Cultural Understanding

भारत में अति प्राचीन काल से विभिन्न सांस्कृतिक धारायें बहती रही हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति विश्व के अन्य देशों की संस्कृतियों के समान नहीं है। ऐसी परिस्थिति में भारत के विभिन्न भागों और विश्व की संस्कृतियों को समझना

और उनका आदर करना सरल कार्य नहीं है। अतः यह आवश्यक है कि हमारी लोकतन्त्रीय शिक्षा इस ओर विशेष ध्यान दे। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं :—

१. उच्च शिक्षा की संस्थायें ऐसे पाठ्य-क्रम बनायें, जिनके द्वारा मनुष्यों और स्त्रियों को इस देश के विभिन्न भागों और विश्व की विभिन्न संस्कृतियों की शिक्षा दी जाय।
२. भारतीय और विश्व-इतिहास का विशेष रूप से अध्ययन किया जाय।
३. भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा सांस्कृतिक गोष्ठियों का आयोजन किया जाय।
४. विभिन्न भारतीय राज्यों और देशों के विश्वविद्यालयों के शिक्षकों में परस्पर ज्ञान का आदान-प्रदान किया जाय।
५. सामाजिक विज्ञानों में भ्रमणकारी अध्यापक-संस्था (Institution of Roving Professorship) की स्थापना की जाय।
६. इसके प्राध्यापक भारतीय राज्यों और अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में समय-समय पर जाकर अपने भाषणों द्वारा वहाँ के व्यक्तियों को भारतीय संस्कृति का ज्ञान दें।
७. सांस्कृतिक मण्डलों, गायकों, नृत्यकारों, कलाकारों और लेखकों का आदान-प्रदान किया जाय।

१०. अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान की वृद्धि

Promotion of International Understanding

जवाहरलाल नेहरू का कथन है—"प्राचीन संसार बदल गया है और प्राचीन बाधायें समाप्त होती जा रही हैं; जीवन अधिक अन्तर्राष्ट्रीय होता जा रहा है। हमें आने वाली अन्तर्राष्ट्रीयता में अपना पार्ट अदा करना है। इस कार्य के लिए संसार से सम्पर्क आवश्यक है।"

"The old world has changed and the old barriers are breaking down, life is becoming more international. We have to play our part in the coming internationalism, and for this purpose, contact with the world is essential."—*Jawaharlal Nehru.*

जिस सम्पर्क की ओर नेहरू ने संकेत किया है वह आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य है। हमें प्रगतिशील देशों की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक और व्यापारिक पद्धतियों का अध्ययन इसलिए करना है कि हम उनमें से लाभप्रद को अपना सकें। हमें समान कार्यों के लिए ज्ञान, मित्रता और सहयोग की खोज करनी है। हम आधुनिक संसार में, जिसे विज्ञान ने एक इकाई बना दिया है, इन बातों से दूर नहीं रह सकते हैं। आज का संसार विश्वबन्धुत्व की ओर बढ़ रहा है। अतः संसार से पृथक् रहकर

हम समय के साथ अपने कदम नही मिला सकते हैं। हमें दूसरे देशो से सम्बन्ध स्थापित करना पड़ेगा। हमे उनकी सस्थाओ और पद्धतियो को समझना पड़ेगा, उन्हें अपनी सस्थाओ और पद्धतियो के बारे मे बताना पड़ेगा। इसके लिए हमें शिक्षा का सहारा लेना होगा। दूसरे शब्दो मे, शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य—अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान की वृद्धि करना है।

उपसंहार

अन्त मे, हम हुमायूं कबीर के शब्दो मे कह सकते हैं—"भारत मे शिक्षा के द्वारा लोकतन्त्रीय चेतना, वैज्ञानिक खोज और दार्शनिक सहिष्णुता का निर्माण किया जाना चाहिए। केवल तभी हम उन परम्पराओ के उचित उत्तराधिकारी होगे, जिनका निर्माण इस देश मे अतीत मे हुआ है। केवल तभी हम उस आधुनिक विरासत मे अपना भाग पाने के अधिकारी होगे, जो विश्व के समस्त राष्ट्रो की विरासतों को एक करने का प्रयत्न करती है।"[1]

"Education in India must create the spirit of democracy, scientific enquiry and philosophic toleration Thus alone can we be the rightful inheritors of the glorious traditions which have been left in this country in the past. Thus alone can we claim to take our share in the modern heritage which seeks to combine the contributions of peoples throughout the world."—*Humayun Kabir.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What, in your opinion, should be the educational aims of democratic India ?
२. Taking into cosideration the present social conditions in India what aims of education will you formulate for the country ?
3. State critically the aims of education in modern India.
4. Why is education for citizenship necessary in democracy ? What qualities should this education develop in a citizen and why ?
5. How can education help in . (a) Emotional intergation, and (b) Inter-cultural understanding ?

खण्ड तीन

- राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा
  Education for National Integration
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा
  Education for International Understanding
- स्वतन्त्रता और अनुशासन
  Freedom and Discipline

१३

राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा

EDUCATION FOR NATIONAL INTEGRATION

"यदि शान्त अहिंसात्मक क्रान्ति राष्ट्रीय एकता के आदर्श विकास के लिये उत्तम दशाओं का निर्माण नहीं कर सकती है, तो राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये 'दबाव' और 'बल-प्रयोग'—अपने-आप दो अन्य उपाय हो जायेंगे। पर भारतीय राष्ट्र का आधार अहिंसा है। हमारी राष्ट्रीय एकता का लक्ष्य अहिंसात्मक दृष्टिकोण पर आधारित केवल—प्रेम, सहानुभूति और भ्रातृ-भाव के लगातार प्रयोग से प्राप्त किया जा सकता है।"

"If silent non-violent revolution cannot create healthy condition for the ideal growth of national integration, pressure and coercion will automatically become the only two alternatives to attain national ends. But Indian nation-hood has non-violent as its anchor The goal of our national integration can be arrived at only through a sustained application of love, sympathy, and fellow-feeling on a plane of non-violent outlook"

—*Jawaharlal Nehru.*

विषय-प्रवेश

आज का युग राष्ट्रीयता का युग है। सभी देश अपने निवासियों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने में जुटे हुए हैं। सही या गलत, उनका विचार यह है कि इस भावना को विकसित करके ही वे या तो अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त कर सकते हैं या उसको बनाये रख सकते हैं। इसीलिये आज संसार के सभी देशों में राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा है।

राष्ट्रीयता का अर्थ
Meaning of Nationalism

विभिन्न विद्वानों द्वारा 'राष्ट्रीयता' की व्याख्या विभिन्न प्रकार से की गई है। कुछ इसको मन की एक स्थिति और आत्मा की एक सम्पत्ति मानते हैं। दूसरे इसको भावना की पद्धति और विचार तथा जीवन मानते हैं। इसकी सबसे उत्तम व्याख्या ब्रूबेकर के द्वारा की गई है, जिसने लिखा है —"राष्ट्रीयता शब्द की प्रसिद्धि पुनर्जागरण और विशेष रूप से फ्रांस की क्रान्ति के बाद हुई है। यह साधारण रूप से देश-प्रेम की अपेक्षा देश-भक्ति के अधिक व्यापक क्षेत्र की ओर संकेत करती है। राष्ट्रीयता में स्थान के सम्बन्ध के अलावा प्रजाति, भाषा, इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं के भी सम्बन्ध आ जाते हैं।"

"Nationalism is a term that has come into prominence since the Renaissance and particularly since the French Revolution. It ordinarily indicates a wider scope of loyalty than patriotism. In addition to ties of place, Nationalism is evidenced by such other ties as race, language, history, culture and tradition."—**J. S. Brubacher** : *A History of the Problems of Education*, p 52.

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर हम राष्ट्रीयता के अर्थ को स्पष्ट कर सकते हैं। राष्ट्रीयता की भावना में देश-प्रेम और देश-भक्ति के तत्त्व निहित होते हैं, जो एक देश के निवासियों को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास करते हैं। इन तत्त्वों के अतिरिक्त प्रजाति, भाषा, इतिहास, संस्कृति और परम्पराओं का भी यही ध्येय होता है। ये सब तत्त्व मिलकर राष्ट्रीयता की भावना का निर्माण करते हैं। इस भावना से भर जाने पर व्यक्ति अपने हित का ध्यान न रखकर अपने समाज और देश के हित का ही ध्यान रखता है।

राष्ट्रीयता के आधार
Bases of Nationalism

राष्ट्रीयता के विकास में अनेकों तत्त्व सहायता देते हैं। इनमें से प्रमुख निम्नांकित हैं :—

१. प्रजातीय एकता : Racial Unity

राष्ट्रीयता के विकास में प्रजातीय एकता का विशेष स्थान है। एक प्रजाति के लोगों में रुधिर का सम्बन्ध होता है, जिससे उनमें परस्पर प्रेम और एकता की भावना होती है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि एक देश में एक ही प्रजाति के लोग नहीं हैं, तो उनमें एकता का अभाव होता है। उदाहरणार्थ—स्विट्ज़रलैंड,

बेलजियम और भारत में विभिन्न प्रजातियों के लोग हैं। फिर भी यहाँ के निवासी राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बँधे हुए हैं।

२. भाषा की एकता : Linguistic Unity

राष्ट्रीयता के विकास के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व भाषा की एकता है। यदि एक देश के सब निवासियों को एक ही भाषा है, तो वे एक-दूसरे के निकट होते हैं, उनमे अपनापन होता है। राष्ट्रीयता मे भाषा का कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है, इस पर प्रकाश डालते हुए जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है—"भाषा व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन मे महत्त्वपूर्ण है और रही है, और क्योंकि यह महत्त्वपूर्ण है, इसलिये हमें इसके बारे में हर तरह से सोचना और समझना चाहिये।"

"Language is and has been vital in an individual's and a nation's life; and *because it is vital, we have to give it every thought* and consideration."—*Jawaharlal Nehru*

इस प्रकार यद्यपि राष्ट्रीयता के विकास मे भाषा का बहुत महत्त्व है, पर हमे ऐसे अनेको राष्ट्र मिलते हैं, जिनमे विभिन्न भाषाएं बोलने वाले व्यक्ति रहते हैं। इन देशो मे भाषाओ की विभिन्नतायें होते हुए राष्ट्रीयता की भावना का अभाव नही है।

३. धार्मिक एकता : Religious Unity

प्रजातीय और भाषा की एकता के समान धार्मिक एकता भी राष्ट्रीयता के विकास मे सहायता देती है। उदाहरणार्थ—इज़रायल और पाकिस्तान के निवासियो को एकता के सूत्र मे बाँधने मे धर्म का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। पर ऐसा नहीं है कि यदि धार्मिक एकता न हो, तो राष्ट्रीय एकता भी न हो। रूस और भारत मे विभिन्न धर्मावलम्बियो के बावजूद भी राष्ट्रीयता की भावना है।

४. भौगोलिक तत्त्व : Geographical Factors

राष्ट्रीयता का विकास करने मे भौगोलिक तत्त्वो का स्थान कुछ कम महत्त्व-पूर्ण नहीं है। जो देश भौगोलिक सीमाओ के कारण दूसरे देशो से अलग होते हैं, उनके निवासियो मे एक-दूसरे के लिए प्रेम की भावना दिखाई देती है। उदाहरणार्थ—विभाजन से पहले भारत अपनी प्राकृतिक सीमाओ के कारण दूसरे देशो से अलग था। इस प्रकार की प्राकृतिक सीमायें सभी राष्ट्रो को प्राप्त नही हैं। यह बात उल्लेखनीय है कि यदि प्राकृतिक सीमायें राष्ट्र के निर्माण मे सहायता दे सकती है, तो वे उसकी एकता मे बाधा भी उपस्थित कर सकती हैं।

५ अन्य तत्त्व : Other Factors

ऊपर के तत्त्वो के अलावा कुछ तत्त्व और हैं, जो राष्ट्रीयता के विकास मे सहयोग देते हैं। ये तत्त्व अप्रत्यक्ष या अचेतन रूप से कार्य करते हैं। ये अन्य तत्त्व

है—परम्परा में, रीति-रिवाज, संस्कृति, पूर्वजों का आदर, आदि। इनका उल्लेख हमें समाज विज्ञानों के विश्व कोश में इस प्रकार मिलता है :—"पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, पारिवारिक संस्था के प्रति आदर, राष्ट्रीय वीरों और विशेष रूप से राष्ट्रीय शहीदों के प्रति सम्मान, राष्ट्र के लिये आत्म बलिदान की तत्परता और परम्परावाद—ये सब ऐसे गुण को व्यक्त करते हैं, जो नैतिक और धार्मिक—दोनों है। यह गुण रा लक्ष्य का सही विचार है।"

"Ancestral reverence, the respect for the institution family, the adoration of national heroes and particularly national martyrs, the readiness to self-sacrification for the nati the traditionalism—all these are manifestations of an attrib which is both ethical and religious This is equally true of the u of a national mission "—*Encyclopaedia of the Social Scienc Vol. XII, p. 237*

राष्ट्रीयता और शिक्षा
Nationalism and Education

किसी देश की प्रगति और उत्थान के लिए वहाँ के निवासियों में राष्ट्री की भावना का होना बहुत आवश्यक है। यह भावना उन देशों के लिए विशेष रूप आवश्यक है, जो पिछड़े हुए हैं या दास हैं या जिनमें अनेकों धर्म, भाषायें व जातियाँ हैं। ऐसे देशों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए राष्ट्रीय भावना ब आवश्यक है। इस भावना को विकसित करने में शिक्षा महत्त्वपूर्ण सहयोग देती है बच्चों में प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय चेतना की उत्पत्ति के लिए प्रयत्न किया जा सक है। बच्चों में इस चेतना का विकास करने के लिये परिवार, स्कूल और समाज स्थान महत्वपूर्ण है। इन सब में स्कूल का स्थान अधिक ऊँचा है।

शिक्षा एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा समाज या देश में राष्ट्रीय चेत का विकास करके उसको बदला जा सकता है। प्राचीन समय में स्पार्टा की शिक्ष प्रमुख उदाहरण है। आधुनिक युग में नाजी जर्मनी और फासिस्ट इटली में शिक्षा माध्यम से वहाँ के युवकों को राष्ट्रीयता की भावना से सराबोर कर दिया गया था आज भी रूस में बालकों को प्रारम्भिक कक्षाओं से लेकर अन्तिम कक्षाओं तक इ प्रकार की शिक्षा दी जाती है कि उनमें पूर्ण रूप से साम्यवादी भावना का समावे हो जाता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि तानाशाही, साम्यवादी, समाजवादी और प्रजा तन्त्रीय व्यवस्था को दृढ़ बनाये रखने के लिये वहाँ के निवासियों में राष्ट्रीयत की भावना उत्पन्न करना अति आवश्यक है। इस दिशा में शिक्षा का कार्य अ महत्त्वपूर्ण है। यदि देश में विभिन्न भाषा-भाषी व्यक्ति होते हैं, तो उनको एक-दूसर

के पास लाने के लिये बहुसंख्या द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राष्ट्र-भाषा बनाया जाता है। भारत में हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाना इसका उदाहरण है। राष्ट्र-भाषा का अध्ययन सब के लिए अनिवार्य कर दिया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि विभिन्न भाषायें बोलने वाले व्यक्ति एक-दूसरे के भावों और विचारों को समझ सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं के साथ-साथ राष्ट्र-भाषा की शिक्षा की व्यवस्था की जाय।

राष्ट्रीयता की शिक्षा की आलोचना

Criticism of Education for Nationalism

राष्ट्रीयता के लिए दी जाने वाली शिक्षा मे गुण भी हैं और अवगुण भी। हम इन पर नीचे प्रकाश डाल रहे हैं :—

(अ) गुण : Merits

१. राष्ट्रीयता की शिक्षा बालकों मे देश-प्रेम की भावना उत्पन्न करती है। देश-प्रेम के कारण व्यक्ति अपने हित का ध्यान न रखकर राष्ट्र के हित की ओर ध्यान देता है। इतना ही नहीं, वह राष्ट्र के लिये हर प्रकार का बलिदान करने के लिए तैयार रहता है।

२. राष्ट्रीयता की शिक्षा विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के लोगों मे पारस्परिक सहिष्णुता की भावना को जन्म देती है।

३. राष्ट्रीयता की शिक्षा राष्ट्र के निवासियों को बाह्य बन्धन से मुक्त होने और रहने की प्रेरणा देती है।

४. राष्ट्रीयता की शिक्षा राष्ट्र के निवासियों मे उन्नति करने की भावना को जाग्रत करती।

५. राष्ट्रीयता की शिक्षा देश-भक्ति से ओत-प्रोत साहित्य का सृजन करती है और राष्ट्रीय संस्कृति के विकास मे योग देती है।

(ब) दोष : Demerits

१. अपने देश के प्रति प्रेम की भावना—दूसरे देशों के प्रति घृणा उत्पन्न करती है। अतः संकुचित राष्ट्रीयता की भावना युद्ध का कारण बनती है। द्वितीय विश्व-युद्ध का एक कारण यह भी था। जर्मनी के लोग राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर अन्य देशों के निवासियों को अपने से तुच्छ समझने लगे थे।

२. जो राष्ट्र संकुचित राष्ट्रीयता की भावना से प्रेरित होकर उन्नति करना चाहता है, वह अन्य राष्ट्रों के हितों की चिन्ता नहीं करता है। चीन और पाकिस्तान इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

3. जो देश राष्ट्रीयता की विचारधारा में विश्वास रखता है, वह अपने राजनीतिक उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उसका अनुचित प्रयोग कर सकता है। आजकल के साम्यवादी देशों में यही किया जा रहा है।
4. संकुचित राष्ट्रीयता की भावना अन्तर्राष्ट्रीय विचारधारा के प्रतिकूल है और मानव-हित के लिए घातक है।
5. संकुचित राष्ट्रीयता की भावना विभिन्न देशों के पारस्परिक सम्बन्धों को अच्छा नहीं बनने देती है। इसके फलस्वरूप विश्व की शान्ति सदैव खतरे में रहती है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीयता के गुण-दोष के विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि शुद्ध राष्ट्रीयता की भावना बहुत अच्छी चीज है पर जब इसका रूप संकुचित हो जाता है, तब इससे हानि के अलावा लाभ की आशा करना व्यर्थ है। संकुचित राष्ट्रीयता अन्य राष्ट्रों और मानव-हितों की अवहेलना करती है। इस प्रकार की भावना संसार को सुख और शान्ति की सांस नहीं लेने देती। अतः यह आवश्यक है कि सभी राष्ट्रों द्वारा शुद्ध राष्ट्रीयता की भावना को अपनाया जाय, उसके संकुचित रूप को नहीं। जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही लिखा है—"राष्ट्रीयता एक ऐसा विचित्र तत्व है, जो एक देश के इतिहास में जहाँ जीवन, विकास, शक्ति और एकता का संचार करता है, वहाँ संकुचित भी बनाता है; क्योंकि इसके कारण एक व्यक्ति अपने देश के बारे में संसार के अन्य देशों से पृथक् रूप में सोचता है।"

"Nationalism is a curious phenomenon, which at a certain stage in a country's history, gives life, growth, strength and unity but at the same time it has a tendency to limit one, because one thinks of one's country as something different from the rest of the world."—*Jawaharlal Nehru.*

भारतीय एकता का आधार

Basis of Indian Unity

भारतवर्ष विभिन्नताओं का देश है। इसमे अनेकों जातियाँ, उपजातियाँ, धर्म, भाषाएँ आदि पाई जाती है। पर कुछ विद्वानों का विचार है कि इन सब विभिन्नताओं के होते हुए भी भारत मे आधारभूत एकता है। इन विद्वानों में हरबर्ट रिजले (Herbert Risley) का नाम उल्लेखनीय है उसका मत है कि भारत मे भौगोलिक, सामाजिक, भाषा, परम्परा और धर्म सम्बन्धी विभिन्नताओं के होते हुए भी इसमे जीवन की एकता है। यह एकता भारतीय चरित्र और सामान्य व्यक्तित्व की है। इसका आधार—सांस्कृतिक एकता है। इसकी विभिन्न तत्वो मे विघटित नहीं किया

जा सकता है। प्राय: इसी प्रकार के विचार जदुनाथ सरकार (Jadu Nath Sarkar) ने व्यक्त किये हैं।

भारत में राष्ट्रीय एकता की समस्या

Problem of National Integration in India

यदि विभिन्नताओ के बावजूद भी हमारे देश मे सास्कृतिक एकता है, तो फिर राष्ट्रीय एकता की चर्चा चारो ओर क्यो सुनाई दे रही है ? हमारे राष्ट्र के कर्णधार इस समस्या का समाधान खोजने मे क्यो उलझे हुए हैं ? इसका उत्तर केवल यह है कि जिस एकता की ओर हमने सकेत किया है, उसका अब लोप हो चुका है। कारण यह है कि आज की भारतीय संस्कृति का रूप—प्राचीन रूप से बिल्कुल भिन्न हो गया है। प्राचीन समय मे हमारी संस्कृति मे अन्य संस्कृतियो को अपने मे मिला लेने का विलक्षण गुण था। पर आज हम अपने देश के विभिन्न भू-भागो के निवासियो के रीति-रिवाजो को भी मिलाने मे असमर्थ हैं।

इसके अतिरिक्त, हमारे समाज मे कुछ ऐसी विघटनकारी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो गई हैं कि यदि उन पर रोक नहीं लगाई गई, तो वे राष्ट्र और प्रजातन्त्र—दोनो के लिए घातक सिद्ध हो सकती हैं। इन विघटनकारी प्रवृत्तियों से होने वाली हानि का वर्णन करते हुए डा० सम्पूर्णानन्द ने लिखा है—"देश मे एकता है और यह एकीकृत रहेगा भी, चाहे इसके निवासियों में कितनी ही विभिन्नताएं क्यों न पाई जायें। पर आज राष्ट्रीय और भावात्मक एकता के लिए जो माँग की गई है, वह उन विघटनकारी प्रवृत्तियों को दूर करने के लिए की गई है, जो देश की शक्ति को निर्बल बनाना चाहती हैं।"

"There is unity in the country and it will remain united howsoever great may be the diversities in its inhabitants. But the demand made to-day for national and emotional integration is to do away with those fissiparous tendencies which want to sap the strength of the country"—*Dr Sampurnanand*.

राष्ट्रीय एकता में बाधाएँ

Obstacles to National Integration

भारत की राष्ट्रीय एकता के विकास मे निम्नांकित बातें बाधाएँ उपस्थित कर रही हैं —

१. जातिवाद : Casteism

'जातिवाद' राष्ट्रीय एकता के विकास मे बहुत बड़ी बाधा है। इस पर प्रकाश डालते हुए प्रो० एन० घुरे ने लिखा है—"यह जाति-प्रेम की भावना ही है, जो अन्य

जातियों में कटुता उत्पन्न करती है और राष्ट्रीय चेतना के विकास के लिए अनुपयुक्त वातावरण तैयार करती है।"

"It is feeling of love of caste that produces bitterness among other castes and creates an undesirable environment for the growth of national consciousness."—*G. S. Ghurye.*

सत्य यह है कि जातिवाद और राष्ट्रीय एकता एक-दूसरे के बिल्कुल विरोधी हैं। राष्ट्रीय एकता का विकास तभी सम्भव हो सकता है, जब राष्ट्र के समस्त निवासी अपने को एक-दूसरे के समान समझें और उनमें ऊँच-नीच की भावना न हो। जातिवाद मनुष्यों को ऐसा करने से रोकता है। जब व्यक्तियों में स्वयं ऊँच-नीच की भावना है तब उनमें समानता की भावना किस प्रकार आ सकती है। प्रत्येक जाति के सदस्यों में अपनी ही जाति का हित सर्वोपरि होता है। इस हित के लिए वे राष्ट्र के हित का बलिदान कर सकते हैं। ऐसी दशा में व्यक्तियों में राष्ट्र-हित और राष्ट्र-प्रेम की बात की कल्पना करना मूर्खता है। जातिवाद ने व्यक्तियों में स्वार्थ और पृथकता की भावना इतनी कूट-कूटकर भर दी है कि वे अपने संकुचित दृष्टिकोण का परित्याग करके राष्ट्र-हित के व्यापक दृष्टिकोण को नहीं अपना सकते हैं।

२. साम्प्रदायिकता : Communalism

राष्ट्रीय एकता के विकास में दूसरी बाधा 'साम्प्रदायिकता' है। भारत में दो मुख्य सम्प्रदाय हैं—हिन्दू और मुस्लिम। इनमें से हिन्दू अनेकों सम्प्रदायों में बंटे हैं। सभी सम्प्रदाय अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानते हैं और उनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं। फलस्वरूप सभी सम्प्रदायों में एक-दूसरे के प्रति द्वेष और कटुता पाई जाती है। इसके कारण देश की एकता को महान् क्षति पहुँच रही है।

इसमें भी अधिक क्षति हिन्दुओं और मुसलमानों के पारस्परिक वैमनस्य के कारण हो रही है। डा० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव का कथन है—"आज एकता की मुख्य समस्या मुस्लिमों और गैर-मुस्लिमों के बीच उपयुक्त सम्बन्धों की स्थापना की है।"

"To-day the main problem of unity is the adjustment of Proper relationship between the Muslims and Non-Muslims."

—*Ashirvadi Lal Srivastava*

३. प्रान्तीयता : Provincialism

देश की एकता में प्रान्तीयता एक बहुत बड़ी बाधा है। यह सत्य है कि व्यक्ति को अपने जन्म-स्थान से प्रेम होता है। पर इस प्रेम का रूप इतना प्रबल नहीं होना चाहिए कि वह अपने स्थान या प्रान्त को सबसे श्रेष्ठ मानने लगे और अन्य प्रान्तों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद 'राज्य पुनर्गठन आयोग' ने जनता की सुख, समृद्धि और प्रगति को ध्यान मे रखकर देश को १४ राज्यों को विभाजित किया। पर आज इन राज्यो ने प्रान्तीयता का विकराल रूप धारण कर लिया है। प्रत्येक राज्य के व्यक्ति केन्द्रीय सरकार पर अपना अधिकार चाहते हैं, जिससे कि देश का शासन और उसकी नीति का निर्माण उन्हीं की इच्छा के अनुसार हो। यद्यपि आयोग ने प्रमुखत. भाषा के आधार पर राज्यो का पुनर्गठन किया था, फिर भी अभी तक इस आधार पर नये राज्यो के निर्माण की माँग का अन्त नही हुआ है। फलस्वरूप राज्यों के पारस्परिक वैमनस्य मे वृद्धि हो रही है, जिससे देश की एकता पर कुठाराघात हो रहा है।

४. राजनैतिक दलदल : Political Morass

लोकतन्त्र की सफलता के लिए राजनैतिक दलों का होना आवश्यक है; क्योंकि इनके द्वारा ही जनता मे राजनैतिक चेतना और जनमत का निर्माण किया जाता है। इन दलो का संगठन मुख्यत राजनैतिक विचाराधाराओ के आधार पर किया जाता है। हमारे देश मे न तो इनका संगठन ही इस प्रकार किया जाता है, और न ये अपने दायित्वो को ही पूर्ण करते हैं। यहाँ के कुछ दलों का संगठन जाति, धर्म, सम्प्रदाय और क्षेत्र के आधारों पर किया जाता है और इन्हीं का सहारा लेकर वोट माँगी जाती है।

फलत भारत की राजनैतिक पार्टियाँ, राजनैतिक दल न रहकर, राजनैतिक दलदल बन गई हैं, क्योंकि इन्होने जनता को क्षेत्रीयता, जातीयता या सम्प्रदायिकता के दलदल मे फँसा दिया है। उदाहरणार्थ—द्रविड मुनत्र कागजम (D. M K) दल का यह नारा है कि 'दक्षिण क्षेत्र के निवासियो को उत्तरवासियो के आधिपत्य से मुक्ति दिलाई जाय।' अकाली दल पजाबी सूबे की माँग कर रहा है। इस प्रकार ये दल राष्ट्रीय एकता पर भीषण कुठाराघात कर रहे हैं।

५. भाषा-सम्बन्धी विरोध : Linguistic Antagonism

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय से ही भाषाओ के आधार पर राज्यो के पुनर्गठन पर जोर दिया जा रहा है। भाषा के नाम पर कितनी ही ऐसी घृणित घटनाएँ हुई हैं, जिनके कारण हमारा मस्तक लज्जा से झुक जाता है। इस संदर्भ मे आसाम, पजाब, आध्र और मद्रास मे होने वाली घटनाओ का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है।

ये घटनाएँ स्पष्ट रूप से देश-प्रेम और राष्ट्रीय एकता को निर्बल बनाती हैं। हम यह भूल जाते हैं कि आज के सघर्षपूर्ण युग में हम आगे तभी बढ़ सकते हैं, जब हमारी एक भाषा हो, क्योंकि इसी के माध्यम से देश के सब व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान करके एक-दूसरे के निकट आ सकते हैं। अत: यदि हम राष्ट्र के रूप मे एक होना चाहते हैं, तो हमे भाषा-सम्बन्धी विरोध का अन्त करके सम्पूर्ण देश के लिये एक भाषा निश्चित करनी पड़ेगी।

बाधाओं को दूर करने के उपाय
Measures to Remove the Obstacles

राष्ट्रीय एकता के मार्ग से बाधाओं को दूर करने के लिए हमारी सरकार और कांग्रेस—दोनों ही प्रयत्नशील हैं। उनके प्रयास के फलस्वरूप ही 'राष्ट्रीय एकता समिति' (National Integration Committee) की स्थापना हुई और कांग्रेस के भावनगर अधिवेशन में 'राष्ट्रीय एकता-सम्मेलन' (National Integration Conference) बुलाया गया। इनके अतिरिक्त, देश के विभिन्न भागों में विचार-गोष्ठियों और अध्ययन-गोष्ठियों का आयोजन हुआ है। हम यहाँ उपरोक्त समिति और सम्मेलन के सुझावों का विशेष रूप से अध्ययन करेंगे। यथा—

(अ) भावात्मक एकता समिति के सुझाव
Suggestions of Emotional Integration Committee

इस समिति के अध्यक्ष, डा० सम्पूर्णानन्द ने राष्ट्रीय एकता के मार्ग में आ वाली बाधाओं को स्पष्ट किया और उनको दूर करने के लिए कुछ उत्तम सुझा भी दिये। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय एकता की समस्या का कारण—जाति, भाषा सम्प्रदाय, आदि नहीं हैं। यह समस्या उन लोगों के कारण उत्पन्न हुई है, जो शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। इन स्वार्थ-लोलुप व्यक्तियों ने ही जाति, भाषा, धर्म आदि की आड़ में जनता की भावना को उत्तेजित करके अपने ध्येय को प्राप्त करने का प्रयत्न किया है।

अध्यक्ष ने इस बात पर खेद प्रकट किया कि लोग धैर्य-पूर्वक वास्तविकता पर विचार न करके अपनी भावनाओं के वशीभूत हो जाते हैं। उनके विचारानुसार राष्ट्रीय एकता को उत्पन्न करने में 'शिक्षा' अति महत्वपूर्ण कार्य कर सकती है। अतः उन्होंने अधोलिखित सुझाव दिये —

१. शिक्षा द्वारा बालकों में उचित अभिरुचियों, दृष्टिकोणों और संवेगों का विकास किया जाना चाहिए, जिससे वे अपनी सांस्कृतिक विरासत की विशेषताओं और परम्पराओं को समझ सकें।

२ उपरोक्त लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पाठ्य क्रम में इतिहास को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाय, क्योंकि राष्ट्रीय एकता के पाठ को सिखाने के लिए इतिहास का शिक्षण अनिवार्य है।

३ इतिहास-शिक्षण के लिए योग्य अध्यापकों की आवश्यकता है।

४. यह आवश्यक है कि शिक्षक मध्यकाल का इतिहास पढ़ाते समय उन समान सांस्कृतिक तत्वों पर बल दें, जिन्होंने हिन्दू और मुस्लिम संस्कृतियों के मिलाने में सहायता दी और जिनके कारण स्थापत्य, चित्रकला, साहित्य आदि के क्षेत्र में एकता आई।

५ राष्ट्रीय एकता के स्वप्न को साकार करने के लिए ऊपर लिखे अनुसार शीघ्रतातिशीघ्र शिक्षा की व्यवस्था की जाय।

(ब) राष्ट्रीय एकता सम्मेलन के सुझाव
Suggestions of National Integration Conference

राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ने पहले राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा के उद्देश्य बताये। उसके बाद उसने राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करने के लिए कुछ सुझाव दिये। हम इन पर अलग-अलग प्रकाश डाल रहे है। यथा—

(i) राष्ट्रीय एकता के लिए शिक्षा के उद्देश्य **Aims of Education for National Integration**—राष्ट्रीय एकता सम्मेलन ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताये :—

१ सभी छात्रो को देश के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान कराया जाय।
२. छात्रो को स्वतन्त्रता-प्राप्ति से सम्बन्धित बातो से विशेष रूप से परिचित कराया जाय।
३. राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए सभी जातियो, सम्प्रदायो और राज्यो मे अधिक मेल उत्पन्न करने वाली पढ़ाई-लिखाई को प्रोत्साहित किया जाय।

(ii) राष्ट्रीय एकता के लिए शैक्षिक कार्यक्रमो का सुझाव : **Suggestions for Educational Programmes for National Integration**—सम्मेलन ने उपरिलिखित शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए अधोलिखित सुझाव दिये :—

१. स्कूलो और कॉलिजो म पढ़ाई जाने वाली पाठ्य-पुस्तकों की जाँच की जाय।
२. पाठ्य-पुस्तकें इस प्रकार की हो, जिनसे राष्ट्रीय एकता के विकास मे सहायता मिले।
३. सभी जातियो और धर्मों के व्यक्तियों द्वारा लोक-प्रिय मेलों और त्यौहारो मे भाग लिया जाय।
४. साम्प्रदायिक खतरो के बारे में लोगो को शिक्षा देने के लिए जन-सम्पर्क आन्दोलन आरम्भ किया जाय।
५. साम्प्रदायिक एकता से सम्बन्धित अध्ययन-गोष्ठियो और नाटको का आयोजन किया जाय।
६. राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रबल बनाने के लिए फिल्मो, समाचार-पत्रो और रेडियो का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाय।
७. विभक्त और विघटित करने वाली प्रवृत्तियो का विरोध करने के लिए संक्षिप्त और विशिष्ट फिल्म तैयार किए जाएं।

८. सरकारी नौकरियाँ धार्मिक, प्रान्तीय और साम्प्रदायिक आधारों पर न दी जायें।
९. महत्वपूर्ण सरकारी पदों पर नियुक्तियों के समय अखिल भारतीय दृष्टिकोण को विशेष रूप से ध्यान में रखा जाय।

राष्ट्रीय एकता के लिए शैक्षिक कार्य-क्रम
Educational Programme for National Integration

हम ऊपर बता चुके हैं कि राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में शिक्षा महत्व योग दे सकती है। 'माध्यमिक शिक्षा आयोग' के अनुसार यह तभी सम्भव हो सकता है, जब शिक्षा का मुख्य ध्येय—देश प्रेम उत्पन्न करना हो। आयोग ने देश-प्रेम सम्बन्ध में निम्नलिखित चार बातें बताई हैं :—

१. देश की सामाजिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का उचित मूल्यांकन
२. देश की निर्बलताओं को स्वीकार करने की तत्परता।
३. राष्ट्रीय हित के लिये व्यक्तिगत हित का त्याग।
४. व्यक्ति की योग्यता के अनुसार देश की सर्वोत्तम सेवा।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर शिक्षा का कार्य-क्रम तैयार किया जाना चाहिए, क्योंकि तभी शिक्षा राष्ट्रीय एकता के कार्य में सहयोग दे सकेगी। शिक्षा का यह कार्य-क्रम विभिन्न स्तरों पर किस प्रकार का होना चाहिए, इस पर हम नीचे प्रकाश डाल रहे हैं :—

१. प्राथमिक स्तर : Primary Stage

इस स्तर पर शिक्षा का कार्य-क्रम निम्नलिखित होना चाहिए :—

१. पाठ्य-क्रम में लोकगीतों और कहानियों को स्थान दिया जाय।
२. कहानियाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों से चुनी जायें।
३. बालकों को विभिन्न क्षेत्रों के महान् व्यक्तियों के जीवन से परिचित कराया जाय।
४. बालकों को सामाजिक जीवन की दशाओं का सरलतम ज्ञान दिया जाय।
५. बालकों को प्रत्येक क्षेत्र के मानव-भूगोल की जानकारी कराई जाय।
६. बालकों को राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय झण्डे और अन्य राष्ट्रीय चिह्नों का पूर्ण ज्ञान कराया जाय।
७. बालकों द्वारा राष्ट्रीय त्योहार मनाये जायें और उनसे इन त्योहारों से सम्बन्धित नियमों का पालन कराया जाय।

२. माध्यमिक स्तर : Secondary Stage

इस स्तर पर राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय झण्डे और राष्ट्रीय पर्व के महत्व को बताने के साथ-साथ शिक्षा मे अधोलिखित बातों को स्थान दिया जाना चाहिए :—

१ बालको को भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास पढ़ाया जाय।
२ बालकों को विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों और सामाजिक दशाओं से परिचित कराया जाय।
३. बालकों को भारत के औद्योगिक और आर्थिक विकास के विषय में जानकारी कराई जाय।
४ शिक्षा की ऐसी विधि अपनायी जाय, जिससे बालको में राष्ट्रीय चेतना का विकास हो।

३. विश्वविद्यालय स्तर : University Stage

इस स्तर पर छात्रों का मानसिक दृष्टिकोण विस्तृत हो जाता है। अत उनके लिए निम्नलिखित शैक्षिक कार्य-क्रम अपनाया जाना चाहिए :—

१. समय समय पर विचार-गोष्ठियों और अध्ययन-गोष्ठियों की व्यवस्था की जाय।
२ इन गोष्ठियों मे भाग लेने के लिए अन्य क्षेत्रों के विश्वविद्यालयों के छात्रों को आमंत्रित किया जाय।
३ देश के विभिन्न भागों मे युवक-उत्सवों (Youth Festivals) का आयोजन किया जाय। इनमें देश के सभी विश्वविद्यालयों में चुने हुए छात्रों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।
४. छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं, साहित्यों, संस्कृतियों आदि का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाय।

उपसंहार

आज हम सभी भारत की स्थिति से परिचित हैं। चीन और पाकिस्तान हम पर आक्रमण कर चुके हैं और फिर आक्रमण करने की धमकी दे रहे हैं। इस बाह्य संकट की तुलना में अन्दर का संकट कुछ कम नहीं है। देश के अन्दर ऐसी शक्तियाँ और प्रवृत्तियाँ काम कर रही हैं, जो उसकी एकता को नष्ट करने पर तुली हुई हैं। ऐसी स्थिति में देश की रक्षा करने का उपाय केवल यही है कि शिक्षा को माध्यम बनाकर भारत के जन-जन मे राष्ट्रीयता की भावना भर दी जाय। जो बालक, युवक और युवतियाँ शिक्षा संस्थाओं में हैं, वहाँ इन संस्थाओं के द्वारा उनमें राष्ट्रीयता की भावना का समावेश किया जाय। जो वहाँ नहीं हैं और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं, उनके लिए प्रचार के ऐसे साधन अपनाये जायँ, जिनसे वे राष्ट्रीयता

की भावना से सराबोर हो जायें। ऐसा किया जाना अति आवश्यक है। यह देश माँग है, समय की माँग है। इस माँग को पूर्ण करना भारतीय होने के नाते हम का कर्त्तव्य है। जवाहर लाल नेहरू का कथन है "हमे स्थानीय, संकीर्ण, प्रान्त साम्प्रदायिक और जातीय विचारों का नहीं होना चाहिए, क्योंकि हमको एक म कार्य करना है। हम जो भारतीय गणतन्त्र के नागरिक हैं, उन्हें भारतीय जनत एकता स्थापित करनी है। हमे इस महान् देश को महान् राष्ट्र बनाना है, सा साधारण अर्थ मे महान् नहीं, वरन् विचार मे महान्, कार्य मे महान्, संस्कृति महान् और मानव-जाति की शान्ति से सेवा करने मे महान्।"

"We should not become parochial, narrow-minded, provinci communal and caste-minded, because we have a great mission perform. Let us, the citizens of the Republic of India, bring abo the integration of the Indian people. We have to build up this gre country into a mighty nation, mighty not in the ordinary sense the word, but mighty in thought, mighty in action, mighty culture and mighty in its peaceful service of humanity."

—**Jawaharlal Nehru :** *Speeches*, Vol III, p 3

UNIVERSITY QUESTIONS

1 How far do you accept education for national integratio as an aim of education ? What steps would you take t promote the spirit of nationalism in boys and girls ?
2. Should education for nationalism be imparted to the youtl of our country ? Support your answer with reasons anc concrete examples
4. With particular reference to the Indian nation, discuss the role of education in bringing about national integration.
5. Discuss briefly the developments which have demonstrated the sign of our national disintegration. Can they be checked by the right type of education ? If so, how ?
6. Throw light on the problem of national integration. Can it be solved by reorganising education ? What lines will you suggest for it ?
7. What are the obstacles to national integration ? How far can education help in removing them ?
8. Discuss in some detail the educational programme for national integration.

१४

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा

EDUCATION FOR INTERNATIONAL UNDERSTANDING

"भयंकर विनाशकारी परिणाम वाले दो विश्व-युद्धों ने कम-से-कम यह सिद्ध कर दिया है कि क्षुद्र और आक्रमणकारी राष्ट्रीयता के संकीर्ण बन्धनों को तोड़ डालना चाहिए और प्रेम, दया तथा सहानुभूति पर आधारित मानव-सम्बन्धों का विकास करने के लिए मानव-जाति के स्वतन्त्र संघ का निर्माण किया जाना चाहिए।"

"The two Global Wars, with their terribly devastating results, have at least established the fact that the narrow bonds of sordid and aggressive nationalism must be smashed through and an unwalled and unhedged Federation of Mankind should be brought into being for fostering human relations on the plane of love, pity, and sympathy"—*Romain Rolland.*

विषय-प्रवेश

राष्ट्रीयता की भावना जब तक उदार, विस्तृत और विशाल रहती है, तभी तक सुन्दर और ग्राह्य बनती है। जहाँ वह संकीर्ण हुई नहीं, कि घातक और हेय बन जाती है। अन्धी और संकीर्ण राष्ट्रीयता युद्धों की जननी होती है, अशान्ति को आश्रय देती है, मानव मात्र में भेद डालती है, और उन्हें एक-दूसरे से भिन्न कर देती है। आज विश्व के राष्ट्र इसी अन्धी राष्ट्रीयता से अच्छादित हैं, जो मानवता का गला घोंट रही है। आज एक राष्ट्र अपनी सुख-समृद्धि—दूसरे राष्ट्र की बलि देकर करना चाहता है। आज मानव अपने राष्ट्र के लिए दूसरे राष्ट्र की हत्या की इच्छा करता है। विश्व में पिछले दो महायुद्ध एवं तीसरे का सम्भावित संकट इसी का परिणाम है। राष्ट्रीयता के इस ओछे तथा घृणित स्वरूप को त्याग कर और अन्तर्राष्ट्रीय भावना का विकास करके ही मानव का कल्याण हो सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीयता का अर्थ
Meaning of Internationalism

जब व्यक्ति अपने राष्ट्र तक सीमित न रहकर समस्त विश्व को अपना निव स्थल समझने लगता है, उससे ममता करने लगता है, उसे मानवता की श्रेष्ठ वृत्तियो का क्रीडा-स्थल बनाने के प्रयास मे जुट जाता है, तब उसकी भावन राष्ट्रीयता की परिधि मे न रहकर अन्तर्राष्ट्रीयता की गोद मे विचरण करने लग हैं, वह विराट, विशाल और व्यापक बन जाता है। अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना विश मैत्री और विश्व-बन्धुत्व की महान् भावनाओ पर आधारित है। मानव मात्र कल्याण हो, प्राणिमात्र पर समान दृष्टि रहे, विश्व भर मे राष्ट्रो की पारस्परि मित्रता हो—उनमे भाईचारे का नाता हो, समस्त वसुधा ही कुटुम्ब के समान प्रती हो, अन्तर्राष्ट्रीयता इन्ही श्रेष्ठ विचारो पर निर्भर करती है। "वसुधैव कुटुम्बकम् "आत्मवत सर्वभूतेषु" एव महात्मा गाधी द्वारा दिए गये अहिसा और विश्व-मैत्री अमर सन्देश, इसी अन्तर्राष्ट्रीयता का पाठ पढाते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीयता के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम दो प भाषायें नीचे दे रहे है—

१. ओलिवर गोल्डस्मिथ—"अन्तर्राष्ट्रीयता एक भावना है, जो व्यक्ति यह बताती है कि वह अपने राज्य का ही सदस्य नहीं है, वरन् विश्व का नागरि भी है।"

"Internationalism is a feeling that the individual is not onl a member of his state, but a citizen of the world."

—*Oliver Goldsmith*

२. डाक्टर वाल्टर एच० सी० लेव्स—"अन्तर्राष्ट्रीय सभावना इस ओ ध्यान दिए बिना कि व्यक्ति किस राष्ट्रीयता या सस्कृति के हैं, एक-दूसरे के प्रति सब जगह उनके व्यवहार का आलोचनात्मक और निष्पक्ष रूप से निरीक्षण करने और आँकने की योग्यता है। ऐसा करने के लिए व्यक्ति को उस योग्य होना चाहिए कि वह सब राष्ट्रीयताओ, सस्कृतियो और प्रजातियो को इस ससार में रहने वाले लोगों को समान रूप से महत्त्वपूर्ण विभिन्नताओ के रूप मे निरीक्षण कर सके।"

"International understanding is the ability to observe critically and objectively and appraise the conduct of men everywhere to each other irrespective of the nationality or culture to which they belong To do this, one must be able to observe all nationalities, cultures, and races as equally important varieties of human beings inhabiting this earth."—*Dr. Walter H. C. Laves.*

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिये प्रयास
Efforts for International Understanding

इतिहास हमें बताता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिये बहुत समय से प्रयास किया जा रहा है। आज से ६०० वर्ष पूर्व पियरे ड्यूबिअस (Pierre Dubios) ने अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय विद्यालयों के विचार को प्रतिपादित किया था। उसके बाद कॉमिनियस (Comenius) ने विश्व-शान्ति और सामजस्य के लिये 'पैनसोफिक कॉलेजों' (Pansophic Colleges) की स्थापना का सुझाव दिया। इसी उद्देश्य को अपने दृष्टिकोण में रखकर अमेरिका के राष्ट्रपति टैफ्ट (President Taft) ने १९१० में हेग (Hague) में एक सम्मेलन किया, पर उसे सफलता नहीं मिली।

प्रथम विश्व-युद्ध के बाद श्रीमती एन्ड्रूज (Mrs Andrews) ने 'अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा-विभाग' (International Department of Education) को 'राष्ट्र संघ' (League of Nations) में मिलाने का असफल प्रयत्न किया। सन् १९२६ में 'बौद्धिक सहयोग-आयोग' (Commission of Intellectual Co-operation) की स्थापना की गई, पर धन, शान्ति और सहयोग न मिलने के कारण इसको सफलता नहीं प्राप्त हुई।

इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिये कोई महत्वपूर्ण प्रयास नहीं किया गया। इसका कारण यह था कि हिटलर (Hitler) की जर्मनी में 'नाज़ीवाद' (Nazism) और मुसोलिनी (Mussolini) की इटली में 'फ़ासीवाद' (Fascism) के सिद्धान्तों के प्रचार के कारण, जिनका प्रमुख आधार 'उग्र-राष्ट्रवाद' (Chauvenism) था, यूरोप के सभी निवासियों के हृदय में हलचल पैदा हो गई थी। इस उग्र-राष्ट्रवाद के प्रचार का परिणाम हुआ—द्वितीय विश्व-युद्ध।

इस युद्ध ने सभी देशों के व्यक्तियों को इतना आतंकित कर दिया कि वे गम्भीरता पूर्वक इस बात पर विचार करने लगे कि भविष्य में युद्ध न हो। इस विचार को साकार रूप देने के लिये एक नये अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना की गई जिसे 'संयुक्त राष्ट्र संघ' (United Nations Organization) के नाम से पुकारा गया। इस संघ का प्रमुख ध्येय था (और अब भी है) विश्व में शान्ति बनाये रखना। इसके लिये अन्तर्राष्ट्रीयता की सद्भावना को विकसित करना आवश्यक समझा गया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये। संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिकार-पत्र' में कहा गया— "अन्तर्राष्ट्रीय स्थिरता का विकास करने के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक और शैक्षिक सहयोग को विकसित करेगा।"

"In order to promote international stability the United Nations shall promote international cultural and educational co-operation."—*United Nations Charter.*

२ आधुनिक ससार की किसी भी समस्या के किसी भी अङ्ग में रुचि लेने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित किया जाय।

३. सामाजिक विज्ञान के शिक्षण मे बालकों मे आलोचनात्मक तर्क-शक्ति का विकास किया जाय।

४ आवश्यक मानव-सम्बन्धो का विकास करने के लिये सामाजिक विज्ञान के अध्ययन मे मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास के बारे मे अध्ययन किया जाय।

५. सामाजिक विज्ञान के अध्ययन मे नागरिकता की शिक्षा देने के लिये कक्षा, स्कूल और समाज को प्रयोगशाला (Laboratory) के रूप मे प्रयोग करने का प्रयत्न किया जाय।

६. सामाजिक विज्ञान के शिक्षण मे उचित और जरूरी बातो को प्रस्तुत किया जाय। इसके अलावा आवश्यक मनोवृत्तियो (Attitudes) और कौशलो (Skills) के विकास पर ध्यान दिया जाय।

७. सामाजिक विज्ञान के अध्ययन मे सामाजिक घटनाओ, तनावो और सहकारिता से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओ पर अवश्य विचार किया जाय।

८. सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के समय विभिन्न मानव-समुदायो के पारस्परिक सौहाद्रपूर्ण सम्बन्धो पर बल दिया जाय।

९. सामाजिक विज्ञान को पढ़ाते के समय प्रजाति, धर्म और सस्कृति के कारण आर्थिक और शैक्षणिक स्तर पर जो भेद-भाव माना जाता है, उसे दूर करने का प्रयत्न किया जाय।

१०. विश्व के भूगोल के अध्ययन पर बल दिया जाय और राष्ट्र की प्राकृतिक सम्पत्ति की ओर केवल सकेत किया जाय। इसके अतिरिक्त छात्रो का का ध्यान ससार की वर्तमान खाद्य-समस्या की ओर आकर्षित किया जाय।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिये शिक्षा की आवश्यकता

Need of Education for International Understanding

आज का युग अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है। आज विश्व-बन्धुत्व और विश्व-मैत्री की भावना जितनी आवश्यक है, कदाचित् उतनी पहले कभी नही थी। कारण यह है कि पहले का जीवन इतना जटिल नहीं था जितना आज है, पहले मनुष्य इतना स्वार्थी नहीं था जितना आज है, पहले राष्ट्र इतने अन्धे नही थे जितने आज हैं; पहले राष्ट्र की परिधि मे घिरकर मानव जी सकता था, अपने हृदय को व्यापक और विशाल बना सकता था। आज मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों और वायुयान, जहाज,

रेडियो, बेतार-के-तार आदि के आविष्कारों के कारण सभ्यता का रूप बदल गया है, युग की परिस्थितियाँ बदल गई हैं।

अतः आज का मानव अपने राष्ट्र के सीमित दायरे में सुख, सन्तोष और शान्ति में जीवन व्यतीत करना असम्भव पाता है। आज किसी राष्ट्र में घटने वाली घटना, विश्व भर को प्रभावित कर देती है। विश्व के किसी कोने में होने वाला युद्ध, दूर-दूर तक के देशों में संकट उत्पन्न कर देता है। इसका एक उदाहरण के० जी० सैयदेन ने इस प्रकार दिया है "एक युद्ध यूरोप में प्रारम्भ होता है और बंगाल में तीन लाख व्यक्ति अकाल से मर जाते हैं, लाखों बे-घरबार हो जाते हैं, अपने साधारण कार्यों से पृथक् हो जाते हैं—और उन सब सुखों से वंचित हो जाते हैं, जो जीवन को सुखी, रोचक और आकर्षक बनाते हैं।"

'A war starts in Europe and three million die of famine in Bengal and millions more find themselves uprooted from their homes, cut off from their normal acceptations, and deprived of all that makes life pleasant, gracious and meaningful."

—*K. G. Saiyidain.*

सैयदेन ने जो कुछ लिखा है, वह इस बात को सिद्ध करता है कि आज का युग अन्तर्राष्ट्रीयता का युग है। प्राचीन युग में राष्ट्रीयता की भावना हमारे लिए अनिवार्य थी और अन्तर्राष्ट्रीयता हमारे जीवन का लक्ष्य हुआ करती थी। पर आज अन्तर्राष्ट्रीयता हमारे जीवन का लक्ष्य मात्र न रहकर सबसे पहली अनिवार्यता बन गई है। इस अनिवार्यता को समझने-समझाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीयता की शिक्षा प्रदान किया जाना आवश्यक है। यह शिक्षा ही विश्व के संघर्षों, जीवन की जटिलताओं और स्वार्थों के बवंडर से हमारी रक्षा कर सकती है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का एकमात्र साधन 'शिक्षा'

Education the Only Means of International Understanding

यों तो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिये रेडियो, समाचार-पत्र, भाषण, सिनेमा आदि अनेकों साधनों को महत्त्वपूर्ण बताया जाता है, पर इनमें 'शिक्षा' को सबसे श्रेष्ठ स्थान दिया जाता है। इस बारे में दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ,

उपरोक्त कथन की पुष्टि करते हुए यूनेस्को द्वारा प्रकाशित 'टूवर्डस वर्ल्ड अण्डरस्टैंडिंग' में लिखा गया है —"विद्यालय आस-पास की संस्कृति में निहित सर्वोत्तम तत्त्वों को व्यक्त कर सकते हैं, और साधारणतः करते भी हैं। वे सत्य,

ईमानदारी और निष्पक्षता में समाज के सामान्य स्तर से ऊँचे होने चाहिए और साधारणतः होते भी हैं। वे लोगों के मानदण्डों और मूल्यों को काफी ऊँचा उठाने का यत्न करते हैं।"

"Schools may and generally do represent the best elements in the surrounding culture They should be and they generally are, above the average level of the community in their regard for truth and honesty and fair dealing. They contrive to raise appreciably the standards and values of people"—*Towards World Understanding (UNESCO)*

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिए शिक्षा के उद्देश्य
Aims of Education for International Understanding

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने के लिए शिक्षा के उद्देश्यों को निम्नलिखित दो समूहों में बाँटा जा सकता है :—

१ सामान्य उद्देश्य (General Aims)
२ यूनेस्को द्वारा प्रतिपादित उद्देश्य (Aims formulated by *UNESCO*).

१. समान्य उद्देश्य . General Aims

१. छात्रों को उन सभी आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों की, जिनके कारण सभी राष्ट्र एक-दूसरे पर आश्रित हैं, पूर्ण जानकारी कराई जाय।
२. मानव-संस्कृति और विश्व-नागरिकता के विकास के लिए उनको सभी राष्ट्रों की उपलब्धियों (Contributions) का मूल्यांकन और आदर करना सिखाया जाय।
३. उनको विश्व की समस्याओं से परिचित कराया जाय और उनका समाधान करने के लिये लोकतन्त्रीय ढंगों को बताया जाय।
४. उनको विश्व-समाज के निर्माण में सहायक मूल्यों और उद्देश्यों में आस्था रखने की शिक्षा दी जाय।
५. उनको सांस्कृतिक विभिन्नताओं में मानव-हित के लिए कल्याणकारी समान तत्वों को खोजने का प्रशिक्षण दिया जाय।
६. उनमें स्वतन्त्र विचार, निर्णय, भाषण और लेखन की योग्यता का विकास किया जाय।
७. उनको अंधी और संकीर्ण राष्ट्रीयता का खण्डन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।
८. उनको विश्व-नागरिकता के लिए तैयार किया जाय।

२. यूनेस्को द्वारा प्रतिपादित उद्देश्य : Aims formulated by UNESCO

यूनेस्को के भूतपूर्व डिप्टी डाइरेक्टर जनरल डा० वाल्टर एच० सी० लेव्ज (Walter H. C Laves) द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिये शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य प्रतिपादित किये गये —

१. बालको और बालिकाओ को समाज के निर्माण मे सक्रिय भाग लेने के लिये तैयार किया जाय।
२ उनको विश्व के समस्त व्यक्तियो के रहन-सहन के ढगो, मूल्यों और आकाक्षाओ से परिचित कराया जाय।
३. उनको विश्व मे एक साथ रहने के लिये आवश्यक बातो का ज्ञान कराया जाय।
४. उनको सब स्थानो के व्यक्तियो का एक-दूसरे के प्रति व्यवहार का आलोचनात्मक निरीक्षण करने का प्रशिक्षण दिया जाय।
५ उनको अपने स्वय के सास्कृतिक और राष्ट्रीय पक्षपातो को महत्त्व न देने की शिक्षा दी जाय।
६ उनमे समस्त राष्ट्रीयताओ, सस्कृतियो और प्रजातियो के व्यक्तियो को समान समझने की भावना उत्पन्न की जाय।

अन्तर्राष्ट्रीयता और शैक्षिक कार्य-क्रम
Internationalism and Educational Programme

उपरिलिखित उद्देश्यो की प्राप्ति के लिये प्रचलित शैक्षिक कार्यक्रम मे परिवर्तन करना आवश्यक हो जाता है। इस सम्बन्ध मे अधोलिखित सुझाव दिये जा सकते हैं —

१. विद्यालय के वातावरण में परिवर्तन
Change in School Environment

आजकल हमारे विद्यालयो का वातावरण अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के लिये उपयुक्त नहीं है। जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि पर आधारित विद्यालय इस सद्भावना के विकास मे निश्चय रूप से बाधक हैं। अत. यह आवश्यक है कि इन विद्यालयों का कलेवर पूर्ण बदल दिया जाय और इनमे इस प्रकार के वातावरण का निर्माण किया जाय, जो बालको मे अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास करने मे सहायता दे।

२. शिक्षण-विधि में परिवर्तन Change in Method of Teaching

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने के लिये शिक्षण-विधि मे परिवर्तन का लाना आवश्यक है। उदाहरणार्थ—विज्ञान के शिक्षण में उसके सामाजिक पक्ष पर बल दिया जाय। इसका अर्थ यह है कि बालकों को यह बताया जाय कि वैज्ञानिक

आविष्कारो के द्वारा मानव-जीवन को किस प्रकार सुखी और सम्पन्न बनाया जा सकता है। इसी प्रकार अन्य विषयो के शिक्षण में भी उनके सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रीय पक्षो पर बल दिया जाय। सभी विषयो का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से किया जाय।

३. पाठ्य-क्रम में परिवर्तन Change in Curriculum

(i) "अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना" नामक विषय को अनिवार्य बनाया जाय।

(ii) विश्व-इतिहास, विश्व-साहित्य, विश्व-कला और विश्व-संस्कृतियों से सम्बन्धित पुस्तकों को रखा जाय।

(iii) विश्व के प्रमुख धर्मों और उनके आदर्शों को पाठ्य-क्रम में स्थान दिया जाय।

(iv) विभिन्न देशो मे रहने वाले व्यक्तियो के रहन-सहन, समानताओ और असमानताओ को इनसे सम्बन्धित विषयों मे महत्त्व दिया जाय।

४. अन्य सुझाव : Other Suggestions

(i) रेडियो, समाचार-पत्र, सिनेमा, भाषण आदि अविधिक (Informal) साधनो का प्रयोग किया जाय।

(ii) छात्रों को संयुक्त राष्ट्र-संघ के अन्तर्गत कार्य करने वाले 'यूनेस्को', 'अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय', 'विश्व-स्वास्थ्य-संगठन' आदि मे रुचि कराई जाय, क्योंकि ये संस्थायें विश्व के दुखी और पिछड़े हुए व्यक्तियों के लिये सराहनीय कार्य कर रही हैं।

(iii) अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाय।

(iv) एक देश के छात्रो और शिक्षकों के द्वारा दूसरे देशो मे आकर अध्ययन और अध्यापन का कार्य किया जाय।

(v) छात्रों को अन्य देशों के छात्रों को 'पत्र-मित्र' (Pen-friends) बनाने के लिये प्रोत्साहित किया जाय।

अन्तर्राष्ट्रीयता और शिक्षक
Internationalism & Teacher

दें। इसके लिये शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त

यह भी आवश्यक है कि अध्यापक शिक्षण के समय अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को अपने समक्ष रखे। यदि वह ऐसा नहीं करेगा, तो वह अपने छात्रों में इस दृष्टिकोण का निर्माण नहीं कर सकेगा। इसके अतिरिक्त उसे बालकों के समक्ष सत्य बातें ही प्रस्तुत करनी चाहिये। उसे विश्व के इतिहास, धर्मों, संस्कृतियों आदि का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये। इन बातों से सम्बन्धित वह जिन भी तथ्यों को छात्रों के सामने रखे, उनमें उसकी दृढ़ आस्था होनी चाहिये। वह अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को इस प्रकार अपनावे कि अपने आचरण द्वारा एक आदर्श प्रस्तुत करे।

उपसंहार

आधुनिक युग में अन्तर्राष्ट्रीयता का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। यातायात के नये और तेज साधनों और बेतार-के-तार ने संसार को बहुत छोटा बना दिया है। सभी देश एक-दूसरे के इतने निकट आ गये हैं कि एक देश में होने वाली महत्त्वपूर्ण या भीषण घटना संसार के अन्य देशों को प्रभावित करती है। विश्व के किसी कोने में होने वाले युद्ध या संसार के किसी देश का आर्थिक संकट अन्य देशों को अछूता नहीं छोड़ता है। ऐसी स्थिति में मिल-जुल कर रहने से, एक-दूसरे को सहायता और सहयोग देने से ही सब देशों का अस्तित्व बना रह सकता है। वह समय बीत चुका है जब एक देश अच्छी प्राकृतिक सीमाओं से घिरे होने के कारण अपने को सुरक्षित समझता था और अन्य देशों से अलग रह सकता था। आज हिमालय ऐसे ऊंचे पहाड़ और प्रशान्त महासागर ऐसे विशाल समुद्र को बड़ी सरलता ... किया जा सकता है।

...रिस्थिति में मानव-जाति की रक्षा और कल्याण तभी हो सकता है, ... का विकास किया जाय। इसके लिये शिक्षा से अधिक ... कता है। यदि संसार के देशों ने शिक्षा को माध्यम बनाकर ... विकास नहीं किया और संकुचित राष्ट्रीयता का प्रचार करते रहे, ... कोई भी युद्ध मानव-जाति को इस पृथ्वी से खतम कर सकता है। ... ठीक ही लिखा है—"पृथकता का अर्थ है—पिछड़े रहना और पतन ... रानी रुकावटें समाप्त होती जा रही हैं। जीवन अधिक ही ... जा रहा है। हमें इस भावी अन्तर्राष्ट्रीयता में अपना पार्ट अदा करना ..."

"Isolation means backwardness ... The world has changed and old barriers are breaking ... becomes more international. We have to play our part ... ing internationalism."—**Jawaharlal Nehru** *Discovery o*... 580.

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What do you understand by internationalism? Discuss the need and importance of education for international understanding.
2. Why is education regarded as the only means of international understanding?
3. What, in your opinion, should be the aims of education for international understanding?
4. How should the educational programme be organized to develop an international outlook in students?
5. How far do you accept education for international understanding as an aim of education? What steps would you take to promote the spirit of internationalism in children?
6. How far is education for nationalism and for internationalism mutually exclusive and complimentary? Is it possible to give both national and international training to the youth of a country without apparent contradiction? Support your view with arguments

१५

स्वतन्त्रता और अनुशासन

FREEDOM & DISCIPLINE

'अनुशासन' का अर्थ है—व्यवहार के कुछ निश्चित नियमों का पालन करना सीखना। अनुशासन का अनिवार्य गुण है 'आज्ञाकारिता'—नियमों और अधिकार के प्रति आज्ञाकारिता।"

"Discipline means learning to obey certain necessary rules of conduct. Its very essence is obedience—obedience to rules and authority."—*H. Martin.*

विषय-प्रवेश

अनुशासन हर देश और हर समाज के जीवन के लिये सबसे अमूल्य निधि है। जिस प्रकार देश और समाज के जीवन में अनुशासन का मूल्य बहुत अधिक है, उसी प्रकार अनुशासन व्यक्ति के जीवन के लिये भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। समाज के लिये बालक विद्यालय में तैयार किये जाते हैं। इसलिये विद्यालयों में भी अनुशासन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है।

हर समाज में रहने वाले व्यक्ति को कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं, पर इनके बदले में समाज उससे कुछ चाहता भी है। व्यक्ति को अधिकार तो मिल जाते हैं, पर उसे जो कर्त्तव्य समाज के प्रति निभाने पड़ते हैं—वे भी आवश्यक हैं। बिना कर्त्तव्यों के अधिकारों का कोई मूल्य नहीं है। इसी प्रकार विद्यालय में बालक को शिक्षा दी जाती है, उसके जीवन को सुदृढ़ और सुन्दर बनाया जाता है। पर उससे यह भी आशा की जाती है कि वह विद्यालय के नियमों आदि का पालन करे और विद्यालय में उचित व्यवहार को अपनाये। उसके ऐसा न करने से विद्यालय का वह उद्देश्य निष्फल हो जाता है, जिसकी प्राप्ति के लिये समाज द्वारा विद्यालय की स्थापना की गई है। यहीं पर अनुशासन की आवश्यकता अनुभव की जाती है। यह आशा की

जाती है कि विद्यालय का अनुशासन अच्छा हो और बालक अनुशासन में जीवन व्यतीत करे।

अनुशासन का अर्थ
Meaning of Discipline

'Discipline' शब्द की उत्पत्ति

'Discipline' शब्द की उत्पत्ति 'Disciple' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है—'छात्र', 'शिष्य' या 'शिक्षक का अनुगामी'।

"The word 'discipline' is derived from 'disciple', a learner, pupil, or follower of a teacher."—*H Martin.*

अनुशासन और व्यवस्था : Discipline and Order

हम 'अनुशासन' के बारे मे दो प्रकार से विचार कर सकते हैं —(१) व्यक्ति का अनुशासन या प्रशिक्षण, और (२) समाज या व्यक्तियों के समूह मे; जैसे—स्कूल या सैन्य दल मे, रखा जाने वाला अनुशासन या व्यवस्था।

"We may think of discipline in two ways—the discipline or training of an individual, and the discipline or order, maintained in a society or body of individuals, like a school or a regiment."—*H. Martin*

मार्टिन (Martin) के कथन से स्पष्ट हो जाता है कि 'अनुशासन' और 'व्यवस्था' समान अर्थ वाले शब्द नहीं हैं। इन दोनों शब्दों के अर्थ को रस्क (Rusk) ने निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया है :—

१. व्यवस्था का अभिप्राय—बालक के स्कूल या कक्षा के व्यवहार से है, जबकि अनुशासन का अभिप्राय—चरित्र-निर्माण से है।
२. व्यवस्था का सम्बन्ध वर्तमान से है, जबकि अनुशासन का सम्बन्ध वर्तमान और भविष्य—दोनों से है।
३. व्यवस्था का अभिप्राय बालकों पर रखे जाने वाले बाह्य बन्धन से है, जबकि अनुशासन का सम्बन्ध विनय, आत्म-सयम और आत्म-नियन्त्रण से है।
४. व्यवस्था को साधन (Means) माना गया है, जबकि अनुशासन को साध्य (End) माना गया है।

अनुशासन का अर्थ : Meaning of Discipline

हमने 'व्यवस्था' और 'अनुशासन' के बारे में ऊपर जो कुछ लिखा है, उससे 'अनुशासन' का अर्थ बहुत-कुछ स्पष्ट हो जाता है। अनुशासन का अर्थ बहुत व्यापक

है। इसके अन्तर्गत बाह्य व्यवस्था, बाह्य व्यवहार, आन्तरिक प्रेरणा, आत्म-नियन्त्रण, आत्म-संयम, विनय सभी कुछ आ जाते हैं। हम 'अनुशासन' के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये कुछ परिभाषायें नीचे दे रहे हैं :—

१ टी० पी० नन —"अनुशासन का अर्थ है—अपनी भावनाओं और शक्तियों को नियन्त्रण के अधीन करना, जो अव्यवस्था को व्यवस्था प्रदान करता है।"

"Discipline consists in the submission of one's impulses and power to regulation which imposes form chaos."—*T. P. Nunn.*

२ जॉन ड्यूवी— "अनुशासन का अर्थ—व्यवस्था की शक्ति और कार्य के लिये उपलब्ध साधनों पर नियन्त्रण की क्षमता है।"

"Discipline means power at command, mastry of resources available for carrying through the act undertaken."—*John Dewey.*

३. बोर्ड ऑफ ऐजूकेशन—"अनुशासन वह साधन है, जिसके द्वारा बच्चों को व्यवस्था, उत्तम आचरण और उनमें निहित सर्वोत्तम गुणों की आदत को प्राप्त करने के लिये प्रशिक्षित किया जाता है।"

"Discipline is the means whereby children are trained in orderliness, good conduct, and the habit of getting the best out of themselves."—**Board of Education :** ***Hand-Book of Suggestions.***

स्वतन्त्रता और अनुशासन का सम्बन्ध
Relation between Freedom & Discipline

अनुशासन की नई धारणा . New Conception of Discipline

मनोविज्ञान ने अनुशासन के प्रति पुरानी धारणा में पूर्ण परिवर्तन कर दिया प्राचीन विचार के अनुसार बालक को अनुशासन में रखने के लिये उसका हर से दमन किया जाता था और उसे शारीरिक दण्ड दिया जाता था। अपने न-काल में उसे नाना प्रकार की शारीरिक यातनायें भोगनी पड़ती थी। उसकी त प्रवृत्तियों, भावनाओं और इच्छाओं को अधिक से अधिक कुचला जाता था। के प्रति किये जाने वाले इस अन्याय के विरुद्ध अनेकों शिक्षा-शास्त्रियों ने उठाई। इनमें पेस्टालॉजी (Pestalozzi), रूसो (Rousseau), हरबर्ट t) और जॉन ड्यूवी (John Dewey) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रयासों के फलस्वरूप अनुशासन की नई धारणा

धारणा के अनुसार अनुशासन का क्या अर्थ है—इस पर प्रकाश डालते हुए ए० डी० मुलर ने लिखा है —"*अपने आधुनिकतम और सम्यक् रूप में अनुशासन का अर्थ है*—बालकों और बालिकाओं को प्रजातान्त्रिक जीवन के लिये तैयार करना। अनुशासन का ध्येय है- ज्ञान, शक्तियों, आदतों, रुचियों और आदर्शों को प्राप्त करना; जिनका निर्माण उसको स्वयं को, उसके साथियों की और समग्र रूप में समाज का भलाई के लिये होता है।"

"In its most modern and inclusive sense discipline means preparing boys and girls for life in a democratic society The purpose of discipline is to help the individual to acquire knowledge, powers, habits, interests and ideals which are designed for the well-being of himself, his fellows and society as a whole "—*A D Muller.*

स्वतन्त्रता और अनुशासन का सम्बन्ध
Relation between Freedom & Discipline

आधुनिक विचारधारा के अनुसार 'स्वतन्त्रता' और 'अनुशासन' का घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध उतना ही घनिष्ठ है, जितना कि आत्मा और शरीर का। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर का और शरीर के बिना आत्मा का अस्तित्व नहूं है, उसी प्रकार स्वतन्त्रता और अनुशासन का अस्तित्व एक दूसरे के सहयोग पर निर्भर है। *ऊपर से थोपा गया अनुशासन सच्चा अनुशासन नहीं है। सच्चा अनुशासन तो* वही है, जो स्वतन्त्रता पर आधारित हो। स्वतन्त्रता से ग्रहण किया जाने वाला अनुशासन ही स्थायी होता है। मनुष्य जिस कार्य को अपने आप स्वीकार करता है, उसे वह अधिक प्रसन्नता से करता है।

आधुनिक शिक्षा-शास्त्री इस बात को स्वीकार करते हैं। इसलिये वे दमन-शीलता और दमन-प्रवृत्ति के घोर विरोधी हैं। उनका कहना है कि स्वतन्त्रता और अनुशासन एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। ये एक-दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों साथ चलते हैं। स्वतन्त्रता और अनुशासन के अटूट सम्बन्ध को स्पष्ट करते हुए ह्वाइटहेड ने लिखा है—"आदर्शपूर्ण सुनियोजित शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि अनुशासन स्वेच्छापूर्वक और स्वतन्त्र रूप से हो और स्वतन्त्रता अनुशासन रखने में अधिक सहायक हो। दोनों सिद्धान्त—स्वतन्त्रता और अनुशासन एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, वरन् इन दोनों का बालक के जीवन में ऐसा अनुकूलन होना चाहिये कि ये बालक के व्यक्तित्व के विकास में इधर-उधर होने वाली प्रवृत्तियों के अनुसार हों।"

'It should be the aim of an ideally constructed education that the discipline should be the voluntary issue of free choice and that the freedom should gain an enrichment of possibility as the issue of discipline The two principles, freedom and discipline, are

not antagonistic, but should be so adjusted in the child's life that they correspond to a natural sway, to and fro, of the developing personality "—*Whitehead*

अनुशासन के दार्शनिक सिद्धान्त
Philosophical Theories of Discipline

ऐडम्स (Adams) ने अपनी पुस्तक 'माडर्न डेवलॅप्मेन्ट इन ऐजूकेशनल प्रेक्टिस' (Modern Development in Educational Practice) मे दर्शन के विभिन्न सिद्धान्तो पर आधारित अधोलिखित तीन प्रकार के अनुशासन का उल्लेख किया है—

१. दमनात्मक अनुशासन (Repressionistic Discipline)
२. प्रभावात्मक अनुशासन (Impressionistic Discipline)
३. मुक्त्यात्मक अनुशासन (Emancipationistic Discipline)

१. दमनात्मक अनुशासन : Repressionistic Discipline

(अ) दमनात्मक अनुशासन का अर्थ
Meaning of Repressionistic Discipline

शिक्षा-जगत् मे दमनात्मक अनुशासन की विचारधारा बहुत पुरानी है। इस विचारधारा पर स्वेच्छाचारी राजनैतिक विचारधारा की पूर्ण छाप है। जिस प्रकार प्राचीन काल मे स्वेच्छाचारी शासक अपनी आज्ञाओ के पालन के लिए शक्ति का प्रयोग करते थे, उसी प्रकार शिक्षक अपने आदेशो के पालन के लिये बल का प्रयोग करता था। अध्यापक डण्डे के जोर से कक्षा मे अनुशासन रखते थे। १८वी शताब्दी मे यूरोप के स्कूलो मे यह विचार बहुत प्रबल था—"डण्डे को छुटकारा देते ही बालक बिगड़ जाता है।" (Spare the rod and spoil the child)। इस प्रकार विद्यालय का वातावरण शक्ति और क्रूरता से पूर्ण था। अध्यापको का विश्वास था कि बालक मे अनेक बुराइयाँ होती हैं और इन बुराइयो को केवल डण्डे से ही दूर किया जा सकता है। अतः विद्यालयो मे शिक्षक छात्रो को कठोर से कठोर शारीरिक दण्ड देते थे। वे विद्यार्थियो को भय दिखाकर या मार-पीटकर उनसे विभिन्न विषयो का अध्ययन कराते थे। बालको को किसी प्रकार की स्वतन्त्रता नही थी। वे बोल भी नही सकते थे। उनका कर्त्तव्य—केवल शिक्षक की आज्ञा का पालन करना था, चाहे वह अच्छी हो या बुरी।

(ब) दमनात्मक अनुशासन के पक्ष में तर्क
Arguments for Repressionistic Discipline

१. दमनवादियो का विश्वास है—"बिन भय होय न प्रीति," अर्थात् छात्र मे अपने अध्यापक के प्रति प्रेम और श्रद्धा तभी हो सकती है, जब उसे शिक्षक से भय हो।

२. शिक्षक के आदेशों का पूर्ण रूप से पालन किये बिना बालक उचित ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता है। वह आदेशों का पालन तभी कर सकता है, जब शिक्षक स्वतन्त्र रूप से उसका दमन करे।

३. दमनवादियों का कथन है—"डर से भूत भी भाग जाता है।" उनके कहने का आशय यह है कि डर के मारे बदमाश से बदमाश बालक भी शिक्षक के काबू में रहता है और अपना समय पढ़ने में लगाता है।

४. बालक की पाशविक प्रवृत्ति को दबाये रखने के लिये शारीरिक दण्ड से अच्छी और कोई चीज नहीं है। जब इस प्रवृत्ति का दमन हो जाता है, तब बालक स्वयं ही पढ़ने लगता है।

५. कड़े नियन्त्रण के अभाव में बालक शिक्षक और अन्य छात्रों के प्रति अनुचित व्यवहार कर सकता है। उसको इस प्रकार के व्यवहार से रोकने का एकमात्र उपाय कड़ा शारीरिक दण्ड है।

(ख) दमनात्मक अनुशासन के विपक्ष में तर्क

Arguments against Repressionistic Discipline

१. मनोविज्ञान की खोजों ने सिद्ध कर दिया है कि दमनात्मक अनुशासन के लिये विद्यालयों में कोई स्थान नहीं है।

२ मनोविज्ञान के अनुसार बालक का निरन्तर दमन करने से उसके मस्तिष्क में ग्रन्थियाँ (Complexes) उत्पन्न हो जाती हैं और वह मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है।

३ शिक्षक बालक का दमन करके कुछ समय तक तो उससे अपनी इच्छानुसार कार्य करवा सकता है, पर उसके बाद नहीं।

४. दमन पर आधारित स्कूल-व्यवस्था का रूप स्थायी न होकर केवल कुछ समय के लिए होता है।

५. यदि बालक को बहुत कठोर शारीरिक दण्ड दिया जाता है, तो उसे शिक्षा से अरुचि हो जाती है और वह स्कूल जाना बन्द कर देता है। फलस्वरूप वह अशिक्षित रह जाता है।

६ दण्ड के कारण सदैव भयभीत रहने से बालक का स्वास्थ्य गिर जाता है और उसके व्यक्तित्व का विकास नहीं होने पाता है।

७. दण्ड के भय से बालक ज्ञान का अर्जन नहीं कर पाता है और उसे जो कुछ याद होता है, उसे भी भूल जाता है। अपने इस अनुभव का वर्णन करते हुए David Copperfield ने कहा है—"I come into the parlour after breakfast with my books. The very sight of Mr. Murdstone & his sister (David was taught by

them) frightens me so much that I begin to feel the words I have learnt all sliding away, and going I don't know where."

८. सेमुअल स्माइल्स का कथन है--"शिक्षक क्रूरता और कठोरता को अपना कर ज्ञान की प्रगति में योग नहीं दे सकता है। ये दोनों बातें बालक को मूर्ख और लापरवाह बनाने के लिये काफी हैं। मुझे कुछ शिक्षकों की कायर क्रूरता से सदैव घृणा रही है। वे उन असहाय बच्चों के प्रति जिनको उन्हें सौंपा गया है, अपनी शक्ति का प्रयोग केवल इसलिये करते हैं, क्योंकि वे अधिक शक्तिशाली हैं।"

"Learning is not advanced by harshness and tyranny on the part of the masters These are enough to drive a boy into stupidity and make him reckless. I have always detested the cowardly cruelty of exceptional schoolmasters, who, because they are stronger, use their power in tormenting the helpless children committed to their charge."—*Samuel Smiles*

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि दमनात्मक अनुशासन के सिद्धान्त में तनिक भी सार नहीं है। यह सिद्धान्त बालक की मनोवृत्तियों, इच्छाओं और रुचियों का दमन करता है और शिक्षक का अनुचित बल-प्रयोग की स्वतन्त्रता देता है। अधिनायकतन्त्र (Dictatorship) में दमनात्मक अनुशासन का भले ही समर्थन किया जाय, पर प्रजातन्त्र में—जहाँ सबके अधिकार समान हैं और जहाँ सबको स्वतन्त्रता प्राप्त है, इस प्रकार के अनुशासन का कोई स्थान नहीं है। शिक्षक और शिष्य का सम्बन्ध प्रेम और सहानुभूति पर आधारित होना चाहिए, न कि पाशविक शक्ति पर। इसी शक्ति का प्रयोग इङ्गलैंड के प्रसिद्ध विद्यालय 'विंचेस्टर स्कूल' (Winchester School) में किया जाता था। उस देश के प्रसिद्ध उपन्यासकार एन्थानी ट्रालाप, जिसने वहाँ शिक्षा पाई थी, लिखा है--"विद्यालय-अनुशासन को बनाये रखने के लिये मुझे यह बात अनुचित जान पड़ती है कि स्कूल में शारीरिक दंड छात्र के दैनिक जीवन का स्थायी भाग हो।"

"That thrashings should have been possible at a school as a continual part of one's daily life, seems to me to argue a very ill condition of school discipline."—*Anthony Trollope.*

२. प्रभावात्मक अनुशासन : Impressionistic Discipline

(अ) प्रभावात्मक अनुशासन का अर्थ

Meaning of Impressionistic Discipline

प्रभावात्मक अनुशासन पर आदर्शवादियों (Idealists) द्वारा विशेष रूप से

बल दिया जाता है। उनका कहना है कि शिक्षक को अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बालकों में अनुशासन रखना चाहिए, न कि शारीरिक दण्ड से। शिक्षक अपनी योग्यता, चरित्र, आचरण, विचार और आदर्श के द्वारा उत्तम वातावरण का निर्माण करें। इस वातावरण में रहकर बालक स्वयं ही शिक्षक का अनुकरण करने लगेंगे। परिणामस्वरूप वे अपने चरित्र को अध्यापक के चरित्र के समान आदर्श बनाने का प्रयास करेंगे। छात्र शिक्षक के आदर्श चरित्र के सामने अपने-आप झुक जायेंगे और अपने को अनुशासित बनायेंगे। इस प्रकार शिक्षक के व्यक्तित्व से प्रभावित होने के कारण बालकों में अनुशासन की कोई समस्या उपस्थित नहीं होगी। यदि कभी हो भी जाय, तो शिक्षक प्रेम और सहानुभूति के माध्यम से बालक में सुधार का प्रयास करे। इस प्रकार के शिक्षकों में इङ्गलैंड 'उपिघम स्कूल' (Uppingham School) के हेडमास्टर ऐडवर्ड थ्रिंग (Edward Thring) और 'रगबी स्कूल' (Rugby School) के हेडमास्टर टॉमस ऐरनाल्ड (Thomas Arnold) के नाम अब भी गर्व से लिए जाते हैं।

(ब) प्रभावात्मक अनुशासन के पक्ष में तर्क

Arguments for Impressionistic Discipline

१ इस अनुशासन का आधार—शिक्षक और छात्र का पारस्परिक प्रेम, सम्मान और सहानुभूति हैं, जिनकी शिक्षा में बहुत आवश्यकता है।

२. इस अनुशासन में शिक्षक के चरित्र का बालकों पर इतना अच्छा प्रभाव पड़ता है कि वे स्कूल में और स्कूल से बाहर अच्छे से अच्छा आचरण करने का प्रयास करते हैं।

३. इस अनुशासन में न तो अत्यधिक दमन है और न अत्यधिक स्वतन्त्रता। वास्तव में यह दमनात्मक और मुक्त्यात्मक अनुशासनों के बीच का मार्ग अपनाता है।

४. इस अनुशासन में प्रतिष्ठा-सुझाव (Prestige Suggestion) का प्रमुख स्थान है, जो ज्ञान के अर्जन में बहुत सहायता देता है।

५. रॉस के अनुसार—"यह सत्य है कि प्रभाव का चरित्र पर बहुत गहरा असर पड़ता है। दूसरे शब्दों में प्रभाव अनुशासन उत्पन्न करता है। हम अपने नैतिक विचारों, दृष्टिकोणों और उत्साहों को सम्मानित व्यक्तियों के सम्पर्क से प्राप्त करते हैं।"

(स) प्रभावात्मक अनुशासन के विपक्ष में तर्क

Arguments against Impressionistic Discipline

१ अनुशासन का यह सिद्धान्त शिक्षक का [illegible] है। फलस्वरूप शिक्षक में अहंभाव उत्पन्न हो जाता [illegible] को छात्रों का चरित्र-निर्माता समझने लगता [illegible]

२. इस अनुशासन में बालक की रुचियों, इच्छाओं और आवश्यकताओं का कोई स्थान नहीं होता है। फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है।
३. इस अनुशासन में बालक अध्यापक के आदर्शों और विचारों का अनुकरण करता है। उसमें इतनी समझ नहीं होती है कि वे गुणों और अवगुणों में अन्तर कर सकें। परिणामतः बालकों में गुणों के साथ-साथ अवगुण भी आ जाते हैं।
४. इस अनुशासन में बालक अपनी मानसिक स्वतन्त्रता को खो देता है और केवल अपने शिक्षक की प्रतिलिपि (Copy) बनने का प्रयास करता है।
५. इस अनुशासन में तर्क, विचार और निर्णय का कोई स्थान नहीं है। अतः बालक में इन शक्तियों का विकास नहीं होता है। परिणाम यह होता है कि बड़े होने पर वह स्वतन्त्र रूप से विचार नहीं कर पाता है और दूसरों में अन्धी श्रद्धा (Blind Faith) रखने लगता है।
६. इस अनुशासन की व्यवस्था केवल काल्पनिक है, क्योंकि अच्छे विचार, चरित्र और आदर्श के शिक्षक मिलना असम्भव है।

निष्कर्ष

प्रभावात्मक अनुशासन को दमनात्मक अनुशासन से अच्छा अवश्य माना जा सकता है, पर ऐसी बात नहीं है कि यह बिल्कुल ही दोष रहित हो। हमने जिन दोषों का वर्णन ऊपर किया है, उनसे स्पष्ट हो जाता है कि प्रभावात्मक अनुशासन के सिद्धान्त को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इस अनुशासन का मुख्य आधार आदर्श शिक्षक है और शिक्षक का आदर्श होना असम्भव है, क्योंकि इस संसार में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है, जिसे आदर्श और दोष-मुक्त मान लिया जाय। ऐसी स्थिति में प्रभावात्मक अनुशासन के सिद्धान्त को स्वीकार करने में बहुत आपत्ति है। जब आदर्श शिक्षक ही नहीं हैं, तब प्रभावात्मक अनुशासन की बात करना बुद्धिमानी नहीं जान पड़ती है।

३. मुक्त्यात्मक अनुशासन Emancipationistic Discipline

(अ) मुक्त्यात्मक अनुशासन का अर्थ
Meaning of Emancipationistic Discipline

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक आधुनिक मनोवैज्ञानिक हैं। वे दमनात्मक और प्रभावात्मक अनुशासन को स्वीकार नहीं करते हैं। उनका कहना है कि दमनात्मक अनुशासन बालक के स्वाभाविक विकास को रोक देता है और उसमें मानसिक-ग्रन्थियाँ (Mental Complexes) उत्पन्न कर देता है। उनके अनुसार प्रभावात्मक

अनुशासन बालकों की विभिन्नताओं पर ध्यान न देकर उन पर शिक्षक के व्यक्तित्व को थोपने का प्रयास करता है। उनका कहना है कि बालकों को अपने विकास के लिए पूरी स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए। तभी वे अपनी जन्मजात प्रवृत्तियों, रुचियों और भावनाओं के अनुसार कार्य कर सकेंगे, और अपने व्यक्तित्व का उचित रूप से निर्माण कर सकेंगे। मुक्त्यात्मक सिद्धान्त के समर्थकों में रूसो (Rousseau) और स्पेंसर (Spencer) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(ब) मुक्त्यात्मक अनुशासन के पक्ष में तर्क

Arguments for Emancipationistic Discipline.

१. इस अनुशासन में बालक को अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता होती है। यदि वह कोई गलत काम करता है, तो प्रकृति उसे स्वयं दण्ड देती है। फलस्वरूप बालक में अपने आप अनुशासन के गुणों का विकास हो जाता है।

२. इस अनुशासन में बालक का किसी प्रकार दमन नहीं किया जाता है। फलत. उसके व्यक्तित्व का स्वाभाविक विकास होता है।

३. इस अनुशासन में बालक की इच्छाओं और प्रवृत्तियों पर कोई अंकुश नहीं लगाया जाता है। परिणामस्वरूप वह मानसिक ग्रंथियों और मानसिक रोगों से मुक्त रहता है।

४. इस अनुशासन में बालक स्वाभाविक ढंग से उत्तम गुणों को ग्रहण करता है, जिससे उसमें आत्म-अनुशासन (Self-Discipline) की भावना उदय होती है।

५. "स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है"—("Freedom is our birth right")। अत. बालक को परतन्त्रता के वातावरण में रखना किसी प्रकार उचित नहीं है।

६. वर्ड्सवर्थ (Wordsworth) के अनुसार—"बच्चा वैभव के बादलों पर कदम रखता हुआ स्वर्ग से पृथ्वी पर आता है" ("Trailing clouds of glory do we come from God")। ऐसी दशा में यह उचित नहीं है कि हम ईश्वर के प्रतिरूप को जंजीरों से बाँध दें।

(स) मुक्त्यात्मक अनुशासन के विपक्ष में तर्क

Arguments against Emancipationistic Discipline

१. बालक कुछ पाशविक प्रवृत्तियों के साथ जन्म लेता है। यदि दमन न किया जाय और बालक को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी जाय, तो वह निश्चय रूप से समाज-विरोधी कार्य करने लगेगा।

२. बालकों को निर्देशन की आवश्यकता होती है, क्योंकि उनमें इतनी समझ नहीं होती है कि वे अच्छी और बुरी बातों में अन्तर कर सकें।
३. बालकों को स्वतन्त्रता देने का अर्थ है—विद्यालय में अव्यवस्था और अनुशासनहीनता को प्रोत्साहित करना।
४. बालकों में आत्म-नियन्त्रण (Self-Control) और आत्म-अनुशासन (Self-Discipline) का अभाव होता है। अतः उनको पूरी तरह से स्वतन्त्र छोड़ देना—उनके और दूसरों के लिए हितकर नहीं है।
५. बालक स्वतन्त्रता का अर्थ अपने अधिकारों के उपभोग में लगाते हैं। अतः वे अपने कर्त्तव्यों के प्रति ध्यान नहीं देते हैं।

निष्कर्ष

हमने मुक्त्यात्मक अनुशासन के पक्ष और विपक्ष में कुछ तर्क ऊपर दिये हैं। इनसे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बालकों को स्वतन्त्रता अवश्य देनी चाहिए, पर यह स्वतन्त्रता निश्चित सीमाओं के अन्दर होनी चाहिए। स्वतन्त्रता उनके व्यक्तित्व के विकास के लिये आवश्यक है, पर यदि स्वतन्त्रता निर्देशित नहीं है, तो यह विकास गलत दिशा में हो सकता है। बालकों को स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए या नहीं, या कितनी मिलनी चाहिये? यह प्रश्न अति विवादपूर्ण है। इस सम्बन्ध में अपने स्वयं के अनुभव के आधार पर मिसेज रेवर्ट ने लिखा —"जैसे-जैसे हम किशोरावस्था की ओर बढ़े वैसे-वैसे हमारे ऊपर लगाये गये बंधन अधिक से अधिक कष्टकारी होते गये, क्योंकि उन्होंने हमको स्वाभाविक रूप से उसी प्रकार बढ़ने से रोक दिया, जिस प्रकार चीनी लड़की के पैरों को बाँधकर बढ़ने से रोक दिया जाता है। मेरा स्वयं का सिद्धान्त यह है कि बच्चों के दाँतों या नैतिकता को मुक्त छोड़ देना चाहिये, बजाय इसके कि इनके बारे में अधिक सावधानी रखी जाय। पर यह ऐसी बात है, जिसके बारे में कभी भी ठीक विचार व्यक्त करना असम्भव है।"

"As we grew towards adolescence the restrictions became steadily more paniful, for they prevented us from growing in the natural way, just as the binding of the feet of a Chinese girl prevents growth My own private theory is, that it is better to let children's teeth or morals suffer from *Laisser aller*, than to be too vigilant about them. But this is a matter in which it is impossible ever to be in the right"—*Mrs. Gwen Raverat*

अनुशासन के विभिन्न सिद्धान्तों का समन्वय

Synthesis of the Various Theories of Discipline

अनुशासन के तीन सिद्धान्त हैं—दमनात्मक, प्रभावात्मक और मुक्त्यात्मक। प्राचीन और मध्य-काल में शिक्षा-जगत् में केवल 'दमनात्मक सिद्धान्त' का बोलबाला

था। आज के युग मे इसकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। फिर भी ससार के सभी देशो के विद्यालयों मे रचनात्मक अनुशासन थोड़ी-बहुत मात्रा मे अवश्य पाया जाता है। यह कहा जा सकता है कि किसी भी देश के किसी भी विद्यालय मे अनुशासन के किसी एक सिद्धान्त का पूर्ण रूप मे अनुसरण किया जाता है। जो अनुशासन दिखाई देता है वह रचनात्मक, प्रभावात्मक और मुक्त्यात्मक सिद्धान्तो का समन्वित रूप है। कहने का अभिप्राय यह है कि शिक्षक समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार तीनो सिद्धान्तो का अनुसरण करता है। कभी वह शारीरिक दड का भय दिखाकर छात्रो का दमन करता है। आवश्यकता पड़ने पर वह मार-पीट का सहारा लेता है। इसके साथ ही वह उत्तम विचारो और आदर्शो से छात्रो को प्रभावित करने का भी प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त वह मनोवैज्ञानिक विचारधारा को स्वीकार करके छात्रो को थोड़ी-बहुत स्वतन्त्रता भी देता है।

यदि हम तनिक गम्भीरता पूर्वक विचार करें, तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचने मे कठिनाई नही होगी कि रचनात्मक सिद्धान्त की अपेक्षा दूसरे दोनो सिद्धान्त कही अच्छे हैं। इसका कारण यह है कि रचनात्मक अनुशासन बालक के स्वाभाविक विकास को रोक देता है और उसमे भावनात्मक जटिलतायें उत्पन्न करता है। इसका परिणाम यह होता है कि बालक अनुशासन मे रहने की अपेक्षा विद्रोही बन जाता है।

इसी प्रकार मुक्त्यात्मक सिद्धान्त का भी पूर्ण रूप मे अनुसरण नही किया जा सकता है, क्योकि इससे बालक को इतनी स्वतन्त्रता मिल जाती है कि वह उसके लिए लाभदायक सिद्ध नही होती है। बालक की आयु थोड़ी होती है। उसका मानसिक और सामाजिक विकास उस आयु तक नही हो पाता है। ऐसी दशा मे वह स्वतन्त्रता का अनुचित उपयोग कर सकता है। अत यह आवश्यक है कि बालको को पूरी स्वतन्त्रता न दी जाकर नियन्त्रित स्वतन्त्रता दी जाय।

अधिकाश शिक्षाविद् दमनात्मक और मुक्त्यात्मक अनुशासन के बजाय प्रभावात्मक अनुशासन को अधिक अच्छा मानते हैं। उनका कहना है कि छात्र अपने शिक्षक के विचारो और आदर्शो का अनुकरण करके विनम्र और चरित्रवान् बन जाता है। जब बालक पर अध्यापक के उत्तम चरित्र का प्रभाव पड़ता है, तब उसमे अनुशासन की भावना अपने-आप उत्पन्न हो जाती है। पर इस सिद्धान्त का भी पूर्ण रूप मे स्वीकार नही किया जा सकता है। कारण यह है कि शिक्षक के व्यक्तित्व से बिल्कुल अलग प्रत्येक छात्र का अपना व्यक्तित्व होता है। अत शिक्षक का अनुकरण करने से उनके व्यक्तित्व के विकास मे बाधा पड़ती है।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि स्कूलो मे दमनात्मक अनुशासन का कोई स्थान नही होना चाहिए। उनमे प्रभावात्मक और मुक्त्यात्मक-सिद्धान्तो [illegible]न्वित रूप का अनुसरण किया जाना चाहिए। केवल यही रूप [illegible] [illegible]न स्थापित करने और उसको बनाये रखने मे लाभप्रद सिद्ध हो हो

अनुशासन के स्वरूप
Forms of Discipline

शिक्षा-शास्त्रियों द्वारा अनुशासन के निम्नलिखित चार स्वरूप या प्रकार बताये जाते हैं —

१. प्राकृतिक अनुशासन (Natural Discipline)
२. आधिकारिक अनुशासन (Authoritative Discipline)
३. सामाजिक अनुशासन (Social Discipline)
४. वैयक्तिक अनुशासन (Personal Discipline)

१. प्राकृतिक अनुशासन : Natural Discipline

(अ) प्राकृतिक अनुशासन का अर्थ : Meaning of Natural Discipline

प्राकृतिक अनुशासन के समर्थक रूसो (Rousseau) और स्पेन्सर (Spencer) ... उनका कहना था कि बालक को प्रकृति के ऊपर छोड़ देना चाहिए। बालक को ...ान का अवसर दिया जाना चाहिए कि वह स्वयं कार्य करे। ऐसी दशा में वह ... स्वयं के अनुभव से ज्ञान प्राप्त करेगा और फलस्वरूप उसमें स्वाभाविक ...शासन (Natural Discipline) का विकास होगा। यदि वह प्रकृति के नियमों ...नुसार कार्य करेगा, तो उसे सफलता मिलेगी, और विपरीत कार्य करने पर उसे ...ता नहीं मिलेगी। साथ ही प्रकृति उसे अपने नियमों के विरुद्ध कार्य करने के ...दण्ड देगी। उदाहरणार्थ—यदि बालक आग को छुएगा, तो उसका हाथ जल ...। यदि वह जाड़े में पानी से भीगेगा, तो बुखार आ जायगा।

...प्राकृतिक अनुशासन के पक्ष में तर्क
...Arguments for Natural Discipline

१. इस अनुशासन में बालक अपने स्वयं के अनुभव से ज्ञान प्राप्त करता है। इस प्रकार प्राप्त किया हुआ ज्ञान स्थायी होता है।
२. इस अनुशासन में बालक अपने स्वयं के अनुभव से कार्यों के अच्छे और बुरे परिणामों का ज्ञान प्राप्त करता है।
३. यह अनुशासन बाह्य प्रभाव द्वारा स्थापित नहीं किया जाता है। इसे स्थापित करने में प्राकृतिक अवस्था का मुख्य स्थान है। बालक को अपने कार्य के अनुसार फल मिलता है।
४. इस अनुशासन में बालक को कार्य करने की पूरी स्वतन्त्रता होती है। अतः यह अनुशासन बालक के प्राकृतिक और स्वाभाविक विकास में योग देता है।

(ब) प्राकृतिक अनुशासन के विपक्ष में तर्क
Arguments against Natural Discipline

१ बालक मे इतना ज्ञान नहीं होता है कि वह प्रकृति के जटिल नियमों को जान सके। यदि उसे धूप में खेलना अच्छा लगता है, तो वह खेलेगा, भले ही ऐसा करने से उसे बार-बार शारीरिक कष्ट हो।

२. बालक अपने अनुभव से अपने कार्यों के बुरे परिणामों का ज्ञान अवश्य लेता है, पर वह उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देता है। चाकू से खेलने से उसका हाथ भले कट चुका हो, पर यदि उसे चाकू फिर मिल जायगा तो वह उससे फिर खेलेगा।

३ जो दण्ड मनुष्य के द्वारा किसी अपराध के लिए दिया जाता है, वह मानवतापूर्ण और अपराध के रूप के अनुकूल होता है, पर प्रकृति द्वारा दिया जाने वाला दण्ड कभी-कभी बहुत भयकर होता है।

४ बालक को अत्यधिक स्वतन्त्रता देने से उसकी पाशविक प्रवृत्तियों का विकास होता है।

निष्कर्ष

हमने प्राकृतिक अनुशासन के पक्ष और विपक्ष मे जो तर्क दिये हैं, उनसे स्पष्ट हो जाता है कि इसको पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। बालक को पूर्ण स्वतन्त्रता देना किसी भी प्रकार उचित नहीं जान पड़ता है। उसकी स्वतन्त्रता निश्चित सीमा के अन्दर होनी चाहिए। साथ ही उसे यह बताने वाला होना चाहिये कि कौन-सा प्रकृति विरुद्ध कार्य करने से उसे कितनी हानि हो सकती है। ऐसा न करने से महान् अनर्थ हो सकता है। नदी या तालाब के तट पर खड़ा हुआ बालक दूसरे व्यक्तियो को उसमे तैरने के लिये कूदता देखकर उनका अनुकरण कर सकता है। इसका परिणाम बालक के लिए भयकर हो सकता है। वह अपनी जान खो सकता है। अतः उसे हर कार्य का परिणाम अपने अनुभव द्वारा सीखने की स्वतन्त्रता नहीं दी जानी चाहिए। प्राकृतिक अनुशासन को केवल उसी दशा मे स्वीकार किया जा सकता है, जब बालक की स्वतन्त्रता को सीमित और उसके कार्यों को थोड़ा-बहुत निर्देशित किया जाय।

२. आधिकारिक अनुशासन : Authoritative Discipline

(अ) आधिकारिक अनुशासन का अर्थ
Meaning of Authoritative Discipline

आधिकारिक अनुशासन में बालक अपने से बड़ो के अधिकार में रहता है। उसे अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता न होकर, बड़ों के आदेशों के

अनुसार कार्य करना पड़ता है। घर में वह अपने माता-पिता, बड़े भाई-बहनों आदि की आज्ञाओं को मानकर काम करता है। उसे घर के नियमों का पालन करना पड़ता है। इसी प्रकार जब वह स्कूल जाता है तब वहाँ के नियमों का पालन करता है और शिक्षक की आज्ञा को मानकर काम करता है। इस प्रकार अपने से बड़ों और शिक्षक के अधिकार बालक में आधिकारिक अनुशासन की स्थापना करते हैं।

(ब) आधिकारिक अनुशासन की आलोचना
Criticism of Authoritative Discipline

आधिकारिक अनुशासन में गुण की अपेक्षा दोष अधिक हैं। यह ठीक है कि आधिकारिक अनुशासन बालक को घर और स्कूल के नियमों के पालन की आदत डालकर उसे समाज और राज्य के नियमों का पालन करने के लिए तैयार करता है। पर कभी-कभी माता-पिता और शिक्षक की कठोरता के कारण आधिकारिक शासन इतना प्रबल हो जाता है कि बालक को तनिक भी स्वतन्त्रता नहीं मिलती है। साथ ही वह अधिकार के बोझ से बिल्कुल दब जाता है। इन दोनों बातों का परिणाम यह होता है कि उसका स्वाभाविक विकास रुक जाता है। इसके अतिरिक्त उसमें हीनता की ग्रन्थि (Inferiority Complex) भी उत्पन्न हो जाती है। इन बातों को देखते हुए आधिकारिक अनुशासन का समर्थन नहीं किया जा सकता है।

३. सामाजिक अनुशासन : Social Discipline

(अ) सामाजिक अनुशासन का अर्थ : Meaning of Social Discipline

बालक जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसमें सामाजिक अनुशासन का विकास होता जाता है। बालक विभिन्न सामाजिक कार्यों को दण्ड या अधिकार के भय से नहीं करता है। वह उनको प्रशंसा या निन्दा के कारण भी नहीं करता है। जिन कार्यों को करने से उसे सामाजिक प्रशंसा मिलती है, उनको वह करता है। पर जिन कार्यों के फलस्वरूप उसे निन्दा का भय रहता है, उनको नहीं करता है।

(ब) सामाजिक अनुशासन की आलोचना : Criticism of Social Discipline

बालक के जीवन में सामाजिक अनुशासन का बहुत अधिक महत्त्व है। सामाजिक अनुशासन उसे सफल सामाजिक प्राणी बनने में सहायता देता है। यही कारण है कि आधुनिक विचारधारा के अनुसार स्कूल को समाज का लघु रूप (Miniature Society) या समाज का प्रतिबिम्ब माना जाता है। इस बात पर बल दिया जाता है कि बालकों को विद्यालय में विभिन्न सामाजिक कार्यों को करने का पूरा अवसर दिया जाय। इन कार्यों को करके ही उनमें सामाजिक अनुशासन का संचार हो सकता है और वे सफल सामाजिक प्राणी बन सकते हैं।

४. वैयक्तिक अनुशासन : Personal Discipline

(अ) वैयक्तिक अनुशासन का अर्थ : Meaning of Personal Discipline

वैयक्तिक अनुशासन को 'आत्म-अनुशासन' (Self-Discipline) या 'आत्म-नियन्त्रण' (Self-Control) कहा जा सकता है। यह अनुशासन उस समय प्रारम्भ होता है, जब व्यक्ति पूर्ण रूप से परिपक्व हो जाता है। इस अवस्था मे पहुँचने पर ही व्यक्ति का पूर्ण मानसिक विकास होता है और वह अच्छे और बुरे मे अन्तर समझने लगता है। उसमें 'आत्म-अनुशासन' का इतना विकास हो जाता है कि वह अपने कार्यों पर पूरी तरह से नियन्त्रण रख सकता है। वह बुरे कार्यों को इसलिए नही करता है, क्योंकि वह समाज से डरता है, वरन् इसलिये कि वह दूसरो की दृष्टि में निम्न नहीं समझा जाना चाहता है। उसमे अच्छा व्यक्ति बनने की इच्छा होती है। इस इच्छा को पूरा करने मे आत्म-नियन्त्रण उसे सहयोग देता है।

(ब) वैयक्तिक अनुशासन की आलोचना Criticism of Personal Discipline

मनुष्य के जीवन मे वैयक्तिक अनुशासन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस अनुशासन का विकास करके ही वह जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है और समाज मे ऊँचा उठ सकता है। अत. यह आवश्यक है शिक्षक बालको मे वैयक्तिक अनुशासन की भावना को विकसित करे। ऐसा करके वह उनके भावी जीवन का वास्तविक निर्माण कर सकता है।

अनुशासनहीनता के कारण

Causes of Indiscipline

अनुशासनहीनता कक्षा मे और कक्षा के बाहर—दोनो जगहो मे पाई जाती है। अतः इनके कारणों पर अलग-अलग विचार करना ही उचित होगा। यथा—

(अ) कक्षा में अनुशासनहीनता के कारण

Causes of Indiscipline in the Class-Room

१. कक्षा मे बालको की व्यक्तिगत विभिन्नताओ पर ध्यान नहीं दिया जाता है। फलत उनका ध्यान पढ़ने मे नही लगता है और वे कोई-न-कोई शरारत करने लगते हैं।
२. कुछ बालको मे अपने परिवार या मित्रो के कारण बुरी आदतें पड़ जाती हैं। ये आदतें कक्षा मे अनुशासनहीनता का कारण बनती हैं।
३. कुछ अध्यापको की वेश-भूषा या पढ़ाने का ढग विचित्र होता है। इसलिए छात्रो का ध्यान या तो उनकी वेश-भूषा की ओर रहता है या उनके पढ़ाने की विधि से उन्हें पाठ मे नीरसता मिलती है।

४. कुछ शिक्षक दमन-सिद्धान्त का अनुसरण करके कक्षा में अनुशासन बनाये रखने का प्रयास करते हैं। यह प्रयास कृत्रिम होने के कारण बहुत समय तक सफल नहीं होता है।
५. जब कक्षा मे आवश्यकता से अधिक छात्र हो जाते हैं, तब शिक्षक के लिए उन सब पर दृष्टि रखना असम्भव हो जाता है। इससे बालकों को शरारत करने का अवसर मिलता है।
६. कभी-कभी कक्षा की दशायें ठीक नहीं होती हैं। उनमे प्रकाश का अभाव होता है या गर्मी मे पंखा नहीं होता है या फ़रनीचर कम होता है या छत पर टीन होने के कारण पानी बरसते समय तेज आवाज होती है। ये सभी बातें कक्षा मे अनुशासनहीनता को जन्म देती हैं।
७. बालको को जो पाठ्य-क्रम पढ़ाया जाता है, उनमे अनुशासन-सम्बन्धी कोई विषय नहीं होता है।
८. यदि विद्यालय की स्थिति अच्छी नहीं है, तो कक्षा मे अनुशासनहीनता का होना स्वाभाविक है। उदाहरणार्थ—यदि विद्यालय नगर के मध्य मे किसी सडक या गली के पास है, तो उस पर आने-जाने वाले व्यक्ति, जलूस, लाउडस्पीकर आदि बच्चो का ध्यान आकर्षित करते हैं और उन्हे कोई-न-कोई शरारत सूझने लगती है।

(ब) कक्षा के बाहर अनुशासनहीनता के कारण

Causes of Indiscipline outside the Class-Room

१. घर मे माता-पिता, सम्बन्धी आदि बालको की अनुशासनहीनता के कारण हैं। कुछ घरो मे बालक उनसे बहुत-सी बुरी बातें सुनते हैं; जैसे-चोरबाजारी, धोखेबाजी, पड़ोसी के प्रति बुरा व्यवहार, स्वार्थ, धन-लोलुपता आदि। सुनते-सुनते बालक स्वयं इनका अनुकरण करने लगते हैं। कुछ घरो मे वे अपने पिता, भाई आदि को सिगरेट पीते हुए देखते हैं, जिससे उनमे भी यह आदत पड जाती है।
२. देश के राजनैतिक दल छात्रो को अनुशासनहीन बनाने मे योग देते हैं। महात्मा गांधी ने स्वतन्त्रता सग्राम के समय छात्रों से विदेशियों के विरुद्ध काम लिया। तब से लेकर आज तक यह परम्परा चली आ रही है, पर अब इसका रूप बदल गया है। अब विभिन्न राजनैतिक दल एक-दूसरे के विरुद्ध कार्य करने मे छात्रों से सहायता लेते हैं।
३ आज का शिक्षक भारत के पुराने आदर्श से बहुत नीचे गिर गया है। साधारणत उसका न तो चरित्र ही अच्छा होता है, और न उसे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान ही होता है। ये दोनो बातें छात्रो की अनुशासन-हीनता मे योग देती हैं।

४. आज के अध्यापक की आर्थिक स्थिति बहुत खराब है। इसलिए आज के युग मे, जिसमे धन ही सब कुछ है, उसका कोई सामाजिक महत्त्व नहीं रह गया है। समाज उसे गिरी हुई दृष्टि से देखता है। यही बात छात्रो के बारे मे भी कही जा सकती हैं। अतः उनसे यह आशा करना व्यर्थ है कि वे अध्यापक के अनुशासन मे रहें।

५. कॉलिजो और विश्वविद्यालयो मे अनुशासनहीनता के कारण—उपकुलपति, प्रिंसिपल, प्रॉक्टर आदि हैं। वे छात्रो द्वारा की जाने वाली हड़तालो, मारपीटो और परीक्षा-भवन मे नक़ल के बारे मे जानते हैं। फिर भी वे छात्रो को क्षमा करते हैं। परिणाम यह होता है कि छात्रो मे अधिक खराब काम करने का साहस पैदा होता है। वे अनुशासन के सब बन्धनों को तोडकर उनको करते हैं, क्योकि वे जानते हैं कि उनको कोई दंड नही मिलेगा।

६ हमारी दोषपूर्ण शिक्षा-पद्धति छात्रो की अनुशासनहीनता का एक मुख्य कारण है। बालको को जिन विषयों की शिक्षा दी जाती है, वे न तो उपयोगी हैं और न समयानुसार।

७. वर्तमान परीक्षा-प्रणाली अनुशासनहीनता म योग देती है। बहुत से छात्र नकल करके परीक्षा मे पास हो जाते हैं। उसके बाद वे अपने काले कारनामे को दूसरो को बडे गर्व से सुनाते हैं। इसका अन्य छात्रो पर बुरा प्रभाव पडता है, क्योकि वे भी अगली परीक्षा में नक़ल करने की विभिन्न विधियो का प्रयोग करते हैं।

८. नैतिक शिक्षा का अभाव अनुशासनहीनता का कारण है। इस शिक्षा के *अभाव मे बालक अच्छी और बुरी बातों के अन्तर को नही जान पाते* हैं परिणाम यह होता है कि यदि बुरी बात से भी उनकी भलाई होती है। तो वे उसको अच्छी समझते हैं।

९. आज के विद्यालय शिक्षा की दुकानें हैं, जहाँ ज्ञान पैसे से प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा और ज्ञान के प्रति यह अनुचित दृष्टिकोण अनुशासनविहीनता के लिए उत्तरदायी है।

१०. अनुशासनहीनता के अन्य कारण हैं—सैनिक शिक्षा, शारीरिक शिक्षा तथा श्रम के महत्त्व की शिक्षा का अभाव, अनुचित विद्यालय-भवन, अध्यापकों की कमी और दूषित सामाजिक वातावरण।

विद्यालयो में अनुशासन रखने के लिए सुझाव

Suggestions for Maintaining Discipline in Schools

रेन का कथन है—"जिस प्रकार सेना, नौसेना या राज्य के अस्तित्व के लिए अनुशासन पहली आवश्यकता और पहली शर्त है, उसी प्रकार स्कूल के लिए भी है।"

"As in the Army, the Navy, or the State, so in the School the pre-requisite, the very condition of existence is discipline"

—*Wren.*

जब विद्यालयों के लिए अनुशासन इतना महत्त्वपूर्ण है, तब विद्यालयों में उसको बनाये रखने की भी महान् आवश्यकता है। ऐसा करने के लिए डब्ल्यू० पी० शोरिंग (W. P. Shoring) ने तीन प्रकार के अनुशासनों का प्रयोग बताया है— (१) सृजनात्मक (Constructive), (२) प्रतिबन्धात्मक (Preventive), और (३) उपचारात्मक (Remedial)। हम इन पर प्रकाश डाल रहे हैं :—

१. सृजनात्मक अनुशासन : Constructive Discipline

सृजनात्मक अनुशासन का अर्थ यह है कि बालकों से ऐसी बातें कही जायें और ऐसे काम करवाये जायें, जिनसे उनमें अपने आप अनुशासन की भावना का सृजन या उदय हो। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए :—

१. बालकों को निषेधात्मक निर्देश (Contra Suggestions) नहीं देने चाहिये। उनसे यह नहीं कहना चाहिये—"शोर मत करो", "झुक कर मत बैठो", बल्कि कहना चाहिये—"चुप रहो", "सीधे बैठो"।
२. बालकों में सामाजिक अनुशासन का विकास किया जाना चाहिये, जिससे कि वे अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्त्तव्यों को भी समझ सकें।
३. विद्यालय में जो भी कार्यक्रम आयोजित किये जायें, उनमें छात्रों का अधिक से अधिक सहयोग होना चाहिये।
४. शिक्षक को बालक और उनके व्यक्तित्व का आदर करना चाहिये।
५. बालकों की रुचियों, इच्छाओं और आवश्यकताओं की ओर पूर्णरूप ध्यान दिया जाना चाहिये और उन्हें पूर्ण करने का प्रयत्न किया जाना चाहिये।
६. विद्यालय की परम्परायें और आदर्श सृजनात्मक अनुशासन के अनुरूप होने चाहिये।
७. बालकों को अधिक से अधिक सहगामी क्रियाओं (Co-curricular Activities) में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये।
८. शिक्षक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होना चाहिये, जिससे कि वह छात्रों को प्रभावित कर सके।
९. बालकों को समय के उचित उपयोग की शिक्षा दी जानी चाहिये।
१०. बालकों को सृजनात्मक खेलों में भाग लेने के लिये प्रोत्साहन देना चाहिये।

२. प्रतिबंधात्मक अनुशासन Preventive Discipline

प्रतिबंधात्मक अनुशासन का अर्थ है कि बालको पर ऐसे प्रतिबंध या अंकुश लगाये जायें, जिससे कि उनमे अनुशासनहीनता उत्पन्न न होने पाये। इस सम्बन्ध मे निम्नांकित कार्य किये जाने चाहिये :—

१ शिक्षक को अपनी कक्षा के प्रत्येक बालक का नाम याद होना चाहिये।
२ पढ़ाते समय शिक्षक को इधर-उधर या नीचे की ओर न देखकर, सीधे छात्रो की ओर देखना चाहिये।
३. बालको को बैठने के लिये काफ़ी और उचित प्रकार का स्थान होना चाहिये।
४ जो बालक पढ़ने या सुनने मे ध्यान न दे रहे हो, उन्हें चेतावनी दे देनी चाहिये।
५. पढ़ाते समय शिक्षक को रोचक विधि का प्रयोग करना चाहिये।
६. शिक्षक को बालको मे यह भावना उत्पन्न कर देनी चाहिये कि उसको उनसे पूर्ण सहानुभूति है।
७. यदि कोई बालक अध्यापन के कार्य मे बाधा डाले, तो शिक्षक को उसे प्रेम और शान्ति से समझा देना चाहिये।
८ पढ़ाते समय शिक्षक को कक्षा म इधर-उधर नही घूमना चाहिये।
९ यदि शिक्षक को अनुशासनहीनता प्रारम्भ होने का तनिक भी सदेह हो, तो उस उसको वही रोक देना चाहिये।
१० शिक्षक को न तो बालक को आवश्यकता से अधिक डाँटना चाहिये और न उसकी कड़ी आलोचना करनी चाहिये।
११. सत्र (Session) क प्रारम्भ मे शिक्षक को दृढ़ता और अनुशासन पर विशेष बल देना चाहिये, जिससे कि नये छात्र उसकी प्रकृति से परिचित हो जायें।
१२. विद्यालय का वातावरण स्वच्छ, सुन्दर और आकर्षक होना चाहिये।

३. उपचारात्मक अनुशासन : Remedial Disicipline

उपचारात्मक अनुशासन का अर्थ है—अनुशासनहीन बालक का उपचार करना या उसको सुधारना। इसके लिये पहले अनुशासनहीनता के कारणो को जानना चाहिये। उसके बाद उन कारणो को दूर करना चाहिये। इन दोनो बातो को 'निदान' और 'उपचार' (Diagnosis and Treatment) कहा जाता है। बालको मे सुधार करने के लिये निम्नलिखित बातो की ओर विशेष ध्यान देना चाहिये :—

१. जब तक अपराधी बालक का उपचार न हो जाय, तब तक उसे दूसरे बालको से अलग रखना चाहिये।

3. पूछताछ करने से पहले बालक को अपने अपराध के बारे में कुछ कहने का अवसर दिया जाना चाहिए।
4. अपराधी बालक से उसके अपराध के बारे में बार-बार बातें नहीं करनी चाहिए।
5. बालक को उसके अपराध के लिए जो भी दण्ड दिया जाय, वह तरह से सोच समझ कर दिया जाय।
6. बालक से यह कभी नहीं कहा जाना चाहिए कि वह अपने अपराध के लिए क्षमा माँगे।
६. दंड दिये जाने के बाद बालक से उसके अपराध के बारे में कोई बात नहीं की जाना चाहिए।
७. बालक के अपराध और दंड का वर्णन सब छात्रों के सामने नहीं किया जाना चाहिए।
८. यदि अनुशासन भंग करने वाले छात्र का पता न लग पाए, तो कक्षा के सब छात्रों से अनुरोध किया जाना चाहिए कि वे फिर ऐसा कार्य न करें।
९. यदि कक्षा के कुछ ही छात्र शैतान हों, तो केवल उन्हीं को दंड दिया जाना चाहिए, न कि उनके कारण पूरी कक्षा को।
१०. बालक में सुधार करने के लिये उसके माता-पिता का सहयोग प्राप्त किया जाना चाहिये।
११. अपराधी बालक को डराना और धमकाना नहीं चाहिये।
१२. दंड देते समय बालक का अपमान या उपहास नहीं करना चाहिये।
१३. बालकों द्वारा कभी-कभी किये जाने वाले छोटे उच्छृंखल कार्यों को अनुशासनहीनता नहीं समझा जाना चाहिये।
१४. बालक को जो दण्ड दिया जाय, वह उसके अपराध के स्वरूप के अनुसार होना चाहिये।
१५. यदि शिक्षक स्वयं किसी बालक की अनुशासनहीनता का उपचार न कर सके, तो उसे अपने से अधिक अनुभवी शिक्षकों का सहयोग प्राप्त करना चाहिये।
१६. बालक का सुधार करने के लिये जिस उपचार को अपनाया जाय, वह उसकी समझ में पूरी तरह से आ जाना चाहिये।
१७. बालक को उसके अपराध का तब तक दंड नहीं दिया जाना चाहिये, जब तक शिक्षक को उसके बारे में पूरा विश्वास न हो जाय।
१८. शिक्षक को यह जानने का प्रयास करना चाहिये कि बालक ने अपराध क्यों किया है।

१६ यदि अनुशासन भङ्ग करने वाले छात्र कोई अच्छा कार्य करते हैं, तो अध्यापक को उनकी प्रशंसा करनी चाहिये।

२०. बालक को दण्ड देने के बाद हर प्रकार की सावधानी रखी जानी चाहिये, जिससे कि वह कोई अनुचित कार्य न कर बैठे।

उपसंहार

'स्वतन्त्रता' और 'अनुशासन' का एक-दूसरे से अटूट सम्बन्ध है। छात्रों को निश्चय रूप से स्वतन्त्रता मिलनी चाहिए, उनकी प्रवृत्तियों का दमन नहीं किया जाना चाहिए, उनको भय दिखाकर अधिकार में नहीं रखा जाना चाहिए। प्रजातन्त्र के नागरिकों के रूप में छात्रों को स्वतन्त्रता का उपभोग करने का पूर्ण अधिकार है। पर हर अधिकार के साथ कर्त्तव्य जुड़ा हुआ है। यदि स्वतन्त्रता छात्रों का 'जन्मसिद्ध अधिकार' मान लिया जाय, तो उनका कुछ कर्त्तव्य भी है। यह कर्त्तव्य है—अनुशासन में रहना, विद्यालय के नियमों का पालन करना, गुरुजनों के आदेशों को मानना। पर दुःख की बात है कि स्वतन्त्र भारत के छात्रों को अपने अधिकार का तो पाठ याद है, पर कर्त्तव्य का नहीं। यही कारण है कि देश में उनकी अनुशासनहीनता दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है, जिसने सभी समझदार लोगों के लिए एक विकट समस्या उपस्थित कर दी है।

छात्रों की अनुशासनहीनता के बारे में २७ जून, १९६५ के "Sunday-Standard" में एक लम्बा सम्पादकीय लेख निकला था। इसके अनुसार भारत में १९६४ में शिक्षा-संस्थाओं में २६१ हड़तालें हुई। इन हड़तालों के विभिन्न कारण थे, जैसे—शिक्षा की सुविधाओं का अभाव, अधिक फीस, छात्र-यूनियन की बातें। सम्पादक के अनुसार इन हड़तालों का प्रमुख कारण यह है कि हमारी शिक्षा-व्यवस्था का रूप ठीक नहीं है। इनके अतिरिक्त छात्रों और शिक्षकों में सम्पर्क नहीं है, शिक्षा समाप्त करने के बाद छात्र अपनी जीविका का उपार्जन करने में सफल नहीं होते हैं और राजनीति में लड़कों को खींचकर लाया जाता है। अनुशासनहीनता को दूर करने के लिये सम्पादक ने बताया —"सबसे अच्छा उपाय यह है कि बड़े लोग छात्रों के सामने अच्छे उदाहरण प्रस्तुत करें और उनकी शक्ति को सार्वजनिक क्षेत्र की ओर मोड़ें जहाँ वे राष्ट्र के हित के लिये निर्माणकारी कार्य करें और पूर्ण रूप से सुसज्जित संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करें। देश के नवयुवकों को ग़लत मार्ग पर नहीं जाने देना चाहिये और छात्रों में अनुशासन और सुरक्षा की भावना को उत्पन्न करने के लिये किसी भी व्यय को अधिक नहीं समझना चाहिये।"

"The best remedy is, the elders should set better examples, and channelise their energy to constructive effort in the field of public affairs to the advantage of the nation, and to academic pursuits in fully equipped institutions. The youth must not be

allowed to go astray and no cost should be considered too high to bring discipline and a sense of security among students."

Editorial *Sunday Standard, June 27, 1965.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Discuss briefly the relationship between freedom and discipline.
2. Examine the various theories of punishment. Which of them is most suited to our schools and why ?
3. Throw light on the various forms of discipline. Which of them, in your opinion, are most necessary for Indian students and why ?
4. Examine, with particular reference to Indian schools, the causes of indiscipline and suggest measures to overcome them.
5. What is the role of freedom and discipline in the education of a child ? How does a progressive school incorporate both in its set-up ?
6. Give a short account of the modern views on 'Freedom and

खण्ड चार

- शिक्षा के साधन
  Agencies of Education
- विद्यालय
  The School
- घर या परिवार
  The Home or The Family
- चर्च या धर्म
  The Church or The Religion
- समुदाय
  The Community
- राज्य
  The State.

१६

शिक्षा के साधन

AGENCIES OF EDUCATION

"व्यापक अर्थ में सम्पूर्ण वातावरण व्यक्ति की शिक्षा का साधन है। पर इस वातावरण में कुछ तत्त्व अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, जिनका शिक्षा के विशेष सम्बन्ध होता है; जैसे—घर, विद्यालय, चर्च, प्रेस, व्यवसाय, सार्वजनिक जीवन, मनोरंजन और प्रिय कार्य।"

"The whole of the environment is the instrument of man's education in the widest sense. But in that environment certain factors are distinguishable as being more particularly concerned ; the home, the school, the church, the press, the vocation, public life, amusement, and hobbies."

—*Sir Godfrey Thomson.*

शिक्षा के साधनों का अर्थ

Meaning of Agencies of Education

'साधन' अंग्रेजी शब्द 'Agency' का हिन्दी रूपान्तर है। 'Agency' का अर्थ है 'Agent' का कार्य। 'Agent' से हमारा अभिप्राय उस व्यक्ति या वस्तु से होता है, जो कोई कार्य करता है या प्रभाव डालता है। अतः शिक्षा के साधन—वे तत्त्व, कारण, स्थान या संस्थायें हैं, जो बालक पर शैक्षिक प्रभाव डालते हैं। शिक्षा के साधनों के अर्थ को स्पष्ट करते हुए बी० डी० भाटिया ने लिखा है—"समाज ने शिक्षा के कार्यों को करने के लिए अनेकों विशिष्ट संस्थाओं का विकास किया है। इन्हीं संस्थाओं को शिक्षा के साधन कहा जाता है।"

"Society has developed a number of specialized institutions to carry out the functions of education. These institutions are known as the 'agencies of education'."—*B. D. Bhatia.*

शिक्षा के साधनों का वर्गीकरण

Classification of the Agencies of Education

शिक्षा के सब साधनों को साधारणतः निम्नलिखित दो भागों में बाँटा जाता है :—

१. औपचारिक और अनौपचारिक साधन (Formal & Informal Agencies).
२. सक्रिय और निष्क्रिय साधन (Active & Passive Agencies).

औपचारिक और अनौपचारिक साधनों में अन्तर

Distinction between Formal & Informal Agencies

ड्यूवी (Dewey) ने शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक साधनों को "शिक्षा की साभिप्राय और आकस्मिक विधियाँ" (Intentional & Incidental Modes of Education) बताया है।

हैण्डरसन ने इन दोनों साधनों के अन्तर को इस प्रकार स्पष्ट किया है—"जब बालक व्यक्तियों के कार्यों को देखता है, उनका अनुकरण करता है और उनमें भाग लेता है, तब वह अनौपचारिक रूप से शिक्षित होता है। जब उसको सचेत करके और जान-बूझकर पढ़ाया जाता है, तब वह औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्त करता है।"

"As the child watches, imitates, participates, in the activities of living, he is being informally educated. When he is being consciously and intentionally taught, that is formal education."

—*Henderson.*

औपचारिक और अनौपचारिक साधनों का अध्ययन

Study of Formal & Informal Agencies

१. औपचारिक साधन · Formal Agencies

अर्थ : Meaning

शिक्षा के औपचारिक साधन एक निश्चित योजना के अनुसार होते हैं। इनका प्रयोग बालक के आचरण को रूपान्तरित करने के लिए किया जाता है। इनके निश्चित नियम होते हैं और इनकी देख-भाल प्रशिक्षित व्यक्तियों द्वारा की जाती है। इनके अन्तर्गत स्कूल, चर्च, पुस्तकालय, अजायबघर, चित्र-भवन, पुस्तकें आदि आते हैं।

गुण : Merits

औपचारिक शिक्षा के लाभों पर प्रकाश डालते हुए ड्यूवी ने लिखा है—"औपचारिक शिक्षा के बिना जटिल समाज के साधनों और सिद्धियों को हस्तान्तरित करना सम्भव नहीं है। यह एक ऐसे अनुभव की प्राप्ति का द्वार खोलता है, जिसको बालक दूसरों के साथ रहकर अनौपचारिक शिक्षा के द्वारा प्राप्त नहीं कर सकते हैं।"

"Without formal education, it is not possible to transmit all the resources and achievements of a complex society It also opens a way to a kind of experience which would not be accessible to the young, if they were left to pick up their training in informal association with others." —*John Dewey*

दोष Demerits

गुणों के साथ-साथ औपचारिक शिक्षा में दोष भी हैं। इनकी ओर संकेत करते हुए ड्यूवी ने लिखा है—"औपचारिक शिक्षा बड़ी सरलता से शुष्क, निर्जीव, अस्पष्ट और किताबी बन जाती है। कम विकसित समाजों में जो संचित ज्ञान होता है, उसे कार्य में बदला जा सकता है। पर उन्नत संस्कृति में जो बातें सीखी जाती हैं, वे प्रतीकों के रूप में होती हैं और उनको कार्यों में परिणत नहीं किया जा सकता है। इस बात का सदैव डर रहता है कि औपचारिक शिक्षा जीवन के अनुभव से कोई सम्बन्ध न रखकर, केवल विद्यालयों की विषय-सामग्री न बन जाय।"

"Formal education easily becomes remote and dead, abstract and bookish. What accumulated knowledge exists in low grade societies is at least put into practice. But in an advanced culture much which has to be learned is stored in symbols. It is far from translation into familiar acts There is the standing danger that the material of formal education will be merely the subject-matter of the schools, isolated from the sub ect-matter of life-experience."

—*Dewey.*

२. अनौपचारिक साधन : Informal Agencies

अर्थ : Meaning

शिक्षा के अनौपचारिक साधनों का विकास ...
इनकी न तो कोई निश्चित योजना होती है, और न
ये बालक के आचरण का रूपान्तर करते ...
और अनौपचारिक होती है। ...
समाचार-पत्र, खेल के ...

गुण : Merits

ड्यूवी ने शिक्षा के अनौपचारिक साधनों को औपचारिक साधनों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। उनका मत है "बालक दूसरों के साथ रहकर अनौपचारिक ढंग से शिक्षा प्राप्त करता है और साथ रहने की प्रक्रिया ही शिक्षा देने का कार्य करती है। यह प्रक्रिया अनुभव को विस्तृत करती है और कल्पना को प्रेरणा देती है। यह कथन और विचार में शुद्धता और सजीवता लाती है।"

"The child is informally educated by living with others and the very process of living together educates. It enlarges and enlightens experience, it stimulates and enriches imagination; it creates responsibility for accuracy and vividness of statement and thought."—*John Dewey*.

अनौपचारिक साधनों का प्रभाव बहुत गहरा और व्यापक होता है। ये चरित्र और मस्तिष्क के प्रत्येक पहलू को प्रभावित करते हैं। ये अनजाने ही आदतों, व्यवहारों, रुचियों और दृष्टिकोणों का निर्माण करते हैं। ये बाहरी दबाव का प्रयोग करके बालक की स्वतन्त्रता पर अंकुश नहीं लगाते हैं। इस प्रकार अनौपचारिक शिक्षा बहुत लाभप्रद कार्य करती है।

दोष · Demerits

शिक्षा के अनौपचारिक साधन दोष रहित नहीं हैं। बालक को केवल अनौपचारिक साधनों का प्रयोग करके ही शिक्षित नहीं किया जा सकता है। इसका मुख्य कारण यह है कि अनौपचारिक शिक्षा की कोई निश्चित योजना नहीं होती है। इसलिए कभी-कभी इसका परिणाम—अस्तव्यस्तता और समय तथा प्रयास का अपव्यय होता है। इसके अतिरिक्त, अनौपचारिक साधनों द्वारा प्राप्त ज्ञान उच्चकोटि का बड़ी कठिनता से ही पाता है। कभी-कभी ये साधन छात्रों में ऐसे गुण विकसित करते हैं, जो उनके व्यक्तित्व, समाज और देश के लिए हितकर सिद्ध नहीं होते हैं।

औपचारिक और अनौपचारिक साधनों में संतुलन

Balance between Formal & Informal Agencies

विभिन्न समाजों के द्वारा औपचारिक और अनौपचारिक—दोनों प्रकार की शिक्षा का प्रयोग अतीत के मूल्यों को बनाये रखने और उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के लिए किया जाता है। जैसे-जैसे समाज जटिल होता जाता है, औपचारिक शिक्षा की आवश्यकता बढ़ती जाती है। जैसे-जैसे औपचारिक शिक्षा का विस्तार होता है, वैसे-वैसे प्रत्यक्ष सम्पर्क और विद्यालय से प्राप्त अनुभवों में अवांछनीय अन्तर होने का भय बढ़ता जाता है। यह भय इतना अधिक कभी नहीं था, जितना आज के संसार में

है, क्योंकि पिछली कुछ शताब्दियों में *ज्ञान और प्राविधिक कुशलता में अति तीव्र वृद्धि* हुई है।

अतः आज शिक्षा के समक्ष सबसे बड़ी समस्या यह है कि औपचारिक और अनौपचारिक साधनों मे किस प्रकार सतुलन रखे। यह तभी सम्भव है, जब दोनो साधनो पर बराबर बल दिया जाय और एक को उपेक्षा करके दूसरे का आवश्यकता से अधिक महत्त्व न दिया जाय।

सक्रिय और निष्क्रिय साधन
Active and Passive Agencies

१ सक्रिय साधन : Active Agencies

सक्रिय साधन सामाजिक प्रक्रिया पर नियन्त्रण रखने और उसको एक निश्चित दिशा देने का प्रयत्न करते हैं। इनमे शिक्षा देने वाले और शिक्षा प्राप्त करने वाले मे प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया होती है। दोनों एक-दूसरे पर क्रिया और प्रतिक्रिया करते हैं और इस प्रकार दोनो के आचरण मे रूपान्तर होता है।

सक्रिय साधनो के उदाहरण हैं—परिवार, समाज, राज्य, चर्च (धर्म), स्कूल, क्लब, पुस्तकालय, वाचनालय, समाज-कल्याण केन्द्र आदि।

२ निष्क्रिय साधन : Passive Agencies

निष्क्रिय साधन वे हैं, जिनका प्रभाव एक-तरफा होता है। इनकी प्रक्रिया एक ओर से होती है, क्योंकि ये एक ही को प्रभावित करते हैं। इस प्रक्रिया मे एक पक्ष सक्रिय होता है, और दूसरा निष्क्रिय। ये साधन इस अर्थ मे निष्क्रिय हैं, क्योंकि ये दूसरो को तो प्रभावित करते हैं, पर स्वय दूसरों से प्रभावित नही होते है। पर वास्तव मे इन पर भी जनमत, सार्वजनिक रुचि और सरकारी नियन्त्रण का प्रभाव पड़ता है।

निष्क्रिय साधनो के उदाहरण हैं—समाचार-पत्र, सिनेमा, टेलीविजन रेडियो, प्रेस, आदि।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Distinguish between the formal and informal agencies of education.
2. What is meant by formal and informal agencies of education ? Show why it has become more important in recent times to establish co-ordination between them.
3. Distinguish between active and passive agencies of education by giving examples.

१७

विद्यालय

(सक्रिय और औपचारिक साधन)

THE SCHOOL

(An Active & Formal Agency)

"विद्यालय ईंट और गारे की बनी हुई इमारत नहीं है, जिसमें विभिन्न प्रकार के छात्र और शिक्षक होते हैं। विद्यालय बाजार नहीं है, जहाँ विभिन्न योग्यताओं वाले अनिच्छुक व्यक्तियों को ज्ञान प्रदान किया जाता है। विद्यालय रेल का प्लेटफार्म नहीं है, जहाँ विभिन्न उद्देश्यों से विभिन्न व्यक्तियों की भीड़ जमा होती है। विद्यालय कठोर सुधार-गृह नहीं है, जहाँ किशोर अपराधियों पर कड़ी निगरानी रखी जाती है। विद्यालय आध्यात्मिक संगठन है, जिसका अपना स्वयं का विशिष्ट व्यक्तित्व है। विद्यालय गतिशील सामुदायिक केन्द्र है, जो चारों ओर जीवन और शक्ति का संचार करता है। विद्यालय एक आश्चर्यजनक भवन है, जिसका आधार सद्भावना है— जनता की सद्भावना, माता-पिता की सद्भावना, छात्रों की सद्भावना। सारांश में, एक सुसंचालित विद्यालय एक सुखी परिवार, एक पवित्र मन्दिर, एक सामाजिक केन्द्र, लघु रूप में एक राज्य और मनमोहक वृन्दावन है, जिसमें इन सब बातों का सुन्दर मिश्रण होता है।"

"School is not a mere brick and mortar structure housing a miscellany of pupils and teachers, a school is not a market-place where knowledge is doled out to unwilling consumers of varying capacities; a school is not a railway-platform where a heterogeneous crowd gathers with diverse objects; a school is not a rigorous reformatory where juvenile suspects are kept under vigilant watch, a school is a spiritual organism with a distinctive persona-

ity of its own ; a school is a vibrant community centre, radiating life and energy all-round, a school is a wonderful edifice, resting on the foundation of goodwill—goodwill of the public, goodwill of the parents, goodwill of the pupils. In a word, a well-conducted school is a happy home, a sacred shrine, a social centre, a state in miniature and bewitching Brindavan, all beautifully blended into a synthetic structure."—*S. Bala Krishna Joshi.*

विद्यालय का अर्थ और परिभाषा
Meaning & Defintion of School

विद्यालय का अर्थ : Meaning of School

"स्कूल" शब्द की उत्पत्ति एक यूनानी शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है—"अवकाश" (Leisure)। यह बात कुछ विचित्र-सी जान पड़ती है। इसका स्पष्टीकरण करते हुए ए० एफ० लीच ने लिखा है—"वाद-विवाद या वार्ता के स्थान जहाँ एथेन्स के युवक अपने अवकाश के समय को खेल-कूद, व्यायाम और युद्ध के प्रशिक्षण में बिताते थे, धीरे-धीरे दर्शन और उच्च कलाओं के स्कूलों में बदल गये। ऐकेडेमो[1] के सुन्दर उद्यानों में व्यतीत किए जाने वाले अवकाश के माध्यम से विद्यालयों का विकास हुआ।"

"The discuss on forums or talking shops where the youth of Athens spent their leisure time in sports and exercises, in training for war, gradually crystallized into schools of philosophy and the higher arts In the leisure spent in the trim gardens of the Academy, schools developed."—*A F. Leach.*

विद्यालय की परिभाषा Definition of School

हम विद्यालय के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषायें नीचे दे रहे हैं —

१ जॉन ड्यूवी—"विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है, जहाँ जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।"

"School is a special environment, where a certain quality of life and certain types of activities and occupations are provided

---

[1] "Plato lectured in a place near Athens called the Academy. It was called after Accadamus, who once owned it."

with the object of securing the child's development along desirable lines."—*John Dewey*

टी० पी० नन — "विद्यालय को मुख्य रूप से इस प्रकार का स्थान नहीं समझा जाना चाहिए, जहाँ किसी निश्चित ज्ञान को सीखा जाता है, वरन् ऐसा स्थान जहाँ बालकों को क्रियाओं के उन निश्चित रूपों में प्रशिक्षित किया जाता है, जो इस विशाल संसार में सबसे महान् और सबसे अधिक महत्त्व वाली हैं।"

"The school must be thought of primarily not as a place of learning where certain knowledge is learnt, but as a place where the young are disciplined in certain forms of activities, namely those that are of the greatest and most permanent significance in the wider world."—*T. P. Nunn.*

३. रॉस—"विद्यालय वे संस्थायें हैं, जिनको सभ्य मनुष्य के द्वारा इस उद्देश्य से स्थापित किया जाता है कि समाज में सुव्यवस्थित और योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिले।"

"Schools are institutions devised by civilized man for the purpose of aiding in the preparation of the young for well-adjusted and efficient membership of society."—*Ross.*

समाज में विद्यालय का स्थान—उसका महत्त्व और आवश्यकता
Place of School in Society—Its Importance and Necessity

प्रस्तावना

समाज में विद्यालय के स्थान, महत्त्व और आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए एस० बालकृष्ण जोशी ने लिखा है—"किसी भी राष्ट्र की प्रगति का निर्णय विधान-सभाओं, न्यायालयों और फैक्ट्रियों में नहीं, वरन् विद्यालयों में होता है।"

"The progress of a nation is decided not in legislatures, not in courts, not in factories, but in schools."—*S. Balakrishna Joshi.*

विद्यालय को यह महत्त्वपूर्ण स्थान कुछ कारणों से दिया जाता है। हम उनका उल्लेख नीचे कर रहे हैं :—

१. जीवन की जटिलता : Complexity of Life

आज का जीवन प्राचीन काल के जीवन के समान सरल और सुखमय नहीं है। उस समय मनुष्य के पास अपनी सब आवश्यकताओं को स्वयं पूर्ण करने और अपने बच्चों की शिक्षा की स्वयं देख-भाल करने के लिए समय था। आज जनसंख्या की वृद्धि, आवश्यकताओं की अधिकता और वस्तुओं के बढ़ते हुए मूल्यों के

कारण जीवन बहुत कठिन हो गया है। मनुष्य को अपने कार्यों से इतनी फुरसत नहीं मिलती है कि वह अपने बच्चों की शिक्षा की देखभाल कर सके। इसलिए उसने यह कार्य विद्यालय को सौंप दिया है।

२ विशाल सांस्कृतिक विरासत : Extensive Cultural Heritage

आज की सांस्कृतिक विरासत बहुत विशाल हो गई है। इसमें अनेकों प्रकार के ज्ञान, कुशलताओं और कार्य करने की विधियों का समावेश हो गया है। ऐसी विरासत की शिक्षा देने में व्यक्ति अपने को असमर्थ पाते हैं। अतः उन्होंने यह कार्य विद्यालय को सौंप दिया है।

३. विशिष्ट वातावरण की व्यवस्था
Provision of a Special Environment

विद्यालय छात्रों को एक विशिष्ट वातावरण प्रदान करता है। यह वातावरण शुद्ध, सरल और सुव्यवस्थित होता है। इसमें छात्रों की प्रगति पर स्वस्थ और शिक्षाप्रद प्रभाव पड़ता है। ऐसा वातावरण शिक्षा का और कोई साधन नहीं प्रदान कर सकता है।

४. घर तथा विश्व को जोड़ने वाली कड़ी
Connecting Link between the Home and the World

बालक की शिक्षा में घर का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। घर में रहकर वह अनुशासन, सेवा, सहानुभूति, निःस्वार्थता आदि गुणों को सीखता है। पर घर की चारदीवारी में बँधे रहने के कारण उसके ये गुण अपने परिवार के व्यक्तियों तक ही सीमित रहते हैं। फलतः उसका दृष्टिकोण संकुचित होता है। विद्यालय में विभिन्न वर्गों, धर्मों और सम्प्रदायों के बालकों के सम्पर्क में आकर उसका दृष्टिकोण विस्तृत होता है। साथ ही बाह्य समाज से उसका सम्पर्क स्थापित हो जाता है। इस प्रकार 'विद्यालय' घर और बाह्य जीवन को जोड़ने वाली कड़ी है। रेमॉन्ट का कथन है.— "विद्यालय बाह्य जीवन के बीच अर्द्ध-पारिवारिक कड़ी है, जो बालक की उस समय प्रतीक्षा करता है, जब वह अपने माता-पिता की छत्र-छाया को छोड़ता है।"

"The school is a hal -way house between the entirely domestic life of early childhood and the larger life that awaits the youth when he quits his parental roof."—*Raymont.*

५. व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास
Harmonious Development of Personality

घर, समाज, धर्म आदि शिक्षा के अच्छे साधन हैं। पर इनका न तो कोई निश्चित उद्देश्य होता है, और न पूर्व-नियोजित कार्य-क्रम। फलतः कभी-कभी बालक के व्यक्तित्व पर इनका बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत; विद्यालय का एक

निश्चित उद्देश्य और पूर्व नियोजित कार्य क्रम होता है। परिणामस्वरूप छा
पर अति उत्तम प्रभाव पड़ता है और उसके व्यक्तित्व का सामञ्जस्यपू
होता है।

६. बहुमुखी सांस्कृतिक चेतना का विकास

Development of Cultural Pluralism

विद्यालय में विभिन्न परिवारों, समुदायों और संस्कृतियों के छात्र
परस्पर सम्पर्क के कारण उनमें एक-दूसरे के सांस्कृतिक गुण आ जाते
विद्यालय को छात्रों में बहुमुखी संस्कृति का विकास करने का महत्वपूर्ण साध
जाता है।

७. आदर्शों और विचारधाराओं का प्रसार

Propagation of Ideals & Ideologies

राज्य के आदर्शों और विचारधाराओं को फैलाने के लिये विद्यालय
महत्वपूर्ण साधन माना गया है। इसलिए सभी प्रकार के राज्यों—लो
फासिस्टवादी, साम्यवादी आदि में विद्यालय का स्थान गौरवपूर्ण है।

८. समाज की निरन्तरता और विकास

Perpetuation & Development of Society

विद्यालय एक प्रमुख सामाजिक संस्था है। शिक्षा की प्रक्रिया म
होने के कारण विद्यालय सामुदायिक जीवन का वह स्वरूप है, जिसमें स
निरन्तरता और विकास के लिये सभी प्रभावपूर्ण साधन केन्द्रित होते हैं। विद
इसी महत्त्व के कारण टी० पी० नन ने लिखा है—"**विद्यालय को समस्त सं
नहीं, वरन् समस्त मानव-जाति का आदर्श लघु रूप होना चाहिए।**"

"The school must be an idealized epitome of the
world, not merely the world of ordinary affairs, but the wh
the humanity"—*T. P. Nunn.*

९. विद्यालय : घर से शिक्षा का उत्तम स्थान

School a Better Place of Education than Home

'विद्यालय' घर से शिक्षा का उत्तम स्थान है। कारण यह है कि विद्य
विभिन्न आदतों, रुचियों और दृष्टिकोणों के बालक आते हैं। फलतः परस्पर सम
कारण बालक उन बातों को सीखते है, जिन्हे वे घर की चारदीवारी के अन्दर
सीख सकते हैं। यदि बालकों को संसार के ढंगों से परिचित कराना है, यदि
सामाजिक शिष्टाचार और सहानुभूति सिखानी है, यदि उनको निष्पक्षता और स
के महत्त्व को बताना है, तो उनको घर से बाहर विद्यालय में भेजना अनिवार्य है

१०. शिक्षित नागरिकों का निर्माण Creation of Educated Citizens

विद्यालय ही एकमात्र वह साधन है, जिसके द्वारा शिक्षित नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है। यदि एक देश के समस्त बालकों को एक निश्चित आयु तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जाती है, तो वे स्थायी रूप से साक्षर हो जाते हैं। साक्षर होने के साथ-साथ उनमें धैर्य, सहयोग, उत्तरदायित्व आदि के गुणों का विकास होता है। इस प्रकार बड़े होकर बालक राज्य के उपयोगी नागरिक सिद्ध होते हैं।

उपसंहार

उपरोक्त के आधार पर विद्यालय के स्थान, महत्त्व और आवश्यकता को सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। वास्तव में, व्यक्ति और समाज—दोनों की प्रगति के लिये विद्यालय अति आवश्यक है। इसीलिये किसी भी सामाजिक ढाँचे में इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। टी० पी० नन ने सत्य ही लिखा है—"एक राष्ट्र के विद्यालय उसके जीवन के वे अंग हैं, जिनका विशेष कार्य है—उसकी आध्यात्मिक शक्ति को दृढ़ बनाना, उसकी ऐतिहासिक निरन्तरता को बनाये रखना, उसकी भूतकाल की सफलताओं को सुरक्षित रखना और उसके भविष्य की गारंटी करना।"

"A nation's schools are an organ of its life, whose special function is to consolidate its spiritual strength, to maintain its historic continuity, to secure its past achievements, to guarantee its future."—*T. P. Nunn.*

विद्यालय की आधुनिक धारणा
Modern Conception of School

परम्परागत विद्यालय जो आज भी प्रचलित हैं, केवल औपचारिक शिक्षा के स्थान हैं। इनका मुख्य ध्येय—निश्चित मात्रा में ज्ञान प्रदान करना है। इनकी दिनचर्या बड़ी कठोर होती है। इनकी पाठ्य क्रम क्रियाओं का न तो विषय-वस्तु से कोई सम्बन्ध होता है, और न शिक्षण-विधियों से।

पेस्टालॉजी (Pestalozzi) ने इन विद्यालयों की बहुत ही निन्दा की है। उसका कहना है कि ये विद्यालय अमनोवैज्ञानिक हैं, जो बालक को उसके प्राकृतिक जीवन से दूर कर देते हैं, उसकी स्वतन्त्रता को निरंकुशता से रोक देते हैं, और उसे अनाकर्षक बातों को याद करने के लिये भेड़ों के समान हाँकते हैं और घण्टों, दिनों, सप्ताहों, महीनों और वर्षों तक दर्दनाक जंजीरों में बाँध देते हैं। इस निन्दा के फलस्वरूप नवीन शैक्षिक विचारों ने नये शैक्षिक प्रयोगों को प्रोत्साहन दिया और नये ढंग के विद्यालयों की स्थापना होने लगी।

बालक समाज-सेवा, नागरिक कार्यों, स्वास्थ्य-सम्बन्धी आन्दोलनों आदि सामाजिक कार्यों में भाग लेकर वास्तविक जीवन के सम्पर्क में आता है।

३. विद्यालय : विशिष्ट वातावरण के रूप मे
School as a Special Environment

ड्यूवी (Dewey) विद्यालय को विशिष्ट वातावरण मानता है, जहाँ बालकों के वांछनीय विकास के लिये एक विशेष प्रकार के जीवन और कार्यों की व्यवस्था की जाती है। उसके अनुसार इस वातावरण की ३ प्रमुख विशेषतायें हैं —

१. यह वातावरण सरलीकृत (Simplified) होता है। इसके लिये जटिल आधुनिक जीवन से वे बातें चुनी जाती हैं, जिनका स्थायी महत्त्व होता है और जो इतनी सरल तथा रोचक होती हैं कि बालक उनके प्रति प्रतिक्रिया कर सकते हैं।

२. यह वातावरण शुद्ध (Purified) होता है। इसके लिये बाह्य सामाजिक जीवन से केवल वे ही बातें ली जाती हैं, जो शुद्ध और निर्दोष होती हैं। जो भी दूषित या अनुचित बातें होती हैं, उनको छोड दिया जाता है। इस पवित्र वातावरण मे रहकर बालक उत्तम भावी समाज के निर्माण मे अपना योग देता है।

३ यह वातावरण सतुलित (Balanced) होता है। दूसरे शब्दो में, यह सामाजिक वातावरण के विभिन्न तत्त्वो मे सतुलन स्थापित करता है। फलस्वरूप बालक अपने समूह की सामाजिक सकीर्णताओं से बाहर निकल कर विस्तृत वातावरण मे रहता है।

४ विद्यालय : सक्रिय वातावरण के रूप में
School as an Active Environment

पुराने ढग के विद्यालय का केवल एक सकीर्ण और निश्चित उद्देश्य है। वह यह है कि छात्रों को परीक्षा मे उत्तीर्ण होने के लिये किस प्रकार तैयार किया जाय। इस उद्देश्य की प्राप्ति मे सहायता देने वाली बातो को प्रोत्साहित और सहायता न देने वाली बातो की उपेक्षा की जाती है। यही कारण है कि विद्यालय के कार्य-क्रम मे सामाजिक जीवन और सामाजिक कार्यों को कोई स्थान नही दिया जाता है।

इसके विपरीत, नवीन विद्यालय इस जीवन और इन कार्यों को प्रचुर मात्रा मे स्थान देता है। यह निष्प्राण ज्ञान का नही, वरन् स्फूर्तिमय जीवन का केन्द्र होता है। यह अपने चारो ओर के जीवन और वास्तविकताओ से प्रत्यक्ष और घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। इस प्रकार के विद्यालय के समर्थन में डॉ० पी० नन ने लिखा है—'विद्यालय को मुख्य रूप से ज्ञान-प्राप्ति का स्थान नहीं, वरन् ऐसा स्थान समझा जाना चाहिए, जहाँ बालकों को कुछ प्रकार के कार्यों म प्रशिक्षित किया जाता है।'

"The school must be thought of primarily not as a place of

rning, but as a place where the young are disciplined in certain ms of activity."—*T. P. Nunn*

विद्यालय : रचनात्मक वातावरण के रूप में
School as a Creative Environment

परम्परागत विद्यालय पुस्तकीय और औपचारिक है। इसलिये इसमें बालको रुचियो, शारीरिक क्रियाओ, रचनात्मक और सामाजिक भावनाओ का दमन ा जाता है। आधुनिक विद्यालय इस बात के विरुद्ध है। अतः इसमे लाभप्रद और ात्मक कार्यो की अधिक-से-अधिक सुविधा प्रदान की जाती है।

पश्चिमी देशों के विद्यालयो ने इस दिशा मे बहुत प्रगति की है। उनमें सम्भव सभी उपयुक्त क्रियाओ को स्थान दिया जाता है। भारतीय शिक्षाविद् भी बात मे विश्वास करने लगे है कि विद्यालय—रचनात्मक वातावरण है। फलतः े बहुउद्देशीय विद्यालयो की स्थापना की जा रही है और पाठ्य-सहगामी क्रियाओ बल दिया जा रहा है।

विद्यालय : सामुदायिक जीवन के केन्द्र के रूप में
School as a Centre of Community Life

'शिक्षा' आवश्यक रूप मे सामाजिक कार्य है। समाज इस कार्य को विद्यालय ौपता है और उस पर बालको को इस प्रकार शिक्षित करने का दायित्व रखता इससे कि वे अपने समूह के जीवन मे कुशलतापूर्वक भाग ले सकें। दूसरे शब्दो म यह सकते है कि बालको के प्रशिक्षण के लिये विद्यालय को सामुदायिक जीवन न्द्र होना चाहिए। इस बात को स्वीकार करते हुए माध्यमिक शिक्षा-आयोग ondary Education Commission) ने लिखा है—"विद्यालय बड़े समुदाय में समुदाय है।" ("School is a small community within a large munity.")

अत: विद्यालय को समाज के सभी कार्यो को प्रतिबिम्बित करना चाहिए और ो को समाज की आवश्यकताओं, मांगो और आदर्शो के अनुसार प्रशिक्षित करना । इसकी पुष्टि म सैयदैन ने लिखा है—"चूँकि समाज की ये मांगें सदैव ी रहती हैं, बढ़ती रहती है और उनमें सुधार होते रहते है, इस कारण यह यक है कि विद्यालय का बाहर के जीवन के साथ सजीव सम्बन्ध रहे।"

"Since these demands are alway changing, enlarging and lying themselves, it is necessary that the school should be in rapport with the life outside the school."—*K. G. Saiyidain.*

विद्यालय : एक सजीव साधन . School a Living Agency

अमरीकी शिक्षा-शास्त्री एमरसन (Emerson) ने विद्यालय को एक सजीव बताया है। इससे उसका अभिप्राय यह है कि स्कूल में जीवन का जीवन से

सम्बन्ध होता है, ज्ञानपूर्ण शिक्षक का ज्ञानहीन छात्र से सम्पर्क होता है, और शिक्षक एक चेतन कार्य है, जो छात्र को अपनी योग्यता के अनुसार ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देता है।

विद्यालय के कार्य
Functions of the School

विद्यालय के कार्यों की विभिन्न प्रकार से व्याख्या की गई है। इन विभिन्नताओं का कारण विभिन्न राष्ट्रों और विभिन्न युगों के विद्यालयों की विभिन्न विशेषतायें हैं। इन सब विभिन्न कार्यों को मोटे तौर पर दो भागों में बाँटा जा सकता है :—

१ औपचारिक कार्य (Formal Functions)
२ अनौपचारिक कार्य (Informal Functions)

१ विद्यालय के औपचारिक कार्य Formal Functions of School

१. छात्रों को ऐसा लाभप्रद ज्ञान देना जो स्वयं साध्य (End) नहीं है, वरन् साध्य को प्राप्त करने का साधन (Means to an end) है। ज्ञान का साध्य—गतिशील और सन्तुलित मस्तिष्क का विकास करना है। ऐसे मस्तिष्क वाला व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों में सूझ-बूझ वाला और साहसी होता है। साथ ही वह अज्ञात भविष्य के मूल्यों (Values) का निर्माण कर सकता है।

२. छात्रों में सोचने और निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना, जिससे कि वे अपनी स्वतन्त्र विचार शक्ति का सोचने, समझने और कार्य करने के लिये प्रयोग कर सकें।

३ अतीत की सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखना और इसे अधिक मूल्यवान् बनाकर आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरित करना।

४. छात्रों में कार्य को प्रारम्भ करने और नेतृत्व के गुणों का विकास करना जिससे कि वे प्रजातन्त्र के अच्छे नागरिकों के रूप में अपने कर्त्तव्यों को कुशलतापूर्वक कर सकें।

५ छात्रों को ऐसा प्रशिक्षण देना जिससे कि वे समाज और अन्य व्यक्तियों पर भार बने बिना सम्मानपूर्ण ढंग से अपनी जीविका की समस्या को हल कर सकें।

६. चरित्र निर्माण और आध्यात्मिक स्वतन्त्रता का प्रशिक्षण देना।

२. विद्यालय के अनौपचारिक कार्य : Informal Functions of School

१. खेल-कूद, स्काउटिंग, सैनिक शिक्षा, स्वास्थ्य-कार्य आदि की व्यवस्था करके छात्रों को शारीरिक प्रशिक्षण देना।

२. समारोहों तथा सामाजिक उत्सवों आदि का आयोजन करके छात्रों को सामाजिक प्रशिक्षण देना।

३. वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, भित्तिपत्रिकाओं, प्रदर्शनियों, संगीत-सम्मेलनों, और नाटकों का प्रबन्ध करके बालकों और बालिकाओं को भावात्मक (Emotional) प्रशिक्षण देना।

४. सक्रिय वातावरण (Active Environment) का निर्माण करके छात्रों को रुचिकर और रचनात्मक (Constructive) क्रियाओं को प्रोत्साहित करना।

टॉमसन के अनुसार विद्यालय के कार्य

Functions of School According to Thomson

१. मानसिक प्रशिक्षण (Intellectual Training)—मानसिक प्रशिक्षण का अर्थ है—पुस्तकीय ज्ञान और तर्क-शक्ति का विकास। विद्यालय का यह कार्य संकुचित तो है, पर साथ ही आवश्यक भी है।

२. चारित्रिक प्रशिक्षण (Character Training)—चारित्रिक प्रशिक्षण विद्यालय का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। प्राचीन समय के सरल समाज में समाज द्वारा चारित्रिक प्रशिक्षण दिया जाना सम्भव था। पर आज के जटिल समाज में यह सम्भव नहीं है। अतः यह कार्य विद्यालय द्वारा किया जाना चाहिये।

३. सामुदायिक जीवन का प्रशिक्षण (Training in Community Life)—विद्यालय को सामुदायिक जीवन का प्रशिक्षण देना चाहिए। अतः विद्यालय ऐसा स्थान होना चाहिये, जहाँ छात्र स्वाभाविक सामुदायिक जीवन व्यतीत कर सकें।

४. राष्ट्रीय गर्व और देश-प्रेम का प्रशिक्षण (Training in National Pride & Patriotism)—राष्ट्रीय गर्व और देश-प्रेम की ऐसी श्रेष्ठ भावनाएँ हैं कि इनके बिना छात्र उच्च आदर्शों को नहीं प्राप्त कर सकते हैं। अतः विद्यालयों को इन भावनाओं का विकसित करना चाहिए। पर ये भावनायें केवल शुद्ध रूप में ही विकसित की जानी चाहियें, अन्यथा ये अन्य राष्ट्रों के लिये अहितकर सिद्ध हो सकती हैं।

५. स्वास्थ्य और स्वच्छता का प्रशिक्षण (Training in Health and Sanitation)—हमारी सभ्यता ने पहले की अपेक्षा लोगों को अधिक संख्या में नगरों में बसा दिया है। वहाँ वे अस्वस्थ और अस्वच्छ परिस्थितियों में रहते हैं। अतः यह आवश्यक है कि विद्यालय छात्रों को स्वास्थ्य और स्वच्छता का प्रशिक्षण दें।

ब्रूबेकर के अनुसार विद्यालय के कार्य

Functions of School According to Brubacher

१. संरक्षण-कार्य (Conservative Function)—हमारी सामाजिक संस्कृति बहुत मुसीबतों और बलिदानों के द्वारा प्राप्त की गई है। यदि भावी पीढ़ी

को न बता सकने के कारण इसका कोई भी अंश नष्ट हो गया, तो यह बहुत दुःख की बात होगी। अतः विद्यालय को इसकी शिक्षा देकर इसे सुरक्षित रखना चाहिए। सांस्कृतिक आदर्श विद्यालय द्वारा *ही सुरक्षित रखे जाते हैं। इसलिये भी विद्यालय* सांस्कृतिक संरक्षण के कार्य की उपेक्षा नहीं कर सकता है।

२. प्रगतिशील कार्य (Progressive Function)—प्रगतिवादियों का मत है कि यह सोचना कि विद्यालय संस्कृति को नष्ट होने से बचा सकता है, उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना कि यह सोचना कि औषधि मनुष्य को मरने बचा सकती है। अतः उनका कथन है कि विद्यालय संस्कृति को सुरक्षित रखने की अपेक्षा समाज को प्रगति की ओर ले जाने कार्य करे। विद्यालय नये विचारों और कार्य-क्रमों को अपना कर समाज के ढाँचे और आदर्शों में समय के अनुसार परिवर्तन कर सकता है।

३. निष्पक्ष कार्य (Neutral Function)—कुछ व्यक्तियों का मत है कि विद्यालय को निष्पक्ष कार्य करने चाहिये। उसे सांस्कृतिक सुरक्षा, नवीन विचारों, राजनीति आदि से कोई प्रयोजन नहीं रखना चाहिये। उनका स्थान सांसारिक मामलों से ऊपर है। *उसका प्रमुख कार्य—अनन्त मूल्यों और सत्यों की शिक्षा देना है। अतः* उसे किसी मामले के पक्ष या विपक्ष में शिक्षा नहीं देनी चाहिए।

विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनाने के उपाय

Measures to make the School an Effective Agency of Education

विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनाने के लिये अधोलिखित उपायों को काम में लाया जा सकता है —

१. घर या परिवार से सहयोग : Co-operation with the Home

शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनने के लिये विद्यालय को घर से सहयोग करना चाहिए। जहाँ विद्यार्थी विद्यालय के छात्रावास में कई वर्ष तक रहते हैं, वहाँ सहयोग की बहुत आवश्यकता नहीं है। कारण यह है कि छात्रावास घर का स्थान ले लेता है। पर जिस विद्यालय में बालक घर से पढ़ने के लिये आते हैं, वहाँ सहयोग अति आवश्यक हो जाता है। कारण यह है कि थोड़े से समय में शिक्षक सभी छात्रों के बारे में सब बातों को नहीं जान सकते हैं। अतः माता पिता को अपने बच्चों की आदतों, रुचियों, गुणों और अवगुणों को शिक्षकों को बताकर सहयोग देना चाहिए। इन बातों को जानकर शिक्षक अच्छी प्रकार से छात्रों का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। दूसरी ओर माता-पिता भी अपने बच्चों के बारे में शिक्षकों के विचारों से लाभ उठा सकते हैं। शिक्षकों और अभिभावकों में निकट सम्पर्क स्थापित करने के लिये निम्न-लिखित उपायों को अपनाया जा सकता है—

(i) अभिभावक संघ : Parents' Associations अभिभावकों और शिक्षकों को एक-दूसरे के सम्पर्क में लाने के लिये अभिभावक संघ स्थापित किये जाने चाहिये।

संघ की बैठकों का कार्य-क्रम बदलता रहना चाहिए, जैसे—अभिभावकों और शिक्षकों मे बच्चों की शिक्षा के बारे मे विचार-विमर्श, नई शिक्षण-विधियों की व्याख्या या प्रदर्शन, शिक्षा मे नई प्रवृत्तियो पर भाषण इत्यादि। इन सब बातों से अभिभावकों के ज्ञान में वृद्धि होगी और वे शिक्षकों को महत्त्वपूर्ण सहयोग दे सकेंगे।

(ii) अभिभावक-दिवस : Parent-Days—प्रत्येक विद्यालय मे प्रतिवर्ष एक या दो बार अभिभावक-दिवस मनाया जाना चाहिए। इस अवसर पर अभिभावकों को अपने बच्चों के खेल-कूद, नाटक, प्रदर्शनी आदि को देखने का अवसर दिया जाना चाहिए।

(iii) प्रगति-पत्र Progress Reports—अभिभावकों के पास उनके बच्चों के प्रगति-पत्र अवश्य भेजे जाने चाहिए। इनसे वे जान सकेंगे कि उनके बच्चे विद्यालय मे उन्नति कर रहे हैं या नही।

(iv) छात्रों के घर जाना Visit to Pupils' Homes—शिक्षकों को समय-समय पर छात्रों के घर जाना चाहिए। ऐसा करने से वे अभिभावकों के सम्पर्क मे आ सकेंगे और अभिभावकों से छात्रों की समस्याओं पर विचार-विमर्श कर सकेंगे।

२. सामाजिक जीवन से सम्पर्क : Contact with Social Life

आम तौर पर यह शिकायत की जाती है कि विद्यालय का सामाजिक जीवन से कोई सम्बन्ध नही होता है। फलत. जब बालक शिक्षा समाप्त करके जीवन मे प्रवेश करता है, तब वह कठिनाई का अनुभव करता है। वास्तव मे विद्यालय का सामाजिक जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए। उसे बाहर के बड़े समाज का छोटा रूप होना चाहिए। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये अधोलिखित उपाय काम मे लाये जा सकते हैं —

(i) समाज-सेवा में भाग Participation in Social Service—समुदाय की भलाई के लिये छात्रों को विभिन्न प्रकार के सामाजिक कार्यों मे सक्रिय भाग लेना चाहिए। विद्यालय को छात्रों मे समाज-सेवा के आदर्श और इच्छा को कूट कूटकर भरने का प्रयास करना चाहिए। साथ ही उसे छात्रों को समाज सेवा के अवसर और सुविधायें देनी चाहिए।

(ii) समाज के सदस्यों को निमन्त्रण Invitations to Members of the Community—विद्यालय को समाज के ऐसे सदस्यों को समय समय पर निमन्त्रण देना चाहिए जो विभिन्न उपयोगी कार्यों मे लगे हुए हों। ये सदस्य अपने भाषणों द्वारा छात्रों को अपने कार्यों के बारे मे बताएँ। वे यह भी बताएँ कि उनके कार्यों का समाज मे क्या स्थान है, और इन कार्यों की कठिनाइयाँ और अच्छाइयाँ क्या हैं। इस प्रकार छात्रों मे समाज का ज्ञान बढ़ेगा।

(iii) सामाजिक विषयों का शिक्षण : Teaching of Social Studies—विद्यालय को सामाजिक विषयों के अध्ययन पर बल देना चाहिए। इससे छात्रों को समाज की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक बातों का ज्ञान प्राप्त होगा।

(iv) प्रौढ़-शिक्षा का केन्द्र : Centre of Adult Education—विद्यालय को प्रौढ़-शिक्षा का केन्द्र होना चाहिए। इससे भारत ऐसे देश की निरक्षरता की समस्या कुछ सीमा तक हल हो सकती है। इसके अतिरिक्त विद्यालय के सम्पर्क में रहने के कारण प्रौढ़ व्यक्ति विद्यालय की प्रगति में रुचि लेने लगेंगे।

(v) सामाजिक-सर्वेक्षण-क्लबों का सगठन : Organization of Social Survey Clubs—सैयदेन (Saiyidain) के अनुसार—विद्यालय को सामाजिक सर्वेक्षण करने के लिए क्लब सगठित करने चाहिये। इन क्लब के सदस्य छोटी-छोटी टोलियों मे पास के स्थानों की आवश्यकताओं और समस्याओं का अध्ययन करें, जैसे—सड़कों की दशा, गदे पानी की नालियों का प्रबन्ध, स्वास्थ्य और सफाई की व्यवस्था आदि। अध्ययन के बाद छात्र अपनी रिपोर्ट तैयार करें, जिनमे उनके सुझाव भी हों। इन रिपोर्टों को विद्यालय के प्रधानाध्यापक म्युनिसिपेलिटी को भेजें। इससे पास के स्थानों की समस्याएं भी हल होगी और छात्रों को वास्तविक जीवन का ज्ञान भी होगा।

(vi) समाज-सेवा-संघों का निर्माण Formation of Social Service Leagues—सैयदेन (Saiyidain) ने विद्यालयों में समाज-सेवा संघों के निर्माण पर बहुत बल दिया है। ये संघ बाढ़ आने पर, छूत की बीमारियाँ फैलने पर तथा उत्सवों और जलूसों में आस-पास के लोगों की सहायता करें। संघ के इन कार्यों को स्काउटिंग के कार्यों से सम्बन्धित करके जनता का बहुत हित किया जा सकता है।

३. राज्य का संरक्षण : State Patronage

नैपोलियन (Napoleon) ने एक बार कहा था—"जन-शिक्षा सरकार का प्रथम कार्य होना चाहिए।" ("Public instruction should be the first object of Government") १८वी शताब्दी में कही गई यह बात आज भी सत्य है। इसीलिए सभी उन्नतिशील देशों मे जन-शिक्षा का भार सरकार पर है। पर भारत में स्थिति हास्यपूर्ण है। सरकार अपने विद्यालयों पर तो आँख बन्द करके धन व्यय करती है और प्रबन्ध समितियों द्वारा स्थापित विद्यालयों के साथ सौतेली माँ का व्यवहार करती है। जब तक सरकार देश के सभी विद्यालयों का भार अपने ऊपर नहीं लेगी, तब तक वह अपनी योजनाओं पर अरबों-खरबों रुपया व्यय करके भी देश की उन्नति नहीं कर सकेगी। अतः यह आवश्यक है कि सरकार निम्नलिखित उपायों को काम में लावे—

(i) अच्छे विद्यालयों की स्थापना : Establishment of Good Schools—अच्छे विद्यालय वे हैं, जो सरकार द्वारा निश्चित किये गये शिक्षा के उद्देश्यों को

...करने में अधिक से अधिक योग देते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारी ...र ने अभी तक इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया है।

(ii) योग्य शिक्षकों की नियुक्ति Appointment of Qualified ...achers— शिक्षण-कार्य के लिये उतने ही योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है, ...ने कि किसी सरकारी-कार्य, उद्योग या व्यवसाय के लिये। विद्यालयों को इस ...ार के व्यक्ति तभी मिल सकते हैं, जब उनको उतना ही वेतन और वैसी ही ...विधायें मिलें जैसी कि उनको और कहीं कार्य करने पर मिल सकती हैं। पर इस ...ार्य की निकट भविष्य में होने की कोई आशा नहीं दिखाई देती है।

(iii) उदार आर्थिक सहायता Liberal Financial Aid—सरकार को विद्यालयों को उदार आर्थिक सहायता देनी चाहिए। परन्तु सरकार ऐसा न कर सकने के लिए यह तर्क देती है कि उसके पास धन नहीं है। यह केवल शिक्षा को उन्नति न करने का बहाना है। सरकार व्यर्थ की योजनाओं पर करोड़ों रुपये फूंकने के लिये कर्जा ले सकती है, पर शिक्षा के लिए एक पाई भी नहीं।

(iv) विद्यालयों का नियन्त्रण और निरीक्षण Control and Supervision of Schools सरकार को स्कूल इन्सपेक्टरों की संख्या बढ़ाकर विद्यालयों पर अपना नियन्त्रण कड़ा करना चाहिये। इन्सपेक्टरों को यह आज्ञा दी जाय कि वे समय-समय पर विद्यालयों का निरीक्षण करें और उनकी समस्याओं को सुलझाएं।

(v) ट्रेनिंग कॉलेजों का पुनर्गठन Re-organization of Training Colleges—आज देश के अधिकांश ट्रेनिंग कालिज अंग्रेजों के समय की लकीर को पीट रहे हैं। इनमें से कितने ही छात्रों को डिग्री दिलाने की दुकानें बन गये हैं। इनकी ओर ध्यान देने का सरकार को स्वतन्त्रता के इस लम्बे समय में कभी अवकाश ही नहीं मिला है। यह अति आवश्यक है कि भारत की वर्तमान आवश्यकताओं और शिक्षा की आधुनिक प्रवृत्तियों एवं सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर सरकार इनका पुनर्गठन करे।

सामान्य भारतीय विद्यालय
The Ordinary Indian School

विद्यालय के बारे में ऊपर काफी कहा जा चुका है। फिर भी अपने देश के सामान्य विद्यालयों का सही चित्र प्रस्तुत करना अनुपयुक्त न होगा। सैयदेन (Saiyidain) का कथन है कि अपने सर्वोत्तम रूप में ये विद्यालय ऐसे स्थान हैं, जहाँ पढ़ना-लिखना, चित्र खींचना आदि में या इतिहास, भूगोल और विज्ञान आदि में औपचारिक शिक्षा दी जाती है। अपने निम्नतम रूप में ये ऐसे स्थान हैं, जहाँ बच्चों के उल्लास और कार्य के प्रति प्रेम का गला घोंटा जाता है। एच० जी० वेल... ने लिखा है—"यदि आप इस बात का अनुभव करना चाहते हैं कि पीढ़ियों के ...

पीढ़ियाँ किस प्रकार पहाड़ी नदियों के वेग से विनाश की ओर बढ़ रही हैं, तो आप किसी ग़ैर-सरकारी स्कूल को ध्यान से देखिए।"

"If you want to feel the generations rushing to waste like rapids, you should put your heart and mind into a private school."

—*H. G Wells.*

यद्यपि वेल्स का यह कथन इङ्गलैण्ड के आज के विद्यालयों पर लागू नहीं होता है, पर हमारे देश के प्राय सभी सरकारी और ग़ैर-सरकारी विद्यालयों के बारे में शत-प्रतिशत सत्य है।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What do you understand by "school" ? Discuss its need and object.
2. "The progress of a nation is decided and determined in a school." Do you agree with this statement ? Give reasons in support of your answer.
3. Point out briefly the place of school in society.
4. "The school is a half-way house between the entirely domestic life of early childhood and the larger life that awaits the youth when he quits his parental-roof." Elucidate.
5. What difference do you find between the traditional and new school ? Support your answer by giving some concrete examples of schools of your state
6. Give a detailed account of the distinctive features of the new school.
7. What functions, in your opinion, should be assigned to the school and why ?
8. Describe *the main functions of various types of schools.*
9. What measures can be adopted to make the school an effective agency of education ? Which of them, in your opinion, has the greatest significance and why ?
10. Give a critical appraisal of the relationship between the school and (i) the home, (ii) the community, and (iii) the state.

ने में अधिक से अधिक योग देते हैं। यह बड़े दुःख की बात है कि हमारी ने अभी तक इस ओर कोई ध्यान नही दिया है।

(ii) योग्य शिक्षकों की नियुक्ति Appointment of Qualified ners—शिक्षण-कार्य के लिये उतने ही योग्य व्यक्तियों की आवश्यकता है, कि किसी सरकारी-कार्य, उद्योग या व्यवसाय के लिये। विद्यालयों को इस र के व्यक्ति तभी मिल सकते हैं, जब उनको उतना ही वेतन और वैसी ही धायें मिलें जैसी कि उनको और कही कार्य करने पर मिल सकती हैं। पर इस की निकट भविष्य में होने की कोई आशा नही दिखाई देती है।

(iii) उदार आर्थिक सहायता Liberal Financial Aid—सरकार को द्यालयों को उदार आर्थिक सहायता देनी चाहिए। परन्तु सरकार ऐसा न कर कने के लिए यह तर्क देती है कि उसके पास धन नहीं है। यह केवल शिक्षा की उन्नति न करने का बहाना है। सरकार व्यर्थ की योजनाओं पर करोड़ो रुपये फूंकने के लिये कर्जा ले सकती है, पर शिक्षा के लिए एक पाई भी नहीं।

(iv) विद्यालयों का नियन्त्रण और निरीक्षण Control and Supervision of Schools सरकार को स्कूल इन्सपैक्टरों की सख्या बढ़ाकर विद्यालयों पर अपना नियन्त्रण कड़ा करना चाहिये। इन्सपैक्टरों को यह आज्ञा दी जाय कि वे समय-समय पर विद्यालयों का निरीक्षण करें और उनकी समस्याओं को सुलझाएं।

(v) ट्रेनिंग कॉलेजों का पुनर्गठन Re-organization of Training Colleges—आज देश के अधिकांश ट्रेनिंग कलिज अंग्रेजो के समय की लकीर को पीट रहे हैं। इनमे से कितने ही छात्रों को डिग्री दिलाने की दुकानें बन गये हैं। इनकी ओर ध्यान देने का सरकार को स्वतन्त्रता के इस लम्बे समय मे कभी अवकाश ही नही मिला है। यह अति आवश्यक है कि भारत की वर्तमान आवश्यकताओं और शिक्षा की आधुनिक प्रवृत्तियों एव सिद्धान्तों को ध्यान मे रखकर सरकार इनका पुनर्गठन करे।

सामान्य भारतीय विद्यालय
The Ordinary Indian School

विद्यालय के बारे में ऊपर काफी कहा जा चुका है। फिर भी अपने देश के सामान्य विद्यालयों का सही चित्र प्रस्तुत करना अनुपयुक्त न होगा। सैयदेन (Saiyidain) का कथन है कि अपने सर्वोत्तम रूप मे ये विद्यालय ऐसे स्थान हैं, जहाँ पढ़ना-लिखना, चित्र खींचना आदि मे या इतिहास, भूगोल और विज्ञान आदि में औपचारिक शिक्षा दी जाती है। अपने निम्नतम रूप मे ये ऐसे स्थान हैं, जहाँ बच्चों के उल्लास और कार्य के प्रति प्रेम का गला घोटा जाता है। एच० जी० वेल्स ने लिखा है—"यदि आप इस बात का अनुभव करना चाहते हैं कि पीढ़ियों के बाद

पीढ़ियाँ किस प्रकार पहाड़ी नदियों के वेग से विनाश की ओर बढ़ रही हैं, तो आप किसी ग़ैर-सरकारी स्कूल को ध्यान से देखिए।"

"If you want to feel the generations rushing to waste like rapids, you should put your heart and mind into a private school."

—*H. G Wells.*

यद्यपि वेल्स का यह कथन इङ्गलैण्ड के आज के विद्यालयों पर लागू नहीं होता है, पर हमारे देश के प्रायः सभी सरकारी और ग़ैर-सरकारी विद्यालयों के बारे में शत-प्रतिशत सत्य है।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What do you understand by "school" ? Discuss its need and object.
2. "The progress of a nation is decided and determined in a school." Do you agree with this statement ? Give reasons in support of your answer.
3. Point out briefly the place of school in society.
4. "The school is a half-way house between the entirely domestic life of early childhood and the larger life that awaits the youth when he quits his parental-roof." Elucidate.
5. What difference do you find between the traditional and new school ? Support your answer by giving some concrete examples of schools of your state
6. Give a detailed account of the distinctive features of the new school.
7. What functions, in your opinion, should be assigned to the school and why ?
8. Describe the main functions of various types of schools
9. What measures can be adopted to make the school an effective agency of education ? Which of them, in your opinion, has the greatest significance and why ?
10. Give a critical appraisal of the relationship between the school and (i) the home, (ii) the community, and (iii) the state.

१८

घर या परिवार

(सक्रिय और अनौपचारिक साधन)

THE HOME or THE FAMILY

(An Active & Informal Agency)

"परिवार सब से पुराना और मौलिक मानव-समूह है। पारिवारिक ढांचे का विशिष्ट स्वरूप एक समाज से दूसरे समाज में भिन्न हो सकता है और होता है, पर सब जगह परिवार के मुख्य कार्य हैं—बच्चे का पालन करना और उसे समाज की संस्कृति से परिचित कराना, सारांश मे उसका समाजीकरण करना।"

"The family is the oldest human group and the basic one. While the particular form of family structure may and does vary from society to society, the central foci of family activities every where are child-bearing, and the initial induction of the child into the culture of a given society—in short, socialization."

—*Young and Mack.*

परिवार का अर्थ और परिभाषा

Meaning & Definition of Family

परिवार का अर्थ : Meaning of Family

घर या परिवार समाज की एक इकाई है। यह सबसे अधिक आधारभूत सामाजिक समूह है। इसमे साधारणत पति, पत्नी और उनके बच्चे होते है। कभी कभी पति या पत्नी के माता-पिता भी उनके साथ रहते है। कुछ प्राचीन समाजो नौकरो को भी परिवार का सदस्य माना जाता था। इसीलिए 'Family' शब्द उत्पत्ति 'Famulus' शब्द से मानी जाती है, जिसका अर्थ है—'Servant'। परिव का यह सबसे सरल रूप है। इसका जटिल रूप भारत के संयुक्त परिवार म मिलता

परिवार की परिभाषा : Definition of Family

हम परिवार के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए
रहे हैं :—

१. क्लेयर—"परिवार से हम सम्बन्धो की
माता-पिता और उनकी सतानों के बीच में पाई जाती है।"

"By family we mean a system of relationship existing between parents and children"—*Clare*

२ मैकाइवर और पेज—"परिवार उस समूह का नाम है, जिसमे स्त्री-पुरुष का यौन-सम्बन्ध पर्याप्त निश्चित हो, और इनका साथ इतनी देर तक रहे, जिससे सतान उत्पन्न हो जाय और उसका पालन-पोषण भी किया जाय।"

"The family is a group defined by a sex-relationship sufficiently precise and enduring to provide for the procreation and upbringing of family."—*MacIver & Page.*

३. जकरमैन—"एक पारिवारिक समूह, पुरुष-स्वामी, उसकी स्त्री या स्त्रियो और उसके बच्चो को मिलाकर बनता है और कभी-कभी एक या अधिक अविवाहित पुरुषो को भी सम्मिलित किया जा सकता है।"

"A family group consists of a male overlord, his female or females together with their yourg, and may sometimes include one or more bachelor or unmated males."—*Zuckerman.*

अतीत और वर्तमान में परिवार के कार्य

Functions of the Family in the Past & Present

परिवार के कार्य पिछले समय से अब तक बदलते चले आए हैं। ऑगबर्न और निमकॉफ (Ogburn & Nimkoff) के अनुसार—अतीत मे परिवार के सात कार्य थे; यथा—(१) प्रेम-सम्बन्धी, (२) आर्थिक, (३) शैक्षिक, (४) रक्षा-सम्बन्धी, (५) मनोरंजन-सम्बन्धी, (६) परिवार की स्थिति (Status), और (७) धर्म की स्थिति।

वर्तमान समय में औद्योगीकरण, नगरीकरण, आवागमन की सुविधाओं और विज्ञान की उन्नति के कारण इनमे से कुछ कार्य या तो समाप्त हो गए हैं या इनमें परिवर्तन हो गया है। प्राचीन काल में शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण देना—परिवार का मुख्य कार्य था, पर आज के सभी उन्नतिशील देशो मे यह काय समाज या राज्य द्वारा किया जाता है। नर्सरी और किंडरगार्टेन स्कूलो ने कुछ सीमा तक छोटे बच्चों के पालन-पोषण और शिक्षा का कार्य अपने ऊपर ले लिया है। इसी प्रकार

यहाँ यह कहना असगत न होगा कि घर के वातावरण का प्रभाव व्यक्ति के विकास के सभी स्तरो पर पडता है। इसीलिए लॉरी ने लिखा है—"शैक्षिक इतिहास के सभी स्तरों पर परिवार, बालक की शिक्षा का प्रमुख साधन है।"

"At all stages of educational history, the family is the chief agency in the education of the young."—*Laurie*

घर के कार्य और महत्त्व पर विभिन्न विचार

Different Views on the Functions & Importance of Home

शिक्षा के अनौपचारिक साधन के रूप मे घर के कार्यों और महत्त्व पर समय-समय पर विभिन्न विचार व्यक्त किए गये हैं। यहाँ हम उनमे से कुछ का वर्णन कर रहे हैं। यथा—

१. प्राचीन भारतीय विचार : Ancient Indian View

प्राग-ऐतिहासिक काल से ईसा की १०वी शती पूर्व तक भारत मे बालको को कई वर्ष तक व्यवस्थित रूप मे शिक्षा देने के लिये विद्यालय नही थे। उस समय तक यह कार्य केवल परिवार के द्वारा ही किया जाता था। परिवार का नेता अपने पुत्रो को वेदो, साहित्य, धर्म, कृषि, वाणिज्य, व्यवसाय आदि की शिक्षा देता था।

२. प्राचीन यूनानी विचार Ancient Greek View

प्राचीन काल मे यूनानियों ने बालक के प्रशिक्षण मे परिवार को बहुत कम महत्त्व दिया। इसका कारण—उनके द्वारा समाज मे स्त्री को निम्न स्थान दिया जाना था।

३. रूसो का विचार . Rousseau's View

रूसो प्रकृतिवादी दार्शनिक (Naturalistic Philosopher) था। अत. उसे यह विश्वास नही था कि आधुनिक सभ्यता मे परिवार बच्चों को शिक्षा देने का कार्य कर सकता है। उसने स्वयं पिता के रूप मे एमाइल (Emile) को समाज से दूर प्रकृति की गोद में शिक्षा दी।

४. पेस्टालॉजी का विचार . Pestalozzi's View

पेस्टालॉजी बालक के प्रशिक्षण के लिए घर को अनिवार्य मानता था। उसने माता को सब शिक्षा का वास्तविक स्रोत बताया। उसका कहना था—"घर शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान और बालक का प्रथम विद्यालय है।"

"Home is the best place for education and the first school of the child."—*Pestalozzi*.

५. फ्रोबेल का विचार Froebel's View

फ्रोबेल माताओं को आदर्श शिक्षक मानता था। उसका विचार था—"माताएँ आदर्श अध्यापिकाएँ हैं, और घर द्वारा दी जाने वाली अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली और स्वाभाविक है।"

"Mothers are the ideal teachers, and the informal education given by home is most effective and natural" —*Froebel.*

६. मांटेसरी का विचार : Montessori's View

मांटेसरी ने छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए घर के वातावरण और परिस्थिति को अति आवश्यक तत्व माना। इसीलिए उसने अपने विद्यालय को 'बच्चों का घर' (House of Childhood) के नाम से पुकारा। इसमें वे सभी तत्व अति महत्वपूर्ण कार्य करते थे।

७. रेमान्ट का विचार Raymont's View

रेमान्ट के अनुसार सामान्य परिस्थितियों में घर अति महत्वपूर्ण स्थान है। उसने लिखा है—"घर ही वह स्थान है, जहाँ वे महान् गुण उत्पन्न होते हैं, जिनकी सामान्य विशेषता 'सहानुभूति' है। घर में ही घनिष्ठ प्रेम की भावनाओं का विकास होता है। यहीं बालक उदारता और अनुदारता, निःस्वार्थ और स्वार्थ, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य, परिश्रम और आलस्य में अन्तर सीखता है। यहीं उसमें इनमें से कुछ की आदत सबसे पहले पड़ती है।"

"The home is the soil in which spring up those virtues of which 'sympathy' is the common characteristic. It is there that the warmest and most intimate affections flourish. It is there that the child learns the difference between generosity and meanness, considerateness and selfishness, justice and injustice, truth and falsehood, industry and idleness. It is there that his habitual learning of the one or the other of these is first determined."—*Raymont.*

८. हैण्डरसन का विचार Henderson's View

हैण्डरसन का विचार है—"बालक की शिक्षा उसके घर में प्रारम्भ होती है। जब वह अन्य व्यक्तियों के कार्यों को देखता है, उनका अनुकरण करता है, और उनमें भाग लेता है, तब वह अनौपचारिक रूप से शिक्षित किया जाता है।"

"A child's education begins in his home. As he watches, imitates, participates in the activities of living, he is being informally educated."—*Henderson.*

घर या परिवार के शैक्षिक प्रभाव या शैक्षणिक कार्य
Educative Influence or Educational Functions of Home or Family

बालक के जीवन मे परिवार के कार्य के बारे मे काफी लिखा जा चुका है। उस पर घर का जो प्रभाव पड़ता है—वह लाभप्रद भी हो सकता है और हानिप्रद भी। हम यहाँ इन बातो का विस्तृत अध्ययन करेंगे। यथा —

१. सीखने का प्रथम स्थान Primary Place of Learning

घर या परिवार प्रथम स्थान है, जहाँ बालक बहुत-सी बातें सीखता है। रेमॉन्ट के शब्दों मे—"सामान्य रूप से घर ही वह स्थान है, जहाँ बालक अपनी माँ से चलना, बोलना, मैं और तुम मे अन्तर करना और अपने चारो ओर की वस्तुओं के सरलतम गुणों को सीखता है।"

"Normally, it is at home with his mother that the child learns to walk and to talk, to distinguish between *meum* and *tunir* to learn the simplest properties of things around him."—*Raymont*.

२ नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण . Moral & Social Training

परिवार नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण का सबसे मुख्य स्थान है। पहले बच्चा भाषा सीखता है। फिर वह भाषा के माध्यम से नैतिक और सामाजिक नियमों को सीखता है। वह परिवार के ढङ्गो, व्यवहारो और परम्पराओं को अपनाता है। *जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वैसे वैसे वह अधिक उत्तम नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण* प्राप्त करता है।

३. दूसरो से अनुकूलन . Adjustment with Others

बालक घर मे ही दूसरो से अनुकूलन करने का पहला पाठ सीखता है। वह परिवार के विभिन्न सदस्यों को एक-दूसरे से मेल रखते हुए देखता है। इसका बालक पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और वह भी वैसा ही करने का प्रयत्न करता है।

४. सामाजिक व्यवहार का आधार . Basis of Social Behaviour

बालक परिवार के सामाजिक जीवन मे जो अनुभव प्राप्त करता है, वही भविष्य में उसके सामाजिक व्यवहार का आधार होता है। बचपन मे ही वह संघर्ष या सहयोग, भक्ति या भक्तिहीनता के प्रति कुछ प्रवृत्तियों को अपनाता है। जब वह समाज मे अपना स्थान प्राप्त करता है, तब वह इन्हें अपने कार्यों द्वारा व्यक्त करता है।

५ मूल्यों और आदर्शों का विकास Cultivation of Values and Ideals

घर का प्रभाव बालक मे कुछ मूल्यों और आदर्शों का विकास करता है। वह अपने पिता से न्याय, माता से प्रेम और भाई-बहिनो से भ्रातृत्व-भावना सीखता है।

घर या परिवार के शैक्षिक प्रभाव या शैक्षणिक कार्य
Educative Influence or Educational Functions of Home or Family

बालक के जीवन मे परिवार के कार्य के बारे मे काफी लिखा जा चुका है। उस पर घर का जो प्रभाव पडता है—वह लाभप्रद भी हो सकता है और हानिप्रद भी। हम यहाँ इन बातों का विस्तृत अध्ययन करेंगे। यथा —

१. सीखने का प्रथम स्थान : Primary Place of Learning

घर या परिवार प्रथम स्थान है, जहाँ बालक बहुत-सी बातें सीखता है। रेमॉन्ट के शब्दों मे—"सामान्य रूप से घर ही वह स्थान है, जहाँ बालक अपनी माँ से चलना, बोलना, मैं और तुम मे अन्तर करना और अपने चारो ओर की वस्तुओ के सरलतम गुणों को सीखता है।"

"Normally, it is at home with his mother that the child learns to walk and to talk, to distinguish between *meum* and *tum* to learn the simplest properties of things around him."—*Raymont*.

२. नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण : Moral & Social Training

परिवार नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण का सबसे मुख्य स्थान है। पहले बच्चा भाषा सीखता है। फिर वह भाषा के माध्यम से नैतिक और सामाजिक नियमों को सीखता है। वह परिवार के ढङ्गो, व्यवहारों और परम्पराओं को अपनाता है। जैसे-जैसे वह बडा होता है, वैसे-वैसे वह अधिक उत्तम नैतिक और सामाजिक प्रशिक्षण प्राप्त करता है।

३. दूसरों से अनुकूलन : Adjustment with Others

बालक घर मे ही दूसरों मे अनुकूलन करने का पहला पाठ सीखता है। वह परिवार के विभिन्न सदस्यो को एक-दूसरे मे मेल रखते हुए देखता है। इसका बालक पर अनुकूल प्रभाव पडता है और वह भी वैसा ही करने का प्रयत्न करता है।

४. सामाजिक व्यवहार का आधार : Basis of Social Behaviour

बालक परिवार के सामाजिक जीवन मे जो अनुभव प्राप्त करता है, वही भविष्य में उसके सामाजिक व्यवहार का आधार होता है। बचपन मे ही वह सघर्ष या सहयोग, भक्ति या भक्तिहीनता के प्रति कुछ प्रवृत्तियो को अपनाता है। जब वह समाज मे अपना स्थान प्राप्त करता है, तब वह इन्हें अपने कार्यों द्वारा व्यक्त करता है।

५ मूल्यों और आदर्शों का विकास : Cultivation of Values and Ideals

घर का प्रभाव बालक मे कुछ मूल्यों और आदर्शों का विकास करता है। वह अपने पिता से न्याय, माता से प्रेम और भाई-बहिनो से भ्रातृत्व-भावना सीखता है।

घर में ही बालक सहायता, सहानुभूति, क्षमा, सच्चाई, परिश्रम और उदारता के आदर्शों को देखता है। वह इन मूल्यों और आदर्शों में से कुछ को अपने भावी जीवन में अपनाता है।

६. आदतों का निर्माण Formation of Habits

बालक में अच्छी या बुरी आदतें घर में ही पड़ती हैं। वह अपने परिवार के सदस्यों की कुछ आदतों को देखता है और अनजाने ही उनको ग्रहण कर लेता है। बुरी आदतें छूत के रोगों के समान होती हैं। अतः यह आवश्यक है कि माता पिता अच्छी आदतों के उदाहरण ही अपने बच्चों के सामने रखें।

७. पसन्दों और रुचियों का विकास .
Development of Tastes & Interests

परिवार में ही बालक की पसन्दों और रुचियों का विकास होता है। यदि वह अपने घर में सदैव सुन्दर और आकर्षक वस्तुएँ देखता है, तो उसे निश्चय रूप से ऐसी वस्तुओं में रुचि होगी। वह उन वस्तुओं को पसन्द या नापसन्द करने लगता है, जिन्हें परिवार में पसन्द या नापसन्द किया जाता है।

८. मानसिक और भावात्मक प्रवृत्ति का निर्माण
Formation of Mental & Emotional Disposition

घर का वातावरण बालक में मानसिक और भावात्मक प्रवृत्ति का निर्माण करता है। उदाहरणार्थ—जिस बालक का पालन-पोषण संगीतकारों के परिवार में होता है, उसमें संगीत के प्रति मानसिक और भावात्मक प्रवृत्ति का पाया जाना आवश्यक है।

९. वैयक्तिकता का विकास : Development of Individuality

बालक की वैयक्तिकता का विकास घर में होता है। उसके प्रति उसकी माँ का दृष्टिकोण पूर्ण रूप से वैयक्तिक होता है। वह चाहती है कि उसका पुत्र सब बातों में अन्य व्यक्तियों से श्रेष्ठ हो। वह और परिवार के अन्य सदस्य उसकी वैयक्तिकता का विश्लेषण करते हैं और उसे विकसित करने के लिये सभी प्रकार के अवसर देते हैं।

१० प्रेम की शिक्षा Education in Love

माँ केवल बालक से प्रेम ही नहीं करती है, बल्कि उसे प्रेम की शिक्षा भी देती है। माँ के अलावा परिवार के दूसरे सदस्य भी बालक को प्रेम की शिक्षा देते हैं। परिणामस्वरूप बालक परिवार, समाज, देश और विश्व से प्रेम करने लगता है। [illegible] और [illegible] का कथन है — "माता-पिता द्वारा बच्चे को दिया जाने वाला आदर्श निःस्वार्थ प्रेम का सर्वोत्तम जीवित उदाहरण प्रस्तुत करता है।"

"The comfort given to the child by parents presents the best living example of selfless love.—*Dr Ram & Dr Sharma*

११. नि:स्वार्थता की शिक्षा Education in Selflessness

व्यक्ति सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसे नि:स्वार्थता की शिक्षा मिलना बहुत आवश्यक है। बालक अपने माता-पिता की नि:स्वार्थता को प्रति क्षण देखता है। वे हर मुसीबत उठाकर बच्चे को अधिक से अधिक आराम देने का प्रयत्न करते हैं। परिणाम यह होता है कि बालक भी उनके समान नि:स्वार्थ बनने का प्रयास करता है। बोगार्डस ने लिखा है—"परिवार का आधार आत्म बलिदान का सिद्धान्त है। आत्म-बलिदान के ही कारण इसकी महान् शक्ति है और इसीलिए यह बालकों के सामजिक प्रशिक्षण का केन्द्र है।"

"A family rests on the principle of self-sacrifice, and in its sacrificial nature lies its great strength as a social training centre of children."—*E. S. Bogardus.*

१२. सहयोग की शिक्षा Education in Co-operation

जब बालक बड़ा होकर समझदार बनता है, तब वह अपने परिवार के सदस्यों को एक-दूसरे को सहयोग देते हुए देखता है। माँ घर का काम-काज करती है, पिता धन कमा कर लाता है, बड़े भाई-बहिन किसी-न-किसी काम में माता-पिता का हाथ बँटाते हैं। बालक इन सब में सहयोग की शिक्षा ग्रहण करता है। बोसांके ने ठीक ही लिखा है—"परिवार ही वह स्थान है, जहाँ प्रत्येक नई पीढ़ी नागरिकता का यह नया पाठ सीखती है कि कोई भी मनुष्य बिना सहयोग के जीवित नहीं रह सकता है।"

"Family is a place through which each new generation learns a new lesson of citizenship that no man can exist without cooperation."—*Bosanquet.*

१३. परोपकार की शिक्षा Education in Philanthropy

हर बड़े परिवार में कोई-न-कोई व्यक्ति ऐसा अवश्य होता है जो रोगी या वृद्ध होने के कारण दूसरों पर निर्भर रहता है। उसकी देख-रेख घर के दूसरे लोग करते हैं। बालक परोपकार के इन कार्यों को देखता है। फलत: उसमें परोपकार की भावना जाग्रत होती है। इस सम्बन्ध में शॉ ने लिखा है—"परोपकार की भावना का विकास सबसे पहले परिवार में होता है, जहाँ बालक परिवार के रोगी, वृद्ध और छोटे सदस्यों की सहायता और सेवा को न केवल देखते हैं, वरन् उन्हें अक्सर ऐसा करना भी पड़ता है।"

"The spirit of philanthropy is cultivated first in the family where children not only see but are often required to serve and

render help to the sick, old and younger members of the fam[illegible]
Alfred J. Sh[illegible]

१४ सहिष्णुता की शिक्षा : Education in Tolerance

हर परिवार में हर तरह के व्यक्ति होते हैं। किसी को बहुत गुस्सा आता है। कोई भावुक होता है और कोई [illegible] होता है। इन सबके कारण परिवार का वातावरण दूषित हो सकता है और सभी सदस्य दुखी हो सकते हैं। परिवार में कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जो [illegible] के होते हैं। इनमें सहिष्णुता भी होती है। इनके [illegible] परिवार में [illegible] रहती है। समझदार बालक सहिष्णुता के इस पाठ को सीखता है।

१५ आज्ञापालन और अनुशासन की शिक्षा
Education in Obedience & Discipline

हर परिवार पर किसी-न-किसी व्यक्ति का पूर्ण अधिकार होता है, चाहे पिता हो या माता या और कोई सदस्य। उसकी आज्ञा परिवार के प्रत्येक सदस्य माननी पड़ती है। इस बालक भी आज्ञापालन और अनुशासन के गुणों का [illegible] करता है। कॉम्टे का कथन है—"आज्ञा-पालन और सरकार—दोनों क्षेत्रों में पारिवारिक जीवन सामाजिक जीवन का सदैव अनन्त विद्यालय रहेगा।"

"Family life will ever remain the eternal school of soc[illegible] life as regards both obedience and government."—*Auguste Comte.*

१६. कर्त्तव्यपालन की शिक्षा : Education for Performance of Duty

परिवार के सभी बड़े सदस्य अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं। माँ गृहस्थी का काम करना और अपने बच्चों को सुखी रखना अपना कर्त्तव्य समझती है। पि[illegible] हर प्रकार उनकी उचित आवश्यकताओं को पूर्ण करना अपना परम कर्त्तव्य समझत[illegible] है। बड़े भाई-बहिन अपने से छोटों के प्रति अपने कुछ कर्त्तव्य समझते हैं और उनक[illegible] करते हैं। बालक परिवार के सब सदस्यों में कर्त्तव्य-पालन की भावना को देखत[illegible] और सीखता है।

१७. व्यावहारिक शिक्षा : Practical Education

बालक को परिवार में विभिन्न प्रकार की व्यावहारिक शिक्षा मिलती है, जैसे—उसे बाहर से आने वाले व्यक्तियों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए? अतिथियों का सत्कार किस प्रकार करना चाहिए? किस प्रकार उठाना, बैठना और खड़े होना चाहिए?—आदि। इस प्रकार का व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त करके बालक वास्तविक मनुष्य में बदल जाता है।

घर को शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनाने के उपाय

Measures to make the Home an Effective Agency of Education

घर को—विशेषतः भारतीय घर को—शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनाने के लिए अधोलिखित उपायों को अपनाया जा सकता है :—

१. पैतृक प्रभाव Hereditary Influences

बालक अपने माता-पिता से कुछ क्षमतायें और योग्यताएँ (Capacities & Potentalities) प्राप्त करता है। अधिकांश भारतीय माता-पिता निरक्षर होने के कारण शिक्षित माता-पिताओं की क्षमताओं और योग्यताओं का दावा नहीं कर सकते हैं। अतः घर को शिक्षा का प्रभावशाली साधन बनाने के लिए यह आवश्यक है कि भारतीय परिवारों से निरक्षरता को दूर किया जाय। माता-पिता को एक निश्चित स्तर तक शिक्षा दी जाय। साथ ही उन्हें पारिवारिक सदस्यता में प्रशिक्षण दिया जाय। थामस और लैंग (Thomas & Lang) के अनुसार इस प्रशिक्षण का आधार अग्रलिखित बातें होनी चाहिए :—

१. पैतृकता के नियम (Laws of Heredity)
२. सतति-निग्रह के साधन (Means of Birth-Control)
३. पैतृक दोषों को रोकने की विधियाँ (Methods of Checking the Hereditary Defects)
४. प्रेम और प्रजनन का महत्त्व (Significance of Love and Eugenics)
५. बालक के विकास, स्वास्थ्य, रुचियों, धारणाओं आदि की शिक्षा (Education for Child's Development, Health, Interests, Attitudes, etc.)
६. घरेलू मामलों की देख-भाल (Management of Domestic Affairs)
७. पारिवारिक झगड़ों के कारण (Causes of Family Disruptions)
८. सहयोगी लोकतन्त्रीय आदर्श (Co-operative Democratic Ideal)

२. भौतिक वातावरण-सम्बन्धी प्रभाव

Physical Environmental Influences

सामान्य भारतीय घर के भौतिक, वातावरण-सम्बन्धी प्रभाव को स्वस्थ नहीं कहा जा सकता है। एक साधारण मनुष्य के घर की स्थिति, उसका पड़ोस, उसके कमरे, उसका फर्नीचर आदि बहुत ही बुरा दृश्य प्रस्तुत करते हैं। वे बालक के स्वास्थ्य और विकास के लिए तनिक भी उपयुक्त नहीं हैं।

अतः भारतीय घरों के भौतिक वातावरण में परिवर्तन करना अति आवश्यक है। जब वातावरण से अवांछनीय बातों को निकाल दिया जायगा, तभी बालकों को अपने नैतिक और मानसिक विकास के लिए उचित वातावरण मिलेगा।

अच्छा प्रभाव हो। तभी बालको को सामाजिक वातावरण से अधिक से अधिक लाभ हो सकता है।

५ सौन्दर्यात्मक वातावरण-सम्बन्धी प्रभाव

Aesthetic Environmental Influences

रूप का सौन्दर्य मस्तिष्क को प्रभावित करता है। अत. बालक के मस्तिष्क पर उचित प्रकार का प्रभाव डालने के लिये उसके घर में सुन्दर वस्तुओ का वातावरण होना चाहिए। प्लेटो का कथन है :—"यदि आप चाहते हैं कि बालक सुन्दर वस्तुओं की प्रशंसा और निर्माण करे, तो उसके चारों ओर सुन्दर वस्तुएं प्रस्तुत कीजिये।"

"If you want the child to appreciate and create beautiful things, surround him with beautiful things."—*Plato*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Give a brief account of the importance of the home Support your answer by quoting the views of some thinkers and *educators.*
2. What measures, in your opinion, should be adopted to make the home an effective agency of education ?
3. Write a note on the educative influence of the home.
4. "Home education has its advantages and disadvantages." Elucidate
5. Make a brief mention of the attitudes and behaviour patterns that are developed in the home and that affect society as a whole.
6. *Show specifically* how a child may be affected by an emotionally disturbed parent.
7. "Neither the home nor the school can be successful without the co-operation of the other." Comment.

१९

चर्च या धर्म

(सक्रिय और अनौपचारिक साधन)

THE CHURCH or THE RELIGION

(An Active & Informal Agency)

"धर्म और शिक्षा स्वाभाविक मित्र हैं। दोनों का सम्बन्ध प्राकृतिक और भौतिक जगत के विरुद्ध आध्यात्मिकता से है। दोनों मनुष्य को उसके वातावरण के सम्पर्क से नहीं, वरन् उसकी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयत्न करते हैं।"

"Religion and education are natural allies. Both have to do with spiritual as over against the physical and material. Both seek to emancipate man, not from contact with his environment, but from slaving to it." —*E. D. Burton.*

धर्म का अर्थ और परिभाषा

Meaning & Definition of Religion

धर्म का अर्थ : Meaning of Religion

'Religion' शब्द की उत्पत्ति लेटिन के दो शब्दों से हुई है—'re' और legere'। इनका अर्थ है—'to bind back' अर्थात् सम्बन्ध स्थापित करना। इस प्रकार धर्म वह चीज है, जो सम्बन्ध स्थापित करती है। पर प्रश्न उठता है कि यह सम्बन्ध किस-किस के बीच स्थापित होता है? इसको स्पष्ट करते हुए गिलबर्ट ने लिखा है—"धर्म दोहरा सम्बन्ध स्थापित करता है—पहिला, मनुष्य और ईश्वर के बीच; दूसरा, ईश्वर की सन्तान होने के कारण मनुष्य और मनुष्य के बीच।"

"Religion establishes a double bond, one between man and God and the other between man and man as children of God."
—*Gilbert.*

मनुष्य और मनुष्य में सम्बन्ध तभी स्थापित हो सकता है, जब हम अपनी पूरी शक्ति से दूसरों की भलाई करें। यह तभी सम्भव है, जब हम नम्र, पवित्र, दयालु और निष्पक्ष हों। इससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि धर्म का सार—नम्रता, पवित्रता, दया और निष्पक्षता है। (The essence of religion lies in humility, piousness, mercy, and justice.)

धर्म के दो पक्ष : Two Aspects of Religion

धर्म के दो पक्ष हैं—'आन्तरिक' और 'बाह्य' (Internal & External)। आन्तरिक पक्ष में ईश्वर से सम्बन्धित मनुष्य के विचार, विश्वास और भावनायें आती हैं। बाह्य पक्ष में प्रार्थनायें और धार्मिक रीति रिवाज आते हैं, जिनके द्वारा धार्मिक भावना को व्यक्त किया जाता है। इस पक्ष से सम्बन्धित संस्था को चर्च (Church) के नाम से पुकारा जाता है।

धर्म की परिभाषा : Definition of Religion

हम धर्म के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषायें दे रहे हैं —

१. गिस्बर्ट—"धर्म ईश्वर या देवताओं के प्रति, जिनके ऊपर मनुष्य अपने को निर्भर अनुभव करता है, गतिशील विश्वास और आत्म-समर्पण है।"

"Religion is that dynamic belief in and submission to God or to gods on whom man feels dependent."—*Gisbert*.

२. डॉसन—"जब कभी और जहाँ कहीं मनुष्य बाह्यशक्तियों पर निर्भरता का अनुभव करता है, जो रहस्यपूर्ण और मनुष्य की शक्तियों से कहीं अधिक उच्चतर मानी जाती हैं, वहीं धर्म होता है।"

"Whenever and wherever man has a sense of dependence on external powers which are conceived as mysterious and higher than man's own, there is religion." —*Dawson*.

३. किलपैट्रिक—"धर्म एक सांस्कृतिक ढाँचा है, जो अलौकिक या असाधारण बातों से सम्बन्ध रखता है, जैसा कि उसमें विश्वास रखने वाले विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा विचार किया जाता है।"

"Religion is a cultural patrern based on relations with the super-natural or extra-ordinary as conceived by particular people involved." —*Kilpatric*.

जीवन और समाज में धर्म का कार्य
Role of Religion in Life & Society

१९३३ में महात्मा गांधी ने मानव-जीवन में धर्म को एक महान् शक्ति

बनाया। उन्होंने कहा— "धर्म वह शक्ति है। जो व्यक्ति को बड़े से बड़े कष्ट में ईमानदार बनाये रखती है। यह इस संसार में और दूसरे में भी व्यक्ति की आशा का अन्तिम सहारा है।'

'Relig on is a force that keeps one true in the face of the greatest adversity. It is the sheet-anchor of one's hope in this world and even after." Mahatma Gandhi

यह बात निर्विवाद है कि धर्म मस्तिष्क को शान्ति देता है, मनुष्य के हृदय में आशा का संचार करता है और उसे हर मुसीबत का सामना करने के लिए बल देता है। इस सम्बन्ध में युग (Jung) के अनुभव का उल्लेख करना अप्रासंगिक न होगा। उसने वायना (Vienna) में ३० वर्ष के मानसिक चिकित्सक के रूप में काम किया। इस अवधि में ३५ वर्ष से अधिक आयु के जो भी व्यक्ति उसके पास आये, उनके मानसिक रोग का कारण—उनके जीवन में धर्म का अभाव था, और उनका रोग तभी अच्छा हुआ, जब यह अभाव पूर्ण हुआ।

इसके अतिरिक्त, धर्म मानव-जीवन एवं समाज में और भी कार्य करता है। यह व्यक्ति के पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन को एक निश्चित दिशा देता है। मानव-जाति के सम्पूर्ण इतिहास पर धर्म की छाप लगी हुई है। इसकी पुष्टि करते हुए गिस्बर्ट ने लिखा है—"अमरीकी और फ्रांसीसी क्रान्तियों पर धर्म की छाप थी और ९ जनवरी, १९०५ तक रूसी क्रान्ति पर भी प्रबल धार्मिक प्रभाव था। आधुनिक समय में महात्मा गांधी और आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व में होने वाले महान् सामाजिक और आर्थिक आन्दोलनों का आधार धर्म है।"

"Both the American and French revolutions had a religious touch, and even the Russian working class movement had strong religious influences until the 9th January, 1905, and in modern times, the great social and economic movements headed by Mahatma Gandhi and Acharya Vinoba Bhaba have deep religious roots."—Gisbert

संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि धर्म एक सर्वव्यापक शक्ति है, जो व्यक्ति और समाज को अनेकों प्रकार से प्रभावित करती है। हुमायूं कबीर ने सत्य ही कहा है— "धर्म अनेकों संघर्षों का अन्त करता है। यह उन शक्तियों का संचार करता है, जो कठिनाइयों और पराजयों को स्वीकार नहीं करती हैं।"

"Religion resolves many of the conflicts. It releases energies that recognise neither difficulties nor defeats." —Humayun Kabir.

शिक्षा में धर्म का स्थान
Place of Religion in Education

ह्वाइटहैड (Whitehead) ने धर्म को "शिक्षा का सार" (Essence of Education) माना है। धर्म के अभाव मे शिक्षा व्यक्ति को कठोर और स्वार्थी बना देती है। यदि सामाजिक प्रगति की योजना मे धर्म को स्थान नही दिया जाता है, तो उस शक्ति की अवहेलना की जाती है, जो सामाजिक सगठन को दृढ़ बनाती है।

वास्तविकता यह है कि 'धर्म' और 'शिक्षा' को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। कारण यह है कि शिक्षा और धर्म के लक्ष्य प्राय एक ही हैं। सच्ची शिक्षा का आधार 'धर्म' है और शिक्षा को धर्म से अलग करके उसके क्षेत्र, उद्देश्य और लक्ष्य को सकुचित बना दिया जाता है। सच्ची शिक्षा सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करती है। धार्मिक आदर्श का भी सम्पूर्ण व्यक्तित्व से सम्बन्ध है। इस दृष्टिकोण से भी शिक्षा का आधार 'धर्म' होना चाहिए।

जार्ज डब्ल्यू फिस्के ने लिखा है—"शिक्षा की अगणित परिभाषाओं में से कोई भी ऐसी नहीं है, जो धर्म को शिक्षा की सम्भावना और आवश्यकता को सीखने की महान् प्रक्रिया का अग मानने का सुझाव न देती हो। भौतिकवादी दृष्टिकोण के सिवा सभी दृष्टिकोणों से शिक्षा में धार्मिक पहलू और धार्मिक विषय-वस्तु दिखाई देती है। अत शिक्षा को पूर्ण होने के लिए धार्मिक होना चाहिए।" यदि हम ऐसा नही करते हैं, तो हम शिक्षा को अधूरा छोड़ देते हैं।

"Among the innumerable definitions of education, there is *none which does not suggest the possibility and need of teaching* religion as a part of the great learning process From any viewpoint except that of the materialist, education is seen to have a religious phase and content That is, education must be religious to be complete" —*George W Fiske.*

धर्म-निरपेक्ष राज्य मे धार्मिक शिक्षा का स्थान
Place of Religious Education in a Secular State

भारत ऐसे धर्म-निरपेक्ष राज्य मे धार्मिक शिक्षा के बारे मे दो प्रश्न उठते है—क्या हमारे विद्यालयो मे धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिए ? यदि हां, तो उसका रूप क्या होना चाहिये ? इन दोनों प्रश्नों पर मुदालियर और राधाकृष्णनन् आयोगों ने अपने विचार व्यक्त किये है। हम इन्हें यहां प्रस्तुत कर रहे हैं—

मुदालियर आयोग के विचार : Views of Mudaliar Commission

भारत धर्म-प्रधान देश है। अत. लोगो द्वारा धार्मिक शिक्षा पर बल दिया जाना स्वाभाविक है। पर ऐसे लोग भी हैं, जो इसका विरोध दो कारणो में करते हैं:—

(१) हमारे देश में विभिन्न प्रकार के धर्म माने जाते हैं; (२) संविधान द्वारा
को धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित कर दिया गया है। अतः विद्यालयों में किसी
की धार्मिक शिक्षा नहीं दी जानी चाहिए। कमीशन इससे सहमत नहीं है। उसका
है– 'क्योंकि भारत धर्म निरपेक्ष राज्य है इसलिये इसका अर्थ यह नहीं है कि
में धर्म का कोई स्थान नहीं है। इसका अर्थ केवल यह है कि राज्य को किसी
विशेष को समर्थन, सहायता या स्वीकृति नहीं देनी चाहिये। यह बात लोगों के
छोड़ दी जानी चाहिये कि वे अपनी इच्छा, परम्परा, संस्कृति और पैतृक प्रभा
अनुसार किसी भी धर्म को मानें।"

"This does not imply that because the State is secular th
is no place for religion in the State. All that is understood is t
the State as such should not undertake to uphold actively, as
or in any way to set its seal of approval on any particular religio
It must be left to the people to practise whatever religion they f
is in conformity with their inclinations, traditions, culture, a
hereditary influence."—*Secondary Education Commission.*

इस प्रकार धर्म पर अपने विचार व्यक्त करने के बाद कमीशन धार्मि
शिक्षा के बारे में इस निष्कर्ष पर पहुँचा "संविधान के अनुसार विद्यालयों में धार्मि
शिक्षा नहीं दी जा सकती है। वे केवल ऐच्छिक आधार पर और विद्यालय की पढ़
के घण्टों के अलावा धार्मिक शिक्षा दे सकते हैं। ऐसी शिक्षा, विशेष धर्म के बच्चों
ही और अभिभावकों तथा विद्यालय-प्रबन्धकों की इच्छा से ही दी जानी चाहिए।"

"In view of the provision in the Constitution, religiou
instruction cannot be given in schools except on a voluntary bas
and outside the regular school hours, such instruction should b
given to the children of the particular faith and with the consen
of the parents and the managements concerned."—*Secondar
Education Commission.*

राधाकृष्णनन् आयोग के विचार
Views of Radhakrishnan Commission

आयोग ने लिखा कि हिन्दू और मुस्लिम काल में धर्म का शिक्षण—शिक्षा
का आवश्यक अंग था। इसको छात्रों के निजी और सामाजिक जीवन के विकास के
लिये आवश्यक समझा जाता था। अंग्रेजों ने धार्मिक तटस्थता (Religious
Neutrality) की नीति को अपनाया। अतः उन्होंने शिक्षा-पद्धति में धार्मिक शिक्षा
को कोई स्थान नहीं दिया। पर आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति के आध्यात्मिक
विकास के लिये धार्मिक शिक्षा को आवश्यक माना जाता है। यद्यपि भारत धर्म-

निरपेक्ष राज्य है, पर यह धर्म की उपेक्षा नहीं करता है। संविधान की १६वीं धारा सब लोगो को अपने धर्म को स्वतन्त्रतापूर्वक मानने का अधिकार देती है।

उपरोक्त विचारो को व्यक्त करने के बाद आयोग ने धार्मिक शिक्षा के बारे में अधोलिखित सुझाव दिये—

१. सब शिक्षा-संस्थाओ को अपना काम कुछ मिनट के मौन ध्यान के बाद प्रारम्भ करना चाहिए।
२. बी० ए० के पहले वर्ष में बुद्ध, कन्फ्यूसियस, जोरस्टर, सुकरात, ईसा, शंकराचार्य, रामानुज, माधवाचार्य, मुहम्मद, कबीर, नानक, गांधी आदि महान् धार्मिक नेताओ की जीवनियाँ पढ़ाई जानी चाहिए।
३. दूसरे वर्ष मे संसार की धार्मिक पुस्तको से कुछ मानवतावादी चरित्रों के आदर्श कार्यों का अध्ययन किया जाना चाहिए।
४. तीसरे वर्ष मे धर्म के दर्शन की मुख्य समस्याओ का अध्ययन किया जाना चाहिये।

धार्मिक शिक्षा की आवश्यकता और महत्त्व

Need & Importance of Religious Education

मनुष्य और समाज के जीवन में धार्मिक शिक्षा का स्थान सदैव महत्त्वपूर्ण रहा है। पर इस शिक्षा का आधार संकीर्ण धर्म न होकर व्यापक धर्म होना चाहिए। कारण यह है कि संकीर्ण धर्म मानव-मानव मे भेद उत्पन्न करता है और समाज में नाना प्रकार के संघर्षों को जन्म देता है। इसी विचार से महात्मा गांधी ने वर्धा-शिक्षा-योजना मे धर्म को कोई स्थान नहीं दिया। उन्होंने कहा :—"हमने वर्धा-शिक्षा-योजना में धर्मों की शिक्षा को इसलिये स्थान नहीं दिया है क्योंकि हमें विश्वास है कि आजकल जिस प्रकार धर्मों की शिक्षा दी जाती है और उनका अनुसरण किया जाता है उससे एकता के बजाय संघर्ष उत्पन्न होता है।"

"We have left out the teaching of religions from the Wardha Scheme of Education because we are afraid that religions as they are taught and practised today lead to conflict rather than unity."

—*M. K. Gandhi*.

अतः धार्मिक शिक्षा संकीर्ण धर्म पर आधारित न होकर व्यापक धर्म पर आधारित होनी चाहिये। व्यापक धर्म पर आधारित शिक्षा की क्या आवश्यकता है और क्या महत्त्व है—इस पर हम नीचे की पंक्तियों मे प्रकाश डाल रहे हैं :—

१. आज के भौतिक युग में मनुष्य सांसारिक सुख तो प्राप्त कर लेता है, पर उसे वास्तविक सुख और शान्ति नहीं मिलती है। वह इनको केवल धार्मिक शिक्षा के ही द्वारा प्राप्त कर सकता है।

२ मनुष्य धर्म का आदर करता है और धार्मिक सिद्धान्तो का पालन करता है। अत. धार्मिक शिक्षा के द्वारा विभिन्न प्रकार की सामाजिक बुराइयों को दूर किया जा सकता है।

३. धार्मिक शिक्षा बालकों की मूल-प्रवृत्तियो का शोधन (Sublimation) कर सकती है। उन्हें अच्छे सामाजिक प्राणी बनाने के लिये यह बहुत आवश्यक है।

४ धार्मिक शिक्षा व्यक्ति मे सत्य, सदाचार, ईमानदारी आदि के उत्तम गुणों का विकास करती है।

५. भारत सदैव से धर्म-प्रधान देश रहा है। अत भारतीय जीवन से धर्म को निकाल देना सर्वथा अनुचित है।

६. धार्मिक शिक्षा "वसुधैव कुटुम्बकम्" का पाठ पढ़ाती है। अत. यदि सब देशो मे व्यापक धार्मिक शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय, तो सम्भवतः ससार मे स्थायी शान्ति स्थापित हो जाय।

७. धार्मिक शिक्षा मन की स्थिरता, इच्छा-शक्ति और एकाग्रता को विकसित करने मे योग देती है।

८. धार्मिक शिक्षा हमको सामाजिक और नैतिक मूल्यो का ज्ञान प्राप्त करने मे सहायता देती है।

९. धार्मिक शिक्षा के द्वारा उचित आचरण के आदर्शों का विकास होता है।

१०. धार्मिक शिक्षा सुदृढ़ और सबल व्यक्तित्व की आधार शिला है।

११ धार्मिक शिक्षा के द्वारा सामाजिक नियत्रण और सामाजिक एकता की उन्नति होती है।

१२. धार्मिक शिक्षा सस्कृति का महत्त्वपूर्ण अग होने के कारण संस्कृति की सुरक्षा और उन्नति में योग देती है।

उपरोक्त के आधार पर हम कह सकते हैं कि मानव और समाज के जीवन में धर्म का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि हम धन और भौतिकवाद में विश्वास करने लगे हैं, फिर भी हम धर्म और धार्मिक शिक्षा के बिना जीवन व्यतीत नहीं कर सकते हैं। अतः हमारे बालको को धार्मिक शिक्षा दी जानी चाहिये, चाहे उसका रूप और ढग कुछ भी हो। रेमॉन्ट ने उचित ही लिखा है— "हम अपने आधुनिक दृष्टिकोण से धर्म को केवल व्यक्ति के सामाजिक वातावरण का अग समझते हैं, पर शिक्षक द्वारा उसकी किसी प्रकार भी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। विभिन्न धर्मों के बारे में हमारा विचार चाहे कुछ भी हो, पर हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि वे राष्ट्र के रक्षक हैं।"

"From our present point of view we see church simply as one part of individual's social environment, by no means to be

ignored by the educator Whatever view we may hold about the authority of the various churches, we are bound to recognize them as educators of the nation "—*Raymont*.

UNIVERSITY QUESTIONS

1. "Religion is the sheet-anchor of one's hope in this world and ever after." Elucidate and discuss the role of religion in life and society.
2. What, in your opinion, should be the place of religion in education.
3. In theory, religion and education may be separated from each other, but in reality such a thought is impossible." Do you agree with this statement ? If so, why ?
4. What place should be assigned to religious education in a secular state ?
5. Express your views about the need and importance of religious education.

२०

समुदाय

(सक्रिय और अनौपचारिक साधन)

THE COMMUNITY

(An Active & Informal Agency)

"कोई समुदाय व्यर्थ में किसी बात को आशा नहीं कर सकता है। यदि चाहता है कि उसके तरुण व्यक्ति अपने समुदाय की भली-भांति सेवा करें, तो उन सब शैक्षिक साधनों को जुटाना चाहिए, जिनकी तरुण व्यक्तियों को व्यक्ति और सामूहिक रूप से समुदाय की सेवा करने के लिये आवश्यकता है।"

"A community cannot expect something for nothing I wishes its young people to serve their community well, it m provide whatever educational advantages are needed by the yo- people, individually and collectively, to prepare themselves for t service"—*Crow & Crow*

समुदाय का अर्थ और परिभाषा
Meaning and Definition of Community

समुदाय का अर्थ Meaning of Community

'समुदाय' का अंग्रेजी रूपान्तर 'Community' दो शब्दों से मिलकर बना है 'Com' और Munis'। 'Com' का अर्थ है—'Together' अर्थात् 'एक साथ' औ 'Munis' का अर्थ है - 'To serve' अर्थात् 'सेवा करना'। इस प्रकार 'Comm nity' शब्द का अर्थ है - 'To serve together' अर्थात् 'एक साथ सेवा करना' दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि 'समुदाय' व्यक्तियों का एक ऐसा समूह है, ज मिलकर एक साथ रहते हैं और एक-दूसरे की सेवा-सहायता करते हुए अप अधिकारों का उपभोग करते हैं।

समुदाय मनुष्यों का 'स्थायी और स्थानीय' (Permanent & Local) समूह है, जिसके अनेक प्रकार के और समान हित होते हैं। जहाँ कहीं भी व्यक्तियों का एक समूह सामान्य जीवन में भाग लेता है, वहीं हम उसे 'समुदाय' कहते हैं। जहां कहीं भी व्यक्ति निवास करते हैं, वहीं की कुछ सामान्य विशेषताएँ को विकसित करते हैं। उनके ढग, व्यवहार, परम्पराएं, बोलने की विधि इत्यादि एक से हो जाते है। ये सभी बातें एक सामान्य जीवन के प्रभावपूर्ण प्रतीक हैं। वास्तव मे 'समुदाय' एक अति विस्तृत और व्यापक शब्द और इसमें विभिन्न प्रकार के सामाजिक समूहों का समावेश हो जाता है। उदाहरणार्थ—परिवार, धार्मिक सघ, जाति, उपजाति, पड़ोस, नगर एव राष्ट्र—समुदाय के विभिन्न रूप हैं।

सभ्यता की प्रगति और इसके फलस्वरूप ससार के लोगों की एक-दूसरे पर अधिक निर्भरता हो जाने के कारण समुदाय की धारणा विस्तृत हो गई है। धीरे-धीरे अतीत के छोटे और आत्म-निर्भर ग्रामीण समुदाय का स्थान विश्व समुदाय लेता जा रहा है। इस बड़े समुदाय के लोग समान आदर्शों, रुचियों और आवागमन तथा सन्देश के तेज साधनों के कारण अधिक ही अधिक पास आते जा रहे हैं।

हम अब भी अपने नगर या कस्बे को अपना स्थानीय समुदाय कहते हैं। पर हमारे सम्बन्ध अपने देश और विदेश के लोगों से भी होते हैं। फलस्वरूप हम राज्य-समुदाय (State Community), राष्ट्रीय समुदाय (National Community) और अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय (International Community) के भी सदस्य होते हैं। इस प्रकार समुदाय मे एक वर्गमील से कम का क्षेत्र भी हो सकता है या इसका घेरा विश्व भी हो सकता है। यह क्षेत्र या घेरा इस बात पर निर्भर करता है कि इसके सदस्यों में आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक समानतायें हों।

समुदाय की परिभाषा : Definition of Community

हम समुदाय के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये कुछ परिभाषाएं नीचे दे रहे हैं :—

१. गिंसबर्ग—"समुदाय सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले सामाजिक प्राणियों का एक समूह समझा जाता है, जिसमें सब प्रकार के असीमित, विभिन्न और जटिल सम्बन्ध होते हैं, जो उस सामान्य जीवन के फलस्वरूप होते हैं, या जो उसका निर्माण करते हैं।"

"By community is to be understood a group of social beings living a common life including all the infinite variety and complexity of relations which result from common life or constitute it."

—*Ginsberg.*

२. मैकाइवर—"जब कभी एक छोटे या बड़े समूह के सदस्य इस प्रकार रहते हैं कि वे न इस अथवा उस विशिष्ट उद्देश्य में भाग लेते हैं, वरन् जीवन को

समस्त भौतिक दशाओं में भाग लेते हैं, तब हम ऐसे समूह को समुदाय कहते हैं।

"Whenever the members of any group, small or large live together in such a way that they share, not this or that particular interest, but the basic conditions of a common life, we call that group a community."—*Maciver.*

२. कोल—"समुदाय से मेरा अभिप्राय है, सामाजिक जीवन की जटिलता जिसमें सामाजिक सम्बन्ध की दशाओं में व्यक्तियों की कुछ संख्या साथ-साथ रहती है, जो सामान्य पर सदैव परिवर्तित होने वाले नियमों, रिवाजों और परम्पराओं से बंधे रहते हैं और जो किसी सीमा तक सामान्य सामाजिक उद्देश्यों और हितों के प्रति जाग्रत रहते हैं।"

"By community I mean a complex of social life, a complex including a number of human beings, living together under conditions of social relationship, bound together by a common, however constantly changing stock of conventions, customs and traditions, and conscious to some extent of common social objects and interests."—*Cole.*

बालक की शिक्षा में समुदाय का महत्त्व

Importance of Community in Child's Education

विद्यालय या परिवार के समान समुदाय भी व्यक्ति के व्यवहार मे इस प्रकार रूपान्तर करता है, जिससे कि वह उस समूह के कार्यों मे सक्रिय भाग ले सके जिसका कि वह सदस्य है। हम प्राय. यह सुनते हैं कि बालक वैसा ही बनता है, जैसा कि समुदाय के बड़े लोग उसको बनाते है। सत्य यह है कि समुदाय बालक के व्यक्तित्व के विकास पर बहुत प्रभाव डालता है। वास्तव में, समुदाय बालक की शिक्षा को प्रारम्भ से ही प्रभावित करता है।

बालक का विकास न केवल घर के सकुचित वातावरण मे, वरन् समुदाय के विस्तृत वातावरण मे भी होता है। समुदाय अप्रत्यक्ष किन्तु प्रभावपूर्ण ढग से बालक की आदतो, विचारो और स्वभाव को मोड़ता है। उसकी संस्कृति, रहन-सहन, बोल-चाल आदि अनेको बातो पर उसके समुदाय की छाप होती है। समुदाय का वातावरण बालक की अनुकरण करने की जन्मजात प्रवृत्ति पर विशेष प्रभाव डालता है। वह उन व्यक्तियो के ढगो का अनुकरण करता है, जिनको वह देखता है। उदाहरणार्थ—यदि वह सगीतज्ञो के साथ रहता है, तो वह उनकी संगीत-कुशलता से प्रभावित होता है और उसम सगीत के लिये रुचि उत्पन्न होती है।

बच्चे अपने समुदाय के ढगो को अपनाते है। इसीलिये उनकी बोल-चाल, दृष्टिकोण और व्यवहार म अन्तर होता है। अत. यह कहना अनुचित न होगा कि

परिवार और विद्यालय के समान समुदाय भी शिक्षा का महत्त्वपूर्ण साधन है। विलियम ईगर का कथन है --"क्योंकि मनुष्य स्वभाव से सामाजिक प्राणी है, इसलिये उसने वर्षों के *अनुभव से सीख लिया है कि व्यक्तित्व और सामूहिक क्रियाओं का* विकास समुदाय द्वारा ही सर्वोत्तम रूप से किया जा सकता है।"

"Since man by nature is a social being, he has learnt through the years that the personality as well as group activities can be best developed through community."—*William A Yeager.*

बालक पर समुदाय के शैक्षिक प्रभाव

Educative Influences of Community on Child

बालक पर समुदाय के शैक्षिक प्रभाव जिन रूपों मे दिखाई देते हैं, उनका वर्णन नीचे किया जा रहा है—

१. सामाजिक प्रभाव Social Influence

बालक पर समुदाय का सीधा सामाजिक प्रभाव पड़ता है। समुदाय ही उसकी सभ्यता और सामाजिक प्रगति का मुख्य आधार है। बालक अनौपचारिक रूप से यह देखता है कि सभी व्यक्ति अपने समुदाय की उन्नति के लिये कार्य करते हैं, और यदि उनमे से कुछ ऐसा नहीं करते हैं, तो समुदाय की प्रगति रुक जाती है। समुदाय मे समय-समय पर मेले, उत्सव, सामाजिक सम्मेलन, धार्मिक कार्य आदि होते हैं। बालक इनमें भाग लेकर सामाजिक जीवन और सामाजिक सेवा का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हैं।

समुदाय मे रहकर ही बालक अधिकार और स्वतन्त्रता का वास्तविक अर्थ समझता है। वह जान जाता है कि अधिकारो के साथ कर्त्तव्य और स्वतन्त्रता के साथ अनुशासन आवश्यक है। संक्षेप मे, हम कह सकते हैं कि समुदाय व्यक्ति मे नागरिक गुणों का विकास करता है और उसमे सेवा, त्याग और सहयोग की भावनायें उत्पन्न करता है।

२. राजनैतिक प्रभाव Political Influence

समुदाय का राजनैतिक प्रभाव बालक के राजनैतिक विचारो को निश्चित रूप देता है। उदाहरणार्थ—अमरीका के निवासी लोकतन्त्रीय विचारों और आदर्शों का समर्थन करते हैं, और रूस के लोग साम्यवादी विचारों और सिद्धान्तों को पसन्द करते हैं। दोनों देशो के निवासी एक-दूसरे के विचारो के घोर विरोधी हैं। एक-दूसरे प्रकार के राजनैतिक प्रभाव के बारे मे क्रो और क्रो ने लिखा है—"समुदाय की राजनैतिक विचारधारा उस सीमा तक प्रतिबिम्बित होती है, जहाँ तक उसके सब सदस्यों को शैक्षिक अवसर प्रदान किये जाते हैं और उसके राजनैतिक नेता उसके नागरिकों की शैक्षिक प्रगति के लिए उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं।"

५. साम्प्रदायिक प्रभाव : Communal Influence

समुदाय के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव का शैक्षिक महत्त्व तो है ही, पर समुदाय का शैक्षिक प्रभाव भी कम महत्त्व नही रखता है। यह प्रभाव समुदाय के विद्यालयो द्वारा डाला जाता है। बहुत-से समुदाय अपनो शिक्षा-संस्थायें स्थापित करते हैं। इन संस्थाओ के अपने स्वय के लक्ष्य और उद्देश्य होते हैं। वे इनके अनुसार बालको को अपने समुदायो की सेवा और कल्याण के लिए प्रशिक्षित करते हैं। पर कट्टरपंथी साम्प्रदायिक स्कूल (Communal Schools) बडा घातक प्रभाव डालते है। ये बालको मे संकुचित दृष्टिकोण और संकीर्ण साम्प्रदायिक भावना उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार वे विभिन्न समुदायो मे एक-दूसरे के लिये घृणा का बीज बोते हैं। अत साम्प्रदायिक स्कूल देश के लिए अभिशाप हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यक्तित्व पर समुदाय का शैक्षिक प्राभव बहुत ही शक्तिशाली होता है। जब यह प्रभाव ठीक प्रकार का होगा, तभी बच्चो के दृष्टिकोण ठीक होंगे, अन्यथा नही।

शिक्षा मे समुदाय का दायित्व

Responsibility of Community in Education

शिक्षा में समुदाय का क्या दायित्व है ? इसके बारे मे क्रो और क्रो ने लिखा है—"समुदाय बिना कुछ किए किसी बात की आशा नहीं कर सकता है। यदि समुदाय चाहता है कि उसके नवयुवक उसकी अच्छी प्रकार सेवा करें, तो उसे उन सब शैक्षिक लाभो को जुटाना चाहिए, जिनकी नवयुवकों को आवश्यकता है।"

'A community cannot expect something for nothing. If it wishes its young people to serve their community well, it must provide whatever educational advantages are needed by the young people."—*Crow & Crow*

भारतीय समुदाय ने शिक्षा के प्रति अपना उत्तरदायित्व स्वीकार कर लिया है, फिर भी अभी इस दिशा मे बहुत-कुछ किया जाना शेष है। इसके लिए निम्न-लिखित उपाय अपनाये जा सकते हैं :—

१. शिक्षा पर नियन्त्रण : Control on Education

भारतीय नेता इस बात से सहमत है कि भारतीय विद्यालय अपने उद्देश्यो और विधियो मे लोकतन्त्रीय आदर्शों को अपनायें। अत यह आवश्यक है कि समुदाय से आर्थिक सहायता प्राप्त करने वाले विद्यालय इन्ही आदर्शों के आधार पर शिक्षा का कार्य करें। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब समुदाय के नेता विद्यालयो के आधार-भूत पाठ्य-क्रम और साधारण संगठन की रूप-रेखा निश्चित करें।

२. विद्यालयों पर नियन्त्रण : Control on Schools

समुदाय के जीवन और प्रगति पर शिक्षकों और विद्यालय-प्रबंधकों का अधिक प्रभाव पड़ता है। अत समुदाय विद्यालय को अच्छी तरह चलाने के लिए व्यक्तियों को नियुक्त करे, जो समुदाय के हित को ध्यान मे रखकर विद्यालय सचालन करने मे कुशल हो। हावर्थ का कथन है—"विद्यालय समाज के चरित्र सुधार करने का साधन है। यह सुधार सामाजिक उन्नति की दिशा में है या नहीं, यह विद्यालय के सचालको के विचारो और आदर्शों पर निर्भर रहता है।"

"The school is an instrument for modifying the character of society Whether this modification is in the direction of social improvement depends upon the ideas and ideals of those who handle the instrument." *Howerth*

३ नागरिको और विद्यालय-नेताओ में सहयोग . Co-operation between Citizens and School Leaders

समुदाय द्वारा विद्यालयों को आर्थिक सहायता देना और उन पर नियं रखना ही काफी नहीं है। इनके साथ-साथ नागरिको और विद्यालय-नेताओ सहयोग होना भी आवश्यक है। क्रो और क्रो का कथन है—"समुदाय के नागरिको को बुद्धिमानी के साथ विद्यालय-नेताओ को—जिनको उन्होने विशेष शैक्षि उत्तरदायित्व दिये हैं, सहयोग देना चाहिए।"

"All the citizens of the community should co-operate intelligently with the school-leaders whom they have delegated specific educational responsibilities."—*Crow & Crow.*

४. शिक्षा के अनौपचारिक साधनो की व्यवस्था : Provision of Informal Agencies of Education

बालक को शिक्षा जितनी विद्यालय के अन्दर होती है, उतनी ही उसके बाहर होती है। अत यह आवश्यक है कि समुदाय बालको के लिये शिक्षा के अनौपचारिक साधनों की व्यवस्था करे। इस दृष्टिकोण से अजायबघरो, चित्र-शालाओ, पुस्तकालयो और सगीत तथा अभिनय-केन्द्रो की स्थापना की जानी चाहिये। इनके अतिरिक्त, समुदाय के स्वास्थ्य-केन्द्रो और सगठनो तथा विभागो द्वारा शैक्षिक कार्यक्रमो का आयोजन किया जाना चाहिए। साथ ही बालको को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों, पत्रिकाओ और समाचार-पत्रो को पढ़ने के अवसर दिये जाने चाहिए।

शिक्षा पर भारतीय समुदाय का प्रभाव
Influence of Indian Community on Education

शिक्षा पर भारतीय समुदाय का प्रभाव अप्रत्यक्ष है। हम शिक्षा के विभिन्न ... पर इस प्रभाव का वर्णन कर रहे हैं। यथा—

१. शिक्षा की सार्वभौमिक माँग : Universal Demand for Education

हुमायूँ कबीर (Humayun Kabir) के अनुसार—भारत में शिक्षा की सार्वभौमिक माँग की गई है। कुछ देशों में विद्यालयों में बालक की उपस्थिति अनिवार्य मानी है। भारत में ऐसी आवश्यकता का अनुभव नहीं किया गया है। यहाँ इस बात पर बल दिया गया है कि जो भी बच्चे पढ़ना चाहते हो, उनके लिये काफी स्कूल हो।

२. प्रारम्भिक और पूर्व-प्रारम्भिक शिक्षा का विकास : Development of Primary & Pre-Primary Education

प्रारम्भिक और पूर्व-प्रारम्भिक शिक्षा के विकास में समुदाय का बहुत हाथ रहा है। यद्यपि प्रारम्भिक शिक्षा का दायित्व सरकार पर है, फिर भी इसके विकास में ग़ैर-सरकारी संस्थाओं ने बहुत काम किया है। सरकार इस काम का पूरा भार धीरे-धीरे अपने ऊपर लेती जा रही है। पर पूर्व-प्रारम्भिक शिक्षा का भार और विकास अभी तक ग़ैर-सरकारी हाथों में ही है।

३. माध्यमिक शिक्षा का विकास : Development of Secondary Education

माध्यमिक शिक्षा के विकास में समुदाय का प्रभाव बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है। यह कहना उचित ही होगा कि देश में जितने भी मिडिल और सेकेंडरी स्कूल कार्य कर रहे हैं, उनमें से अधिकांश की स्थापना और सचालन का श्रेय समुदाय को है। इस प्रकार माध्यमिक शिक्षा के विकास में समुदाय का प्रभाव शक्तिशाली रहा है।

४. उच्च शिक्षा का विकास Development of Higher Education

उच्च शिक्षा के विकास में भारतीय समुदाय ने बहुत कम योग दिया है। इसके दो कारण हैं :—(१) अंग्रेजों के समय में विश्वविद्यालयों की स्थापना सरकार द्वारा की जाती थी, (२) उच्च शिक्षा, विशेष स्थानों और समुदायों की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती थी। अतः इसकी ओर जनता का ध्यान न जाना स्वाभाविक ही था।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Discuss briefly the meaning and importance of community.
2. Give a critical estimate of the educative influence of community.
3. Discuss the role and responsibility of community in education.
4. Give a critical estimate of the influence of Indian community on education.
5. Evaluate the informal educational agencies of your community.
6. Show specifically how a school can be made a community centre ?

Relation of State to Education

नहीं है, जो हमें जन-शिक्षा के लिए विद्यालय स्थापित करने के लिए बाध्य करे। इतिहास हमें बताता है कि अनेकों लोकतन्त्रों ने शिक्षा की उपेक्षा की और कुलीनतन्त्रों (Aristocracies) तथा धनिकतन्त्रों (Plutocracies) ने ऐसा नहीं किया, जब कि वे ऐसा कर सकते थे। इन उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि राज्य और शिक्षा के सम्बन्ध की समस्या जटिल है।

इस समस्या का हल ढूँढ़ने के लिए हमें विभिन्न विचारधाराओं का सहारा लेना पड़ेगा। ये विचारधारायें हैं—व्यक्तिवाद (Individualism), समूहवाद (Collectivism), सर्वाधिकारवाद (Totalitarianism), बहुलवाद (Pluralism) और कल्याणकारी राज्य (Welfare State)। व्यक्तिवादी निश्चित सीमा तक शिक्षा पर राज्य का नियन्त्रण चाहते हैं। पर उन्होंने यह नहीं बताया है कि यह सीमा क्या है। समूहवादी शिक्षा पर राज्य का सबसे ऊँचा अधिकार मानते हैं। सर्वाधिकारवादी शिक्षा पर राज्य का पूरा नियन्त्रण चाहते हैं, और गैर-सरकारी स्कूलों का विरोध करते हैं। बहुलवादी कहते हैं कि जिस प्रकार राज्य विद्यालयों की स्थापना करते हैं, उसी प्रकार देश के अन्य संगठन भी कर सकते हैं। कल्याणकारी राज्य के समर्थक इस बात पर विश्वास करते हैं कि केवल राज्य ही वह साधन है, जो विद्यालयों की स्थापना कर सकता है।

ऊपर व्यक्त किए गये सभी विचार उग्र सिद्धान्तों का समर्थन करते हैं और उनमें बहुत-सी कमियाँ भी हैं। इनमें से किसी को भी पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। इसलिए इनमें समन्वय करना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में रेमॉण्ट ने लिखा है—"हम अनुभव करते हैं कि सभ्य समाज में अन्य उपयोगी कार्यों के समान शिक्षा भी अधोलिखित तीनों या तीनों में से एक साधन के द्वारा सचालित की जा सकती है। (१) ऐच्छिक प्रयास द्वारा लाभ के लिए; (२) ऐच्छिक प्रयास द्वारा परोपकार या धार्मिक भावना से; (३) राज्य के द्वारा।"

"We observe that education, like the other beneficial influences at work in a civilised community, may be conducted by all or any of three means ; first by voluntary effort with a view to profit ; secondly, by voluntary effort arising from philanthropic or religious motives ; thirdly, by the agency of the State."—*Raymont*.

शिक्षा पर राजकीय नियन्त्रण
State Control of Education

शिक्षा पर राजकीय नियन्त्रण के बारे में अधोलिखित दो मुख्य प्रश्न हैं :—

१. शिक्षा पर राज्य का नियन्त्रण वांछनीय है या नहीं ?
२. यदि नियन्त्रण वांछनीय है, तो इसका क्या रूप होना चाहिए ?

इन प्रश्नों पर विचारकों और राजनीतिज्ञों ने निम्नलिखित
किये हैं :—

1. जन-शिक्षा पर केवल राज्य का नियन्त्रण होना चाहिए।
2. किसी प्रकार की भी शिक्षा पर राज्य का नियन्त्रण बुराई
3. शिक्षा—आवश्यक राजकीय कार्य है।

हम इन तीनों मतों पर विचार करेंगे। यथा—

१ जन-शिक्षा पर राजकीय नियंत्रण वांछनीय : State Popular Education Desirable

वुडरो विल्सन (Woodrow Wilson) के अनुसार जन-शिक्षा प नियन्त्रण होना चाहिए। उसने उसके दो कारण बताये हैं—(१) जन राजनैतिक और सामाजिक स्वतन्त्रता के लिये आवश्यक है, जो व्यक्ति विकास के लिए अनिवार्य, (२) सरकार से कम शक्तिशाली कोई भी शिक्षा की व्यवस्था नहीं कर सकता है। जन शिक्षा उस वैयक्तिक विक आवश्यक है जिसे लोकतन्त्र ने एक उचित उद्देश्य के रूप में स्वीकार लोकतन्त्रीय सरकार सार्वजनिक कार्यों पर निर्भर रहती है। इसलिये यदि जनिक शिक्षा की व्यवस्था नहीं करेगी तो अधिक समय तक जीवित न रह अतः यह आवश्यक है कि सरकार लोगों को ज्ञान और सद्गुणों में प्रशिक्षित

२. शिक्षा पर राजकीय नियंत्रण : एक बुराई State Control of Education an Evil

जे० एस० मिल (J. S. Mill) ने शिक्षा पर राजकीय नियन्त्रण बनाया है। वह इस सिद्धान्त की निन्दा करता है कि लोगों की शिक्षा का स अधिकांश भाग राज्य में हो। सामान्य राजकीय शिक्षा सब लोगों को बिल्कु दूसरे के समान बनाती है। ऐसा करना—सरकार को प्रसन्न करना है—च सरकार राजा की, कुलीनों की या जनता की हो। राज्य द्वारा दी गई शिक्षा के मस्तिष्क पर अनियन्त्रित शासन स्थापित करती है। इस प्रकार की शि व्यवस्था केवल नमूने के लिये की जानी चाहिए, जो शिक्षा के अन्य संगठनों के प्रेरणा और उदाहरण का काम करे।

३. शिक्षा : आवश्यक राजकीय कार्य Education a Necessary S Service

एलवुड पी० कब्बरले (Ellwood P Cubberley) के विचारानुसार शि आवश्यक राजकीय कार्य है। उनका कथन है कि बच्चों को राज्य और राष्ट्र योग्य नागरिकों के रूप में प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है। औद्योगिक क्रांति राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों को जन्म दिया, जिन्होंने शिक्षा को राज्य क

राष्ट्र के हित का विषय बना दिया। ये परिवर्तन इतने महत्वपूर्ण थे कि राज्य को शिक्षा पर नियन्त्रण रखने के लिये बाध्य होना पड़ा। समय की गति के साथ सार्वजनिक शिक्षा का क्षेत्र विस्तृत हो गया है और शिक्षा के व्यय में वृद्धि हो गई है। भविष्य में इस क्षेत्र और व्यय के अधिक होने की ही आशा है। इस समय अनिवार्य शिक्षा, शिक्षकों और विद्यालय-भवनों की माँग को पूरा किया जा रहा है, पर उसको सतोषजनक नहीं कहा जा सकता है। इस माँग को पूरा करने और शिक्षा की वर्तमान दशा को सुधारने के लिये अत्यधिक धन की आवश्यकता है। इतना धन राज्य तभी प्राप्त कर सकता है, जब वह प्रत्येक व्यक्ति से शिक्षा के लिये धन ले। केवल राज्य ही इस कार्य को कर सकता है, दूसरी कोई संस्था नहीं। अतः शिक्षा स्वतः ही राजकीय कार्य हो जाता है।

निष्कर्ष

शिक्षा पर राज्य के नियन्त्रण के बारे मे जो भी विचार हो, पर यह बात माननी पड़ेगी कि नियन्त्रण कुछ सीमा तक आवश्यक है। यही कारण है कि सभी देशों मे शिक्षा पर राज्य का नियन्त्रण किसी-न-किसी रूप मे दिखाई देता है। यदि यह आवश्यक नहीं है, तो कम-से-कम वाञ्छनीय अवश्य है, क्योंकि जिन कार्यों को राज्य कर सकता है, उनको शिक्षा के अन्य साधन नहीं कर सकते हैं।

राज्य के शैक्षणिक कार्य; राज्य : शैक्षिक साधन के रूप में

Educational Functions of State; State as an Agency of Education

१. विद्यालयों की व्यवस्था : Provision for Schools

राज्य को विभिन्न स्थानों की आवश्यकताओं के अनुसार सभी प्रकार के विद्यालयों—प्राथमिक, माध्यमिक, टेकनिकल आदि की व्यवस्था करनी चाहिए। ये विद्यालय ऐसे सामंजस्य में काम करें कि प्रयास का अपव्यय न हो।

२. निश्चित स्तर तक शिक्षा को अनिवार्य बनाना : Making Education Compulsory up to a Certain Stage

राज्य को एक निश्चित स्तर तक शिक्षा को अनिवार्य बनाना चाहिए और अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिये बाध्य करना चाहिए। तभी वे निश्चित स्तर तक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

३. शिक्षा के व्यय को पूरा करने का उपाय ढूँढ़ना : Determining How to Meet the Cost of Education

यह निश्चय करना कि बच्चों की शिक्षा के व्यय को पूरा करने के लिये कौन से उपाय हो सकते हैं, राज्य का कार्य है। इस बारे में अनेकों विचार व्यक्त किये

उसके सभी नागरिकों को थोडी-बहुत सैनिक शिक्षा अवश्य प्राप्त हो। ऐसी शिक्षा प्राप्त नवयुवक संकट के समय अपने देश की रक्षा का काम कर सकेंगे। उदाहरण लिये भारत को ही ले लीजिए। उसके दो पड़ोसी राज्य—चीन और पाकिस्तान—उस पर बहुत समय से आँख लगाये हुए हैं और आक्रमण भी कर चुके हैं। ऐसे आक्रमणों का मुँह-तोड़ जवाब तभी दिया जा सकता है, जब देश का हर बालक सैनिक शिक्षा द्वारा इतना तैयार कर दिया जाय कि वह अपने गाँव, अपने नगर और इस प्रकार अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाये रख सके। आज सभी पाश्चात्य देशों की शिक्षा-संस्थाओं में सैनिक शिक्षा की व्यवस्था है।

८ शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहन . Encouragement to Educational Research

वर्तमान युग में शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया है। पुराने विचार समाप्त होते जा रहे हैं, पुरानी धारणाओं का महत्त्व कम होता जा रहा है। उदाहरणार्थ—संयुक्त राज्य अमेरिका ने इतने शैक्षणिक अनुसंधान किये हैं कि उनके फलस्वरूप उस देश में शिक्षा की काया ही पलट गई है। ऐसा किया जाना आवश्यक है, क्योंकि पुराने आदर्श, पुरानी मान्यतायें; पुरानी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक कल्पनायें अतीत के गर्त में समाती जा रही हैं। आज की नई व्यवस्था में शिक्षा के नये आदर्श और नये उद्देश्य होने आवश्यक हैं। अतः राज्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु इन आदर्शों और उद्देश्यों का निर्माण करे। ऐसा तभी हो सकता है जब वह शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहन दे।

९. परिवार और विद्यालय को निकट सम्पर्क में लाना : Bringing the Home & the School in Close Contact

बालक की शिक्षा में विद्यालय का स्थान महत्त्वपूर्ण माना गया है। पर इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान घर या परिवार का है। बालक कैसे परिवार से आया है, उसके परिवार के सदस्यों का दृष्टिकोण क्या है; उनकी संस्कृति, रहन-सहन, आचार-विचार कैसे हैं—शिक्षक के लिये इन सब बातों का ज्ञान होना आवश्यक है। बालक के पारिवारिक इतिहास और पृष्ठभूमि को जानकर ही शिक्षक उसकी रुचियों और आवश्यकताओं को समझ सकेगा और तभी वह उसे उचित प्रकार की शिक्षा दे सकेगा। ऐसा न होने से वह अपनी कक्षा के सब छात्रों को एक ही डंडे से हांकता रहेगा, जिसका परिणाम अच्छा निकलना असम्भव है। अतः यह आवश्यक है कि राज्य द्वारा किसी ऐसी संस्था का निर्माण किया जाय, जो शिक्षकों और अभिभावकों को एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में लाये। इस सम्पर्क द्वारा ही शिक्षकों को अपने छात्रों का पूर्ण ज्ञान हो सकता है और इस ज्ञान पर उनकी शिक्षा को आधारित करके शिक्षक अपने दायित्व को बहुत अच्छी तरह से निभा सकते हैं।

गए हैं। कुछ लोगों का कहना है कि शिक्षा के व्यय का अधिकांश भाग अभिभावकों से लिया जाय। ऐसा न करने से उनके लिए शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। उदाहरणार्थ—नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा पर राज्य को अति विशाल धन-राशि व्यय करनी पड़ती है। फिर भी ऐसे अनेकों अभिभावक हैं, जिनके लिए इस शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है। इतने पर भी अधिकांश सभ्य देशों ने नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा का सब भार अपने ऊपर लिया है।

४. विद्यालय-पद्धति पर सामान्य नियंत्रण और उसका निर्देशन : General Control & Direction of the School System

राज्य को विद्यालय-पद्धति पर सामान्य नियन्त्रण रखना चाहिए और उसका निर्देशन भी करना चाहिए। राज्य को पाठ्य-क्रम के विषय शिक्षकों और समुदाय की सलाह से चुनने चाहिए। जहाँ तक शिक्षण-विधियों की बात है, उनमें शिक्षक को पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। राज्य को तो सिर्फ यह करना चाहिए कि वह सर्वोत्तम विधियों पर सूचनायें प्राप्त करे और उनको विद्यालयों को भेज दे।

५. योग्य शिक्षकों की व्यवस्था : Provision for Efficient Teachers

विद्यालयों के लिए योग्य शिक्षकों की व्यवस्था करना राज्य का सबसे आवश्यक कार्य है। शिक्षा की सब सुविधायें होते हुए भी यदि शिक्षक अयोग्य हैं, तो सब कुछ व्यर्थ हो जायगा। विद्यालय बनाना, उनको छात्रों से भरना, उनके निरीक्षण का उत्तम प्रबन्ध करना—ये सभी बातें अच्छी हैं। पर हमको यह नहीं भूलना चाहिए कि इन सब में शिक्षक ही प्राण फूँकता है। अत. ज्ञान, कुशलता और सहानुभूति से पूर्ण शिक्षकों को चुनना राज्य का सबसे प्रमुख कार्य है।

६. बालकों की शिक्षा के लिए अभिभावकों को प्रेरणा : Encouragement to Guardians for Children's Education

भारत ऐसे देश में जहाँ अधिकांश अभिभावक अशिक्षित हैं, यह आवश्यक है कि सरकार उनको अपने बालकों की शिक्षा के लिये प्रेरणा दे। इसका कारण यह है कि अशिक्षित अभिभावक शिक्षा के मूल्य और महत्त्व को नहीं समझते हैं। उनका विचार होता है कि शिक्षा में समय और धन—दोनों का अपव्यय होता है। इसलिए वे यह अधिक अच्छा समझते हैं कि बालक स्कूल जाने के बजाय या तो कोई काम करें या उनके कार्य में सहयोग दें। इससे उनकी आर्थिक समस्या का भी थोड़ा-बहुत समाधान हो जाता है। अभिभावकों के इस दृष्टिकोण को बदला जाना है। यह तभी सम्भव है, जब सरकार किसी प्रकार के प्रचार द्वारा उनको यह प्रेरणा दे कि वे अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालयों को भेजें।

७. शिक्षा-संस्थाओं में सैनिक शिक्षा की व्यवस्था : Provision for Military Education in Educational Institutions

आज के संघर्षपूर्ण युग में राष्ट्र के जीवन के लिए यह आवश्यक है कि

उसके सभी नागरिकों को थोड़ी-बहुत सैनिक शिक्षा अवश्य प्राप्त हो। ऐसी शिक्षा प्राप्त नवयुवक संकट के समय अपने देश की रक्षा का काम कर सकेंगे। उदाहरण लिये भारत को ही ले लीजिए। उसके दो पड़ोसी राज्य—चीन और पाकिस्तान—उस पर बहुत समय से आँख लगाये हुए हैं और आक्रमण भी कर चुके हैं। ऐसे आक्रमणों का मुँह-तोड़ जवाब तभी दिया जा सकता है, जब देश का हर बालक सैनिक शिक्षा द्वारा इतना तैयार कर दिया जाय कि वह अपने गाँव, अपने नगर और इस प्रकार अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण बनाये रख सके। आज सभी पाश्चात्य देशों की शिक्षा-संस्थाओं में सैनिक शिक्षा की व्यवस्था है।

८. शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहन : Encouragement to Educational Research

वर्तमान युग में शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया है। पुराने विचार समाप्त होते जा रहे हैं, पुरानी धारणाओं का महत्त्व कम होता जा रहा है। उदाहरणार्थ—संयुक्त राज्य अमेरिका ने इतने शैक्षणिक अनुसंधान किये हैं कि उनके फलस्वरूप उस देश में शिक्षा की काया ही पलट गई है। ऐसा किया जाना आवश्यक है, क्योंकि पुराने आदर्श, पुरानी मान्यतायें; पुरानी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक कल्पनायें अतीत के गर्त में समाती जा रही हैं। आज की नई व्यवस्था में शिक्षा के नये आदर्श और नये उद्देश्य होने आवश्यक हैं। अतः राज्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु इन आदर्शों और उद्देश्यों का निर्माण करे। ऐसा तभी हो सकता है जब वह शैक्षणिक अनुसंधान को प्रोत्साहन दे।

९. परिवार और विद्यालय को निकट सम्पर्क में लाना : Bringing the Home & the School in Close Contact

बालक की शिक्षा में विद्यालय का स्थान महत्त्वपूर्ण माना गया है। पर इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान घर या परिवार का है। बालक कैसे परिवार से आया है, उसके परिवार के सदस्यों का दृष्टिकोण क्या है; उनकी संस्कृति, रहन-सहन, आचार-विचार कैसे हैं—शिक्षक के लिये इन सब बातों का ज्ञान होना आवश्यक है। बालक के पारिवारिक इतिहास और पृष्ठभूमि को जानकर ही शिक्षक उसकी रुचियों और आवश्यकताओं को समझ सकेगा और तभी वह उसे उचित प्रकार की शिक्षा दे सकेगा। ऐसा न होने से वह अपनी कक्षा के सब छात्रों को एक ही डंडे से हाँकता रहेगा, जिसका परिणाम अच्छा निकलना असम्भव है। अतः यह आवश्यक है कि राज्य द्वारा किसी ऐसी संस्था का निर्माण किया जाय, जो शिक्षकों और अभिभावकों को एक-दूसरे के निकट सम्पर्क में लाये। इस सम्पर्क द्वारा ही शिक्षकों को अपने छात्रों का पूर्ण ज्ञान हो सकता है और इस ज्ञान पर उनकी शिक्षा को आधारित करके शिक्षक अपने दायित्व को बहुत अच्छी तरह से निभा सकते हैं।

गए हैं। कुछ लोगों का कहना है कि शिक्षा के व्यय का अधिकांश भाग अभिभावकों से लिया जाय। ऐसा न करने से उनके लिए शिक्षा का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है। उदाहरणार्थ—निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा पर राज्य को अति विशाल धन-राशि व्यय करनी पड़ती है। फिर भी ऐसे अनेकों अभिभावक हैं, जिनके लिए इस शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है। इतने पर भी अधिकांश सभ्य देशों ने निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा का सब भार अपने ऊपर लिया है।

४ विद्यालय-पद्धति पर सामान्य नियंत्रण और उसका निर्देशन : General Control & Direction of the School System

राज्य को विद्यालय-पद्धति पर सामान्य नियन्त्रण रखना चाहिए और उसका निर्देशन भी करना चाहिए। राज्य को पाठ्य-क्रम के विषय शिक्षकों और मनुष्यों की सलाह से चुनने चाहिए। जहाँ तक शिक्षण-विधियों की बात है, उनमें शिक्षक को पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए। राज्य को तो सिर्फ यह करना चाहिए कि वह सर्वोत्तम विधियों पर सूचनायें प्राप्त करे और उनको विद्यालयों को भेज दे।

५. योग्य शिक्षकों की व्यवस्था : Provision for Efficient Teachers

विद्यालयों के लिए योग्य शिक्षकों की व्यवस्था करना राज्य का सबसे आवश्यक कार्य है। शिक्षा की सब सुविधायें होते हुए भी यदि शिक्षक अयोग्य है, तो सब कुछ व्यर्थ हो जायगा। विद्यालय बनाना, उनको छात्रों से भरना, उनके निरीक्षण का उत्तम प्रबन्ध करना – ये सभी बातें अच्छी हैं। पर हमको यह नहीं भूलना चाहिए कि इन सब में शिक्षक ही प्राण फूँकता है। अतः ज्ञान, कुशलता और सहानुभूति से पूर्ण शिक्षकों को चुनना राज्य का सबसे प्रमुख कार्य है।

६. बालकों को शिक्षा के लिए अभिभावकों को प्रेरणा : Encouragement to Guardians for Children's Education

भारत जैसे देश में जहाँ अधिकांश अभिभावक अशिक्षित हैं, यह आवश्यक है कि सरकार उनको अपने बालकों की शिक्षा के लिए प्रेरणा दे। इसका कारण यह है कि अशिक्षित अभिभावक शिक्षा के मूल्य और महत्त्व को नहीं समझते हैं। उनका विचार होता है कि शिक्षा में समय और धन—दोनों का अपव्यय होता है। इसलिए वे यह अधिक अच्छा समझते हैं कि बालक स्कूल जाने के बजाय या तो कोई काम करें या उनके कार्य में सहयोग दें। इससे उनकी आर्थिक समस्या का भी थोड़ा बहुत समाधान हो जाता है। अभिभावकों के इस दृष्टिकोण को बदला जाना है। यह तभी सम्भव है, जब सरकार किसी प्रकार के प्रचार द्वारा उनको यह प्रेरणा दे कि वे अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए विद्यालयों को भेजें।

७. शिक्षा-संस्थाओं में सैनिक शिक्षा की व्यवस्था : Provision for Military Education in Educational Institutions

आज के संघर्षपूर्ण युग में राष्ट्र के जीवन के लिए यह आवश्यक है कि

१०. नागरिकता का प्रशिक्षण . Training in Citizenship

अच्छे नागरिक राज्य के दृढ़ स्तम्भ हैं। ऐसे नागरिकों का निर्माण नागरि के प्रशिक्षण द्वारा ही सम्भव है। इस प्रशिक्षण के निम्नलिखित चार पहलू हैं:—

(i) आर्थिक प्रशिक्षण . Economic Training—कोई भी राज्य नाग को आर्थिक प्रशिक्षण दिये बिना उन्नति करने की आशा नहीं कर सकता है। यह आवश्यक है कि राज्य विज्ञान, कृषि, उद्योग आदि के प्रशिक्षण की सुविधायें राज्य में सब प्रकार की शिक्षा-संस्थायें होनी चाहिये, जिनमें देश के युवक प्रशि प्राप्त कर सकें।

(ii) सांस्कृतिक प्रशिक्षण · Cultural Training—सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रखने के लिये सांस्कृतिक प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। अतः राज्य अजायबघरों, चित्र-शालाओं सांस्कृतिक सांस्कृतिक सासायटियों, क्लबों, मनोरंजन हॉलों की स्थापना करनी चाहिये। इसके साथ ही राज्य को सांस्कृतिक मण्डलों, सांस्कृ भ्रमणों, सामुदायिक केन्द्रों आदि को उदार आर्थिक सहायता देनी चाहिये।

(iii) सामाजिक प्रशिक्षण : Social Training—राष्ट्र की प्रगति न केव उसके विचारों से, वरन् उसके सामाजिक स्तरों से भी जानी जाती है। लोकतन्त्री देश को समाज और उसके सदस्यों के उत्तम विकास के लिये न्यूनतम सामाजिक स निश्चित करने चाहिये। यह उद्देश्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब शारीरिक, मानसि और आर्थिक स्तरों के लिये एक निश्चित मापदण्ड बना लिया जाय और उन प्रशिक्षण दिया जाय। इसके साथ ही बालकों को सामाजिक सम्पर्क के अवसर दि जायें, जिससे उनमें समाज-सेवा की भावना का विकास हो।

(iv) राजनैतिक प्रशिक्षण . Political Training—प्रत्येक राष्ट्र किसी न किसी राजनैतिक विचारधारा में विश्वास करता है। इस विचारधारा को बालक के मस्तिष्क में बैठाने के लिये उनको राजनैतिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिये। य प्रशिक्षण इसलिये भी आवश्यक है, जिससे कि वे देश के राजनैतिक मामलों बुद्धिमानी और सक्रियता से भाग ले सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये राज्य फिल्म-शो, रेडियो-प्रसारण (Radio-broadcasts) और राजनैतिक प्रदर्शनों का आयोजन करना चाहिये।

राज्य के शिक्षा-सम्बन्धी उपरोक्त कार्य अति महत्त्वपूर्ण हैं। इन कार्यों को योग्यता और उदारता से किये बिना कोई भी राज्य उन्नति नहीं कर सकता है।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Discuss briefly the relation of State to education.
2. What reasons can you offer to support the saying that "state

3.
4.

खण्ड पाँच

- दर्शन और शिक्षा में सम्बन्ध
  Relation between Philosophy and Education.
- शिक्षा मे आदर्शवाद
  Idealism in Education.
- शिक्षा में प्रकृतिवाद
  Naturalism in Education
- शिक्षा मे प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद
  Pragmatism in Education.

२२

शिक्षा और दर्शन में सम्बन्ध

RELATION BETWEEN PHILOSOPHY & EDUCATION

"वास्तविक दर्शन वह है, जिसमें युवकों को जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रेरित करने और सम्पूर्ण समाज में शिक्षा के उचित विचारों को ग्रहण कराने की शक्ति होती है, चाहे उस दर्शन के उद्देश्य या विशेषताएँ कुछ भी क्यों न हों।"

"A true philosophy, whatever else its purpose or merits, must bear the tests, both of inspiring youth with right attitudes toward life, and of inculcating correct views of education throughout society.—*George E. Partridge.*

दर्शन का अर्थ और परिभाषा

Meaning & Definition of Philosophy

(अ) दर्शन का अर्थ : Meaning of Philosophy

'Philosophy' शब्द की उत्पत्ति दो यूनानी शब्दों से हुई है—'Philos' जिसका अर्थ है 'Love' और 'Sophia' जिसका अर्थ है 'Of wisdom'। इस प्रकार 'Philosophy' (दर्शन) का अर्थ है 'Love of wisdom' (ज्ञान से प्रेम)। अतः हम कह सकते हैं कि दर्शन का सम्बन्ध ज्ञान से है, और दर्शन ज्ञान को व्यक्त करता है।

(ब) दर्शन की परिभाषा : Definition of Philosophy

हम 'दर्शन' के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये कुछ परिभाषाएँ नीचे दे रहे हैं :—

१ बरट्रेण्ड रसल—"अन्य विद्याओं के समान दर्शन का मुख्य उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है।"

"Philosophy, like all other studies, aims primarily at knowledge."—*Bertrand Russell.*

२. आर० डब्लू० सेलर्स—"दर्शन, एक व्यवस्थित विचार द्वारा विश्व और मनुष्य की प्रकृति के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न है।'

"Philosophy is a persistent attempt to gain insight into the nature of the world and of ourselves by means of systematic reflection."—*R. W Sellars.*

३ एल्बर्ट आर० लॉग—"दर्शन विशेष रूप से उचित तथ्यों के व्यवस्थित विचार, उनकी व्याख्याओं और जीवन की समस्या की उलझनों से सम्बन्धित है।"

"Philosophy is specially concerned with a systematic view of relevant facts with their interpretations and implications for the problem of living."—*Albert R Long*

उपरोक्त व्याख्याओं के आधार पर हम दर्शन के अर्थ को स्पष्ट कर सकते हैं। दर्शन, प्रकृति, व्यक्तियों और वस्तुओं तथा उनके लक्ष्यों और उद्देश्यों के बारे में निरन्तर विचार करता है। यह ईश्वर, ब्रह्माण्ड और आत्मा के रहस्यों और इनके पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डालता है। जो व्यक्ति इनसे सम्बन्धित प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयत्न करता है, उसे हम दार्शनिक कहते हैं।

दर्शन और जीवन-यापन का ढङ्ग
Philosophy & Way of Life

प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन-दर्शन होता है और वह उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है। यदि कोई व्यक्ति संकट में भी परेशान नहीं होता है, तो हम यह कहते हुए सुनते हैं कि जीवन की घटनाओं के प्रति उसका दृष्टिकोण दार्शनिक है। इसका अर्थ यह है कि उसका साधारण दृष्टिकोण ऐसा है कि वह जीवन की कठिनाइयों से घबराता नहीं है। दूसरे शब्दों में, उसका अपना एक जीवन-दर्शन है, जो कुछ सीमा तक उसके लिए उपयोगी है। वह उसी के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करता है। ऐसा करने में वह कुछ विश्वासों, मूल्यों और आदर्शों को मानता है। उदाहरणार्थ—बुद्ध, ईसा और मुहम्मद को ले लीजिये। इनके अपने स्वयं के जीवन-दर्शन थे और उन्हीं के अनुसार वे जीवन व्यतीत करते थे। बुद्ध ने वैराग्य और निर्वाण के दर्शन का उपदेश दिया। ईसा ने प्रेम और दया के दर्शन का प्रतिपादन किया। मुहम्मद ने भ्रातृत्व के सिद्धान्त पर बल दिया। इन सभी दर्शनों का परिणाम—

दर्शन और शिक्षा में सम्बन्ध

Relation between Philosophy & Education

१. शैक्षिक सिद्धान्त : दार्शनिक विचारों के व्यावहारिक प्रयोग

Educational Doctrines an Application of Philosophical Ideas

प्रत्येक जीवन-दर्शन एक निश्चित विश्वास पर आधारित होता है। अब यदि विश्वास जीवन के लिये उपयोगी है, तो उसका शैक्षिक महत्त्व अवश्य होना चाहिये। अतः दर्शन को शिक्षा से अलग नहीं किया जा सकता है। वस्तुतः दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इतिहास इस बात की पुष्टि करता है। यदि हम विश्व के महान् दार्शनिक *प्लेटो, लॉक, काण्ट, स्पेंसर—आदि पर दृष्टिपात करें, तो हमें मालूम हो जायगा कि* उनके शैक्षिक सिद्धान्त—उनके दार्शनिक विचारों के व्यावहारिक प्रयोग थे।

२. दर्शन द्वारा जीवन में शिक्षा के महत्त्व की खोज : Enquiry into the Significance of Education in Life by Philosophy

दर्शन में नये शैक्षिक तथ्य नहीं होते हैं। यह केवल उन तथ्यों के महत्त्व की छान-बीन करता है, जो पहले से मौजूद हैं। यह हमारे शैक्षिक अनुभवों को उसी रूप में स्वीकार करता है, जिस रूप में वे होते हैं। यह जीवन में शिक्षा के महत्त्व की खोज करता है। जिस प्रकार कला, धर्म, राज्य आदि का दर्शन है, उसी प्रकार शिक्षा का भी दर्शन है। जिस प्रकार इनके तथ्य हैं, उसी प्रकार शिक्षा के भी तथ्य हैं। इन सभी तथ्यों का हमारे जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध है।

एच० एच० *हार्न के अनुसार*—"*सभी तथ्य अन्त में एक-सा ही अर्थ रखते हैं,* पर उनके अर्थों की समानता में अपना स्वयं का अनोखापन है। जिस प्रकार सड़कों पर लगे हुए संकेत-बोर्ड विभिन्न मार्गों से एक ही नगर को जाने का संकेत करते हैं, उसी प्रकार विभिन्न तथ्य एक ही अर्थ की ओर संकेत करते हैं। वस्तुतः जीवन की वास्तविकता ही दर्शन का ईश्वरीय नगर है, और अनेकों संकेत-बोर्डों में से 'शिक्षा' भी एक है।"

"All facts ultimately mean the same, but they mean the same in their own unique way; just as signboards on different roads leading to the same city point by different ways to the same goal Reality is the heavenly city of philosophy and education is one of the signboards "—*H H Horne*

३. दर्शन और शिक्षा : एक सिक्के के दो पहलू : Philosophy & Education Two Sides of a Coin

हार्न (Horne) ने लिखा है कि शिक्षा के सब तथ्यों को एक साथ रखने से *दो बातों का ज्ञान होता है (१) शिक्षा विश्व-प्रक्रिया (World-process) है;*

"The process of education cannot go along right lines without the help of philosophy."—*Gentile*.

३. जी० ई० पार्ट्रिज—"गम्भीर अर्थ मे यह कहना बिल्कुल उचित होगा कि जिस प्रकार शिक्षा 'दर्शन' पर आधारित है, उसी प्रकार दर्शन 'शिक्षा' पर आधारित है।"

"In a very deep sense, it is quite as reasonable to say that philosophy is based upon education, as education is based upon philosophy."—*G. E. Partridge*

निष्कर्ष

आजकल दर्शन और शिक्षा मे उतनी पारस्परिक निर्भरता नही रह गई है, जितनी कि पिछले समय थी। इसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिक युग मे विज्ञान और विज्ञान की विधियो ने शिक्षा को अत्यधिक प्रभावित किया है। फिर भी शिक्षा दर्शन से अलग नही हो पाई है। अब भी शिक्षा की प्रत्येक समस्या का हल दर्शन मे ढूँढा जाता है। हार्न का कथन है—"शैक्षिक समस्या के प्रत्येक दृष्टिकोण से शिक्षा के दार्शनिक आधार की माँग उठती है। इसलिये दर्शन और शिक्षा को अलग नहीं किया जा सकता है।"

"From every angle of the educational problem comes the demand for a philosophical basis of the subject. There is no escape from a pohilosophy of life and of education"

—*H. H. Horne*.

UNIVERSITY QUESTIONS

1. "All educational questions are ultimately questions of philosophy." Disuss.
2. "Education is the dynamic side of philosophy." Comment and bring out clearly the exact relation between education and philosophy.

२३

शिक्षा में आदर्शवाद

IDEALISM IN EDUCATION

"आदर्शवादियों का विश्वास है कि संसार का एक निश्चित अर्थ, एक निश्चित अभिप्राय और शायद एक निश्चित लक्ष्य है, और सृष्टि के हृदय तथा मनुष्य की आत्मा में एक प्रकार का आन्तरिक सामंजस्य है। यह सामंजस्य ऐसा है कि मानव-बुद्धि प्रकृति के बाह्य को भेद कर कम-से कम कुछ सीमा तक आन्तरिक शक्ति अथवा परमतत्त्व तक पहुँच सकती है।"

"Idealists believe that the world has a meaning, a purpose, perhaps a goal, and that there is a kind of inner harmony between the heart of the Universe and the soul of man, such that human intelligence can pierce through the outer crust of nature and penetrate to its inner being, at least in some measure."

—*George T W. Patrick*

आदर्शवाद का अर्थ और परिभाषा

Meaning & Definition of Idealism

(अ) 'आदर्शवाद' शब्द की उत्पत्ति · Derivation of the Word, 'Idealism'

'Idealism' शब्द की उत्पत्ति प्लेटो (Plato) के इस आध्यात्मिक सिद्धान्त से हुई है—"अन्तिम वास्तविकता विचारों या विचारवाद में है" (Ultimate reality consists of ideas, idea-ism)। 'Idea-ism' में 'l' अक्षर को केवल उच्चारण की आसानी के लिये जोड़ दिया गया है। इस प्रकार ठीक शब्द तो 'Ideaism' है, पर आम तौर पर 'Idealism' शब्द का ही प्रयोग किया जाता है।

(ब) आदर्शवाद का अर्थ : Meaning of Idealism

'आदर्शवाद' वह दर्शन है, जो मन की प्रकृति को वास्तविकता मानता है—आदर्शवादियों का विश्वास है कि जो (Reality is one of the nature of mind)।

बात सत्य या वास्तविक है, वह अवश्य ही आध्यात्मिक या मानसिक है। उनका यह भी विश्वास है कि भौतिक संसार मन (Mind) की अभिव्यक्ति का साकार रूप है। अतः आदर्शवादियों को मनवादी (Mentalists) या अध्यात्मवादी (Spiritualists) कहना अधिक ठीक होगा।

पैट्रिक (George T. W. Patrick) ने आदर्शवाद की तुलना भौतिकवाद (Materialism) से करके उसका अर्थ स्पष्ट किया है। वह कहता है कि जिस प्रकार भौतिकवाद संसार का आधार 'पदार्थ' (Matter) में देखता है, उसी प्रकार आदर्शवाद संसार का आधार 'मस्तिष्क' (Mind) में देखता है। दूसरे शब्दों में, भौतिकवाद पदार्थ (Matter) को मन या मस्तिष्क (Mind) से पहले की वस्तु मानता है और आदर्शवाद मन को पदार्थ से पहले की।

आदर्शवाद का कहना है—"यदि आप प्रकृति की शक्तियों से सम्बन्धित बातों की खोज करें, तो वे आपको पदार्थ गति, और शक्ति में नहीं परन्तु अनुभव, विचार तर्क, बुद्धि, व्यक्तित्व, मूल्यों और धार्मिक तथा नैतिक आदर्शों में मिलेंगी।" आदर्शवाद इन्हीं को संसार की वास्तविकतायें मानता है।

"If you seek for elemental things, you will not find them in matter and motion and force, but in experience, in thought, in reason, in intelligence, in personality, in values, in religious and ethical ideals"—*Idealism.*

(स) 'आदर्शवाद' की परिभाषा : Definition of Idealism

हम आदर्शवाद के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषायें नीचे दे रहे हैं:—

१. ब्रूबेकर—आदर्शवादियों का कहना है कि संसार को समझने के लिए मस्तिष्क सर्वोपरि है। उनके लिए इससे अधिक वास्तविक बात कोई नहीं है कि मस्तिष्क संसार को समझने में लगा रहे और किसी बात को इससे अधिक वास्तविकता नहीं दी जा सकती है, क्योंकि किसी और बात को मस्तिष्क से अधिक वास्तविक समझना स्वयं मस्तिष्क की कल्पना होगी।"

"The Idealists point out that it is mind that is central in understanding the world. To them nothing gives a greater sense of reality than the activity of mind engaged in trying to comprehend its world. For anything to give a greater sense of reality would be a contradiction in terms because to know anything more real than mind would itself have to be a conception of mind" *Brubacher.*

२. हेंडरसन—आदर्शवाद मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष पर बल देता है। इसका कारण यह है कि आध्यात्मिक मूल्य मनुष्य और जीवन के सबसे महत्वपूर्ण

आदर्शवादियों का विश्वास है कि मनुष्य अपने सीमित मस्तिष्क को असीमित से प्राप्त करता है। वे यह मानते हैं कि व्यक्ति और संसार—दोनों बुद्धि की शक्तियाँ हैं। वे कहते हैं कि भौतिक संसार की व्याख्या मस्तिष्क से ही की जा है।"

"Idealism emphasises the spiritual side of man because to Idealist, spiritual values are the most important aspects of man of life. A metaphysical idealist would believe that man's finit and springs from the Infinite Mind, that both the individual ar the world are expressions of intelligence, that the material wo s to be explained by the mental." *—Stella V. Henderson.*

३. रस्क—"आदर्शवाद वैयक्तिक और वस्तुगत—दोनों है। यह वैज्ञानिक खोज की स्वतन्त्रता को तो स्वीकार करता है, पर भौतिक जगत को वास्तविकता की अपूर्ण अभिव्यक्ति मानता है। इसको पूर्ण करने के लिए आध्यात्मिकता की आवश्यकता है। यह मनुष्य की प्रकृति की विशिष्टता पर बल देकर मानव-जीवन को सम्मान देता है। यह विश्वास करता है कि मनुष्य में ऐसी तार्किक नैतिक और सौन्दर्यात्मक शक्तियाँ हैं, जो अन्य किसी जीवधारी में नहीं हैं। यह ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करता है।"

"Idealism, which is at once both 'personal' and 'objective', while recognizing the independence of scientific enquiry, contends that the material and physical universe is an incomplete expressio of reality, that it exists but to subserve, and requires to compleme it a spiritual universe. It bestows dignity and grandeur up human life by emphasising the distinctiveness of man's natu attributing to him powers, not possessed by animals which issue in ideals—logical, ethical, and aesthetic ; it admits the existence of a Supreme Being." *—Rusk.*

आदर्शवाद के प्रमुख सिद्धान्त या आवश्यक तत्त्व

Main Principles or Essential Features of Idealism

थामस और लैंग (Thomas & Lang) ने आदर्शवाद के निम्नलिखित सिद्धान्त बताये हैं—

१. सच्ची वास्तविकता—आध्यात्मिकता या विचार है।
२. केवल मानसिक जीवन ही जानने के योग्य है।
३. विचार और प्रयोजन (Purposes) ही सच्ची वास्तविकतायें हैं।

४. जो कुछ मस्तिष्क ससार को देता है, केवल वही वास्तविकता है।
५. ज्ञान का सर्वोच्च रूप—अन्तर्दृष्टि है।
६. आत्म-निर्णय—सच्चे जीवन का सार है।
७. [illegible]
८. [illegible]
९. [illegible]
१०. [illegible] गया—
केवल एक दृश्य है।
११. व्यक्तित्व—विचारों और प्रयोजनों का मिश्रण है तथा अन्तिम वास्तविकता है।
१२. ईश्वर, जो सब दूसरे जीवों के बारे में बताता है, मस्तिष्क से सम्बन्ध रखता है।
१३. आत्म (Self) अपने रूपान्तरों और दशाओं के सिवा न तो और कुछ जानता है और न जान सकता है।
१४. भौतिक और प्राकृतिक ससार, जिसे विज्ञान जानता है, वास्तविकता की अपूर्ण अभिव्यक्ति है।
१५. परम मन (Absolute Mind) (जिसका अश हमारा मन है) मे जो कुछ विद्यमान है, उसके सिवा और किसी वस्तु का अस्तित्व नही है।
१६. जीवन के वे पहलू जिनका सबसे अधिक महत्त्व है—विचार, ज्ञान, कला, नैतिकता और धर्म हैं।
१७. सत्य ज्ञान को प्राप्त करने का सच्चा साधन—हमारा विवेक या हमारी मानसिक या आध्यात्मिक दृष्टि है।

आदर्शवादी शिक्षक और उनके दार्शनिक सिद्धान्त
Idealistic Educators & Their Philosophies

आदर्शवादी शिक्षकों की सूची बहुत लम्बी है। हम इनमे से केवल कॉमेनियस, ाेस्टालॉजी, हरबर्ट और फ्रॉबेल पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रहे हैं। यथा—

. कॉमेनियस : Comenius (1592-1670)

जॉन एमॉस कॉमेनियस (John Amos Comenius) आदर्शवादी और ादरी था। उसका जन्म मोरेविया (Moravia) में निवनिट्ज (Nivnitz) नामक ्थान में हुआ था। उसने ईश्वर के प्रति उपयुक्त दृष्टिकोण को शिक्षा का उद्देश्य ताया। इसके साथ ही उसने अपने शिक्षा दर्शन में ससार और मानव-जाति के ्यावहारिक ज्ञान को स्थान दिया। उसने अपनी पुस्तक, "The Great Didactic" े अपने दर्शन-शास्त्र का समर्थन करने के लिए अपने शैक्षिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन

किया । इस पुस्तक से ज्ञात होता है कि वह शिक्षा के निम्नलिखि
सिद्धान्तों को मानता था—

१. शिक्षा क्रमबद्ध और प्रकृति के नियमों के अनुसार हो
(Graded) शिक्षा से उसका अभिप्राय यह था कि
बालक अपनी माँ से शिक्षा प्राप्त करे। उसके बा
वर्नाक्यूलर स्कूल में जाय, जहाँ वह अपनी रुचियों
प्राप्त करे। इनमें से उच्च अभिलाषाओं वाले ब
स्कूल में पढ़ें। इनमें से जो बालक कड़ी परीक्षा में उ
तक विश्वविद्यालय में अध्ययन करें।

२. बालक की रुचियों को शक्तिशाली बनाया जाय।

३. बालक को उसकी इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञान दिया

४. मानसिक चेतना को ज्ञान का आधार बनाया जाय

यहाँ यह कहना तर्कपूर्ण होगा कि हमारे आधुनिक शिक्षा-
के शिक्षा-दर्शन पर आधारित हैं।

२. पेस्टालॉजी : Pestalozzi (1746–1828)

जॉन हेनरिक पेस्टालॉजी (John Henrick Pestalozzi)
लैंड (Switzerland) में ज्यूरिच (Zurich) नामक स्थान में हुआ थ
में दृढ़ विश्वास था कि बालक शैक्षिक प्रक्रिया का केन्द्र है। उ
शिक्षा सब लोगों का जन्म-सिद्ध अधिकार है। उसका कथन था कि
व्यक्ति की शक्तियों और क्षमताओं का स्वाभाविक, प्रगतिशील अ
विकास है। इस ध्येय को प्राप्त करने के लिए उसने सभी विषयों क
रूप तक कम कर दिया।

उसके बाद उसने उनको धीरे-धीरे कठिन बनाते हुए या
(Graded Steps) में पढ़ाया। पढ़ाते समय उसने वस्तु-पाठों (Ob
का प्रयोग करके बालकों को अपनी इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान
अवसर दिया। साथ ही उसने मौखिक शिक्षा पर बल दिया। इस
कारण यह आवश्यक हो गया कि अध्यापक को न केवल पाठ्य-वस्तु
शिक्षण-विधियों का भी पूर्ण ज्ञान हो।

३. हरबर्ट : Herbart (1796–1841)

जॉन फ्रेडरिक हरबर्ट (Johann Friedrich Herbart) का

and things)। नैतिक शिक्षा के लिये उसने इतिहास, साहित्य, विज्ञान और गणित पर बल दिया। उसका सम्पूर्ण शैक्षिक दर्शन उसके रुचि-सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है।

हरबर्ट का विश्वास था कि जब तक बालक स्वयं अपने कार्य में पूरी रुचि नहो लेगा, तब तक उसमे वास्तविक शैक्षिक परिवर्तन होने सम्भव नही हैं। इस सिद्धान्त को आधार मानकर उसने अन्य अनेको सिद्धान्त बनाये। थामस और लंग के शब्दो मे—"*सीखने के मनोवैज्ञानिक क्रम के समान शिक्षण-विधि को खोज करने के प्रयत्न में, हरबर्ट ने शिक्षण के इन प्रसिद्ध औपचारिक सोपानों का विकास किया—तैयारी, प्रस्तुतीकरण, तुलना, सामान्यीकरण और प्रयोग।*"

"In an attempt to devise a method of teaching which would parallel the psychological order of learning, Herbart developed the well-known formal steps of instruction : preparation, presentation, comparison, generalization and application."—*Thomas & Lang.*

४. फ्रावेल · Froebel (1783-1852)

फ्रेडरिक ऑगस्ट फावेल (Friedrich August Froebel) का जन्म जर्मनी में ऑबरवेल्सवाश (Oberwelssbach) नामक स्थान मे हुआ था। वह अपने दर्शन मे अधिक से अधिक आदर्शवादी था। उसका विश्वास था कि व्यक्ति की शक्तियाँ या क्षमतायें उसमे बचपन मे ही सुप्त अवस्था मे विद्यमान रहती हैं। शिक्षा का कार्य—इन शक्तियो को जाग्रत करना तथा इनका अधिक से अधिक विकास करना है। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षण-विधियाँ व्यक्ति के आन्तरिक विकास के प्राकृतिक नियमों के अनुकूल हो।

फ्रॉबेल के दर्शन का आधुनिक शैक्षिक सिद्धान्तो पर बहुत प्रभाव पड़ा है। यह प्रभाव हमे किंडरगार्टन और शिक्षा में खेल तथा दस्तकारी (Handwork) मे दिखाई देता है।

उपरोक्त वर्णन से यह भ्रम हो सकता है कि आदर्शवादियो ने शिक्षा के उद्देश्यो पर ही बल दिया। बात ऐसी नहीं है। वस्तुत. आदर्शवाद ने शिक्षा के सभी पहलुओं को प्रभावित किया। इसकी पुष्टि अग्रलिखित विवरण से हो जायगी :—

आदर्शवाद और शिक्षा के उद्देश्य
Idealism & Aims of Education

१. व्यक्तित्व का उत्कर्ष या आत्मानुभूति · Exaltation of Personality or Self-Realization

रॉस (Ross) और रस्क (Rusk)—दोनों का कथन है कि आदर्शवाद के

अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—व्यक्तित्व का उत्कर्ष या आत्मानुभूति है। रॉस ने लिखा है—"आदर्शवाद से विशेष रूप से सम्बन्धित शिक्षा का उद्देश्य है—व्यक्तित्व का उत्कर्ष या आत्मानुभूति, अर्थात् 'आत्म' की सर्वोच्च शक्तियों या क्षमताओं को वास्तविक रूप देना।"

"The aim of education specially associated with Idealism is the exaltation of personality, or self-realization, the making actual or real the highest potentialities of the self."—*Ross.*

प्रायः इसी तरह का विचार रस्क ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—"शिक्षा का उद्देश्य—व्यक्तित्व को ऊँचा उठाना या गुण-सम्पन्न करना है। इस व्यक्तित्व का मुख्य लक्षण है—सार्वभौमिक मूल्यों से युक्त होना।"

"The aim of education is the enchancement of personality, the differentiating feature of which is the embodiment of universal values."—*Rusk.*

उपरिलिखित विद्वानों ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उनके आधार पर हम कह सकते हैं कि आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—व्यक्तित्व को ऊँचा उठाना या व्यक्ति के अन्दर सर्वोच्च शक्तियों को वास्तविक बनाना।

आदर्शवाद मानव-जीवन की श्रेष्ठता को सबसे अधिक महत्त्व देता है। यह इस बात को मानता है कि मानव-व्यक्तित्व ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यही कारण है कि यह व्यक्तित्व के उत्कर्ष को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य घोषित करता है। व्यक्तित्व के उत्कर्ष का अर्थ है—'स्व' (Self) की सर्वोच्च शक्तियों या क्षमताओं की प्राप्ति। आदर्शवाद के अनुसार मनुष्य में असीम शक्तियाँ होती हैं। अतः शिक्षा का उद्देश्य—उनका पूर्ण विकास करके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है।

प्लेटो (Plato) के अनुसार आत्मानुभूति द्वारा व्यक्ति को पूर्णता या आदर्श अवस्था (State of perfection) में पहुँचाना—शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। यह आदर्श अवस्था कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के हिस्से में ही नहीं आनी चाहिए, वरन् समाज के सब लोगों को इसका समान रूप से अधिकारी होना चाहिए। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदर्शवाद जनसाधारण की शिक्षा का प्रबल समर्थन करता है।

२ सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि : Enrichment of Cultural Heritage

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का दूसरा उद्देश्य—सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि है। आदर्शवाद मनुष्य की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर बहुत बल देता है। मनुष्य ने इन्हें अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा प्राप्त किया है। इस बारे में रॉस का कथन है :—"धर्म, नैतिकता, कला, साहित्य, गणित और विज्ञान विभिन्न

युगों में किए जाने वाले मनुष्य के नैतिक, मानसिक और सौन्दर्यात्मक कार्यों के परिणाम हैं।"

"Religion, morality, art, literature, mathematics, and science are the products of man's moral, intellectual, and aesthetic activity throughout the ages."—*Ross*

मनुष्य की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की वृद्धि धीरे-धीरे हुई है। इसमें विभिन्न युगों के अनेकों व्यक्तियों ने अपना योग दिया है। यह मानव-जाति की समान सम्पत्ति है। यह मानव-जाति की उन्नति और संगठन करती है। अतः *शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए—मनुष्य को अपनी आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा इसको समृद्ध बनाना।* इस उद्देश्य के बारे में रस्क का कथन है—'शिक्षा को मानव-जाति को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह अपनी संस्कृति की सहायता से आध्यात्मिक जगत में अधिक-से-अधिक पूर्णता से प्रवेश कर सके और आध्यात्मिक जगत की सीमाओं का विस्तार भी कर सके।" (*इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आदर्शवाद* सांस्कृतिक वातावरण पर बल देता है।)

"Education must enable mankind through its culture to enter more and more fully into the spiritual realm, and also to *enlarge the boundaries of the spiritual realm* "—*Rusk*

३ अमर आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति : Realization of Eternal Ideals & Values

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का तीसरा उद्देश्य—आध्यात्मिक जगत के अमर आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति है। रस्क के अनुसार ये आदर्श या मूल्य तीन हैं—"(१) मानसिक, जो ज्ञात है; (२) भावात्मक, जिसका अनुभव किया जाता है; और (३) संकल्पिक, जिसका संकल्प किया जाता है।"

"The intellectual, what is known; the emotional, what is felt; and the volitional, what is willed."—*Rusk.*

उपरोक्त तीनों मानसिक क्रियायें हैं। इन मानसिक क्रियाओं के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर मस्तिष्क सत्य को जानता है और असत्य से दूर रहता है; सुन्दरता का अनुभव करता है और असुन्दरता से दूर रहता है; अच्छाई का संकल्प करता है और बुराई से दूर रहता है। इस प्रकार 'सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्' (Truth, goodness and beauty) मानव-जाति के आध्यात्मिक आदर्श हैं। शिक्षा का उद्देश्य—बालक को इन आदर्शों को प्राप्त करने के लिये योग्य बनाना है।

४. मनुष्य की मूल प्रकृति का आध्यात्मिक प्रकृति में परिवर्तन : Conversion of Man's Original Nature into Spiritual Nature

आदर्शवाद के अनुसार मनुष्य की दो प्रकृतियाँ हैं—'मूल' और 'आध्यात्मिक'। शिक्षा का कार्य है—मूल प्रकृति को आध्यात्मिक प्रकृति में बदलना। इस उद्देश्य की

अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—व्यक्तित्व का उत्कर्ष या आत्मानुभू
ने लिखा है—"आदर्शवाद से विशेष रूप से सम्बन्धित शिक्षा का उद्देश्य है
का उत्कर्ष या आत्मानुभूति, अर्थात् 'आत्म' की सर्वोच्च शक्तियों या क्षम
वास्तविक रूप देना।"

"The aim of education specially associated with Idea
the exaltation of personality, or self-realization, the making
or real the highest potentialities of the self"—*Ross.*

प्रायः इसी तरह का विचार रस्क ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—"
का उद्देश्य—व्यक्तित्व को ऊँचा उठाना या गुण-सम्पन्न करना है। इस व्यक्तित्व
मुख्य लक्षण है—सार्वभौमिक मूल्यों से युक्त होना।"

"The aim of education is the enchancement of personality
the differentiating feature of which is the embodiment of universa
values."—*Rusk.*

उपरिलिखित विद्वानों ने जो विचार व्यक्त किये हैं, उनके आधार पर हम
कह सकते हैं कि आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—व्यक्तित्व को
ऊँचा उठाना या व्यक्ति के अन्दर सर्वोच्च शक्तियों को वास्तविक बनाना।

आदर्शवाद मानव-जीवन की श्रेष्ठता को सबसे अधिक महत्व देता है। यह
इस बात को मानता है कि मानव-व्यक्तित्व ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है। यही कारण
है कि यह व्यक्तित्व के उत्कर्ष को शिक्षा का मुख्य उद्देश्य घोषित करता है। व्यक्तित्व
के उत्कर्ष का अर्थ है—'स्व' (Self) की सर्वोच्च शक्तियों या क्षमताओं की प्राप्ति।
आदर्शवाद के अनुसार मनुष्य में असीम शक्तियाँ होती हैं। अतः शिक्षा का उद्देश्य
उनका पूर्ण विकास करके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना है।

प्लेटो (Plato) के अनुसार आत्मानुभूति द्वारा व्यक्ति को पूर्णता या आद
अवस्था (State of perfection) में पहुँचाना—शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। यह
आदर्श अवस्था कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के हिस्से में ही नहीं आनी चाहिए, वरन
समाज के सब लोगों को इसका समान रूप से अधिकारी होना चाहिए। इस आधार
पर यह कहा जा सकता है कि आदर्शवाद जनसाधारण की शिक्षा का प्रबल समर्थन
करना है।

२. सांस्कृतिक विरासत की समृद्धि : Enrichment of Cultural Heritage

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का दूसरा उद्देश्य—सांस्कृतिक विरासत की
है। आदर्शवाद मनुष्य की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत पर बहुत
देता है। मनुष्य ने इन्हें अपने रचनात्मक कार्यों द्वारा प्राप्त किया है। इस बारे
का कथन है :—"धर्म, नैतिकता, कला, साहित्य, गणित और विज्ञान विभिन्न

युगों में किए जाने वाले मनुष्य के नैतिक, मानसिक और सौन्दर्यात्मक कार्यों के परिणाम हैं।"

"Religion, morality, art, literature, mathematics, and science are the products of man's moral, intellectual, and aesthetic activity throughout the ages."—*Ross*

मनुष्य की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत की वृद्धि धीरे-धीरे हुई है। इसमे विभिन्न युगों के अनेकों व्यक्तियों ने अपना योग दिया है। यह मानव-जाति की समान सम्पत्ति है। यह मानव-जाति की उन्नति और संगठन करती है। अतः शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए—मनुष्य को अपनी आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा इसको समृद्ध बनाना। इस उद्देश्य के बारे में रस्क का कथन है—"शिक्षा को मानव-जाति को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह अपनी संस्कृति की सहायता से आध्यात्मिक जगत में अधिक-से-अधिक पूर्णता से प्रवेश कर सके और आध्यात्मिक जगत की सीमाओं का विस्तार भी कर सके।" (इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए आदर्शवाद सांस्कृतिक वातावरण पर बल देता है।)

"Education must enable mankind through its culture to *enter more and more fully into the spiritual realm, and also to* enlarge the boundaries of the spiritual realm."—*Rusk*

३ अमर आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति : Realization of Eternal Ideals & Values

आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का तीसरा उद्देश्य—आध्यात्मिक जगत के अमर आदर्शों और मूल्यों की प्राप्ति है। रस्क के अनुसार ये आदर्श या मूल्य तीन हैं—"(१) मानसिक, जो ज्ञात है; (२) भावात्मक, जिसका अनुभव किया जाता है; और (३) संकल्पिक, जिसका संकल्प किया जाता है।"

"The intellectual, what is known; the emotional, what is felt; and the volitional, what is willed."—*Rusk.*

उपरोक्त तीनों मानसिक क्रियायें हैं। इन मानसिक क्रियाओं के लक्ष्यों को ध्यान में रखकर मस्तिष्क सत्य को जानता है और असत्य से दूर रहता है; सुन्दरता का अनुभव करता है और असुन्दरता से दूर रहता है; अच्छाई का संकल्प करता है और बुराई से दूर रहता है। इस प्रकार 'सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम्' (Truth, goodness and beauty) मानव-जाति के आध्यात्मिक आदर्श हैं। शिक्षा का उद्देश्य—बालक को इन आदर्शों को प्राप्त करने के लिये योग्य बनाना है।

४. मनुष्य की मूल प्रकृति का आध्यात्मिक प्रकृति में परिवर्तन : Conversion of Man's Original Nature into Spiritual Nature

आदर्शवाद के अनुसार मनुष्य की दो प्रकृतियाँ हैं—'मूल' और 'आध्यात्मिक'। शिक्षा का कार्य है—मूल प्रकृति को आध्यात्मिक प्रकृति में बदलना। इस उद्देश्य की

प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा मनुष्य को पवित्र, पूर्ण और धार्मि
शिक्षा को मनुष्य को उस पूर्णता पर पहुँचा देना चाहिए, जो कभी कम
है। साराश मे, इसे मनुष्य को सच्चे अर्थ मे मनुष्य बनाना चाहिए।

५. चेतना की पूर्ण दशा की प्राप्ति Attainment of Perfect Sta
Rationality

एडम्स (Adams) की शिक्षा की व्याख्या और उद्देश्य आदर्शवाद
आधारित हैं। वह विश्व को विचार की प्रक्रिया मानता है। विश्व व्यवस्थित
अव्यवस्थित नही। इसकी सब बातो को समझा जा सकता है, और सभी बातें तर्क
हैं। यह ऐसे नियमो से शासित होता है, जो बदलते नही है।

आदर्शवादी ऐसे नियमो की खोज करते हैं, जो नैतिक मूल्यो पर आधारित
ससार को व्यवस्था देते हैं। अतः शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—मनुष्य की इस प्रकार
सहायता करना कि वह विश्व और अपने व्यक्तित्व मे चेतना की पूर्ण दशा को प्राप्त
करता है, जब उसका चरित्र आध्यात्मिक होता है।

६. पवित्र जीवन की प्राप्ति . Realization of Holy Life

फ्रॉबेल का कथन है कि आदर्शवाद के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—पवित्र
जीवन की प्राप्ति है। उसने लिखा है—"शिक्षा का उद्देश्य है—भक्तिपूर्ण, पवित्र
तथा कलक रहित, और इसलिए पवित्र जीवन की प्राप्ति। शिक्षा को मनुष्य का
पथ-प्रदर्शन इस प्रकार करना चाहिए कि उसे अपने आप का, प्रकृति का सामना
करने का, और ईश्वर से एकता स्थापित करने का स्पष्ट ज्ञान हो जाय।"

"The object of education is the realization of a fai
pure, inviolable and hence holy life. Education should lead
guide man to clearness concerning himself, and in himself, to
with Nature, and to unity with God "—*Froebel*.

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि आदर्शवादी शिक्षा
उद्देश्य—वैयक्तिक और सामाजिक—दोनो हैं। इस क्षेत्र मे आदर्शवाद की देन जितनी
महत्त्वपूर्ण है, उतनी अन्य किसी दर्शन की नहीं है।

आदर्शवाद और पाठ्य-क्रम
Idealism & Curriculum

आदर्शवादियो ने पाठ्य-क्रम पर बहुत प्रभाव डाला है। पाठ्य-क्रम के बारे
उनके विचार निम्नलिखित हैं—

१. पाठ्य-क्रम का आधार—जीवन के सर्वोच्च आदर्श होने चाहिए।

२. इसे मानव-जाति के अनुभवों को व्यक्त करना चाहिए।
३. इसे मानव-जाति के अनुभवों को संगठित करना चाहिए।
४ इसे मानव-जाति के अनुभवों का प्रतीक होना चाहिए।
५. मनुष्य के अनुभवों मे उसके भौतिक और सामाजिक वातावरणो के अनुभव आते हैं। इसलिए पाठ्यक्रम में विभिन्न विज्ञानों और मानव-शास्त्रो को स्थान मिलना चाहिए।
६. इसे सभ्यता का प्रतिबिम्ब होना चाहिये।

पाठ्य-क्रम के बारे में प्रसिद्ध आदर्शवादियों के विचार

Views of Eminent Idealists on Curriculum

पाठ्य-क्रम के बारे में प्रसिद्ध आदर्शवादियो ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। हम उनमे से कुछ का वर्णन यहां कर रहे हैं —

१ प्लेटो के विचार : Plato's Views

प्लेटो आदर्शवादी था। उसने आदर्श विचारो को पाठ्य-क्रम का आधार माना। उसके अनुसार जीवन का सर्वोच्च विचार—सर्वोत्तम अच्छाई या ईश्वर को प्राप्त करना है। अत. उसने इस बात पर बल दिया कि पाठ्य-क्रम मे आध्यात्मिक मूल्यो को स्थान दिया जाना चाहिए।

ये आध्यात्मिक मूल्य तीन हैं—'सत्यम्', 'शिवम्' और 'सुन्दरम्'। ये तीनो मूल्य तीन प्रकार की क्रियाओ को जन्म देते हैं—मानसिक, नैतिक और सौन्दर्यात्मक। इनमे से प्रत्येक क्रिया के आधार कुछ निश्चित विषय हैं, जिनको पाठ्य-क्रम मे स्थान मिलना चाहिए। इन क्रियाओ के अनुसार पाठ्य-क्रम का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिए :—

मानव की क्रियाएँ व उनसे सम्बन्धित विषय

मानसिक क्रियाएँ	सौन्दर्यात्मक क्रियाएँ	नैतिक क्रियाएँ
भाषा, साहित्य, इतिहास, भूगोल व विज्ञान	कला व कविता	धर्म, आचारशास्त्र व अध्यात्मवाद
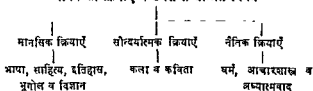
२. नन के विचार : Nun's Views

नन का शिक्षा का दृष्टिकोण व्यक्तिवादी है, पर पाठ्य-क्रम के बारे में उसका विचार आदर्शवादी है। उसका कथन है कि विद्यालय को ऐसा स्थान नहीं समझना चाहिए जहां बालको को एक निश्चित प्रकार की शिक्षा दी जाती है। इसके विपरीत

विद्यालय को ऐसा स्थान समझना चाहिए, जहाँ बच्चों को ऐसी क्रियाओं में प्रशिक्षित किया जाता है, जो ससार के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं। ये क्रियायें दो समूहों में बाँटी जा सकती हैं—

१. वे, जो व्यक्ति और समाज के जीवन को बनाये रहती हैं।
२. वे, जो सभ्यता के ढाँचे का निर्माण करती हैं।

इन क्रियाओं के अनुसार पाठ्य-क्रम का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिए—

मानव की क्रियाएँ व उनसे सम्बन्धित विषय

- शारीरिक, सामाजिक, नैतिक व धार्मिक क्रियाएँ
  - शारीरिक व्यायाम, सामाजिक शिक्षा, नीति-शास्त्र व धर्म
- साहित्यिक, सौंदर्यात्मक व सामान्य क्रियाएँ
  - साहित्य, कला, सगीत, दस्तकारी, विज्ञान, गणित, इतिहास व भूगोल

३. रॉस के विचार : Ross's Views

रॉस ने पाठ्यक्रम की आदर्शवादी धारणा की व्याख्या की है। उसने इस पाठ्यक्रम मे दो प्रकार की क्रियाओ का उल्लेख किया है—(१) शारीरिक, और (२) आध्यात्मिक। इन क्रियाओ के अनुसार पाठ्यक्रम का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिये :—

मानव की क्रियाएँ व उनसे सम्बन्धित विषय

- शारीरिक क्रियायें
  - स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक कुशलतायें व व्यायाम
- आध्यात्मिक क्रियायें
  - मानसिक क्रियायें
    - साहित्य, भाषा, विज्ञान, गणित, इतिहास व भूगोल
  - सौन्दर्यात्मक क्रियायें
    - ललित कलायें
  - नैतिक व धार्मिक क्रियायें
    - धर्म व आचार-शास्त्र

४. हरबर्ट के विचार . Herbart's Views

हरबर्ट प्रसिद्ध आदर्शवादी था। उसने शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य—नैतिकता का विकास बताया है। अत उसने पाठ्य-क्रम मे उन विषयो को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, जो नैतिकता के विकास मे सहायता देते हैं। इस विचार से उसने साहित्य इतिहास, कला, सगीत आदि को प्रमुख स्थान और भूगोल, विज्ञान, गणित आदि को गौण स्थान दिया है।

आदर्शवाद और शिक्षण-विधियाँ

Idealism & Methods of Teaching

बटलर का कथन है—"आदर्शवादी अपने को किसी एक विधि का भक्त न मानकर, विधियों का निर्माण और निश्चय करने वाला मानते हैं।"

"Idealists consider themselves creators and determiners of methods, not devotees of some one method."—*Butler.*

आदर्शवादियो का विश्वास है कि यदि हमारे लक्ष्य स्पष्ट और निश्चित हैं, तो हम बालको की रुचि और योग्यता के अनुसार विधि की खोज सरलता से कर सकते हैं। इसीलिये विभिन्न आदर्शवादी शिक्षको द्वारा विभिन्न शिक्षण-विधियों को अपनाया गया। वे किसी एक पद्धति के पूर्ण भक्त नहीं रहे हैं। उदाहरणार्थ—सुकरात *(Socrates)* ने *प्रश्न-विधि (Questioning Method)*, प्लेटो *(Plato)* ने सम्वाद-विधि (Dialectic Method), अरस्तू ने आगमन और निगमन विधि (Deductive and Inductive Method), हीगल (Hegel) ने तर्क-विधि (Logical Method), और हरबर्ट (Herbart) ने निर्देश विधि (Instruction Method) को अपनाया।

हरबर्ट ने 'निर्देश' का प्रयोग व्यापक अर्थ मे किया है। इसका अर्थ—व्यवस्था (Order) या दमन (Repression) न होकर, शैक्षिक निर्देश (Educative Instruction) और सहानुभूतिपूर्ण मार्ग-प्रदर्शन (Sympathetic Guidance) है। हरबर्ट का मत है—"**निर्देश के बिना शिक्षा को मेरी कोई धारणा नहीं है और मैं उस निर्देश को स्वीकार नहीं करता हूँ, जो शिक्षित नहीं करता है।**"

"I have no conception of education without instruction and do not acknowledge any instruction which does not educate."

—*Herbart.*

'निर्देश' का अर्थ यह नहीं है कि मस्तिष्क को अनिश्चित और अनुचित विचारों का भण्डार बना दिया जाए। इसका अर्थ है—विचारो को सुडौल और सुन्दर बनाना।

उपरोक्त के अलावा कुछ आदर्शवादियो ने व्याख्यान (Lecture) और वाद-विवाद (Discussion) विधियो को अपनाया। फ्रॉबेल (Froebel) ने 'खेल द्वारा शिक्षा' (Play-Way in Education) पर बल दिया। पेस्टालॉजी (Pestalozzi) ने 'अभ्यास व आवृत्ति' (Practice and Repetition) को सबसे उत्तम विधियाँ माना।

सक्षेप मे, हम कह सकते है कि आदर्शवादी शिक्षण-विधियो का सार है—*'क्रिया और नियमित तथा निर्देशित स्वतन्त्रता' (Activity and regulated and* guided freedom)।

विद्यालय को ऐसा स्थान समझना चाहिए, जहाँ बच्चों को ऐसी क्रियाओं में प्रशिक्षित किया जाता है, जो ससार के लिए महत्त्वपूर्ण होती हैं। ये क्रियायें दो समूहों में बाँटी जा सकती हैं—

१. वे, जो व्यक्ति और समाज के जीवन को बनाये रहती हैं।
२. वे, जो सभ्यता के ढाँचे का निर्माण करती हैं।

इन क्रियाओ के अनुसार पाठ्य-क्रम का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिए—

मानव की क्रियाएँ व उनसे सम्बन्धित विषय

शारीरिक, सामाजिक, नैतिक व धार्मिक क्रियाएँ	साहित्यिक, सौंदर्यात्मक व सामान्य क्रियाएँ
शारीरिक व्यायाम, सामाजिक शिक्षा, नीति-शास्त्र व धर्म	साहित्य, कला, सगीत, दस्तकारी, विज्ञान, गणित, इतिहास व भूगोल

३. रॉस के विचार . Ross's Views

रॉस ने पाठ्यक्रम की आदर्शवादी धारणा की व्याख्या की है। उसने इस पाठ्यक्रम मे दो प्रकार की क्रियाओ का उल्लेख किया है—(१) शारीरिक, और (२) आध्यात्मिक। इन क्रियाओ के अनुसार पाठ्यक्रम का स्वरूप इस प्रकार होना चाहिये :—

मानव की क्रियाएँ व उनसे सम्बन्धित विषय
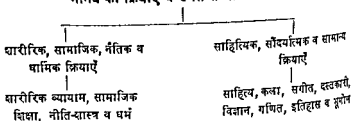
- शारीरिक क्रियायें
  - स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक कुशलतायें व व्यायाम
- आध्यात्मिक क्रियायें
  - मानसिक क्रियायें — ., गणित,
  - सौन्दर्यात्मिक क्रियायें — ललित कलायें
  - नैतिक व धार्मिक क्रियायें — धर्म व आचार-शास्त्र
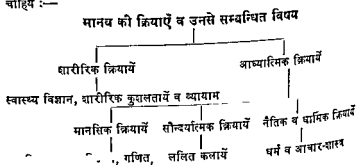
एकमात्र उद्देश्य—नैतिकता
का महत्त्वपूर्ण स्थान
से उनने साहित्य,
गणित आदि का

आदर्शवाद और शिक्षण-विधियाँ
Idealism & Methods of Teaching

बटलर का कथन है—"आदर्शवादी अपने को किसी एक विधि का भक्त न मानकर, विधियों का निर्माण और निश्चय करने वाला मानते हैं।"

"Idealists consider themselves creators and determiners of methods, not devotees of some one method."—*Butler.*

आदर्शवादियो का विश्वास है कि यदि हमारे लक्ष्य स्पष्ट और निश्चित हैं, तो हम बालकों की रुचि और योग्यता के अनुसार विधि की खोज सरलता से कर सकते हैं। इसीलिये विभिन्न आदर्शवादी शिक्षको द्वारा विभिन्न शिक्षण-विधियो को अपनाया गया। वे किसी एक पद्धति के पूर्ण भक्त नहीं रहे हैं। उदाहरणार्थ—सुकरात (Socrates) ने प्रश्न-विधि (Questioning Method), प्लेटो (Plato) ने सम्वाद-विधि (Dialectic Method), अरस्तू ने आगमन और निगमन विधि (Deductive and Inductive Method), हीगल (Hegel) ने तर्क-विधि (Logical Method), और हरबर्ट (Herbart) ने निर्देश विधि (Instruction Method) को अपनाया।

हरबर्ट ने 'निर्देश' का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। इसका अर्थ—व्यवस्था (Order) या दमन (Repression) न होकर, शैक्षिक निर्देश (Educative Instruction) और सहानुभूतिपूर्ण मार्ग-प्रदर्शन (Sympathetic Guidance) है। हरबर्ट का मत है—"निर्देश के बिना शिक्षा की मेरी कोई धारणा नहीं है और मैं उस निर्देश को स्वीकार नहीं करता हूँ, जो शिक्षित नहीं करता है।"

"I have no conception of education without instruction and do not acknowledge any instruction which does not educate."

—*Herbart.*

'निर्देश' का अर्थ यह नहीं है कि मस्तिष्क को अनिश्चित और अनुचित विचारों का भण्डार बना दिया जाए। इसका अर्थ है—विचारो को सुडौल और सुन्दर बनाना।

उपरोक्त के अलावा कुछ आदर्शवादियो ने व्याख्यान (Lecture) और वाद-विवाद (Discussion) विधियो को अपनाया। फ्रोबेल (Froebel) ने 'खेल द्वारा शिक्षा' (Play-Way in Education) पर बल दिया। पैस्टालॉजी (Pestalozzi) ने 'अभ्यास व आवृत्ति' (Practice and Repetition) का सबसे उत्तम विधियाँ माना।

संक्षेप मे, हम कह सकते हैं कि आदर्शवादी शिक्षण-विधियो का सार है—'क्रिया और नियमित तथा निर्देशित स्वतन्त्रता' (Activity and regulated and guided freedom)।

आदर्शवाद और शिक्षक

Idealism & Teacher

आदर्शवाद शिक्षक को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान देता है। उसके अनुसार के कार्य को फ्रॉबेल (Froebel) के किंडरगार्टन वाले इस रूपक से बहुत अच्छ स्पष्ट किया जा सकता है विद्यालय बाग है, छात्र कोमल पौधा है, और कुशल माली है। माली की अनुपस्थिति में भी पौधा बढ़ेगा और अपने उचित स प्राप्त करेगा। प्रत्येक पौधा अपने स्वयं के नियमों के अनुसार विकसित होगा असम्भव है कि गोभी का पौधा बड़ा होकर गुलाब का पौधा बन जाय। फि माली के लिये कुछ कार्य है। वह अपनी कला में कुशल होता है। इसलिये वह और गुलाब—दोनों का उनके सर्वोत्तम रूप में विकसित कर सकता है। इस प्र उसकी उपस्थिति में उससे कहीं अच्छे परिणाम होते हैं, जितने कि उसकी अनुपस्थि में होते हैं।

यही बात शिक्षक के बारे में है। उसे अपनी कला का ज्ञान होता है इसलिये वह बालकों के उत्तम विकास में सहायता दे सकता है। रॉस ने आदर्शवा विचारधारा में शिक्षक के स्थान को इन शब्दों में बताया है—"प्रकृतिवादी कटील झाड़ियों से संतुष्ट हो सकता है, पर आदर्शवादी सुन्दर गुलाबों को पसन्द करता है। इसलिये शिक्षक अपने प्रयासों से छात्र को, जो अपनी प्रकृति के नियमों के अनुसार विकसित होता है, उस उच्चता पर पहुँचाने में सहायता देता है, जिस पर वह अपने आप नहीं पहुँच सकता है।'

"The Naturalist may be content with briars, but the Idealist wants fine roses So the educator by his efforts assists the educand, who is deve'oping according to the laws of h s nature, to attain leve's that w iuld otherwise be denied to him."—*Ross*

आदर्शवाद और बालक

Idealism & Child

प्रकृतिवादियों के समान आदर्शवादी शिक्षा को बाल-केन्द्रित (Child Centred) नहीं मानते हैं। आदर्शवादी शिक्षा में आदर्शों या विचारों को प्रधान स्थान देते हैं। उनके अनुसार शिक्षक का मुख्य कर्त्तव्य—बालक में उच्च आदर्शों को प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से विकास करना है। वे पाठ्यक्रम का निर्माण भी आदर्शों के आधार पर करते हैं। बालक को इन आदर्शों को प्राप्त करना है। इस प्रकार आदर्शवादी शिक्षा योजना में आदर्शों या विचारों को प्रमुख स्थान और बालक को गौण स्थान दिया जाता है।

आदर्शवाद और अनुशासन
Idealism & Discipline

थामस और लैंग के अनुसार—प्रकृतिवादियों का नारा 'स्वतन्त्रता', जब कि आदर्शवादियों का नारा 'अनुशासन' है।"

"Freedom is the cry of the Naturalists, while discipline is that of the Idealists."—*Thomas & Lang*

आदर्शवादियों का विश्वास है कि बालक का पूर्ण विकास तभी हो सकता है, जब वह अनुशासन में रहे। अनुशासन में रहकर ही वह आत्मानुभूति (Self-Realization) या आध्यात्मिकता (Spiritual Attainment) को प्राप्त कर सकता है। पर आदर्शवादी कठोर अनुशासन के पक्ष में नहीं हैं। फ्राबेल का कथन है—"बालक की रुचि का ज्ञान प्राप्त करके तथा प्रेम और सहानुभूति व्यक्त करके उस पर नियंत्रण रखा जाना चाहिए।"

"Control over the child is to be exercised through a knowledge of his interest and by expression of love and sympathy."
—*Froebel*.

इस प्रकार हम देखते हैं कि आदर्शवादियों का अनुशासन का सिद्धान्त उनकी स्वतन्त्रता की धारणा पर आधारित है। उनका मुख्य ध्येय है—'अधीनता से युक्त स्वतन्त्रता का अधिकार और अनुशासन में सामजस्य' (To harmonise freedom with subjection to authority and discipline)।

दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि आदर्शवादी उचित प्रकार से निर्देशित स्वतन्त्रता के वातावरण में कठोर अनुशासन का समर्थन करते हैं। एक ओर वे बालक की क्रियाओं पर सहानुभूतिपूर्ण नियन्त्रण चाहते हैं, दूसरी ओर वे बाह्य नियन्त्रण और शारीरिक दण्ड की अनुपस्थिति चाहते हैं।

सारांश में, वे प्रभावात्मक (Impressionistic) अनुशासन के पक्ष में हैं। वे नियमित स्वतन्त्रता पर आधारित अनुशासन चाहते हैं। उनके अनुसार अनुशासन का अर्थ है—नम्रता, शिष्टता, अधीनता और आज्ञाकारिता के नैतिक मूल्यों का विकास करना।

आदर्शवाद का मूल्यांकन
Estimate of Idealism

आदर्शवाद का मूल्यांकन करने के लिए उसके गुणों और दोषों पर विचार करना आवश्यक है। इन पर हम नीचे प्रकाश डाल रहे हैं—

(अ) गुण: Merits

१. आदर्शवादी शिक्षा बालकों में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् ऐसे श्रेष्ठ

गुणों का विकास करती है, फलस्वरूप बालकों में उत्तम चरित्र का निर्माण होता है।

२. आदर्शवाद शिक्षा के उद्देश्यों को निर्धारित करने में अद्वितीय स्थान रखता है। केवल आदर्शवाद ही शिक्षा के उद्देश्यों की विस्तृत व्याख्या करता है।
३. आदर्शवाद शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक को अति महत्त्वपूर्ण स्थान देता है इसमें बालक और समाज—दोनों का हित होता है।
४. आदर्शवाद आत्म-अनुशासन और आत्म-नियन्त्रण के सिद्धान्तों को प्रतिपादित करता है। इन सिद्धान्तों का शिक्षा में अति महत्त्वपूर्ण स्थान है।
५. आदर्शवादी शिक्षा-योजना में बालक के व्यक्तित्व का आदर किया जाता है।

(ब) दोष Demerits

१. आदर्शवाद के उद्देश्य 'अमूर्त' (Abstract) हैं और इनका सम्बन्ध भविष्य से है।
२. आदर्शवाद हमें जीवन के अन्तिम ध्येय की ओर ले जाता है, जिससे हम इस समय कोई प्रयोजन नहीं है। हम तो इस समय यह चाहते हैं कि हमारी रोटी, कपड़ा और भोजन की आवश्यकताएँ पूरी होनी चाहिए।
३. आदर्शवाद बालक को गौण स्थान और शिक्षक तथा आदर्शों को मुख्य स्थान देता है।
४. शिक्षण-विधि के क्षेत्र में आदर्शवाद की कोई देन नहीं है।
५. आदर्शवाद पाठ्य-क्रम में आध्यात्मिक विषयों को स्थान देता है, जिनकी आज के औद्योगिक युग में आवश्यकता नहीं जान पड़ती है।

निष्कर्ष

आज के भौतिकवादी दृष्टिकोण से उपरोक्त दोषों को ठीक माना जा सकता है। परन्तु यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करें, तो हमें ये दोष निर्मूल जान पड़ते हैं। सत्य यह है कि इस भौतिकवादी युग को अनेक समस्याओं, कलहों और वैमनस्यों से आदर्शवाद का ही सहारा लेकर मुक्ति मिल सकती है। हम जानते हैं कि हमारे लिए रोटी, कपड़ा और भोजन आवश्यक हैं, पर ये ही हमारे जीवन के लिए सब-कुछ नहीं है। आज पाश्चात्य भौतिकवादी जगत भी इस निष्कर्ष पर पहुँच गया है कि आदर्शवाद ही मानव को सुख और शान्ति दे सकता है।

रस्क (Rusk) ने आदर्शवाद की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। उनके विचार में केवल आदर्शवाद ही शिक्षा का वास्तविक आधार है। उनका कथन है कि [illegible]

ससार जिसे विज्ञान जानता है अपूर्ण वास्तविकता है। इसे आदर्शवाद का आध्यातिम ससार ही पूर्ण करता है । इसके अतिरिक्त आदर्शवाद मनुष्य की प्रकृति को विशिष्टत पर बल देता है और मनुष्य को मानसिक, सास्कृतिक, नैतिक और धार्मिक शक्ति पर अधिकार देता है ।

रस्क ने आगे लिखा है—"ये शक्तियाँ और इनके परिणाम मनुष्य विशेषताएँ हैं और ये उसको दूसरे जीवधारियो से भिन्न बनाती हैं । ये शक्तियाँ जी विज्ञान और मनोविज्ञान ऐसे वास्तविक विज्ञानो की सोमा मे नहीं आती हैं । शक्तियाँ ऐसी समस्यायें प्रस्तुत करती हैं, जिनको केवल दर्शन ही हल कर सकता और केवल ये ही शिक्षा के सतोषजनक आधार, अर्थात् दार्शनिक आधार का निर्मा करती हैं ।"

"These powers and their products are peculiar to man, ar differentiate him from other animals; they lie beyond the range the positive sciences—biological and even psychological; they rai problems which only philosophy can hope to solve, and make t only satisfactory basis of Education a philosophical one."

—*Rus*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Give a critical account of the educational corollaries Idealism.
2. "It is only Idealism that can give a clear vision of satisfacto goal for educative effort." Discuss
3. Discuss Idealism with particular reference to aims, metho of teaching, curriculum, teacher and discipline.
4. "Idealism shifts emphasis from the natural or scientific fac of life to the spiritual aspects of human experience" Comme and elucidate.
5. "Idealism has made a greater contribution to the aims ar objectives of education, than to its methods." Do you agr with this statement ? If so, advance arguments in support your answer.

(ब) प्रकृतिवाद की परिभाषा : Definition of Naturalism

हम प्रकृतिवाद के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषायें नीचे दे रहे हैं—

१ पैरी—"प्रकृतिवाद विज्ञान नहीं है, वरन् विज्ञान के बारे मे दावा है। अधिक स्पष्ट रूप से यह इस बात का दावा है कि वैज्ञानिक ज्ञान अन्तिम है, जिसमें विज्ञान से बाहर या दार्शनिक ज्ञान का कोई स्थान नहीं है।"

"Naturalism is not science but an assertion about science. More specifically, it is the assertion that scientific knowledge is final, leaving no room for extra-scientific or philosophical knowledge."—*R. B. Perry*

२. रस्क—"प्रकृतिवाद मानव क्रियाओ का कारण जानने और उनकी व्याख्या करने के लिए अतीत पर निर्भर रहता है। यह वस्तुओं को उसी रूप मे देखकर सन्तुष्ट होता है, जिसमें यह उनको पाता है और यह उनसे अधिक से अधिक लाभ उठाता है। यह सामाजिक सहयोग के बजाय व्यक्ति के अधिकार पर अधिक बल देता है। यह समाज की प्रगतिशील धारणा के बजाय रूढ़िबद्ध धारणा को स्वीकार करता है।"

"Naturalism looks to the past for the cause and explanation of human activity, is content to take things as it finds them and to make the best of them, emphasises individual assertion as against social co-operation, makes for a stereo-typed instead of a progressive conception of society."—*Robert R Rusk*

३. थामस और लैंग—"प्रकृतिवाद आदर्शवाद के विपरीत मस्तिष्क को पदार्थ के अधीन मानता है और यह विश्वास करता है कि अन्तिम वास्तविकता—भौतिक है, आध्यात्मिक नहीं।"

"Naturalism, as opposed to Idealism, subordinates mind to matter, and holds that ultimate reality is material, not spiritual."

—*Thomas & Lang.*

प्रकृतिवादी शिक्षक और उनके दार्शनिक सिद्धान्त
Naturalistic Educators & Their Philosophies

प्रकृतिवादी शिक्षको मे अरस्तू (Aristotle), लॉक (Locke), लेमार्क (Lamarck), रूसो (Rousseau), हक्सले (Huxley) और स्पेंसर (Spencer) के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। यहाँ हम रूसो और स्पेंसर के सिद्धान्तो का वर्णन कर रहे हैं :—

१. रूसो Rousseau (1712-1778)

जीन जेक्स रूसो (Jean Jacques Rousseau) का जन्म जेनेवा (Geneva) में हुआ था। इस फ्रांसीसी दार्शनिक का प्रकृतिवादियों में सबसे ऊँचा स्थान है। रॉस (Ross) और रस्क (Rusk)—दोनों ने उसे प्रकृतिवादी के साथ-साथ आदर्शवादी भी माना है। इसका कारण यह है कि शिक्षा के प्रारम्भिक स्तरों पर उसकी अवश्य शिक्षण विधियाँ प्रकृतिवादी थीं, पर उसके ध्येय—आदर्शवादी थे।

(अ) रूसो के शैक्षिक विचार *Rousseau's Educational Ideas*—रूसो के शैक्षिक विचार उसकी पुस्तक "ईमाइल" (*Emile*) में मिलते हैं। इस पुस्तक ने शिक्षा के इतिहास पर बहुत प्रभाव डाला है। इसका पहला वाक्य रूसो के शैक्षिक विचारों का आधार है। वह वाक्य है "प्रकृति के निर्माता के हाथों से प्राप्त होने वाली प्रत्येक वस्तु अच्छी है, पर प्रत्येक वस्तु मनुष्य के हाथों में खराब हो जाती है।"

"Everything is good as it comes from the hands of the Author of Nature, but everything degenerates in the hands of man."—*Rousseau*

(ब) व्यक्ति के विकास की चार अवस्थायें : *Four Stages of Individual Development*—रूसो ने व्यक्ति के विकास की निम्नलिखित चार अवस्थायें मानी हैं —

१. शैशव काल (Infancy)
२. बचपन (Childhood)
३. लड़कपन (Boyhood)
४. किशोरावस्था (Adolescence)

(१) शैशव-काल : Infancy—रूसो ने शैशव-काल को जन्म से ५ वर्ष तक माना है। इस काल में बालक पशु के समान होता है। रूसो के अनुसार इस काल में बालक को पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए। उस पर कपड़े पहिनने, घूमने-फिरने आदि का कोई भी नियन्त्रण नहीं होना चाहिए। शिक्षा का सम्बन्ध केवल उसके शारीरिक विकास से होना चाहिये। हर प्रकार से यह प्रयत्न किया जाना चाहिए कि उसका शरीर मजबूत बने। इस प्रकार यह काल स्वतन्त्रता, क्रिया और शारीरिक शिक्षा का है।

(२) बचपन : Childhood—बचपन का काल ५ वर्ष से १२ वर्ष तक का है। रूसो ने इस काल को मानव-जीवन का नाजुक काल माना है। उसके अनुसार यह इन्द्रिय-शिक्षा (Sense Education) का काल है। उसके विचार से बालक को इस काल में निषेधात्मक-शिक्षा (Negative Education) दी जानी चाहिए। इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए उसने लिखा है—"मैं निषेधात्मक-शिक्षा उसे कहता हूँ, जो प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान देने से पहले उन अंगों को, जो इसके साधन हैं, पूर्ण बनाने का और

इन्द्रियों के उचित अभ्यास द्वारा विवेक का मार्ग तैयार करने का प्रयत्न करती है। निषेधात्मक शिक्षा का अर्थ निठल्लापन नहीं है वरन् इसके विपरीत है। यह अच्छी बातें नहीं बताती है, पर बुरी बातों से बचाती है। यह सत्य की शिक्षा नहीं देती है, पर असत्य से दूर रखती है। यह बालक को उस मार्ग पर चलने देती है, जो उस आयु में उसे सत्य की ओर ले जाता है, जब वह इसे समझने योग्य हो जाता है। यह मार्ग उसे अच्छाई की ओर उस समय ले जाता है, जब वह इसे समझने और इससे प्रेम करने योग्य हो जाता है।'

"I call a negative education that which tends to perfect the organs that are instruments of knowledge before giving this knowledge directly and that endeavours to prepare the way for reason by proper exercise of the senses A negative education does not mean the time of idleness but far from it. It does not give virtue, it protects from error It disposes the child to take the path that will lead him to truth when he has reached the age to understand it and to goodness when he has acquired the faculty of recognising and loving it."—*Rousseau*

(३) लड़कपन Boyhood—लड़कपन का काल १२ वर्ष से १५ वर्ष तक का है। यह मानसिक शिक्षा (Intellectual Education) का काल है। इस काल के पाठ्य-क्रम में उपयोगी क्रियाओं (Useful Activities) और बालक की जिज्ञासा (Inquisitiveness) को सन्तुष्ट करने वाले विषयों को स्थान दिया जाना चाहिये। रूसो इस काल में बालक को केवल 'Robinson Crusoe' नामक पुस्तक पढ़ाने की अनुमति देता है।

(४) किशोरावस्था Adolescence—रूसो ने किशोरावस्था को १५ से २५ वर्ष तक माना है। १५ वर्ष की आयु तक बालक के शरीर, मस्तिष्क और इन्द्रियों का काफी विकास हो जाता है। अतः इस आयु में हृदय की शिक्षा शुरू की जानी चाहिए। कारण यह है कि शरीर, मस्तिष्क, इन्द्रियाँ, और हृदय सम्पूर्ण मनुष्य का निर्माण करती हैं। रूसो के अनुसार हृदय की शिक्षा के साथ इस आयु में बालक की वास्तविक शिक्षा प्रारम्भ होती है। इस आयु से पहले दी गई शिक्षा केवल इसके बाद की शिक्षा की तैयारी है।

रूसो इस काल के पाठ्य-क्रम में भाषा, धर्म, दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति को महत्वपूर्ण स्थान देता है। वह अपने बालक 'ईमाइल' (Emile) में उन गुणों का विकास करना चाहता था, जो उसे वास्तव में मनुष्य बनायें।

(म) शिक्षा का उद्देश्य : Aim of Education—रूसो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—मनुष्य को मनुष्य बनाना है। उसने लिखा है—"मुझे इस बात से कोई प्रयोजन नहीं है कि मेरा शिष्य सेना, चर्च या न्यायालय में काम करेगा। इससे पहले

कि वह अपने माता-पिता के व्यवसाय को करने का विचार करे, प्रकृति चाहती है वह मनुष्य बने। मैं उसे यह पढ़ाना चाहता हूँ कि उसे किस प्रकार जीवन व्य करना है। मैं यह बात स्वीकार करता हूँ कि मेरे पढ़ाने के बाद वह सबसे प मनुष्य बनेगा; न्यायाधीश, सैनिक या पादरी नहीं। वह वैसा ही होगा, जैसा मनुष्य को आवश्यकता पड़ने पर होना चाहिए। भाग्य द्वारा उसकी स्थिति बदलने का प्रयास व्यर्थ होगा क्योंकि वह सदैव अपनी स्थिति में रहेगा।"

"Whether my pupil be destined for the army, the church, the bar, matters little to me Before he can think of adopti the vocation of his parents, nature calls upon him to be a ma How to live is the business I wish to teach him. On leaving m hands he will *not*, I admit, be a magistrate, a soldier, or a pries first of all, he will be a *man* All that a man ought to be, he ca be, at need, as well as any one else can Fortune in vain wi alter his position, for he will always occupy his own"—*Rousseau*

(द) पाठ्य-क्रम Curriculum—रूसो के पाठ्य-क्रम-सम्बन्धी विचारों का उल्लेख "विकास की चार अवस्थाओं" मे किया जा चुका है। फिर भी छात्रों की सुविधा के लिए हम उन्हे यहाँ दे रहे है :—

१. शैशव-काल के पाठ्यक्रम में बालक के शरीर को दृढ़ बनाने वाली क्रियाओं को स्थान दिया जाय।
२ बचपन के पाठ्यक्रम मे उसकी इन्द्रियों के विकास के लिए उपयुक्त क्रियाओं को स्थान दिया जाय। साथ ही उसे निषेधात्मक शिक्षा भी दी जाय।
३. लड़कपन के पाठ्य-क्रम मे कला, भूगोल, दस्तकारी और प्राकृतिक विज्ञानों को रखा जाय। उसके लिए इस प्रकार की क्रियाओं का आयोजन किया जाय, जिससे उसकी जिज्ञासा सतुष्ट हो। प्रत्येक बालक को 'Robinson Crusoe' पुस्तक पढ़ाई जाय।
४. किशोरावस्था के पाठ्य-क्रम मे भाषा, धर्म, दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति-शास्त्र को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाय। बालक को शिक्षा इस प्रकार दी जाय कि उसमें धार्मिक, नैतिक और सामाजिक विचारों का विकास हो।

(य) शिक्षण-विधि . Method of Teaching—जहाँ तक शिक्षण-विधि का प्रश्न है, रूसो ने 'करके सीखने' (Learning by Doing), निरीक्षण (Observation), अनुभव (Experience), और अन्वेषण (Discovery) पर विशेष रूप से बल दिया।

(र) अनुशासन . Discipline—रूसो का अनुशासन (Discipline) सम्बन्धी दृष्टिकोण आदर्शवादियों से भिन्न था। वह बालक को स्वतन्त्रता का समर्थक था और उस पर किसी प्रकार का बाह्य नियन्त्रण नही चाहता था, वह 'प्राकृतिक परिणामो द्वारा अनुशासन' (Discipline by natural consequences) के सिद्धान्त में विश्वास रखता था। इसका अर्थ यह है कि यदि बालक प्रकृति के नियमो के विरुद्ध कोई कार्य करता है, तो प्रकृति उसे दण्ड देती है। इसलिए मनुष्य को बालक को दण्ड न देकर स्वतन्त्र छोड देना चाहिए। उसके कार्य ही उसे बता देंगे कि उनमे से कौन-सा दण्डनीय है।

२ स्पेंसर : Spencer (1820–1903)

हरबर्ट स्पेंसर (Herbert Spencer) इङ्गलैंड का एक महान् दार्शनिक था। उसका जन्म डरबी (Derby) में हुआ था। उसने शिक्षा मे विज्ञान को अति महत्त्व-पूर्ण स्थान दिया। उसके अनुसार शिक्षा का कार्य व्यक्ति को पूर्ण जीवन (Complete Living) के लिए तैयार करना है। उसका कथन है कि किसी भी शिक्षा-योजना की जाँच इस बात से की जा सकती है कि वह इस कार्य को कहाँ तक पूरा करती है।

स्पेंसर ने 'पूर्ण जीवन' की मानव-क्रियाओं को निम्नलिखित पाँच वर्गों मे बाँटा :—

१. शारीरिक हित (Physical Well-being)
२. व्यावसायिक कुशलता (Vocational Efficiency)
३. पितृत्व (Parenthood)
४. नागरिकता (Citizenship)
५. मनोरंजन (Enjoyment)

स्पेंसर का मत है कि इनमे से प्रत्येक वर्ग मे विज्ञान सबसे अधिक आवश्यक है। अतः उसने जीव-विज्ञान, रसायन-शास्त्र, भौतिकशास्त्र, शरीर-शास्त्र, मनोविज्ञान और गणित के विषयो को शिक्षा मे आधारभूत स्थान दिया।

प्रकृतिवाद के रूप
Forms of Naturalism

प्रकृतिवाद के निम्नलिखित तीन मुख्य रूप हैं :—

१. पदार्थवादी प्रकृतिवाद : Physical Naturalism

इस वाद का सम्बन्ध बाह्य प्रकृति (External Nature) से है। यह पदार्थ-जगत (Physical World) के अनुसार मनुष्य को समझने का प्रयत्न करता है। इसने शिक्षा को कोई योगदान नहीं दिया है।

२. यंत्रवादी प्रकृतिवाद ; Mechanical Naturalism

यह वाद मनुष्य को मनुष्य मानता है और उसके चेतन तत्व की उपेक्षा करता है। इस वाद ने 'व्यवहारवादी मनोविज्ञान' (Phychology of Behaviourism) को जन्म दिया है। इसने शिक्षा को काफी योगदान दिया है।

३. जीवविज्ञानवादी प्रकृतिवाद ; Biological Naturalism

यह वाद पशु और मनुष्य के विकास की निरन्तरता मे विश्वास करता है। इस वाद के दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं :—

१. जीवन के लिए संघर्ष (*Struggle for existence*)

२. सबसे उपयुक्त का अस्तित्व (*Survival of toe fittest*)

पहिले सिद्धान्त के अनुसार प्राणी को जीवित रहने के लिए संघर्ष करना पड़ता है। दूसरे के अनुसार वही प्राणी जीवित रहता है जो उपयुक्त और शक्तिशाली होता है। इस वाद का शिक्षा के लिए सबसे अधिक योगदान है।

प्रकृतिवादियों के सम्प्रदाय
Schools of Naturalists

शैक्षिक दृष्टिकोण से प्रकृतिवादियों को निम्नलिखित तीन सम्प्रदायों, श्रेणियों या समूहों में बाँटा जा सकता है :—

१. मूल प्रवृत्त्यात्मकवादी तथा पदार्थवादी प्रकृतिवादी : Instinctivists & Physical Naturalists

इस सम्प्रदाय के प्रकृतिवादी बिना किसी नियन्त्रण के स्वतन्त्र विकास पर बल देते हैं। उनका कहना है कि बालक की मूल प्रवृत्तियों (*Instincts*) को अपना मार्ग अपने-आप अपनाने के लिए छोड़ देना चाहिए। उसका विकास स्वाभाविक और अन्दर से, न कि बाहर से होना चाहिए। उसे प्रकृति के बीच में रहकर स्वयं ही शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए, क्योंकि प्राकृतिक वस्तुयें और घटनायें उसको शिक्षित करने के लिए काफी हैं। प्रकृति उसके लिए खुली हुई पुस्तक के समान है और निश्चय रूप से सबसे अच्छी किताब है। इसके साथ ही यह सरल है और कहीं से भी पढ़ी जा सकती है।

इन प्रकृतिवादियों के अनुसार प्रत्येक बालक मे दो मूलभूत प्रेरणायें (*Basic Urges*) पाई जाती हैं : (१) अभिव्यक्ति (*Expression*), और (२) क्रिया (*Activity*)। बालक के व्यक्तित्व के विकास के लिए इन दोनों प्रेरणाओं को पूरी स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।

२. डारविनवादी तथा जीवविज्ञानवादी प्रकृतिवादी : Darwinians & Biological Naturalists

अंग्रेज प्रकृतिवादी डारविन (*Darwin*) और फ्रांसीसी वैज्ञानिक लेमार्क (*Lamarck*) ने मानव-विकास की खोज का काम किया। उन्होंने बताया कि जीवन

को बनाये रखने के लिए निरन्तर संघर्ष होता है। इस संघर्ष में शक्तिशाली जीवित रह जाते हैं और *निर्बल नष्ट हो जाते हैं।* उन्होंने कहा कि *जीवन स्थायी नहीं है,* वरन् सदैव परिवर्तन होने वाली घटना है। अतः मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने-आप को परिवर्तित होने वाले जीवन के अनुकूल बनाये। ऐसा न करने पर वह नष्ट हो जायगा। उसको अनुकूल बनाना शिक्षा का कार्य होना चाहिए।

अत. शिक्षा व्यक्ति में परिवर्तन करने के लिए होनी चाहिए। यह तभी सम्भव है, जब शिक्षा का स्वरूप विकासवादी हो। शिक्षा का एक स्तर स्वाभाविक रूप से दूसरे स्तर तक पहुँचना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा का दूसरा स्तर पहले स्तर से स्वाभाविक रूप से विकसित होना चाहिए। बालक के लिए शिक्षा की योजना बनाते समय प्रत्येक स्तर पर उसके शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास को ध्यान मे रखना चाहिए।

३ प्रायोगिक प्रकृतिवादी : **Experimental Naturalists**

इन प्रकृतिवादियो का विश्वास है कि मानव-जाति की सब क्रियाओ और अनुभवो का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना चाहिए। उसके बाद ही जीवन के सत्यो को निश्चित किया जाना चाहिए। इन प्रकृतिवादियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य—"पूर्ण जीवन के लिए सम्पूर्ण मनुष्य की समस्त शिक्षा" ("Total education of the whole man for a complete life.") है।

प्रकृतिवाद के प्रमुख सिद्धान्त या आवश्यक तत्त्व

Main Principles or Essential Features of Naturalism

थामस और लैंग (Thomas and Lang) ने प्रकृतिवाद के निम्नलिखित सिद्धान्त बताये हैं :—

१. संसार एक बड़ी मशीन।
२. कोई भी चीज पूर्ण रूप से अच्छी या बुरी नहीं है।
३. केवल विज्ञान ही ज्ञान देता है।
४. प्रत्येक वस्तु प्रकृति से उत्पन्न होती है और उसी मे विलीन हो जाती है।
५. अपरिवर्तनीय प्राकृतिक नियम सब घटनाओं को भली प्रकार स्पष्ट करते हैं और कर सकते हैं।
६. वास्तविकता की व्याख्या केवल प्राकृतिक विज्ञानों द्वारा की जा सकती है।
७. ज्ञान और सत्य का आधार—इन्द्रियों का अनुभव होना चाहिए।
८. समस्त ज्ञान के आधार—जन्मजात धारणायें या सिद्धान्त नहीं हैं।

९. विकास की प्रक्रिया में [illegible] हुआ करता है। यह [illegible] के जीवों [illegible] है।
१०. [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] और इच्छा की [illegible] है।
११. मनुष्य के सामाजिक जीवन की भौतिक दशाएँ विकास की [illegible] द्वारा [illegible] रही है।"

प्रकृतिवाद और शिक्षा
Naturalism & Education

शिक्षा में प्रकृतिवाद का आन्दोलन—बेकन (Bacon) और कॉमेनियस (Comenius) ने शुरू किया। इस आन्दोलन को रूसो (Rousseau) ने चरम सीमा पर पहुँचाया। उसके अनुसार शिक्षा को निम्नलिखित सामान्य सूत्र-वाक्य (General Maxims of Naturalism for Education) प्राप्त हुए। इन्हीं को हम और प्रकृतिवादी शिक्षा की विशेषताएँ (Characteristics of Naturalist Education) कहते हैं :—

१. प्रकृति का अनुसरण (Follow Nature)
२. बालक की केन्द्रीय स्थिति (Central Position of Child)
३. बालक के लिए स्वतन्त्रता आवश्यक (Freedom Necessary for Child)
४. इन्द्रियाँ : ज्ञान के द्वार (Senses the Gateways to Knowledge)
५. पुस्तकीय शिक्षा . अनावश्यक (No Bookish Education)

१. प्रकृति का अनुसरण : Follow Nature

शिक्षा में प्रकृतिवाद का सबसे महत्वपूर्ण सूत्र जो कामेनियस (Comenius) ने प्रदान किया है, यह है—"प्रकृति का अनुसरण करो।" (Follow Nature) प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि बालक का स्वाभाविक विकास केवल प्राकृतिक वातावरण में ही हो सकता है। उसका विकास विद्यालय के कृत्रिम वातावरण में होना सम्भव नहीं है।

प्रकृतिवादी शिक्षा के क्षेत्र में 'प्रकृति' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में करते हैं :—(१) भौतिक प्रकृति (Physical Nature), और (२) बालक की प्रकृति (Nature of the Child)। बालक की प्रकृति का अर्थ है—मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts), आवेग (Impulses), प्रवृत्तियाँ (Tendencies), और क्षमतायें (Capacities)—जिनको बालक अपने जन्म के साथ लाता है। भौतिक प्रकृति—बाह्य प्रकृति (External Nature) है। बालक की प्रकृति—आन्तरिक प्रकृति (Inner Nature) है। बाह्-

प्रकृति बालक को सीखने के नियम देती है। इन नियमो को बालक की आन्तरिक प्रकृति के अनुसार प्रयोग मे लाना चाहिए, क्योंकि तभी वह सरलता से सीख सकेगा।

२. बालक की केन्द्रीय स्थिति : Central Position of Child

प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि शिक्षा की प्रक्रिया मे बालक का स्थान केन्द्रीय है। दूसरे शब्दो मे, उनका विचार है कि बालक शिक्षा के लिए नहो, वरन् शिक्षा बालक के लिए है। अत. यह आवश्यक है कि शिक्षक पहले बालक की प्रकृति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे और फिर उसके स्वाभाविक, निरन्तर और क्रमिक विकास के लिए साधन जुटाये।

प्रकृतिवादी बालक को बालक, न कि वयस्क मानकर शिक्षा देने का कार्य करते हैं। उनका कहना है कि प्रकृति उसको मनुष्य बनने से पहले बालक के रूप मे चाहती है। अत. वे इस बात पर बल देते हैं कि बालक पर वयस्कों के विचार नही लादे जाने चाहिए। इसके विपरीत, उसे इस बात का अवसर दिया जाना चाहिए कि वह अपने अनुभवो और प्रमाणो के आधार पर अपने विचारो का निर्माण करे। रॉस का कथन है—"प्रकृतिवादी शिक्षा के चित्र मे प्रमुख स्थान बालक का है—न कि शिक्षक, स्कूल, पुस्तक या अध्ययन की वस्तु का।"

"It is the child himself rather than the educator, the school, the book, or the subject of study that is in the foreground of the educational picture."—*Ross*

३ बालक के लिए स्वतन्त्रता आवश्यक : Freedom Necessary for Child

प्रकृतिवादियो का कहना है कि बालक के लिए स्वतन्त्रता आवश्यक है। वे कॉमिनियस (Comenius) के इस कथन मे विश्वास करते हैं—"प्रकृति ठीक समय पर कार्य करती है" ("Nature observes a suitable time.")।

अतः उनका कहना है कि बालक को उसकी रुचियो के अनुसार विकसित होने दिया जाय, और उसके किसी कार्य मे बाधा न डाली जाय। वे उन बातो की निन्दा करते हैं, जो बालक को उसकी इच्छा के अनुसार कार्य नही करने देती हैं। वे शारीरिक दण्ड और भय तथा चिन्ता उत्पन्न करने वाली बातों से घृणा करते हैं, क्योंकि ये सभी बातें बालक का स्वाभाविक विकास नहीं होने देती हैं। वे इस बात मे विश्वास करते हैं—"बालक अच्छा प्राणी है, खराब नहीं। वह जन्म के समय अच्छा होता है और यदि भय तथा घृणा को सब बातों को दूर कर दिया जाए, तो वह अच्छा हो रहता है।"

"Child is a good, not an evil being : born good, he remains good when all opportunity to fear and hate is abolished."

—*Naturalists*.

को उत्पन्न करना, जो आधुनिक जीवन के लिये उपयुक्त क्रिया और विचार की आदतें हैं।"

"Conditional reflexes that are habits of action and thought appropriate to modern life."—*Mechanical Naturalists.*

इन प्रकृतिवादियो का कहना है कि शिक्षा का कार्य—व्यक्ति मे ऐसे व्यवहार का विकास करना है, जिससे कि वह मशीने के समान कुशलता पूर्वक कार्य कर सके।

३. जीवविज्ञानवादी प्रकृतिवादियो के विचार : Views of Biological Naturalists

इन प्रकृतिवादियो का कहना है कि शिक्षा का उद्देश्य—मनुष्य के वर्तमान और भावी सुख को सुरक्षित रखना है। इन प्रकृतिवादियो में तीन मुख्य हैं—(१) नव-डार्विनवादी, (२) नव-लैमार्कवादी, और (३) स्पेंसर। इनके विचारो को हम अलग से दे रहे हैं :—

४. नव-डार्विनवादियों के विचार : Views of Neo-Darwinians

नव-डार्विनवादी शिक्षा के उद्देश्यों को इस विचार पर आधारित करते हैं—मनुष्य का विकास जीवन के निम्नतर स्तरो से हुआ है। उनका कहना है कि प्राणी को अपने जीवन को बनाये रखने के लिए वातावरण से निरन्तर संघर्ष करना पड़ता है। अस्तित्व के इस संघर्ष मे शक्तिशाली या सबसे उपयुक्त तो जीवित रह जाते हैं, पर निर्बल नष्ट हो जाते हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह व्यक्ति को जीवन के संघर्ष के लिये तैयार करे और इस प्रकार उसके जीवन को सुरक्षित रखे।

५. नव-लैमार्कवादियों के विचार : Views of Neo-Lamarckians

नव-डार्विनवादियो के समान नव-लैमार्कवादी भी जीवन के निम्नतर स्तरों से मनुष्य के विकास मे विश्वास करते हैं। पर वे इसकी व्याख्या दूसरे ढंग से करते हैं। उनका कहना है—"प्राणी में अपने-आप को, अपनी आदतों को और अपने शारीरिक ढाँचे को अपनी परिस्थितियों के अनुकूल बनाने की शक्ति होती है।"

"The power of the living creature to adapt itself, its habits, and its bodily structure to the circumstances in which it finds itself.
—*Neo-Lamarckians*

इस प्रकार नव-लैमार्कवादियो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है—व्यक्ति को अपने वातावरण से अनुकूलन (Adjustment) करने के योग्य बनाना।

६. स्पेंसर के विचार : Spencer's Views

हरबर्ट स्पेंसर का कथन है कि अपने-आप की सुरक्षा आवश्यक है और आत्म-सन्तोष मानव-जीवन का सर्वश्रेष्ठ गुण है। आत्म-सन्तोष ही मनुष्य के वर्तमान और

भावी गुण का आधार है। अतः शिक्षा का उद्देश्य—बालक की मूल-प्रवृत्तियों और प्राकृतिक आवेगों (Natural Impulses) का विकास करना है। इसके अतिरिक्त शिक्षा का उद्देश्य - बालक को आत्म-संरक्षण (Self-Preservation) और आत्म-संतोष (Self-Satisfaction) प्राप्त करने में भी सहायता देता है।

७. बर्नार्ड शॉ के विचार : Views of Bernard Shaw

बर्नार्ड शॉ नव-लैमार्कवादियों से भी एक कदम आगे है। उसके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य यह है—विकास की गति और प्रजातीय प्रगति (Racial Improvement) को तेज करना।

८. नन के विचार : Views of Nunn

नन आदर्शवादी है, पर उसने शिक्षा के उद्देश्यों पर जीव-विज्ञानवादी और प्रकृतिवादी दृष्टिकोणों से विचार किया है। उसके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—"व्यक्ति का स्वतन्त्र विकास" (Autonomous development of the individual.)। उसका दृढ़ विश्वास है कि जिस शिक्षा का उद्देश्य—प्रकृति के अनुसार वैयक्तिकता (Individuality) का विकास करना है, केवल वही सच्ची शिक्षा है।

हमने शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में विभिन्न प्रकृतिवादियों के विचारों को ऊपर की पंक्तियों में विवेचना की है। उनके आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रकृतिवाद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

१. उचित सहज सम्बद्ध क्रियाओं का निर्माण (Formation of Appropriate Conditional Reflexes)
२. मूल प्रवृत्तियों का शोधन, मार्गान्तीकरण और समन्वय (Sublimation, Redirection & Co-ordination of Instincts)
३. जीवन-संघर्ष के लिये तैयारी (Preparation for the Struggle for Existence)
४. वातावरण से अनुकूलन करने की क्षमता (Capacity for Adaptation to Environment)
५. आत्म-संरक्षण और आत्म-संतोष की प्राप्ति (Attainment of Self-Preservation & Self-Satisfaction)
६. विकास की गति की तीव्रता (Accelaration of the Pace of Evolution)
७. प्रजातीय प्रगति की प्राप्ति (Achievement of Racial Improvement)
८. वैयक्तिकता का स्वतन्त्र विकास (Autonomous Development of Individuality)

प्रकृतिवाद और पाठ्य-क्रम
Naturalism & Curriculum

प्रकृतिवादी बालक को पाठ्य-क्रम का आधार मानते हैं। इसलिये उनका कहना है कि पाठ्य-क्रम का निर्माण बालक की रुचियो, योग्यताओ और स्वाभाविक क्रियाओ के अनुसार होना चाहिए। वे कहते हैं कि पाठ्य-क्रम ऐसा बनाया जाय कि बालक के विकास की विभिन्न अवस्थाओ की आवश्यकतायें पूरी हो सकें। ये आवश्यकतायें उसके वर्तमान और वास्तविक जीवन की हैं। प्राय सभी प्रकृतिवादियो ने पाठ्य-क्रम के बारे मे अपने विचार प्रकट किए हैं। हम उनमे से प्रमुख विचारो का वर्णन यहाँ कर रहे हैं। यथा—

१. कॉमेनियस के विचार Comenius's Views

कॉमेनियस यह नहीं चाहता है कि पाठ्य-विषयो मे से कुछ विषय बालक को पढ़ाने के लिये चुने जायें। उसका कहना है कि सब छात्रो को सब विषय पढ़ाये जायें। रस्क के अनुसार, "कॉमेनियस का उद्देश्य सब मनुष्यों को सब विषय पढ़ाना था। वह सब विषयों मे से कुछ को चुनना आवश्यक नहीं समझता था।"

"Comenius's aim was to teach all things to all men, no selection being deemed necessary."—*Rusk*.

२. स्पेंसर के विचार : Spencer's Views

स्पेंसर का कहना है कि शिक्षा देने मे पहले हमारा मुख्य कार्य यह है कि हम मानव-जीवन की प्रमुख क्रियाओ का उनके महत्त्व के अनुसार वर्गीकरण करें। उसने इन क्रियाओं को पाँच भागों मे बाँटा है और इन क्रियाओ के अनुसार शिक्षा के विषयों को बताया है। ये क्रियायें और इनसे सम्बन्धित विषय नीचे दिये जा रहे :—

(i) वे क्रियायें जो प्रत्यक्ष रूप मे आत्म-सरक्षण (Self-preservation) मे सहायता देती हैं। इनसे सम्बन्धित विषय हैं—शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान आदि।

(ii) वे क्रियायें जो अप्रत्यक्ष रूप मे आत्म-सरक्षण के लिये जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने मे सहायता देती हैं, जैसे—भोजन, वस्त्र, मकान। इन क्रियाओ से सम्बन्धित विषय हैं —भौतिक विज्ञान, गणित, भूगोल आदि।

(iii) वे क्रियायें जो सन्तान के पालन-पोषण में सहायता देती है। इनसे सम्बन्धित विषय हैं—गृहशास्त्र, शरीर-विज्ञान, बाल-मनोविज्ञान आदि।

(iv) वे क्रियायें जो सामाजिक और राजनैतिक सम्बन्धो की स्थापना, और व्यक्ति को योग्य नागरिक तथा पड़ोसी बनाने मे सहायता देती हैं। इनसे सम्बन्धित विषय हैं—इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति-शास्त्र आदि।

(v) वे क्रियायें जो मनोरंजन और व्यक्ति की रुचियों तथा भावनाओं को सन्तुष्ट करने में सहायता देती हैं। इनसे सम्बन्धित विषय हैं—कला, भाषा, साहित्य आदि।

रस्क ने हमको स्पेंसर (Spencer) के पाठ्य-क्रम सम्बन्धी विचारों का निचोड़ दिया है। उसने लिखा है :— "जिस प्रकार हरबर्ट के अनुयायियों ने इतिहास को केन्द्रीय विषय बनाकर शिक्षा देने का प्रयास किया, उसी प्रकार स्पेंसर ने विज्ञान को केन्द्रीय विषय बनाया। इसके लिये स्पेंसर का तर्क यह था कि विज्ञान-केन्द्रित पाठ्य-क्रम उदार शिक्षा देगा।"

"What Spencer was projecting was the correlation of all studies round science just as the Herbartians had earlier attempted round history. He was arguing that a curriculum centred on science would provide a liberal education."—*Rusk.*

३. हक्सले के विचार Huxley's Views

टी० एच० हक्सले प्रकृतिवादी है, पर स्पेंसर और अन्य प्रगतिवादियों के समान वह विज्ञान के अध्ययन पर बल नहीं देता है। विज्ञान के बजाय वह सांस्कृतिक पहलू को अधिक महत्त्व देता है।

उपरोक्त प्रकृतवादियों ने पाठ्य-क्रम के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनके आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रकृतिवाद के अनुसार पाठ्य-क्रम में निम्नलिखित तत्त्व होने चाहिए :—

१. बालक को पाठ्य-क्रम का आधार होना चाहिए।
२. पाठ्य-क्रम बालक की रुचियों, योग्यताओं और स्वाभाविक क्रियाओं के अनुसार होना चाहिए।
३. पाठ्य-क्रम को बालक के लिए विकास की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए।
४. पाठ्य-क्रम के सब विषय सब बालकों को पढ़ाये जाने चाहिए। पढ़ाते समय विषयों में से कुछ का चुनाव नहीं किया जाना चाहिए।
५. सभी विषयों के लिए विज्ञान को केन्द्रीय विषय बनाया जाना चाहिए।
६. पाठ्य-क्रम में जीवन-रक्षा सम्बन्धी विषयों को प्रधानता दी जानी चाहिए।
७. पाठ्य-क्रम में अग्रलिखित विषयों को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए—शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, भूगोल, इतिहास, गृह-शास्त्र, बाल मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति-शास्त्र, कला, भाषा और साहित्य।

प्रकृतिवाद और शिक्षण-विधियाँ
Naturalism & Methods of Teaching

शिक्षण-विधियों के क्षेत्र में प्रकृतिवाद की देन बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह प्राचीन और परम्परागत शिक्षण-विधियों के विरुद्ध क्रान्ति है। यह रटने और निष्क्रिय अभ्यास (Passive drill-work) का विरोध तथा 'करके सीखने' (Learning by Doing) और 'अनुभव द्वारा सीखने' (Learning by Experience) का समर्थन करता है। इसके बारे में रूसो की सलाह यह थी— 'अपने छात्र को मौखिक पाठ मत *पढ़ाओ। उसे केवल अनुभव से सीखने दो। जब भी सम्भव हो, आप कार्य द्वारा* पढ़ायें और शब्दों का सहारा केवल तभी लें, जब कार्य करना सम्भव न हो।"

"Give your scholar no verbal lessons , he should be taught by experience alone. Teach by doing whenever you can , and only fall back on words when doing is out of question."

—*Rousseau.*

रूसो की इस सलाह पर प्रकृतिवाद की सब शिक्षण-विधियाँ आधारित हैं।

प्रकृतिवादियों का कहना है कि छात्रों के ज्ञान आधार उनका स्वय का अनुभव और निरीक्षण (Experience and Observation) होना चाहिए। उदाहरणार्थ—विज्ञान पुस्तकों में, चाक से बोर्ड पर चित्र बनाकर या शब्दों का प्रयोग करके नहीं पढाया जाना चाहिए। इनके विपरीत, छात्रों को प्रयोगशाला में अपने स्वय के कार्यों से या स्कूल के बाहर प्राकृतिक घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखकर विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए।

प्रकृतिवादी शिक्षा में 'खेलने की विधि' (Play-way Method) को बहुत उत्तम समझते है। खेल ही बालक को गुप्त शक्तियों को प्रदर्शित करता है। खेल ही उसे अनेकों प्रकार से अपने को व्यक्त करने का अवसर देता है।

प्रकृतिवादियों के सिद्धान्तों ने अनेकों शिक्षण-पद्धतियों को जन्म दिया है, जैसे—*ह्यूरिस्टिक पद्धति (Heuristic Method), डाल्टन पद्धति* (Dalton Method), मॉन्टेसरी पद्धति (Montessori Method), निरीक्षण पद्धति (Observation Method), और खेल की पद्धति (Play-Way Method)।

इन पद्धतियों से स्पष्ट हो जाता है कि प्रकृतिवादियों ने हमें अति महत्त्वपूर्ण शिक्षण-विधियाँ दी है। ये विधियाँ अनियन्त्रित स्वतन्त्रता के वातावरण में बालक को आत्म-शिक्षा (Self-Education), आत्म-प्रदर्शन (Self-Expression), रचनात्मक कार्य (Creative Activity), और संगठित विकास (Integrated Growth) का अवसर देती है।

प्रकृतिवाद और शिक्षक
Naturalism & Teacher

प्रकृतिवादी शिक्षा-योजना में 'शिक्षक' का स्थान गौण है। प्रकृतिवादियों का कहना है कि प्रकृति ही बालक का वास्तविक शिक्षक है। वे बालक की शिक्षा में शिक्षक को किसी प्रकार का भी हस्तक्षेप करने की आज्ञा नहीं देते हैं। यदि वह ऐसा करता है और बालक पर अपना प्रभाव डालने का प्रयत्न करता है, तो वे उसकी निन्दा करते हैं। वे शिक्षक से केवल यह चाहते हैं कि वह बालक के स्वाभाविक विकास के लिये परिस्थितियों का निर्माण करे।

उनके अनुसार शिक्षक का क्या स्थान और कार्य है? इसके बारे में रॉस ने लिखा है—"यदि शिक्षक का कोई स्थान है, तो वह पर्दे के पीछे है। वह बालक के विकास का निरीक्षण करने वाला, न कि उसको सूचनाओं, विचारों, आदर्शों और इच्छा-शक्ति को देने वाला या उसके चरित्र का निर्माण करने वाला है। बालक इन बातों को स्वयं ही कर लेगा। वह किसी भी शिक्षक की अपेक्षा यह अधिक अच्छी तरह जानता है कि उसे क्या, कब और कैसे सीखना है। उसकी शिक्षा—उसकी रुचियों और प्रेरणाओं का स्वतन्त्र विकास है, न कि इसके लिये शिक्षक द्वारा किया गया कृत्रिम प्रयास।"

"The educator's place if any, is behind the screen, he is an observer of the child's development rather than giver of information, ideas, ideals, and will-power, or a moulder of character. These the child will forge for himself, he knows better than any educator what he should learn, when and how he should learn it. His education is the free development of his interests and motives rather than an artificial effort made on him by an educator."

—*Ross.*

प्रकृतिवाद और अनुशासन
Naturalism & Discipline

प्रकृतिवादियों का बाह्य शक्तियों पर आधारित अनुशासन में विश्वास नहीं है। इनका नारा स्वतन्त्रता है। रूसो का कथन है—"बच्चों को कभी दण्ड नहीं दिया जाना चाहिये। स्वतन्त्रता, न कि शक्ति सबसे अच्छी चीज है।"

"Children should never receive punishment. Freedom and not power is the greatest good." — *Rousseau.*

प्रकृतिवादियों का विश्वास है कि स्वतन्त्र वातावरण में ही बालक का स्वाभाविक विकास हो सकता है। अतः उसके लिये स्वतन्त्रता आवश्यक है। और

प्रकृतिवादी किसी प्रकार के अनुशासन में विश्वास करते हैं, तो वह है—'प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन' (Discipline by natural consequences)। रूसो ने लिखा है—"अनुशासन सदैव बालको को गलतियों के प्राकृतिक परिणामो द्वारा होना चाहिये।"

"Discipline should always come by the natural consequences of children's faults"—*Rousseau*

रूसो के कथन का अभिप्राय यह है कि—अनुशासन बालक के कार्यों का प्राकृतिक परिणाम है। इस बात को स्पेंसर ने उदाहरण देकर स्पष्ट किया है। उसने लिखा है—"जब बालक गिरता है या अपने सिर को मेज पर पटकता है, तो उसे दर्द मालूम पड़ता है। इस दर्द की याद उसको अधिक सावधान बना देती है। दर्द के इस प्रकार के बार-बार होने वाले अनुभवों के कारण वह अन्त में अपने कार्यों में अनुशासित हो जाता है।"

"When a child falls, or runs its head against the table, it suffers a pain, the remembrance of which tends to make it more careful; and by repetition of such experiences, it is eventually disciplined into proper guidance of its movements."—*Spencer*.

स्पेंसर ने जो कुछ लिखा है, वह सब आयु के बालको के लिये नही है। उदाहरणार्थ—३ वर्ष का बच्चा इतना नासमझ होता है कि यदि आप उसे खुला हुआ चाकू दे दें, तो वह उससे खेलने लगेगा। उसके चोट लगेगी, पर उसके लिये इसका परिणाम कुछ न होगा। अत. इस आयु के बच्चो पर प्राकृतिक परिणामो द्वारा अनुशासन का सिद्धान्त लागू नहीं होता है।

प्रकृतिवाद और विद्यालय
Naturalism & School

प्रकृतिवादी विद्यालय को कृत्रिम, कठोर और दृढ़ बन्धनो वाली संस्था नही चाहते हैं। वे इसका स्वतन्त्र संगठन चाहते है, जिससे बालक को अपने स्वाभाविक विकास के लिये उचित वातावरण मिले। वे विद्यालय में 'स्व-शासन' (Self Government) का समर्थन करते हैं। उनका कहना है कि विद्यालय के बालको को अपने सामाजिक जीवन पर स्वयं ही शासन करना चाहिये, और उन पर ऊपर से किसी प्रकार का दबाव नहीं पड़ना चाहिये।

प्रकृतिवादियों के इन विचारो ने आधुनिक विद्यालयो पर बहुत प्रभाव डाला है। इंगलैंड के सभी प्रसिद्ध पब्लिक स्कूलों (Public Schools) में 'स्व-शासन' की पद्धति प्रचलित है।

प्रकृतिवाद का मूल्यांकन
Estimate of Naturalism

प्रकृतिवाद का सही मूल्याकन करने के लिये उसके गुणो और दोषो पर विचार कर लेना आवश्यक है। इन पर हम नीचे प्रकाश डाल रहे हैं :—

(अ) गुण · Merits

१. प्रकृतिवाद ने शिक्षा और ज्ञान की सभी शाखाओ पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है।
२. आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान और समाजशास्त्र—प्रकृतिवादी हैं।
३ प्रकृतिवाद ने इस सिद्धान्त को जन्म दिया है कि मनोविज्ञान की प्रगति पूर्ण रूप से निरीक्षणात्मक (Observational) और वस्तु-परक (Objective) विधियो पर निर्भर है।
४. व्यवहारवाद का जन्म प्रकृतिवाद से माना जाता है।
५. समाज और समाजशास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन का जन्म प्रकृतिवाद से हुआ है।
६. शिक्षा के जैवकीय (Biological) आधार—प्रजननशास्त्र (Eugenics) और मानसिक परीक्षण (Mental Testing)—प्रकृतिवादी हैं।
७. प्रकृतिवाद ने शिक्षा को वैज्ञानिक और जैवकीय दृष्टिकोण दिये हैं।

(ब) दोष : Demerits

१. प्रकृतिवादी शिक्षा का उद्देश्य सतोषजनक नही है।
२. प्रकृतिवाद बालक के केवल वर्तमान जीवन को महत्त्व देता है, और उसके भावी जीवन से कोई सरोकार नही रखता है।
३. प्रकृतिवाद तात्कालिक उपयोगिता पर बल देता हैं।
४. प्रकृतिवाद आध्यात्मिक गुणो की अवहेलना करता है, जिनके बिना मनुष्य पशु के समान होता है।
५. प्रकृतिवाद ने बालक को पाठ्य-क्रम का आधार बनाकर पाठ्य-क्रम के महत्त्व को कम कर दिया है।
६. प्रकृतिवाद शिक्षक को गौण स्थान देकर उसकी उपेक्षा करता है।
७. 'प्राकृतिक परिणामों द्वारा अनुशासन का सिद्धान्त' बिल्कुल उचित नहीं है।

निष्कर्ष

उपरोक्त गुण-दोषों के विवेचन से पता लगता है कि प्रकृतिवाद में अनेकों कमियाँ हैं। पर इन कमियो के होते हुए भी प्रकृतिवाद ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं। इसने शिक्षकों और शिक्षाविदो को अनेका नये दृष्टिकोण दिये

हैं, जिनसे उनको अपने कार्य मे बहुत सहायता और प्रोत्साहन मिला है। पाल मुनरो ने ठीक ही लिखा है—"प्रकृतिवाद ने शिक्षा के मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय और वैज्ञानिक धारणा के स्पष्ट निर्माण मे प्रत्यक्ष प्रेरणा दी है।"

"Naturalism has given direct impetus to the clear formation of the psychological, sociological and scientific conception of education."—*Paul Monroe*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Explain what you understand by Naturalism and show how it has influenced the theory of education.
2. What is "Naturalism" in education ? What has been its contribution to educational thought ?
3. Describe the kind of education which Rousseau suggets for the different stages of Emile's life. How far are his suggestions practicable ?
4. "The outcome of all Rousseau's teaching seems that we should in every way develop the child's animal or physical life, retard his intellectual life and ignore his life as a spiritual and moral being." Is this a correct estimate of Rousseau's educational principles ?
5. Briefly describe the main forms of Naturalism.
6. Give an account of some broad features of Naturalistic education and bring out the views of its exponents on aims; methods of teaching, curriculum, teacher and discipline.
7. "It is in educationl ideals, not in method, that Naturalism fails to satisfy." Do you agree with this statement ? If so, give reasons in support of your answer.

२५

शिक्षा में प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद

PRAGMATISM IN EDUCATION

"प्रयोजनवाद सत्य का मापदण्ड है। मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि वह सिद्धान्त है, जो समस्त विचार-प्रक्रिया के सत्य की जाँच उसके व्यावहारि परिणामों से करता है। यदि व्यावहारिक परिणाम संतोषजनक हैं, तो वि प्रक्रिया को सत्य कहा जा सकता है।"

"Pragmatism is a criterion of truth Speeking broadly, may say that it is the theory that the test of the truth of thinking is to be found in its practical consequences. If the prac cal consequences are satisfactory, the thinking is said to be true."

—*E. S. Brightma*

प्रयोजनवाद का अर्थ और परिभाषा

Meaning & Definition of Pragmatism

(अ) 'Pragmatism' शब्द की उत्पत्ति : Derivation of the word, 'Pragma tism'

'Pragmatism' शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द 'Pragma' से हुई है, जिसक अर्थ है 'a thing done, business, effective action,' 'किया गया काम, व्यवसाय प्रभावपूर्ण कार्य'। कुछ विद्वानों का मत है कि इस शब्द की उत्पत्ति एक दूसरे यूनानी शब्द 'Pramitikos' से हुई है, जिसका अर्थ है—'Practicable' 'व्यावहारिक'। इस दृष्टिकोण से 'Pragmatism' का अर्थ माना जाता है—'Practicability' 'व्यावहारिकता'।

(ब) प्रयोजनवाद का अर्थ : Meaning of Pragmatism

जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं, 'Pragmatism' का शाब्दिक अर्थ है—'व्यावहारिकता'। मोटे तौर पर हम कह सकते हैं कि प्रयोजनवाद इस सिद्धान्त को

प्रतिपादित करता है—सब मूल्यों, विचारों और निर्णयों का सत्य उनके व्यावहारिक परिणामों में पाया जाता है। यदि उनके परिणाम संतोषजनक हैं—तो वे सत्य हैं, अन्यथा नहीं।

(स) प्रयोजनवाद की परिभाषा : Definition of Pragmatism

हम प्रयोजनवाद के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषायें नीचे दे रहे हैं —

१ विलियम जेम्स—"प्रयोजनवाद मस्तिष्क का स्वभाव और दृष्टिकोण है। यह सत्य और विचारों की प्रकृति का सिद्धान्त है। यह वास्तविकता का भी सिद्धान्त है।"

"Pragmatism is a temper of mind, an attitude; it is also a theory of the nature of ideas and truth; and finally it is a theory about reality."—*William James.*

२. प्रेट—"प्रयोजनवाद हमें अर्थ का सिद्धान्त, सत्य का सिद्धान्त, ज्ञान का सिद्धान्त, और वास्तविकता का सिद्धान्त देता है।"

"Pragmatism offers us a theory of meaning, a theory of truth, a theory of knowledge, and a theory of reality."

—*James B Pratt.*

३. हैंडरसन—"प्रयोजनवाद के अनुसार यदि कोई बात अनुभव में कार्य करती है, तो वह उसको सत्य बनाती है; अर्थात् उसकी कार्य-प्रणाली उसे सत्य बनाती है। किसी भी सिद्धान्त की सत्यता उसकी कुशलता से जानी जाती है। सत्य का निर्माण मनुष्य करता है। किसी बात को अनन्त सत्य नहीं कहा जा सकता है। सत्य परिणामों के अनुसार बदलता रहता है। केवल वही बात सत्य है, जो विशेष परिस्थितियों में सत्य सिद्ध होती है। परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं, इसलिए सत्य भी बदलता रहता है। जो बात आज सत्य है, वह कल असत्य हो सकती है।"

"Pragmatists say that if a thing works in experience, that makes *it true—that its working makes it true* The truth of a proposition is measured by its efficiency, by whether it works, by what it can do to guide human action towards achieving human purposes. Truth is man-made, say the Pragmatists. There is no absolute truth. *Truth changes* and *is purely* a matter of consequences; that is true which works in any particular set up of

Circumstances change, to truth changes; wha
circumstances nay not be true tomorrow."—*Stella V. Henderson.*
is true today n दर्शन के रूप में प्रयोजनवाद का विकास

Growth of Pragmatism as a Philosophy

द आधुनिक दर्शन है, पर इसका जन्म अति प्राचीन काल मे हुआ
प्रयोजनवायूनान के सोफिस्ट दार्शनिको ने बताया—"मनुष्य सब बातों क
था। सबसे पहले नुष्य ही समस्त सत्यो का निर्माण करता है।"
मापदण्ड है और म the measure of all things and makes all the truth
"Man is hist
there is."—*Sop* की झलक हमे लॉक के इस कथन मे भी मिलती है—"हमें सब
प्रयोजनवाद करना उतना आवश्यक नहीं है, जितना कि अपने जीवन से
बातों का ज्ञान प्राप्त बातों का।"
सम्बन्ध रखने वाली so necessary for us to acquire a knowledge of all
"It is nongs concerned with our life "—*Locke*
things as of thu को आधुनिक दर्शन के रूप मे चार्ल्स पियर्स (Charles Peirce
प्रयोजनवाद अमेरिका मे जन्म दिया। उसके कार्य को विलियम जेम्स
1839-1914) ने ने आगे बढ़ाया। प्रयोजनवाद का सबसे महान् प्रतिपादक जॉन
(William James) vey) को माना जाता है। प्राचीन सोफिस्टो के समान आधुनिक
ड्यूवी (John Dev) का कहना है कि मनुष्य ही सत्य का निर्माण करता है।
प्रयोजनवादियो का

प्रयोजनवाद के रूप

Forms of Pragmatism

कथन है—"प्रयोजनवाद सत्य का मापदण्ड है। मोटे तौर पर
ब्राइटमैन का समस्त विचार-प्रक्रिया के सत्य की जांच उसके व्यावहारिक
यह वह सिद्धान्त है जो यदि व्यावहारिक परिणाम सतोषजनक हैं, तो विचार-प्रक्रिया
परिणामो से करता है गा है।"
को सत्य कहा जा सकता is a criterion of truth. Speaking broadly, we
"Pragmatism the theory that the test of the truth of all
may say that it found in its practical consequences. If the practi-
thinking is to be are satisfactory, the thinking is said to be true.'
cal consequences a —*E. S Brightman.*

से यह प्रश्न उपस्थित होता है—"व्यावहारिक और सन्तोष-
उपरोक्त कथन पर्ये डकैत को व्यावहारिक जान पडता है, वह पुजारी को
जनक क्या है?" जो व

अव्यावहारिक मालूम होता है। जो बात सर्जन के लिये सन्तोषजनक है, वह रोगी के लिए असन्तोषजनक हो सकती है। प्रयोजनवादियों में 'व्यावहारिक' और 'सन्तोषजनक' शब्दों के अर्थ के बारे मे चार मुख्य धारणायें हैं। इन्हीं को प्रयोजनवाद के रूप कहा जाता है। ये रूप निम्नलिखित चार हैं—

१. मानवतावादी प्रयोजनवाद : Humanistic Pragmatism

यह प्रयोजनवाद सबसे अधिक लोकप्रिय है। इसके अनुसार मानव-प्रकृति को पूर्णरूप से सन्तुष्ट करने वाली बात सत्य है। 'Humanism' नाम हमें अंग्रेज दार्शनिक शिलर (Schiller) से मिला है। जेम्स (James) को प्रयोजनवाद मानवतावादी कहा जाता है। मानवतावादी का कहना है—"जो बात मेरे उद्देश्य को पूरा करती है, मेरी इच्छाओं को सन्तुष्ट करती है और मेरे जीवन का विकास करती है, वही सत्य है।"

"Whatever fulfils my purpose, satisfies my desires, develops my life, is true "—*Humanist*

२. प्रयोगवादी प्रयोजनवाद Experimental Pragmatism

इस वाद का आधार विज्ञान की 'प्रयोगशाला-विधियाँ' (Laboratory Methods) हैं। इस वाद का कथन है—"जिस बात को प्रयोग से सत्य सिद्ध किया जा सकता है, वही सत्य है या जो बात ठीक कार्य करती है, वही सत्य है।"

"Whatever can be experimentally verified is true, or, what works is ture."—*Experimental Pragmatism*

सत्य की यह धारणा विभिन्न विज्ञानों द्वारा प्रयोग में लाई जाती है। यदि हम 'प्रयोग' (Experiment) शब्द का विस्तृत अर्थ मे प्रयोग करें, तो यह विधि प्रत्येक क्षेत्र मे लागू की जा सकती है।

३. नामरूपवादी प्रयोजनवाद : Nominalistic Pragmatism

यह वाद प्रयोगात्मक प्रयोजनवाद का उप-रूप (Sub-form) है। जब हम कोई प्रयोग (Exprıment) करते हैं; तब हम उसके परिणामों को देखते हैं। प्रयोगकर्त्ता का दृष्टिकोण आशावादी और खोजपूर्ण होता है। अब अनेकों प्रयोजनवादियों का कहना है कि प्रत्येक विचार कुछ सम्भव परिणामों की ओर संकेत करता है। यदि मैं कहता हूँ—"बाग में लाल गुलाब", तो इससे मेरा अभिप्राय यह है कि यदि मैं बाग में जाऊँ, तो मैं वहाँ लाल गुलाब देखूँगा। नामरूपवादी प्रयोजनवादियों का कहना है कि ये परिणाम सदैव वास्तविक होते हैं—सामान्य, सार्वभौमिक या अवास्तविक नहीं।

४. जीवविज्ञानवादी प्रयोजनवाद : Biological Pragmatism

आधुनिक समय मे इस वाद का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। इसका प्रमुख प्रतिनिधि अमरीका का प्रोफ़ेसर जॉन ड्यूवी था। उसके अनुसार—"इस प्रयोजनवाद

की जाँच मानव को अपने वातावरण से अनुकूलन करने की विचार-प्रक्रिया में पाई जाती है।"

"By this type the Pragmatist test is found in the functional thought, in adapting the human organism to its environment."

—John Dewey

जब किसी स्थिति में कठिनाइयाँ या समस्याएँ उपस्थित होती हैं, तब विचार ही उस स्थिति से अनुकूलन करने का साधन होता है। ब्राइटमैन (Brightman) ने बड़े सिद्ध उदाहरण से इस बात को स्पष्ट किया है। हम अपने नित्य प्रति के कार्यों में अपना दिन व्यतीत करते हैं। इन कार्यों के लिये विचार की कोई आवश्यकता नहीं होती है। पर मान लीजिए कि हमें सुबह की डाक से एक पत्र मिलता है, जो किसी बात पर हमारा निर्णय चाहता है। उस समय हमें यह निश्चय करना पड़ता है कि हम क्या करना है। इसके साथ ही हमारी विचार-प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है। इस विचार का सत्य उस बात से सिद्ध होगा, जो हम करेंगे।

क्योंकि यह प्रयोजनवाद विचार को अनुकूलन (Adjustment) का साधन मानता है, इसलिये इसको प्रायः 'साधनवाद' (Instrumentalism) के नाम से पुकारा जाता है। क्योंकि इस वाद को ड्यूवी (Dewey) ने शिकागो विश्वविद्यालय में प्रतिपादित किया था, इसलिए इसको 'शिकागो सम्प्रदाय' (Chicago School) के नाम से भी पुकारा जाता है।

प्रयोजनवाद के मुख्य सिद्धान्त या आवश्यक तत्त्व

Main Principles or Essential Features of Prgamatism

प्रयोजनवाद के मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

१. जो सिद्धान्त कार्य करते हैं, वे सत्य हैं।
२. मानव-प्रयासों का अत्यधिक महत्त्व है।
३ अनुभव नाना प्रकार के हैं और बदलते रहते हैं।
४. जो बात मेरे उद्देश्यों को पूरा करती है, मेरी इच्छाओं को सन्तुष्ट करती है, और मेरे जीवन का विकास करती है—वही सत्य है।
५. अन्तिम, अपरिवर्तित (Final, unchanging) और सदैव ठीक उतरने वाली पद्धति की स्थापना साधन के रूप में उसका महत्त्व नष्ट कर देती।
६. प्रयोजनवाद प्रकृतिवादी सिद्धान्तों और आदर्शवादी निष्कर्षों का योग है।
७. दर्शन का मुख्य कार्य अनुभव—विशेष रूप से मानव के समस्त अनुभव की सम्भावनाओं को संगठित करना है।
८. किसी भी समस्या को उस समय तक हल करने का प्रयत्न मत कीजिये जब तक आपको यह न मालूम हो कि उसका अर्थ क्या है, अन्यथा आप शब्दों के जाल में फँस जायेंगे।

९. विचारो की सभी पद्धतियो का सम्बन्ध उस स्थिति और उन व्यक्तियो से है जिसमे वे उत्पन्न होती हैं और जिनको वे सन्तुष्ट करती हैं। उनमे परिणामो द्वारा सदैव परिवर्तन होता रहता है।

१०. जीवविज्ञान ने हमको यह सिखाया है—मनुष्य मनो-शारीरिक (Psycho-physical) प्राणी है और विचार उस स्थिति से अनुकूलन करने का साधन है, जिसमे कठिनाइयाँ और समस्यायें उपस्थित होती हैं।

११. किसी भी सिद्धान्त की सच्ची कसौटी—उसकी उपयोगिता है।

१२. सत्य मानव-निर्मित होता है, और जीवन के मूल्य तथा सत्य बदलते रहते हैं।

१३. मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसलिये उसे सामाजिक कुशलता का गुण प्राप्त करना चाहिये।

१४. जीवन और उससे सम्बन्धित विभिन्न क्रियायें वास्तविक हैं।

प्रयोजनवाद और शिक्षा
Pragmatism & Education

शिक्षा के क्षेत्र मे प्रयोजनवाद परम्परागत और अनुदार (Traditional & Conservative) ज्ञान के विरुद्ध क्रान्ति है। यह शिक्षा-शास्त्रियों को इस निर्णय पर पहुँचने के लिए बाध्य करता है कि वे परम्परावादियो और अनुदारवादियो के साथ रहें या प्रयोजनवादियो के। कारण यह है कि इसने शिक्षा की कुछ महत्त्वपूर्ण विशेषतायें बताई हैं। हम इन पर नीचे प्रकाश डाल रहे हैं :—

१. शिक्षा का सामाजिक कार्य : Social Function of Education

प्रयोजनवादियो का कहना है कि शिक्षा की प्रमुख विशेषता—उसका सामाजिक कार्य है। वे कहते हैं कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। इसलिए उसका विकास सामाजिक सन्दर्भ में होना चाहिये। उसे सफल लोकतान्त्रिक जीवन व्यतीत करना सीखना चाहिये। दूसरे शब्दो मे, उसे सामाजिक कुशलता का गुण प्राप्त करना चाहिये।

इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा का सगठन किया जाना चाहिये। इस सम्बन्ध मे ब्रूबेकर ने लिखा है—"प्रयोजनवादी सामाजिक मूल्य को बहुत अधिक महत्त्व देता है। समाज सम्मिलित रूप से प्राप्त अनुभव का ढंग है। सामाजिक कार्यों मे भाग लेना—सबसे महत्त्वपूर्ण ढङ्गों मे से एक है, जिसके द्वारा शिक्षा प्राप्त होती है।"

"The Pragmatist rates the social value very highly. Society is a mode of [illegible]ed experience. Participation in society is one of the [illegible]s in which education takes place."—*Brubacher.*

२. बालक का वास्तविक जीवन-अनुभव : Child's Real Life-Experience

शिक्षा को बालक को वास्तविक जीवन-अनुभव प्रदान करना चाहिए। प्रयोजनवादी 'ज्ञान के लिए ज्ञान' प्राप्त करने को कोई महत्व नहीं देते हैं। उनके अनुसार सच्चा ज्ञान वही है, जो कुछ करके प्राप्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में, 'करके सीखना' (Learning by Doing) ही वास्तविक शिक्षा है।

अतः प्रयोजनवादियों का मत है कि बालक को अपनी स्वयं की क्रियाओं और अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इस प्रकार प्राप्त किया गया ज्ञान उसका स्थायी अंग बन जायगा और उसे वर्तमान तथा भावी जीवन में सहायता देगा। वह इस प्रकार का ज्ञान तभी प्राप्त कर सकता है, जब उसके सामने जीवन की ठोस परिस्थितियों को रखा जाय। साथ ही उसे ऐसा वातावरण दिया जाय कि वह नये मूल्यों का निर्माण कर सके।

३. बालक का महत्व : Importances of the Child

प्रयोजनवादी शिक्षा में बालक को बहुत महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। उनके अनुसार—शिक्षा बालक के लिए है, न कि बालक शिक्षा के लिए। वे बालक को बालक ही मानते हैं। अतः उनका कहना है कि उसे दी जाने वाली शिक्षा—उसकी शक्तियों, रुचियों, क्षमता और आवेगों के अनुसार होनी चाहिए।

४. शिक्षा के पहलू : Aspect of Education

प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा के शारीरिक, मानसिक, सौन्दर्यात्मक, नैतिक और धार्मिक—पहलू होने चाहिए। वे इनको क्रिया की महत्वपूर्ण विधियाँ मानते हैं, जिनके द्वारा मूल्यों का निर्माण किया जा सकता है। इन क्रियाओं का सम्बन्ध मानव-आवश्यकताओं से होना चाहिए।

५. शिक्षा की लोकतान्त्रिक प्रक्रिया : Democratic Process of Education

प्रयोजवादियों के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया लोकतन्त्रीय है। शिक्षा और लोकतन्त्र में बहुत-सी बातें एक-सी हैं, क्योंकि दोनों व्यक्ति और उसके गुणों पर बल देते हैं।

प्रयोजनवाद और शिक्षा के उद्देश्य

Pragmatism & Aims of Education

प्रयोजनवादी शिक्षा का कोई उद्देश्य निर्धारित नहीं करते हैं। उनका कहना है कि शिक्षा के उद्देश्य स्थायी रूप से नहीं बनाये जा सकते हैं। उनमें समय और मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। इस बारे में ड्यूवी ने लिखा है—"शिक्षा के उद्देश्य नहीं होते हैं। उद्देश्य केवल व्यक्तियों के होते हैं; और व्यक्तियों के उद्देश्य बहुत अधिक भिन्न होते हैं। ये विभिन्न बालकों के

लिए विभिन्न होते हैं। जैसे-जैसे बालक बड़े होते जाते हैं, वैसे-वैसे उद्देश्य बदलते जाते हैं। निर्धारित किए हुए उद्देश्य भलाई की अपेक्षा बुराई ही करते हैं। उनको केवल आने वाले परिणामों को जानने, स्थितियों तो देख-भाल करने और बालकों को शक्तियों को मुक्त तथा निर्देशित करने के साधनों को चुनने के लिए सुझावों के रूप में स्वीकार करना चाहिए।"

"Education, as such, has no aims, "education" is an abstract idea Only persons have aims. And the aims of persons are indefinitely veried, differing with different children, changing as children and their teachers grow. Stated aims, such as we are about to make, will do more harm than good usless they are taken only as suggestions as to how to look ahead for consequences, to observe conditions, and to choose means in the liberating and directing of children's energies"—*John Dewey*

एक आधुनिक लेखक ने ठीक ही कहा है :—"इस बालक को स्कॉट के उपन्यास पढ़ाना, इस बालिका को सीना सीखाना, इस कक्षा को औषधि शास्त्र पढ़ाना—ये लाखों उद्देश्यों के नमूने हैं, जो शिक्षा के वास्तविक कार्य में हमारे सामने आते हैं।"

"To lead this boy to read Scott's novels, to teach this girl to sew ; to prepare this class to study medicine,—these are samples of the millions of aims we have actually before us in the concrete work of education."—*A Modern Writer*

उपरोक्त बातों को ध्यान मे रखकर ड्यूवी (Dewey) ने शिक्षा के उत्तम उद्देश्यों की तीन विशेषतायें बताई हैं—

१. ये छात्रों की क्रियाओं और आवश्यकताओं पर आधारित हैं।
२. ये छात्रों का सहयोग प्राप्त करते हैं।
३. ये विशिष्ट और तात्कालिक (Specific and immediate) होते हैं, सामान्य और अन्तिम (General and ultimate) नहीं।

ऊपर लिखी बातों को ध्यान मे रखकर प्रयोजनवाद ने शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित करने का प्रयास किया है :—

१. बालक : अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माता : Child a Creator of His Values & Ideals

प्रयोजनवादी कहते हैं कि बालक को स्वयं अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माता होना चाहिए। इस प्रकार प्रयोजनवादी शिक्षा का यदि कोई उद्देश्य हो

सकता है, तो वह यह है—बालक को अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माण करने के योग्य बनाना। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयोजनवादी उन परिस्थितियों का निर्माण करते हैं, जो बालक को अपने मूल्यों और आदर्शों का निर्माण करने में सहायता देती हैं।

२. गतिशील और लचीले मस्तिष्क का विकास
Cultivation of a Dynamic & Adaptable Mind

प्रयोजनवादी बालक की आवश्यकताओं, इच्छाओं, अभिरुचियों और योग्यताओं को महत्त्व देते हैं। अतः इनको ठीक मार्ग पर ले जाना शिक्षा कार्य है। इस बारे में रॉस ने लिखा है— 'बालक के वातावरण में उसकी इच्छाओं को पूर्ण करना शिक्षा है, न कि उसके आवेगों, रुचियों और योग्यताओं को मूल्यों की किसी निश्चित योजना की प्राप्ति की ओर ले जाना।"

"Education consists in the direction of impulses, interests, and abilities not towards the realization of a scheme of values, but rather towards the satisfaction of the felt wants of the child in his environment."—*Ross*

प्रयोजनवादियों की इस धारणा के अनुसार जैसा कि रॉस ने लिखा है, शिक्षा का उद्देश्य यह है —"गतिशील और लचीले मस्तिष्क का विकास, जो सब परिस्थितियों में साधनपूर्ण और साहसपूर्ण हो और जिसमें अज्ञात भविष्य के लिये मूल्यों का निर्माण करने की शक्ति हो।"

"The cultivation of a dynamic adaptable mind which will be resourceful and enterprising in all situations, one which will have power to create values in an unknow future."—*Ross*.

३. छात्र का विकास : Pupil's Growth

ब्रूबेकर (*Brubacher*) ने लिखा है कि प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है—छात्र का विकास (**Pupil's Growth**)। इस उद्देश्य की दो कारणों से अति कटु आलोचना की गई है —(१) इस विकास का न तो कोई अन्त है और न कोई लक्ष्य—सिवा इसके कि विकास का और अधिक विकास हो; (२) यह विकास गलत दिशा में भी हो सकता है। अतः प्रयोजनवादियों ने विकास की दिशा न बताकर बहुत बड़ी भूल की है।

४. गतिशील निर्देशन : Dynamic Direction

प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा का एक उद्देश्य—छात्रों का गतिशील निर्देशन करना है। पर केवल इतना कह देना ही काफ़ी नहीं है। गतिशील निर्देशन की व्याख्या की जानी आवश्यक है। इस व्याख्या के अभाव में अमरीकी शिक्षा में कुछ

दोष आ गए हैं। बॉयड बोड ने लिखा है— 'आज की अमरीकी शिक्षा का मुख्य दोष यह है कि उसमें कार्य-क्रम या निर्देशन के ज्ञान का अभाव है। इसका न तो कोई उपयुक्त कार्य क्षेत्र है और न कोई सामाजिक सिद्धान्त।"

"The chief defect in American education today is the lack of a programme, or sense of direction It has no adequate misson or social gospel"—*Boyd Bode*

५. सामाजिक कुशलता : Social Efficiency

प्रयोजनवादी शिक्षा के सामाजिक कार्यों पर बल देते हैं। इस दृष्टिकोण से शिक्षा का उद्देश्य है—सामाजिक कुशलता। दूसरे शब्दों में, शिक्षा का उद्देश्य है—प्रत्येक व्यक्ति की शक्तियों और क्षमताओं को इस प्रकार विकसित करना कि वह सामाजिक रूप से कुशल व्यक्ति हो जाय। ऐसा व्यक्ति वही है जो अपनी जीविका की समस्या को हल करे, दूसरों की इच्छाओं और आवश्यकताओं का आदर करे तथा जिसमें सामाजिक सजगता (Social Awareness) हो।

प्रयोजनवाद और शिक्षण-विधियाँ
Pragmatism & Methods of Teaching

प्रयोजनवाद हमें शिक्षण की विधियों में बहुत सहायता देता है, और इनकी उपयोगिता को सभी लोग स्वीकार करते हैं। यह परम्परागत शिक्षण-विधियों को अस्वीकार करता है। इस सम्बन्ध में रॉस ने लिखा है—"यह हमें चेतावनी देता है कि अब हम प्राचीन और घिसी-पिटी विचार-प्रक्रियाओं को अपने शैक्षिक व्यवहार में प्रमुख स्थान न दें और नई दिशाओं में कदम बढ़ाते हुए अपनी विधियों में नए प्रयोग करें।"

"It warns against allowing ancient and outworn modes of thought any longer to dominate our educational practice, and bids us be enterprising and experimental in our methods"—*Ross.*

उपरोक्त कथन के आधार पर हम प्रयोजनवादियों द्वारा प्रतिपादित शिक्षण-विधियों के निम्नांकित तीन सिद्धान्तों का उल्लेख कर सकते हैं। यथा—

१. सीखने की उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया का सिद्धान्त : Principle of Purposive Process of Learning

प्रयोजनवाद इस विचार के विरुद्ध आवाज उठाता है कि बालक आदर के साथ अपने गुरु के चरणों में बैठे और जो कुछ वह पढ़ाना चाहता है, उसे पढ़े। प्रयोजनवाद यह नहीं चाहता है कि बालक दूसरों के द्वारा दिये गये ज्ञान को प्राप्त करे। इसके विपरीत, यह चाहता है कि बालक स्वयं ही ज्ञान और योग्यता प्राप्त

को, जिससे कि वह वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का सफलतापूर्वक सामना कर सके।

अब रॉस (Ross) के अनुसार प्रयोजनवादी शिक्षण-विधि का पहला सिद्धान्त यह हो सकता है "सीखने की प्रक्रिया उद्देश्यपूर्ण होनी चाहिए"—("Learning process should be purposive")। इसका अर्थ यह है कि बालक अपनी इच्छाओं, रुचियों और रुझानों के अनुसार किसी उद्देश्य या लक्ष्य को प्राप्त करे।

२. करके या अनुभव द्वारा सीखने का सिद्धान्त
Principle of Learning by Doing or Experience

प्रयोजनवाद विचार के बजाय कार्य पर बल देता है। यह सिद्धान्त और व्यवहार (Theory and Practice) को एक-दूसरे से अलग नहीं मानता है। इसका कहना है कि शिक्षा का अर्थ यह नहीं है कि बालक को वे सब बातें पढ़ा दी जायें, जो उनको जाननी चाहिए। इसका अर्थ यह है कि उन्हें प्रयोग और रचनात्मक क्रिया द्वारा विभिन्न बातों को स्वयं सीखने के लिए प्रोत्साहित किया जाय। अतः रॉस (Ross) के अनुसार प्रयोजनवादी शिक्षण-विधि का दूसरा सिद्धान्त यह हो सकता है—"करके सीखना" या "अनुभव द्वारा सीखना" ("Learning by Doing" or "*Learning* through Experience.")।

प्रत्येक बालक की शिक्षा का सर्वोत्तम भाग यह है, जो बालक स्वयं कार्य करके प्राप्त करता है। इस सिद्धान्त की सत्यता को चुनौती नहीं दी जा सकती है। पर यह आवश्यक है कि इसका अर्थ सावधानी से और ठीक-ठीक बताया जाय। 'करके सीखना'—इसका अर्थ केवल यह नहीं है कि व्यावहारिक कार्य (*Practical Work*) को महत्त्व दिया जाय और इसको सब विषयों की शिक्षा का आधार बनाया जाय। इसका अर्थ यह भी है कि बालक को उन परिस्थितियों में रखा जाय, जिनका वह सामना करना चाहता है। इसके साथ ही उसे वे साधन दिए जायें, जिनकी सहायता से वह उनका सफलतापूर्वक सामना कर सके।

४. सीखने की प्रक्रिया के एकीकरण का सिद्धान्त : Principle of Integration of Learning Process

प्रयोजनवादियों के अनुसार सीखना अखण्ड होना चाहिए। उनका कहना है कि यद्यपि ज्ञान के अनेकों पहलू हैं, फिर भी उसमें एकता है। इसलिए ज्ञान को खण्डों में नहीं बाँटा जाना चाहिए। इसे बालक को विभिन्न सूचनाओं के रूप में खण्डों या टुकड़ों में नहीं दिया जाना चाहिए। अतः प्रयोजनवादी शिक्षण-विधि का तीसरा सिद्धान्त यह हो सकता है—"सीखने की प्रक्रिया का एकीकरण" (Integration of the Learning Process.)। इसका अर्थ यह है कि बालक को जो भी विषय पढ़ाये जायें, उनका शिक्षण-विधि द्वारा एकीकरण और समन्वय (Integration and Correlation) किया जाय।

सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप Practical Form of the Principles

हमने ऊपर जिन सिद्धान्तो का वर्णन किया है उनको किलपैट्रिक (Kilpatrick) द्वारा प्रतिपादित 'योजना-विधि' (Project Method) मे स्थान दिया गया है। यह विधि प्राचीन विधि से बिल्कुल भिन्न है। यह प्राचीन विधि के समान निष्क्रिय (Passive) नही है। इसमे कार्य बालक का है, न कि शिक्षक का। शिक्षक केवल कुछ समस्याओं को बालको के सामने रखता है और उनको हल करने के सुझाव देता है। फिर वह उनको स्वय प्रयोग और अनुभव करने के लिए स्वतन्त्र छोड़ देता है। बालक समस्या के समाधान मे सक्रिय भाग लेते हैं, एक-दूसरे का सहयोग प्राप्त करते हैं और अन्त मे कुछ निश्चित परिणामों पर पहुँचते हैं।

प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम
Pragmatism & Curriculum

१. उपयोगिता का सिद्धान्त : Principle of Utility

प्रयोजनवादी मनुष्य के उद्देश्यों और इच्छाओं की पूर्ति पर बल देते है। इसलिए उनका कहना है कि पाठ्य-क्रम मे ऐसे विषय होने चाहिए, जो बालक को उसके वर्तमान और भावी जीवन के लिए तैयार करें। अत. उनके अनुसार पाठ्य-क्रम मे भाषा, स्वास्थ्य-विज्ञान, इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान और शारीरिक प्रशिक्षण (Physical Training) को स्थान दिया जाना चाहिये। बालिकाओ के लिए गृह-विज्ञान होना चाहिए। इसके स्थान पर बालको के लिए कृषि-विज्ञान होना चाहिए।

'उपयोगिता का सिद्धान्त' भविष्य के लिए किसी व्यवसाय का प्रशिक्षण आवश्यक मानता है। यह इस बात को भी मानता है कि अध्ययन के विषय इस दृष्टिकोण से चुने जायें कि वे जीवन की वास्तविक समस्याओं को हल करने मे सहायता दें। यह सिद्धान्त ज्ञान के मुख्य उद्देश्य—मानव प्रगति—की अवहेलना नहीं करता है।

२. बालक की रुचि का सिद्धान्त Principle of Child's Interest

प्रयोजनवादियो के अनुसार बालक की रुचियाँ—उसके विकास के विभिन्न स्तरो पर विभिन्न होती है। अत. पाठ्यक्रम की रचना करते समय इस बात का ध्यान रखा जाय। उदाहरणार्थ—प्रारम्भिक विद्यालय के छात्रो को खोज, रचना, कला-प्रदर्शन, और बातचीत म रुचि होती है। इसलिए प्रारम्भिक विद्यालय के पाठ्य-क्रम मे अग्रलिखित विषय रखे जाने चाहिये—पढ़ना, लिखना, गिनना, हाथ का काम, ड्राइङ्ग और प्रकृति-अध्ययन।

३. बालक के अनुभव का सिद्धात Principle of Child's Experience

प्रयोजनवादियो का कहना है कि पाठ्य-क्रम का बालक के अनुभवों, भावी व्यवसायो और क्रियाओ के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिये। इसका कारण यह है

जैसे ही सम्बन्ध स्थायी हो जाता है, बालक अपनी इच्छा के द्वारा सीखने के लिये [illegible]चित होता है। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले सामान्य विषयों के साथ-साथ पाठ्य-[illegible]म में स्वतन्त्र, अर्थपूर्ण और सामाजिक क्रियाओं का भी स्थान होना चाहिए।

ड्यूवी के अनुसार—"विद्यालय समुदाय का अंग है। इसलिए यदि ये क्रियायें [illegible]मुदाय की क्रियाओं का रूप ग्रहण कर लेंगी, तो ये बालक में नैतिक गुणों और [illegible]हसकर्मी तथा स्वतन्त्रता के दृष्टिकोणों का विकास करेंगी। साथ ही ये उसे [illegible]रिकता का प्रशिक्षण देंगी और उसके आत्म-अनुशासन को ऊँचा उठायेंगी।"

"If these activities take the character of the activities of the [illegible]ommunity of which the school is an organ, they will develop [illegible]oral virtues result in attitudes of initiative and independence and [illegible]ill give training in citizenship and promote self-discipline."

—Dewey.

एकीकरण का सिद्धान्त *Principle of Integration*

प्रयोजनवादी बुद्धि की एकता और ज्ञान की एकता में विश्वास करते हैं। [illegible]त उनका कहना है कि वास्तविक ज्ञान अखण्ड होना चाहिए। यही कारण है कि वे [illegible]ठ्यक्रम को विभिन्न विषयों में बाँटने के पक्ष में नहीं हैं। हमारे इस कथन की पुष्टि [illegible]स [illegible] इन [illegible] से हो जाती है—"प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम में विषयों के परम्परा-[illegible] विभाजन की निन्दा करते हैं। एक विषय को दूसरे विषय से कठोरतापूर्वक अलग [illegible]रने की भावना का अन्त किया जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि मानव-[illegible]यायें महत्त्वपूर्ण हैं, न कि विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषय और उनके द्वारा [illegible]भने के लिये दी जाने वाली सामग्री। अलग अलग विषय पढ़ाने के बजाय छात्र को [illegible]ु सब ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिये, जिसका उस क्रिया [illegible] सम्बन्ध है जिसे वह कर रहा है।"

"Pragmatists condemn the traditional division of the curri-[illegible]ulum into subjects of instruction. Watertight compartments [illegible]etween one subject and another must be broken down, for it is [illegible]uman activities that are important, not school-subjects and the [illegible]atter they provide to be learnt. Instead of working at separate [illegible]ubjects, the pupil is encouraged to draw freely upon all knowledge [illegible]at is relevant to the activity on which he happens to be engaged."

—Ross.

[illegible]षताएँ

[illegible]

[illegible] (I[illegible], [illegible] dynamic & well-integrated) [illegible]

चाहते हैं। ब्रूवेकर (Brubacher) के शब्दों में, वे 'क्रिया-प्रधान पाठ्य-क्रम" Activity-Curriculum) चाहते हैं। उनका कहना है कि क्रियायें शिक्षा को जीवन-जैसा बनाने और जीवन को सत्य की प्राप्ति के योग्य बनाने के लिये आवश्यक हैं।

प्रयोजनवाद और शिक्षक

Pragmatism & Teacher

प्रयोजनवादी अपनी शिक्षा मे बालक और उसकी क्रियाओं, रुचियो, रुझानों आदि को प्रमुख स्थान देते हैं। पर इसके बावजूद भी वे शिक्षक के दायित्वों को कम नही करते है। उनकी शिक्षा-योजना मे अध्यापक का स्थान पथ-प्रदर्शक और सलाहकार का है। उसे 'सामाजिक वातावरण' (Social Environment) माना जाता है। उससे यह आशा की जाती है कि वह बच्चो के साथ सहानुभूतिपूर्ण और व्यक्तिगत सम्पर्क रखे, और ऐसे सम्पर्क से उनमे सामाजिक आदतो, सामाजिक रुचियो और सामाजिक दृष्टिकोणो का विकास करे। शिक्षक का महत्व दो बातो मे है :—

१. उसे अपने छात्रो को उचित समस्याओ वाली परिस्थितियों मे रखना पड़ता है।
२. उसे उनकी रुचियों को ओर इस प्रकार प्रेरित करना पड़ता है कि वे समस्याओ को कुशलता, बुद्धिमानी और सहयोग से हल कर सकें।

प्रयोजनवाद और अनुशासन

Pragmatism & Discipline

प्रयोजनवादी बाह्य अनुशासन, शिक्षक के श्रेष्ठ अधिकार और शारीरिक दण्ड की निन्दा करते हैं। दूसरे शब्दो मे, वे व्यक्तिगत अनुशासन के सभी रूपों को बुरा बताते हैं। उनका कहना है कि अनुशासन 'सामाजिक समझदारी' (Social understanding) पर आधारित होना चाहिए। उनके अनुसार विद्यालय को बालकों के आवेगो (Impulses) को सहयोगी क्रियाओं द्वारा उत्तेजित करना चाहिए। ऐसी दशा मे अनुशासन उचित होने के साथ-साथ सामाजिक भी होगा।

प्रयोजनवादी अनुशासन की स्थापना के लिये बालक की रुचियो और क्रियाओं पर बल देते हैं। उनका मत है कि ये क्रियायें सहयोगी और सामाजिक होनी चाहिए। इस प्रकार की क्रियायें आत्म-अनुशासन को जन्म देती हैं और इस प्रकार का अनुशासन नैतिक या [illegible] की ओर अग्रसर करता है। बी० डी० भाटिया का कथन [illegible] क्रियाओ द्वारा सामाजिक अनुशासन

[illegible] of social discipline through the [illegible]"—*B D. Bhatia.*

प्रयोजनवाद और विद्यालय
Pragmatism & School

प्रयोजनवादी शिक्षा को सामाजिक प्रक्रिया मानते हैं। उनका मत है कि शिक्षा ही समाज को नया रूप देती है। अतः वे शिक्षा-संस्था को सामाजिक संस्था मानते हैं। उनका कहना है कि विद्यालय समाज का छोटा रूप है। पर यह रूप सरल, शुद्ध और विभिन्न तत्वों के बीच सन्तुलन स्थापित करने वाला होना चाहिए। जब विद्यालय ऐसा होगा, तभी बालक को समाज में रहना, कार्य करना और आधुनिक सामाजिक जीवन की विषमताओं के बीच अपनी क्षमताओं (Capacities) का उपयोग करना सिखाया जा सकेगा। प्रयोजनवादी विद्यालय को सामुदायिक जीवन का केन्द्र भी बनाना चाहते हैं। ड्यूवी का कथन है —"विद्यालय को समाज का वास्तविक प्रतिनिधि होना चाहिए।"

"School should be the true representative of the society."
—*Dewey.*

प्रयोजनवाद का मूल्यांकन
Estimate of Pragmatism

प्रयोजनवाद का सही मूल्यांकन करने के लिये हमे इसके गुण-दोषों पर विचार करना आवश्यक है। यथा—

(अ) गुण : Merits

१ प्रयोजनवाद ने शिक्षा को जो योगदान दिया है, उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती है। इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण देन 'प्रोजेक्ट पद्धति' (Project Method) है।

२ इसने विचार की अपेक्षा क्रिया को प्रधानता दी है।

३ रस्क (Rusk) का मत है कि इसने विचार को व्यवहार के अधीन बनाया है।

४ इसने शिक्षा-दर्शन को कई नई बातें दी हैं, जैसे—नवीन शिक्षा (New Education), प्रगतिशील शिक्षा (Progressive Education) क्रिया-प्रधान पाठ्य-क्रम (Activity Curriculum), समन्वित इकाई (Integrated Unit), आदि।

५ यह बालकों को व्यावहारिक जीवन के लिये तैयार करता है।

६. यह सामाजिक और जनतांत्रिक शिक्षा है, क्योंकि यह स्वतंत्रता, समानता आदि गुणों का विकास करता है।

(ब) दोष : **Demerits**

१. प्रयोजनवाद आध्यात्मिक गुणो की अवहेलना करता है और केवल इसी लोक पर बल देता है।
२. यह केवल उपयोगिता और परिणामो के आधार पर सत्य का निर्धारण करता है।
३. यह पूर्व निश्चित आदर्शों और मान्यताओ को अस्वीकार करता है।
४. यह सत्य को परिवर्तनशील मानता है।
५. यह सांस्कृतिक आदर्शों की उपेक्षा करता है।
६. इसने शिक्षा का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं बताया है।

निष्कर्ष

प्रयोजनवाद ने शिक्षा को अनेकों नई बातें दी हैं, जिनके कारण शिक्षा के जगत मे क्रान्ति के युग का प्रारम्भ हुआ है और शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण मे परिवर्तन हो गया है। आज के ससार में प्रयोजनवाद शिक्षा का मुख्य दर्शन माना जाता है। यही कारण है कि शिक्षा की जो भी योजनायें बनाई जाती हैं, उनमे सबसे पहले प्रयोजनवाद का ही सहारा लिया जाता है। प्रयोजनवाद की प्रशसा करते हुए रस्क ने लिखा है :—"प्रयोजनवाद नवीन आदर्शवाद के विकास मे एक चरण मात्र है। यह नवीन आदर्शवाद ऐसा होगा जो सदैव जीवन की वास्तविकता का ध्यान रखेगा और व्यावहारिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का समन्वय करेगा। इसके साथ ही ऐसी संस्कृति का निर्माण करेगा, जो कुशलता का पुष्प होती है।"

"It is merely a stage in the development of a new Idealism that will do full justice to reality, reconcile the practical and the spiritual values, and result in a culture which is the flower of efficiency."—*Rusk.*

आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद का तुलनात्मक अध्ययन
Comparative Study of Idealism, Naturalism & Pragmatism

आदर्शवाद Idealism	प्रकृतिवाद Naturalism	प्रयोजनवाद Pragmatism
१. आधारभूत सिद्धान्त Fundamental Principles		
१. मन, विचार व आत्मा वास्तविक हैं।	१. प्रकृति, पदार्थ या भौतिक-जगत वास्तविक है।	१. वास्तविकता प्रक्रिया में निहित है।
२. आध्यात्मिक प्रकृति सर्वोत्तम है।	२. मनुष्य की मूल-प्रवृत्यात्मक प्रकृति उत्तम है।	२. मूल्य, आदर्श आदि निश्चित नहीं, वरन् परिवर्तनशील हैं।
३. सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् अमर मूल्य हैं।	३. विश्व एक बड़ी मशीन है।	३. साधन (Instrument) को साध्य से अधिक महत्व देता है।
४. परमात्मा स्वभाव से मानसिक है।	४. केवल विज्ञान ही ज्ञान प्रदान करता है।	४. मानवीय प्रयत्न निर्णायक महत्व के हैं।
५. विश्व विचार-प्रक्रिया है।	५. विश्व की वास्तविकता की व्याख्या केवल प्राकृतिक विज्ञानों के द्वारा की जाती है।	५. जो सिद्धान्त कार्य करते हैं, वे सत्य हैं।
६. चिन्तन का सर्वोच्च स्वरूप—अन्तर्दर्शन है।	६. नैतिक प्रवृत्ति, आत्मा, परलोक, व्यक्तिगत अमरत्व आदि सभी भ्रम हैं।	६. सत्य मानव-निर्मित होता है।
७. पूर्णतया आध्यात्मिक दृष्टिकोण।	७. पूर्णतया भौतिक व यांत्रिक दृष्टिकोण।	७. पूर्णतया मानवीय दृष्टिकोण।

२. शैक्षिक सिद्धान्त : Educational Principles

१. शिक्षा आध्यमिक प्रक्रिया है। २. परमात्म तत्त्व की ओर विकास।	१. बालक की प्रकृति के अनुसार शिक्षा। २. बालक के वर्तमान जीवन को शिक्षा का आधार बनाया जाय।	१. शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है। २. बालक की क्रियाओ एव स्वप्रयत्नो पर बल।
३. व्यक्तित्व के उन्नयन पर बल।	३. निषेधात्मक (Negative) शिक्षा पर बल।	३. जीवन की ठोस परिस्थितियो को शिक्षा का आधार बनाया जाय।
४. सामाजिक और नैतिक वातावरण पर बल।	४. भौतिक वातावरण पर बल।	४. सामाजिक एवं भौतिक वातावरण पर बल।
५. निश्चयात्मक शिक्षा।	५. निषेधात्मक शिक्षा।	५. निश्चयात्मक शिक्षा, प्रयोग और अनुभव पर आधारित सामाजिक प्रक्रिया।

३. शिक्षा के उद्देश्य . Aims of Education

१. आत्मानुभूति (Self-realization)। २. चरित्र-निर्माण (Character formation)।	१. आत्माभिव्यक्ति। २. वैयक्तिकता का विकास।	१. पूर्व निश्चित उद्देश्यो की अस्वीकृति। २. उद्देश्य निश्चित न होकर परिवर्तनशील होते हैं।
३. सत्यम्, शिवम् एव सुन्दरम् की प्राप्ति।	३. उचित सहज सम्बद्ध क्रियाओ का निर्माण।	३. सामाजिक कुशलता पर बल।
४. आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास।	४. मूल प्रवृत्तियो का शोधन, मार्गान्तीकरण और समन्वय।	४ सामाजिक व्यवस्था की उन्नति।
५. पवित्र एवं पुण्य जीवन की प्राप्ति।	५. जीवन सघर्ष के लिए तैयारी।	५. गतिशील और लचीले मस्तिष्क का निर्माण।
६. सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत का सरक्षण एवं उसकी समृद्धि।	६ प्रजातीय प्रगति की प्राप्ति।	६. नये मूल्यो और आदर्शों का निर्माण।

आदर्शवाद : Idealism	प्रकृतिवाद : Naturalism	प्रयोजनवाद : Pragmatism
	४. पाठ्यक्रम . Curriculum	
१. मनुष्य के विचारो और आदर्शों पर पाठ्यक्रम का आधारित होना। २. शाश्वत मूल्यो अर्थात् सत्यं, शिव और सुन्दरम् का महत्वपूर्ण स्थान। ३. शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक क्रियाओ पर बल। ४. पाठ्य-क्रम के मुख्य विषय— अध्यात्म-वाद, धर्म, नीति-शास्त्र, कला, सगीत, दस्तकारी। ५. नीति-शास्त्र और कला-विषयो (Arts) पर बल।	१. बालक की रुचियो, योग्यताओ, और स्वाभाविक क्रियाओ को महत्त्व। २. बालक के विकास की विभिन्न आवश्य-कताओं की पूर्ति। ३. जीवन-रक्षा सम्बन्धी विषयो की प्रधानता। ४. पाठ्यक्रम के मुख्य विषय—शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भौतिक-विज्ञान, बाल मनोविज्ञान। ५. विज्ञान पर बल।	१. उपयोगिता का सिद्धान्त। २. बालक की रुचि का सिद्धान्त। ३. बालक के अनुभव का सिद्धान्त। ४. सीखने की प्रक्रिया का एकीकरण। ५. पाठ्य-क्रम के मुख्य विषय—स्वास्थ्य-विज्ञान, शारीरिक प्रशिक्षण, गृह-विज्ञान (बालिकाओ के लिए), विज्ञान। ६. उपयोगी विषयो पर बल।
	५. शिक्षण-विधियाँ : Methods of Teaching	
१. कोई निश्चित विधि नही। २. आदर्शवादी स्वयं विधियो के निर्धारक और निर्माण कर्ता।	१. करके सीखना। २. अनुभव द्वारा सीखना।	१. करके सीखना। २. अनुभव द्वारा सीखना।

३. प्रमुख विधियाँ—वाद-विवाद विधि, प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्या विधि, पुस्तक-पठन विधि।	३. खेल द्वारा सीखना। ४. प्रमुख विधियाँ—डाल्टन, किंडरगार्टन, मॉन्टेसरी, ह्यूरिस्टिक,।	३. सीखने की प्रक्रिया में एकीकरण। ४. प्रमुख विधि—योजना विधि (Project Method)
	६. अनुशासन Discipline	
१. प्रभावात्मक अनुशासन। २. नियन्त्रित स्वतन्त्रता।	१. प्राकृतिक परिणामो द्वारा अनुशासन। २. अनियन्त्रित स्वतन्त्रता।	१. सीमित मुक्त्यात्मक अनुशासन। २. सामाजिक अनुशासन।
	७. शिक्षक : Teacher	
१. शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान। २. शिक्षक एक माली के रूप मे।	१. प्रकृति ही उत्तम शिक्षक है। यदि शिक्षक का कोई स्थान है तो रंगमच तैयार करने तथा पर्दे के पीछे रहने वाले के रूप मे है।	१. शिक्षक—सामाजिक वातावरण के रूप मे।
	८. विद्यालय : School	
१. मानवीय क्रियाओ का आदर्श लघु रूप। २. बाग के रूप मे।	१. प्राकृतिक या स्वाभाविक वातावरण के रूप मे। २. लोकतन्त्रीय वातावरण।	१. समाज का लघु रूप। २. सामुदायिक जीवन का केन्द्र।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Discuss briefly what you understand by the Pragmatic philosophy of education.
2. Describe the essential features of the Pragmatic school of education. Bring out its views on aims of education, methods of teaching, curriculum, teacher and discipline.
3. Which school of philosophy, in your opinion, can provide a a sound basis for educational reconstruction in India to-day ? Why ?
4. Compare and contrast Naturalism, Idealism and Pragmatism as regards the aims, curriculum, discipline, methods of teaching and position of teacher.
5. Give a critical account of the Pragmatic philosophy of education. How has it influenced the theory of education ?

खण्ड छः

भारतीय शिक्षा-शास्त्री और उनका दर्शन

INDIAN EDUCATORS & THEIR PHILOSOPHIES

- स्वामी दयानन्द सरस्वती
  Swami Dayanand Sarswati.
- महात्मा गांधी
  Mahatma Gandhi.
- डाक्टर रवीन्द्रनाथ टैगोर
  Dr. Rabindranath Tagore.
- श्री अरविन्द घोष
  Shri Aurobindo Ghosh.

२६

भारतीय शिक्षा-शास्त्री और उनका दर्शन

INDIAN EDUCATORS & THEIR PHILOSOPHIES

१—स्वामी दयानन्द सरस्वती
Swami Dayanand Sarswati

"उन्होंने हमारे मस्तिष्क को प्रबल जागृति के लिये उपदेश दिया और कार्य किया, जिससे कि वह आधुनिक युग की प्रगतिशील भावना के साथ सामजस्यपूर्ण अनुकूलन का प्रयास कर सके, और साथ ही भारत के गौरवपूर्ण अतीत के साथ पूर्ण सम्पर्क में रह सके।"

"He preached and worked for vigorous awakening of our mind that could strive for a harmonious adjustment with the progressive spirit of the modern age and at the same time keep in perfect touch with the glorious past of India."

—*Dr. Rabindranath Tagore.*

जीवन-दर्शन
Philosophy of Life

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द एक महान् दार्शनिक थे। वे वेदों के प्राचीन गौरव को उच्च स्थान पर फिर प्रतिष्ठित करना चाहते थे। 'ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका' और 'सत्यार्थ प्रकाश' उनके सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ हैं। इन ग्रन्थों के अध्ययन से दर्शन के सम्बन्ध में उनकी गहराई का पता चलता है। वे न तो "अद्वैतवादी थे और न विशिष्टाद्वैतवादी" उनको "त्रैतवादी" कहा जा सकता है, क्योंकि वे ईश्वर या ब्रह्म, जीव या आत्मा और प्रकृति या मूलोपदान को तीन अनादि तत्त्व मानते थे।

स्वामी जी के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान है और वह अपनी [illegible] के [illegible] सृष्टि का [illegible] करता है। वे [illegible] प्रकार का पूर्ण [illegible] नहीं मानते हैं। उनके विचार में विभिन्न जीवात्माओं में एक ही विभु का [illegible] नहीं मानते हैं। उनके अनुसार जीवात्मा और मानव शरीर में विभिन्न [illegible] की [illegible] है। इस प्रकार वे ईश्वर और आत्मा [illegible] ईश्वर का [illegible] के पृथक् अस्तित्व को मानते हैं।

स्वामी दयानन्द के विचार में ईश्वर सगुण और निर्गुण—दोनों है। [illegible] सगुण और निर्गुण ब्रह्म में भेद नहीं करते हैं। [illegible] ब्रह्म और ईश्वर और [illegible] परमात्मा की सत्ता है।

स्वामी जी के अनुसार संसार मिथ्या या अवास्तविक नहीं है। उनका कहना है कि वह ईश्वर [illegible] है और [illegible] का कारण है। [illegible] 'ईश्वर' को कभी भी मिथ्या या असत्य नहीं माना जा सकता है।

भारतीय दर्शन के अनुसार मानव-जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य 'मोक्ष की प्राप्ति' है। स्वामी दयानन्द भी इसे स्वीकार करते हैं, पर आत्मा के बन्धन और मोक्ष के बारे में उनके विचार कुछ भिन्न हैं। वेदान्तियों का कथन है कि मोक्ष प्राप्त करके जीव ब्रह्म में लय हो जाता है, पर स्वामी जी का कहना है कि प्रत्येक जीवात्मा मोक्ष प्राप्त करने के बाद भी अपनी अलग सत्ता बनाए रखता है। वे इस बात का खंडन करते हैं कि मोक्ष प्राप्त कर लेने पर जीवात्मा इस संसार में फिर वापिस नहीं आता है। मुक्ति प्राप्त करने के लिए स्वामी दयानन्द नैतिक गुणों, संयम, उत्तम कर्मों और वैराग्य को आवश्यक मानते हैं।

शिक्षा-दर्शन
Educational Philosophy

स्वामी दयानन्द वैदिक धर्म और संस्कृति के प्रबल समर्थक थे। इसलिये उन्हें अपने देशवासियों की दयनीय दशा देखकर बहुत दुःख हुआ। उस समय भारतीय वैदिक धर्म-कर्म को त्यागकर धीरे-धीरे ईसाई बनते जा रहे थे और उन पर पाश्चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता जा रहा था। ऐसी स्थिति में स्वामी जी ने अपने देश के निवासियों को धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सर[illegible] से बचाने का प्रयास किया। उन्होंने सामाजिक सुधार और धार्मिक क्रांति के सा[illegible] साथ शिक्षा की एक नवीन योजना बनाकर देश के नवयुवकों को एक नई दिशा [illegible] मोड़ने का सफल कार्य किया।

आर० एस० मणि का कथन है—"वे एक महान् समाज-सुधारक, प्रताप[illegible] धर्मोपदेशक और वेदों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। वे उस समय के हमारे देश में प्रच[illegible] विश्वासों और धार्मिक रीति-रिवाजों को विभिन्न विधियों से क्रान्तिकारी परि[illegible]

करना चाहते थे। वे मूर्ति-पूजा के विरोधी थे। उन्होंने अनिवार्य रूप से शिक्षा के माध्यम द्वारा समाज-सुधार का समर्थन किया। अपने धर्म-युद्ध के उत्साह में उन्होंने जन-शिक्षा का समर्थन किया—बिना भेद-भाव किये पुरुषों और स्त्रियों—दोनों की शिक्षा का।"

"He was a great social reformer, outstanding religious preacher and erudite Vedic scholar who wanted to revolutionize the then prevalent various systems of beliefs and religious customs of our country—he was against idolatory, he advocated social reform, essentially through the instrumenality of Education. In his crusading zeal, he advocated mass education—for both men and women without distinction."—*R. S. Mani.*

शिक्षा-दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त या आवश्यक तत्त्व : Basic Principles or Essential Features of Educational Philosophy

१. शिक्षा आश्रम-धर्म पर आधारित होनी चाहिये।
२ बालक की सविधिक शिक्षा उपनयन संस्कार के बाद प्रारम्भ होनी चाहिये।
३ बालक की अविधिक शिक्षा गर्भावस्था मे शुरू हो जाती है और उसके मस्तिष्क की रचना पर भोजन का बहुत प्रभाव पड़ता है। इसलिये उसके माता-पिता को सात्त्विक आहार करना चाहिये।
४. मादक वस्तुयें बालक की बुद्धि के विकास मे बाधक हैं। इसलिये जिस समय बालक गर्भ मे हो, उसके माता-पिता को इन वस्तुओ से बचना चाहिये।
५. सात्त्विक भोजन के साथ-साथ माता-पिता को सुन्दर और पवित्र विचारों को ग्रहण करना चाहिये।
६. बालक को प्रारम्भिक शिक्षा माता-पिता द्वारा दी जानी चाहिये।
७. बालक को उचित दंड दिया जा सकता है, पर माता-पिता और शिक्षक को ईर्ष्या-द्वेष से प्रेरित होकर दण्ड नही देना चाहिये।
८. बालक को चोरी, आलस्य, प्रमाद, मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता आदि दुर्गुणो का त्याग करने और सत्य, दया आदि सद्गुणो को ग्रहण करने का उपदेश दिया जाना चाहिये।
९. *शिक्षा सबके लिये अनिवार्य होनी चाहिये।*
१०. आठ वर्ष की आयु मे उपनयन या यज्ञोपवीत संस्कार के बाद बालक-बालिकाओं को विद्यालयों मे भेज देना चाहिये।

११. विद्यालय या गुरुकुल नगर या गाँव से कम से कम ५ मील दूर किसी शान्त स्थान मे होने चाहिये।
१२. बालक का भोजन स्वास्थ्य, बुद्धि और बल की वृद्धि करने वाला होना चाहिये।
१३. विद्याध्ययन के समय बालक को ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।
१४. बालकों को कम से कम २५ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन करना चाहिये।
१५. शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जिससे बालक अच्छे गुणो को प्राप्त करें और दोषो का त्याग करें।
१६. बालको को नास्तिको द्वारा लिखी गई पुस्तकें नही पढ़ानी चाहिये, क्योकि उनसे बालको के मस्तिष्क पर गलत प्रभाव पड़ता है और वे सत्य को नही पहिचान पाते हैं।
१७. बालकों को ५ वर्ष की आयु से ही नैतिक शिक्षा देनी प्रारम्भ कर देनी चाहिये।
१८. बालको और बालिकाओ के लिये अलग-अलग विद्यालय होने चाहिये।
१९. बालको को जिस बात की भी शिक्षा दी जाय, वह तर्क पर आधारित होनी चाहिये।
२०. गुरु-शिष्य के सम्बन्ध वैसे ही होने चाहिये, जैसे कि प्राचीन भारत मे होते थे।
२१. स्त्रियो और शूद्रो को भी विद्या प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिये।
२२. पाठ्य-क्रम म वेदों, वेदान्तो, उपनिषदो और अन्य धार्मिक ग्रन्थो का प्रमुख स्थान होना चाहिये।
२३. शिक्षा-संस्थायें जीवन-दर्शन पर आधारित होनी चाहिये।

शिक्षा का अर्थ

Meaning of Eduction

स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ अग्रलिखित है :—"जिससे मनुष्य विद्या आदि उत्तम गुणो को प्राप्त करे और अविद्या आदि दोषो को त्याग करके सदैव सुखी रह सके, वह शिक्षा है। जिसस पदार्थ का स्वरूप यथावत् जानकर ग्रहण करने योग्य गुणो को प्राप्त करके अपने को और दूसरो को सुखी बना सके, वह विद्या है। जिसमें पदार्थो क स्वरूप का प्रतिकूल ज्ञान हो, और जिसको जानकर अपना और दूसरे का अहित कर लिया जाय। वह अविद्या है।" इस प्रकार पदार्थ के यथार्थ ज्ञान, आत्म-कल्याण और पर-कल्याण म प्रवृत्त करने वाले ज्ञान को स्वामी दयानन्द

ने 'शिक्षा या विद्या की संज्ञा दी; और सत्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिये वैदिक शिक्षा-योजना बनाई।

स्वामी जी शिक्षा को व्यक्ति का सबसे महान् और सबसे मूल्यवान गुण मानते हैं। उनका कहना है :—"शिक्षा के बिना मनुष्य केवल नाम-मात्र का मनुष्य है। शिक्षा प्राप्त करना सद्गुणी बनना ईर्ष्या से मुक्त होना और धार्मिकता का उत्थान करते हुए व्यक्तियों के कल्याण का उपदेश देना-मनुष्य का परम कर्त्तव्य है।"

"A man without education is only a man in name. It is a bounden duty of a man to get education, become virtuous, be free from malice and preach for the well-being of people—advancing the cause of righteousness"—*Swami Dayanand*.

शिक्षा के उद्देश्य
Aims of Education

स्वामी दयानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

१. वैदिक धर्म और संस्कृति का पुनरुत्थान : Revival of Vedic Religion & Culture

अपने जीवन-काल में स्वामी जी को यह देखकर बहुत क्षोभ हुआ कि लोग अपने प्राचीन वैदिक धर्म को भूले जा रहे हैं, धीरे-धीरे ईसाई धर्म को स्वीकार करते जा रहे हैं और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होते जा रहे हैं। अतः उन्होंने अपनी शिक्षा-योजना का प्रमुख लक्ष्य—वैदिक धर्म और संस्कृति का पुनरुत्थान रखा। इसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा कि वैदिक काल मे लोगों का जीवन और संस्कृति अति उच्च स्तर पर पहुँची हुई थी। अतः उस संस्कृति के प्रसार के बिना देश की दशा मे सुधार होना असम्भव।

२. शारीरिक विकास : Physical Development

स्वामी जी ने बालक के शारीरिक विकास को शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य बताया है। इसलिये उन्होंने 'ब्रह्मचर्य आश्रम' पर बहुत बल दिया है। उनका कहना है कि इस आश्रम का मुख्य अभिप्राय है—शारीरिक शक्ति की प्राप्ति। प्रत्येक बालक और बालिका अपने अध्ययन-काल मे २५ वर्ष की आयु तक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करे। उनका कथन है :—"यदि ब्रह्मचर्य का अच्छी प्रकार पालन किया जाय, तो इससे शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का बल बढ़ता है।

"Brahmacharya, if well observed, conduces to strength of body, mind, and soul."—*Swami Dayanand*.

३. मानसिक विकास : Intellectual Development

स्वामी जी के अनुसार शिक्षा का एक अन्य उद्देश्य—बालक की मानसि
शक्तियों का विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उनका कहना है कि
माता अपने बालक को पाँचवें वर्ष तक शिक्षा दे और पिता आठवें वर्ष तक। इसके
बाद बालक को विद्यालय या आचार्यकुल में भेज दिया जाय।

४. नैतिक विकास : Moral Development

स्वामी दयानन्द नैतिकता पर अत्यधिक बल देते हैं। अतः उनका कहना है
कि शिक्षा का उद्देश्य—बालक का नैतिक विकास करना होना चाहिए। इस विकास
के फलस्वरूप ही वह उत्तम जीवन व्यतीत कर सकेगा और सत्य का अनुसरण कर
सकेगा। उनके अनुसार जीवन में सत्य का अनुसरण अति आवश्यक है। उनका
कहना है "हमारा उद्देश्य केवल यह है कि मानव जाति प्रगति करे और फले-
फूले। मनुष्य इस बात का ज्ञान प्राप्त करें कि सत्य क्या है और असत्य क्या है।
वे असत्य का त्याग करें और सत्य को स्वीकार करें।"

"Our only object is that mankind may progress and prosper;
men may know what truth is and what untruth is, they may
forsake untruth and accept truth."—*Swami Dayanand.*

५. आदर्श चरित्र का निर्माण : Formation of Ideal Character

स्वामी दयानन्द के विचार से शिक्षा का एक उद्देश्य—पूर्ण रूप से आदर्श
चरित्र का निर्माण करना है। यह उद्देश्य तभी प्राप्त हो सकता है, जब स्वयं बालक
के माता-पिता का चरित्र आदर्श हो और वे उसे निरन्तर चरित्र-निर्माण की शिक्षा
देते रहें। जिस विद्यालय में बालक को विद्याध्ययन के लिये भेजा जाय, ...
शिक्षक पूर्ण रूप से चरित्रवान् होने चाहिये। वे अपने विचारों, आदर्शों और ...
से सदैव इस बात का प्रयत्न करें कि बालक का चरित्र उत्तम बने।

शिक्षा-योजना अथवा पाठ्य-क्रम

Scheme of Education or Curriculum

पाठ्य-क्रम के बारे में स्वामी जी के विचार अति विस्तृत हैं। उन्होंने
पाठ्य-क्रम की एक निश्चित योजना दी है, जो निम्नलिखित प्रकार से है :—

१. सबसे पहिले सब बालक-बालिकाओं को पाणिनिकृत शिक्षा का ज्ञान
कराया जाय। उनको अक्षरों का शुद्ध ज्ञान कराया जाय। उन्हें ह्रस्व,
दीर्घ या प्लुत वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का उचित प्रयोग करना
सिखाया जाय।

२. इस शिक्षा के बाद बालकों को व्याकरण का बोध कराया जाय। व्याकरण

मे सूत्रों के पाठ, धातुपाठ, उणादिगण और महाभाष्य पर विशेष ध्यान दिया जाय। व्याकरण का अध्ययन ३ वर्ष तक किया जाय।

३. व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद छात्रों को छः से आठ महीने तक यास्कमुनिकृत निघटु (वैदिक शब्दकोश) और निरुक्त (भाषा शास्त्र) पढ़ाया जाय।
४. इसके बाद छात्रों को चार महीने तक पिंगलाचार्यकृत 'छंदोग्रन्थ' पढ़ाया जाय, जिससे कि उन्हें वैदिक और लौकिक छन्दों का ज्ञान हो जाय और वे श्लोक बनाने की रीति को समझ जायें।
५. इसके बाद छात्रों को एक वर्ष तक मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण, विदुरनीति और महाभारत के चुने हुए पर्व पढ़ाये जायें, जिससे उनके आचरण में सुधार हो सके।
६. तदुपरान्त छात्रों को २ वर्ष तक आगे लिखे ६ शास्त्रों का अध्ययन कराया जाय—पूर्वमीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त।
७. तदनन्तर छात्रों को छ वर्ष तक चारों ब्राह्मण—ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ—के साथ-साथ चारो वेदों को पढ़ाया जाय।
८. इसके बाद ४ वर्ष तक आयुर्वेद और दो-दो वर्ष तक धनुर्वेद, गान्धर्व-वेद और शिल्प-वेद का पठन कराया जाय।
९. अन्त में ज्योतिषशास्त्र, बीजगणित, अंकगणित, भूगोल और भूगर्भ विद्या आदि को सिखाया जाय।

बालकों की शिक्षा में माता-पिता का कार्य-भाग

Role of Parents in Educating Children

स्वामी दयानन्द के अनुसार पाँचवें वर्ष तक माता को और आठवें वर्ष तक पिता को बालक का शिक्षक होना चाहिये। उन्हें अपनी सतान को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वे अपने आचार-व्यवहार मे सभ्य और शिष्ट बनें तथा किसी तरह की कुचेष्टा न करें। अपने बालको को शिक्षा मे माता-पिता के कार्य-भाग पर प्रकाश डालते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा है —"माता-पिता को बच्चों में आत्म-संयम, विद्या-प्रेम और अच्छी संगति की आदत का विकास करना चाहिए। बालकों को कष्टकारी खेलों से अकारण रोने और हंसने, झगड़े, आनन्द, उदासीनता, किसी वस्तु से आवश्यकता से अधिक लगाव, ईर्ष्या, द्वेष, आदि से दूर रखना चाहिए। माता-पिता को यह देखना चाहिए कि उनकी संतान में सत्यभाषण, शौर्य, धैर्य, प्रसन्नता आदि गुणों का विकास हो।"

"The parents should inculcate in children the habit of self-restraint, love of learning and good company. Pernicious games, unnecessary weeping and laughing, quarrel, pleasure, moroseness,

undue attachment to an object, envy, ill-will etc., are to be shunned. They should see to it that the qualities of truthfulness, courage, perseverance, cheerfulness etc., be imbibed."—M. B. Sen : *Wit and Wisdom of Swami Dayanand*.

बालकों और बालिकाओं के लिये पृथक् विद्यालय

Separate Schools for Boys & Girls

स्वामी दयानन्द सह-शिक्षा के पक्ष में बिल्कुल नहीं हैं, यद्यपि आजकल इसको शिक्षा के किसी भी स्तर पर साधारणतः बुरा नहीं माना जाता है। उनका इस बात में दृढ़ विश्वास है कि बालकों और बालिकाओं को पृथक् विद्यालयों में शिक्षा दी जानी चाहिए। इसके बारे में अपने विचारों को व्यक्त करते हुए स्वामी जी ने लिखा है—"अध्ययन का स्थान अलग होना चाहिए और बालिकाओं तथा बालकों के विद्यालय एक-दूसरे से दो कोस (लगभग चार मील) दूर होने चाहिए। बालिकाओं के विद्यालयों में सभी कार्यकर्त्रियाँ स्त्रियाँ और बालकों के विद्यालयों में सभी कर्मचारी पुरुष होने चाहिये। पांच वर्ष की आयु के बालक-बालिकाओं को एक-दूसरे के विद्यालयों में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिये।"

"The place of study should be secluded and girls' and boys' schools should be two *Kosas* (about four miles) apart. The teachers, servants and menials should all be females in girls' schools and males in boys' schools. No boy of five years' age should be allowed an entry into a girls' school, nor a girl of that age into a boys' school."—M. B. Sen : *Wit & Wisdom of Swami Dayanand*.

शिक्षा-दर्शन का मूल्यांकन

Estimate of Educational Philosophy

शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द के विचार केवल आदर्शमात्र ही नहीं हैं, अपितु उनमें पूर्ण व्यावहारिकता भी है। उनके विचारों का अनुसरण करके जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। यही कारण है कि उनके शिक्षा-सिद्धान्तों और आदर्शों के आधार पर शिक्षा देने वाली अनेक संस्थायें आज भी देश में सफलता-पूर्वक कार्य कर रही हैं। इन संस्थाओं में 'कांगड़ी और ज्वालापुर गुरुकुल महाविद्यालय, हरिद्वार और वृन्दावन गुरुकुल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बालकों के गुरुकुलों के समान देहरादून, बड़ौदा और सासनी (अलीगढ़) में कन्या-गुरुकुल महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

ये सभी गुरुकुल स्वामी जी की शिक्षाओं के अनुसार ब्रह्मचर्य और प्राचीन वैदिक शिक्षा को पुनर्जीवित करने के प्रयास में संलग्न हैं। इनमें ६ वर्ष के बालक

८ वर्ष तक के बालको और बालिकाओ को भर्ती किया जाता है। उन्हे हिन्दी के माध्यम से शिक्षा दी जाती है और संस्कृत साहित्य एवं आर्य-संस्कृति का विशेष रूप से अध्ययन कराया जाता है। इन गुरुकुलो के अतिरिक्त दयानन्द के नाम पर भारत मे शिक्षा-केन्द्रो का जाल बिछा हुवा है, जिनमे किसी-न-किसी रूप मे वैदिक धर्म की थोडी-बहुत शिक्षा अवश्य दी जाती है।

अन्त मे, हम डा० कोतिवेदी सेठ के शब्दो मे कह सकते हैं —"इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि स्वामी जी वैदिक शिक्षा-पद्धति, शिक्षा-प्रसार और जीवनोन्नति के महान् प्रवर्त्तक एवं मार्ग-दर्शक थे, जिनके जीवन और आदर्शों से प्रेरणा लेकर शिक्षा और जीवन के क्षेत्र में कान्तिकारी सफलतायें प्राप्त की जा सकती हैं।"

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Evaluate Swami Dayanand's philosophy of education, bringing out his views on the meaning of education, aims of education, curriculum, etc.
2. "Arya Samaj has done very good work in the spread of education both among boys and girls"—(*Jawaharlal Nehru*) Elucidate the statement.

२७

भारतीय शिक्षा-शास्त्री और उनका दर्शन

INDIAN EDUCATORS & THEIR PHILOSOPHIES

२—महात्मा गांधी

Mahatma Gandhi

"राष्ट्र के लिये गान्धी जी की अनेकों देनों में से नवीन शिक्षा के प्रयोग की देन सबसे महान् है। यह तरुण व्यक्तियों को सहयोग, प्रेम और सत्य के आधार पर एक समुदाय के रूप में एक साथ रहने की शिक्षा देकर नये समाज के लिये नागरिकों को तैयार करने का प्रयत्न करता है।"

"Of Gandhiji's many gifts to the nation, the experiment of New Education is one of the greatest. It seeks to prepare citizens for a new society by teaching young people to live together as a community on the basis of co-operation, love, and truth."

—*Humayun Kabir.*

जीवन-दर्शन

Philosophy of Life

गांधी जी के जीवन-दर्शन ने भारतीय जीवन और समाज मे क्रान्ति को जन्म दिया। इस प्रकार का दूसरा उदाहरण मानव-जाति के इतिहास मे नहीं मिलता है। रोमियाँ रोलाँ का कथन है—"महात्मा गांधी वे मनुष्य थे, जिन्होने ३० करोड़ व्यक्तियों को विद्रोह करने के लिये उत्तेजित किया, जिन्होने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें हिला दीं और जिन्होने पिछले २,००० वर्षों की मानव-राजनीति मे सबसे शक्तिशाली धार्मिक पुट दिया।"

"Mahatma Gandhi was the man who stirred three hundred million people to revolt, who shook the foundation of the British-

Empire, and who introduced into human politics the strongest religious impetus of the last two thousand years."

—*Romain Rolland.*

गांधी जी के जीवन-दर्शन का विश्लेषण करने पर हमको उसमें चार महत्त्वपूर्ण तत्त्व मिलते हैं—सत्य, अहिंसा, निर्भयता और सत्याग्रह। हम इन पर यहाँ प्रकाश डाल रहे हैं :—

१. सत्य : Truth

गांधी जी के लिए 'सत्य' सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्त है। इसमें अनेकों सिद्धान्त निहित हैं। गांधी जी का सम्पूर्ण जीवन सत्य के लिए एक प्रयोग (Experiment) है। उनका सत्य—पूर्ण सत्य (Absolute Truth) है। उनके लिए सत्य और ईश्वर एक ही बात है। बी० जी० रे के शब्दों में—"जिस वास्तविकता को गांधी जी ने जाना और अनुभव किया, वह सत्य है। सत्य के माध्यम से ईश्वर को जाना जा सकता है। जब कभी कोई सत्य शब्द बोला जाता है, जब कभी कोई सत्य कार्य किया जाता है; और जब कभी किसी सत्य भावना का अनुभव किया जाता है, तब हम ईश्वर के अस्तित्व का अनुभव करते हैं। ईश्वर का अस्तित्व है क्योंकि सत्य का अस्तित्व है। गांधी जी के लिए सत्य और ईश्वर एक ही हैं।"

"The character of reality as known and realized by Gandhiji is Truth. God can be experienced through Truth. Whenever a true word is uttered; whenever a true action is done and whenever a true feeling is felt, we feel the existence of God. He exists because Truth exists. To Gandhiji, Truth and God are identical."—*B. G. Ray.*

साधारणतः सत्य का अर्थ समझा जाता है—सत्य बोलना। गांधी जी के लिए इसका अर्थ अति विस्तृत है। उन्होंने लिखा है—"विचार में सत्य, भाषण में सत्य और कार्य में सत्य होना चाहिए।" ("There should be Truth in thought, Truth in speech; and Truth in action.")

२. अहिंसा : Non-Violence

डा० महादेव प्रसाद का कथन है—"गांधी जी ने सत्य के सिद्धान्त से एक स्वाभाविक परिणाम निकाला। वह यह कि सत्य और अहिंसा को एक-दूसरे से अलग करना प्रायः असम्भव है। ये एक सिक्के के दो पहलू हैं।"

"Gandhiji deduces a logical corollary from the principle of truth. To him, it is practically impossible to disentangle and

separate Truth and non-violence. They are like the two sides of a coin."—*Dr Mahadeva Prasad.*

अब प्रश्न यह उठता है कि अहिंसा का अर्थ क्या है ? इसको गांधी जी के शब्दों से ही अच्छी तरह समझा जा सकता है। उनका कहना है—"अहिंसा समस्त जीवधारियों के प्रति बुरी भावना का अभाव है। अपनी गतिशील अवस्था में इसका अर्थ है—जान-बूझकर कष्ट सहन करना। अपने क्रियाशील रूप में यह समस्त जीवधारियों के प्रति अच्छी भावना है। यह शुद्ध प्रेम है।"

"Non-violence is complete absence of ill-will against all that lives. In its dynamic condition it means conscious suffering. Non-violence is, in its active form, good will towards all life. It is pure love."—*Mahatma Gandhi.*

३. निर्भयता : Fearlessness

'निर्भयता' के अर्थ को स्पष्ट करते हुए गांधी जी ने लिखा है—"निर्भयता का अर्थ है—समस्त बाह्य भयों से मुक्ति; जैसे—बीमारी का भय, शारीरिक चोट और मृत्यु का भय, सम्पत्ति विहीन होने का भय, अपने प्रियजन की मृत्यु का भय, प्रतिष्ठा खोने का भय, अनुचित कार्य करने का भय, इत्यादि।"

"Fearlessness connotes freedom from all external fear—fear of disease, bodily injury and death, or dispossession, of losing one's nearest and dearest, of losing reputation or giving offence, and so on."—*Mahatma Gandhi.*

४. सत्याग्रह : Satyagraha

'सत्याग्रह' अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए प्रयोग किया जाने वाला विशिष्ट शब्द है। गांधी जी को यह शब्द सबसे पहले दक्षिणी अफ्रीका में मालूम हुआ। १९०६ में उन्होंने वहाँ के भारतीयों को अंग्रेजों के अनुचित कानूनों के विरोध में अहिंसात्मक आन्दोलन करने के लिए संगठित किया। तब उन्हें एक ऐसे शब्द की आवश्यकता का अनुभव हुआ, जो आन्दोलन के पूर्ण अर्थ को व्यक्त कर सके। उन्हें 'निष्क्रिय अवरोध' (Passive Resistance) नामक शब्द का सुझाव दिया गया, पर यह अहिंसा को पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं करता था। मगनलाल गांधी ने 'सदग्रह' (Sadagraha) शब्द का सुझाव दिया। इसका अर्थ—'सद् या अच्छी बात का दृढ़ अवलम्बन' (Holding fast to good)। गांधी जी ने इस शब्द में सुधार करके इसे 'सत्याग्रह' का नाम दिया। इसका अर्थ है—'सत्य का दृढ़ अवलम्बन' (Holding fast to truth)

गांधी जी ने 'सत्याग्रह' के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"इसका मूल अर्थ है 'सत्य-बल' का दृढ़ अवलम्बन। मैंने इसको 'आत्म-बल' के नाम से भी

पुकारा है। सत्याग्रह के प्रयोग के प्रारम्भिक स्तरों पर मैंने यह खोज की कि सत्य का अनुसरण इस बात की आज्ञा नहीं देता है कि कोई व्यक्ति अपने विरोधी पर बल का प्रयोग करे। इसके विपरीत, उसे धैर्य और सहानुभूति से उसको गलत मार्ग से हटाना चाहिए। कारण यह है कि जो बात एक व्यक्ति को सत्य मालूम होती है, वह दूसरे को असत्य मालूम हो सकती है। इस प्रकार इस सिद्धान्त (सत्याग्रह) का अर्थ है—विरोधी को कष्ट देकर नहीं, वरन् अपने आप को कष्ट देकर सत्य का समर्थन करना।"

"Its root meaning is holding on to truth force. I have also called it soul-force. In the application of *Satyagraha,* I discovered in the earliest stages that pursuit of the Truth did not admit of violence being inflicted on one's opponent, but that he must be weaned from error by patience and sympathy. For what appears to be Truth to the one may appear to be error to the other. So the doctrine came to mean vindication of Truth, not by infliction of suffering on the opponent, but on one's self."—*Mahatma Gandhi.*

शिक्षा-दर्शन

Educational Philosophy

गांधी जी ने राजनीति, समाज-सुधार, सत्य और अहिंसा के क्षेत्रों में अति महान् सफलतायें प्राप्त की हैं। इनके कारण शिक्षा-सिद्धान्त और व्यवहार (Educational Theory and Practice) को दी जाने वाली उनकी देन बहुत ही कम याद आती है। वास्तव में शैक्षिक विचारकों में उनका स्थान अति श्रेष्ठ है। उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भ में ही यह अनुभव कर लिया था कि सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक प्रगति का आधार—शिक्षा है।

डा० एम० एस० पटेल का कथन है—"गांधी जी ने उन महान् शिक्षकों और उपदेशकों की गौरवपूर्ण मण्डली में अनोखा स्थान प्राप्त किया है, जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र को नव-ज्योति दी है। ग्रीन का कथन था कि पेस्टॉलॉजी आधुनिक शिक्षा-सिद्धान्त और व्यवहार का प्रारम्भिक बिन्दु था। जहाँ तक पाश्चात्य शिक्षा का सम्बन्ध है, यह बात सत्य हो सकती है। गांधी जी के शिक्षा-सम्बन्धी विचारों का निष्पक्ष अध्ययन सिद्ध करता है कि वे पूर्व में शिक्षा-सिद्धान्त और व्यवहार के प्रारम्भिक बिन्दु हैं।'

"Gandhiji has secured a unique place in the galaxy of the great teachers and preachers who have brought fresh light in the field of education. Green remarked that Pestalozzi was the start-

१०. दस्तकारी वह स्रोत होना चाहिए जिससे बालक की क्रिया और अनुभव उत्पन्न हों।
११. जो दस्तकारी शिक्षा के साधन के रूप में चुनी जाय, उसे शिक्षा को आत्म-निर्भर (Self-supporting) बनाना चाहिए।
१२. शिक्षा को बालकों को बेरोजगारी से एक प्रकार की सुरक्षा देनी चाहिए।
१३. शिक्षा की नवीन योजना का उस मस्तिष्क द्वारा विकास किया जा सकता है, जो अहिंसा को सब बुराइयों की अचूक दवा मानता है।
१४. समस्त शिक्षण जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में किया जाना चाहिए, और उसका सम्बन्ध किसी दस्तकारी या सामाजिक और भौतिक वातावरण से होना चाहिए।
१५. विद्यालय को किसी दूसरे साधन से प्राप्त (Second-hand) निष्क्रिय (Passive) रूप से ज्ञान ग्रहण करने का स्थान नहीं होना चाहिए। इसके विपरीत विद्यालय को कार्य, प्रयोग (Experimentation) और खोज का स्थान होना चाहिए।
१६. बालक को अपना ज्ञान सक्रिय रूप से प्राप्त करना चाहिए और उसे उसका प्रयोग सामाजिक वातावरण को समझने और उस पर अधिक उत्तम नियन्त्रण रखने के लिए करना चाहिए।
१७. सम्पूर्ण राष्ट्र में सात वर्ष (७ से १४ वर्ष) तक नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा दी जानी चाहिए।
१८. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए और सब भाषाओं में इसका स्थान प्रथम होना चाहिए।
१९. शिक्षा की योजना में मैट्रीकुलेशन तक अंग्रेजी नहीं होनी चाहिए।
२०. विद्यालय के बालकों द्वारा बनाई गई चीजों को सरकार द्वारा खरीदा जाना चाहिए।

शिक्षा का अर्थ

Meaning of Education

गांधी जी की महत्त्वपूर्ण आकांक्षाओं में से एक आकांक्षा यह थी कि भारत का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित (Educated) हो। शिक्षित होने से उनका अभिप्राय यह नहीं था कि वह साक्षर हो। वे साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। वे इसे ज्ञान या ज्ञान का माध्यम (Medium of Knowledge) भी नहीं मानते थे। उनका कहना था—"साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ। यह केवल एक साधन है, जिसके द्वारा पुरुष और स्त्री को शिक्षित किया जा सकता है।"

"Literacy is not the end of education nor even the beginning.

(अ) तात्कालिक उद्देश्य (Immediate Aim)
(ब) सर्वोच्च उद्देश्य (Ultimate Aim)

(अ) शिक्षा के तात्कालिक उद्देश्य
Immediate Aims of Education

जीवन के सभी पक्षों से सम्बन्ध रखने के कारण गांधी जी के शिक्षा के तात्कालिक उद्देश्य अनेक हैं। हम इनमे से प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन यहाँ कर रहे हैं। यथा—

१. जीविका-उपार्जन का उद्देश्य : Bread-and-Butter Aim

इस उद्देश्य का अर्थ यह है कि शिक्षा बालक को बड़े होने पर जीविका-उपार्जन के योग्य बनाये। यदि शिक्षा का यह कार्य नहीं करती है, तो वह व्यर्थ है। यदि यह व्यक्ति की भोजन, वस्त्र और मकान की मूल आवश्यकताओ को पूर्ण नहीं करती है, तो यह निरर्थक है।

कुछ लोगो को शिक्षा का यह उद्देश्य तुच्छ और भौतिकवादी जान पड़ता है। पर यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि यदि हम भौतिक, नैतिक और मानसिक प्रगति चाहते हैं, तो हमे अपनी मूलभूत आवश्यकताओ को सबसे पहिले सन्तुष्ट करना पड़ेगा। इसी विचार से प्रेरित होकर गाधी जी ने शिक्षा का तात्कालिक उद्देश्य—मनुष्य की रोटी और रोजी की समस्या को हल करना बताया। इसीलिये उन्होने आत्म-निर्भर शिक्षा (Self-Supporting Education) पर बल दिया। उनका कहना है—"शिक्षा को बालकों को बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार की सुरक्षा देनी चाहिए। ७ वर्ष का कोर्स समाप्त करने के बाद १४ वर्ष की आयु में बालक को कमाने वाले व्यक्ति के रूप मे विद्यालय से बाहर भेजा जाना चाहिए।"

"Education ought to be for children a kind of insurance against unemployment. The child at the age of 14, that is, after finishing a seven-year course should be discharged as an earning unit."—*Gandhiji.*

२. सांस्कृतिक उद्देश्य : Cultural Aim

गाधी जी ने संस्कृति और शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य को बताते हुए १९४६ मे 'कस्तूरबा बालिका आश्रम', नई दिल्ली, की बालिकाओ से कहा—"मैं शिक्षा के साहित्यिक पक्ष के बजाय सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्त्व देता हूँ। संस्कृति बालिकाओं के लिए मुख्य चीज है। उन्हें अपने बोलने, बैठने, चलने, कपड़े पहिनने और छोटे से छोटे कार्य और व्यवहार में संस्कृति को व्यक्त करना चाहिए।"

"I attach far more importance to the cultural aspect of education than to the literary. Culture is the primary thing for girls.

It should show itself in the smallest detail of your condu behaviour, how you sit, how you walk, how you dress, etc."
—Ga

इस प्रकार गांधी जी के अनुसार संस्कृति मानसिक कार्य का परिणा है। इसके विपरीत, यह आत्मा का गुण है, जो मानव-व्यवहार के प्रत्येक प पाया जाता है। इसीलिए गांधी जी के लिए शिक्षा का सांस्कृतिक उद्देश्य म पूर्ण है।

३. सामंजस्यपूर्ण विकास का उद्देश्य . Harmonious Development Ai

इस उद्देश्य का अर्थ यह है कि बालक की शारीरिक, मानसिक और आध्य त्मिक शक्तियों को इस प्रकार विकसित किया जाय कि उसका सामंजस्यपूर्ण विका हो। यही विचार गांधी जी का है। उन्होंने लिखा है—"शिक्षा से मेरा अभिप्राय है बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का सर्वांगीण विकास। सच्ची शिक्षा वही है, जो बालकों की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों को व्यक्त तथा प्रेरित करती है।"

"By education I mean an all round drawing out of the best in child and man—body, mind and spirit. True education is that which draws out and stimulates the spiritual, intellectual, and physical faculties of the children."—*Gandhiji*.

"ट्रांसवाल (Transvaal) के टालस्टॉय फार्म (Tolstoy Farm) पर गांधी जी ने बालकों और बालिकाओं को इसी प्रकार की शिक्षा दी। वहाँ उन्होंने यह अनुभव किया कि यदि हृदय को सच्चा प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है, तो मानसिक प्रशिक्षण बेकार हो जाता है। इसलिए उन्होंने हृदय के प्रशिक्षण को मस्तिष्क के प्रशिक्षण से उच्च स्थान दिया है। दूसरे शब्दों में, उनका मत है कि मस्तिष्क की संस्कृति को हृदय की संस्कृति के अधीन होना चाहिए। हृदय की शिक्षा संवेगों और आवेगों (Emotions and Impulses) को पवित्र बनाकर और प्रेम, सहानुभूति तथा सौन्दर्यात्मक भावनाओं को जगाकर प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए ड्राइंग, संगीत और दस्तकारियों का अध्ययन आवश्यक है।

मस्तिष्क और हृदय के विकास के साथ-साथ गांधी जी के शरीर के विकास पर भी बल देते हैं। उन्हें इस बात में दृढ़ विश्वास है कि मस्तिष्क और हृदय को तभी शिक्षित किया जा सकता है, जब शरीर के अंगों को उचित व्यायाम और प्रशिक्षण दिया जाय। डा० पटेल का कथन है—"गांधी जी का विश्वास है कि जब तक मस्तिष्क और शरीर का विकास आत्मा की जाग्रति के साथ-साथ नहीं होगा, पहले प्रकार का विकास एकांगी सिद्ध होगा। पूर्ण मनुष्य का निर्माण करने इन तीनों का उचित और सामंजस्यपूर्ण मिश्रण आवश्यक है।"

"Unless the development of the body and mind goes hand n hand, Gandhiji believes, with a corresponding awakening of the soul, the former alone would prove to be a lopsided affair. A proper and harmonious combination of all the three is required for the making of the whole man."—M. S. Patel

४. **नैतिक या चारित्रिक विकास का उद्देश्य : Moral or Character Development Aim**

हरबर्ट (Herbart) का कथन है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है—नैतिक विकास। गांधी जी का भी विश्वास है कि चरित्र-निर्माण शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने अपनी 'आत्म कथा' (Autobiography) में लिखा है—"मैंने हृदय की संस्कृति या चरित्र के निर्माण को सदैव प्रथम स्थान दिया है।"

"I have always given the first place to the culture of the heart or the building of character."—*Gandhiji.*

गांधी जी ने चरित्र-निर्माण को इतना अधिक महत्त्व दिया है कि उन्हें साक्षरता और चरित्र-निर्माण में एक को चुनना होता, तो वे चरित्र-निर्माण को चुनते। एक बार उनसे पूछा गया—"*जब भारत स्वतन्त्र हो जायगा, तब आपकी शिक्षा का क्या लक्ष्य होगा ?*" उन्होंने फौरन ही उत्तर दिया—"चरित्र-निर्माण"। वे ज्ञान की उपयोगिता केवल चरित्र-निर्माण के लिए मानते हैं। उनका कहना है—"समस्त ज्ञान का लक्ष्य चरित्र का निर्माण करना होना चाहिए। व्यक्तिगत पवित्रता समस्त चरित्र-निर्माण का आधार होना चाहिए। चरित्र के बिना 'शिक्षा' और पवित्रता के बिना 'चरित्र' व्यर्थ हैं।"

"The end of all knowledge must be the building up of character. Personal purity is to form the basis for all character-building Education without character and character devoid of purity would be no good "—*Gandhiji.*

५. *मुक्ति का उद्देश्य : Liberation Aim*

गांधी जी के अनुसार शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य—व्यक्ति की मुक्ति है—"सा विद्या या विमुक्तये" अर्थात् शिक्षा या विद्या वही है जो मुक्त करती है। इसके गांधी जी ने दो अर्थ बताये हैं। उनके अनुसार पहला अर्थ है—"मुक्ति का अर्थ है वर्तमान जीवन में भी सब प्रकार की दासता से स्वतन्त्रता" ("Liberation means freedom from all manner of servitude even in present life.")। वह दासता आर्थिक, राजनैतिक और मानसिक हो सकती है। जब तक मनुष्य इनमें से किसी भी बेड़ियों में बँधा हुआ है, तब तक उसकी प्रगति असम्भव है, अतः शिक्षा का उद्देश्य है—मनुष्य को सभी प्रकार की दासता से मुक्त करना।

उनका मत है कि वैयक्तिकता (Individuality) ही सब प्रकार की उन्नति का आधार है। अत. नैतिक, भौतिक या आध्यात्मिक प्रगति के लिये वैयक्तिकता को सुरक्षित रखना आवश्यक है। हम जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति मे व्यक्तिगत गुण होते हैं। ये ही गुण उन्हे एक-दूसरे से भिन्न बनाते हैं। अतः सब व्यक्तियों को एक ही ध्येय की प्राप्ति के लिये न तो मूक पशुओं के समान हाँका जाना चाहिए और न हाँका जा सकता है। यहाँ तक कि दो व्यक्तियो को भी एक-सी प्रकृति, योग्यता और स्वभाव का नही कहा जा सकता है। अगणित व्यक्तियों के साथ सम्पर्क होने के कारण गाधी जी ने इस बात का अनुभव किया। अत गाधी जी ने, रंग, रूप, जाति और धर्म पर ध्यान बिना व्यक्ति की वैयक्तिकता का आदर किया।

गाधी जी का विश्वास था कि यदि व्यक्तियो को उचित शिक्षा दी जायगी और यदि उनके चरित्र का निर्माण किया जायगा, तो समाज का सुधार अपने-आप हो जायगा। उन्होने अपने सिद्धान्त और व्यवहार के द्वारा यह सिद्ध किया कि आत्माभिव्यक्ति (Self-Expression) और समाज-सेवा मे कोई विरोध नही है। कारण यह है कि मनुष्य समाज मे ही अपने व्यक्तित्व को प्राप्त कर सकता है। उसका विकास शून्य मे नहीं हो सकता है। इस प्रकार वे समाज-सेवा और वैयक्तिक विकास मे समन्वय स्थापित करते हैं। उन्होने लिखा है—"मैं वैयक्तिक स्वतन्त्रता को महत्त्व देता हूँ, पर आपको यह नहीं भूल जाना चाहिए कि मनुष्य आवश्यक रूप से सामाजिक प्राणी है। उसने अपनी वर्तमान स्थिति को सामाजिक प्रगति की आवश्यकताओं के साथ अपनी वैयक्तिकता को व्यवस्थित करना सीखकर प्राप्त किया है। अनियन्त्रित वैयक्तिकता जगल के पशुओं का नियम है। हमने वैयक्तिक स्वतन्त्रता और सामाजिक नियन्त्रण के बीच का मार्ग अपनाना सीखा है। सम्पूर्ण समाज के हित के लिये स्वेच्छा से सामाजिक नियन्त्रण को स्वीकार करने से व्यक्ति और समाज, जिसका कि वह सदस्य है, दोनों का विकास होता है।"

"I value individual freedom, but you should not forget that man is essentially a social being. He has risen to his present status by learning to adjust his individualism to the requirements of social progress Unrestricted individualism is the law of the beast of the jungle. We have learnt to strike the mean between individual freedom and social restraint. Willing submission to social restraint for the sake of the well-being of the whole society, enriches both the individual and the society of which one is a member."—*Gandhiji.*

गाधी जी के अनुसार वैयक्तिक विकास और सामाजिक प्रगति एक-दूसरे पर इतनी निर्भर हैं कि एक के बिना दूसरे की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। उन्होने लिखा है—"कोई भी राष्ट्र अपनी प्रगतिशील इकाइयों के अभाव में प्रगति नहीं कर

सकता है। इसके विपरीत, कोई भी व्यक्ति प्रगतिशील राष्ट्र के अभाव में, जिसका कि यह अग है, प्रगति नहीं कर सकता है।"

"A nation cannot advance without the units of which it composed advancing, and conversely, no individual can advan without the nation of which he is a part also advancing."
—*Gandhiji*

अत गाधी जी का विश्वास है—"व्यक्ति केवल राज्य में ही अपने सर्वोत्तम स्वरूप को प्राप्त कर सकता है, और राज्य अपने उच्चतम विकास को केवल इस शर्त पर प्राप्त कर सकता है कि प्रत्येक नागरिक का सर्वोत्तम विकास हो। राज्य व्यक्ति पर जो नियन्त्रण रखता है, वह एक साधन है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपना विकास करता है। हम पूर्ण और स्वतन्त्र इकाई रूप में व्यक्ति की कल्पना नहीं कर सकते हैं।"

"The individual can make the best of himself only in a State and the State can achieve its highest development only on the condition that each of its citizens realizes the best that is in him The restraint that the State places on the individual is a means by which he realizes himself. We cannot think of the individual as a complete independent unit."—*Gandhiji*.

इस प्रकार गाधी जी सामाजिक और वैयक्तिक उद्देश्यो मे समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं।

अन्त मे, हम डा० पटेल के शब्दों मे कह सकते हैं—"गांधी जी के दर्शन का सार यह है कि वैयक्तिकता का विकास केवल सामाजिक वातावरण में हो हो सकता है, जहाँ यह समान रुचियो और समान क्रियाओ पर पोषित हो सकता है। इसीलिए वे चाहते हैं कि हम अपने विद्यालयों को समुदायो में बदल दें, क्योंकि समुदाय में वैयक्तिकता को कुचला नहीं जाता है, वरन् सामाजिक सम्पर्कों और सेव के अवसरों से विकसित किया जाता है।"

"The essence of Gandhiji's philosophy is that individuality develops only in a social atmosphere where it can feed on common interests and common activities. He, therefore, wishes that we should transform our school into communities where individuality in not damped down, but developed through social contacts and opportunities of service."—*M S Patel*

पाठ्यक्रम और अध्ययन के विषय
Curriculum & Subjects of Study

गाधी जी ऐसा पाठ्य-क्रम चाहते थे, जो बच्चो को उनके भौतिक और सामाजिक वातावरण के अनुकूल बनाये। साथ ही वे यह भी चाहते थे कि पाठ्य-क्रम

उनको दस्तकारी के अनुकूल बनाये, क्योंकि दस्तकारी समाज के हित के लिए भौतिक साधनो का उपयोग करती है। इन दोनो बातो को ध्यान मे रखकर गाधी जी ने 'क्रिया-प्रधान पाठ्य क्रम' (Activity Curriculum) की योजना बनाई। इस पाठ्य-क्रम द्वारा वे विद्यालयो को कार्य, प्रयोग (Experimentation) और खोज के स्थानो मे बदलना चाहते थे। उन्होने इस पाठ्य-क्रम मे निम्नलिखित विषयो को स्थान दिया—

(१) *बेसिक क्राफ्ट (Basic Craft)—यह आगे लिखे विषयो मे एक हो* सकता है—(i) कृषि (Agriculture), (ii) कताई व बुनाई (Spinning & Weaving), (iii) गत्ते का काम (Card-Board Work), (iv) लकडी का काम (Wood Work), (v) धातु का काम (Metal Work)।

(२) मातृभाषा (Mother-Tongue)।

(३) गणित (Mathematics)—इस विषय मे क्राफ्ट और सामुदायिक जीवन से सम्बन्ध रखने वाली सख्याओ और रेखागणित की समस्याओं पर अधिक बल दिया जाय। जो बात गाधी जी चाहते थे, वह यह थी कि बालक क्राफ्ट-कार्य और बागवानी द्वारा उपस्थित की जाने वाली समस्याओ को हल करके जोड़, बाकी, गुणा और भाग सीखें। वे यह भी चाहते थे कि बालको को बुककीपिंग और वाणिज्य व्यवहार (Business Practice) का भी ज्ञान दिया जाय।

(४) सामान्य विज्ञान (General Science) - इसमे आगे लिखे विषय सम्मिलित हैं—(i) जीव विज्ञान (Zoology), (ii) शरीर विज्ञान (Physiology), (iii) रसायन शास्त्र (Chemistry), (vi) स्वास्थ्य-विज्ञान (Hygiene), (v) प्रकृति-अध्ययन (Nature Study), (vi) भौतिक सस्कृति (Physical Culture), और (vii) नक्षत्र-ज्ञान (Knowledge of Stars)।

(५) ड्राइङ्ग (Drawing) } इन विषयो का उद्देश्य—बालको मे शिक्षा
(६) सगीत (Music) } के प्रति वास्तविक रुचि उत्पन्न करना है।

पाँचवीं कक्षा तक बालको और बालिकाओ के लिये ही पाठ्य-क्रम हो। उसके बाद बालिकाओ को क्राफ्ट और सामान्य विज्ञान के बजाय गृह-विज्ञान (Domestic Science) पढ़ाया जाय।

शिक्षण-विधि

Method of Teaching

शिक्षण-विधि के बारे मे गाधी जी ने अपने विचार इन शब्दो मे व्यक्त किये है—"मेरा विश्वास है मस्तिष्क की सच्ची शिक्षा केवल शारीरिक अगों—हाथ, आँख, नाक, आदि—के उचित अभ्यास और प्रशिक्षण से प्राप्त की जा सकती है। दूसरे शब्दों में, बालक के शारीरिक अगों का विवेकपूर्ण प्रयोग उसके मस्तिष्क का विकास करने के लिए सबसे अच्छा और तेज तरीका है।"

शिक्षक बालक की भावुकता, लज्जाशीलता, पूर्व-विकास और जिज्ञासा को जानता है। वह जानता है कि बालक के साथ नम्र व्यवहार करना चाहिये क्योंकि वह अपना पूर्ण व्यक्तित्व रखता है। वह मैत्री-पूर्ण ढग से बालक के मनोभावों (Moods) के प्रति प्रतिक्रिया करता है। वह उसके द्वारा पूछी जाने वाली बातों को कभी अनसुनी नही करता है। वह उसकी चिन्ताओ के प्रति कभी उदासीन नहीं रहता है। वह उसके विचारो की ओर सदैव ध्यान देता है। वह उसकी खोजो और विचारो की प्रशंसा करता है। वह उसकी उत्सुकता को बढ़ाता है। वह उसकी समस्याओ को सुलझाने का विश्वास दिलाता है। वह उसका विश्वास-पात्र बनता है। साराश मे, वह उसका मित्र, दार्शनिक और पथ-प्रदर्शक बनने का प्रयास करता है।

शिक्षा-दर्शन का मूल्यांकन

Estimate of Educational Philosophy

गाधी जी के शिक्षा-दर्शन का मूल्याकन करते हुए डा० एम० एस० पटेल ने लिखा है—**"गांधी जी के दर्शन का सावधानी से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनके शिक्षा-दर्शन में प्रकृतिवाद और प्रयोजनवाद एक-दूसरे के विरोध न होकर पूरक हैं।"**

"Naturalism, idealism and pragmatism are complementary rather than contradictory in his philosophy of education."

M. S. Patel.

आदर्शवाद गाधी जी के दर्शन का आधार है और प्रकृतिवाद तथा प्रयोजनवाद केवल उसके सहायक हैं। गाधी जी का शिक्षा-दर्शन इस बात मे प्रकृतिवादी है कि वह बालक की प्रकृति का पूरा ध्यान रखता है और उसके अध्ययन पर बल देता है। एम० एस पटेल का कथन है—"उनका शिक्षा-दर्शन अपनी योजना में प्रकृतिवादी, अपने उद्देश्य में आदर्शवादी और अपने कार्य-क्रम और कार्य-विधि मे प्रयोजनवादी है। शिक्षा-दार्शनिक के रूप मे गांधी जी की वास्तविक महानता इस बात में है कि उनके दर्शन में प्रकृतिवाद, आदर्शवाद और प्रयोजनवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ अलग और स्वतन्त्र नहीं हैं, वरन् मिलकर एक हो गई हैं। इस प्रकार के ऐसे सिद्धान्त को जन्म दिया है, जो आज की आवश्यकताओ के लिये उपयुक्त होगा और मानव-आत्मा की सर्वोच्च आकांक्षाओं को सन्तुष्ट करेगा।"

"It is naturalistic in its setting, idealistic in its aim and pragmatic in its method and programme of work. The real greatness of Gandhiji as an educational philosopher consists in the fact that the dominant tendencies of naturalism, idealism and pragmatism are not separate and independent in his philosophy,

२८

भारतीय शिक्षा-शास्त्री और उनका दर्शन

INDIAN EDUCATORS & THEIR PHILOSOPHIES

३–डाक्टर रवीन्द्रनाथ टैगोर

Dr. Rabindranath Tagore

"रवीन्द्रनाथ ने किसी मौलिक दर्शन को उत्पन्न करने का दावा नहीं किया। उनका ध्येय भारतीय परम्परा का विश्लेषण करना या उस पर चिन्तन करना नहीं था। उन्होंने इसको अपनी स्वयं की सजीव शैली और सामान्य आलंकारिक भाषा में व्यक्त किया और आधुनिक जीवन में उसका औचित्य बताया।"

"Rabindranath did not claim to produce an original philosophy. His aim was not to analyse or speculate about the Indian tradition. He expressed it in his own vivid phrases and homely metaphors, and showed its relevance to modern life"

—*S. Radhakrishnan.*

जीवन-दर्शन

Philosophy of Life

टैगोर का परिवार सम्मानित, शिक्षित और धनी था। इस परिवार ने समाज-सुधार, राष्ट्रीय पुनरुत्थान, नारी-जाति की स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए अनेकों प्रशंसनीय कार्य किये थे। संस्कृति, साहित्य और दर्शन—इस परिवार की सम्पत्ति थे। इसमें सामाजिक और धार्मिक कार्य वैदिक विधि से किये जाते थे। इस प्रकार के पारिवारिक वातावरण ने टैगोर को अपना स्वयं का जीवन-दर्शन विकसित करने का अवसर दिया।

टैगोर को माण्डूक्य उपनिषद् की 'सत्यम्, शिवम्, अद्वैतम्' की धारणा में दृढ़ विश्वास था। उन्होंने ईश्वर को 'सर्वोच्च मानव' (Supreme Man) के रूप में

माना। वे अद्वैतवादी थे। ब्रह्मोसमाज से प्रभावित होने के कारण उन्होंने सर्वेश्वरवादी ब्रह्मवाद (Pantheistic Monism) को भी स्वीकार किया। कुछ मोमा तक वे सौन्दर्यात्मक समेकित ब्रह्मवादी (Aesthetic integral monist) भी थे। वे ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते थे। कभी-कभी वे उसे मानव-शरीर वाला, पर कभी कभी निराकार भी मानते थे। वे सृष्टि को उसके व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति मानते थे।

वे इस सृष्टि में सर्वत्र सामंजस्य देखते थे। वे ईश्वर के स्वर्गीय राज्य और और मानव के धर्म-निरपेक्ष राज्य में तथा प्रकृति और मनुष्य में भी सामंजस्य (Harmony) का समर्थन करते थे। उन्हें प्रकृति की वस्तुओं से प्रेम था और वे उसकी विजय की स्वीकृति नही देते थे। वे इस संसार को स्वर्गीय आनन्द से भर देना चाहते थे।

इस प्रकार के उच्च धार्मिक विचारों से सराबोर होते हुए भी, वे पूर्ण रूप से मनुष्य थे। डा० एम० पी० वर्मा के शब्दों में—"वे प्रेम, साथीपन और सहयोग के भविष्यवक्ता थे। उन्होंने मनुष्य को एकता और सामंजस्य का पाठ पढ़ाया। उन्होंने अनुभव किया कि मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ आनन्द—प्रगति करना है। उन्होंने विभाजित करने वाले सिद्धान्तों को संदेह की दृष्टि से देखा और सम्पूर्ण मानव-जाति को एक माना। वे ईश्वर में विश्वास करते थे। इसलिये वे मनुष्य में भी विश्वास करते थे। उनका विश्वास था कि मनुष्य परमात्मा का रूप है। ईश्वर की उपासना न केवल पवित्र नगरों के मन्दिरों और बड़े शहरों के गिरजाघरों में की जा सकती है, वरन् भूमि को जोतकर और पत्थरों को तोड़कर भी की जा सकती है।"

"He was a prophet of love, fellowship, and co-operation. He gave to the man the gospel of unity and harmony. He felt that the great festival of man was progressing He looked with indifference upon the narrow dividing walls He believed in God and hence he believed in Man Man represents the Creator. God is to be worshipped not only in the temples of the holy cities and the cathedrals of the big towns but also through tilling the ground and breaking the stones."—*M. P Varma.*

टैगोर मनुष्य की आत्मा को ऊँचा उठाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सरकार द्वारा बहुत समय से कुचली जाने वाली मानव-आत्मा स्वतन्त्र हो जाय। यह स्वतन्त्रता उसे केवल स्वर्गीय सुख, सौन्दर्य और मानसिक तथा नैतिक प्रगति से मिल सकती है। इस प्रकार मानव-आत्मा को स्वतन्त्र करके वे उसका आदर्शीकरण (Idealization) करना चाहते थे।

टैगोर के जीवन-दर्शन का सार डा० वर्मा ने इन शब्दों में दिया है—"रवीन्द्रनाथ ने मानव-स्वभाव के सवेगों के विनाश और उसके सौन्दर्यात्मक तथा

सामाजिक पक्षो के दमन की स्वीकृति नहीं दी। उन्होंने मनुष्य के व्यक्तित्व और शक्तियों के सब पहलुओं के पूर्ण और शक्तिशाली विकास के सिद्धान्त को स्वीकार किया। उन्होंने आत्मा की भव्यताओं को पहाड़ों की अंधेरी गुफाओं और जंगलो के एकान्त स्थानो मे खोजना अस्वीकार किया। वे जीवन की स्वीकृति चाहते थे उसके सभी पक्षो मे—सुखो और दु:खो में, आदर्शों और सद्भावनाओं मे, दुखद घटनाओं और संकटपूर्ण परिस्थितियो मे।"

"Rabindranath did not sanction mutilation of emotions and the suppression of the aesthetic and social sides of the human temperament. He accepted the gospel of a full-blooded masculine vigorous growth of the total aspects of a man's personality and faculties. He refused to seek the splendours of the spirit in the dark chambers of mountain caves and forest retreats He wanted an acceptance of life in all its phases—joys and sorrows, ideals and affections, and tragedies and predicaments."—*M P. Verma.*

शिक्षा-दर्शन

Educational Philosophy

अपने जीवन-दर्शन के साथ-साथ टैगोर ने अपने शिक्षा-दर्शन का भी निर्माण किया। १६०१ में शान्तिनिकेतन की स्थापना करने मे पहले ही वे पश्चिमी देशो के शिक्षा-शास्त्रियों का अध्ययन कर चुके थे। इसकी पुष्टि सुनीलचन्द्र सरकार के इस कथन से हो जाती है—"अपना विद्यालय स्थापित करने से पहले टैगोर को रूसो के विचारों और फ्रॉबेल की किंडरगार्टेन पद्धति का कुछ ज्ञान अवश्य था। और जिस समय उन्होंने अपने नये प्रयोग 'शिक्षा-सत्र' की स्थापना की, उस समय वे ड्यूवी की विचारधारा और प्रयोग से भली-भांति परिचित थे।"

"Tagore must have had some acquaintance with Rousseau's ideas and Froebel's Kindergarten system even before he started his school And by the time he founded his new experiment, the *Siksha-Satra,* he was fairly conversant with Dewey's school of thought and manner of experiment."—*Sunilchandra Sarkar.*

टैगोर शिक्षा-शास्त्री के रूप मे अपने स्वयं के प्रयास से प्रकट हुए। यह उनके जीवन और अनुभव का आवश्यक परिणाम था। उनका सम्बन्ध ऐसे परिवार से था, जो सब प्रकार के प्रगतिशील विचारो और कार्यों तथा विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक आन्दोलनों का केन्द्र था। उनके परिवार के सदस्यों मे प्रायः सभी अच्छी

बातो के जानकार थे, जैसे—दर्शन, विज्ञान, संस्कृति, कविता, कला, संगीत, नाटक, राष्ट्र-निर्माण, समाज-सुधार, व्यापार, व्यवसाय और आध्यात्मिक अनुभव। टैगोर मे ऐसी तीव्र और विविध ग्रहण-शक्ति थी, जिसका उदाहरण मानव-जाति के इतिहास मे कठिनाई से मिलता है। अत उन्होने सभी बातो को बडी सरलता से ग्रहण करके अपना लिया। इस स्व शिक्षा ने उनको विभिन्न शक्तियो और क्षमताओ को पूर्ण रूप से विकसित किया। उन्होने शिक्षा और उसके रहस्यो का अनेको प्रकार से अनुभव करके ज्ञान प्राप्त किया। सुनीलचन्द्र सरकार का कथन है—"उन्होंने स्वयं ही शिक्षा के उन सब सिद्धान्तों की खोज की, जिनका आगे चलकर उन्हें अपने लिये प्रतिपादन करना था और अपने शान्तिनिकेतन के प्रयोगो मे काम मे लाना था।"

"He discovered for himself all the theories and principles of education which he was later to formulate for himself and use in his Shantiniketan experiment"—*Sunilchandra Sarkar.*

उपरोक्त गुणो के साथ-साथ टैगोर मे और भी ऐसे अनेको गुण थे, जिन्होंने उनको अति महान् शिक्षा-शास्त्री बना दिया। उनकी बुद्धि इतनी तेज थी कि वे बडी सरलता से किसी भी ज्ञान को अपना बना सकते थे। उन्हे विज्ञानो और मानव शास्त्रो का बहुत अच्छा ज्ञान था। उनकी अपेक्षा ड्यूवी (Dewey) को अधिक बातो मे रुचि थी, पर उसमे टैगोर के समान कलात्मक विषयो मे रुचि नही थी, जैसे—कविता, उच्चकोटि का दर्शन, संगीत की सूक्ष्म बाते और कलाएँ। रूसो (Rousseau) और फ्रॉबेल (Froebel) के समान टैगोर प्रकृति की शक्ति और गुणो को मानते थे, पर प्रकृति से सम्पर्क रखने और इस सम्पर्क के कारण शिक्षा पर उसके प्रभावो को उन्होने रूसो और फ्रॉबेल के बजाय कही अधिक अच्छी तरह समझा। इस बात की पुष्टि उन सिद्धान्तो से हो जाती है, जिनको उन्होने शान्तिनिकेतन' मे स्थान दिया। रूसो को समाज से बहुत घृणा थी, पर टैगोर की सामाजिक भावना बहुत प्रबल थी। यह बात सत्य है कि उनका मस्तिष्क कल्पना के अति उच्च क्षेत्रो की उडान करता था, पर वे जीवन व्यतीत करने और कार्य करने के लिये मानव-समुदाय से घनिष्ठ सम्बन्ध रखना आवश्यक मानते थे। सुनील चन्द्र सरकार ने लिखा है—"टैगोर ने शिक्षा को जो योगदान दिया उसमे पेस्टालॉजी और फ्रॉबेल के कार्य सम्मिलित हैं और उनके कार्यों में जो कमियाँ रह गई थी उनकी पूर्ति भी है। उदाहरणार्थ—फ्रॉबेल की किंडरगार्टन पद्धति में खेल, नृत्य और रचनात्मक कार्यो का विशेष स्थान है। फ्रॉबेल ने बताया कि यह पद्धति सरलतापूर्वक सभी कार्य कर सकती है, जब जीवन की कठोर वास्तविकताओं से दूर अति सुन्दर वातावरण का निर्माण किया जाय। टैगोर का कहना था कि खेल, नृत्य और रचनात्मक कार्य बालकों को निश्चय रूप से जीवन के सुन्दर और सार्वभौमिक पक्षों से परिचित कराते हैं, पर ये उनको संसार की सब सत्य बातों को नहीं बताते हैं। टैगोर ने संसार और जीवन के रहस्यों को न तो

बाल्यावस्था तक, और न अनुभव के किसी विशेष स्तर तक सीमित रखा। उन्होंने इन रहस्यों को शिक्षा के सभी स्तरों पर कार्य का मुख्य आधार बनाया।"

"His contribution in this respect included and supplemented what Pestalozzi and Froebel had done The mystical element, the symbolic round of play and dance and creative occupations in Froebel's Kindergarten could operate only in an atmosphere of fairyland cut adrift from the rude realities of life They certainly introduced the children to certain beautiful and universal aspects of existence, but they, by no means, gave them the whole truth of the world they had inherited Tagore did not limit the function of the mystical element either only to the years of childhood or to a particular section or level of experience He employed the treasure to function as the nucleus of all educational experiences and efforts at all stages"—*Sunilchandra Sarkar.*

शिक्षा-दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त या आवश्यक तत्त्व
Basic Principles or Essential Features of Educational Philosophy

टैगोर को अपने समय की शिक्षा-प्रणाली से बहुत असन्तोष था। अतः उन्होंने अपने दर्शन के आधार पर शिक्षा के निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया—

१. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिये।
२. छात्रों को भारतीय विचारधारा और भारतीय समाज की पृष्ठभूमि का स्पष्ट ज्ञान कराया जाना चाहिये।
३. संगीत, अभिनय और चित्रकला की योग्यताओं का विधिवत् विकास किया जाना चाहिये।
४. परीक्षाओं और रटने की आदत का अन्त किया जाना चाहिए, और वैयक्तिक पहल-कदमी (Individual Initiative) को प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।
५. छात्रों को नगरों की गन्दगी और अनैतिकता से दूर—प्रकृति के शान्त और सायादार एकान्त में रहना चाहिये।
६. शिक्षा राष्ट्रीय होनी चाहिये, और उसे भारत के अतीत तथा भविष्य का ध्यान रखना चाहिये।
७. भारतीय शिक्षा और भारतीय विद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भारतीय दर्शन के मुख्य विचारों को स्थान दिया जाना चाहिये।
८. सम्पूर्ण राष्ट्र को केवल मातृ-भाषा के द्वारा ही सबसे अच्छी प्रकार से

शिक्षित किया जा सकता है। विदेशी भाषा के द्वारा कही भी अनन्त मूल्यो को प्राप्त नही किया गया है।

९. विज्ञानो का अध्ययन देश मे अपनी नींव तभी जमा सकता है, जब जन-साधारण को उनसे परिचित करा दिया जाय। जन-साधारण को उनसे तभी परिचित कराया जा सकता है, जब उनको मातृ-भाषा के द्वारा शिक्षा दी जाय।

१०. सच्ची शिक्षा—स्वतन्त्र प्रयासो द्वारा प्राप्त की जानी चाहिये।

११. शिक्षा को सजीव और गतिशील बनाने के लिये उसका आधार व्यापक होना चाहिये, और समुदाय के जीवन से उसका स्पष्ट सम्बन्ध होना चाहिये।

१२. छात्रो को पुस्तको के बजाय प्रत्यक्ष स्रोतो से ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

१३. भारत मे जन-साधारण को शिक्षा देने का असली तरीका केवल यह है कि असख्यों देशी प्रारम्भिक स्कूलो को फिर जीवित किया जाय।

१४ भारत मे शिक्षा की कोई भी सच्ची राष्ट्रीय प्रणाली विदेशी नमूने की नकल पर आधारित की जा सकती है।

१५. राष्ट्रीय शिक्षा वही होती है, जिसका राष्ट्र के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है और जो देश के व्यक्तियों के सचित प्रयासो, प्रिय आदर्शों तथा परम्पराओ के द्वारा स्वाभाविक रूप से विकसित होती है।

१६. शिक्षा का उद्देश्य—व्यक्ति की सभी जन्मजात शक्तियो का विकास करके उसके व्यक्तित्व का चतुर्मुखी और सामजस्यपूर्ण विकास करना होना चाहिये।

१७. शिक्षा का उद्देश्य—केवल अच्छा क्लर्क, कुशल किसान, वैज्ञानिक या शिल्पी बनाना नही है, वरन् उसे अनुभव की पूर्णता द्वारा पूर्ण मनुष्य के रूप मे विकसित भी करना है।

१८. बालको को प्रकृति के घनिष्ठ सम्पर्क मे रखकर शिक्षा दी जानी चाहिये। वे इसके बहुत इच्छुक रहते है, और जब उन्हे इससे अलग कर दिया जाता है, तब उनको दुःख होता है।

१९. बालक का जन्म प्रकृति के ससार और मनुष्य के ससार मे होता है। इसलिए दोनो संसारो के लिये उसका आकर्षण आवश्यक है।

२०. बालक को उत्तम मानसिक भोजन दिया जाना चाहिये, जिससे कि उसका विकास विचारो के वायुमडल मे हो।

२१. पाठ्य-क्रम मे छात्र के सामाजिक आदर्शों, परम्पराओ और रीति-रिवाजो को स्थान दिया जाना चाहिये। साथ ही उसमे परिचित वातावरण और दैनिक जीवन की दशाओ तथा समस्याओ को भी स्थान दिया जाना चाहिये।

२२. जहाँ तक सम्भव हो, शिक्षण-विधि का आधार जीवन की वास्तविक परिस्थितियाँ और प्रकृति तथा सामाजिक जीवन की वास्तविक बातें होनी चाहिये।

शिक्षा के उद्देश्य
Aims of Education

टैगोर के शैक्षिक उद्देश्यों पर विचार करते समय हमको यह बात याद रखनी चाहिये कि वे साहित्यिक अर्थ में शिक्षा-शास्त्री नहीं थे, और न उन्होंने रूसो (Rousseau) तथा स्पेंसर (Spencer) के समान शिक्षा पर कोई पुस्तक ही लिखी थी। फिर भी उनके अनेकों लेखों में हमें शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में उनके विचार मिलते हैं। हम उनको क्रमबद्ध रूप में यहाँ दे रहे हैं। यथा—

१. शारीरिक उद्देश्य Physical Aim

टैगोर शारीरिक शिक्षा के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने लिखा है कि काफी खेल-कूद और आवश्यक भोजन के अभाव में बंगाली बालक का शरीर और मस्तिष्क अविकसित रह जाते हैं। उन्होंने बच्चों के स्वस्थ शारीरिक विकास को इतना अधिक महत्त्व दिया और यह बात बलपूर्वक कही कि यदि आवश्यक हो, तो अध्ययन को त्याग कर भी बच्चे सुखद प्राकृतिक वातावरण में स्वतन्त्रतापूर्वक इधर-उधर घूम और खेल सकते हैं। उन्होंने समस्त शरीर के स्वस्थ और स्वाभाविक विकास के साथ-साथ शरीर के विभिन्न अंगों की शिक्षा और इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर भी बल दिया।

टैगोर का कहना है—"पेड़ों पर चढ़ने, तालाबों में डुबकियाँ लगाने, फूलों को तोड़ने और बिखेरने, और प्रकृति-माता के साथ नाना प्रकार की शैतानियाँ करने से बालकों को शरीर का विकास, मस्तिष्क का आनन्द और बचपन के स्वाभाविक आवेगों की संतुष्टि प्राप्त होती है।"

"Climbing trees, diving into ponds, plucking and tearing flowers, perpetrating thousand and one mischiefs on Mother Nature, they would have obtained the nourishment of the body, the happiness of the mind, and the satisfaction of the natural impulses of childhood"—*Tagore*.

२. मानसिक उद्देश्य : Mental Aim

टैगोर के अनुसार पुस्तकों से विचारों को प्राप्त करना मानसिक ज्ञान का केवल एक अंश है। इसलिये उन्होंने किताबी ज्ञान को कोई महत्त्व नहीं दिया। इसके विपरीत, उन्होंने प्रकृति और जीवन से प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करने की योग्यता पर बल दिया। यह उनके शिक्षा-दर्शन का प्रमुख आधार है। टैगोर का कहना है— "पुस्तकों के बजाय प्रत्यक्ष रूप से जीवित व्यक्ति को जानने का प्रयास करना शिक्षा

है। इससे न केवल कुछ ज्ञान प्राप्त होता है, वरन् इससे जानने की शक्ति का इतना विकास होता है, जितना कक्षा में सुने जाने वाले व्याख्यानों से होना असम्भव है। यदि हमारे मस्तिष्क, संवेगों और कल्पना को वास्तविकता से अलग कर दिया जाता है, तो वे निर्बल और विकृत हो जाते हैं।"

"There is education in the mere effort of knowing a living person directly instead of through books. It not only gives some knowledge but develops the faculty of knowing to such an extent as is impossible in class-lectures. *Our intellect, emotions, or* imagination, if divorced from reality, become feeble and distorted."— *Tagore.*

इस प्रकार टैगोर का विश्वास था कि वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करना ही सच्ची मानसिक शिक्षा है। उनका यह भी विश्वास था कि शिक्षा का उद्देश्य—छात्रों को वास्तविक जीवन की बातों, स्थितियों और पर्यावरणों की जानकारी कराना और उनसे अनुकूलन कराना होना चाहिये। उनका कहना था कि अवास्तविक शिक्षा हमारे देशवासियों के मानसिक कष्ट, नैतिक रोग और मातृभूमि के बारे में अज्ञानता के लिए उत्तरदायी है। अतः टैगोर ने बताया— "इस समय हमारा ध्यान चाहने वाली प्रथम और महत्त्वपूर्ण समस्या है, हमारी शिक्षा और हमारे जीवन में सामंजस्य स्थापित करने की समस्या।"

"The first and foremost problem deserving our attention at the present moment is the problem of creating harmony between our education and our life."—*Tagore*

३. नैतिक और आध्यात्मिक उद्देश्य : Moral & Spiritual Aims

टैगोर ने नैतिक शिक्षक के रूप में अनेकों नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य या आदर्श बताए। इनमें से एक अनुशासन का मूल्य है, जो व्यक्ति की नैतिक शिक्षा के लिए बहुत आवश्यक है। उनके अनुसार अनुशासन न तो बाह्य व्यवस्था है और न अंधी आज्ञाकारिता। इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है—"वास्तविक अनुशासन का अर्थ है—अपरिपक्व और स्वाभाविक आवेगों की अनुचित उत्तेजना और अनुचित दिशाओं में विकास से सुरक्षा। स्वाभाविक अनुशासन की इस स्थिति में रहना छोटे बच्चों के लिये सुखदायी है। यह उनके पूर्ण विकास में सहायता देता है।"

"Real discipline means protection of raw; natural impulses om unhealthy excitement and growth in undesirable directions. o remain in this state of natural discipline, is happy for young children. It helps their full development."—*Tagore.*

'स्वाभाविक अनुशासन' से टैगोर का अभिप्राय—'आन्तरिक अनुशासन' nner discipline) या 'आत्म-अनुशासन' (Self-discipline) से है। यह अनुशासन स्या और साधना का परिणाम है। इसमें कारण या कार्य के लिये दृढ़ भक्ति होती । इसीलिये इस पर आधारित सब महान् कार्य सफल होते हैं। इस प्रकार का नुशासन प्राप्त करने के लिए टैगोर ने अपने देशवासियों से कई बार बलपूर्वक हा। *उन्होंने बताया कि इसी अनुशासन के कारण जापान के लोगों ने आश्चर्यजनक प्रगति की है।*

एक दूसरा मूल्य या आदर्श जो टैगोर ने हमारे सामने रखा, वह है—शान्ति और धैर्य का मूल्य। उनका कहना है कि इस मूल्य को प्राप्त करना आत्म-अनुशासन की प्रक्रिया का अन्तिम लक्ष्य है। इस मूल्य की प्राप्ति नम्रता की भावना को जन्म देती है। यह भावना महान् आध्यात्मिक बल (Spiritual force) है जो शक्तिशाली व्यक्तियों द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।

टैगोर ने एक और मूल्य या आदर्श बताया, जिसका उद्देश्य—मनुष्य का आन्तरिक विकास करना है। उनके अनुसार आन्तरिक विकास का अर्थ है—आन्तरिक *स्वतन्त्रता और आन्तरिक शक्ति तथा ज्ञान। इस आदर्श के महत्व को बताते हुए* **डा० एच० बी० मुखर्जी ने लिखा है—"आन्तरिक स्वतन्त्रता के इस आदर्श को 'स्व' की सब प्रकार की दासता से मुक्ति के रूप में व्यक्त किया जा सकता है। इसका उद्देश्य—मस्तिष्क को पुस्तकीय ज्ञान के आधिपत्य से स्वतन्त्र करना है।"**

"This ideal of inner freedom may be expressed as the liberation of the self from all kinds of slavery It aims at emancipation of the intellect from the domination of bookish knowledge."

—*H B. Mukherjee.*

स्वयं टैगोर का कथन है—"अच्छी शिक्षा की विशेषता यह है कि वह मनुष्य *को अपना दास न बनाकर स्वतन्त्र बनाती है।"*

"The character of good education is that it does not overpower man; it emancipates him." —*Tagore*

प्रकृतिवादी शिक्षा की धारणा

Conception of Naturalistic Education

हमें टैगोर के प्रकृतिवादी शिक्षा-दर्शन से सम्बन्धित विचार उनके निबन्ध 'शिक्षा-समस्या' में मिलते हैं। इसमें उन्होंने लिखा है कि आदर्श विद्यालय की स्थापना मानव-निवास से दूर, एकान्त में, खुले आकाश के नीचे, चौड़े मैदान पर और वृक्षों तथा पौधों के बीच में की जानी चाहिए। वे ऐसा क्यों चाहते थे? इसके बारे में **डा० मुकर्जी ने लिखा है—"टैगोर ने बताया कि मनुष्य को अपने पूर्ण विकास के**

टैगोर का तर्क था कि इस प्रकार के प्रशिक्षण का वास्तविक महत्व होता है। इस प्रशिक्षण का उस शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है, जिसे बालक इस अवधि में स्कूलों में प्राप्त करते हैं या नहीं प्राप्त करते हैं। पर दुर्भाग्यवश उनको इस प्रकार का प्रशिक्षण नहीं मिलता है। कारण यह है कि समय से पहले ही उनको प्रकृति की गोद से छीन लिया जाता है और कक्षा की चहारदीवारी में तथा कुछ समय के बाद किसी फैक्ट्री के दफ्तर में बन्द कर दिया जाता है। इस प्रकार उनको वह महत्वपूर्ण प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है, जो प्रकृति स्वयं उनको देती है। इसलिए टैगोर का सुझाव था—"सांसारिक झंझटों में फंसने से पहले बालकों को अपने निर्माण-काल में प्रकृति का प्रशिक्षण प्राप्त करने दिया जाना चाहिए। बैंचों, ब्लेक-बोर्डों, पुस्तकों और परीक्षाओं की तुलना में वृक्ष और पौधे, आकाश का स्वच्छ विस्तार, शुद्ध और स्वच्छन्द वायु, *तालाब का स्वच्छ और शीतल जल और प्रकृति का विस्तृत क्षेत्र कम* आवश्यक नहीं है।"

"So, before being engulfed in wordly affairs, let children receive the upbringing of Nature during their formative period. The trees and plants, the clear expanse of the sky, the pure free air, the clean cool tank, and the wide aspect of Nature are not less necessary than benches and black-boards, books and examinations."

—*Tagore*

पाठ्य-क्रम
Curriculum

पाठ्य-क्रम शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है। अतः टैगोर के पाठ्य-क्रम सम्बन्धी विचार शिक्षा के उद्देश्यों के समान विस्तृत और व्यापक थे। उनके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मनुष्य का पूर्ण विकास है। अतः उनके पाठ्य-क्रम में मानव-जीवन के सभी पक्षों—शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक—के विकास को स्थान दिया गया है।

इस पूर्ण विकास के लिए टैगोर ने बालकों के पूर्ण अनुभव पर बल दिया, जिससे कि वे विभिन्न स्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सकें। अपने समय के भारतीय विद्यालयों के पाठ्य-क्रम से उनको दो शिकायतें थीं —(१) यह केवल मस्तिष्क के विकास पर बल देता है, (२) इसका उद्देश्य बालक को धन कमाने के योग्य बनाना है। उनका कहना था कि हर-एक छात्र किसी भी तरह से परीक्षा पास करने और नौकरी पाने का इच्छुक रहता है। इसलिए वह व्यापक पाठ्य-क्रम का गम्भीर अध्ययन करने के लिए तैयार नहीं होता है। वह कम से कम अध्ययन करना चाहता है और कम अध्ययन उत्तम विकास के लिए काफी नहीं है।

पाठ्य-क्रम के इन दोषों को ध्यान में रखकर टैगोर ने अति व्यापक पाठ्य-क्रम की रचना की। उन्होंने इसे सीखने के लिए कुछ निश्चित विषयों के रूप में

टैगोर का तर्क था कि इस प्रकार के प्रशिक्षण का वास्तविक महत्त्व होता है। इस प्रशिक्षण का उस शिक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं है, जिसे बालक इस अवधि में स्कूलों मे प्राप्त करते हैं या नही प्राप्त करते हैं। पर दुर्भाग्यवश उनको इस प्रकार का प्रशिक्षण नहीं मिलता है। कारण यह है कि समय से पहले ही उनको प्रकृति की गोद से छीन लिया जाता है और कक्षा की चहारदीवारी मे तथा कुछ समय के बाद किसी फैक्ट्री के दफ्तर मे बन्द कर दिया जाता है। इस प्रकार उनको वह महत्त्वपूर्ण प्रशिक्षण नहीं मिल पाता है, जो प्रकृति स्वयं उनको देती है। इसलिए टैगोर का सुझाव था—"सासारिक झंझटों मे फँसने से पहले बालकों को अपने निर्माण-काल मे प्रकृति का प्रशिक्षण प्राप्त करने दिया जाना चाहिए। बेंचों, ब्लेक-बोर्डों, पुस्तकों और परीक्षाओं की तुलना मे वृक्ष और पौधे, आकाश का स्वच्छ विस्तार, शुद्ध और स्वच्छन्द वायु, तालाब का स्वच्छ और शीतल जल और प्रकृति का विस्तृत क्षेत्र कम आवश्यक नहीं है।"

"So, before being engulfed in wordly affairs, let children receive the upbringing of Nature during their formative period. The trees and plants, the clear expanse of the sky, the pure free air, the clean cool tank, and the wide aspect of Nature are not less necessary than benches and black-boards, books and examinations."

—*Tagore*

पाठ्य-क्रम
Curriculum

पाठ्य-क्रम शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है। अतः टैगोर के पाठ्य-क्रम सम्बन्धी विचार शिक्षा के उद्देश्यों के समान विस्तृत और व्यापक थे। उनके अनुसार शिक्षा का मुख्य उद्देश्य—पूर्ण जीवन की प्राप्ति के लिए मनुष्य का पूर्ण विकास है। अतः उनके पाठ्य-क्रम मे मानव-जीवन के सभी पक्षों—शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक—के विकास को स्थान दिया गया है।

इस पूर्ण विकास के लिए टैगोर ने बालकों के पूर्ण अनुभव पर बल दिया, जिससे कि वे विभिन्न स्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सकें। अपने समय के भारतीय विद्यालयों के पाठ्य-क्रम से उनको दो शिकायतें थीं —(१) यह केवल मस्तिष्क के विकास पर बल देता है, (२) इसका उद्देश्य बालक को धन कमाने के योग्य बनाना है। उनका कहना था कि हर-एक छात्र किसी भी तरह से परीक्षा पास करने और नौकरी पाने का इच्छुक रहता है। इसलिए वह व्यापक पाठ्य-क्रम का गम्भीर अध्ययन करने के लिए तैयार नहीं होता है। वह कम से कम अध्ययन करना चाहता है और कम अध्ययन उत्तम विकास के लिए काफी नहीं है।

पाठ्य-क्रम के इन दोषों को ध्यान में रखकर टैगोर ने अति व्यापक पाठ्य-क्रम की रचना की। उन्होंने इसे सीखने के लिए कुछ निश्चित विषयों के रूप मे

वास्तविक परिस्थितियों, प्रकृति की वास्तविक बातों और समाज के वास्तविक जीवन पर आधारित किया। उदाहरणार्थ—उन्होंने बताया कि प्रकृति की बातों का अध्ययन उनको देखकर किया जाय। इसी प्रकार भूगोल, इतिहास और सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन प्रत्यक्ष स्रोतों से किया जाय। टैगोर ने बताया कि ज्ञान को स्वतन्त्र प्रयास और विचार द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए। उनका कहना था—"वास्तविक वस्तुओं के सम्पर्क में आने से जो छात्रों के सामने उपस्थित रहती हैं, उनकी निरीक्षण और तर्क-शक्ति का विकास होगा।"

"In contact with the real objects that are present before the pupils their powers of observation and reasoning will develop"

—*Tagore.*

३. वाद-विवाद और प्रश्नोत्तर विधि Discussion & Question-Answer Method

१९२९ मे तन्येन्द्रनाथ घोष को लिखे जाने वाले पत्र मे उन्होंने बताया कि वास्तविक शिक्षा पुस्तकों पर आधारित न होकर जीवन और समाज के अध्ययन पर आधारित है। इस पत्र मे उन्होंने लिखा कि छात्रो को यह शिक्षा प्रश्नो और उत्तरो की विधि से दी जानी चाहिये। छात्रो के सामने दैनिक जीवन की विभिन्न समस्यायें रखी जायें। वे उन पर वाद-विवाद करें और उनको हल करने के उपाय बताएँ। इस प्रकार की कुछ समस्यायें हैं—गाँव का आर्थिक आधार क्या है? सहकारी सिद्धान्त का क्या अर्थ है? यह सिद्धान्त हमारे देश के लिये क्यों आवश्यक है?

४. भ्रमण के समय पढ़ाना . Teaching while Walking

टैगोर का कहना था—"भ्रमण के समय पढ़ाना, शिक्षण की सर्वोत्तम विधि है।" ("Teaching while walking is the best method of teaching.") इसके दो कारण है:—(१) भ्रमण के समय हम अनेको वस्तुओ को प्रत्यक्ष रूप से देखकर उनका ज्ञान प्राप्त करते हैं; (२) भ्रमण हमारी मानसिक शक्तियों को सतर्क रखता है, जिसके फलस्वरूप हम देखी जाने वाली बातों को सरलता से समझ लेते हैं। इसके विपरीत, कक्षा मे जो शिक्षा दी जाती है, वह गतिशील न होकर गतिहीन होती है। फलतः उसका प्रभाव न तो मस्तिष्क पर पड़ता है, और न शरीर पर।

५. क्रिया-सिद्धान्त : Activity Method

टैगोर की शिक्षण-विधि की एक प्रमुख विशेषता थी—क्रिया-सिद्धान्त। टैगोर ने इस सिद्धान्त का उससे अधिक गम्भीर अर्थ लगाया, जिसे हम जानते हैं। यह उनके दर्शन पर आधारित है। इस दर्शन के अनुसार शरीर और मस्तिष्क को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। अतः शारीरिक क्रिया शरीर और मस्तिष्क दोनों को शक्ति देती है। यही कारण था कि उन्होंने अपने स्कूल के छात्रो के लिये किसी-न-किसी दस्तकारी का सीखना अनिवार्य कर दिया था।

them living symbols of what an ideal should be. Shantiniketan in 1901 had few parallels as a progressive school not only in India but also in the whole world"—*H B Mukherjee.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. "Tagore's contribution to education presents a practical synthesis between the individual and the social ideals in education." Comment upon the statement.
2. Give a critical estimate of the educational philosophy of Tagore.
3. Show, how Tagore's Naturalism compares with that of Rousseau.
4. Discuss briefly the aims of education as enunciated by Rabindranath Tagore.
5. What were Tagore's views on curriculum and method of teaching ?
6. Give in brief Tagore's philosophy of life and discuss its influence on his educational philosophy.

२९

भारतीय शिक्षा-शास्त्री और उनका दर्शन

INDIAN EDUCATORS & THEIR PHILOSOPHIES

४–श्री अरविन्द घोष

Shri Aurobindo Ghosh

"शिक्षा पर श्री अरविन्द के विचार सिद्ध करते हैं कि वे हमारे देश के सब से प्रमुख और प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्रियों में से हैं। उनका यह निश्चित विचार था कि उनके समय के स्कूलों और विश्वविद्यालयों में जो शिक्षा दी जा रही थी, वह राष्ट्रीय मस्तिष्क, आत्मा और चरित्र को राष्ट्रीयता के गुणों से वंचित, पतित और क्षीण बनाने वाली थी। उनका कथन है कि जिस प्रकार की शिक्षा की हमें अपने देश के लिए आवश्यकता है, वह भारतीय आत्मा, आवश्यकता है, स्वभाव और संस्कृति के अनुकूल होनी चाहिए।"

"His views on education reveal that *Shri Aurobindo* is one of the most eminent and distinguished *educationists of our country*. *It was* his considered opinion that education, as was obtained in the then existing schools and universities was denationalising, degrading and impoverishing to the national mind, soul and character. He maintains that the kind of education we need in our country is an education proper to the Indian soul and need and temperament and culture."—*R. S. Mani.*

जीवन-दर्शन

Philosophy of Life

श्री अरविन्द का दर्शन ज्ञेयवादी (*Gnostic*) है। वे विकास (*Evolution*) में विश्वास करते हैं। उनके अनुसार इस विकास का लक्ष्य है—जगत में व्याप्त

दिव्य-शक्ति का प्रगतिशील बोध। उनके विचार से इस विश्व के सब विकासशील प्राणियों का एक ही प्रयोजन और लक्ष्य है—पूर्ण और अखण्ड चेतना की प्राप्ति। मानव को व्यक्तिगत और सामाजिक रूप मे इसी पूर्ण अखण्ड चेतना को प्राप्त करना है। वे यह मानते हैं कि सृष्टि की रचना के पीछे एक प्रयोजन है, जिसका लक्ष्य है—परम चेतना (Supreme Consciousness) की प्राप्ति।

चेतना के विकास-क्रम की दो विशेषतायें हैं। पहिली–पदार्थ, प्राण, मन और बुद्धि—इनका अस्तित्व अलग-अलग नहीं है, बल्कि हर-एक अनुवर्ती स्तर अपने पूर्ववर्ती स्तर से जुड़ा हुआ है। इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द का तर्क यह है कि किसी पदार्थ या वस्तु से वही चीज उत्पन्न हो सकती है, जो पहले से उसमें मौजूद हो। जड़ पदार्थ मे से प्राण इसलिये विकसित हुआ, क्योंकि वह उसमें पहले से ही मौजूद था। इसी तरह प्राण से मन का विकास इसलिये हुआ, क्योंकि वह प्राण में विद्यमान था। इसी प्रकार बुद्धि और चेतना (Consciousness Proper) दोनो प्राण मन (Vital Mind) मे निहित थे। अतः चेतना अव्यक्त रूप मे प्राण और पदार्थ—दोनो विद्यमान थी। अतः इस विकास-क्रम मे मौलिक तत्त्व चेतना है, जो विकास के सभी स्तरो को एक सूत्र मे बांधे हुए है।

विकास-क्रम की दूसरी विशेषता यह है कि हर-एक उच्च स्तर पर पहुँच कर विकसित चेतना, अपने पूर्ववर्ती और अनुवर्ती स्तरो को अपने ढंग से और अपने नियमो के अनुसार प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए—प्राण और पदार्थ का समवाय रूप प्राणी है। प्राणी पदार्थ से भिन्न रूप मे कार्य करता है, क्योंकि जड़-पदार्थ के समान वह कठोर यांत्रिक नियमो से शासित नहीं होता है।

श्री अरविन्द का कथन है कि विकास की यह प्रक्रिया निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है और विकास-क्रम में चेतना की एक ऐसी स्थिति अवश्य आयेगी, जिसे वे अतिमानसिक स्तर कहते हैं। इस स्तर तक पहुँच जाने पर भूमि पर एक नवीन चेतना, एक नवीन जाति का उदय होगा। उनका कहना है कि चट्टानो और खनिजों से वनस्पति उत्पन्न हुई, वनस्पति से पशु की उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार पशु से मानव का विकास हुआ और मानव से अतिमानव का विकास होना अवश्यम्भावी है। जिस तरह तर्क और युक्ति मानव-मन की विशेषतायें हैं, उसी तरह सहज ज्ञान, अन्तःप्रेरणा और दैवी प्रकाश—अतिमानव की विशेषताएं हैं।

चेतना की इस अति सामान्य स्थिति को प्राप्त करना मानव-चेतना के लिये असम्भव है। अतिमानसिक चेतना केवल अतिमानव के ही अधिकार की वस्तु है। यदि मनुष्य किसी प्रकार इस अतिमानसिक स्तर को प्राप्त कर लेता है, तो अज्ञान का नाश हो जाता है और फिर केवल ज्ञान या प्रकाश ही रह जाता है। इस अति-मानसिक स्तर पर पहुँच जाने पर मनुष्य ज्ञान से अधिक—अधिक ज्ञान, प्रकाश से अधिक—अधिक प्रकाश की ओर अग्रसर होता है। इस स्तर पर पहुँच जाने पर

आश्चर्यजनक शान्ति का अनुभव होता है, मानव द्वारा सृष्टि का रहस्य स्पष्ट हो जाता है और इन्द्रियों की इस अवस्था में सत्ता की चेतना का अन्त हो जाता है।

शिक्षा-दर्शन

Educational Philosophy

श्री अरविन्द का शिक्षा-दर्शन आध्यात्मिक साधना, ब्रह्मचर्य और योग पर आधारित है। उनका विश्वास है कि इस प्रकार की शिक्षा से मानव का पूर्ण विकास किया जा सकता है। श्री अरविन्द का कथन है —"सच्ची और वास्तविक शिक्षा केवल वही है जो मानव की अन्तर्निहित समस्त शक्तियों को इस प्रकार विकसित करती है कि वह उनसे पूर्ण रूप से लाभान्वित होता है। यह शिक्षा जीवन को म बनाने में मानव की सहायता करती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा जीवन व मानव जाति के मन और आत्मा से और उस सब मानवता के मन और आत्मा जिसका कि वह अंग है साथ सम्बन्ध की स्थापना में सहायता देती है।"

"That alone would be a true and living education which helps to bring out to full advantage, makes ready for the full purpose and scope of human life all that is in the individual man, and which at the same time helps him to enter into his right relation with life, mind and soul of the people to which he belongs and with that great total life, mind and soul of humanity of which he himself is a unit and his people or nation a living, as separate and yet inseparable member."—*Shri Aurobindo.*

श्री अरविन्द के अनुसार अन्त करण या मानस—शिक्षा का मुख्य अङ्ग है। उन्होंने अन्त करण के चार स्तर बताये हैं—चित्त, मनस, बुद्धि और ज्ञान। उन मतानुसार मानव की इन शक्तियों में क्रमिक विकास होता है। अतः शिक्षा ऐस होनी चाहिये कि वह इन शक्तियों को विकसित कर सके। केवल ज्ञान की प्राप्ति ही शिक्षा नहीं है। सच्ची शिक्षा वही है, जिसमें मानव का पूर्ण विकास करने की क्षमता हो। मानव का पूर्ण विकास क्या है?—इस सम्बन्ध में श्री अरविन्द के विचार निम्नांकित हैं —

१ मानव का आध्यात्मिक विकास करके उसमें दिव्यता को कुसमि करना।

२ मानव की सब व्यक्तिगत क्षमताओं और विलक्षणताओं को विकसित करके उसमें दिव्य प्रकाश करना और उसे मानव के स्तर से ऊँचा उठाकर दिव्य पुरुष बनाना।

३. मानव में अन्तर्निहित प्रेम, प्रतिभा और सार्वभौमिकता को विकसित करके उसे सृष्टि के सम्पूर्ण सौंदर्य और आनन्द की अनुभूति कराना।

श्री अरविन्द ने अपनी शिक्षा में किसी ऐसे विषय की उपेक्षा की नहीं की, जिसमे शैक्षिक अभिव्यक्ति और जीवन की क्रियाशीलता के गुण मौजूद थे। यही कारण है कि उनकी शिक्षा मे राजनीति, समाज, व्यापार, साहित्य, कविता, वास्तु-कला और मूर्तिकला को उचित स्थान दिया गया। उनका एकमात्र उद्देश्य था—इन सभी विषयों में जीवन का नया संचार करके उनको एक नया रूप देना। वे इनको इतना अधिक विकसित कर देना चाहते थे कि इनके माध्यम से श्रेष्ठ मानवता और आत्मा की पूर्णता का प्रकाश बिल्कुल स्पष्ट रूप से देखा जा सके। इस प्रकार उनकी शिक्षा का चरम लक्ष्य—सम्पूर्ण मानव-जाति का सर्वाङ्गीण विकास करके आध्यात्मिक आधार पर विश्व के समस्त राष्ट्रों की स्थापना करना था।

श्री अरविन्द का कथन था कि शिक्षा मे बालक पर किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं लगाना चाहिये, वरन् उसे पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रहने देना चाहिए। उनका विश्वास था कि शिक्षा का बालक के स्वभाव के अनुकूल होना आवश्यक है। बालक जड पदार्थ नहीं है, जिसे शिक्षक जिधर भी चाहे ले जाय। वह सभी व्यक्तियों के समान स्वय विकसित होने वाला प्राणी है। अतः माता-पिता और शिक्षक का कर्त्तव्य *है कि वे बालक को अपनी मानसिक, नैतिक और व्यावहारिक शक्तियो को स्वय तथा* स्वतन्त्र रूप में विकसित करने मे सहायता दें।

शिक्षा-दर्शन के आधारभूत सिद्धान्त या आवश्यक तत्त्व

Basic Principles or Essential Features of Educational Philosophy

श्री अरविन्द अपने समय की शिक्षा-प्रणाली से बहुत असंतुष्ट थे। अत उन्होंने अपने दर्शन के आधार पर शिक्षा के निम्नांकित सिद्धान्त बताये .—

१. शिक्षा का माध्यम—मातृभाषा होनी चाहिए।
२. शिक्षा का मुख्य आधार—ब्रह्मचर्य होना चाहिये।
३. पाठ्य-क्रम के विषय रोचक होने चाहिये।
४. इन्द्रियों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिये।
५. बालक को शिक्षा का केन्द्र होना चाहिये।
६. शिक्षा बालक के स्वभाव और मनोवैज्ञानिक स्थिति के अनुकूल होनी चाहिए।
७. पाठ्य-क्रम मे ऐसे विषय होने चाहिये, जो बालक के व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने मे सहायता दें।
८. ब्रह्मचर्य द्वारा तपस्, तेजस्, ओजस् और विद्युत् मे अधिक-से-अधिक वृद्धि की जानी चाहिए, क्योंकि इस वृद्धि के अनुपात मे ही बालक का शरीर, मन, हृदय और आत्मा सशक्त होंगे।
९. शिक्षा का उद्देश्य—बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक

और संवेगात्मक विकास करके उसे 'पूर्ण मानव' बनाना होना चाहिए
१०. शिक्षक का स्थान मित्र और पथ-प्रदर्शक के रूप में होना चाहिये।
११ शिक्षक का कार्य—तमस् को दूर करना, रजस् को अनुशासित करना और सत्य को जाग्रत करना होना चाहिए।
१२. धार्मिक शिक्षा की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए, क्योंकि इससे भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है।
१३. धार्मिक शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसका जीवन मे व्यावहारिक उपयोग किया जा सके।
१४. समस्त ज्ञान व्यक्ति के अन्दर निहित है। अतः शिक्षा का मुख्य कार्य इस ज्ञान का उद्घाटन करना होना चाहिए।
१५. सच्ची और वास्तविक शिक्षा केवल वही है, जो मानव को अन्तर्निहि समस्त शक्तियो को इस प्रकार विकसित करती है कि वह उनसे पूर्ण रूपेण लाभान्वित होता है।
१६. शिक्षा प्राप्त करने वालो की शारीरिक शुद्धि की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये।
१७. शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य—मानव के अन्तःकरण का विकास करना होना चाहिये।
१८. शिक्षा को बालक की नैतिकता का विकास करना चाहिये।
१९. 'पूर्ण योग' (Integral Yoga) के लिए 'पूर्ण शिक्षा' (Integral Education) की आवश्यकता है। पूर्ण शिक्षा का अभिप्राय है—सम्पूर्ण मानव की शिक्षा।
२०. वास्तविक शिक्षा का प्रयोजन और उद्देश्य है—चेतना का विकास उसका संस्कार और रूपान्तर, क्योंकि चेतना ही परम सत्ता और सृष्टि का आधारभूत सत्य है।

शिक्षा के उद्देश्य
Aims of Education

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :—

१. शारीरिक विकास और शुद्धि : Physical Development & Purity

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का पहला उद्देश्य है—बालक के शरीर का पूर्ण और उत्तम विकास। पर इसके साथ-साथ उसकी शारीरिक शुद्धि पर भी बल दिया जाना चाहिए। कारण यह है कि शरीर के द्वारा ही मानव-धर्म और उसके सब उद्देश्यो की प्राप्ति होती है और शरीर ही मानव को दैवी जीवन और आध्यात्मिक जीवन के स्तर पर पहुँचा सकता है।

श्री अरविन्द का सस्कृत के इस प्राचीन सूत्र मे दृढ़ विश्वास है—'शरीरम् खलु धर्म साधनम्'—अर्थात् शरीर ही धर्म की प्राप्ति का साधन है। उनका कथन है—"यदि हम व्यक्ति का पूर्ण विकास चाहते हैं, तो उसके शारीरिक विकास की अवहेलना नहीं की जा सकती है, क्योंकि शरीर ही भौतिक आधार है, शरीर ही वह साधन है, जिसका हमें प्रयोग करना है।"

"If our seeking is for a total perfection of the being, the physical part of it cannot be left aside, for the body is the material basis, the body is the instrument which we have to use."

—*Shri Aurobindo.*

२. ज्ञानेन्द्रियो का प्रशिक्षण : Training of the Senses

श्री अरविन्द के अनुसार—ज्ञानेन्द्रियों का पूर्ण प्रशिक्षण अति आवश्यक है। अतः उनके विचार मे शिक्षक को इस ओर अधिक-से-अधिक ध्यान देना चाहिए। उनके मतानुसार ज्ञानेन्द्रियो के प्रशिक्षण के साधन स्नायु-शुद्धि (Nerve Purification) चित्त-शुद्धि और मानस-शुद्धि हैं, जो योग-साधन ही के रूप हैं। इस प्रकार का *नियमित प्रशिक्षण प्रदान करके बालको की ज्ञानेन्द्रियों का विकास किया जा सकता है।*

श्री अरविन्द का कथन है—"शिक्षक का पहला कार्य बालक में छः इन्द्रियो के उचित प्रयोग का विकास करना है। उसे यह देखना है कि प्रयोग न किये जाने के कारण ये इन्द्रियाँ अविकसित न रह जायं, वरन् शिक्षक के पथ-प्रदर्शन मे स्वय बालक के द्वारा उस पूर्ण यथार्थता और तीव्र भावुकता के लिये प्रशिक्षित की जायँ, जिनकी कि उनमे क्षमता है।"

"The first business of the educationist is to develop in the child the right use of the six senses,[1] to see that they are not stunted by disuse but trained by the child himself under the direction to that perfect accuracy and keen sensitiveness of which they are capable." —*Shri Aurobindo*

३. मानसिक शक्तियों का विकास : Development of Mental Faculties

श्री अरविन्द ने मानसिक शक्तियों के अन्तर्गत—स्मृति, निर्णय-शक्ति, कल्पना, चिन्तन आदि को स्थान दिया है। उनके मतानुसार बालको की ज्ञानेन्द्रियों के विकास के बाद उनकी मानसिक शक्तियो का विकास किया जाना चाहिये। इस विकास का आधार—बालको की अभिरुचियाँ होनी चाहिये। जब तक उनको अपनी विभिन्न

---

[1] The six senses are—sight hearing, smell, touch, taste, mind or *manas* (the sixth sense of our Indian Psychology).

अभिरुचियों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने के ... अवसर नहीं मिलता, वह इस प्रकार मानसिक शक्तियों का विकास नहीं होता।

४. तर्क-शक्ति का विकास : Development of Reasoning Power

मानसिक शक्तियों के विकास के बाद बालक की तर्क-शक्ति का विकास किया जाना चाहिए। इसका कारण यह है कि तर्क के लिए सामग्री, विचारों या तथ्यों का संग्रह मानसिक शक्तियों द्वारा होता है। श्री अरविन्द के अनुसार उचित तर्क के लिए तीन बातें अनिवार्य हैं (१) तथ्य जिनसे तर्क प्रारम्भ होता है, सही होना चाहिए। (२) संग्रह की हुई सामग्री (Data) पूर्ण और विस्तृत होनी चाहिए, और (३) उसी तथ्य से निष्कर्ष [illegible] का अवश्य करना चाहिए। सावधानी और तीक्ष्ण बुद्धि से काम लेने पर तर्क की त्रुटियों को सरलता से दूर किया जा सकता है।

५. नैतिकता का विकास : Development of Morality

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य—मानव की नैतिकता का विकास करना है। मनुष्य की नैतिकता से सम्बन्ध रखने वाली तीन मुख्य बातें हैं—(१) मनुष्य की प्रकृति (Nature), (२) मनुष्य की आदतें (Habits), (३) मनुष्य की भावनाएँ (Emotions)।

शिक्षा का उद्देश्य—इन तीनों बातों को शुद्ध और सुन्दर बनाकर मानव-हृदय का परिवर्तन करना है। हृदय-परिवर्तन का यह कार्य शिक्षा और भाषणों के द्वारा न किया जाकर केवल सुझाव (Suggestion) द्वारा ही किया जा सकता है। अध्यापक का कार्य—बालकों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सुझाव देना है। अतः आवश्यक है कि वह ऐसे आदर्शों का अनुसरण करे और ऐसा श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करे कि उसके छात्र प्रति पल उससे प्रेरणा प्राप्त करके जीवन की उच्चतर अवस्थाओं को प्राप्त होते रहें।

इसके अतिरिक्त छात्रों के लिए सत्सग और धार्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था करनी होगी। धार्मिक शिक्षा से श्री अरविन्द का अभिप्राय किसी विशेष धर्म पर आधारित सकीर्ण धार्मिक शिक्षा से न होकर, अन्य व्यक्तियों, सम्पूर्ण मानव-जाति, देश, विश्व और सर्वव्यापक ईश्वर की सेवा मे जीवन को व्यतीत करना है।

६. अन्त.करण का विकास : Development of Conscience

श्री अरविन्द के अनुसार अन्त करण शिक्षा का प्रमुख माध्यम है। अन्त करण के चार स्तर हैं—चित्त, मनस, बुद्धि और ज्ञान। 'चित्त' मे मानव-जीवन के गत और वर्तमान अनुभवो का सचय होता है। शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये—अन्तः-करण की चित्त-सम्बन्धी क्रियाशीलता को विकसित करना और समुन्नत बनाना।

भारतीय मनोविज्ञान के अनुसार 'मनस' व्यक्ति की छठी ज्ञानेन्द्रिय है। यह स्वत. कार्य करती है और कल्पना, चिन्तन, मनन आदि का आधार है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिये जिसमें 'मनस' को विकसित करने की सामर्थ्य हो। 'मनस' अपनी क्रियाओं को 'बुद्धि' द्वारा व्यक्त करता है। उदाहरणार्थ—तर्क, आलोचना, व्याख्या, निर्णय, निरीक्षण, निष्कर्ष, सामान्यीकरण आदि मानसिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति बुद्धि के द्वारा होती है। शिक्षा का उद्देश्य—इन क्रियाओं को परिमार्जित करके शुद्ध और सत्य रूप प्रदान करना है।

'ज्ञान' मानव की वह शक्ति है, जिसे हम साधारण शब्दो मे दिव्य-दृष्टि अथवा अन्तर्दृष्टि या सत्य का आन्तरिक दर्शन कह सकते हैं। ज्ञान के विकास से ही मानव का विकास हुआ है। अतः ज्ञान को विकसित करना भी शिक्षा का उद्देश्य है। साराश मे, शिक्षा का प्रमुख कर्त्तव्य—मानव के अन्त.करण का विकास करना है।

७. आध्यात्मिक विकास : Spiritual Development

श्री अरविन्द का कथन है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करना है। उनका दृढ विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी स्वय की वैयक्तिकता और प्रच्छन्न शक्ति (Individuality & Potentiality) होती है। इनको पूर्णता की ओर अग्रसर किया जा सकता है, भले ही ऐसा करने मे बहुत सफलता न मिले।

श्री अरविन्द का कथन है—"प्रत्येक व्यक्ति में कुछ दैवी अश होता है, कुछ अपना स्वय का होता है, जिसको पूर्ण और सशक्त बनाया जा सकता है। शिक्षा का कार्य है—इसकी खोज करना, इसको विकसित करना और इसका प्रयोग करना। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये—विकसित होने वाली आत्मा का विकास करना; जो कुछ उसमें सर्वोत्तम है, उसे व्यक्त करना ; और उसे श्रेष्ठ कार्य के लिए पूर्ण बनाना।"

"Every one has in him something divine, something his own, a chance of perfection and strength. The task is to find it, develop it and use it The chief aim of education should be to help the growing soul to draw out that in itself which is best and make it perfect for a noble use."—*Shri Aurobindo*

पाठ्य-क्रम
Curriculum

श्री अरविन्द का विश्वास है कि जीवन का स्रोत आध्यात्मिक और भौतिक आधार है। अत वे अपनी शिक्षा-योजना मे, इन दोनो मे से किसी की भी उपेक्षा नहीं करते हैं। वे आध्यात्मिक, मानसिक, नैतिक और भौतिक—सभी क्षेत्रो मे मनुष्य के

व्यक्तित्व का पूर्णतम विकास चाहते हैं। इसीलिये वे पाठ्य-क्रम में सभी विषयों का समावेश चाहते हैं।

श्री अरविन्द पाठ्य-क्रम की रोचकता पर बल देते हैं। उनका कहना है कि बालकों के लिये जो पाठ्य-क्रम निर्धारित किया जाय, वह रोचक होना चाहिये। उसमें जिन विषयों को स्थान दिया जाय, उनमें बालकों को आकृष्ट करने की शक्ति होनी चाहिए। बालक इस प्रकार के विषयों का तल्लीनता से अध्ययन करेंगे फलस्वरूप उन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करेंगे। शिक्षक का स्पष्ट कर्तव्य है कि सर्वप्रथम जीवन, जीवन की क्रियाओं और विश्व-ज्ञान में बालकों की रुचि उत्पन्न करे। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के बाद ही वह बालकों के ज्ञान-प्राप्ति साधनों का विकास करे और उन्हें भाषा का पूर्ण ज्ञान कराये।

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्य-क्रम के विषय निम्नांकित हैं :—

(१) **प्राथमिक शिक्षा**—मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, सामान्य विज्ञान, गणित, सामाजिक अध्ययन और चित्रकला।

(२) **माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा**—मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, गणित, भौतिक-शास्त्र, रसायन-शास्त्र, प्राकृतिक विज्ञान (वनस्पति विज्ञान, जीव-विज्ञान, शरीर-विज्ञान, स्वास्थ्य-विज्ञान, भौमिकी—Geology), सामाजिक अध्ययन और चित्रकला।

(३) **विश्वविद्यालय-शिक्षा**—विश्व-एकीकरण (World Integratio[n]) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध (International Relations), भारतीय तथा पाश्चात्य दर्श[न] मनोविज्ञान, समाज शास्त्र, सभ्यता का इतिहास, अंग्रेजी साहित्य, जीवन का विज्ञा[न] (Science of Life), गणित, भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र, विज्ञान का इतिहा[स] और फ्रेंच साहित्य।

(४) **व्यावसायिक शिक्षा**—काष्ठकला, सामान्य मेकेनिकल और इलेक्ट्रिकल-इंजीनियरिंग, फोटोग्राफी, चित्रकारी, अभिनय, आशुलिपि (Short Hand), टंकन (Type-Writing), व्यावसायिक पत्र-व्यवहार (Commercial Correspondence), सूची-शिल्प-कार्य (Embroidery), सिलाई, कुटीर उद्योग, शिल्प-कला सम्बन्धी ड्राइंग, भारतीय और यूरोपीय संगीत, नृत्य, उपचारण (Nursing)।

शिक्षण की प्रणालियाँ
Methods of Teaching

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षण की दो प्रणालियाँ है :—(१) समकालिक (Simultaneous), और (२) क्रमिक (Successive)।

१. समकालिक प्रणाली : Simultaneous Method

शिक्षण की आधुनिक प्रणाली समकालिक है। इसमे एक ही समय मे बहुत से विषयो की थोड़ी-थोड़ी शिक्षा दी जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि जिस विषय का पूर्ण ज्ञान एक वर्ष मे हो सकता है, उसका ज्ञान ७ वर्ष मे भी नहीं प्राप्त होता है। इस आधुनिक प्रणाली मे शिक्षा के अन्तिम सोपान मे 'विशेष योग्यता' (Grandiose Specialism) प्राप्त करने की व्यवस्था है। श्री अरविन्द का विचार है कि यह व्यवस्था कदापि सफल नहीं हो सकती है।

२ क्रमिक प्रणाली . Successive Method

शिक्षण की यह प्रणाली प्राचीन समय मे प्रचलित थी। इस प्रणाली मे एक या दो विषयों की पूर्ण शिक्षा देने का नियम था। इन विषयो का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद छात्रो को इसी प्रकार अन्य विषयो की शिक्षा दी जाती थी। श्री अरविन्द इस प्रणाली को बिल्कुल ठीक मानते हैं। उनका कहना है कि इस प्रणाली से छात्रो को विभिन्न विषयो का तो ज्ञान नही मिलता था, पर उन्हें एक विशेष विषय का ज्ञान पूर्ण रूप से अवश्य प्राप्त हो जाता था। परिणामत: छात्रो का ज्ञान हल्का और उथला नही होता था।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता कि श्री अरविन्द क्रमिक प्रणाली के पक्ष मे हैं। उनका मत है कि इस प्रणाली मे स्मरण-शक्ति प्रशिक्षित हो जाती है। वे आधुनिक शिक्षाविदों के इस तर्क को नही मानते हैं कि क्योंकि बालक के लिए एक या दो विषयो पर ध्यान केन्द्रित करना कठिन है, इसलिए उसे बहुत से विषय पढ़ाये जाने चाहिए। उनके अनुसार विभिन्नता से मन को शान्ति नहीं मिलती है। यदि बालक को अपने विषय मे रुचि है, तो वह उस पर अपना ध्यान अवश्य केन्द्रित कर लेगा। अतः आवश्यकता इस बात की है कि विषय के प्रति बालक की रुचि को जाग्रत किया जाय और आधुनिक शिक्षा का यह सर्व प्रमुख कार्य होना चाहिए।

शिक्षण के सिद्धान्त

Principles of Teaching

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षण के सिद्धान्त निम्नांकित हैं —

१. बालक की रुचियों का अध्ययन : Study of Child's Interests

श्री अरविन्द का कहना है कि शिक्षक को बालक की रुचियो का अध्ययन करना आवश्यक है। इन रुचियो के आधार पर ही उसे बालक को शिक्षा देनी चाहिए। ऐसा करने से ही बालक शिक्षा में रुचि लेगा और फलस्वरूप ज्ञान प्राप्त करेगा। यदि उसको उसकी रुचियो के अनुकूल विषय नही पढ़ाये जायेंगे, तो शिक्षक का सब परिश्रम व्यर्थ हो जायगा। साथ ही बालक को शिक्षा के प्रति अरुचि हो जायगी।

७. शिक्षा का माध्यम 'मातृभाषा' : Mother-Tongue as Medium of Instruction

श्री अरविन्द ने शिक्षा के माध्यम के रूप मे मातृभाषा पर बल दिया है। उनका विश्वास है कि यदि शिक्षण मातृभाषा मे नहीं होता है, तो बालक को सरल से सरल विषय को समझने मे भी कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह धीरे-धीरे पढ़ने मे रुचि लेना बन्द कर देता है। इसी बात को ध्यान मे रखकर उन्होने उच्चतर माध्यमिक स्तर तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा रखा है।

८. बालक का सहयोग Co-operation of the Child

श्री अरविन्द के विचार मे 'पढ़ाने और सीखने की प्रक्रिया' (Teaching-Learning Process) मे बालक का सहयोग अति आवश्यक है। उसे यह सहयोग स्वयं ही और अपनी इच्छा से देना चाहिए। इस सहयोग को प्राप्त करके ही पढाने और सीखने का कार्य सफल हो सकता है। श्री अरविन्द का कथन है—"माता-पिता या शिक्षक द्वारा बालक को उस साँचे मे ढालने का विचार, जिसमे वे चाहते हैं क्रूर और अज्ञान अंधविश्वास है, माता या पिता इससे बड़ी गलती और कोई नहीं कर सकते हैं कि वे पहले से इस बात की व्यवस्था करें कि उसके पुत्र मे विशिष्ट गुणों, क्षमताओं, और विचारों का विकास होगा। प्रकृति को स्वयं अपने धर्म का त्याग करने के लिये बाध्य करना उसे स्थायी हानि पहुँचाना है, उसके विकास को विकृत करना है और उसकी पूर्णता को दूषित करना है।"

"The idea of hammering the child into the shape desired by the parent or teacher is a barbarous and ignorant superstition. There can be no greater error than for the parent to arrange beforehand that his son shall develop particular qualities, capacities, ideas. To force the nature to abandon its own *dharma* is to do it permanent harm, mutilate its growth, and deface its perfection."

—*Shri Aurobindo.*

शिक्षक का स्थान
Place of the Teacher

श्री अरविन्द के अनुसार शिक्षा मे अध्यापक को निर्देशक, पथ-प्रदर्शक और सहायक के रूप मे कार्य करना चाहिये। वह मौन रूप से बालकों की अभिरुचियों का अध्ययन करके और उन अभिरुचियों के अनुसार बालकों के लिये शिक्षा की सामग्री का संकलन तथा प्रस्तुतीकरण करे। उसे स्वयं बालकों को ज्ञान देने का प्रयास नहीं करना चाहिए और न उन पर बाह्य ज्ञान को लादना ही चाहिए। उसे तो यह प्रयत्न

करना चाहिये कि बालक अपनी अभिरुचियों के अनुसार ज्ञान का अर्जन करते हुए 'स्वशिक्षा' (Self-Education) के पथ पर अग्रसर हों। इस प्रकार श्री अरविन्द ने अध्यापक को शिक्षा में गौण स्थान दिया है।

श्री अरविन्द का कथन है - 'अध्यापक निर्देशक या स्वामी नहीं है। वह सहायक और पथ-प्रदर्शक है। उसका कार्य—सुझाव देना है, न कि ज्ञान को लादना। वह वास्तव में छात्र के मस्तिष्क को प्रशिक्षित नहीं करता है। वह छात्र को केवल यह बताता है कि वह अपने ज्ञान के साधनों को किस प्रकार समृद्ध बनाये। वह छात्र को सीखने की प्रक्रिया में सहायता और प्रेरणा देता है। वह छात्र को ज्ञान नहीं देता है। वह उसे यह बताता कि वह अपने-आप किस प्रकार ज्ञान प्राप्त करे। वह बालक के अन्दर निहित ज्ञान को बाहर नहीं निकालता है। वह उसे केवल यह बताता है कि ज्ञान कहाँ है और उसको बाहर लाने के लिये किस प्रकार अभ्यस्त किया जा सकता है।"

"The teacher is not an instructor or task-master, he is a helper and guide His business is to suggest and not to impose. He does not actually train the pupil's mind, he only shows him how to perfect his instruments of knowledge and helps him and encourages him in the process. He does not impart knowledge to him, he shows him how to acquire knowledge for himself. He does not call forth the knowledge that is within, he only shows him where it lies and how it can be habituated to rise to the surface"

—*Shri Aurobindo.*

बालक का स्थान
Place of the Child

श्री अरविन्द ने बालक को शिक्षा में प्रमुख स्थान दिया है। उनके विचारानुसार बालक का विकास उसकी प्रकृति, अभिरुचि, स्वभाव तथा धर्म के अनुकूल ही किया जाना चाहिये। वह शिक्षा बालक के लिये निरर्थक है, जो पूर्व निर्धारित गुणों, आदर्शों, भावनाओं और विशेषताओं के अनुसार आयोजित की जाती है। कारण यह है कि प्रत्येक बालक में व्यक्तिगत क्षमतायें और विलक्षणतायें होती हैं। यदि इनकी अवहेलना करके एक पूर्व सूची के अनुसार बालकों में किन्हीं गुणों और आदर्शों को उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है, तो यह कार्य बालक के लिये अन्यायपूर्ण और अहितकर होता है।

शिक्षा-दर्शन का मूल्यांकन
Estimate of Educational Philosophy

श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा-दर्शन में मानव की आध्यात्मिक उन्नति पर बहुत

अधिक बल दिया है, क्योंकि उनके विचार में आज के भौतिकवादी युग मे इस उन्नति की अत्यधिक आवश्यकता है । आज के मानव का दृष्टिकोण पूर्ण रूप से भौतिकवादी है । उसका ध्यान सदैव अपनी भौतिक आवश्यकताओ को पूर्ण करने मे लगा रहता है । और फलत वह अपने मन की शान्ति और अपने अन्तर के वास्तविक आनन्द को खो चुका है । आज जो शिक्षा-प्रणाली हमारे देश मे प्रचलित है, वह व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति की ओर लेश मात्र ध्यान न देकर, उसके भौतिकवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहन दे रही है । परिणामत व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास रुक गया है और उसके अन्दर की दिव्य ज्योति बुझ चुकी है ।

प्रचलित शिक्षा के उपरोक्त दोषो को देखकर श्री अरविन्द का हृदय क्षोभ से भर गया । उनके क्रान्तिकारी मस्तिष्क मे इस शिक्षा के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई । फलत उन्होने नये सिद्धान्तो पर आधारित शिक्षा का एक नया रूप अपने देशवासियो के सामने प्रस्तुत किया । उन्होने बताया कि विदेशी शिक्षा-पद्धति का अनुकरण करना भारतीय संस्कृति और परम्परा के लिये हितकर नही हैं । उन्होने कहा कि केवल उसी शिक्षा को प्राप्त करके भारतवासियों का कल्याण हो सकता है, जो भारत की आत्मा और उसकी वर्तमान तथा भावी आवश्यकताओं के अनुकूल हो ।

श्री अरविन्द ने अपने शिक्षा-दर्शन को 'श्री अरविन्द आश्रम', पाँडिचेरी और 'श्री अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय' मे साकार रूप दिया है । ये शिक्षा-संस्थायें अरविन्द-दर्शन के आधार पर छात्रो को पूर्ण शिक्षा (Integral Education) के सिद्धान्तों से परिचित कराती हैं और उसी आधार पर उनको शिक्षित करती है ।

अन्त मे, हम कगाली चरणपति के शब्दो मे कह सकते हैं—"श्री अरविन्द का शिक्षा-दर्शन मूलत उनके आध्यात्मिक योग-दर्शन पर आधारित है । श्री अरविन्द ने अपनी दिव्य दृष्टि की शक्ति से मानव-जीवन के जिन गम्भीर तत्वों का उद्घाटन किया है, वे ही उनके शिक्षा-दर्शन की आधार-शिला हैं । इसमें हमें समग्र मानव-जीवन व समग्र ससार के सर्वांगीण रूप का आभास मिल जाता है । श्री अरविन्द ने जीवन और ससार के किसी पहलू को त्यागा नहीं है ।"

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Give a critical estimate of Shri Aurobi[illegible] educational philosophy.
2. Discuss Shri Aurobindo's vie[illegible]
   (ii) Curriculum.
   of T[illegible]

खण्ड सात

शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार

SOCIOLOGICAL BASIS OF EDUCATION

- भारतीय समाज का स्वरूप
  The Nature of Indian Society.
- बालक के विकास पर भारतीय समाज का प्रभाव
  Impact of Indian Society on the Development of the Child.
- बालक का समाजीकरण
  Socialization of the Child.

और परिस्थितियों के अनुसार निश्चय करता है कि व्यक्ति को किस प्रकार की शिक्षा दी जाय जिससे कि वह अपनी और अपने समाज की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। ये सब बातें शिक्षा के सामाजिक आधार का अध्ययन आवश्यक बना देती हैं।

मानव-समाज का आधार
Basis of Human Society

मानव-समाज का मुख्य आधार 'सामाजिक समूह' (Social Group) है। प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न सामाजिक समूहों का सदस्य होता है। इन समूहों से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। इनमें रहकर ही उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। इन सब बातों का विस्तृत अध्ययन करने के लिये हम 'सामाजिक समूह' (Social Group) और 'व्यक्ति तथा सामाजिक समूह के सम्बन्ध' (Individual & Social Group Relationship) पर प्रकाश डालेंगे। यथा—

सामाजिक समूह
Social Group

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अकेले रहने के बजाय समाज के किसी समूह में रहकर ही अपना जीवन बिताना चाहता है। समूह में दो या दो से अधिक व्यक्ति होते हैं। हम में से प्रायः सभी अपने माता-पिता, भाइयों-बहिनों आदि के साथ परिवार के समूह में रहते हैं। अनेकों बालकों का विद्यालय के समूहों से सम्बन्ध होता है। उनमें से बहुत से खेल कूद के समूहों के सदस्य होते हैं। विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए लोग विभिन्न व्यावसायिक समूहों के सदस्य होते हैं। इन स्थायी समूहों के अतिरिक्त कुछ अस्थायी समूह भी होते हैं, जैसे—सौदा खरीदने वालों का समूह, गाने वालों का समूह, भाषण सुनने वालों का समूह। स्थायी और अस्थायी—दोनों समूहों के सदस्य एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं।

सबसे छोटा समूह 'परिवार' है। परस्पर सम्बन्धित परिवार मिलकर एक बड़ा समूह बनाते हैं, जिसे गोत्र (Clan) कहते हैं। अनेकों गोत्र मिलकर 'जनजाति' (Tribe) का निर्माण करते हैं। इस प्रकार समूहों ने बढ़कर प्रजातियों (*Races*) और राष्ट्रों (Nations) का रूप धारण किया। सम्भव है कि भविष्य में वे एक होकर विश्व-समाज (World Society) का निर्माण करें।

अपने सामाजिक विकास में व्यक्ति ने अनेकों गुण प्राप्त किये हैं; जैसे—साथ रहने की प्रबल इच्छा, सहानुभूति, नेतृत्व और अपने कार्यों के लिये दूसरों की स्वीकृति। इन गुणों को वह समाज में रहकर और दूसरों से सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करके ही प्राप्त कर सकता है। उसके लिए सामूहिक जीवन उतना ही

यक है, जितनी कि साँस लेने के लिए वायु। उसका जन्म सामाजिक समूह में होता है और इच्छा करने पर भी वह उससे अलग नहीं हो सकता है। क्योंकि वह समाज से प्रेम करने वाला व्यक्ति होता है, इसलिए वह स्वयं भी उससे अलग नहीं

होना चाहता है। समाज से दूर जाना और एकान्त में रहना—उसके लिये अति क्रूर दण्ड होगा।

व्यक्ति और सामाजिक समूह का सम्बन्ध
Individual & Social Group Relationship

व्यक्ति और सामाजिक समूह को एक-दूसरे से अलग और स्वतन्त्र नहीं माना जा सकता है। न तो उनका अलग अस्तित्व है, और न वे एक-दूसरे के विरोधी हैं। वे एक-दूसरे पर आधारित और एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व असम्भव है। एक बार अधिक बल देना और दूसरे की उपेक्षा करना—अन्त में हानिकारक सिद्ध होता है। यूनानी दार्शनिक प्लेटो (Plato) अपने समय की व्यक्तिवादी विचारधारा को अच्छी तरह समझता था। पर उसने इस बात पर बल दिया कि व्यक्ति और सामाजिक समूह में सामंजस्य आवश्यक है। उग्र व्यक्तिवाद का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति अपने को सब बातों का केन्द्र मानने लगता है। इससे अहंवाद (Egoism) का जन्म होता है, जो विनाश की ओर ले जाता है। इस विनाश को रोकने के लिए यह आवश्यक है कि आत्महित और समाजहित में सामंजस्य स्थापित किया जाय।

सामाजिक समूह का व्यक्ति के लिये बहुत महत्त्व है। इसी समूह में उसका जन्म, पालन-पोषण और उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। यह व्यक्ति को बनी-बनाई संस्थायें और व्यवहार का स्तर देता है। यह व्यक्ति को पुरस्कार की आशा दिलाकर प्रतियोगिता और सहयोग के लिये प्रेरित करता है। सामाजिक समूह के योगदान के बिना व्यक्तिगत विकास असम्भव है। सामाजिक समूह से अलग व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है। जितना व्यक्ति के लिये सामाजिक समूह आवश्यक है, उतना ही सामाजिक समूह के लिए व्यक्ति आवश्यक है। व्यक्ति के द्वारा ही सामाजिक समूह की प्रगति और सफलता सम्भव है। पर यह तभी हो सकता है, जब व्यक्ति शिक्षित हो। अशिक्षित व्यक्ति से सामाजिक समूह के किसी हित की आशा नहीं की जा सकती है। इस हित के लिये व्यक्ति का चरित्रवान् होना भी आवश्यक है।

सारांश में, व्यक्ति और सामाजिक समूह का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध है। वे दो स्वतन्त्र इकाइयाँ नहीं हैं। सामाजिक समूह और व्यक्ति एक-दूसरे पर अवलम्बित हैं, एक-दूसरे के पूरक हैं। व्यक्तियों के अभाव में सामाजिक समूह की कल्पना नहीं की जा सकती है, और न बिना सामाजिक समूह के व्यक्ति के जीवन की। व्यक्ति सामाजिक समूह का निर्माण करता है, और सामाजिक समूह व्यक्ति का निर्माण करता है।

भारतीय समाज का स्वरूप
Nature of Indian Society

भारतीय समाज के स्वरूप के अग्रलिखित दो पहलू हैं:—

(i) भारतीय समाज का परम्परागत स्वरूप (Traditional Nature of Indian Society),

(ii) भारतीय समाज का आधुनिक स्वरूप (Modern Nature of Indian Society)

हम भारतीय समाज के इन दोनों स्वरूपों का क्रमशः अध्ययन करेंगे।—

१–भारतीय समाज का परम्परागत स्वरूप

Traditional Nature of Indian Society

भारत विभिन्नताओं का देश है। यहाँ अनेक प्रकार के सामाजिक समूह, व्यावसायिक जातियाँ, धार्मिक समूह और सामाजिक वर्ग पाये जाते हैं। इन सभी के विचार के रूप पर अलग प्रभाव पड़ता है और व्यक्ति के मानसिक और सामाजिक विकास को किसी-न-किसी दिशा में मोड़ता है। अतः हमारे लिए इनका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। हम इनका अध्ययन निम्नलिखित तीन शीर्षकों में करेंगे—

१. व्यावसायिक जातियाँ (Occupational Castes)
२. धार्मिक समूह (Religious Groups)
३. सामाजिक वर्ग (Social Classes)

१–व्यावसायिक जातियाँ

Occupational Castes

(अ) जाति का अर्थ और विशेषताएं : Meaning & Characteristics of Caste

'जाति' एक वर्ग (Class) है पर यह एक ऐसा वर्ग है, जिसकी सदस्यता जन्म से निश्चित होती है। तब इसे 'जाति' कहा जाता है। यह एक बन्द वर्ग (Closed Class) है, क्योंकि एक जाति के व्यक्ति दूसरी जाति में स्थान नहीं पा सकते हैं। सी० एम० केस का कथन है— "यद्यपि जाति के प्रमाण संसार के अनेक भागों में पाये जाते हैं, पर इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि इसका सबसे पूर्ण उदाहरण वह है, जो भारत में पाया जाता है। यहाँ पर हम एक ऐसा सामाजिक संगठन पाते हैं, जो इतने अधिक भागों में बंटा हुआ है जितना कि पैगोडा का भवन।"

"Although evidences of caste are found in many parts of the world, India is usually cited as the most perfect instance. Here we find a social organisation as elaborate in its heaped up storeys as one of its own pagodas."—*C. M. Case.*

जाति-व्यवस्था ने हिन्दू सामाजिक संगठन को सुदृढ़ और स्थिर बनाने में महत्त्वपूर्ण योग दिया है। एक जाति अपनी जाति के सदस्यों को मानसिक और

सामाजिक सुरक्षा प्रदान करती है, सामुदायिक एकता की स्थापना करती है और सामाजिक नियन्त्रण का कार्य करती है।

इन अच्छाइयों के साथ-साथ जाति में बुराइयाँ भी हैं। समाज में जाति का स्थान असमानता के सिद्धान्त पर निर्मित है। जाति के बन्धन इतने कठोर हैं कि इसने शोषण के अनेक कार्य किये हैं। एक व्यक्ति का सम्मान केवल इसलिए नहीं होता है, क्योंकि वह निम्न जाति का सदस्य है। जाति ने खान-पान, विवाह और व्यवसाय पर कठोर प्रतिबन्ध लगाकर समाज में जटिल और भौतिक स्तरण (*Horizontal* Stratification) का विकास किया है। पैतृकता के अनुसार व्यवसायों को निश्चित करके जाति ने सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) को बहुत सीमित कर दिया है।

उपरोक्त दोषों को देखकर जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में कहा जा सकता है—"भारत में जाति प्राचीन काल में कितनी ही उपयोगी क्यों न रही हो, पर इस समय यह सब प्रकार की उन्नति के मार्ग में बड़ी भारी बाधा और रुकावट बन रही है। आज यह हमारी दया की पात्र नहीं है और किसी भी भावना के अधीन होकर हमें इसके साथ मोह नहीं करना चाहिए। हमें इसे जड़ से उखाड़ कर अपनी सामाजिक रचना दूसरे ही ढंग से करनी होगी।"

(व) जाति और व्यवसाय : Caste & Occupation

कुछ विद्वानों का मत है कि केवल व्यवसाय ही जाति-प्रथा की उत्पत्ति के लिये उत्तरदायी है। प्रो० एस० घुरे (G. S. Ghurye) ने यह अस्वीकार करते हुए लिखा है—"जाति की उत्पत्ति का कारण व्यावसाय नहीं है।" ("Caste is not occupational in its origin."). डा० मजूमदार का भी कथन है—"भारत में जो थोड़े से व्यवसाय पाये जाते हैं, उनसे उन असंख्यों जातियों के होने की पुष्टि नहीं होती है, जिन्हें एक व्यक्ति विशेष क्षेत्र में पाता है।"

"The few occupations followed in India do not account for the innumerable castes that one finds in any particular region."

—*Majumdar.*

मजूमदार का कथन पूर्णतया सत्य है, क्योंकि हम एक ही व्यवसाय में प्रायः सभी जातियों के लोगों को लगा हुआ पाते हैं। उदाहरण के लिये कृषि ले लीजिये। ऐसी कौन-सी जाति है, जिसका सम्बन्ध कृषि-कार्य से नहीं है? इसी प्रकार हमें एक ही जाति के व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में भी मिलते हैं।

घुरे (Ghurye) का मत है कि यह धारणा १६वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई कि प्रत्येक जाति का एक खास व्यवसाय है और उसको छोड़कर दूसरे व्यवसाय को अपनाना उचित नहीं है। धीरे-धीरे यह धारणा दृढ़ होती गई। इसके विरुद्ध नेसफील्ड (Nesfield) और डालमैन (Dahlman) का मत है कि जाति-प्रथा की उत्पत्ति

व्यवसायों के कारण हुई। हटन (Hutton) ने इन विद्वानों की बड़ी कठोर आलोचना की है। उसका तर्क है कि जब व्यवसाय सैकड़ों-सहस्रों थे, तब जातियाँ केवल चार ही क्यों बन सकीं?

इस स्थिति में हमारे लिये यही उचित होगा कि हम घुरे (Ghurye) के मत को ही स्वीकार करें। इस लेखक ने जो कहा है, वह आज के समाज में भी दिखाई देता है। एक जाति के लोग बहुत समय से जो काम करते चले आ रहे हैं, वे उसी को करना ठीक समझते हैं। ग्रामीण समुदायों में इस बात पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। वहाँ की अपेक्षा नगरों में ऐसा कम है, क्योंकि शिक्षा और जीवन की बदली हुई दशाओं ने लोगों का दृष्टिकोण बदल दिया है।

२–धार्मिक समूह

Religious Groups

मोटे तौर पर भारत में केवल तीन धार्मिक समूह या सम्प्रदाय हैं—ईसाई, हिन्दू और मुसलमान। पर यदि हम थोड़ा-सा सूक्ष्म अध्ययन करें तो हमें इन समूहों के अन्दर भी समूह मिलेंगे। ईसाइयों में प्रोटेस्टेन्ट, प्रेसबीटेरियन और रोमन कैथोलिक, मुसलमानों में शिया और सुन्नी। जहाँ तक हिन्दुओं की बात है, उनके धार्मिक समूहों की गिनती करना कठिन है।

उपरोक्त सभी धार्मिक समूहों में गुण और अवगुण—दोनों हैं। गुण ये हैं कि वे प्रेम, श्रद्धा, आनन्द आदि मानसिक संवेगों (Mental Emotions) को जन्म देते हैं। वे लोगों को किसी महान् शक्ति से भयभीत रखते हैं, जिसके कारण वे बुरे कामों को करने से डरते हैं। एक धार्मिक समूह के लोगों में निकटता और सहानुभूति होती है। इसीलिए वे कठिनाई के समय एक-दूसरे का साथ देते हैं। वे समय-समय पर धार्मिक उत्सवों और समारोहों के लिए जमा होते हैं, जिनसे उनमें घनिष्ठता उत्पन्न होती है। इतना ही नहीं, अपने समूह के धर्म से प्रेरित होकर लोग अपने परिवार और बिरादरी के नियमों का पालन करते हैं। वे उसी काम को करते हैं, जिसे उनका धर्म ठीक बताता है। इस प्रकार उनमें उत्तम चरित्र का निर्माण होता है।

इन सब गुणों के बावजूद भी धार्मिक समूहों के अवगुणों को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। धर्म में आस्था रखने वाले लोग बुद्धि से काम नहीं लेते हैं। वे अपने मानसिक संवेगों के अधीन रहते हैं। वे आँख बन्द करके अपने धर्म का अनुकरण करते हैं और अपने धर्म को सबसे अच्छा मानते हैं। अपने धर्म की अफीम के नशे में चूर वे अन्य धार्मिक समूहों और उनके सदस्यों को अपने से तुच्छ समझते हैं। उन
असहिष्णुता का प्रादुर्भाव होता है। फलस्वरूप उनमें अनेक प्रकार की समाज-विरो
प्रवृत्तियाँ और शक्तियाँ प्रोत्साहित होती हैं। अपने धर्म की सर्वोच्च शक्ति को प्र
प्रकार के कुत्सित कार्य करते हैं। धर्म के नशे में अन

किसी भी अमानवीय और निकृष्ट कार्य को करने मे सकोच नही करते हैं। विश्व का इतिहास इसका साक्षी है। धर्म के नाम पर राजाओ ने अपनी प्रजा पर अकथनीय अत्याचार किये हैं। धर्म के नाम पर ब्राह्मणो ने निम्न जातियो पर प्रतिबन्ध लगाकर उनका गला घोंटा है और उन्हें अपना विकास नहीं करने दिया है। धर्म के नाम पर स्त्रियो को दहकती चिता मे धकेल कर सती-प्रथा को एक लम्बे समय तक जीवित रखा गया। धर्म के नाम पर आज भी लाखो विधवायें नरक-तुल्य जीवन व्यतीत करने के लिये बाध्य की जाती हैं। धर्म के नाम पर १९४७ मे हिन्दू-मुस्लिम झगड़े हुए, जिनमें हजारों निरपराध व्यक्तियो के प्राण चले गये और लाखो बेघरबार हो गये।

धर्म और धार्मिक समूहो के गुण-दोषो का जितना ही वर्णन किया जावे, उतना ही कम है। पर यदि हम शान्त हृदय से विचार करें, तो धर्म और धार्मिक समूहो—दोनो का होना अनिवार्य है। एक धार्मिक समूह का सदस्य दुःख और निराशा मे अपने धर्म से ही सात्वना प्राप्त करता है। यदि धर्म का आविष्कार न हुआ होता, तो आज उसकी दशा पशुओ के समान होती।

३-सामाजिक वर्ग
Social Classes

प्रत्येक समाज अनेक सामाजिक वर्गों में विभक्त दिखाई देता है। प्रत्येक सामाजिक वर्ग मे सभी आयु, योनि, उद्योग-धन्धे और जाति के लोग होते हैं। प्रत्येक समाज में प्राय' तीन सामाजिक वर्ग होते हैं—उच्च, मध्य और निम्न। हम विभिन्न सामाजिक वर्गों के व्यक्तियो को उनकी वेश-भूषा, रहन सहन, आचार-व्यवहार आदि से जान सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक वर्गों का विभाजन प्रतिष्ठा (Status) के आधार पर *किया है।*

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक वर्ग ऐसे व्यक्तियो का एक समूह होता है, जिनका समाज मे एक विशेष स्थान होता है और जिनकी प्रतिष्ठा दूसरे व्यक्तियों से भिन्न होती है। एक सामाजिक वर्ग के व्यक्ति अपनी प्रतिष्ठा के कारण अपने को दूसरे सामाजिक वर्ग के व्यक्तियो स अलग समझते हैं और उनमे वर्ग-भावना (Class Consciousness) होती है। जो कुछ हमने लिखा है, उसे हम लापियरे के शब्दों मे इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं—"सामाजिक वर्ग *सास्कृतिक रीति से परिभाषित समूह है, जिसे सम्पूर्ण जनसख्या के अन्तर्गत एक विशेष स्थान या स्तर प्राप्त होता है।*"

"A social class is a culturally defined group that is accorded a particular position or status within the population as a whole."

—*Lapiere*.

सामाजिक वर्गों मे जो विशेषतायें पाई जाती हैं, वे अधाकित हैं —

(१) प्रत्येक सामाजिक वर्ग के रीति-रिवाज, रहन-सहन और आचार-विचार आदि का एक निश्चित ढंग होता है। सभी सामाजिक वर्ग इस ढंग को स्थायी बनाने का प्रयास करते हैं।

(२) सामाजिक वर्गों के सदस्य अपने वर्ग की प्रतिष्ठा को बनाये रखने के लिए विवाह इत्यादि करते समय ऋण लेने या सम्पत्ति बेचने में संकोच नहीं करते हैं।

(३) एक सामाजिक वर्ग के व्यक्ति दूसरे सामाजिक वर्गों के व्यक्तियों को अपने से ऊँचा या नीचा समझते हैं। इस भावना के फलस्वरूप सामाजिक वर्गों में पृथकता रहती है।

(४) एक सामाजिक वर्ग के व्यक्ति एक-दूसरे के प्रति समानता की भावना रखते हैं। सामाजिक व धार्मिक कृत्यों के अवसरों पर वे अपने वर्ग के व्यक्तियों का विशेष रूप से ध्यान रखते हैं।

(५) प्रत्येक सामाजिक वर्ग के द्वार सबके लिए खुले रहते हैं। अपने वैयक्तिक गुणों या धनी होने के कारण एक व्यक्ति अपने से उच्च सामाजिक वर्ग में जा सकता है, और निर्धनता प्राप्त होने पर या अपने दुर्गुणों के कारण वह निम्न सामाजिक वर्ग में चला जाता है।

(६) वर्गों में स्थिरता होती है। सभी समाजों में तीन सामाजिक वर्ग सदैव से चलते चले आ रहे हैं। यदि सामाजिक वर्गों में स्थिरता न होती, तो सामाजिक व्यवस्था का अन्त हो जाता।

II भारतीय समाज का आधुनिक स्वरूप
Modern Nature of Indian Society

(अ) ब्रिटिश-काल में भारतीय समाज . Indian Society in British Period

भारत का आधुनीकरण अंग्रेजों का कार्य था, जिससे भारतीय सामाजिक जीवन का प्रत्येक पहलू प्रभावित हुआ। सर जदुनाथ सरकार का मत है—"भारत में ब्रिटिश शासन के सम्पूर्ण कार्य पर दृष्टिपात करने से हम यह देखने में असफल नहीं रह सकते हैं कि हमारे समाज में इसके द्वारा क्रान्तिकारी परिवर्तन किया गया है।"

"Looking at the whole course of British rule in India, we cannot fail to see that a revolutionary change has been made by it in our society."—*Sir Jadunath Sarkar.*

जो क्रान्तिकारी परिवर्तन भारत के लिये लाभप्रद सिद्ध हुए, वे निम्नलिखित हैं :—

१. धर्म या जाति के भेदभाव के बिना सभी के लिए समानता।

२. मजदूरों और किसानों को दासता की स्थिति से उठाकर पूर्ण नागरिकता की स्थिति पर पहुँचना।
३. विस्तृत और प्रभावशाली मध्य वर्ग का विकास।
४. पूँजीपति वर्ग का उत्थान।
५. स्त्रियों की हीन सामाजिक स्थिति से मुक्ति।
६. जाति-प्रथा का विघटन।
७. प्रान्तीयता, भाषा-सम्बन्धी और धार्मिक मतभेदों का धीरे-धीरे ह्रास।

(ब) नव भारत में समाज : Society in New India

नव भारत के समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। भारतीय संविधान ने घोषणा की है—

धारा १५ (१)—*राज्य किसी भी नागरिक के विरुद्ध केवल धर्म, कुल या वंश जाति,* लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी एक के आधार पर अन्तर या भेद स्थापित नहीं करेगा।

धारा १७—"अस्पृश्यता" समाप्त की जाती है और इसका किसी भी रूप में व्यवहार निषिद्ध है। 'अस्पृश्यता' के कारण किसी प्रकार की अयोग्यता का प्रचलन कानून के अनुसार दण्डनीय अपराध होगा।

धारा ३८—राज्य जन-साधारण के कल्याण को, एक सामाजिक व्यवस्था, जिसमें न्याय—सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक—राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करेगा, को जहाँ तक सम्भव हो सकेगा, प्राप्त करके एवं सुरक्षित करके, उन्नति करने का प्रयत्न करेगा।

नव भारत ने समाज के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित कानून बनाकर उसको प्रभावित किया है। उदाहरणार्थ—अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया गया है, सभी धार्मिक संस्थानों को अछूतों के लिए खोल दिया गया है। वे किसी भी नदी, तालाब या कुँए का प्रयोग कर सकते हैं। विवाह को नागरिक समझौते (Civil Contract) का रूप दिया गया है। बहु-विवाह को समाप्त कर दिया गया है। कुछ स्थितियों में तलाक देने की आज्ञा दे दी गई है, स्त्रियों को परिवार की सम्पत्ति पर उत्तराधिकार दे दिया गया है। जागीरदारी, ताल्लुकेदारी तथा जमींदारी का अन्त करके लोगों के सामाजिक सम्बन्धों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किये गये हैं।

उपसंहार

हमने गत पृष्ठों में भारतीय समाज के स्वरूप का वर्णन किया है। इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि यह स्वरूप आधुनिक समय में बहुत परिवर्तित हो गया है। प्राचीन समय में जातियों ने भारतीय समाज को एक निश्चित रूप प्रदान किया था, पर समय की गति के साथ जातीय बन्धन ढीले होते चले गये और परिणामस्वरूप

समाज का रूप बदलता चला गया। इस रूप को बदलने में अंग्रेजों का योगदान कुछ कम नहीं रहा है। स्वतन्त्र भारत ने अपने संविधान द्वारा इसको और भी अधिक बदलने का प्रयास किया है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भारतीय संविधान का उद्देश्य—भारत में प्रजातान्त्रिक समाज (Democratic Society) की स्थापना और भारतीय समाज इसी दिशा में धीरे-धीरे अग्रसर हो रहा है।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Discuss briefly the importance of the sociological basis of education.
2. Give a pen-portrait of the Indian society as it is today with its castes, religious groups, and social classes.
3. How have castes, religious groups, and social classes influenced the nature of the Indian society ?

३१

शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार

SOCIOLOGICAL BASIS OF EDUCATION

२–बालक के विकास पर भारतीय समाज का प्रभाव

Impact of Indian Society on the Development of Child

भारतीय समाज अपनी जातियों, वर्गों, सामाजिक एवं धार्मिक समूहों, परम्पराओं और रीति-रिवाजों के साथ बालक के व्यक्तित्व के बौद्धिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक और सौंदर्यात्मक पक्षों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।

The Indian society with its castes, classes, social and religious groups, traditions, and customs has a direct and indirect impact on the intellectual, physical, spiritual, emotional, and aesthetic aspects of the child's personality.

विषय-प्रवेश

भारतीय समाज में विभिन्न जातियाँ, धर्म और वर्ग पाये जाते हैं। इन सब को अपनी परम्परायें, रीति-रिवाज, आचार-विचार और रहन-सहन हैं। इनके आदर्शों और मान्यताओं में भी अन्तर पाया जाता है। इनके बीच में जन्म लेने और रहने वाला बालक इनसे किसी-न-किसी प्रकार प्रभावित हुए बिना नहीं बचता है। वह जान बूझ कर और अनजाने भी इन जातियों, धर्मों और वर्गों की कुछ विशेषताओं को अपनाता रहता है। समय की गति के साथ ये विशेषतायें उसके व्यक्तित्व पर अपनी स्थायी छाप लगा देती हैं।

बालक पर भारतीय समाज का प्रभाव

Impact of Indian Society on Child

भारतीय समाज का बालक के विकास पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभाव

पड़ता है। यह प्रभाव हितकर भी होता है और अहितकर भी। हम इस प्रभाव का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत कर रहे हैं :—

१. बालक के शारीरिक विकास पर प्रभाव : Impact on Child's Physical Development

नवीन शिक्षण-विधियों से प्रभावित होने के कारण नव भारत बालक के शारीरिक विकास पर बहुत बल दे रहा है। प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक किसी-न-किसी प्रकार की शारीरिक शिक्षा की व्यवस्था है। आज की शिक्षा-संस्थाओं में खेल कूद, स्काउटिंग, गर्ल गाइडिंग, पी० ई० सी०, एन० सी० सी० और एन० सी० सी० आर० साधारण बातें हो गई हैं। राज्य 'युवक कल्याण' (Youth Welfare) और 'युवक उत्सव' (Youth Festival) को प्रोत्साहित करता है और व्यायामशालाओं तथा नहाने के तालाबों को बनाने के लिये शिक्षा संस्थाओं को धन देता है। इन सब बातों ने बालक को अपने शारीरिक विकास के लिये बहुत सुन्दर अवसर दिये हैं।

पर क्या हमारे छात्रों ने इन अवसरों से लाभ उठाया है? उत्तर केवल 'नहीं' में है। एक अंग्रेजी कहावत है—"You can take the horse to water but you cannot make it drink." यही बात हमारे छात्रों के सम्बन्ध में है। शारीरिक विकास की सुविधाएँ तो हैं, पर वे उनसे लाभ नहीं उठाते हैं। क्यों? इसका कारण यह है कि हमारे छात्रों में अपने-आप को स्वस्थ बनाने की तनिक भी इच्छा नहीं है।

शारीरिक व्यायाम का अर्थ है—शारीरिक श्रम। इससे हमारे तरुण छात्र और छात्रायें जी चुराते हैं। इसके लिए वे तो उत्तरदायी हैं ही, पर समाज भी कुछ कम उत्तरदायी नहीं है। समाज उनको सस्ते मनोरंजन देकर उनके शाम के समय को छीन लेता है। वे सिनेमाघरों में जाकर काल्पनिक प्रेम-कहानियाँ देख सकते हैं, बाजार में घूम कर लाउडस्पीकरों पर कामुक गाने सुन सकते हैं और रेस्टोरॉ में में जाकर १५ या २० पैसे की चाय पी सकते हैं। आराम और मनोरंजन सभी चाहते हैं। फिर यदि हमारे नवयुवक और नवयुवतियाँ उनके पीछे दौड़ते हैं, तो उनका क्या दोष है? पर उनकी हानि अवश्य है। यह हानि आप शारीरिक दुर्बलता, पीले चेहरे और अन्दर घुसी हुई आँखों में देख सकते हैं। यह है नव भारत में नवयुवकों और नवयुवतियों का चित्र।

२. बालक के मानसिक विकास पर प्रभाव : Impact on Child's Intellectual Development

भारतीय संविधान—जाति और धर्म का भेदभाव किये बिना सब नागरिकों को समान अवसर देता है। फलत. बालक किसी भी शिक्षा-संस्था में जाकर किसी प्रकार की भी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। इससे उसे अपने मानसिक विकास के लिये

पर्याप्त अवसर मिलता है। प्राथमिक शिक्षा नि:शुल्क और अनिवार्य होने के कारण वह इसको सरलता से प्राप्त कर सकता है। यह शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी सभी शिक्षा-संस्थाओं के द्वार उसके लिये खुले हैं। इसलिए वह अपनी इच्छानुसार प्राविधिक, मैडिकल, इन्जीनियरिंग तथा अन्य कोई भी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। सारांश मे, इस विस्तृत देश के किसी भी कोने मे रहने वाले बालक को किसी प्रकार की शिक्षा सम्बन्धी असुविधा नहीं है। कानून द्वारा उसके मानसिक विकास को सुनिश्चित कर दिया गया है।

पर चित्र उतना उज्ज्वल नही है, जितना कि ऊपर अंकित किया गया है। राज्य ने बालक को अपने मानसिक विकास के लिये अवसर अवश्य दिये है, पर उस अवसर को प्राप्त करने के लिये सभी साधन नहीं जुटाये हैं। इसमे कोई सन्देह नहीं है कि सरकार ने नि:शुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था की है। पर अभी तक यह व्यवस्था देश के सब बच्चों के लिये नहीं हो पाई है।

ऐसी स्थिति मे समाज का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह शेष बच्चो की शिक्षा का प्रबन्ध करे। समाज ऐसा कर सकता है और कर रहा है। पर जातियों, धर्मों, वर्गों और समूहों मे विभाजित समाज जो भी विद्यालय स्थापित करता है, उसके द्वार सब बालको के लिये नही खुलते हैं। एक जाति और धर्म द्वारा स्थापित विद्यालय मे या तो अन्य जाति और धर्म के बालक को प्रवेश नहीं दिया जाता है, और यदि किसी प्रकार दे भी दिया जाता है, तो उसके साथ उचित व्यवहार नहीं किया जाता है।

इसके अतिरिक्त ग़ैर-सरकारी स्कूलो की शिक्षा इतनी मँहगी है कि गरीब किसान या मजदूर उनमे अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिये भेजने की बात सोच ही नहीं सकता है। इन सब बातो के फलस्वरूप ऐसे अनेको बच्चे हैं, जिन्हें अपने मानसिक विकास का अवसर नही मिलता है।

३ बालक के आध्यात्मिक विकास पर प्रभाव : *Impact on Child's* **Spiritual Development**

मनुष्य की आत्मा का पोषण धर्म और नैतिकता करते हैं। इन्ही के द्वारा व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास हो सकता है। पर आज ये दोनो ही अतीत के गर्त मे धकेल दिये गये हैं। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के सम्पर्क मे आकर और पाश्चात्य साहित्य का अध्ययन करके हमने अपने पूर्वजों के आध्यात्मिक आदर्शों को को भुला दिया है। औद्योगीकरण, यन्त्रीकरण और नगरीकरण ने हमें अपने आध्यात्मिक कर्त्तव्यो के प्रति उदासीन होने में सहायता दी है। जब हमारी स्वय की दशा ऐसी है, तब हम अपने बच्चो के आध्यात्मिक विकास के बारे मे क्या कह सकते हैं। जो कुछ तब हम कह सकते हैं, वह केवल यह है कि आध्यात्मिक विकास के बजाय उनका बड़ी तेजी से आध्यात्मिक पतन हो रहा है।

इसके लिये जितने हम उत्तरदायी हैं, उतनी ही हमारी सरकार है। सरकार ने स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रों के लिये धार्मिक और नैतिक शिक्षा की कोई योजना अभी तक लागू नहीं की है। जब इस प्रकार की शिक्षा की कोई योजना नहीं है, तब बालकों के आध्यात्मिक विकास की बात सोचना केवल कल्पना होगी।

४. बालक के संवेगात्मक और सौन्दर्यात्मक विकास पर प्रभाव : Impact on Child's Emotional & Aesthetic Development

दुःख की बात है कि अभी तक भारतीय समाज ने बालक के संवेगात्मक और सौन्दर्यात्मक विकास के लिए कुछ भी नहीं किया है। अभी तक हमारे प्रायः सभी विद्यालय 'एकमार्गीय' (Unilateral) हैं। उनमें वही पुराना घिसा-पिटा पाठ्य-क्रम है।

भारत में केवल विश्वभारती ही ऐसी शिक्षा-संस्था है, जो इस बात का दावा कर सकती है कि वह बच्चों के संवेगात्मक और सौन्दर्यात्मक विकास के लिये सभी प्रकार की सुविधायें जुटाती है। अन्य शिक्षा-संस्थायें ऐसा क्यों नहीं करती हैं? इसके केवल दो उत्तर हो सकते हैं —(१) राज्य और समाज ने अभी तक इस विकास के महत्त्व को नहीं समझा है, (२) यदि उन्होंने इसके महत्त्व को समझ लिया है, तो वे इस विकास के लिये इच्छुक नहीं हैं।

बालक पर भारतीय समाज का प्रभाव उपरोक्त के अतिरिक्त निम्नलिखित रूपों में भी दिखाई देता है—

५. दरिद्रता का प्रभाव : Impact of Poverty

भारत इतना निर्धन देश है कि मुश्किल से ५ प्रतिशत जनसंख्या के बारे में यह कहा जा सकता है कि उसके रहन-सहन का स्तर कुछ ठीक है। ऐसी स्थिति शायद ही किसी दूसरे देश में पायी जाती हो। हर नगर में आपको गन्दी बस्तियाँ मिलेंगी, जिनमें भारत की निर्धन जनता निवास करती है। इनके बारे में डा० आर० के० मुकर्जी ने लिखा है —"वहाँ मनुष्यत्व को पशुवत् बनाया जाता है, नारीत्व का अपमान किया जाता है और बाल्यावस्था को प्रारम्भ से ही दूषित बनाया जाता है।"

"It is here that manhood is brutalised, womanhood dishonoured and childhood poisoned at its very source."—*R. K. Mukerjee.*

ऐसी स्थिति में यह सोचना कि बालक का विकास उचित दिशा में होगा, केवल मन की भ्रान्ति है।

६. सांस्कृतिक वियोजन का प्रभाव : *Impact* of Cultural Disintegration

आधुनिक भारतीय समाज अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं को भूल चुका है। हम पर अंग्रेजियत का ऐसा रंग चढ़ गया है कि हम अपनी संस्कृति को कोई

महत्त्व नहीं देते हैं। फलस्वरूप उसका बड़ी तेजी से वियोजन हो रहा है। हमारे लिये हमारी परम्परायें, हमारे आदर्श, हमारे रीति-रिवाज और हमारे शिष्टाचार के नियमों का कोई मूल्य नहीं रह गया है।

इन सब बातों का हमारे बच्चों पर बड़ा दूषित प्रभाव पड़ रहा है। वे विलासिता और बुरी आदतों से प्रेम करते हैं, बड़ों की अवज्ञा करते हैं, व्यायाम के बजाय प्रेम वार्ता करते हैं, कमरे में अपने से बड़ों को आते देखकर खड़े नहीं होते हैं, अपने माता-पिता का विरोध करते हैं, वयोवृद्ध लोगों के सामने मजाक करते हैं, भोजन करते समय भोजन के नियमों का पालन नहीं करते हैं और विद्यालयों में मनमाने ढग से बैठ कर अध्यापकों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं।

७. पारिवारिक विघटन का प्रभाव : Impact of Family Disorganization

परिवार बालक की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र है। इस शिक्षा का उत्तम स्वरूप सगठित परिवार में ही हो सकता है। आज का भारतीय परिवार अपने पुराने आदर्शों को भूल चुका है। औद्योगीकरण, यन्त्रीकरण और अनेकों अन्य कारणों से उसका विघटन हो रहा है। इस प्रकार के परिवार में बालक का सामाजिक चरित्र ढाला जाना असम्भव है। इसका परिणाम यह होता है कि वह बुरी बातों की ओर अग्रसर होता है, जो उसके और उसके समाज के लिये बहुत हानिकारक सिद्ध होती हैं।

८. अपराध का प्रभाव : Impact of Crime

स्वतन्त्र भारत में एक नई बात जो विशेष रूप से दिखाई देती है, वह यह है कि अपराधों और अपराध करने वालों की सख्या दिन दूनी, रात चौगुनी होती चली जा रही है। न केवल प्रौढ़-अपराधों मे, वरन् बाल-अपराधों में भी वृद्धि हो रही है। यदि प्रौढ़ छोटी सी बात पर रक्त बहा देते हैं, तो विद्यालयों और कॉलेजों के छात्र छोटी-सी बात पर चाकू निकाल लेते हैं।

सह-शिक्षा बाल-अपराध का मुख्य कारण बन गई है। छात्र केवल मजाक और अपना साहस दिखाने के लिये दूसरों में छुरा भोंक देते हैं। इस प्रकार शिक्षा-सस्थायें ज्ञान के पवित्र स्थान न रहकर—पाप और अपराध के घर बन गई हैं। उनके वातावरण का बालकों पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

उपसहार

उपर्युक्त शब्दों में हमने बालक के विकास पर भारतीय समाज के जिस प्रभाव का वर्णन किया है, उससे दो बातें पूर्णतया स्पष्ट हो जाती हैं —(१) भारतीय समाज का बालक के विकास पर प्रभाव अहितकर अधिक है और हितकर कम, (२) बालक पर जो अहितकर प्रभाव पड़ रहा है, उसके लिये सरकार और समाज दोनों ही उत्तरदायी हैं।

खेद का विषय है कि दोनों में से कोई भी अपने उत्तरदायित्व को पूर्ण नहीं कर रहा है। कारण सम्भवतः यह है कि सरकार इतनी गम्भीर समस्याओं में उलझी हुई है कि उसे बालक के विकास के बारे में सोचने का अवकाश ही नहीं है। समाज सम्भवतः इसलिये नहीं सोचता है, क्योंकि उसके पास वे साधन नहीं हैं जिनको जुटाकर वह बालक के विकास को उचित दिशा प्रदान कर सके।

UNIVERSITY QUESTION

1. Give an account of the impact of modern Indian society on the development of the child.

३२

शिक्षा का समाजशास्त्रीय आधार

SOCIOLOGICAL BASIS OF EDUCATION

३—बालक का समाजीकरण
Socialization of the Child

"बालक का समाजीकरण बालकों के समूह में सर्वोत्तम रूप में होता है और बालक दूसरे बालकों का सर्वोत्तम शिक्षक है।"

"The Socialization of the child is realized best in children's groups, and the child is the best educator and teacher of other children"—*Joseph H Roucek.*

समाजीकरण का अर्थ और परिभाषा
Meaning & Definition of Socialization

अ) समाजीकरण का अर्थ : Meaning of Socialization

व्यक्ति अपने जन्म के समय से ही सामाजिक नहीं होता है। उस समय वह केवल पशु होता है। समाज ही उसे मानव बनाता है। समाज की संस्थायें और समितियाँ उसका समाजीकरण करती हैं। इस प्रक्रिया के कारण ही वह सामाजिक प्राणी बनता है। इसके अभाव में उसका समाजीकरण नहीं हो सकता है। अवेरान Aveyron) का जगली लड़का और अन्ना (Anna) नामक उदाहरण है। समाज से अलग रहने के कारण . का जगली लड़का तो कभी

हो गया।
प्रवृत्तियो
९.

) समाजीकरण की परिभाषा : Definition of Socialization

समाजीकरण के अर्थ को स्पष्ट करते हुए किम्बल यंग ने लिखा है—
समाजीकरण का अर्थ यह है कि व्यक्ति जनरीतियों, रूढ़ियों, कानूनों, अपनी संस्कृति के अन्य लक्षणों, कुशलताओं और अन्य आवश्यक आदतों को सीखता है, जो उसे समाज का क्रियाशील सदस्य बनने में सहायता देती है। वह अपने आपको अपने परिवार, पड़ोस और वर्ग के अनुकूल बनाना सीखता है। सारांश में समाजीकरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया अन्त.क्रिया या सामाजिक कार्य के अन्तर्गत आती है।"

"Socialization means that the individual learns the folkways, mores, laws, and other features of his culture, as well as skills and other necessary habits, which enable him to become a functioning member of society He learns to identify himself with the aims and values of his life, neighbourhood, class, and community. In short, the whole process of socialization falls within the scope of interaction or the social act."—*Kimball Young*.

बालक का समाजीकरण करने वाले तत्त्व
Factors Leading to the Socialization of the Child

बालक के सास्कृतीयकरण को ही समाजीकरण कहा जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि सस्कृति के विभिन्न साधन और विभिन्न रूप बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं। बालक मे सामाजिकता का विकास करने या उसका समाजीकरण करने मे सहायता देने वाले प्रमुख साधन या तत्त्व निम्नांकित हैं—

१. परिवार : Family

किम्बल यग का कथन है—"समाज के अन्दर समाजीकरण के विभिन्न साधनो में 'परिवार' सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है।"

"Of the various agencies of socialization within the society the 'family' is the most important."—*Kimball Young*.

कुछ विद्वानो ने परिवार को समाजीकरण का सबसे अधिक स्थायी साधन माना है। व्यक्ति आजीवन परिवार मे रहता है। उसके सभी सदस्यो से उस... । ये सम्बन्ध व्यक्ति के समाजीकरण को स्थायी रूप से प्रभावित करते ... समाजीकरण मे उसके माता-पिता का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि ...क व्यवहार ठीक है, तो बच्चे का समाजीकरण ठीक ढग से हो जाता ... आपस मे खटपट रहती है, तो बच्चे का समाजीकरण विकृत हो जाता ... बच्चे के प्रति माता-पिता के सम्बन्ध के बारे कही जा सकती है।

है। पड़ोस के बच्चों या बड़ों की संगति में बच्चा बिगड़ भी सकता है और सुधर भी सकता है। वास्तव में पड़ोस एक प्रकार का बड़ा परिवार होता है। अतः परिवार के समान पड़ोस भी बच्चे के समाजीकरण में अत्यधिक योग देता है।

७. समूह : Groups

बच्चे के समाजीकरण को प्रभावित करने वाले समूह हैं—मित्र, सहपाठी, मनोरंजन के केन्द्र, धार्मिक समूह आदि।

बालक के समाजीकरण मे बाधा डालने वाले तत्त्व

Factors Impeding the Socialization of the Child

मैसलो और मिटिलमैन (Maslow & Mittleman) के अनुसार निम्नलिखित तत्त्व बालक के समाजीकरण मे बाधा उपस्थित करते हैं—

१. बाल्यकालीन परिस्थितियाँ : Childhood Situations

ये वे परिस्थितियाँ हैं, जिनमे बच्चा अपने को बाल्यकाल में पाता है, जैसे—माता-पिता के प्रेम का अभाव, उनके द्वारा बच्चे की अस्वीकृति, माता-पिता मे सदैव कलह, विधवा माँ, पक्षपात, असुरक्षा की भावना, एकाकीपन, दुःखपूर्ण अनुभव, अनुचित और अन्यायपूर्ण दण्ड।

२. सांस्कृतिक परिस्थितियाँ : Cultural Situations

इनके अन्तर्गत ये परिस्थितियाँ आती हैं—संस्कृति विरोधी तत्त्व, धर्म, वर्ग, वर्ण और जाति से सम्बन्धित पूर्वधारणायें, दरिद्रता, अत्यधिक बेकारी।

३. तात्कालिक परिस्थितियाँ : Immediate Situations

ये परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं—निराशा, अपमान, अन्याय, अनियमितता, कठोरता, परिहास और भाई-बहिन, मित्र, पड़ोसी आदि की ईर्ष्या।

४. अन्य परिस्थितियाँ : Other Situations

इन परिस्थितियो मे ये हैं—स्कूल की शिक्षा, आत्मनिर्भरता का अभाव, शारीरिक हीनता या न्यूनता, निरन्तर दूसरो से तुलना, असफलतायें, पाप की भावना, *सदैव छोटा समझा जाना, खेलो और साथियो की कमी।*

समाजीकरण की प्रक्रिया में शिक्षक कार्य-भाग

Teacher's Role in the Process of Socialization

बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया मे परिवार के बाद स्कूल और स्कूल में विशेष रूप से शिक्षक आता है। प्रत्येक समाज के कुछ विश्वास, दृष्टिकोण, मान्यताएँ (Values), कुशलतायें और परम्परायें होती हैं, जिनको 'संस्कृति' के नाम से पुकारा जाता है। यह संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित की जाती है और

विस्तृत समाज है। अन्य बच्चों के सम्पर्क में आने से उसका समाजीकरण तीव्रगति होने लगता है। सबसे महत्वपूर्ण बात जो बच्चा स्कूल में सीखता है, वह है 'प्रतियोगिता' (Competition)। कक्षा में, खेल के मैदान में, परीक्षा में—सभी जगह प्रतियोगिता होती है। बच्चा इस प्रतियोगिता में आगे निकलना चाहता है, भले ही वह दूसरों को हानि पहुँचा कर ऐसा करे। इसका प्रभाव उसके आगामी जीवन पर अच्छा नह पड़ता है।

स्कूल में बच्चे को कुछ नियमों का पालन करना पड़ता है। यदि नियम आवश्यकता से अधिक कठोर हैं, तो उनका बच्चे के समाजीकरण पर अच्छा प्रभा नहीं पड़ता है। यदि स्कूल का अनुशासन अच्छा नहीं है, तो बच्चा अपने व्यवहार प नियन्त्रण करना नहीं सीख पाता है।

बच्चे के समाजीकरण को निर्देशित करने वाली स्कूल की अन्य बातें हैं—परीक्षा-फल, खेलों में प्रसिद्धि, आर्थिक और सामाजिक स्तर, छात्रों की संख्या शिक्षक और उसकी योग्यता आदि।

४. समुदाय या समाज : *Community or Society*

समुदाय या समाज बच्चे के समाजीकरण को विभिन्न रूपों में प्रभावित करता है। सामाजिक मनोवैज्ञानिकों ने इस सम्बन्ध में अनेकों प्रयोग किये हैं। उनके आधार पर उन्होंने लिखा है कि समाज विभिन्न रूपों और विभिन्न विधियों से बच्चे के समाजीकरण पर प्रभाव डालता है। समाज ऐसा जिन साधनों के द्वारा करता है वे अग्रलिखित हैं—(१) संस्कृति, कला, साहित्य और इतिहास; (२) धार्मिक कट्टरता या उदारता, (३) जातीय और राष्ट्रीय प्रथायें तथा परम्परायें, (४) समाज का आर्थिक और राजनैतिक संगठन; (५) जातीय पूर्वधारणायें; (६) वर्ग और वर्ण, (७) सामाजिक प्रथायें और परम्परायें; (८) शिक्षा के साधन और सुविधायें, (९) मनोरंजन के साधन और सुविधायें तथा (१०) सामाजिक सुविधायें।

५. जाति : Caste

'जाति' समाजीकरण का प्रमुख साधन है। प्रत्येक जाति की अपनी प्रथायें, परम्परायें और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ होती हैं। प्रत्येक बच्चा अपनी जाति के अनुसार ही उन्हें ग्रहण करता है। इसीलिए हर-एक जाति के बच्चे का समाजीकरण भिन्न होता है। उदाहरण के लिये—ब्राह्मण बालक के समाजीकरण का रूप शूद्र बालक के समाजीकरण से बिल्कुल भिन्न होता है। इस प्रकार जातीय विभेद बच्चे के समाजीकरण को एक विशेष दिशा प्रदान करते हैं।

६. पड़ोस : Neighbourhood

बच्चे पर पड़ोस का काफी प्रभाव पड़ता है। इसीलिए अच्छे लोग किराये के लिए मकान लेते समय इस बात का आवश्यक रूप से ध्यान रखते हैं कि पड़ोस कैसा

खण्ड आठ

पाठ्य-क्रम और शिक्षण के सिद्धान्त

CURRICULUM & PRINCIPLES OF TEACHING

- पाठ्य-क्रम का अर्थ और निर्माण के सिद्धान्त
  Meaning & Principles of Curriculum Construction.
- विभिन्न विषयों का महत्त्व
  Importance of Various Subjects.
- एकीकृत पाठ्य-क्रम
  Integrated Curriculum.
- शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्त
  Basic Principles of Teaching.
- शिक्षण-सूत्र
  Maxims of Teaching.
- शिक्षण-प्रणालियाँ और प्रविधियाँ
  Devices & Techinques of Teaching.
- प्रश्न पूछना
  Questioning.
- उत्तर निकलवाना
  Receiving Answers.

समाज के मानों के अनुसार आचरण को प्रभावित करता है। शिक्षक का सर्वोत्कृष्ट कार्य है—इन प्रवृत्तियों को बालक को प्रदान करना। यदि वह यह कार्य नहीं करता है, तो वह बालक का समाजीकरण नहीं कर सकता है।

शिक्षक माता-पिता के साथ बालक के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने में अति महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। फिर भी शिक्षक और माता-पिता एक-दूसरे से दूर रहते हैं और सम्पर्क में नहीं आते हैं। परिणाम यह होता है कि शिक्षक बालक की रुचियों, मनोवृत्तियों आदि को नहीं समझ पाता है। इसलिए वह बालक का समाजीकरण उचित दिशा में करने में असफल होता है। इस विचार से यह बहुत आवश्यक है कि शिक्षक और माता-पिता एक-दूसरे के घनिष्ठ सम्पर्क में रहें और एक ही प्रकार के विचारों तथा दृष्टिकोणों को अपनाकर बालक का उचित दिशा में समाजीकरण करें।

कक्षा और खेल के मैदान में, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्रियाओं में शिक्षक सामाजिक व्यवहार के आदर्श प्रस्तुत करता है। बालक अपनी अनुकरण की मूल-प्रवृत्ति के कारण शिक्षक के ढंगों, कार्यों, आदतों और रीतियों का अनुकरण करता है। अतः शिक्षक को सदैव सतर्क रहना चाहिए। उसे कोई ऐसा अनुचित कार्य या व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिसका बालक के ऊपर गलत प्रभाव पड़े। जो प्रभाव वह बालक पर डालता है, वह बहुत समय तक बना रहता है। अतः उसे अपने कथनों और कार्यों से केवल उन बातों का सुझाव देना चाहिए, जिन पर समाज की स्वीकृति की छाप लगी हो।

सारांश में, हम कह सकते हैं कि शिक्षक बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है। शिक्षक के स्नेह, पक्षपात, बुरे व्यवहार, दण्ड आदि का सभी बच्चों पर कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता है और उनका सामाजिक विकास उत्तम या विकृत हो जाता है। हार्ट (F. W. Hart) ने इस सम्बन्ध में परीक्षण किये हैं। यदि शिक्षक मित्रता और सहयोग में विश्वास करता है, तो बच्चों में भी इन गुणों का विकास होता है। यदि शिक्षक तनिक-तनिक सी बातों पर बच्चों को दण्ड देता है, तो उनके समाजीकरण में संकीर्णता आ जाती है। यदि शिक्षक अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखता है, तो छात्रों का समाजीकरण सामान्य रूप से होता रहता है।

UNIVERSITY QUESTION

1. Make a mention of the factors which lead to the socialization of the child. What is the role of the teacher in the process of the socialization of the child ?

खण्ड आठ

पाठ्य-क्रम और शिक्षण के सिद्धान्त

CURRICULUM & PRINCIPLES OF TEACHING

पाठ्य-क्रम का अर्थ और निर्माण के सिद्धान्त
Meaning & Principles of Curriculum Construction.

विभिन्न विषयों का महत्त्व
Importance of Various Subjects.

एकीकृत पाठ्य-क्रम
Integrated Curriculum.

- शिक्षण के आधारभूत सिद्धान्त
  Basic Principles of Teaching.
- शिक्षण-सूत्र
  Maxims of Teaching.
- शिक्षण-प्रणालियाँ और प्रविधियाँ
  Devices & Techinques of Teaching.
- प्रश्न पूछना
  Questioning.
- उत्तर निकलवाना
  Receiving Answers.

समाज के लोगों के आचरण को प्रभावित करती है। शिक्षक का सर्वश्रेष्ठ कार्य है—इस संस्कृति को बालक को प्रदान करना। यदि वह यह कार्य नहीं करता है, तो वह बालक का समाजीकरण नहीं कर सकता है।

शिक्षक माता-पिता के साथ बालक के चरित्र और व्यक्तित्व का विकास करने में अति महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। फिर भी शिक्षक और माता-पिता एक-दूसरे से दूर रहते हैं और सम्पर्क में नहीं आते हैं। परिणाम यह होता है कि शिक्षक बालक की रुचियों, मनोवृत्तियों आदि को नहीं समझ पाता है। इसलिए वह बालक का समाजीकरण उचित दिशा में करने में असफल होता है। इस विचार से यह अति आवश्यक है कि शिक्षक और माता-पिता एक-दूसरे के घनिष्ठ सम्पर्क में रहें और एक ही प्रकार के विश्वासों तथा दृष्टिकोणों को अपनाकर बालक का उचित दिशा में समाजीकरण करें।

कक्षा और खेल के मैदान में, साहित्यिक और सांस्कृतिक क्रियाओं में शिक्षक सामाजिक व्यवहार के आदर्श प्रस्तुत करता है। बालक अपनी अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण, शिक्षक के ढंगों, कार्यों, आदतों और रीतियों का अनुकरण करता है। अतः शिक्षक को सदैव सतर्क रहना चाहिए। उसे कोई ऐसा अनुचित कार्य या व्यवहार नहीं करना चाहिए, जिसका बालक के ऊपर गलत प्रभाव पड़े। जो प्रभाव वह बालक पर डालता है, वह बहुत समय तक बना रहता है। अतः उसे अपने कथनों और कार्यों से केवल उन बातों का सुझाव देना चाहिए, जिन पर समाज की स्वीकृति की छाप लगी हो।

सारांश में, हम कह सकते हैं कि शिक्षक बालक के समाजीकरण को प्रभावित करता है। शिक्षक के स्नेह, पक्षपात, बुरे व्यवहार, दण्ड आदि का सभी बच्चों पर कुछ-न-कुछ प्रभाव पड़ता है और उनका सामाजिक विकास उत्तम या विकृत हो जाता है। हार्ट (F. W. Hart) ने इस सम्बन्ध में परीक्षण किये हैं। यदि शिक्षक मित्रता और सहयोग में विश्वास करता है, तो बच्चों में भी इन गुणों का विकास होता है। यदि शिक्षक तनिक-तनिक सी बातों पर बच्चों को दण्ड देता है, तो उनके समाजीकरण में संकीर्णता आ जाती है। यदि शिक्षक अपने छात्रों के प्रति सहानुभूति रखता है, तो छात्रों का समाजीकरण सामान्य रूप से होता रहता है।

UNIVERSITY QUESTION

1. Make a mention of the factors which lead to the socialization of the child. What is the role of the teacher in the process of the socialization of the child ?

खण्ड आठ

पाठ्य-क्रम और शिक्षण के सिद्धान्त

CURRICULUM & PRINCIPLES OF TEACHING

३३

पाठ्य-क्रम का अर्थ और निर्माण के सिद्धान्त ✓

MEANING & PRINCIPLES OF CURRICULUM CONSTRUCTION

"पाठ्य-क्रम को क्रियाओं के उन विभिन्न रूपों मे देखा जाना चाहिए, जो मानव-आत्मा के भव्य प्रदर्शन है और जिनका विशाल संसार के लिए सबसे अधिक और सबसे स्थायी महत्त्व है।"

"The curriculum should be viewed as various forms of activity that are grand expression of the human spirit and that are of the greatest and most permanent significance to the wide world."—*T. P. Nunn.*

पाठ्य-क्रम का अर्थ और परिभाषा
Meaning & Definition of Curriculum

(अ) 'Curriculum' शब्द की उत्पत्ति Derivation of the Word, 'Curriculum

'Curriculum' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एक शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है—'Race-course' (दौड़ का मैदान)। "यह दौड़ का मैदान है, जिस पर व्यक्ति लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है।" ("It is a runway, a course which one runs to reach a goal.") हरवार्ड विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर रॉबर्ट यूलिच (Robert Ulich) ने पाठ्य-क्रम के इस अर्थ को मान्यता दी है। कारण यह है कि छात्र दौड़ते रहते हैं, अर्थात् पाठ्य-क्रम का अनुसरण करते हैं, पर वे अपने लक्ष्य को शायद ही प्राप्त कर पाते हैं।

(ब) पाठ्य-क्रम का अर्थ : Meaning of Curriculum

पाठ्य-क्रम के अर्थ के बारे म दो विचारधारायें हैं—प्राचीन और आधुनिक। प्राचीन धारणा के अनुसार—पाठ्य-क्रम विभिन्न प्रकार के ज्ञानो और कुशलताओं का

संग्रह होता है जो बालक के दृष्टिकोण से नहीं, वरन् किसी शिक्षा-विशेषज्ञ के दृष्टिकोण से होता है। आधुनिक धारणा के अनुसार पाठ्य-क्रम अनुभवों, क्रियाओं या जीवन की वास्तविक परिस्थितियों का संचय है, जिनमें बालक भाग लेता है और जिनका वह सामना करता है। इस धारणा के अनुसार हम कह सकते हैं कि पाठ्य-क्रम पाठ्य-पुस्तकों, विषय-वस्तु और अध्ययन के कोर्स से अधिक होता है।

(स) पाठ्य-क्रम की परिभाषा : Definition of Curriculum

हम पाठ्य-क्रम के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं —

१. फ्रोबेल—"पाठ्य-क्रम को मानव-जाति के सम्पूर्ण ज्ञान और अनुभव का सार समझा जाना चाहिये।"

"*Curriculum* should be conceived as an epitome of the rounded whole of the knowledge and *experience* of the human race."—*Froebel*.

२. कनिंघम—"पाठ्य-क्रम शिक्षक के हाथ में एक साधन है, जिससे वह अपने विद्यालय में, अपने उद्देश्य के अनुसार, अपने छात्र को कोई भी रूप दे सकता है।"

"It (Curriculum) is a tool in the hands of the artist (teacher) to mould his material (pupil) according to his ideal (objective) in his studio (school)"—*Cunningham*

३. क्रो और क्रो —"पाठ्य-क्रम में छात्र के विद्यालय के अन्दर या बाहर के सभी अनुभव होते हैं। इन अनुभवों को एक कार्य-क्रम में सम्मिलित किया जाता है और उसके मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास में सहायता देने के लिए आयोजित किया जाता है। इन अनुभवों में प्रत्यक्ष अनुभवों और पाठ्य-पुस्तकों तथा शिक्षण की अन्य सहायक सामग्री से प्राप्त विषय-वस्तु को सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार पाठ्य-क्रम में शिक्षा के विषय, शिक्षा की सामग्री, शिक्षण की रीतियाँ और व्यक्तिगत प्रभाव सम्मिलित होते हैं।"

"The curriculum includes all the learner's experience in or outside school that are included in a programme which has been devised to help him develop mentally, physically, emotionally, socially, spiritually, and morally. These experiences include that subject-matter gained though direct experience and that which is secured vicariously through the utilization of text-books and other learning aids. Curricular offerings thus include the content

and the materials of instruction, teachniques of procedure, and personal influences."—*Crow & Crow.*

२. माध्यमिक शिक्षा आयोग .—"पाठ्य-क्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है, जो विद्यालय मे परम्परागत रूप से पढ़ाये जाते हैं वरन् इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है—जिनको राष्ट्र विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशाप और खेल के मैदान तथा शिक्षकों और छात्रों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्य-क्रम हो जाता है, जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके सतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।"

"Curriculum does not mean only the academic subjects traditionally taught in the school, but it includes the totality of experiences that a people receives through the manifold activities that go on in the school—in the class room, library, laboratory, workshop, playgrounds, and in the numerous informal contacts between teachers and pupils. In this case, the whole life of the school becomes the curriculum which can touch the life of the students at all points and help in the evolution of balanced personality."

—*Secondary Education Commission.*

प्रचलित पाठ्य-क्रम के दोष

Defects of Existing Curriculum

इस समय हमारे देश में जो पाठ्य-क्रम प्रचलित है, उसमें निम्नलिखित दोष पाए जाते हैं—

१. इसका दृष्टिकोण सकुचित है।
२. इसका निर्माण विशेष रूप से शिक्षा सस्थाओं में प्रवेश पाने के लिए किया जाता है।
३. यह पुस्तकीय ज्ञान पर बहुत अधिक बल देता है।
४. इसके पाठ्य-विषय—साहित्यिक और सैद्धान्तिक (Academic and Theoretical) हैं।
५. इसके पाठ्य-विषय—अनावश्यक तथ्यों और महत्त्वहीन विवरणों से भरे हुए है।
६ इसका निर्माण पाठ्य-क्रम विशेषज्ञ अपने दृष्टिकोण से, न कि छात्रों के दृष्टिकोण से करता है।
७ इसमें छात्रों के मनोविज्ञान, रुचियों, आवश्यकताओं और वैयक्तिक विभिन्नताओं पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है।

करने के बाद सफलता प्राप्त कर सकेंगे। पुराने ढङ्ग की पाठशालाओं और मकतबों का इसलिये लोप हो गया, क्योंकि उनमे जो विषय पढ़ाये जाते थे उनका जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं था।

२. उपयोगिता का सिद्धान्त : Principle of Usefulness

पाठ्य-क्रम निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह है कि उसमें जिन विषयों को स्थान दिया जाय, वे बालक के भावी जीवन के लिये उपयोगी होने चाहिये। इस सम्बन्ध में नन ने लिखा है—"साधारण मनुष्य सामान्यत यह चाहता है कि उसके बच्चे केवल ज्ञान के प्रदर्शन के लिये कुछ व्यर्थ की बातें सीखें, परन्तु समग्र रूप से वह यह चाहता है कि उनको वे बातें सिखाई जायें, जो भावी जीवन मे उनके लिए उपयोगी हों।"

"While the plain man generally likes his children to pick up some scraps of useless learning for purely decorative purposes, he requires, on the whole, that they shall be taught what will be useful to them in later life."—*T P. Nunn*

३. रचनात्मक कार्य का सिद्धान्त Principle of Creative Achievement

प्रत्येक बालक में किसी-न-किसी क्षेत्र मे रचनात्मक कार्य करने की कुछ-न-कुछ योग्यता अवश्य होती है। अत पाठ्य क्रम को ऐसे अवसर अवश्य देने चाहिये, जिनसे रचनात्मक कार्य की यह योग्यता व्यक्त हो सके। बालक को अपनी रचनात्मक शक्तियो का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सम्भव है कि प्रारम्भ मे उसे अधिक सफलता न मिले। पर यदि उसे उचित निर्देशन दिया जायगा, तो उसकी रचनात्मक शक्तियो का विकास अवश्य होगा। रेमॉन्ट का कथन है—"जो पाठ्य-क्रम वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए उपयुक्त है, उसमे निश्चित रूप से रचनात्मक विषयों के प्रति निश्चित झुकाव होना चाहिये।"

"In a curriculum that is suited to the needs of today and of the future, there must be a definite bias towards definite creative subjects."—*Raymont*.

४. खेल और कार्य की क्रियाओ के अन्तर्सम्बन्ध का सिद्धान्त Principle of Inter-relation of Play & Work Activities

पाठ्य-क्रम के निर्माण म खेल और कार्य को क्रियाओं के अन्तर्सम्बन्ध के सिद्धान्त को स्थान दिया जाना आवश्यक है। सब क्रियाओ का कुछ-न-कुछ प्रयोजन होता है। सामान्यतः खेल की क्रियाओं का प्रयोजन 'आनन्द' समझा जाता है। कार्य की क्रियाओं के बारे मे यह बात लागू नहीं होती है। इस प्रकार की एक क्रिया ज्ञान प्राप्त करने का कार्य है। यह आवश्यक है कि ज्ञान प्राप्त करने की क्रियाओं को खेल

लिये करे, न कि अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये। प्राय बालकों को वह सहायता र निर्देशन नही मिलता है, जो उनके आचरण को उनके समुदाय के लाभ के लिये युक्त बनाता है।

अत यह आवश्यक है कि बालको को उत्तम आचरण के आदर्शों को प्राप्त ने की शिक्षा दी जायें, जिससे वे स्वार्थी और व्यक्तिवादी न बनकर अपने व्यवहार *समाज के अन्य सदस्यो के सामने सुन्दर उदाहरण रखें और उनको भी वैसा ही रने के लिये प्रेरित करें।*

. जीवन-सम्बन्धी सब क्रियाओं के समावेश का सिद्धान्त : Principle of Inclusion of All Life-Activities

पाठ्य-क्रम का निर्माण करते समय ऐसा प्रयत्न किया जाना चाहिये कि सभे वे सब क्रियायें आ जाय, जो प्रत्येक बालक के स्वास्थ्य, विचार, ज्ञान, कुशलता, ल्यांकन, अभिव्यक्ति (Expression), चरित्र और सामाजिक तथा आर्थिक सम्बन्धो ो उन्नत बनायें। क्योकि हम लोकतन्त्र के सिद्धान्त को स्वीकार कर चुके हैं, इसलिये ाठ्य-क्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिये जिससे कि बालक प्रारम्भ से ी लोकतन्त्रीय जीवन के ढङ्ग को धीरे-धीरे ग्रहण करते चले जायें। अत यह ावश्यक है कि पाठ्य-क्रम मे ऐसी क्रियाओ को स्थान दिया जाय, जो लोकतन्त्रीय ष्टिकोणों और धारणाओ को उन्नत बनायें।

। विकास की सतत प्रक्रिया का सिद्धान्त . Principle of Continual Process of Evolution

किसी भी पाठ्य-क्रम का सदैव के लिए निर्माण नही किया जा सकता है। उसमे मय के साथ परिवर्तन किये जाने आवश्यक हैं। क्रो और क्रो का कथन है—"वैज्ञनिक गति, नवीन व्यावसायिक अवसर, राष्ट्रों के अधिक विस्तृत अन्तर्सम्बन्ध, प्रगति-ील आदर्श तथा आकांक्षायें—यह मांग प्रस्तुत करती हैं कि शिक्षा के सिद्धान्त और यवहार को ज्ञान, कुशलता और दृष्टिकोण पर दिये जाने वाले विभिन्न प्रकार के बल के अनुकूल बनाया जाय।"

"Scientific progress, new occupational opportunities, more comprehensive interrelationships among peoples, and advancing ideals and aspirations demand that educational theory and practice be geared to meet changing emphasis in knowledge, skill, and attitude."—*Crow and Crow.*

८. अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त : Principle of the Totality of Experiences

शिक्षा की आधुनिक विचारधारा के अनुसार पाठ्य-क्रम का अर्थ केवल सैद्धान्तिक विषयो से नहीं है, जिन्हें परम्परागत ढग से पढ़ाया जाता है। पाठ्य-क्रम

मे उस सब अनुभवों को भी स्थान दिया जाता है, जिनको बालक विभिन्न क्रियाओं द्वारा प्राप्त करता है। ये क्रियायें विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, वर्कशाप, खेल के मैदान तथा शिक्षको और छात्रों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्कों मे चालू रहती हैं। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन ही पाठ्य-क्रम है।

माध्यमिक शिक्षा-आयोग के अनुसार—यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये कि सबसे आधुनिक शैक्षिक विचारधारा के अनुसार पाठ्य-क्रम का अर्थ केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं लिया जाता है, वरन् इसमे अनुभवो की सम्पूर्णता निहित होती है।"

"It must be clearly underfood that, according to the best modern educational thought, curriculum does not mean only the academic subjects, but it includes the totality of experiences."

—*Secondary Education Commission.*

६. विविधता और लचीलेपन का सिद्धान्त : Principle of Variety & Elasticity

"माध्यमिक शिक्षा-आयोग का विचार है—"पाठ्य-क्रम मे काफी विविधता और लचीलापन होना चाहिए, जिससे कि वैयक्तिक विभिन्नताओं और वैयक्तिक आवश्यकताओ एव रुचियो का अनुकूलन किया जा सके।"

"There should be enough of variety and elasticity in the curriculum to allow for individual differences and adaptations to individual needs and interests."—*Secondary Education Commission.*

पाठ्य-क्रम मे विविधता और लचीलेपन की आवश्यकता इसलिए है कि उसे छात्रो की रुचियों, विभिन्नताओ, दृष्टिकोणो, मनोवृत्तियो और आवश्यकताओं के के अनुकूल बनाया जा सके। बालको पर अनुपयुक्त विषयो को लादने का प्रयत्न नहीं किया जाना चाहिये। इससे उनमे निराशा की भावना उत्पन्न होती है। साथ ही उनके सामान्य विकास मे बाधा पड़ती है। इसके विपरीत, ज्ञान, कुशलता और मूल्याङ्कन के कुछ ऐसे विस्तृत क्षेत्र हैं, जिनके सम्पर्क मे बालकों को लाया जाना चाहिये। अत पाठ्य-क्रम मे इनको प्रथम स्थान दिया जाना चाहिये। पर इनको ऐसी मात्रा मे रखा जाय कि वे छात्रों की शक्तियो और क्षमताओ से परे न हो जायें।

१०. सामुदायिक जीवन से सम्बन्ध का सिद्धान्त : Principle of Relationship with Community Life

माध्यमिक शिक्षा-आयोग के अनुसार—"पाठ्य-क्रम सामुदायिक जीवन से सजीव और आंगिक रूप से सम्बन्धित होना चाहिये।'

"The Curriculum must be vitally and organically related to community life."—*Secondary Education Commission.*

पाठ्य-क्रम का सामुदायिक जीवन से स्पष्ट सम्बन्ध होना चाहिये। पाठ्य-क्रम को इस जीवन की महत्त्वपूर्ण विशेषताओं की व्याख्या करनी चाहिए और बालकों को इसकी कुछ महत्त्वपूर्ण क्रियाओं के सम्पर्क में लाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि पाठ्य-क्रम में उत्पादक कार्य को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिये, क्योंकि यह कार्य व्यवस्थित मानव-जीवन का आधार है। इसके अतिरिक्त, पाठ्य-क्रम *स्थानीय आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखकर बनाया जाना* चाहिए।

११. अवकाश के लिये प्रशिक्षण का सिद्धांत : Principle of Training for Leisure

माध्यमिक शिक्षा-आयोग का कथन है :—"*पाठ्य-क्रम इस पर नियोजित किया जाना चाहिये कि वह छात्रों को न केवल कार्य के लिये वरन् अवकाश के लिये भी प्रशिक्षित करे।*"

"The curriculum should be designed to train the students not only for work but also for leisure."—*Secondary Education Commission.*

पाठ्य-क्रम इस प्रकार बनाया जाना चाहिए कि यह छात्रों को कार्य और अवकाश—दोनों के लिये प्रशिक्षित करे। इसलिए अध्ययन के विषयों के साथ-साथ *पाठ्य-क्रम में अन्य क्रियाओं को भी स्थान दिया जाय, जैसे—खेल-कूद, सामाजिक* और सौन्दर्यात्मक क्रियाएँ आदि। ये क्रियायें बालकों को अपने अवकाश का सदुपयोग *करने के लिये प्रशिक्षित करेंगी।*

१२. विषयों के पारस्परिक सम्बन्ध का सिद्धान्त : Principle of Inter-Relation of Subjects

पाठ्य-क्रम को अनेकों असम्बन्धित विषयों में *खंडित नहीं करना चाहिये।* ऐसा पाठ्क्रम प्रभावहीन हो जाता है। सभी विषयों का एक-दूसरे से सम्बन्ध होना *चाहिए और सभी का जीवन से सम्बन्ध होना चाहिये।*

उपसंहार

उपर्युक्त पंक्तियों में हमने पाठ्य-क्रम के निर्माण के कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला है। सारांश में, हम कह सकते हैं कि पाठ्य-क्रम में प्रत्येक छात्र की आवश्यकताओं, रुचियों, योग्यताओं, विशिष्टताओं, और विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। पाठ्य-क्रम ऐसा होना चाहिये, *जिससे सभी छात्रों के*

३४

पाठ्य-क्रम में विभिन्न विषयों का महत्त्व

IMPORTANCE OF VARIOUS SUBJECTS IN CURRICULUM

"विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषय सामाजिक संस्थायें हैं, जिनको सभ्यता की प्राप्तियों को व्यवस्थित और मितव्ययी ढग से व्यक्ति को उपलब्ध कराने के लिये चुना जाता है।"

"School subjects are social institutions designed to make the *achievements of civilization available to the individual in a systematic and economical way."*—*Edwards & Richey.*

विषय-प्रवेश

प्रत्येक पाठ्य-क्रम मे विभिन्न विषयों को स्थान दिया जाता है। ऐसा क्यों किया जाता है? क्या इन विषयों का बालक के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन मे कोई महत्त्व होता है? क्या ये विषय उसके जीवन की आवश्यकताओं को पूर्ण करने में सहायता देते हैं? क्या ये उसके व्यक्तित्व के सामजस्यपूर्ण विकास मे सहायता देते हैं? क्या इन सभी विषयों का समान महत्त्व होता है? इन सब बातों की जानकारी के लिये हम पाठ्य-क्रम के अग के रूप मे कुछ विषयों का वर्णन कर रहे है। यथा—

विभिन्न विषयों का महत्त्व

Importance of Various Subjects

१. अंग्रेजी : English

जब तक अंग्रेज भारत के शासक रहे, तब तक विद्यालयों में अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय था और विद्यालय के साथ-साथ कॉलिज के पाठ्य-क्रम में भी महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण किये हुए था। बालकों तथा बालिकाओं को अंग्रेजी शिशु-पाठशालाओं में भी पढ़ायी जाती थी और इसको सीखने मे बहुत ध्यान दिया जाता था। इसका कारण यह था कि अंग्रेजी हमारे शासकों की भाषा थी और प्राय. जीवन

में सफलता इस भाषा के अच्छे ज्ञान पर ही निर्भर थी। कोई भी व्यक्ति तब तक उचित रूप से शिक्षित नही माना जाता था, जब तक कि वह शुद्ध रूप मे अंग्रेजी बोलना या लिखना नहीं जानता था। यह विचार-परम्परा १५० वर्षों मे चली आ रही है।

१९४७ ई० मे भारत से अग्रेजो के चले जाने के बाद और भारतीयो द्वारा स्वतन्त्रता की प्राप्ति से एक महान् परिवर्तन हुआ। प्रथमतः स्वदेशानुराग युक्त उत्साह की प्रचुरता तथा ब्रिटिश शासको के विरुद्ध अपनी घृणा की भावना को व्यक्त करने के लिये भारतीय प्रत्येक विदेशी वस्तु को फेंक देना चाहते थे। अग्रेजी भाषा तथा साहित्य की भारतीय न होने के कारण निन्दा की गई। बिहार तथा उत्तर-प्रदेश जैसे प्रान्तो मे अंग्रेजी के खिलाफ सबसे अधिक आवाज़ उठाई गई। उन्होंने अग्रेजी को भारत से तीन वर्ष की अवधि मे समाप्त करने के लिये कहा और उसके स्थान पर हिन्दी को समग्र भारत की समान भाषा के रूप मे ग्रहण करने के लिये बलपूर्वक सिफ़ारिश की।

भारत के सविधान के द्वारा अग्रेजो को आने वाले १५ वर्षों तक कार्य करने के हेतु अनुमति प्रदान की गई। इसको हिन्दी के द्वारा धीरे-धीरे प्रतिस्थापति करने के लिये कहा गया। विद्यालयो तथा कॉलिजो मे अध्यापन जहाँ तक सम्भव हो सके, मातृभाषा के माध्यम मे किया जाय। इस योजना को लागू करने तथा हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिये अग्रेजी को कुछ राज्यो मे विद्यालय की प्रथम कक्षा से लेकर पाँचवी या छठी या सातवी कक्षा से हटा दिया गया। अग्रेजी का अध्यापन छठी या सातवी या आठवी कक्षा से प्रारम्भ किया जाने लगा। परन्तु कॉलिजो मे अंग्रेजी कुछ स्तरो पर शिक्षण के माध्यम के रूप मे बनी रही।

यहाँ तीन प्रश्नों पर विचार करना है। प्रथम, क्या अग्रेजी का शिक्षण हर प्रकार से आवश्यक है? द्वितीय, यदि ऐसा है, तो इसका शिक्षण किस स्तर से प्रारम्भ किया जाय? तृतीय, कॉलिजो मे शिक्षण का क्या माध्यम होना चाहिए? हमको इन प्रश्नो पर समस्त भावनाओ को भुलाकर तर्कसगत दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए।

प्रथम प्रश्न के विषय मे यह कहा जा सकता है कि यदि हमे पाश्चात्य वैज्ञानिक खोजो, अन्वेषण तथा मशीनीकरण से अपना सम्पर्क स्थापित करना है तो किसी न किसी योरोपियन भाषा का ज्ञान रखना अनिवार्य है। आधुनिक युग विज्ञान का युग है और पाश्चात्य विश्व इस विज्ञान का केन्द्र है। पाश्चात्य विश्व पूर्व से न केवल विज्ञान मे ही आगे है वरन् साहित्य, अर्थशास्त्र तथा अन्य कलाओ मे भी आगे है। यदि हम बौद्धिक, आर्थिक एव राजनीतिक रूप से अपनी आत्महत्या नही करना चाहते हैं तो हमको अग्रेजी या जर्मन या फ्रेंच या रूसी भाषा जैसी किसी महान् योरोपियन भाषा को जानना आवश्यक है। जर्मन या रूसी भाषा को सीखना अग्रेजी की उपेक्षा अधिक कठिन है, क्योंकि भारतवर्ष मे अंग्रेजो के लगभग २०० वर्षों के

शासन ने हमको अंग्रेज़ी भाषा से परिचित करा दिया है। इसलिये किसी अ
योरोपियन भाषा की अपेक्षा इस भाषा को सीखना अधिक सुगम है। अतः उन मनुष्
के लिये जो विदेशी सेवाओं में कार्य करना चाहते हैं, उन लोगों के लिये जो उ
तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील हैं; उन मनुष्यों
लिये जो मानवीय ज्ञान की सीमाओं को बढ़ाना चाहते हैं; और उन व्यक्तियों के लि
जो संस्कृति के हेतु उचित दावा रखना चाहते हैं, अंग्रेज़ी का ज्ञान आवश्यक है।

अब एक दूसरा प्रश्न है। जनसाधारण के लिए अंग्रेज़ी की क्या स्थिति हो
चाहिए ? क्या अंग्रेज़ी का पाठ्य-क्रम में समावेश होना चाहिए ? विश्व में कि
स्थान पर भी जनसाधारण को विदेशी भाषा को नहीं पढ़ाया गया है। उनके लि
यही पर्याप्त है कि वे अपनी क्षेत्रीय भाषा का पूर्ण ज्ञान रखें और यदि उनकी क्षेत्री
भाषा मातृ-भाषा या राष्ट्रभाषा नहीं है तो उन्हें मातृभाषा का भी पूर्ण रूप से ज्ञ
होना चाहिए। इसलिये उनके मस्तिष्क पर अंग्रेज़ी सीखने के रूप में एक अतिरि
भार को लादने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह सदैव ध्यान में रखना चाहिए
अंग्रेज़ी को एक साधन के रूप में सीखना है, साध्य के रूप में नहीं। जनसाधार
को अंग्रेज़ी पढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

द्वितीय प्रश्न यह है कि उन लोगों के लिये जो अंग्रेज़ी शिक्षा से लाभान्वि
होना चाहते हैं, अंग्रेज़ी का अध्यापन किस स्तर से प्रारम्भ किया जाय ? शिक्षा
सुस्थित पद्धति ऐसी होनी चाहिए कि वह बालक के स्वाभाविक सृजनात्मक आ
पर रोक न लगाये, वरन् उसकी गुप्त शक्तियों के विकास के लिये प्रत्येक सम्
अवसर प्रदान करे। इस दृष्टिकोण से प्रारम्भिक कक्षाओं में अंग्रेज़ी का अनिव
शिक्षण हानिकारक है। इसलिए अंग्रेज़ी को निम्न स्तरों के पाठ्य-क्रम में एक विष
का स्थान नहीं दिया जाना चाहिए। परन्तु अंग्रेज़ी के अध्यापन को छठी, सातवीं
आठवीं कक्षा से प्रारम्भ करना भी समान रूप से तर्कहीन है। कॉलेज शिक्षा के लि
अंग्रेज़ी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने के हेतु ३ या ५ वर्ष का समय किसी प्रक
से पर्याप्त नहीं है। छात्रों के लिये अंग्रेज़ी का अध्यापन विद्यालय में ५ से ८ वर्ष त
होना चाहिए और वह शिक्षण उपयुक्त ढंग से व्यवस्थित किया जाय।

अन्तिम प्रश्न यह है कि—शिक्षा का माध्यम क्या होना चाहिए ? विद्याल
में यह माध्यम सदैव मातृभाषा होनी चाहिए। परन्तु कॉलेजों में आने वाले
समय तक माध्यम अंग्रेज़ी ही होना चाहिए और उसको देशज भाषा या स्था
भाषा से परिपूरित किया जाय। इसका कारण यह है कि भारतवर्ष की स्था
भाषाएँ अभी तक पर्याप्त रूप से साहित्यिक आलोचना की आवश्यकताओं की
करने एवं मूल्यांकन तथा विज्ञान के शिक्षण में सफल रूप से प्रयुक्त करने के
विकसित नहीं हुई हैं। जब स्थानीय भाषाएँ विकसित हो जायें, तब शिक्षण मातृभ
के माध्यम से होना चाहिए।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर यह सोचना ठीक होगा कि अंग्रेजी को उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों तथा कालिजों के पाठ्य-क्रम से अलग नहीं किया जाना चाहिए। इसको सीखने की आवश्यकता सदैव बनी रहेगी और कुछ बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे जो अंग्रेजी के माध्यम से पाश्चात्य विश्व से सम्पर्क बनाये रखेंगे जिससे वे भारतीयों को विज्ञान, कला तथा साहित्य को उपयुक्त ढंग से जानने के हेतु समर्थ बना सकेंगे।

२. इतिहास : History

'हिस्ट्री' शब्द की उत्पत्ति एक ग्रीक शब्द से हुई है जिसका अर्थ 'जाँच' है। एक समय हिस्ट्री तथा कथा (Story) दोनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त किये जाते थे। जिस प्रकार पूछताछ या खोज की भावना या कौतूहल या जिज्ञासा प्रत्येक व्यक्ति में जन्मजात होती है, उसी भाँति समस्त कालों में मनुष्य कहानी सुनना भी पसन्द करते रहे हैं। इस कारण मनुष्य को एक जन्मजात इतिहासकार कहा जाता है। धर्मगाथाओं, लोककथाओं तथा लोकवार्ताओं के लिये बालक के प्रेम में और सभी प्रकार की कहानियों के लिये विकसित मनुष्य की रुचि में इतिहास के इस स्वाभाविक प्रेम को देखा जाता है। इस प्रेम ने कार्लाइल (Carlyle) को यह कहने के लिये प्रेरित किया कि—"जिस प्रकार हमारी मुख्य विरासत हमारे साथ जन्म से होती है, उसी भाँति इतिहास-परक प्रतिभा को जन्म से लाने वाले व्यक्ति हमारी महान् विरासत लेकर आते हैं।"

यदि इतिहास अतीत तथा रुचिकर घटनाओं का क्रमबद्ध लेखा है, तो प्रत्येक जीवन इस अर्थ में एक इतिहास है। मनुष्य वंशानुक्रम, रीति-रिवाजों, नियमों, परम्पराओं और पर्यावरणों का प्रतिफल है। वह अतीत तथा वर्तमान के अनुभवों का समस्त योग है। इस प्रकार इतिहास का प्रेम उसके खून में है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि वह इतिहास के अध्ययन को उल्लासमय, रुचिकर तथा उत्तेजक पाता है। उसके इतिहास-प्रेम का एक दूसरा कारण यह है कि इतिहास सुदूर तथा तात्कालिक अतीत का एक लेखा है। मनुष्य के लिये अतीत की अपेक्षा और कोई वस्तु अधिक रुचिकर नहीं है। हम बाल्यावस्था के सुनहरे दिनों की बात-चीत करते हैं, हम एक स्वर्ण-युग की कल्पना करते हैं और उन दिनों पर अपनी दृष्टि डालते हैं जो अब नहीं हैं। मनुष्य जितना अधिक विकसित होता जाता है और एक राष्ट्र जितना प्राचीन होता जाता है, उसका अतीत उतना ही अधिक मनोहारी और गौरवमय होता जाता है।

अब हमको यह देखना है कि इतिहास के अध्ययन से हम क्या लाभ होता है। इतिहास का अध्ययन हमको वर्तमान के निर्णय के हेतु पृष्ठ-भूमि प्रदान करता है। हमारे सभी निर्णय सापेक्ष हैं तथा तुलना एवं वैषम्य पर आधारित हैं। वर्तमान की अतीत के साथ तुलना करके ही हम यह जान सकते हैं कि आया वर्तमान अच्छा

या बुरा, सुखद या कष्टदायक है। इस प्रकार इतिहास का अध्ययन हमको वर्तमान अपने उचित मूल्यांकन के हेतु उचित दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसके अति अतीत के पाठ एवं अनुभव, जो इतिहास में उल्लिखित हैं, हमको राष्ट्र के जीवन आने वाले खतरों एवं अप्रत्याशित आपत्तियों के खिलाफ रक्षा करने के लिये शि देते हैं। राष्ट्रीय जीवन इतिहास रूपी कुतुबनुमा के अभाव में अज्ञात एवं असुवि से पूर्ण समुद्र में एक आपदामय यात्रा की भाँति होगा। हम इसके पृष्ठों में यह प हैं कि मनुष्यों ने शान्ति एवं संकटपूर्ण स्थितियों में क्या किया और उन्होंने किस प्र जीवन-यात्रा को चलाया। हम अपने आचरण का निर्देशन करने के लिये उ उदाहरणों को अपने समक्ष रखते हैं। हम उनके द्वारा निर्मित सत्य निर्णयो अनुगमन करते हैं और गलतियों को दूर करते हैं। यह सत्य ही कहा गया है कि "पूर्वजों की गलतियाँ भावी सन्तति के सीमा-चिह्न हैं।" इस प्रकार हम इतिहास अध्ययन से वह वस्तु प्राप्त करते हैं जो एक अमूल्य निर्देशक रूप में सेवा करती

इतिहास हमारी पक्षपात, संकुचितता तथा प्रान्तीयता से भी रक्षा करता सामान्यत: ये दोष उन मनुष्यों में पाये जाते हैं, जिनको इतिहास का ज्ञान नहीं जितना अधिक हम दूसरों के विषय में जानेंगे, उतने ही अच्छे ढङ्ग से अपने जी को दिशा प्रदान कर सकते हैं। दूसरे मनुष्यों के जीवन एवं कार्यों तथा दूसरे रा का ज्ञान हमारे दृष्टिकोण को व्यापक, हमारी सहानुभूति को विस्तृत तथा हम साथीपन की भावना को जाग्रत करता है। हम अपने गुणों तथा अवगुणों को सकते हैं और कह सकते हैं कि हम यहाँ उचित हैं और वहाँ अनुचित हैं। मिथ भिमान, अर्थहीन अन्धविश्वास, निम्न सन्देह आदि इतिहास द्वारा हमको प्रदान गये ज्ञान के प्रकाश में समाप्त या लुप्त हो जाते हैं। अन्ततः युगों की सम्प्र बुद्धिमत्ता, जिसको इतिहास अपने पृष्ठों में रखता है, मनुष्य को शिष्ट बनाती उसके चरित्र को दृढ़ता प्रदान करती है, और उसे बुद्धिमान एवं अच्छा या सदाच व्यक्ति बनाती है। एक राष्ट्र के भाग्य का निर्माण उसके महान् व्यक्तियों द्वारा कि जाता है। हम इतिहास के पृष्ठों में ही दृढ़ चरित्र एवं विस्तृत बुद्धिमत्ता से पूर्ण महान् पुरुषों के विषय में पढ़ते हैं। इतिहास का व्यक्ति तथा राष्ट्र—दोनों के इतना महत्त्व है कि शिक्षा इतिहास के के अध्ययन के अभाव में कभी भी पूर्ण नहीं सकती है।

ए० एच० गार्लिक (A. H. Garlick) ने विद्यालय के बालकों के इतिहास के मूल्य एवं महत्त्व को अधोलिखित शब्दों में प्रस्तुत किया है —

१. यह देश के अतीत इतिहास को अभिव्यक्त करने में सहायता देता है
२. यह देशभक्ति की भावना को जाग्रत करता है, राष्ट्रीय गर्व को उत्ते करता है, मद के प्रेम को उन्नत बनाता है, दोषों के विरो शक्तिशाली वस्तुपरक पाठों को प्रस्तुत करता है, और उपयुक्त ढ पढ़ाकर अच्छे नागरिकों को बनाने का प्रयत्न करता है।

३. यह रुचि तथा जिज्ञासा को जाग्रत करता है और इस प्रकार एकाग्र चित्त की आदतों के निर्माण में सहायता देता है।
४. यह तर्क-शक्ति के संवर्धन के लिए बहुत से कार्य या अवसर प्रदान करता है। बालक कारण एवं प्रभाव की खोजना, सामान्यीकरण करना तथा मूल्यवान अनुमानों को बनाना सीखता है।
५. उचित ढंग से पढ़ाने तथा विधिवत् अध्ययन करने पर इसको स्मृति के लिये एक अच्छा प्रशिक्षण बनाया जा सकता है।
६. इतिहास बालक में आलोचनात्मक शक्ति या वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करता है।
७. यह प्राय हमारी सहानुभूतियों को व्यावहारिक रूप प्रदान करता है। यह अपकारी प्रवृत्तियों को खेल द्वारा एक वैध मार्ग भी प्रदान करता है।
८. यह उल्लास के हेतु हमारी क्षमता एवं अवसरों में वृद्धि करता है। हमारे अजायबघरों में वास्तविक पदार्थों के संग्रह, हमारे प्राचीन भवन, हमारे युद्धक्षेत्र, आदि हमारे इतिहास के ज्ञान में विशेष रुचि एवं आकर्षण उत्पन्न करते हैं।
९. यह हमको दूसरे राष्ट्रों का कुछ ज्ञान प्रदान करके राष्ट्रीय पक्षपात को दूर करने में सहायता देता है।

३. नागरिक-शास्त्र : Civics

नागरिक शास्त्र नागरिकता की समस्याओं की व्याख्या करता है। हम सभी नागरिक एक लोकतन्त्रीय राज्य के कानून की आज्ञापालन करने वाले सदस्य हैं। एक सर्वसत्ताधारी राज्य में नागरिक का एक मात्र कर्त्तव्य—राज्य के आदेशों की विवेकहीन आज्ञाकारिता है। राज्य मस्तिष्क है और नागरिक केवल एक अवयव है। परन्तु एक लोकतन्त्रीय राज्य में प्रत्येक नागरिक के केवल कुछ कर्त्तव्य ही नहीं वरन उत्तरदायित्व भी होते हैं। वह केवल आदेशों का पालन नहीं करता है, वरन् नीतियों का निर्माण भी करता है। अत. प्रत्येक नागरिक को राज्य के मामलों से भी परिचित होना चाहिए। जब राज्य संकट में है, तब उसको उसकी सुरक्षा के लिये कार्य करना है। इसी प्रकार जब राज्य कोई गलती कर रहा है, तो उसे राज्य की आलोचना एवं उनको समाधान देने के लिये तत्पर रहना चाहिए। वह एक यान्त्रिक के समान है जो राज्य रूपी मशीन को चलाने में सहायता देता है और उसकी सामाजिक स्थिति कुछ भी हो, वह जब तक इसकी कार्य प्रणाली को नहीं जानता है तब तक वह कुशलता प्राप्त नहीं कर सकता है।

इस कारण लोकतन्त्र राज्य का हित इसी में है कि उसके नागरिक बुद्धिमान, चतुर एवं विस्तृत दृष्टिकोण वाले हों। सामान्य नागरिक का बौद्धिक एवं नैतिक स्तर राज्य की प्रगति तथा विकास का मापदण्ड है। अत. राज्य का प्रमुख

कर्त्तव्य—अपने नागरिकों को शिक्षित करना है। जब इसको व्यवहार में नहीं लाया जाता है तब इसे सिद्धान्त में स्वीकार कर लिया जाता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि इस शिक्षा का आधार क्या होना चाहिए ?

श्रीनिवास शास्त्री ने अपने एक प्रभाव भाषण में प्रत्येक विद्यालय में नागरिक-शास्त्र के अध्ययन को अनिवार्य बनाने के लिए एक शक्तिशाली तर्क प्रस्तुत किया था। शास्त्री जी ने कहा कि जिस प्रकार प्रत्येक व्यवसाय के लिए पर्याप्त योग्यता रखना आवश्यक है, उसी भाँति प्रत्येक छात्र के लिए यह अनिवार्य बना दिया जाय कि वह एक नागरिक के रूप में अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रयोग के लिये स्वयं को योग्य बनाये। शास्त्री जी ने बड़े उत्साह के साथ इस सुझाव के दायित्व को शैक्षिक-अधिकारियों पर डाला। भाग्यवश, इन दिनों शिक्षा-अधिकारियों ने इस दायित्व को स्वीकार कर लिया परन्तु इसको केवल आंशिक रूप में ग्रहण किया है। नागरिक-शास्त्र के अध्ययन को हमारे विद्यालयों में एक वैकल्पिक विषय बना दिया गया है।

आज हमारे गणतन्त्र के लिए श्रीनिवास शास्त्री की सलाह को मानना पहले से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है। एक तो इस कारण आवश्यक है कि समय-समय पर हम अपने मताधिकार का प्रयोग तथा अपने शासकों का निर्वाचन करना पड़ता है। हम इस कार्य को बुद्धिमानी के साथ तब तक पूर्ण नहीं कर सकते हैं, जब तक कि हम अपनी समस्याओं तथा अपनी राजनैतिक शक्तियों की चेतना से परिचित न हों। इसका अर्थ यह है कि हमको अपनी आर्थिक स्थिति तथा अपनी राजनैतिक मशीन का कार्यवाहक ज्ञान रखना चाहिए। इसी के अन्तर्गत ही नागरिक शास्त्र का अध्ययन आता है। यह हमको संविधान में हमारी स्थिति तथा इसके द्वारा प्रदान की गई हमारे अधिकारों की गारन्टी के विषय में पढ़ायेगा। यह हमको अर्थशास्त्र तथा शासन-प्रबन्ध की समस्याओं से भी अवगत करायेगा जिससे हम राज्य में अधिकारों को समझ सकते हैं और निर्वाचनों के समय अपने मत का बुद्धिमानी के साथ प्रयोग कर सकते हैं। राष्ट्रीय समस्याओं के विषय में हमारा विचार-विमर्श तब हमारी वैयक्तिक रुचियों एवं अरुचियों पर नहीं वरन् सिद्धान्तों तथा आदर्शों पर आधारित होगा। यह हमको उत्तम नागरिक बनायेगा और राज्य के उत्तम संरक्षक बनने में हमारी सहायता करेगा।

इसलिए नागरिक-शास्त्र के अध्ययन को हमारे माध्यमिक विद्यालयों में अनिवार्य विषय बनाया जाना चाहिए। संविधान का ज्ञान, जिसकी छत्र-छाया में हम रहते हैं, सामान्य रूप से राज्य तथा सहयोगी जीवन के प्रति हमारे कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का ज्ञान और राज्य में नागरिक होने के नाते हमारे अधिकारों का ज्ञान हमको सार्वजनिक मामलों, जो समय-समय पर उत्पन्न होते रहते हैं, को हल करने में एक दृढ़ आधार प्रदान करेगा। आजकल यह प्रवृत्ति बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है कि प्रश्नों का निर्णय सिद्धान्तों की अपेक्षा व्यक्तियों के सदर्भ में किया जाता है। परन्तु यह प्रवृत्ति लोकतन्त्रीय समाज में खतरनाक है और इसको दूर किया जाना चाहिए।

४. विज्ञान : Science

हम विज्ञान के युग मे रहते हैं। वैज्ञानिक आविष्कारो ने मानव-जीवन प्रकृति या चरित्र को पूर्ण रूप से परिवर्तित कर दिया है। विज्ञान ने भौतिक के लिये अपूर्व योगदान दिया है। इसने जीवन की गति एवं लय को प्रखर बना दि है। इसने मनुष्य को एक नवीन सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण प्रदान किया अतः इस युग मे विज्ञान का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। इस प्रकार के अध्य के अभाव मे आधुनिक मनुष्य सम्पूर्ण रूप से अनुपयुक्त-व्यक्ति है, वह शक्ति के सा से चलने वाली मोटर गाड़ी के पीछे चरमरर चलती हुई बैलगाड़ी के समान है।

विज्ञान का अध्ययन मस्तिष्क पर शिक्षा-प्रद प्रभाव डालता है और दूरगामी महत्त्व का होता है। यह व्यक्ति को सत्य-प्रेमी बनाता है। यह जीवन प्रति एक यथार्थ दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह अन्धविश्वास या भी दास वैज्ञानिक सत्य के अपने ज्ञान के लिये निरीक्षण की अपनी शक्तियों पर निर्भर र है। वह धैर्य एवं अध्यवसाय को ग्रहण करता है और ज्ञान के कार्य के हेतु क परिश्रम करता है। यह व्यक्ति की रुचियों के विस्तार को बढ़ाता है और प्रकृति वस्तुओं का सुस्पष्ट बोध प्रदान करता है।

विज्ञान व्यक्ति के मूल्यों के बोध या ज्ञान को सार एवं वास्तविकता प्र करता है और मानवता के लिये सेवा के नवीन क्षेत्रों को खोलता है। उसकी टीक के होते हुए भी पैवलव (Pavlov) की अपेक्षा या आइन्सटीन (Einstein) जो मानवता का प्रेमी था, या महान् जीवशास्त्री मिचुरिन (Michurin) से बढ़कर व्यक्ति अधिक उदार एवं मानव-हृदय वाला हो सकता है? लिस्टर (Lister) पासचर (Pasteur) से बढ़कर कौन मानवता को लाभ पहुँचाने वाला हो चुका और हमारे आचार्य प्रफुल्लचन्द्र (Acharaya Prafullachandra) जिन्होने प्रयं शाला में अपने जीवन के ६० वर्षों को व्यतीत किया, से बढ़कर क्या कोई मानव के लिये अनुरागी था और क्या कोई उनसे बढ़कर मानवीय कष्टों एवं निराशाओं लिये सहानुभूति से पूर्ण था? यह पक्षपातपूर्ण तर्क है कि विज्ञान उच्चतर भावन भावनाओं को मृतप्राय बनाता है।

विज्ञान का अध्ययन वह वस्तु है जो सृष्टि के रहस्य के हमारे ज्ञान को वि बनाता है। जितना अधिक हम प्रकृति के रहस्यों को जानेंगे उतना ही हम यह अनु करेंगे कि अज्ञान कितना शेष है। आज वैज्ञानिक भावना की तरंग के साथ प्रकृति आश्चर्यों के विषय में बातचीत करते हैं। और वे, जिनको जगदीश चन्द्र (Jagdish Chandra Bose) का सुनने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है, अभी उनकी आवाज के स्पन्दन का तथा उनकी आँखों के तेज को स्मरण करते हैं जब पदार्थ के रहस्यपूर्ण ब्रह्माण्ड मे छिपे हुए चमत्कारों के विषय में बोले थे।

६. सामान्य विज्ञान : General Science

आज के विश्व में प्रभावशाली जीवन यापन के लिए प्राकृतिक एवं भौतिक विज्ञानों के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान एवं मूल्यांकन आवश्यक है। इस क्षेत्र में जूनियर स्कूल के छात्र की समान आवश्यकता की पूर्ति 'सामान्य पाठ्य-क्रम' (General Courses) निर्धारित करके की जा सकती है। परन्तु इनमें व्यावहारिक *प्रयोगों एवं निरीक्षणों पर बल दिया जाना चाहिए।* हाई स्कूल स्तर पर विज्ञान के पाठ्य-विषयों का विशेषीकृत अध्ययन होना चाहिए और भौतिक शास्त्र, रसायनशास्त्र तथा जीवविज्ञान को स्वतन्त्र विषयों के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। परन्तु छात्रों के *अपने प्राकृतिक वातावरण के व्यवस्थापन और बाद में उनको अधिक विशेषीकृत* अध्ययन प्रदान करने के लिए उपयुक्त पृष्ठभूमि प्रदान करने के दृष्टिकोण से जूनियर स्तर के लिए, 'सामान्य विज्ञान' का पाठ्य-क्रम निर्धारित करना उपयुक्त है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि माध्यमिक विद्यालय में विज्ञान की पाठ्य-वस्तु "वैज्ञानिकों के उत्पादन" (Production of Scientists) के लिये निर्देशित नहीं की जानी चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य—अवैज्ञानिक को सुखी एवं पूर्ण जीवन के लिए तैयार करने के लिए वैज्ञानिक जगत—जैविक एवं भौतिक जगत का मूलभूत ज्ञान मूल्यांकन प्रदान करना है। *इसके साथ ही पाठ्य-वस्तु द्वारा उन मूलभूत सिद्धान्तों को प्रदान* करना चाहिए जो बाद में विज्ञान में विशेषता प्राप्त करेंगे। प्रदर्शनों, निरीक्षण क्षेत्रों की यात्राओं, और व्यावहारिक योजनाओं पर विशेष बल दिया जाना चाहिए जो *विद्यालय के विज्ञान का जीवन की वास्तविक समस्याओं* एवं परिस्थितियों—स्थूल समस्याओं, जैसे—स्थानीय सफाई, जल-व्यवस्था, सघातक जीवों या विनाशकारी कीटों की समाप्ति आदि के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जा सके। इस स्तर का *विज्ञान-शिक्षण छात्रों को वैज्ञानिक विधि के प्रयोग एवं मूल्यांकन* में उपक्रम प्रदान करे जिससे तथ्यों की खोज, सम्बन्ध-स्थापन तथा सुस्थित निष्कर्षों का निर्माण किया जा सके। आलोचनात्मक खोज के दृष्टिकोण के विकास के लिये प्रत्येक अवसर की *जाँच-पड़ताल करने के हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कक्षा-कक्ष,* परिवार, नगर एवं ग्राम, खेत एवं जंगल तथा धाराएँ आदि समस्त विज्ञान के अध्यापन के लिये समृद्ध साधन एवं अवसर प्रदान करें और विज्ञान के प्रत्येक शिक्षक को इनका पूर्ण *रूप से उपयोग करना चाहिए।*

शिक्षक को छात्रों में प्राकृतिक जगत के लिये जो उनके चारों ओर है, जिज्ञासा को जाग्रत करने, अपने ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग के हेतु उनकी क्षमता का विकास करने, हमारे जीवन के समस्त पक्षों पर आधुनिक विज्ञान के महान् सघात का *मूल्यांकन कराने तथा महान् वैज्ञानिकों के जीवन से परिचित* कराकर उनमें मानवीय क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रगति के लिये रुचि उत्पन्न करनी चाहिए। इस प्रकार की पहुँच यह निश्चय करेगी कि विज्ञान 'उदार' शिक्षा का एक अंग है और आधुनिक संस्कृति के

विशेष गुणों का मूल्यांकन करने के लिए एक साधन है। यदि पाठ्य-क्रम प्रस्तावित सुझावों के अनुकूल पुनः सगठित किया जाता है, और यदि नवीन गतिशील पहुँच को ग्रहण किया जाता है तो माध्यमिक विद्यालय निष्क्रिय एवं रूढ़िबद्ध निर्देश का एक-मात्र केन्द्र होने की अपेक्षा जीवन से सम्बन्धित सुखद शिक्षा का केन्द्र हो सकता है।

७. सामाजिक अध्ययन : Social Study

'सामाजिक अध्ययन' नामक शब्द भारतीय शिक्षा में अपेक्षाकृत नवीन है। यह परम्परागत रूप से पढ़ाये जाने वाले विषयों—इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिकशास्त्र आदि से सम्बन्धित है। यदि इन पृथक् विषयों का शिक्षण केवल *बहुत-सी एवं असम्बन्धित सूचना प्रदान करता है और सामाजिक स्थितियों एवं* समस्याओं पर प्रकाश नहीं डालता है या उनमें सूझ प्रदान नहीं करता है या वस्तुओं की प्रचलित स्थिति में सुधार करने की इच्छा का निर्माण नहीं करता है, तो उनका शैक्षिक महत्त्व नगण्य होगा। इसलिए अध्ययन का यह सम्पूर्ण समूह एक समग्र के रूप में देखा जाना चाहिए जिसका उद्देश्य छात्रों को अपने सामाजिक वातावरण में, जिसमें परिवार, समुदाय, राज्य तथा राष्ट्र निहित हैं, व्यवस्थित करना है, जिससे वे यह समझने के योग्य बन सकें कि समाज अपने वर्तमान रूप में किस प्रकार आया और सामाजिक शक्तियों तथा आन्दोलनों के साँचे की, जिसमें कि वे रह रहे हैं, बुद्धिमानी के साथ व्याख्या कर सकें। वे छात्र की यह खोजने तथा स्पष्ट करने में सहायता करते हैं कि अतीत में यह व्यवस्थापन किस प्रकार किया गया और यह *आज किस प्रकार हो रहा है। उनके द्वारा छात्र न केवल ज्ञान को ग्रहण करने के* लिये समर्थ होने चाहिए वरन् दृष्टिकोणों एवं मूल्यों को ग्रहण करने के योग्य भी होने चाहिए जो सफल सामूहिक जीवन एवं नागरिक कुशलता के लिये आवश्यक हैं। इनको छात्रों को न केवल राष्ट्रीय प्रेम का ज्ञान एवं राष्ट्रीय विरासत का मूल्यांकन देने का ही प्रयत्न करना चाहिए, वरन् विश्व-एकता एवं विश्व-नागरिकता का बोध कराने के लिये भी प्रयत्न करना चाहिए।

८. मातृभाषा : Mother-Tongue

भाषाओं के बीच 'मातृभाषा' को सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। मातृभाषा सीखने का अर्थ—किसी भी तरह पढ़ने-लिखने की एकमात्र क्षमता और छात्र की शब्दावली में क्रमिक वृद्धि से नहीं है। यह छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की शिक्षा के लिये सबसे महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक माध्यम है। इसके माध्यम से एक अच्छा शिक्षक अपने छात्रों को स्पष्ट चिन्तन, जोकि शिक्षा के महत्त्वपूर्ण विषयों में से एक है तथा सुस्पष्ट एवं उचित आत्माभिव्यक्ति में प्रशिक्षित कर सकता है, यह एक सामाजिक देने होने के अतिरिक्त सफल लोकतन्त्रीय नागरिकता के लिये भी एक आवश्यक गुण है। वह (शिक्षक) साहित्यिक मूल्यांकन और अच्छी अभिरुचि का भी निर्माण कर सकता है। इसके अतिरिक्त वह भावनाओं को भी शिक्षित कर सकता

है। साहित्य चरित्र के प्रशिक्षण एव महान् लेखको की आत्माओ के साथ आत्मीयता एव साहित्यिक लेखो के अध्ययन द्वारा उचित प्रकार के मूल्यो को ग्रहण करने के लिए एक माध्यम या साधन है। यह अतीत की संस्कृति एव मस्तिष्क के लिये भी उपयोगी सूझ प्रदान करता है। परन्तु ये उद्देश्य केवल तभी प्राप्त किये जा सकते हैं; जब उचित वस्तुओं—पढ़ने, लिखने तथा बोलने मे आत्माभिव्यक्ति; जीवन के दर्पण के रूप मे साहित्य का अध्ययन एव मूल्यांकन, पाठ्यपुस्तको पर एकाग्रचित्त होने की अपेक्षा उच्च गुणो से युक्त सामान्य पुस्तको को पढ़ने की रुचि, और साहित्य को व्याकरण एव शब्दावली मे उल्लास को समाप्त करने वाले अभ्यास की अपेक्षा सुख एव प्रेरणा के एक स्रोत के रूप मे ग्रहण करने पर बल दिया जायगा। यदि योग्य एवं सुप्रशिक्षित शिक्षक मातृभाषा के शिक्षण को इस भावना से ग्रहण कर सकते हैं तो यह शिक्षा के सम्पूर्ण स्तर एव गुण को उचित रूप उन्नत बनायेगा।

६ गणित : Arithmetic

" 'गणित' नागरिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से महत्त्वहीन नही है। यह इस प्रकार के नागरिक एवं आर्थिक मामलो, जैसे—दर एव करो, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक ऋणों, बीमा, लगान एव मजदूरी, बैंक व्यवस्था एवं करेन्सी आदि को स्पष्ट करने में एक महत्त्वपूर्ण साधन का कार्य करता है। यह गणना की कलाओ मे, जिनका एक नागरिक के प्रतिदिन के जीवन मे पर्याप्त महत्त्व है, अधिकार प्रदान करता है। अपने अनुशासनात्मक पहलू मे, यह आत्मनियन्त्रण की शक्ति का विकास और कठिनाइयों का सामना करने के लिए अध्यवसाय एव धैर्य की आदतो का निर्माण करने मे एक अमूल्य साधन है। गणित के अध्ययन द्वारा विचार की शिथिलता, अस्पष्टता और असमर्थता आदि कुछ दुर्गुणो का निराकरण किया जाता है।"

उपसंहार

हमने पाठ्य-क्रम के जिन विषयो का वर्णन किया है, वे सभी महत्त्वपूर्ण हैं। सभी विषयो का उद्देश्य—बालक की भावी व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं को पूर्ण करना है। इसीलिए इन सभी विषयो का प्राय समान महत्त्व है। कोई भी पाठ्य-क्रम इन विषयो की उपेक्षा नहीं कर सकता है। ऐसा करने से न तो बालक की भावी आवश्यकताएँ ही पूरी होगी और न उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास ही होगा।

UNIVERSITY QUESTION

1 Discuss the relative importance of the various subjects included in the High or Higher Secondary School Curriculum of your State.

३५

एकीकृत-पाठ्य-क्रम

INTEGRATED CURRICULUM

"वह पाठ्य-क्रम जिसके विषयों के बीच कोई अवरोध नहीं होता है, प्राय: पाठ्य-क्रम के नाम से पुकारा जाता है।"

"A curriculum in which barriers between subjects are broken s often called an integrated curriculum."

—*Stella V. Henderson.*

एकीकृत पाठ्य-क्रम का अर्थ और परिभाषा

Meaning & Definition of Integrated Curriculum

ीकृत पाठ्य-क्रम का अर्थ : Meaning of Integrated Curriculum

प्रत्येक पाठ्य-क्रम मे विषयों को दो तरीको से निर्धारित किया जा सकता ला तरीका यह है कि पाठ्य-क्रम में जितने भी विषय रखे जायें, उनका एक कोई सम्बन्ध न हो। दूसरा तरीका यह है कि पाठ्य-क्रम मे जो भी विषय ा एक-दूसरे से सम्बन्ध हो।

दूसरे प्रकार के पाठ्य-क्रम मे सब विषयो मे एक प्रकार की एकता होती है, लस्वरूप 'ज्ञान की एकता' (Unity of Knowledge) पाई जाती है। इसी पाठ्य-क्रम को एकीकृत या समेकित पाठ्य-क्रम कहते हैं। यह पाठ्य-क्रम कार के पाठ्य-क्रम से अधिक अच्छा समझा जाता है। इसका मुख्य कारण क पहिले प्रकार के पाठ्य-क्रम मे बालको को विभिन्न विषयों का जो ज्ञान ता है, वह सदैव अलग-अलग रहता है। उस ज्ञान मे एकता का अभाव होना स्वरूप बालको को वास्तविक ज्ञान नहीं प्राप्त हो पाता है। दूसरे तरीके मे एकता होती है, जिससे बालको का ज्ञान वास्तविक रूप धारण करता है।

एकीकृत पाठ्य-क्रम की परिभाषा : Definition of Integrated Curriculum

हैंडरसन के अनुसार एकीकृत पाठ्य-क्रम का अर्थ और परिभाषा इस प्रकार है :—"वह पाठ्य-क्रम जिसके विषयों के बीच में कोई अवरोध नहीं होता है, प्रायः 'एकीकृत पाठ्य-क्रम के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रकार का पाठ्य-क्रम उन अनुभवों को देता है, जिनको एकीकरण की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के लिये सुविधाजनक समझा जाता है और जिनसे सम्बन्ध रखकर बालक अपने अनुभव को समझने या उसका पुनर्निमाण करने में उपयुक्त पाठ्य-वस्तु को सीखते हैं। इस प्रकार का अनुभव-प्रधान पाठ्य-क्रम विषयों को अलग-अलग रखने और उनको शीर्षकों में बांटने का अन्त करता है तथा ऐसे विषयों को स्थान देता है, जो बालक की रुचि के केन्द्र होते हैं।"

"A curriculum in which barriers between subjects are broken down is often called an 'integrated curriculum.' Such a curriculum provides experiences which are supposed to facilitate the psychological process of integration and in connection with which children will learn the subject-matter suitable for understanding or reconstructing their experience. Such an experience curriculum abolishes the old compartmentalization and the categories of subjects as such, introducing subjects only as they pertain to the centres of child interest."—*Stella V Henderson*

प्रचलित पाठ्य-क्रम में एकीकरण का अभाव
Lack of Integration in Existing Curriculum

हमारे देश में जो विभिन्न पाठ्य-क्रम शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रयोग किये जा रहे हैं, उनमें से किसी में एकीकरण नहीं हैं। सभी पाठ्य-क्रम खण्डों में बँटे हुए हैं। प्राथमिक विद्यालयों में बालक लगभग ४० मिनट पढ़ने में, ३० मिनट अंकगणित के प्रश्न करने में, २० मिनट लिखने और शब्दों का उच्चारण करने में, और फिर १५ मिनट सुलेख लिखने में व्यतीत करते हैं। इन सभी क्रियाओं में सामान्य रूप से कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई भी विचार किसी तरह से छात्रों को एक साथ नहीं मिलता है।

माध्यमिक विद्यालयों की स्थिति भी इतनी ही खराब है। वस्तुतः वे किसी भी प्रकार के सुधार को करने में बहुत देर लगाते हैं। छात्रों को अनेकों विषय पढ़ाये जाते हैं और उनका एक-दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। माध्यमिक विद्यालय

के लिये आवश्यक समझता है। विज्ञान का शिक्षक विज्ञान पढाते समय सामाजिक अध्ययन या और किसी विषय के बारे मे सोचता ही नही है। फलत छात्र विज्ञान की विभिन्न शाखाओ मे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं देखते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि उनको वास्तविक ससार का बहुत कम ज्ञान हो पाता है। इस परिस्थिति मे सुधार करने के लिए पाठ्य-क्रम मे एकीकरण किया जाना आवश्यक है।

एकीकृत पाठ्य-क्रम के प्रयोग में कठिनाइयाँ
Difficulties in the Use of Integrated Curriculum

एकीकृत पाठ्य-क्रम के प्रयोग मे निम्नलिखित तीन कठिनाइयो का अनुभव किया गया है :—

१. बालकों की रुचियों को ध्यान में रखकर एकीकरण असम्भव : Integration Impossible in View of Children's Interests

विभिन्न विषयो का एकीकरण करते समय छात्रों की रुचि को ध्यान मे रखना बहुत आवश्यक है। पर यदि उनकी रुचि पर ध्यान रखा जाता है, तो एकीकरण करना असम्भव हो जाता है।

हम यह स्वीकार कर सकते हैं कि कुछ छात्र ऐसे होंगे जो अपनी रुचियो का दमन करके एकीकृत पाठ्य-क्रम का स्वागत करेंगे। पर अधिकाश छात्रों के बारे मे यह बात नही कही जा सकती है। मान लीजिये— अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल, विज्ञान और संस्कृत का एकीकृत पाठ्य-क्रम बना दिया जाय। अब यदि बालक को इनमे से एक या एक से अधिक में तनिक भी रुचि नही है, तो इस पाठ्य-क्रम का सफल होना असम्भव है। इसलिये एकीकृत पाठ्य-क्रम के प्रयोग मे कठिनाई का अनुभव किया जा रहा है।

२. सब विषयों का एकीकरण असम्भव : Integration of All Subjects Impossible

यह बात असम्भव है कि सब विषयों का एकीकरण कर दिया जाय। माध्यमिक स्तर पर विषय बहुत कम होते हैं। पर वहाँ भी एकीकरण करना सम्भव नहीं है। उदाहरणार्थ—अकगणित का सामाजिक विज्ञान मे और उच्चारण का बालक की क्रिया से एकीकरण नहीं किया जा सकता है।

इस बात की पुष्टि कार्लटन वाशबर्न (Carlton Washburne) ने की है, जिसने अमेरिका के विनेटका (Winnetka) नामक स्थान पर अनेक वर्षों तक स्कूलों के सुपरिन्टेण्डेन्ट के रूप में काम किया है। उसका सुझाव है कि एकीकरण के प्रयास में समय नष्ट न करके एक मूलभूत पाठ्य-क्रम (Basic Course) बनाया जाय।

जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाय, वैसे-वैसे इस पाठ्यक्रम में उसके अनुभवों और प्रशिक्षण के अनुसार परिवर्तन किया जाय। इस पाठ्यक्रम में बालक के जीवन और रुचियों से सम्बन्धित विषय ही रखे जायें।

३. हाईस्कूल स्तर पर विषयों का एकीकरण अनुचित : Integration Undesirable at High-School Level

हेंडरसन (Henderson) का मत है कि हाईस्कूल स्तर पर विषयों का एकीकरण करना बहुत बड़ी गलती होगा। यही कारण है कि अमेरिका के इन स्कूलों ने एकीकृत पाठ्यक्रम बनाने का प्रयास नहीं किया है। इनके पाठ्यक्रम आधुनिक बाल-मनोविज्ञान पर आधारित हैं। उनमें बालकों की क्रियाओं और रुचियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है और वे बालकों के लिए जीवन से सम्बन्धित परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। पर किसी ने हाईस्कूल के अपने पाठ्यक्रम को पूर्णतया परिवर्तित करके एकीकृत नहीं बनाया है।

UNIVERSITY QUESTION

1. What do you understand by integrated curriculum ? Is it possible to introduce this curriculum at the elementary and secondary stages of education ?

३६

शिक्षण के सामान्य या आधारभूत सिद्धान्त

GENERAL OR BASIC PRINCIPLES OF TEACHING

"सब विचारशील शिक्षा-शास्त्री इस बात से सहमत हैं कि समस्त ज्ञान के कुछ आधारभूत सिद्धान्त होते हैं और दायित्वपूर्ण शिक्षण इनके अनुसार होना चाहिये।"

"All thoughtful educators are agreed that certain fundamental principles underlie all learning, and that responsible teaching must correspond to these."—*Thomas & Lang.*

विषय-प्रवेश

ह्यूजेस और ह्यूजेस का कथन है—"यह ठीक ही कहा गया है कि 'शिक्षण' का अर्थ है—सीखने के लिये आधार प्रस्तुत करना। तब तक कुछ नहीं दिया गया है, जब तक कुछ ग्रहण नहीं किया गया है; तब तक कुछ नहीं पढ़ाया गया है, जब तक कि कुछ सीखा नहीं गया है। शिक्षण पूर्ण रूप से तैयार किये हुए व्याख्यानों को देने से बहुत अधिक है।"

"It has been well said that 'teaching' means 'causing to learn'. Nothing has been given until it has been taken, nothing has been taught until it has been learnt. Teaching is more than the efficient delivery of thoroughly prepared lectures."—*Hughes & Hughes.*

शिक्षण के सामान्य या आधारभूत सिद्धान्त

General or Basic Principles of Teaching

शिक्षण में सफलता प्राप्त करने के लिये सबसे आवश्यक शर्त यह है कि इस बात का ज्ञान प्राप्त किया जाय कि बच्चे किस प्रकार सीखते हैं। इसलिये शिक्षण के

आधारभूत या सामान्य सिद्धान्तों पर विचार करना हमारे लिये लाभप्रद होगा। ये सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

१. क्रियाशीलता या करके सीखने का सिद्धान्त (Principle of Activity or Learning by Doing)
२ प्रेरणा का सिद्धान्त (Principle of Motivation)
३. जीवन से सम्बन्ध स्थापित करने का सिद्धान्त (Principle of Linking with Life)
४. रुचि का सिद्धान्त (Principle of Interest)
५. निश्चित उद्देश्य का सिद्धान्त (Principle of a Definite Aim)
६. चयन का सिद्धान्त (Principle of Selection)
७. नियोजन का सिद्धान्त (Principle of Planning)
८. वैयक्तिक विभिन्नताओं को स्वीकार करने का सिद्धान्त (Principle of Recognizing Individual Differences)
९ जानतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त (Principle of Democratic Dealing)
१०. विभाजन का सिद्धान्त (Principle of Division)
११. पुनरावृत्ति का सिद्धान्त (Principle of Revision)
१२ निर्माण और मनोरंजन का सिद्धान्त (Principle of Creation & Recreation)

१. क्रियाशीलता या करके सीखने का सिद्धान्त : Principle of Activity or Learning by Doing

प्रकार के पाठ के लिये क्रियाशील हो। इसके विपरीत, इसका अर्थ यह है कि शिक्षक प्रत्येक प्रकार के पाठ के लिये बालक को क्रियाशील बनाये। क्रियाशीलता के बिना सीखने का काम कठिन हो जाता है। उदाहरणार्थ—यदि हम बालकों से किसी ऐतिहासिक घटना के तथ्यों और तिथियों को याद करने के लिये कहें, तो वे कठिनाई का अनुभव करते हैं। पर यदि वे उस घटना को नाटक के रूप में खेलते हैं, तो उनको उससे सम्बन्धित सब बातें बड़ी सरलता से याद हो जाती हैं। इससे सिद्ध हो जाता है कि क्रियाशीलता का सिद्धान्त बहुत लाभदायक है।

ह्यूरिस्टिक पद्धति, प्रोजेक्ट पद्धति, किंडरगार्टन पद्धति, मॉन्टेसरी-पद्धति और डाल्टन प्रणाली का आधार—यही सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त को प्रत्येक कक्षा और प्रत्येक विषय के शिक्षण में लागू किया जा सकता है। इसकी उपयोगिता शिक्षण-कार्य में ही नहीं, वरन् विद्यालय के अन्य कार्यों में भी है। उदाहरणार्थ—विद्यालय की विभिन्न सभाओं, सोसाइटियों, गोष्ठियों, क्लबों आदि में क्रियाशील रहने से बालकों में अच्छे विचारों और भावनाओं का निर्माण होता है। उनमें अच्छी आदतें पड़ती हैं और उनको समाज-सेवा का प्रशिक्षण मिलता है।

२. प्रेरणा का सिद्धान्त : Principle of Motivation

"ज्ञान प्रदान करने वाली किसी स्थिति में रुचि उत्पन्न करने की प्रक्रिया को 'प्रेरणा' कहा जाता है।"

"The process of creating interest in any learning situation is called motivation."

यदि बालकों को किसी पाठ के लिये उचित रूप से प्रेरित कर दिया जाता है, तो शिक्षक द्वारा शिक्षण का आधा युद्ध जीत लिया जाता है। कारण यह है कि प्रेरित होने पर बालकों की पाठ में रुचि उत्पन्न हो जाती है जिससे उनको पढ़ाने और उनके द्वारा सीखे जाने का कार्य बहुत सरल हो जाता है। बालकों को इस स्थिति में पहुँचाये बिना शिक्षक के सभी प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं। अतः उसके लिए प्रेरणा के सिद्धान्त पर चलना अति आवश्यक है।

अब प्रश्न यह उठता है कि—बालकों को किस प्रकार प्रेरित किया जाना चाहिए? इसके लिए शिक्षक को बालकों की जन्मजात प्रवृत्तियों (Innate Tendencies) का सहारा लेना चाहिए। बालकों में अपने वातावरण के बारे में जानने की *बहुत प्रबल इच्छा या जिज्ञासा (Curiosity) होती है।* बुद्धिमान शिक्षक को इसका लाभ उठाना चाहिए। उसे अपनी विषय-वस्तु उनके सामने इस प्रकार रखनी चाहिए कि उसमें उनकी जिज्ञासा उत्पन्न हो जाय। जिज्ञासा को अनेकों विधियों से उत्पन्न किया जा सकता है। उदाहरणार्थ—छात्रों को ऐतिहासिक स्थानों पर ले जाया जा सकता है। उनको देखकर बालक स्वाभाविक रूप से यह जानने के लिये उत्सुक होंगे कि इन स्थानों से सम्बन्धित कौन-कौनसी ऐतिहासिक घटनाएँ हैं। इसी प्रकार,

७. नियोजन का सिद्धान्त : Principle of Planning

...चयन के बाद नियोजन का सिद्धान्त आता है। कुशल शिक्षण केवल नियोजन के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है। शिक्षक को उन समस्याओं को देखने के योग्य होना चाहिए जो अध्यापन करते समय उसके समक्ष आ सकती हैं। उसे स्वयं भी उनका सामना करने के लिए पहले से तैयार होना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसको बड़ी ही संकटपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ता है। समस्याओं, विषय-वस्तु एवं सहायक सामग्री को ध्यान में रखकर उसे अपनी पाठ्य-वस्तु को एक निश्चित ढंग में व्यवस्थित करना चाहिए। परन्तु उसको इस तथ्य को नहीं भूल जाना चाहिए कि पाठ-योजना उसकी स्वामिनी नहीं वरन् सेविका है। वह किसी भी पाठ योजना को पढ़ाते समय भी परिस्थितियों की मांग के अनुसार बदल सकता है। अतः उसकी योजना लचीली एवं उदार होनी चाहिए।

८. वैयक्तिक विभिन्नताओं को स्वीकार करने का सिद्धान्त : Principle of Recognizing Individual Differences

मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सब बालक योग्यता, बुद्धि, स्वभाव और रुझान में एक से नहीं होते हैं। अतः यह आवश्यक है कि पढ़ाते समय शिक्षक छात्रों की विभिन्नताओं का ध्यान रखे। उसे यह कभी भी नहीं समझना चाहिए कि सब छात्र एक ही स्तर पर हैं। उसे मन्द गति से सीखने वाले बालकों पर झुंझलाना और क्रुद्ध नहीं होना चाहिए। ... साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उसे असामान्य (Abnormal) बालकों ...ने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। उसे योग्य बालकों का पथ-प्रदर्शन ...कार करना चाहिए। सारांश में, उसे वैयक्तिक विभिन्नताओं को ... और उन्हीं के अनुसार बालकों के साथ व्यवहार करना चाहिए।

... लोकतन्त्रीय व्यवहार का सिद्धान्त : Principle of Democratic Dealing

कक्षा में शिक्षक का दृष्टिकोण लोकतन्त्रीय, न कि तानाशाही होना चाहिए। ...ही दृष्टिकोण छात्रों के व्यक्तित्व का दमन कर सकता है। अतः यह दृष्टिकोण ... कर शिक्षक को लोकतन्त्रीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। उसे अपने छात्रों ...न्त्रतापूर्वक प्रश्न पूछने की आज्ञा देनी चाहिए। उसे अपने पाठ को उनकी ...से आगे बढ़ाना चाहिए। उसे उनको अपने विचारों को व्यक्त करने के सभी ...ने चाहिए। इससे छात्रों में विचार करने की आदत पड़ेगी। साथ ही उनकी ...व की भावना भी सन्तुष्ट होगी।

...ाजन का सिद्धान्त : Principle of Division

...सिद्धान्त का अर्थ यह है कि शिक्षक को अपनी पाठ्य-सामग्री को एक ...के अनुसार सोपानों (Steps) में बाँट लेना चाहिए। इन सोपानों का ...ना चाहिए कि पढ़ाते समय वह स्वाभाविक ढंग से एक सोपान से दूसरे

पर पहुँच सके। इस प्रकार प्रस्तुत किया जाने वाला पाठ बालकों के लिए बहुत सरल हो जाता है और वे उसका ज्ञान बड़ी सुगमता से प्राप्त कर लेते हैं। ऐसा न करने से पाठ जटिल हो जाता है और छात्र कुछ भी नहीं समझ पाते हैं। अतः सफल शिक्षण के लिये प्रत्येक पाठ को क्रमिक सोपानों में बाँटना बहुत आवश्यक है।

११. आवृति का सिद्धान्त : *Principle of Revision*

इस सिद्धान्त का अर्थ यह है कि पाठ्य-विषय की बातों को बार-बार दोहराया जाय। ऐसा करने पर ही बालक उसे अच्छी प्रकार समझ पाते हैं। यह बात कठिन पाठ्य-विषय के बारे में विशेष रूप से सत्य है। यदि उसको बार-बार दोहराया नहीं जायगा, तो वह छात्रों के मस्तिष्क से निकल जायगा। इसीलिए कुछ शिक्षा-शास्त्रियों ने इस सिद्धान्त को अत्यधिक महत्त्व दिया है। पर इस सम्बन्ध में एक बात याद रखनी आवश्यक है। दोहराने की मात्रा पाठ पर निर्भर होनी चाहिए। कठिन पाठ में दोहराना अधिक, और सरल में कम होना चाहिए। इस बात का निर्णय केवल शिक्षक ही कर सकता है।

१२. निर्माण और मनोरंजन का सिद्धान्त : Principle of Creation & Recreation

इस सिद्धान्त का अर्थ यह है कि छात्रों से जो क्रियायें करवाई जायँ, वे रचनात्मक और मनोरंजनपूर्ण हों। इससे तीन लाभ होते हैं पहला, छात्र अपनी रचनात्मक शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं। दूसरा, उनकी स्वयं ही अध्ययन करने की इच्छा होती है। तीसरा, क्रिया में उनकी शक्ति का क्षय होता तो अवश्य है, पर मनोरंजन के कारण उनको इस बात का अनुभव नहीं होता है। अतः यह आवश्यक है कि अध्यापक अपने शिक्षण में निर्माण और मनोरंजन से सिद्धान्त का अनुसरण करे।

उपसंहार

उपर्युक्त सभी शिक्षण-सिद्धान्त अति महत्त्वपूर्ण हैं। अपने शिक्षण-कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए अध्यापक को इनमें से अधिक-से-अधिक सिद्धान्तों का अनुसरण करना चाहिए। उसे इनके प्रति कभी भी उदासीन नहीं होना चाहिए।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. Describe briefly the general or basic principles involved in the art of teaching that a teacher should know and follow.
2. What do you understand by motivation ? What activities of a *class-room are well motivated ?*
3. Give an account of the psychological basis of the 'activity principle' in the teaching of different subjects with appropriate

७. नियोजन का सिद्धान्त : Principle of ।

चयन के बाद नियोजन का सिद्धान्त आता के माध्यम से ही सम्भव हो सकता है । शिक्षक को होना चाहिए जो अध्यापन करते समय उसके सम उनका सामना करने के लिए पहले से तैयार होना है, तो उसको बड़ी ही सकटपूर्ण स्थिति का सामन विषय-वस्तु एव सहायक सामग्री को ध्यान मे रख निश्चित ढग मे व्यवस्थित करना चाहिए। परन्तु चाहिए कि पाठ-योजना उसकी स्वामिनी नही वर योजना को पढ़ाते समय भी परिस्थितियों का मा उसकी योजना लचीली एव उदार होनी चाहिए ।

८. वैयक्तिक विभिन्नताओं को स्वीकार य Recognizing Individual Difference

मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों ने यह सिद्ध बुद्धि, स्वाभाव और रुझान मे एक से नही होते

ते

३७
शिक्षण–सूत्र
MAXIMS OF TEACHING

शिक्षण-सूत्रों का आविष्कार नहीं किया गया है, वरन् उनको खोजा ग
है। ये उस मार्ग की सुगम उक्तियाँ बनाते हैं, जिनसे शिक्षण और सीखना आगे ब
हैं। ये शिक्षण को प्रभावशाली और कुशल बनाते हैं।

Maxims of teaching have been discovered, not invente
They are simply statements of the way in which teaching and lear
ing go forward. They ensure effective and efficient teaching.

विषय-प्रवेश

शिक्षण-सूत्रो का प्रयोग पढ़ाने और पढ़ने—दोनो मे सहायता देता है। इन
अनुसरण करने से शिक्षक अपने कार्य मे सफल होता है और छात्र भी सरलता से ज्ञ
प्राप्त कर लेते हैं। अत. यह आवश्यक है कि प्रत्येक अध्यापक शिक्षण के स
इनका प्रयोग करे।

शिक्षण-सूत्र
Maxims of Teaching

प्रमुख शिक्षण-सूत्र निम्नलिखित हैं —

१. सरल से जटिल की ओर (From Simple to Complex)
२. ज्ञात से अज्ञात की ओर (From Known to Unknown)
३. स्थूल से सूक्ष्म की ओर (From Concrete to Abstract)
४. पूर्ण से अंग की ओर (From Whole to Part)
५. अनिश्चित से निश्चित की ओर (From Indefinite to Definite)
६. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर (From Seen to Unseen)
७. विशिष्ट से सामान्य की ओर (From Particular to General)

८ विश्लेषण से संश्लेषण की ओर (From Analysis to Synthesis)
९ मनोवैज्ञानिक से तार्किक क्रम की ओर (From Psychological to Logical)
१० अनुभूत से युक्तियुक्त की ओर (From Empirical to Rational)
११ प्रकृति का अनुसरण (Follow Nature)

१ सरल से जटिल की ओर : From Simple to Complex

इस सूत्र का अर्थ यह है कि पहले बालकों को सरल बातें बतानी चाहिए। उसके बाद ही उनको जटिल बातें बतानी चाहिए। अतः पाठ को इस प्रकार विभाजित करना चाहिए कि पहले सरल बातें आयें और उसके बाद क्रम से जटिल बातें। इसका आधार मनोवैज्ञानिक है। बालक सरल बातों को समझने के बाद जटिल बातों को समझ लेते हैं। यदि उनको प्रारम्भ में ही जटिल बातें बताई जाती हैं, तो वे शिक्षण में रुचि नहीं लेते हैं। उदाहरणार्थ—इतिहास के शिक्षण में पहले शिवाजी जैसे नेताओं के जीवन से सम्बन्धित सरल कहानियों को सुनाया जाना चाहिए।

इसका कारण यह है कि बालकों को कहानियों में रुचि होती है, और वे उनको सरलता से समझ भी लेते हैं। इन कहानियों के बाद दूसरे पाठों में युद्ध, सन्धियों, नीतियों आदि जटिल बातों का बताया जाना चाहिए। यदि इनको पहले ही बता दिया गया, तो शिक्षक का प्रयास व्यर्थ हो जायगा। साथ ही बालकों को न उनमें न तो रुचि ही आयेगी और न वे उनको भली प्रकार समझ ही सकेंगे।

यहाँ एक बात पर ध्यान देना आवश्यक है। 'सरल' बालक के दृष्टिकोण से होना चाहिए, न कि शिक्षक के। यह सम्भव है कि जो बातें शिक्षक को सरल जान पड़ती हैं, वे छात्रों के लिए सरल न हों।

२. ज्ञात से अज्ञात की ओर From Known to Unknown

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि बालक अपने पूर्वज्ञान का सहारा लेकर नये ज्ञान को प्राप्त करता है। अतः यह स्वाभाविक है कि बालक जो कुछ जानता है, उसी पर नये ज्ञान को आधारित किया जाय। इस विधि से लाभ यह होता है कि बालक नये ज्ञान को सरलता से ग्रहण कर लेता है और उसे अपने पूर्व ज्ञान का भाग बना लेता है।

अतः शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि किसी विषय को पढ़ाने से पहले वह इस बात का पता लगा ले कि बालक को उस विषय का कितना पूर्व ज्ञान है। शिक्षक को इस पूर्व ज्ञान पर नये ज्ञान को आधारित करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि शिक्षक को 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' बढ़ना चाहिए।

प्रत्येक प्रकार के पाठ में इस सूत्र का प्रयोग किया जाना चाहिए। ऐसा करने से बालक नये ज्ञान को अपना बना लेगा। उदाहरणार्थ—यदि बालक ताज-

महल के बारे मे जानते हैं, तो इस ज्ञान के आधार पर उन्हे शाहजहाँ के बारे मे बताया जा सकता है। इसी प्रकार सूती उद्योग पर भूगोल का पाठ उन वस्त्रो से प्रारम्भ होना चाहिए, जिनको बालक पहनते हैं। इस क्रम को बदल देने से शिक्षक के सामने अनेकों कठिनाइयाँ आ सकती हैं।

३. स्थूल से सूक्ष्म की ओर : From Concrete to Abstract

बालक सूक्ष्म के बारे मे नहीं सोच सकता है। प्रारम्भ मे वह वस्तुओ को स्थूल रूप मे ही जानता और समझता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है, वैसे वैसे उसमे सूक्ष्म को समझने की शक्ति का विकास होता जाता है। उदाहरणार्थ—प्रारम्भ मे बालक यह समझने मे असमर्थ होता है कि 'दो और दो'=चार होते हैं उसके लिए यह एक सूक्ष्म बात यह है। इसलिए यदि दो और दो का जोड़ या गुणा बताते समय शिक्षक उससे कहे कि चार हुए, तो यह बात उसकी समझ मे नही आती है। पर यदि शिक्षक उसे दो गोलियाँ दे दे और उसके बाद फिर दो गोलियाँ दे, तो उसे यह समझने में तनिक भी कठिनाई नही होती है कि दो और दो का जोड़ या गुणा 'चार' होता है।

इस उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है कि बालक पहिले स्थूल वस्तुओ को समझता है, उसके बाद उनको और उनके प्रयोग को देखकर वह सूक्ष्म बातो को समझता है। अतः शिक्षण का यह सूत्र बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि छोटे बच्चों को पढ़ाते समय प्रारम्भ मे केवल स्थूल वस्तुओं का प्रयोग किया जाय और फिर उनकी सहायता से बच्चो को सूक्ष्म बातों का ज्ञान कराया जाय। इस सम्बन्ध में स्पेंसर का यह कथन सदैव याद रखना चाहिए—"हमारा पाठ स्थूल वस्तुओ से प्रारम्भ होना चाहिए और सूक्ष्म बातों से समाप्त होना चाहिए।"

"Our lesson should start form the concrete and end in the abstract." —*Spencer*.

४. पूर्ण से अंग की ओर : From Whole to Part

बालक प्रारम्भ मे पूर्ण वस्तुओ को ही जानता और समझता है। वह उसके अंगो को न तो जानता है, और न समझ पाता है। अवयवीवादी मनोवैज्ञानिक (Gestalt Psychologists) ने यह बात सिद्ध कर दी है कि वस्तुओं के बारे मे बालक के विचार खडों में नहीं होते हैं। उदाहरणार्थ—बालक ने मेज या कुर्सी देखी है। जब हम इसके बारे मे उससे या अन्य किसी से बात करते हैं, तो मेज या कुर्सी का पूर्ण चित्र उसके सामने आ जाता है। वह उसके पूर्ण रूप के बारे मे ही सोचता है। उसके लिए मेज या कुर्सी के भागो के बारे मे सोचना असम्भव है। शिक्षक बालक के ज्ञान से लाभ उठाकर उसे मेज या कुर्सी के अन्य भागो के बारे मे बताता है। दूसरे शब्दो में, अध्यापक अपना शिक्षण पूर्ण वस्तु से प्रारम्भ करता है और फिर

उसके विभिन्न भागों का बालक को ज्ञान कराता है। यही उपरिलिखित सूत्र का अर्थ है।

आधुनिक शिक्षण-विधि में इस सूत्र का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसने शिक्षण की पुरानी विधि को बदल दिया है। पहले बालक को अक्षरों का ज्ञान कराया जाता था और उसके बाद वाक्यों का। पर आजकल बालक को पहले वाक्य का ज्ञान कराया जाता है और उसके बाद अक्षरों का।

यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि 'पूर्ण' शब्द की व्याख्या बालक की समझने की शक्ति के अनुसार की जानी चाहिए। यह सोचना गलती है कि बालक पृथ्वी को ग्लोब की सहायता से पूर्ण रूप से समझ सकता है। उसकी पूर्ण की धारणा भौतिक वातावरण तक ही सीमित होती है। इससे अधिक वह कुछ नहीं समझता है।

५. अनिश्चित से निश्चित की ओर : From Indefinite to Definite

प्रारम्भ में बालक का ज्ञान अस्पष्ट और अनिश्चित होता है। शिक्षक को बालक के इसी अनिश्चित ज्ञान को अपने शिक्षण का प्रारम्भिक बिन्दु बनाना चाहिये। फिर धीरे-धीरे उसे इसको निश्चित रूप देना चाहिए। उदाहरणार्थ—गाय, कुत्ते या घोड़े के बारे में बालक की धारणा अनिश्चित होती है। इसका कारण यह है कि उसे इन पशुओं के अन्य शारीरिक भागों का कोई ज्ञान नहीं होता है। शिक्षक इन भागों के बारे में बालक को ज्ञान प्रदान करता है। इस प्रकार वह बालक के मस्तिष्क में इन पशुओं के चित्र को पूर्ण बनाता है। एक दूसरा उदाहरण ले लीजिये। बालक को एक पौधे का अनिश्चित ज्ञान होता है। शिक्षक उसके विभिन्न भागों को बताकर इस ज्ञान को निश्चित रूप प्रदान करता है।

६. प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर : From Seen to Unseen

इस सूत्र का अर्थ यह है कि बालक को पहले उन वस्तुओं का ज्ञान दिया जाना चाहिये, जिन्हें वह देख सकता है। उसके बाद ही उसे उन बातों के बारे में बताया जाना चाहिये जिन्हें वह देख नहीं सकता है। इस सूत्र का दूसरा अर्थ यह है कि पहले बालक को वर्तमान का ज्ञान दिया जाना चाहिये और उसके बाद भूत और भविष्य की बातों का। जिन वस्तुओं को बालक स्वयं देख सकता है, उनका ज्ञान उसे बहुत सरलता से हो जाता है। अतः उसे प्रत्यक्ष वस्तुओं के द्वारा अप्रत्यक्ष वस्तुओं का ज्ञान दिया जाना चाहिये। शिक्षण के समय इन प्रत्यक्ष वस्तुओं का प्रयोग किया जाना चाहिये। इनको समझने के बाद बालक अप्रत्यक्ष बातों को सरलता से समझ सकता है।

से सामान्य की ओर : From Particular to General

. . सू . का अर्थ है—अनेकों उदाहरण द्वारा एक सामान्य सिद्धान्त निकलवाना। . बालकों के सामने कुछ उदाहरण रखता है। बालक उनकी परीक्षा करके तथ्य

को समझने का प्रयास करते हैं और सफल होने पर उनसे सम्बन्धित नियम निकाल लेते हैं। शिक्षक उनको यह नियम बताता नहीं है। उदाहरणार्थ—शिक्षक छात्रो से यह नियम निकलवाना चाहता है कि—"ठोस वस्तुओं को किसी द्रव मे डुबाने से उनका भार कम हो जाता है।"

यह नियम निकलवाने के लिये शिक्षक विभिन्न प्रकार की ठोस वस्तुओ के प्रयोग दिखाता है। वह पहले उनका भार हवा मे लेता है। उसके बाद वह उनका भार द्रव मे डुबा कर लेता है। बालक दोनो प्रकार के भारो का निरीक्षण करते हैं। सुविधा होने पर वे स्वय परीक्षण भी करते है। इस प्रकार वे स्वय यह नियम निकाल लेते हैं—"ठोस वस्तुओ को किसी द्रव मे डुबाने से उनका भार कम हो जाता है।" यह सूत्र मनोवैज्ञानिक है। बालक एक कार्य को स्वय करके देखते हैं। इससे उन्हे कार्य मे रुचि हो जाती है। कार्य को स्वयं करने के कारण, वे इसको भूलते नही हैं और जो भी ज्ञान वे प्राप्त करते हैं, वह उनके मस्तिष्क मे सदैव बना रहता है।

८. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर : From Analysis to Synthesis

प्रारम्भ मे बालक का ज्ञान अपूर्ण और अनिश्चित होता है। उसके ज्ञान को शिक्षक ही पूर्ण और निश्चित बनाता है। वह इस कार्य को विश्लेषण प्रणाली के द्वारा करता है। इस प्रणाली मे पहले सम्पूर्ण वस्तु का अध्ययन किया जाता है। फिर उसके विभिन्न भागो का अलग-अलग अध्ययन किया जाता है। उदाहरणार्थ—यदि शिक्षक भूगोल पढाना चाहता है, तो वह पहले सम्पूर्ण पृथ्वी के बारे मे बताता है। इसके बाद वह जलवायु के अनुसार विभिन्न भागो को बताता है। इसके पश्चात् वह प्रत्येक भाग के व्यक्तियो, पशुओं, वनस्पति आदि के बारे मे बताता है। जो शिक्षा इस विधि से दी जाती है, उसको 'विश्लेषण प्रणाली' के नाम से पुकारा जाता है। इस प्रणाली का प्रयोग केवल उन विषयो के लिये किया जा सकता है, जिनको विभिन्न भागो मे बाँटा जा सकता है; जैसे—भूगोल, रेखागणित विज्ञान आदि।

शिक्षण में केवल विश्लेषण ही काफी नहीं है। इसके बाद *सश्लेषण आवश्यक* हो जाता है। सश्लेषण के बिना बालकों के ज्ञान को निश्चित रूप नही दिया जा सकता है। कारण यह है कि सश्लेषण विभिन्न भागों को पूर्ण की ओर ले जाता है। उदाहरणार्थ—यदि हम भूगोल पढाने मे सश्लेषण विधि का प्रयोग करते हैं, तो हमे विषय-सामग्री इस क्रम मे लेनी पड़ती है। पहले हमें किसी विशेष स्थान के व्यक्तियो, पशुओ और वनस्पति का अध्ययन करना पड़ता है। उसके बाद जीवन पर प्रभाव डालने वाली जलवायु का। उसके पश्चात् तुलना के द्वारा अन्य स्थानो का ऐसा ही अध्ययन करना पड़ता है। अन्त में सब भागो मे सामजस्य स्थापित किया जाता है और सम्पूर्ण पृथ्वी का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार विश्लेषण द्वारा जो भाग अलग-अलग हो जाते हैं, वे सश्लेषण द्वारा एक होकर सम्पूर्ण होते हैं। इससे बालक

सब बातों का एक साथ सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता है। तभी उसका ज्ञान स्पष्ट और निश्चित हो पाता है। इसलिये विश्लेषण के बाद संश्लेषण की आवश्यकता का अनुभव किया जाता है।

९. मनोवैज्ञानिक से तर्क-सम्मत की ओर : From Psychological to Logical

बालकों को शिक्षा देने की दो विधियाँ है—(१) मनोवैज्ञानिक, और (२) तर्क-सम्मत। मनोवैज्ञानिक विधि में बालकों की रुचियों, कल्पना आदि को ध्यान में रखकर विषय-वस्तु प्रस्तुत की जाती है। तर्क-सम्मत विधि में पाठ्य-विषय को तर्कात्मक ढंग से अलग-अलग भागों में बाँटकर बालकों के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

इन दोनों विधियों को उदाहरण देकर स्पष्ट किया जा सकता है। मान लीजिये—शिक्षक छात्रों को भाषा की शिक्षा देना चाहता है। अब यदि वह मनोवैज्ञानिक विधि का अनुसरण करता है, तो वह अपने शिक्षण को वाक्य से प्रारम्भ करेगा। पर यदि वह तर्क-सम्मत विधि का अनुसरण करता है, तो वह वर्णों और ध्वनियों से प्रारम्भ करेगा। स्पष्ट रूप से इस विधि में बालक रुचि नहीं लेते हैं। वर्णों और ध्वनियों की अपेक्षा उन्हें वाक्यों में अधिक आनन्द आता है। अतः छोटे बच्चों के लिये मनोवैज्ञानिक विधि को ही अपनाना अच्छा है। जैसे-जैसे वे बड़े होते जायें, वैसे वैसे इसका स्थान तर्क सम्मत विधि को दिया जाना चाहिए।

यहाँ एक बात बताना आवश्यक है। सब कक्षाओं में सब पाठों को मनोवैज्ञानिक विधि से ही प्रारम्भ किया जाना चाहिए। बालक क्या पढ़ना चाहते हैं? वे कौन-सी कहानी या बात सुनना अधिक पसन्द करते हैं? इनका उत्तर मनोविज्ञान ही दे सकता है।

१०. अनुभूत से युक्तियुक्त की ओर : From Empirical to Rational

इस सूत्र का अर्थ है—बालक के अनुभूत ज्ञान को युक्तियुक्त या तर्कपूर्ण बनाना। आरम्भ में बालक देखकर और अनुभव करके ज्ञान प्राप्त करता है। परन्तु उसका यह ज्ञान तर्क पर आधारित नहीं होता है। उसे ज्ञान तो होता है, पर वह उस ज्ञान को तर्क का प्रयोग करके सत्य सिद्ध नहीं कर सकता है। इसलिये उसके अनुभूत ज्ञान को युक्तियुक्त बनाना आवश्यक है, क्योंकि तभी उसका ज्ञान निश्चित और व्यवस्थित हो सकता है।

हम एक उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट कर सकते हैं। बालक हर रोज सूर्य को निकलते और डूबते हुए देखता है। वह यह भी देखता है कि दिन के बाद रात होती है, और रात के बाद दिन। इस प्रकार उसे अनुभूत ज्ञान तो होता है पर वह इसको सत्य सिद्ध नहीं कर सकता है। वह ऐसा सौर-मंडल (Solar

System) का ज्ञान प्राप्त करने के बाद ही कर सकता है। तब उसका ज्ञान युक्त युक्त या तर्कपूर्ण हो जाता है। इसलिए अनुभूत ज्ञान को युक्तियुक्त बनाना अ आवश्यक है।

११. प्रकृति का अनुसरण : Follow Nature

[illegible] के अनुसा
[illegible] रखकर
[illegible] बालक
जो भी ज्ञान दिया जाय, वह उसके शारीरिक और मानसिक विकास के अनुरूप होन चाहिए।

अध्यापक को बालक की प्रकृति का सदैव ध्यान रखना चाहिए। उसे बाल की प्रकृति के विरुद्ध कभी भी कुछ नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से बालक प्राकृतिक विकास में बाधा पड़ सकती है। अतः बालक से ऐसा कोई भी कार्य नह करवाना चाहिए, जो उसकी शारीरिक और मानसिक शक्ति से बाहर हो। उ अपने प्राकृतिक विकास का पूर्ण अवसर दिया जाना चाहिए। मनोविज्ञान भी यह कहता है।

उपसंहार

शिक्षण के जिन सूत्रों का वर्णन किया गया है, वे पाठ को सफल बनाने बहुत सहायता देते हैं। यह सम्भव नहीं है कि प्रत्येक पाठ में उनको अपनाया जाय पर यह बात अध्यापक की योग्यता पर निर्भर है कि वह इनमें से कितने सूत्रों क प्रयोग कर सकता है। उसका ध्येय तो यही होना चाहिए कि वह अधिक से अधिव सूत्रों का प्रयोग करे।

UNIVERSITY QUESTIONS

1. What are the maxims of methodical procedure in the class room ? Illustrate your answer with suitable examples.
2. State any two maxims of method of teaching and explain thei application to the teaching of any school-subject.
3. "Proceed from simple to complex", "from known t unknown"; "from particular to general"; "from concrete t abstract."—(Herbert Spencer). Explain this statement an elucidate its limitations by considering its application t different subject of study.
4. What is the importance of a maxim of teaching ? Explain th educational and psychological basis of any two maxims c method of teaching.

३८

शिक्षण-प्रणालियाँ और प्रविधियाँ

DEVICES AND TECHNIQUES OF TEACHING

"सफलतापूर्वक पढ़ाना सीखना, कार चलाना सीखने, ब्रिज या गोल्फ खेलना सीखने या किसी अन्य जटिल कार्य को सीखने के समान है, क्योंकि सीखने वाले को एक साथ बहुत से विभिन्न कार्यों में कुशलता प्राप्त करनी पड़ती है।"

"Learning to teach successfully is like learning to drive a car, learning to play bridge or golf, or learning any other complicated performance, in that the learner must develop skill in several different operations all at once."—*A. C. Miller.*

विषय-प्रवेश

ए० एच० गार्लिक (A. H. Garlick) ने शिक्षण-प्रणालियों और प्रविधियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि शिक्षक को सबसे पहले यह निर्णय करना पड़ता है कि वह क्या पढ़ायेगा। उसके बाद वह विषय-सामग्री को व्यवस्थित करता है और यह सोचता है कि वह उसको किस प्रकार अपने छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करेगा। वह ऐसा विभिन्न प्रणालियों और प्रविधियों को अपना कर करता है।

शिक्षण की विभिन्न प्रणालियाँ और प्रविधियाँ

Various Devices & Techniques of Teaching

शिक्षण की विभिन्न प्रणालियाँ और प्रविधियाँ अधोलिखित हैं:—

१. व्याख्या-प्रणाली (Device of Explanation)
२. स्पष्टीकरण या निदर्शन-प्रणाली (Device of Exposition)
३. विवरण-प्रणाली (Device of Description)
४. वर्णनात्मक-प्रणाली (Device of Narration)
५. उदाहरण-प्रणाली (Device of Illustration)
६. प्रश्नोत्तर-प्रणाली (Device of Questioning & Answering)

१. व्याख्या-प्रणाली : Device of Explanation

इस प्रणाली का प्रयोग साहित्य और इतिहास में अधिकतर होता है। इसका तात्पर्य है—अर्थ बताना या समझाना। पढ़ाते समय अक्सर भावों की जटिलता या गुत्थी आ जाती है। इनको बालकों को सरल भाषा में समझाना आवश्यक हो जाता है। ऐसा न करने पर भाव स्पष्ट नहीं हो पाते हैं। भावों की व्याख्या कर देने पर छात्र उनको समझ जाते हैं। इस प्रणाली का प्रयोग करते समय शिक्षक को निम्न-लिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए—

१. व्याख्या सरल, शुद्ध और स्पष्ट होनी चाहिये।
२. व्याख्या करते समय कठिन विचारों को उदाहरण देकर स्पष्ट करना चाहिए।
३. व्याख्या को लम्बा नहीं बनाना चाहिए। ऐसा करने से बालक ऊब जाते हैं और व्याख्या सुनने का उनकी तनिक भी रुचि नहीं रह जाती है।
४. व्याख्या में किसी प्रकार की जटिलता नहीं आनी चाहिए। ऐसा होने से छात्र उसको समझ नहीं पाते हैं।
५. यदि सम्भव हो, तो व्याख्या करने से पहले छात्रों को वह वस्तु दिखा दी जाय, जिसकी व्याख्या की जाती है।
६. व्याख्या को उदाहरण और दृष्टान्त देकर सजीव और रोचक बनाना चाहिए।
७. साहित्य से सम्बन्धित किसी गद्यांश या पद की व्याख्या करते समय तुलना, समानता और असमानता आदि युक्तियों का प्रयोग करना चाहिए।
८. कठिन शब्दों को समान या विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों का प्रयोग करके स्पष्ट करना चाहिए।
९. व्याख्या करते समय छात्रों की रुचि बनाए रखने के लिये उनसे प्रश्न पूछने चाहिए और उन्हें भी प्रश्न पूछने का अवसर देना चाहिए।
१०. बिना आवश्यकता के व्याख्या नहीं करनी चाहिए। इससे शक्ति और समय का अपव्यय होता है।
११. व्याख्या उपदेश के रूप में नहीं होनी चाहिए, क्योंकि छात्रों को उपदेश अच्छे नहीं लगते हैं।

२. स्पष्टीकरण या निदर्शन-प्रणाली : Deivce of Exposition

इस प्रणाली का प्रयोग उस समय किया जाता है, जब शिक्षक को यह मालूम होता है कि उसके छात्र उस विषय के बारे में बहुत कम जानते हैं, जिसे वह पढ़ाना चाहता है। इस प्रणाली द्वारा नवीन ज्ञान को स्पष्ट और बोधगम्य रूप से प्रस्तुत

किया जा सकता है । इस प्रणाली का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. शिक्षक को पाठ का उद्देश्य और अभिप्राय स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए ।
२ शिक्षक को बहुत जल्दी नही बोलना चाहिये । ऐसा करने से छात्र उसके विचारो को स्पष्ट रूप से नही समझ पाते हैं ।
३. शिक्षक की भाषा सरल और छात्रो के समझने योग्य होनी चाहिए ।
४. शिक्षक का निदर्शन स्पष्ट, सुबोध और निश्चित होना चाहिए ।
५. शिक्षक को अपनी विषय-सामग्री पर स्पष्ट रूप से विचार-विमर्श करना चाहिए ।
६. शिक्षक को अपनी विषय-वस्तु को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना चाहिए ।
७. शिक्षक को अपना निदर्शन छात्रो के मानसिक स्तर के अनुकूल बनाना चाहिए ।
८. शिक्षक को छात्रों के दृष्टिकोणो को मान्यता देनी चाहिये ।
९. शिक्षक को सम्पूर्ण पाठ को स्पष्ट और स्वाभाविक खंडो मे बाँट लेना चाहिए ।
१०. जब शिक्षक पढ़ाना समाप्त कर दे, तब उसे यह जानने के लिये कि विषय-वस्तु छात्रों को स्पष्ट हुई है या नही प्रश्न पूछने चाहिए ।
११. शिक्षक को विषय-वस्तु की मुख्य बातों को सक्षिप्त रूप मे श्यामपट पर लिख देना चाहिए और उन पर उचित बल देना चाहिए ।
१२. शिक्षक को पुनरावृत्ति के लिये पर्याप्त अवसर देना चाहिए ।
१३. शिक्षक को उदाहरणों का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग करना चाहिए । उदाहरण सचित्र या मौखिक हो सकते हैं ।
१४. शिक्षक को अपना पाठ अत्यधिक सामग्री से नहीं लादना चाहिए ।
१५. यदि पाठ में बहुत-से उप-प्रकरण (Sub-topics) हैं, तो शिक्षक को पहिला उप-प्रकरण पूर्ण रूप से बताने के बाद ही दूसरा शुरू करना चाहिए ।
१६. शिक्षक को छात्रों द्वारा प्रश्न पूछे जाने के लिये पर्याप्त अवसर देना चाहिए ।

विवरण-प्रणाली : Device of Description

ए० एच० वाइनिंग का कथन है—"विवरण का अर्थ-वस्तु को शब्दों या किन्हीं का शब्दों द्वारा प्रस्तुत करने के कार्य से लगाया जाता है । यह शाब्दिक चित्र बनाने की कला है और कभी कभी इसको शब्द चित्रकला के नाम से भी पुकारा जाता है ।

यह किसी वस्तु की प्रकृति, गुणों या रूप का ब्यौरा देने का प्रयत्न करती है जिससे बालक उसके बारे मे उचित धारणा बना सकें। यह परिभाषा के कार्य को विस्तृत करती है और कभी-कभी इसको 'चित्रित करने वाले' के रूप में भी वर्णित किया जाता है। वस्तुतः यह निदर्शन का दूसरा रूप है।"

"By description is meant the act of representing a thing by words or signs, or by both It is the process of forming a word-picture, and is sometimes called word-painting. It tries to give *an account of the nature, properties, or appearance of a thing,* so that the children may form a just conception of it. It expands the work of a definition, is sometimes described as "picturing out", and is really another form of exposition."—*A H. Garlick.*

विवरण-प्रणाली का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान मे रखना आवश्यक है—

१ शिक्षक को उस वस्तु या व्यक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिसका विवरण वह देना चाहता है।
२. विवरण सदैव ऐसी भाषा मे दिया जाना चाहिए, जिसे छात्र सरलता से समझ सकें।
३. विवरण संक्षिप्त होना चाहिए। लम्बा विवरण छात्रों को भ्रम मे डाल देता है।
४. विवरण तर्कपूर्ण होना चाहिए।
५. विवरण व्यवस्थित होना चाहिये, जिससे छात्रों पर उसका प्रभाव स्थायी हो सके।
६. शिक्षक को 'पूर्ण से अंश की ओर' और 'ज्ञात से अज्ञात' की ओर बढ़ना चाहिए।
७. विवरण के समय शिक्षक को केवल शब्दों का सहारा नहीं लेना चाहिए। उसे विषय से सम्बन्धित स्थूल वस्तुयें भी छात्रों को दिखानी चाहिये।

४. वर्णनात्मक प्रणाली : Device of Narration

'वर्णन' कहानी कहने का एक रूप है। कभी-कभी कक्षा मे ऐसी स्थिति आ जाती है, जब सभी प्रणालियाँ असफल हो जाती हैं। उस समय शिक्षक को वर्णनात्मक प्रणाली का सहारा लेना पड़ता है। मान लीजिए पढ़ाते समय 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का जिक्र आ जाता है। इसको स्पष्ट करने का एक-मात्र ढंग यही है कि इसके बारे में छोटा-सा वर्णन किया जाय। तभी छात्र इसको समझ सकेंगे। वर्णन करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

१. वर्णन सरल, स्पष्ट और रोचक होना चाहिए।

किया जा सकता है। इस प्रणाली का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. शिक्षक को पाठ का उद्देश्य और अभिप्राय स्पष्ट रूप से बता देना चाहिए।
२ शिक्षक को बहुत जल्दी नहीं बोलना चाहिये। ऐसा करने से छात्र उसके विचारों को स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाते हैं।
३. शिक्षक की भाषा सरल और छात्रों के समझने योग्य होनी चाहिए।
४. शिक्षक का निदर्शन स्पष्ट, सुबोध और निश्चित होना चाहिए।
५. शिक्षक को अपनी विषय-सामग्री पर स्पष्ट रूप से विचार-विमर्श करना चाहिए।
६. शिक्षक को अपनी विषय-वस्तु को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करना चाहिए।
७. शिक्षक को अपना निदर्शन छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल बनाना चाहिए।
८. शिक्षक को छात्रों के दृष्टिकोणों को मान्यता देनी चाहिये।
९. शिक्षक को सम्पूर्ण पाठ को स्पष्ट और स्वाभाविक खंडों में बाँट लेना चाहिए।
१०. जब शिक्षक पढ़ाना समाप्त कर दे, तब उसे यह जानने के लिये कि विषय-वस्तु छात्रों को स्पष्ट हुई है या नहीं प्रश्न पूछने चाहिए।
११. शिक्षक को विषय-वस्तु की मुख्य बातों को संक्षिप्त रूप में श्यामपट पर लिख देना चाहिए और उन पर उचित बल देना चाहिए।
१२. शिक्षक को पुनरावृत्ति के लिये पर्याप्त अवसर देना चाहिए।
१३. शिक्षक को उदाहरणों का स्वतन्त्र रूप से प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण सचित्र या मौखिक हो सकते हैं।
१४. शिक्षक को अपना पाठ अत्यधिक सामग्री से नहीं लादना चाहिए।
१५. यदि पाठ में बहुत-से उप-प्रकरण (*Sub-topics*) हैं, तो शिक्षक को पहिला उप-प्रकरण पूर्ण रूप से बताने के बाद ही दूसरा शुरू करना चाहिए।
१६. शिक्षक को छात्रों द्वारा प्रश्न पूछे जाने के लिये पर्याप्त अवसर देना चाहिये।

३. विवरण-प्रणाली : Device of Description

ए० एच० गार्लिक का कथन है—"विवरण का अर्थ–वस्तु को शब्दों या चिन्हों या दोनों के द्वारा प्रस्तुत करने के कार्य से लगाया जाता है। यह शाब्दिक चित्र बनाने की प्रक्रिया है और कभी-कभी इसको शब्द-चित्रकला के नाम से भी पुकारा जाता है।

यह किसी वस्तु की प्रकृति, गुणों या रूप का ब्यौरा देने का प्रयत्न करती है जिससे बालक उसके बारे में उचित धारणा बना सकें। यह परिभाषा के कार्य को विस्तृत करती है और कभी-कभी इसको 'चित्रित करने वाले' के रूप में भी वर्णित किया जाता है। वस्तुतः यह निदर्शन का दूसरा रूप है।"

"By description is meant the act of representing a thing by words or signs, or by both. It is the process of forming a word-picture, and is sometimes called word-painting. It tries to give an account of the nature, properties, or appearance of a thing, so that the children may form a just conception of it. It expands the work of a definition, is sometimes described as "picturing out", and is really another form of exposition."—*A. H. Garlick.*

विवरण-प्रणाली का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है—

१. शिक्षक को उस वस्तु या व्यक्ति का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिसका विवरण वह देना चाहता है।
२. विवरण सदैव ऐसी भाषा में दिया जाना चाहिए, जिसे छात्र सरलता से समझ सकें।
३. विवरण संक्षिप्त होना चाहिए। लम्बा विवरण छात्रों को भ्रम में डाल देता है।
४. विवरण तर्कपूर्ण होना चाहिए।
५. विवरण व्यवस्थित होना चाहिये, जिससे छात्रों पर उसका प्रभाव स्थायी हो सके।
६. शिक्षक को 'पूर्ण से अंश की ओर' और 'ज्ञात से अज्ञात' की ओर बढ़ना चाहिए।
७. विवरण के समय शिक्षक को केवल शब्दों का सहारा नहीं लेना चाहिए। उसे विषय से सम्बन्धित स्थूल वस्तुयें भी छात्रों को दिखानी चाहिये।

४. वर्णनात्मक प्रणाली : Device of Narration

'वर्णन' कहानी कहने का एक रूप है। कभी-कभी कक्षा में ऐसी स्थिति आ जाती है, जब सभी प्रणालियाँ असफल हो जाती हैं। उस समय शिक्षक को वर्णनात्मक प्रणाली का सहारा लेना पड़ता है। मान लीजिए पढ़ाते समय 'भारत छोड़ो आन्दोलन' का जिक्र आ जाता है। इसको स्पष्ट करने का एक-मात्र ढंग यही है कि इसके बारे में छोटा-सा वर्णन किया जाय। तभी छात्र इसको समझ सकेंगे। वर्णन करते समय शिक्षक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

१. वर्णन सरल, स्पष्ट और रोचक होना चाहिए।

६ बालकों द्वारा प्राप्त किये गए ज्ञान को उदाहरण देकर स्थायी बनाना चाहिए।

नोट—प्रश्नोत्तर प्रणाली का वर्णन अध्याय ३६ और ४० में किया गया है।

उपसंहार

उपरोक्त शिक्षण-प्रणालियाँ और प्रविधियाँ वे साधन या रीतियाँ हैं, जो शिक्षण को सफल बनाने मे सहायता देती हैं। इन प्रणालियों को पाठ की प्रकृति के अनुसार कक्षा मे अपनाया जा सकता है। कभी-कभी एक ही पाठ में प्राय. सभी प्रणालियों का प्रयोग किया जा सकता है। किस समय कौन सी प्रणाली का प्रयोग सबसे अधिक अच्छा सिद्ध होगा ? इसका निर्णय शिक्षक के द्वारा ही किया जा सकता है।

UNIVERSITY QUESTION

1 Discuss briefly the relative importance of devices and techniques of teaching you have been using in teaching various classes.

३९

प्रश्न पूछना

QUESTIONING

"प्रश्न पूछना शिक्षण की सब प्रणालियों में शायद सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है और किसी-न-किसी रूप में इसका प्रयोग अति प्राचीन काल से होता रहा है।"

"Questioning is perhaps the most valuable of all the teaching devices, and in one way or another, it has been employed from quite early times."

प्रश्नों का महत्त्व

Importance of Questions

शिक्षण मे प्रश्नो का महत्त्व बहुत अधिक है। शिक्षक द्वारा प्रश्न पूछे जाने की विधि बहुत पुरानी है। प्राचीन भारत मे गुरु अपने शिक्षण मे प्रश्नो का बहुत प्रयोग करते थे। वास्तव मे उनकी शिक्षण-विधि प्रश्नोत्तर पर आधारित थी। शिष्य भी गुरु से प्रश्न पूछकर अपनी शकाओ को दूर करते थे। यूनानी दार्शनिक सुकरात (Socrates) ने शिक्षण की अन्य विधियों का बहिष्कार करके प्रश्न-विधि को अपनाया। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली मे प्रश्नो का विशेष स्थान है। शिक्षक प्रश्न पूछ कर ही अपने पाठ को आगे बढ़ाता है और छात्रो के ज्ञान का पता लगाता है। दूसरे शब्दों मे, प्रश्नो के द्वारा ही कक्षा मे ज्ञान प्रदान किया जाता है और ज्ञान का अनुमान लगाया जाता है। किसी शिक्षक ने ठीक ही कहा है—

> "I keep six honest serving men;
> They taught me all I know,
> Their names are What and Why and When
> And How and Where and Who."

प्रश्न पूछना—एक कला है

Questioning is an Art

जिस व्यक्ति का शिक्षण से कोई सम्बन्ध नहीं है, उसे कक्षा के छात्रों से प्रश्न पूछने की बात बहुत सरल जान पड़ती है। पर ऐसा नहीं है। प्रश्न पूछना एक कला है। प्रश्न तो सभी पूछ सकते हैं, पर प्रश्न को कुशलता से कोई-कोई ही पूछ सकता है। यह बात शिक्षक की कुशलता और प्रश्न पूछने की योग्यता पर निर्भर है। उसके लिये सबसे महत्त्वपूर्ण और कठिन बात यही है कि वह अपने छात्रों से किस प्रकार कौशलपूर्ण प्रश्न पूछे। वह प्रश्न पूछने की कला में जितना ही अधिक निपुण होगा, उतने ही अधिक उत्तम प्रश्न वह पूछेगा।

इस कला में निपुणता किसी-किसी शिक्षक में ही होती है। इसे प्राप्त करने के लिये बहुत समय तक निरन्तर प्रयास की आवश्यकता है। वस्तुतः किसी भी शिक्षक को अपने शिक्षण से उस समय तक सन्तुष्ट नहीं होना चाहिये, जब तक कि वह प्रश्न पूछने की कला में दक्ष न हो जाय। रेमॉन्ट ने उचित ही लिखा है—"प्रश्न पूछने की अच्छी शैली की प्राप्ति तरुण शिक्षक की आवश्यक महत्वाकांक्षाओं में से निश्चय रूप से एक है।"

"The acquisition of a good style of questioning may be laid down definitely as one the essential ambitions of a young teacher."

—*Raymont.*

प्रश्न पूछने के उद्देश्य

Aims of Questioning

प्रश्न पूछने के अनेकों उद्देश्य हैं, जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं—

१. छात्रों को उत्प्रेरित (Motivate) करना, जिससे उनका ध्यान पाठ्य-वस्तु की ओर आकर्षित होता है।
२. छात्रों में रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न करना, जिससे उनके सीखने के कार्य में शिथिलता नहीं आती है।
३. शिक्षक को इस बात का ज्ञान कराना कि छात्र कितना जानते हैं और उनको किन बातों में रुचि है।
४. शिक्षक को यह बताना कि छात्र पाठ्य-वस्तु को समझ गये हैं या नहीं। इसी आधार पर वह या तो आगे बढ़ता है या पढ़ाई हुई बातों को दोहराता है।
५. छात्रों के पुराने ज्ञान का नये ज्ञान से सम्बन्ध जोड़ना। प्रश्नों के बिना ऐसा किया जाना बहुत कठिन है।

यदि छात्रों को कपास की पैदावार का पाठ पढ़ाना है, तो उनसे निम्नलिखित प्रस्तावनात्मक प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

१. हम अपने शरीर को किस वस्तु से ढकते हैं ?
२. कपड़े किस वस्तु के बने हुए होते हैं ?
३. रुई किस पौधे से निकाली जाती है ?

२. विकासात्मक प्रश्न : Developing Questions

इन प्रश्नों का प्रयोग पाठ का विकास करने के लिये किया जाता है। वास्तव में, इन प्रश्नों की सहायता से छात्रों के सामने नया ज्ञान प्रस्तुत किया जाता है। अध्यापक छात्रों का सहयोग प्राप्त करने के लिए ऐसे प्रश्न पूछता है, जिनसे पाठ के विकास में सहायता मिलती है। ये प्रश्न छात्रों का मानसिक क्रिया को उत्तेजित करते हैं, जिससे वे उत्तर देने के लिए अपनी बुद्धि, तर्क-शक्ति और निरीक्षण-शक्ति का प्रयोग करते हैं विकासात्मक प्रश्नों के माध्यम से शिक्षक पाठ्य-विषय को स्पष्ट करता है। साथ ही वह छात्रों को एक तथ्य-बिन्दु से दूसरे तथ्य-बिन्दु की ओर ले जाता है। विकासात्मक प्रश्नों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए रेमॉन्ट (Raymont) ने लिखा है—"किसी पाठ के प्रारम्भ और अन्त में प्रश्नों का इतना महत्व नहीं है, जितना कि पाठ के क्रमिक विकास में, और इस अवस्था में इनका इतना महत्व है कि हम इनके आधार पर अच्छे और बुरे शिक्षक के अन्तर का निर्णय कर सकते हैं।"

छात्रों को "कलकत्ता बन्दरगाह का महत्त्व" नामक पाठ पढ़ाते समय, शिक्षक निम्नलिखित विकासात्मक प्रश्न पूछ सकता है—

१. नक्शे में कलकत्ते की स्थिति मालूम करो ?
२. कौन-सा भाग कलकत्ता का हिटरलैंड कहलाता है ?
३. यह भाग इतना घना बसा हुआ क्यों है ?
४. कलकत्ते से कौन-सी वस्तुयें देश से बाहर भेजी जाती हैं ?
५. यहाँ से चावल बाहर क्यों नहीं भेजा जाता है ?
६. कलकत्ते में जूट का व्यवसाय सबसे अधिक प्रसिद्ध क्यों है ?
७. जूट के कारखाने कलकत्ते में कहाँ स्थित हैं ?
८. ये कारखाने वहीं क्यों बनाये गये हैं ?

३. विचारात्मक प्रश्न Thought-Provoking Questions

प्रश्न वे विचारात्मक कहलाते हैं, जो छात्रों के मस्तिष्क को जाग्रत, विचारशील और क्रियाशील रखने की दृष्टि से किये जाते हैं। दूसरे शब्दों में, इन प्रश्नों का उद्देश्य—छात्रों के मस्तिष्क को विचारयुक्त और क्रियाशील बनाना है। अध्यापक को इस प्रकार के प्रश्न उस दशा में करने चाहिये, जब वह देखे कि कक्षा में छात्रों का ध्यान इधर-उधर भटक रहा है। विचारात्मक प्रश्नों के करने का मूल उद्देश्य—

छात्रों के मस्तिष्क को क्रियाशील बनाने के साथ-साथ उनके ध्यान को पाठ प
केन्द्रित करना है। इस प्रकार के प्रश्नों के लिये अध्यापक को सावधानी रखने औ
परिश्रम करने की आवश्यकता है। प्रश्नों की रचना करने में छात्रों की मानसिक आ
का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये।

"अकबर की राजपूत-नीति" पढ़ाते समय निम्नांकित विचारात्मक प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

१. अकबर ने राजपूतों को राज्य में उच्च पद क्यों दिये ?
२. अकबर राजपूतों का आदर क्यों करता था ?
३. अकबर ने राजपूत राजाओं से विवाह द्वारा सम्बन्ध क्यों स्थापित किये ?
४. इसका क्या कारण था कि अकबर ने राजपूतों को अपना विश्वास-पात्र बनाया ?

४ समस्या-प्रश्न : Problem Questions

समस्या प्रश्नों का प्रयोग स्थिति के अनुसार पाठ के आरम्भ या मध्य या दोनों स्थानों पर किया जा सकता है। इन प्रश्नों के द्वारा शिक्षक छात्रों के समक्ष प्रश्नों द्वारा कोई समस्या प्रस्तुत करता है, जिसका उत्तर छात्र गम्भीर चिन्तन और मनन के बाद देते हैं। ये प्रश्न बालकों के मस्तिष्क को क्रियाशील बनाते हैं। इनका प्रयोग मुख्य रूप से गणित, विज्ञान और इतिहास के पाठों किया जाता है।

"द्वितीय विश्व युद्ध" पढ़ाते समय शिक्षक निम्नलिखित प्रश्न पूछ कर छात्रों के समक्ष समस्यायें प्रस्तुत कर सकता है—

१ यदि युद्ध में हिटलर विजयी हो जाता, तो आज संसार की क्या दशा होती ?
२. यदि मुसोलिनी युद्ध के अन्त तक जीवित रहता, तो क्या हिटलर विजयी हो सकता था ?
३. यदि अमरीका ने युद्ध में भाग न लिया होता, तो आज रूस, इङ्गलैंड और जर्मनी से उसके कैसे सम्बन्ध होते ?

५. बोध-प्रश्न : Questions for Comprehension

बोध-प्रश्न यह पता लगाने के लिये किये जाते हैं कि छात्र प्रदान किये गये ज्ञान को भली प्रकार समझ पाये हैं या नहीं। कक्षा में कुछ छात्र बैठे हुए शिक्षक की बातों को सुनते रहते हैं। उनका अनुमान होता है कि वे सब बातों को समझ रहे हैं। पर जब शिक्षक उनसे प्रश्न पूछता है, तब वे कोई उत्तर नहीं दे पाते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक का कर्तव्य हो जाता है कि, वह [illegible] को फिर दोहराए। बोध प्रश्न प्रायः सम्पूर्ण पाठ के [illegible] में बँटा हुआ है, तो वे [illegible]

"सिकन्दर और पोरस" पाठ पढ़ा चुकने के बाद, और यदि वह खण्डों में विभक्त है, तो उसके बाद निम्नलिखित बोध प्रश्न पूछे जा सकते हैं-

१. सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण क्यों किया ?
२. पोरस ने उसके साथ युद्ध क्यों किया ?
३. पोरस युद्ध में क्यों हारा ?
४. सिकन्दर ने हारे हुए पोरस के साथ कैसा व्यवहार किया ?

६. तुलनात्मक प्रश्न : Comparison Questions

तुलनात्मक प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य दो वस्तुओं या घटनाओं की परस्पर तुलना करना होता है। इतिहास, भूगोल और विज्ञान के शिक्षण में इनका प्रयोग सफलता से किया जा सकता है। अध्यापक को चाहिए कि वह इनका प्रयोग पाठ के मध्य में ही करे। आवश्यकता पड़ने पर पाठ के प्रारम्भ या अन्त में भी इनका प्रयोग किया जा सकता है।

"मैदानों और पर्वतीय प्रदेशों का जीवन"—इस पाठ में अग्रलिखित तुलनात्मक प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

१. मैदानों और पर्वतीय प्रदेशों के लोगों के वस्त्रों में आप क्या अन्तर पाते हैं ?
२. इन दोनों जगहों के निवास-स्थानों में क्या अन्तर है ?
३. इन दोनों स्थानों के आवागमन के साधनों की तुलना कीजिये ?
४. इन दोनों स्थानों की जलवायु में क्या विभिन्नता पाई जाती है ?

७. पुनरावृत्ति प्रश्न : Recapitulatory Questions

इन प्रश्नों का प्रयोग प्रायः पाठ समाप्त होने पर किया जाता है। यदि पाठ कई सोपानों में बँटा हुआ है, तो उनके अन्त में भी ये प्रश्न पूछे जा सकते हैं। यह बात विशेष रूप से सामाजिक विषयों के बारे में लागू है। इन प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य—पाठ को दोहराना है, जिससे कि पाठ के मुख्य तथ्य छात्रों के मस्तिष्क में स्थिर हो जायँ। इन प्रश्नों का आधार वही विषय होना चाहिए, जिसे शिक्षक घण्टे में पढ़ा चुका है। ये प्रश्न शृङ्खलाबद्ध होने चाहिए।

"जापान का मानव-जीवन"—यह पाठ पढ़ाने के बाद निम्नलिखित पुनरावृत्ति प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

१. जापान-निवासी किस प्रकार के वस्त्र पहिनते हैं ?
२. उनका मुख्य भोजन क्या है ?
३. वे इसी भोजन का प्रयोग क्यों करते हैं ?
४. जापान के लोगों का मुख्य व्यवसाय क्या है ?
५. इस व्यवसाय के क्या कारण हैं ?

अच्छे प्रश्नों की विशेषतायें
Characteristics of Good Questions

अच्छे प्रश्नों में निम्नलिखित विशेषतायें पाई जाती हैं—

(१) प्रश्न संक्षेप मे पूछे जाने चाहिए, और उनकी शब्दावली निश्चित होनी चाहिए। अधिक लम्बे प्रश्न अनुचित होते हैं। उदाहरण के लिए प्रश्न पूछने का एक ढंग यह है—"*अकबर की राजपूतों के प्रति क्या नीति थी ?*" इस प्रश्न को गलत ढंग से भी पूछा जा सकता है, जैसे—"अकबर जो कि महान् सम्राट था, उसने राजपूतों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया कौन-कौन उत्तर देगा ?" यह एक अनुचित प्रश्न का उदाहरण है, क्योंकि इसमें व्यर्थ की बातों को जोड़ दिया गया है।

(२) प्रश्न छात्रों की मानसिक आयु को ध्यान में रखकर पूछे जाने चाहिए। कठिन प्रश्न कुशाग्र-बुद्धि छात्रों से, और सरल प्रश्न मन्द-बुद्धि छात्रों से पूछे जाने चाहिए।

(३) प्रश्नों की भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए। कठिन भाषा के प्रयोग से बचना चाहिए।

(४) प्रश्न ऐसे होने चाहिए, जो छात्रों की विचार-शक्ति को उत्तेजित करें। सीधे-सादे प्रश्नों की अपेक्षा कल्पना-शक्ति को उत्तेजित करने वाले प्रश्न पूछना कहीं अच्छा है। रेमॉन्ट (Raymont) के शब्दों मे—"पहली बात तो यह है कि प्रश्नों से बालकों की मानसिक क्रिया जाग्रत होनी चाहिए। इनसे निरीक्षण, स्मृति और विचार-शक्ति को प्रेरणा मिलनी चाहिए।"

(५) कक्षा मे प्रश्न सभी छात्रों से पूछे जाने चाहिए। केवल कुछ छात्रों से प्रश्न पूछते रहना अनुचित है। ऐसा करने से छात्र शिक्षक को पक्षपाती मानते हैं। इस सम्बन्ध मे रेमॉन्ट (Raymont) का कथन है—"प्रश्न कक्षा के सभी छात्रों से पूछे जाने चाहिए। उनको कुछ बालकों तक ही सीमित रखना उचित नहीं है। बालकों को पहिले से यह भी पता नहीं होना चाहिए कि किसको उत्तर देना है। *कक्षा के सब छात्रों से प्रश्न पूछने से कक्षा के वातावरण में सजीवता रहती है और छात्रों का* ध्यान पाठ मे लगा रहता है।"

(७) प्रश्नों को बार-बार नहीं दोहराना चाहिए। अध्यापक को प्रश्न केवल एक बार बोलना चाहिए। प्रश्न को दोहराने से छात्रों में लापरवाही आती है। वे पहिली बार प्रश्न को ध्यान से सुनते ही नहीं हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि अध्यापक

प्रश्न को फिर दोहरायेगा। दूसरे, प्रश्नों को बार-बार दोहराने से अध्यापक अपना और छात्रों का समय नष्ट करता है।

(८) अध्यापक को ऐसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिए, जिनका उत्तर "हाँ" या "न" में समाप्त हो जाय। इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर छात्र अन्दाज लगाकर दे देते हैं। उदाहरणार्थ—"क्या चाय पहाड़ों के ढालों पर पैदा होती है ?" इस प्रश्न के उत्तर में कुछ छात्र अनुमान से 'हाँ' कह देंगे।

(९) यदि कभी आवश्यकता पड़ने पर अध्यापक किसी प्रश्न को दोहराना चाहता है, तो उसे प्रश्न की भाषा नहीं बदलनी चाहिए। ऐसा करने से छात्र समझते हैं कि उनसे कोई नया प्रश्न पूछा गया है और वे घबरा जाते हैं।

(१०) पूछे जाने वाले प्रश्नों का अर्थ स्पष्ट और निश्चित होना चाहिए। अनिश्चित प्रश्नों के उत्तर भी अनिश्चित होते हैं। उदाहरणार्थ—"चन्द्रगुप्त मौर्य के बारे तुम क्या जानते हो ?" या "अकबर कैसा सम्राट् था ?" इन प्रश्नों के उत्तर अनिश्चित और अस्पष्ट ही होंगे।

(११) यथासम्भव प्रश्नों की रचना स्वयं अध्यापक द्वारा की जानी चाहिए। उसे पाठ्य-पुस्तकों मे दिये हुए प्रश्नों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे पाठ्य-पुस्तक मे आने वाले शब्दों का प्रयोग नही करना चाहिए, क्योंकि छात्र पुस्तक देखकर उनके सहारे से उत्तर दे देते हैं।

(१२) प्रश्न एक-दूसरे से सम्बद्ध होने चाहिए। इस प्रकार के प्रश्न पाठ के विकास में सहायता देते हैं।

(१३) प्रश्न नम्रता से पूछे जाने चाहिए। डाँट-डपट कर प्रश्न पूछना सर्वथा अनुचित है। आतंकपूर्ण वातावरण मे छात्र प्रश्नो के ठीक उत्तर नही दे पाते हैं।

(१४) छात्रो से ऐसे प्रश्न नही पूछे जाने चाहिए जिनके उत्तर प्रश्नो मे ही मिल जाएँ। उदाहरणार्थ—"क्या तुम नही जानते हो कि लन्दन इंगलैंड की राजधानी है ?"

(१५) किसी तथ्य को पढाने के तुरन्त बाद प्रश्न नही पूछे जाने चाहिए। मान लीजिए—शिक्षक ने छात्रो को यह बताया है कि महात्मा गाधी का जन्म पोरबन्दर मे हुआ था। यह बताने के तुरन्त बाद ही वह छात्रों से पूछता है—"गाधी जी का जन्म कहाँ हुआ था ?" इस प्रकार का प्रश्न पूछना सर्वथा अनुचित है।

दोषपूर्ण प्रश्न
Defective Questions

निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न नही पूछे जाने चाहिए, क्योंकि ये दोषपूर्ण होते हैं :—

१. अपूर्ण प्रश्न : Incomplete Questions

ये प्रश्न अधूरे होते हैं; जैसे—"महमूद गजनी ने आक्रमण क्यों किया ?" यह प्रश्न इस प्रकार होना चाहिए—"महमूद गजनी ने भारत पर आक्रमण क्यों किया ?"

२. द्विविधा सूचक प्रश्न : Yes or No Type Questions

ऐसे प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए, जिनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' दोनों में दिया जा सकता है; जैसे—"क्या मुहम्मद तुगलक पागल था ?" बालक इस प्रश्न का उत्तर बिना सोचे-समझे "हाँ" या "नहीं" में दे सकते हैं।

३. स्वीकारोक्ति अथवा पुष्टिकारक प्रश्न : Corroborative Questions

ऐसे प्रश्नों द्वारा अध्यापक अपने कथन को छात्रों से स्वीकार कराता है या उनकी पुष्टि कराता है। इस प्रकार के प्रश्न छात्रों की तर्क और कल्पना शक्ति को निर्बल बनाते हैं। इन प्रश्नों के कुछ उदाहरण हैं—"आक्सीजन जलने में सहायता देती है न ?" "अशोक शान्ति-प्रिय सम्राट् था, क्यों ठीक है न ?" "यहाँ पर ४० अंश का कोण खींच देना ठीक होगा न ?"

४. रिक्त स्थान-पूरक प्रश्न : Elliptical Questions

इन प्रश्नों के निर्माण में सार्थक शब्द छोड़ दिया जाता है और उसकी पूर्ति छात्रों से करवाई जाती है। उदाहरणार्थ—"लन्दन इंगलैंड की—क्या है ?" अध्यापक को ऐसे प्रश्न नहीं पूछने चाहिए, क्योंकि छात्र को एक तो इनका उत्तर संक्षेप में देना पड़ता है, और दूसरे उसे सोचने में अधिक मानसिक प्रयास नहीं करना पड़ता है।

५. उत्तर-सूचक या सांकेतिक प्रश्न : Leading or Suggestive Questions

इन प्रश्नों में इनके उत्तर मौजूद रहते हैं, जैसे—"क्या चावल के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है ?", "क्या इंगलैण्ड अमरीका का मित्र है ?" इन प्रश्नों के उत्तर सोचने में छात्रों को किसी प्रकार का मानसिक प्रयास नहीं करना पड़ता है।

६. एक प्रश्न में अनेकों प्रश्न : Many Questions in One Question

कभी-कभी अध्यापक एक प्रश्न में दो या तीन प्रश्न मिलाकर पूछते हैं; जैसे—"गेहूँ को कैसी जलवायु चाहिए, और वह भारत में कहाँ-कहाँ पैदा होता है, तथा सबसे अधिक कहाँ होता है ?" इस प्रश्न में तीन प्रश्न हैं। अतः इसके उत्तर भी तीन होंगे। इस प्रकार का प्रश्न सुनकर छात्र उलझन में पड़ जाते हैं।

७. प्रतिध्वनि प्रश्न : Echo Questions

कुछ अध्यापक तथ्यों को बताने के साथ-साथ प्रश्न भी पूछते जाते हैं। इनको प्रतिध्वनि प्रश्न कहते हैं, क्योंकि छात्र अध्यापक की कही हुई बात से ही उत्तर जान जाते हैं, जैसे—"गांधी जी की हत्या नाथूराम गोडसे ने की।"—"गांधी जी की हत्या किसने की ?" इस प्रकार के प्रश्नों से छात्रों की तर्क-शक्ति और विचार-शक्ति का विकास नहीं होता है।

८. ग़लत स्थान पर प्रयोग किये गये शब्दों वाले प्रश्न : Questions with Misplaced Words

प्रश्न में शब्दों का उचित स्थान पर प्रयोग किया जाना आवश्यक है; जैसे—"किस मुगल सम्राट् के विरुद्ध शिवाजी ने क्यों युद्ध किया ?' इस प्रश्न के शब्दों का क्रम इस प्रकार होना चाहिए - "शिवाजी ने किस मुगल-सम्राट् के विरुद्ध क्यों युद्ध किया ?"

प्रश्न पूछने की विधि

Techinque of Questioning

प्रश्न पूछने की विधि को प्रभावशाली बनाने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

१. प्रश्न पूरी कक्षा से पूछना चाहिए इसके बाद किसी एक छात्र को उत्तर देने की आज्ञा देनी चाहिए। पूरी कक्षा से प्रश्न पूछने पर सब छात्रों का ध्यान उस पर केन्द्रित रहता है। साथ ही सब छात्रों को उस पर विचार करने का अवसर मिलता है।
२. प्रश्न पूछते समय एक ही छात्र को सम्बोधित नहीं करना चाहिए; जैसे—"रवि, तुम बताओ कि सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण कब किया ?" इस प्रकार का प्रश्न केवल रवि के ही ध्यान को आकर्षित करेगा, शेष छात्रों को उससे कोई प्रयोजन नहीं होगा।
३. प्रश्नों का वितरण इस प्रकार करना चाहिए कि कक्षा के सभी छात्रों को उत्तर देने का अवसर मिले। केवल पीछे के छात्रों से या आगे की बैंच पर बैठने वालों से ही प्रश्न पूछना उचित नहीं है। इससे अन्य छात्र शिक्षक के पढ़ाने पर ध्यान नहीं देते हैं।
४. प्रश्न पूछने के बाद कुछ समय तक रुकना चाहिए। उसके बाद ही उत्तर पूछना चाहिए। ऐसा करने से छात्रों को उत्तर सोचने का समय मिल जाता है।
५. प्रश्नों को दोहराना नहीं चाहिए। इससे शिक्षक ज्ञान में आत्म-विश्वास का अभाव प्रकट करता है।

६. यदि कोई छात्र उत्तर नहीं दे सकता है, तो उसे इसके लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।
७. शिक्षक को छात्रों का उत्तर दोहराना नहीं चाहिए। इससे व्यर्थ ही समय नष्ट होता है।
८. जब किसी छात्र का ध्यान पाठ पर केन्द्रित न हो, तब प्रश्न पूछ कर उसका ध्यान पाठ की ओर आकर्षित करना चाहिए।
९. यदि कोई छात्र ठीक उत्तर न दे पाये, तो प्रश्न दूसरे छात्र से पूछना चाहिए। उसके द्वारा किये गये ठीक उत्तर को पहले छात्र से दोहरवाना चाहिए।
१०. यदि पूरी कक्षा में से कोई भी छात्र उत्तर न दे सके, तो प्रश्न को सरल भाषा में पूछना चाहिए।
११. प्रश्न पूछते समय उसके किसी भी शब्द पर अनावश्यक बल नहीं देना चाहिए। दूसरे शब्दों में, प्रश्न स्वाभाविक ढंग से पूछा जाना चाहिए।
१२. यदि शिक्षक को प्रश्न का ठीक उत्तर मिल जाता है, तो उसे वह प्रश्न फिर किसी अन्य छात्र से नहीं पूछना चाहिए।

उपसंहार

उपरोक्त शब्दों में हमने प्रश्न पूछने से सम्बन्धित अनेक बातों का वर्णन किया है। इन सभी बातों पर शिक्षक को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। सत्य बात तो यह है कि उसे प्रश्न पूछने की कला में दक्ष होने का प्रयास करना चाहिये। निरन्तर और धैर्यपूर्ण प्रयास से उसे अपने कार्य में सफलता अवश्य मिल सकती है। *यह सफलता उसे कुशल अध्यापक बनाने में सहायता देगी। उसे पार्कर के इस कथन* को सदैव ध्यान में रखना चाहिये—**"प्रश्न पूछना कुशलता के स्तर की आदत से श्रेष्ठ समस्त शैक्षणिक क्रियाशीलता की कुंजी है।"**

"Questioning is the key to all educational activity above the habit skill level."—*S. C. Parker.*

UNIVERSITY QUESTIONS

1. "Greater efficiency in managing the questioning during a class-period is secured by adherence to certain well-defined rules or standards. What are these standards ? What are the points that should be kept in mind in connection with pupil's responses to questions ?
2. What are the qualities of a good question ? What type of questions should be asked ?